लेखकों का परिचय

एलन नेविन्स १९३१ से कोलम्बिया मे अमरीकी इतिहास के प्राध्यापक हैं। उन्होंने कोर्नेल, केलिफोर्निया इन्स्टीट्यूट आफ टेक्नालाजी, ओक्सफोर्ड और जेरूसलेम के हिब्रू विश्वविद्यालय मे भी अध्यापन किया है। वे समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं मे सम्पादकीय भी लिखते रहे हैं। उन्होंने अनेक पुस्तके लिखी हैं जिनमे से दो पर उनको प्युलिट्ज़र पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

हेनरी स्टील कोमेगर भी कोलम्बिया मे इतिहास के प्राध्यापक हैं। उन्होंने अन्य अनेक विद्यालयों में भी अध्यापन किया है जिनमे वर्जीनिया विश्वविद्यालय, न्यूयार्क विश्वविद्यालय, ओक्सफोर्ड और केम्ब्रिज मुख्य हैं। वे अनेक पुस्तकों के लेखक एवं सम्पादक भी हैं, जिनमे अमरीकी राष्ट्र का अभ्युदय (राइज आफ दि अमेरिकन नेशन) के ४० खण्ड भी हैं।

प्रस्तावना

अमरीका के इतिहास को प्रकाश में आये कुल चार सौ वर्ष ही हुए हैं। दुनिया के बड़े राष्ट्रो में यह सबसे नया राष्ट्र है फिर भी कई माने मे यह राष्ट्र अत्यंत दिलचस्प राष्ट्र है। यह इसलिए इतना दिलचस्प है कि इसका इतिहास मानवजाति के इतिहास का पुनर्नवीकरण है और इसमे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सस्थाओ के विकास की झलक देखने को मिलती है। यह राष्ट्र इसलिए भी इतना अधिक दिलचस्पी-भरा है कि महान ऐतिहासिक शक्तियॉ तथा वे तत्व जिन्होने आधुनिक विश्व की कायापलट की है, इसकी गोदी मे खेले हैं, जैसे साम्राज्यवाद, राष्ट्रवाद, राष्ट्रीयता, आव्रजन, औद्योगिक विकास, विज्ञान, धर्म, प्रजातत्र और स्वाधीनता। इसके अतिरिक्त इन तत्वों का यहॉ के समाज पर जो प्रभाव पडा उसका इतना स्पष्ट ऐतिहासिक चित्रण दूसरे किसी राष्ट्र के इतिहास मे नहीं मिल पाता है। यद्यपि इस राष्ट्र को प्रकाश मे आये बहुत कम समय हुआ है फिर भी आज यह सबसे पुराने गणतत्रो मे से है और यहॉ की लोकशाही भी सबसे पुरानी लोकशाही में से है तथा यहॉ का सविधान विश्व के सविधानो मे सबसे पुराना लिखित सविधान है।

अमरीका मे हमारी दिलचस्पी इसलिए भी है कि अपने जन्म के साथ ही इस राष्ट्र के नागरिको ने अपना विशिष्ट लक्ष्य निश्चित किया और उसकी पूर्त्ति के बारे मे सदा सचेष्ट रहे, साथ ही मानवजाति की आशाऍ और अभिलाषाऍ भी इसी के साथ जुड़ी रही हैं तथा यह बात भी है कि आज तक न तो कभी उस विशिष्ट लक्ष्य की पूर्त्ति तथा आशाओ के औचित्य के बारे मे यह राष्ट्र कभी असफल रहा।

अमरीका की यह कहानी एक बीहड वन-प्रदेश मे प्राचीन सस्कृति के आरोपण की कहानी है। जैसी कि स्थिति रही अमरीका इतिहास के छः हजार वर्षों तक अंधकार मे रहा और जब प्रकाश में आया तो परिपक्व व वीर राष्ट्र के रूप मे आया क्योंकि यहॉ पहली बस्ती बसाने वाले कोई आदि मानव तो थे नहीं, वे सभ्य मनुष्य थे और उन्होंने यहॉ शताब्दियो पुरानी संस्कृति का बीजारोपण किया। फिर भी नयी दुनिया पुरानी दुनिया का विस्तार मात्र नहीं थी। यह ठीक वैसी ही दुनिया थी जैसी कि इस पर पहले पहल बसने वालों ने इसे बनाने की कामना की थी, और इसकी नींव डालने वाले पूर्वजों की अभिलाषा थी—इतिहास मे एक नया मोड़। अटलांटिक महासागर से लेकर प्रकाशवान प्रशान्त

महासागर तक फैली हुई अपराजेय प्रकृति ने यहॉ प्रतिष्ठित संस्थानो के स्वरूप को व्यापक सॅवार दिया, और विचित्र जन-संस्कृतियों के संगम ने अनुगत सस्कृतिओं को सुन्दर स्वरूप प्रदान किया। जन और व्यक्तियों के संगम, धार्मिक सहनशीलता, सामाजिक समानता, आर्थिक अवसरों की उपलब्धि, और राजनीतिक प्रजातंत्र की दिशा मे अब तक के प्रयोगों में यह सर्वोत्तम पुरुषार्थी अभियान सिद्ध हुआ।

एक लम्बे समय से यूरोपीय इतिहासकार अमरीकी जनता के बुनियादी गुणो को सहर्ष स्वीकार करते हुए इस पर जोर देते रहे है कि अमरीकी इतिहास बेजान, नीरस, वैविध्यशून्य, तथा शान-शौकत व ऐतिहासिक समृद्धि से हीन है। परन्तु अमरीकी इतिहास ठीक इसके इतना ही विपरीत है—आश्चर्यजनक रूप से वैविध्य लिये हुए, सजीव व शौर्यपूर्ण है। विशाल अमरीकी भूमंच पर छोटे और कमजोर लोगो का इतना व्यापक विस्तार लड़खडाती हुई छोटी बस्तियो का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र के रूप मे बदलने का यह नाटक आधुनिक इतिहास मे अतुलनीय है। हमारे पहाडी दर्रे सामन्तों के गढ और किलो जितने ही सुन्दर हैं, और हमारे कस्बो की सभाएँ शाही दरबारों जैसी शानदार हैं तथा अंतर्प्रदेशो मे जनप्रयाण नोर्मन और सारसेनो के महाप्रयाणो जितने ही उत्तेजक है और हमारे राष्ट्रीय शूरमा—वाशिंगटन, जेफर्सन, लिंकन—अन्य लोगों के शूरवीरो से टक्कर ले सकते हैं।

यह इतिहास जनसाधारण के लिए लिखा गया है। इसमे न तो मौलिक शोध या नया अर्थ ढूढ़ने की ही चेष्टा है। अमरीकी जनता के बारे मे संक्षिप्त इतिहास की पूर्त्ति के लिए यह तैयार किया गया है। यदि इसमे कोई तत्त्व की बात है तो वह इसी शीर्षक मे निहित है—एक ऐसी जनता का विकास जो स्वतंत्रता की मॉग करने और उसके लिए हृदय से कार्य करने तथ उसके लिए संघर्ष करना अच्छी तरह से जानती है।

—एलन नेविन्स

हेनरी स्टील कोमेगर

मानचित्रों की तालिका

पृष्ठ

पूर्वी उत्तरी अमरीका का प्राकृतिक मानचित्र
उन स्थानों सहित जहाँ जहाँ प्रारम्भिक समन्वेषक पहुँचे .. ३१

अमरीका में उपनिवेशों की स्थापना के क्षेत्र ५४

अमरीकी क्रान्ति १०८

१८२५-१८५० में पश्चिम के अभियान में प्रयुक्त
प्रमुख सड़कें व नहरें १५७

पश्चिमी अमरीका में जन-प्रवाह के स्थलीय मार्ग ... २०३

अमरीका का राजनीतिक विस्तार २०४

दासप्रथा व पृथकतासूचक क्षेत्र २२५

गृहयुद्ध २४७

विदेशों मे जन्मे निवासियों का प्रतिशत १९२० में .. ३२५

प्रमुख रेलमार्ग १९१० में ३४०

द्वितीय महायुद्ध में संयुक्त राज्य अमरीका ... ४७०–१

कोरिया युद्ध ५५३

विषय-सूची

प्रस्तावना

१.	उपनिवेशों की स्थापना	१
२.	औपनिवेशिक परम्परा	३६
३.	साम्राज्य की समस्या	६४
४.	क्रान्ति और एकीकरण	९०
५.	संविधान का निर्माण	११७
६.	गणराज्य का अस्तित्व	१३९
७.	राष्ट्रीय एकता का अभ्युदय	१५५
८.	जेक्सन लोकशाही का समागम	१७२
९.	पश्चिम और प्रजातंत्र	१८८
१०.	आपसी संघर्ष	२१०
११.	भाई-भाई का युद्ध	२३३
१२.	नये अमरीका का जन्म	२५४
१३.	वृहद् व्यापार का विकास	२७७
१४.	श्रम तथा प्रवासी अन्तःप्रवेश	३०६
१५.	पश्चिम मे विवेक की जागृति	३३१
१६.	कृषक और उसकी समस्याएँ	३५०
१७.	सुधार का युग	३७५
१८.	अमरीका का विश्वशक्ति के रूप में अभ्युदय . ..	४०१
१९.	वुडरो विल्सन और विश्वयुद्ध	४२०
२०.	दो महायुद्धों के बीच का काल	४३८
२१.	द्वितीय महायुद्ध	४७३
२२.	शीतयुद्ध	५१०
२३.	युद्धोत्तर समस्याएँ—१९४६-१९५२	५४१
२४.	कोरिया का युद्ध—आइज़नहोवर राष्ट्राध्यक्ष	५५५
२५.	आइज़नहोवर प्रशासन	५७३

पहला परिच्छेद

उपनिवेशों की स्थापना

उत्तरी अमरीका की भौगोलिक बनावट : अमरीका में आंग्ल बस्तियों के बसने का इतिहास अप्रेल सन् १६०७ के एक सुप्रभात से आरभ हुआ जब अटलाटिक महासागर मे तूफान से अस्तव्यस्त तीन जहाजों ने कप्तान क्रिस्टोफर न्यूपोर्ट के नेतृत्व मे चीसापीक खाडी के मुहाने पर लंगर डाला। किनारे पर उतर कर लोगो ने देखा कि इस द्वीप मे विस्तृत हरे भरे मैदान हैं, विशाल वृक्ष हैं और मीठे पानी के प्रचुर चश्मो का तो कहना ही क्या ! इन जहाजों मे अर्ल आफ नोर्थम्बरलैंड का साहसी व चपल युवा पुत्र जार्ज पर्सी तथा कप्तान जान स्मिथ भी थे। पर्सी ने इस यात्रा वृत्तान्त का सजीव चित्रण करते हुए लिखा कि कैसे उन्हें घने जगल देखने को मिले और धरती पर मानो फूलों की क्यारियॉ लगी हुई थी। जगली स्ट्रावेरिज जो उन्होने चखे वे इंगलैंड मे उस समय पाये जाने वाले स्ट्रावेरिज की तुलना मे चौगुने बडे थे और स्वाद मे भी कही अधिक बढे चढे थे। इसके अलावा नदियो मे सुस्वादु मछलियॉ और मैदानो मे मुर्ग और अंडो से भरे घोसले छितराये पडे थे। छोटे छोटे शिकार की वहॉ बेहद प्रचुरता थी। अपने यात्रा-वर्णन में पर्सी ने एक आदिवासी कस्बे का उल्लेख करते हुए लिखा कि कैसे जंगली लोगो ने उन्हें खाने को मक्का की रोटी दी और तम्बाखू सुलगा कर दी जिसे वे लोग मिट्टी की चिलम में भर कर तॉबे की निगाली से पिया करते थे। कुछ समय तक तो पर्सी का वर्णन मन मोहे रखता है और वर्जीनिया प्रदेश मे उसके ये अनुभव स्वप्नलोक से लगते हैं। पर्सी के उल्लेखों मे नवागतुकों को रगबिरगे पक्षी, नदियो मे भरपूर सुस्वादु मछलियॉ और प्राकृतिक सुषमा और सौन्दर्य द्वारा मोह लेने का वर्णन मिलता है, परन्तु यह प्रकृति-सगीत शीघ्र ही एक मर्मान्तक रुदन मे डूब जाता है क्योकि पर्सी ने अपने इस वर्णन का पटाक्षेप करते हुए बताया कि बस्तियों को आबाद करने वाले यूरोपीयों पर मूलनिवासियों ने किस तरह आक्रमण किया, "वे पहाडियो से चारो हाथों पैरों

के बल मालूओं की तरह रेंगते हुए अपने मुँह में धनुषों को दबाये उन पर टूट पड़े।" वर्णन में भयंकर अकाल से मरने वाले लोगों का वीभत्स चित्र भी मिलता है कि कैसे "उनकी झोंपड़ियों से उनकी मृत देह बाहर गाड़ने के लिए कुत्तों की तरह घसीट कर निकाली गयी।"

अमरीकी भूप्रदेश में नये राष्ट्र का बीजारोपण करना कोई हँसी-मजाक या मनोरंजक खेल नहीं था। इसका अर्थ था कमरतोड़, खतरनाक, थका कर चूर कर देने वाला तथा पसीना बहाने जैसा काम। यह एक विशाल अटपटा भूभाग था जिसका एक तिहाई पूर्वी भू-भाग घने बीहड़ मार्गशून्य जगलों से भरा पड़ा था, इसके पर्वत, नदियाँ, झीलें और विशाल मैदान एक दूसरे से बढ कर थे। इसके उत्तरी भूभाग मे सर्दियों में भीषण कड़ाके की ठड पडती तो दक्षिणी भूभाग गर्मियों में तवे की तरह तप जाता। ऐसा भू-भाग जिसमें जगली जानवर भरे पड़े थे, जहाँ हिंसक उत्तेजित युद्धप्रिय चालाक जनजातियाँ बसी हुई थीं जो उस समय भी पाषाण युग की सभ्यता मे साँस ले रही थीं। कई माने में यह प्रदेश मानों प्रकृति द्वारा एक निषिद्ध प्रदेश की तरह था। इस प्रदेश तक पहुँचने के लिए खतरनाक जान जोखिम में डालने वाला समुद्री सफर ही एकमात्र जरिया था, इतना खतरनाक कि उन दिनों जितने जहाज वहाँ पहुँचे उतनी ही सख्या में जहाज सागर के गर्भ में डूब गये। परन्तु इन सारी कमियों के बावजूद वास्तव मे यह प्रदेश वास्तविक साहसी व धुन के पक्के लोगों का स्वदेश बनने जैसा था।

उत्तरी अमरीका मोटे तौर पर एक त्रिभुजाकार प्रायःद्वीप है जिसका अधिकाश समतल भूभाग जो उपजाऊ तथा सरसब्ज व सिंचाई की सुविधाओं से पूर्ण है छब्बीसवीं तथा तरेपनवीं समानान्तर अक्षांशों के बीच मे पड़ता है। यहाँ की आबहवा स्वास्थ्यप्रद है, गर्मियों मे इतनी ही गर्मी की मात्रा रहती है कि फसलें अच्छी तरह से पक सकें और सर्दी मे ऐसी गुलाबी ठड पड़ती है कि आदमी में निरतर काम करने की स्फूर्ति बनी रहती है। यूरोपीय लोग इस भूभाग में बिना किसी कष्टदायक परिवर्तन के आसानी से ही बस गये क्योंकि यह आबहवा उनको बहुत कुछ माफिक थी। वे अपनी प्रमुख फसलें, गेहूँ, जौ, रई, गाजर, प्याज, सेम की फलियाँ आदि यहाँ उगा सकते थे। इस नये प्रदेश में उन्हें दो नये महत्वपूर्ण खाद्यान्न, मक्का और आलू का पता चला। 'आदिवासी मक्का' जिसे यदि मई में बोया जाता तो जून में ही उसकी बालियाँ फूट उठतीं जिनसे बाद में पशुओं के लिए चारा, निवासियों के लिए मक्का व डंठल बिस्तरों

के काम में आते तथा इतना अधिक अनाज मिलता कि अतुलनीय था। सभी जगह शिकार के पशुपक्षियों का बाहुल्य था, लाखो की संख्या में हरिण व बारहसिंगे कुलाचें भरते थे, आकाश में कबूतरो के झुंड उड़ते तो वह धुंधला हो जाया करता था। तटीय सागर में मछलियॉ भरी पड़ी थीं तथा समय की खोज से पता चला कि अमरीका के भूगर्भ में दूसरे प्रायद्वीपों की अपेक्षा कहीं अधिक लोहा, कोयला, पेट्रोल और तॉबा है। इस भूभाग में मानों सीमाहीन वन प्रान्तर था। पूर्वी समुद्र तट—जो जरा ढलुवा था—की खाडियॉ और बन्दरगाह जहाजों के लिए अधिक सुविधाजनक रक्षास्थल साबित हुए जबकि चौडी चौडी नदियों सेंट लारेंस, कनेक्टीकट, हडसन, डेलावेर, सुसुहन्ना, पोटोमेक, जेम्स, पी-डी और सावानाह के द्वारा प्रदेश मे सुदूर तक प्रवेश सम्भव हो सका। आसानी से यहॉ पैर जमाने तथा बाद मे बिना अधिक कठिनाई के धीरे धीरे आगे बढ़ने की सुविधाएँ प्राप्त हो सकीं।

इस प्रायद्वीप की कतिपय विशेषताओं ने अमरीकी राष्ट्र के भविष्य निर्माण में अपनी गहरी छाप छोड़ी। अटलांटिक समुद्र तट के कटे-छंटे होने व कई खाड़ियो के रहने से केवल कुछ बड़े बड़े उपनिवेश न बसकर छोटे छोटे उपनिवेशों की बसावट अधिक हुई। शीघ्र ही वहॉ पन्द्रह बस्तियॉ बसी जिनमे नेवास्कोटिया और क्यूबेक भी थीं और इन बस्तियों ने अमरीकी राष्ट्र के अभ्युदयकाल मे उसे विभिन्न समृद्ध संस्थानो से सुशोभित किया। प्रत्येक बस्ती का अपना ही तौर तरीका था, और वे उस पर दृढता से जमी रहीं। जब स्वाधीनता मिली तो इनमे से तेरह उपनिवेशों को वैसे ही बनाये रख कर केवल सीधा-सा संघ मात्र बना दिया गया। तटवर्ती मैदान की पृष्ठभूमि में फैली हुई विशाल बीहड़ पर्वत श्रंखला है जिसे अपालाशियन पर्वतश्रेणी कहा जाता है। यह पर्वत श्रंखला इतनी दुर्गम है कि इन पर्वतों को पार कर इनके निम्नवर्ती प्रदेशों में अभियान आरंभ होने के पूर्व ही उपनिवेश तेजी से घने आबाद हो गये थे। जब जनसंख्या ने पश्चिम की ओर प्रसार किया और लोगो ने इन पर्वत-मालाओ को पार किया तो उनके सामने विस्तृत केन्द्रीय मैदान फैले हुए थे जिन्हें मिस्सिसिपी का कछार कहा जाता है। इस भूभाग में संयुक्त राष्ट्र अमरीक का लगभग आधा भाग समा जाता है और संयुक्त राष्ट्र अमरीका के समस्त खेतिहर भूभाग में यह प्रदेश आधे से अधिक है। यह इतना सपाट है कि यहाँ आसानी से आवागमन संभव हो सका, विशेष रूप से इसलिए भी कि पूर्व और पश्चिम में सुदूर तक नौकायन के उपयुक्त नदियाँ—विसकोंसिन, आइओवा, इलि-

नोइस, ओहियो, कम्बरलैंड, टेनेसी, अरकासास और रेड बहती हैं। इस भूभाग के उत्तर से दक्षिण में महान नदियाँ मिस्सिसिपी-मिसूरी बहती हैं। बसनेवाले यूरोपीय लोग आसानी से इस प्रदेश मे बस गये। समुद्रतटीय राष्ट्रो व पश्चिमी यूरोप के सभी स्थानों के लोग इस भूभाग में आकर समान स्तर पर आसानी से आपस में घुलमिल गये। यह भूभाग एक ऐसा विशाल जलाशय बन गया जिसमें नवीन प्रजातंत्र और नव अमरीकी भावनाओं की विकास हुआ।

सुदूर पश्चिम में खुश्क आबहवा वाला ऊँचा पठारी क्षेत्र है जिसके आगे ऊंचे पथरीले पर्वत हैं। खुश्क व सूखी आबहवा वाले उन मैदानो व बंजर पथरीले पहाडो के कारण भी आबादी कई वर्षो तक आगे इस दिशा में नही बढ पायी।

परन्तु प्रशान्त महासागर तटवर्ती पहाडी ढलानों पर सोना व अन्य धातुओं के उपलब्ध होने के कारण कई साहसी प्रयाणकर्त्ताओ का ध्यान मध्यवर्ती मैदानो को मूलनिवासियों से हस्तगत करने के पहले ही इधर आकर्षित हो चला। केलिफोर्निया उन दिनों तब भी आबाद व शक्तिशाली राज्य था जबकि यह खुश्क प्रदेश उसे पहले से बसे हुए दूसरे भागो से अलग किये हुए था। ठीक यही हाल ओरेगोन का था। परन्तु खुश्क मैदानो की यह पट्टी ऐसी ही वीरान नही रही। भैसों के शिकारियों का अनुकरण करते हुए मवेशी पालने वाले लोग शीघ्रता से इन मैदानों मे छा गये। जबकि रेलमार्गो द्वारा इस वृक्ष व वनस्पति-हीन प्रदेश को सर करने के लिए आवश्यक सामग्री—जैसे कटीले तार, पन-चक्कियाँ; खेती के काम के सामान—पहुँचायी जाने लगी तो यह प्रदेश भी शीघ्र ही आबाद हो चला। धीरे धीरे ऐसे बागानो की सख्या बढ गयी जिनमे खेती सिचाई से की जाती थी। १८९० तक 'सीमाप्रान्त' माने जाने वाला यह भूभाग मानों लुप्त हो गया और बीहड पश्चिम का स्वरूप ही दूसरा हो चला।

आरभ से ही यह अवश्यभावी था कि अमरीका में बस्तियों की बसावट आम तौर पर पूर्वी छोर से पश्चिमी छोर की ओर हो। अटलांटिक सागर तट से सेंट लारेंस नदी और महान झीले—जिनके द्वारा इस भूभाग के आतरिक भागों में सुगमता से प्रवेश संभव था—पूर्व व पश्चिमी दिशा मे थी। उत्तरी अपाला-शियन पर्वतमाला के मध्य मोहवाक घाटी—जिसमे एरी नहर बाँधी गयी—भी पूर्व पश्चिम के बीच का सुगम मार्ग था। ओहियो घाटी जो प्रवासियो के प्रसारण की तीसरी सुगम वाहिनी सिद्ध हुई वह भी पूर्व व पश्चिम दिशा में थी। आश्चर्यजनक रूप से यह बात कही जा सकती है कि आगंतुक प्रवासियों

ने अटलांटिक महासागर से पथरीले प्रशान्तसागरीय पर्वतमालाओं तक देशान्तर रेखाओं के समानान्तर ही प्रयाण किया और इसी ओर बसे। यह भी अवश्यंभावी था कि लुइसियाना पर फ्रांसीसी प्रभुत्व और केलिफोर्निया तथा दक्षिण पश्चिम पर मेक्सिको की सार्वभौमिकता आंग्ल भाषाभाषी अमरीकी लोगों के आवागमन मे वृद्धि होते ही मोम की तरह पिघल कर बह जाये। यहाँ तक कि दूरदृष्टा लोगों ने औपनिवेशिक काल मे ही यह भविष्यवाणी की थी कि जो लोग ओहियो घाटी पर नियन्त्रण रखेंगे मेक्सिको भी उनके ही हाथों रहेगा। ठीक यह बात भी उतनी ही सत्य थी कि जिन लोगों का प्रभुत्व मिस्सिसिपी के कछार पर था वे लोग भी उसके दक्षिण पश्चिमी भूभाग के अधिकारी होकर ही रहते। सख्या और शक्ति मे अधिक अमरीकी लोगो ने इन प्राकृतिक विशेषताओं से अधिक से अधिक लाभ उठाया।

गोरे औपनिवेशिको का यह सौभाग्य था कि उत्तरी अमरीका के आदिवासी एक तो सख्या मे बहुत कम थे और साथ ही वे इतने पिछड़े हुए थे कि उनके बसने मे भयंकर रूप से बाधक नही बन सके। उन्होंने कभी कभी परेशान जरूर किया, बस्तियो की बसाहट मे इससे देरी अवश्य हुई परन्तु वे इन बस्तियो की स्थापना को रोक नहीं सके। जब इस भूभाग मे सर्वप्रथम यूरोपीय बसे तब मिस्सिसिपी के पूर्व में कदाचित दो लाख से अधिक मूलनिवासी नहीं थे और मेक्सिको के उत्तरी भूभाग मे निश्चय ही आदिवासियो की संख्या पॉच लाख से अधिक नही थी। केवल धनुषबाण, गदा और कुल्हाडी से सज्जित युद्धकला से कोरे केवल मुठभेड में पारगत, ये आदिवासी अपने से अधिक कुशल, युद्धसंचालन कला मे पारगत व सैनिक शिक्षा से दक्ष शस्त्रसज्जित यूरोपीय लोगो के सामने खेत की मूली की तरह थे। इसके अलावा इन लोगो ने कभी भी प्रकृति पर विजय पानी नही चाही। वे मुख्यतया शिकार व मछली मार कर ही निर्वाह करते थे, अतएव उनके साधन स्रोत भी बुरी हालत में थे। मेक्सिको के उत्तर में पायी जानेवाली मूल जातियॉ जो ५९ कबीलों मे विभक्त थी अल्पसख्यक थी, और गोरे लोगों के विरुद्ध दृढ़ एकता मे संगठित भी नही हो पायी थी। इनमे सबसे अधिक शक्तिशाली इरोक्वोस कबीले की पॉच आदिम जातियॉ थी जिनका गढ पश्चिमी न्यूयार्क था। इन लोगों का अपना जातीय सगठन था और इन लोगों की आक्रामक नीति होने के कारण पड़ौसी आदिवासी दूसरे कबीले अल्गोनक्विन इनसे बुरी तरह भय खाते थे। दक्षिणपूर्व में क्रीक जनजातियों का दृढ़ सगठन था जो मस्कोजियन कबीले के थे। उत्तर

पश्चिम के दूरवर्ती उत्तरी मैदानों में सायक्स के कबीले का कमजोर जातीय संगठन भी अस्तित्व में था।

नयी बस्तियाँ बसाने वाले गोरे लोगो और इन ताम्रवर्णी आदिवासियों के मध्य आरम में कई महत्वपूर्ण संघर्ष हुए। प्रारमिक बस्तियों को बसे देर ही नहीं हुई थी कि शीघ्र ही उनमें और स्थानीय आदिवासियों में संघर्ष छिड़ गया। इसका एक अच्छा उदाहरण न्यू इंगलैंड का पिकेट युद्ध था, जिसमें सन् १६३७ में कनेक्टीकट घाटी मे बसने वाली पिकेट जन जाति का पूरी तरह से उन्मूलन ही हो गया। दूसरा उदाहरण वर्जीनिया में बसे प्रथम गोरे लोगों और पोवथान जातियों के बीच का सघर्ष था जो १६२२ में आरंभ हुआ, परन्तु अंत मे इस संघर्ष मे इन जातियों की बुरी तरह पराजय हुई। परन्तु जैसे जैसे नये गोरे आगंतुकों ने विशाल भूभागों पर अधिकार कर आगे बढ़ना आरंभ किया वैसे ही इनके मुकाबले के लिए इन आदिवासी जन जातियों ने आपसी सगठनों की रचना की। उदाहरण के तौर पर सम्राट फिलिप ने न्यू इंगलैंड की प्रमुख जन जातियों को संगठित करने मे सफलता प्राप्त की। ये जातियाँ दो वर्षों तक बहादुरी से लडती रहीं परन्तु अंत में इनको बुरी तरह से कुचल दिया गया। ठीक इसी तरह के संगठित कड़े प्रतिरोध का सामना उत्तरी करोलिना के गोरे लोगों को तुस्कोरा युद्ध तथा दक्षिणी करोलिना वालों को यामासी युद्ध में करना पडा। ये संघर्ष बड़े पैमाने पर हुए तथा अधिक कड़े साबित हुए और इनसे गोरे लोगों के जान माल को भी गंभीर हानि पहुँची। अंत मे एक नये ढंग के युद्ध का स्वरूप सामने आया जिनमें इन जन जातियों को यूरोपीय लोगों का भी सहयोग मिला। कतिपय उत्तरी जातियाँ फ्रांसीसी लोगों के साथ मिल गयी और दक्षिण की कई जन जातियों को स्पेनी लोगों से हथियार व गोली बारूद प्राप्त हुआ। सौभाग्यवश आग्ल भाषा-भाषी गोरे लोगों के पक्ष में शक्तिशाली इरोक्विस कबीला था जिसने फ्रांसिसियों के विरुद्ध अभियान में सक्रिय सहायता दी। अंत में आक्रामक आदिवासी भी इन युद्धों में पहले की तरह ही बुरी तरह से कुचल दिये गये।

आरंभ के निवासी : इस नये बीहड़ भूभाग में अंग्रेजों की जो पहली बस्ती बसी उसके निवासी स्वदेश से साहसिक टोलियों में यहाँ आये थे। क्रिस्टोफर न्यूपोर्ट के नेतृत्व मे जो जहाज १३ मई, १६०७ को न्यू हेम्पटन रोड्स में उतरे उनमें केवल पुरुष ही पुरुष थे। इन्होंने जेम्सटाउन बसाया जहाँ एक

किला, गिर्जाघर, गोदाम और कुछ झोंपड़ियाँ खड़ी की गयीं। जब इस बस्ती के लोगों पर आपत्ति का पहाड़ टूटा तो कप्तान जान स्मिथ ने अपूर्व धैर्य्य, साहस व सूझबूझ का परिचय दिया। फलस्वरूप दूसरे वर्ष ही वह इस बस्ती का नायक बन गया और एक तरह से व्यावहारिक तौर पर इसका निरंकुश तानाशाह ही बन बैठा। धीरे धीरे खेतीबाड़ी की जाने लगी। सन् १६१२ में जान रोल्फ ने तम्बाखू की खेती आरंभ की और लन्दन के बाजारों में इनके ऊँचे दाम मिलने के कारण लगभग सभी गोरे निवासियों ने इसीकी खेती आरंभ की, यहाँ तक कि बाजार व गलियों तक में तंबाखू के पौधे लगा दिये गये। इसके साथ साथ सूअरों व चौपायो की संख्या में भी वृद्धि हुई।

फिर भी प्रगति की रफ्तार धीमी थी। सन् १६१९ तक वर्जीनिया की आबादी दो हजार से अधिक नहीं थी। १६१९ का यह वर्ष तीन बातों के लिए महत्त्वपूर्ण है। पहली तो यह है कि नब्बे कुमारियों को लेकर इंग्लैड से एक जहाज वहाँ पहुँचा। ये कुमारियाँ उन निवासियों को पत्नी के रूप में प्राप्त हो सकती थीं जो उनके यातायात के खर्चे के एवज में १२० पौंड तंबाखू देने को तैयार थे। इस 'माल' का इतने हर्ष से स्वागत किया गया कि शीघ्र ही बाद में ऐसे कई दल अमरीका भेजे गये। इतनी ही महत्वपूर्ण बात प्रतिनिधि सरकार का सूत्रपात था। तीस जुलाई को जेम्सटाउन के गिरजे में जेम्स रोल्फ ने—जिसने आदिवासी जनजाति पोकान्होटास की महिला से विवाह करके आदिवासियों से अस्थायी शांति संधि कायम की—इस भूभाग में प्रथम प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता की। इस धारासभा में गवर्नर, छः कौन्सलर और दस बागानों से चुने गये प्रतिबागान दो दो बर्गेस (प्रतिनिधि) थे। तीसरी महत्त्वपूर्ण घटना अगस्त मे हब्शी गुलामों से भरे डच जलयान का आगमन था। इनमे से बीस गुलाम गोरे लोगों को बेच दिये गये।

जब कि वर्जीनिया इस तरह प्रगति की दिशा में अपनी जड़े जमा रहा था तब हालैंड में बसे अंग्रेज काल्विन मतावलबियों का दल इस नयी दुनिया मे प्रवेश करने की उधेड़बुन में था। ये धार्मिक यात्री (पिल्ग्रिम्स) जिन्होंने इंगलैंड के राजा की धार्मिक सर्वोपरिता अस्वीकार की और अपने गिरजे की स्थापना करनी चाही नाटिंगमशायर के स्क्रूबी ग्राम के वासी थे। इन्हें इसके लिए इंगलैंड में उत्पीड़ित किया जाने लगा था। सभी मानों में ये लोग आदर्श जनसमूह थे। इन लोगों के तीन असाधारण नेता थे, जिनमें एक विशाल-हृदय उदार विचारक केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के स्नातक अध्यापक जान रोबिनसन थे। धार्मिक नेता विलियम ब्रेवस्टर भी केम्ब्रिज के स्नातक थे। तीसरे नेता विलियम ब्राडफोर्ड

थे जो चतुर, सूझबूझवाले तथा विचारवान व्यक्ति थे। बाकी के लोग आदर्शवान, उद्योगी और गंभीर व्यक्तित्व वाले थे। इन्हें इंगलैंड में जनमत की आक्रामक भावनाएँ सहन करनी पड़ी, हालैंड मे इन्होने एकाकी तथा कठोर परिश्रम से जीवनयापन किया था। अमरीका मे बसने का अधिकारपत्र पा कर इन्होंने मेफ्लावर जहाज मे रसद् पानी जुटा कर इस नये बीहड़ प्रदेश की कठिनाइयों का सामना करने के लिए कमर कस ली। प्लाइमाउथ बंदरगाह से रवाना होकर १६२० मे ११ दिसबर (पुरानी गणना तिथि) को इन एक सौ दो धार्मिक यात्रियों ने मसाचुसेट्स तट पर अपना झडा लहराया। उसी साल सर्दी के दिनो मे इनमे से अधिकाश व्यक्ति ठड और सूखे के कारण मर गये। परतु दूसरे वर्ष ग्रीष्म ऋतु में इन्होंने बहुत अच्छी फसल बटोरी और पतझड़ में नवागंतुकों के एक दल को लेकर दूसरा जहाज वहाँ आ पहुँचा। इन लोगों ने कभी हिम्मत नहीं हारी। जब आदिवासी नेता कानोनिकस ने इन्हें युद्ध की चुनौती के तौर पर साँप की केचुली मे लिपटे तीर भेजे तो विलियम ब्राडफोर्ड ने मुँहतोड उत्तर देते हुए उसी केचुली मे गोलियाँ भर कर भेजीं।

तब शीघ्र ही एक के बाद एक कई दूसरी आग्ल बस्तियों का अभ्युदय हुआ। स्वदेश तो मानों शहद की मक्खियों के छत्ते के समान था जहाँ से टोले के टोले इस नयी दुनिया के लिए रवाना होने को तैयार थे। १६२९ मे मई माह के एक दिवस लदन मे अपार उत्साह व उत्तेजना का दृश्य दिखायी दिया। पाँच जहाज जिनमे चार सौ मवेशी थे—इतनी भारी तादाद में मवेशी पहली बार ही उत्तरी अटलाटिक के पार भेजे गये—मसाचुसेट्स खाडी के लिए रवाना होने वाले थे। जून के अंत के पहले ही वे सालेम आ पहुँचे जहाँ पहली हेमन्त ऋतु मे जान एंडीकोट और उसके मुट्ठी भर साथियों ने एक शहर की नींव डाल दी थी। ये लोग प्यूरिटन मतावलंबी थे अर्थात् ये वे लोग थे जो इंगलैड के गिरजे के सदस्य थे और बाद में उसमे सुधार करने तथा उसके सिद्धातो को पवित्र करना चाहते थे और अंत मे इन्हे इससे अलग होने को बाध्य होना पड़ा और इन्हीं लोगों का विशाल प्यूरिटन समाज स्वदेश छोडकर अमरीका के लिए रवाना हो चला। १६३० की वसन्त ऋतु मे जान विन्थ्रोप ९०० लोगों के साथ ग्यारह जहाजों में सालेम आ पहुँचे। इतना विशाल जन समुदाय इसके लिए पर्याप्त था कि आठ बडे शहरों को बसा सके जिनमें बोस्टन भी एक था। मसाचुसेट्स खाड़ी तट की बस्ती इतनी तेज़ी से बढने लगी कि शीघ्र ही उसकी शाखाएँ दक्षिण और पश्चिम मे फैलने लगी। सालेम के पादरी रोजर विलियम्स

ने साहस के साथ राज्य और धर्म की पृथक्ता तथा अन्य उग्र विचारों की शिक्षा दी थी। रोद् द्वीप के बीहड प्रदेश मे सन् १६३६ मे पूर्ण धार्मिक सहनशीलता के आधार पर प्रोविडेन्स नगर की स्थापना की गयी। इसी वर्ष दृढ़ निश्चयी पादरी थामस हूकर के नेतृत्व में केम्ब्रिज के पश्चिमी प्रदेश से उनके अनुयायिओं के विशाल समाज ने कनेक्टीकट के लिए प्रयाण किया। १६३४ में एक दूसरी महत्वपूर्ण बस्ती मेरीलैड की स्थापना हुई। बस्ती उदार दृष्टिकोण वाले द्वितीय लार्ड बाल्टीमोर सेसिलिस कल्वर्ट के मार्गदर्शन मे बसायी गयी। पहली बार यहाँ जो सम्भ्रान्त लोग बसने गये वे इस बस्ती के जन्मदाता की तरह ही कैथोलिक मतावलंबी थे जबकि इस बस्ती की अधिकाश प्रजा प्रोटेस्टेण्ट मतावलंबी थी। अतएव इस बस्ती में धार्मिक सहनशीलता का होना अवश्यम्भावी था और मेरीलैड मानों धार्मिक स्वतंत्रता का निवासस्थान था जहाँ बसने को विभिन्न मतावलंबी आकर्षित होने लगे। बहुत दिनो से वर्जीनियावासियों में से बहुत से लोग लगभग सन् १६५० मे अल्बेमारेल साउंड के निकट भूमि लेकर बसने लगे थे। यह वही प्रदेश है जिसे उत्तरी करोलिना कहा जाता है।

इसी तरह एक समृद्ध उपनिवेश के लिए भूभाग जीत कर प्राप्त किया गया। डच लोगों ने एक अंग्रेज साहसी नाविक हेनरी हडसन को उस नदी का पता लगाने के लिए भेजा जो आज भी उसी के नाम से प्रख्यात है। यह काम १६०९ मे पूरा हुआ। 'फर' चमड़े के डच व्यापरियों ने हडसन का अनुसरण किया और १६२४ मे मानहाट्टन द्वीप पर एक छोटी सी बस्ती बसायी गयी। 'न्यू नीदरलैड' का यह प्रदेश विकसित अवश्य हुआ परन्तु बहुत ही धीमी गति से, साथ ही यहाँ स्वराज्य जैसी सस्थाओ व विचारधाराओं का जन्म नहीं हो पाया। इस दौरान मे अंग्रेजो ने सम्पूर्ण तट पर अपने दावे को कभी भी नही छोडा और कनेक्टीकट बस्तियो के निवासी अपने इन उत्पाती पड़ौसियों को पकडने के लिए आतुर थे। ब्रिटिश अमरीका की हृदयस्थली मे इस विजातीय केन्द्र को क्यों बसने दिया जाय? चार्ल्स द्वितीय ने अपने भाई ड्यूक आफ यार्क को यह क्षेत्र दे दिया जिसने दृढ़ता से कार्यवाही की। १६६४ की ग्रीष्म ऋतु मे न्यू एम्सटर्डम मे तीन युद्धपोत आ धमके। इन जहाजो मे सैनिक थे तथा इन्हें कुमुक कनेक्टीकट से पहुँचायी गयी जबकि मसाचुसेट्स और लॉग द्वीप से भी सैनिक भेजने का विश्वास दिलाया गया था। बहुत से डच लोगों ने जो निरंकुश तानाशाही से ऊब चुके थे इस तरह के सत्ता परिवर्तन का विरोध नहीं किया। परन्तु वृद्ध पिटर स्टुयेवेसेन्ट ने घोषणा की कि वह आत्मसमर्पण

करने की अपेक्षा मर जाना पसन्द करेगा और उसकी लाश को बाहर घसीट कर फेंके जाने के बाद ही इस उपनिवेश पर अंग्रेजों का अधिकार हो सकेगा। उसके सामने दूसरा कोई विकल्प भी नही था। इस बस्ती का नया नाम न्यूयार्क रखा गया और इस पर डच झंडे के बजाय ब्रिटिश ध्वज लहरा उठा। बीच में केवल आग्ल-डच युद्ध के दिनो (१६७२-१६७४) को छोडकर अमरीकी स्वाधीनता संग्राम के अंत तक ब्रिटिश ध्वज वहाँ लहराता रहा। वास्तव में ब्रिटिश ध्वज अब केनेबेक से लेकर फ्लोरिडा तक लहराने लगा।

फिर भी एक उल्लेखनीय उपनिवेश की नीव इस शताब्दी के अंत तक दृढ़ता से नही जम पायी थी। बहुत से डच, ब्रिटिश और स्वीडिश लोगो ने उस क्षेत्र में बसना आरंभ कर दिया था जो बाद में चल कर पेन्सिलवानिया और डेलावेर प्रदेश कहलाया। जब दयालु हृदय दूरदर्शी विलियम पेन के हाथो इस क्षेत्र की बागडोर आयी तो वह क्वेकर्स के सिद्धान्तों के आधार पर एक आदर्श कामनवेल्थ की स्थापना करने को तैयार हो गया। क्वेकर मतावलम्बियों को प्रसिद्ध विचारक वाल्तायर ने सबसे सच्चे ईसाई ठहराये थे। उसने मूल-निवासियों से भूभाग को जीत कर प्राप्त करने के बजाय उदारतापूर्वक मैत्री से खरीद कर उन्हें शान्त बनाये रखा। लोगों को बसने के लिए आकर्षित करने के लिए उसने कई उदार रियायतो की घोषणा की, जैसे वहाँ बसने वाले जमीन पा सकेंगे, अपने घर बना कर सुख से रह सकेंगे, अपने पड़ौसियो के साथ न्याय और समानता का व्यवहार रहेगा, किसी भी ईसाई के साथ धार्मिक भेदभाव नही बरता जायेगा आदि। नागरिक मामलों में कानून का शासन होगा और लोगो को कानून का पालन करना होगा। उसने निर्देश दिया कि उसके भ्रातृत्व प्रेम का शहर फिलाडेल्फिया इस ढंग से बसाया जाये कि हर घर के साथ बाग हो जिससे कि यह शहर "हरा भरा देहाती कस्बा-सा लगे और सदा ही अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता रहे।" १६८२ मे वह स्वयं सौ नवागतुको के साथ यहाँ चला आया। पेन्सिलवानिया का आश्चर्यजनक गति से विकास हुआ, यूरोप और ब्रिटेन से विभिन्न समुदायों के लोग वहाँ बसने को आकर्षित हुए; फिर भी इस भूभाग ने अपना आदर्श क्वेकर मत के अनुसार रखा।

मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि अंग्रेजों और दूसरे लोगों को अटलांटिक के पार भेजने और नये राज्यों की स्थापना में दो प्रमुख साधन काम में लिये गये। यह शाही अधिकारयुत व्यवसायी कपनी ही थी जिसने बुनियादी तौर पर लाभ के दृष्टिकोण से वर्जीनिया और मसाचुसेट्स की नीव डाली। लंदन कंपनी

को—यह नाम इसलिए पड़ा क्योंकि इसके अधिकांश हिस्सेदार लंदन-वासी थे—१६०६ मे इस भूभाग मे ३४° और ४५° देशान्तरो के मध्य उपनिवेश बसाने का अधिकारपत्र प्राप्त हुआ। प्लाइमाउथ कंपनी को—जिसके हिस्सेदार प्लाइमाउथ, ब्रिस्टल और दूसरे शहरों में रहते थे—भी इसी वर्ष ३८° और ४५° देशान्तरो के मध्य उपनिवेश बसाने का अधिकारपत्र मिला था। ये कपनियॉ जमीनें दे सकती थीं, खानें खोद सकती थीं, अपने सिक्के ढाल सकती थी तथा अपने उपनिवेशो की सुरक्षा व्यवस्था कर सकती थी। सम्राट ने—जिनसे इन कंपनियो को ये अधिकार प्राप्त थे—इन उपनिवेशो की सरकारो पर अपना नियंत्रण रखा। गंभीर आर्थिक क्षति उठाने के बाद १६२४ मे सम्राट ने लंदन कंपनी का अधिकार छीन लिया और वर्जीनिया को शाही उपनिवेश घोषित कर दिया गया। प्लाइमाउथ कंपनी ने कई छोटी छोटी उत्तरी बस्तियों को जन्म दिया तथा मछली पकड़ने की चौकियॉ कायम कीं परन्तु वे आर्थिक लाभ नही उठा सकी और १६३५ मे पुनर्गठित होने के बाद कपनी ने अपने आपको 'केवल निर्जीव लाश' की तरह घोषित किया तथा सरकार से अपने अधिकारपत्र को रद्द करने की मॉग की।

भले ही लदन कपनी और प्लाइमाउथ कंपनी आर्थिक दृष्टिकोण से असफल रही फिर भी उन्होने इस भूभाग को आबाद करने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। लदन कंपनी सही माने मे वर्जीनिया उपनिवेश की जन्मदाता कही जा सकती है और प्लाइमाउथ कंपनी और उसकी उत्तराधिकारिणी कौंसिल फार न्यू इगलैड ने मेन, न्यू हेम्पशायर, और मसाचुसेट्स मे एक के बाद एक कई शहरो को आबाद किया। तीसरे संस्थान मसाचुसेट्स बे कारपोरेशन का गठन अनोखे ढंग का था और उसका अपना विशेष लक्ष्य था। इसका जन्म उन हिस्सेदारो द्वारा हुआ जिनमे अधिकाश प्यूरिटन मतावलंबी थे और जिनका उद्देश्य लाभ-सचय के साथ साथ राष्ट्रीय हित भी था। पुरानी कंपनियों द्वारा लाभाश बॉटने में असफल रहने पर भी इन्होंने निश्चयपूर्वक यह विश्वास बनाये रखा कि सुव्यवस्था होने पर लाभ उठाया जा सकता है। चार्ल्स प्रथम ने सन् १६२९ के पूर्वार्द्ध मे इसे अधिकारपत्र प्रदान किया। तभी एक अजीब सी स्थिति पैदा हो गयी। जब सम्राट और राजकीय गिरजा वालो के गुट ने पादरी लाड के नेतृत्व मे इगलैड के चर्च पर अपना अधिकार जमा लिया तो अधिकाश प्यूरिटन नेताओं ने स्वदेश छोडने की इच्छा व्यक्त की। इन लोगों के पास संपत्ति थी, सामाजिक प्रतिष्ठा थी तथा इनमे स्वाधीनता की भावना भरी पडी थी।

वे केवल लंदन स्थित कंपनी के नौकरों की तरह मसाचुसेट्स खाड़ी तट पर नहीं जाना चाहते थे। इसके अलावा वे लोग वहाँ जाकर स्वाधीनतापूर्वक अपने मतानुसार धार्मिक राज्य व उपासना पद्धति स्थापित करना चाहते थे। इसलिए इस कारपोरेशन के प्रमुख प्यूरिटनों ने शेष हिस्सों को खरीद लिया और शाही अधिकारपत्र प्राप्त करके अमरीका के लिए जहाजों में रवाना हो गये। इस तरह एक व्यावसायिक कंपनी ने स्वशासित उपनिवेश का स्वरूप ग्रहण कर लिया—यह उपनिवेश था मसाचुसेट्स वे उपनिवेश।

अमरीकी भूभाग को आबाद करने का दूसरा प्रमुख साधन था जमीन्दारी की बख्शीश आदि। इन जमीन्दारियों का मालिक इगलैंड के सामन्त या कुलीन वर्ग में से होता था जिसके पास प्रचुर धनराशि होती और सम्राट उसे अमरीका मे भूभाग व जमीन्दारी उसी तरह देता था जिस तरह इगलैंड मे सामन्तो को राजकीय उदारता के कारण जमीन्दारी बख्शी जाती थी। पुरानी आग्ल कानून की परिपाटी यही रही है कि वह भूभाग जिस पर किसी का अधिकार न हो राजा का होता है और अमरीका भी इसी कानून के अंतर्गत रहा। लार्ड बाल्टीमोर को मेरीलैंड की जागीर मिली, नौसेनाधिकारी—जिसका इगलैंड का सम्राट आर्थिक रूप से ऋणी था—के पुत्र विलियम पेन को पेन्सिलवानिया की जागीर मिली और चार्ल्स द्वितीय के कतिपय राजकीय चाटुकारों को करोलिनास में बडी बड़ी जागीरें बख्शीश मे मिली। इन सभी सामन्तों को सरकार बनाने के व्यापक अधिकार दिये गये। लार्ड बाल्टीमोर जो स्टूअर्ट राजाओं की दैवी शक्ति का समर्थक था, आरभ मे प्रजा को किसी भी तरह के कानून बनाने के अधिकार देने के पक्ष मे नही था, परन्तु बाद मे उसे भी जनमत के आगे झुक कर धारा-सभा के गठन को स्वीकार करना पडा। पेन इनसे अधिक समझदार था। १६८२ में उसने प्रतिनिधि सभा आमन्त्रित की, जिसके सभी सदस्य बस्ती के लोगो द्वारा चुने हुए थे। उसने इन्हें सविधान या 'महान् अधिकारपत्र' की रचना करने की अनुमति प्रदान की। इसके अनुसार शासन सचालन के अधिकाश अधिकार जनता के प्रतिनिधियों के हाथों मे आ जाते थे और पेन ने इस योजना को स्वीकार कर लिया।

जैसे ही इस बात का पता चला कि अमरीका म जिन्दगी समृद्ध और सुखी हो सकती है तो यूरोप से एक दम ही विशाल पैमाने पर जन समुदाय अमरीका मे बसने के लिए उमड पड़े। इस धारा प्रवाह का वेग नियमित नही था तथा इन प्रयाणकर्त्ताओं की भावनाएँ भी विभिन्न थी। पहले

दो जन-प्रवाह मसाचुसेट्स और वर्जीनिया की ओर गये। १६२८ से लेकर १६४० तक इंगलैड मे प्यूरिटनो की दशा दयनीय हो गयी थी। उन्हें सदा आतंकित और दुखी जीवन गुजारना पड़ रहा था। वे लोग वास्तविक रूप से धार्मिक कारणों से प्रताड़ित किये जा रहे थे। शाही अधिकारी चर्च के पुराने स्वरूप को पुर्नजीवित करने मे जुटे-हुए थे, वे धर्म को राजा और आर्कबिशप के आधीन रखने जा रहे थे। राजनीतिक और धार्मिक उथलपुथल वास्तव मे देश को झकझोर रही थी। राजा ने पार्लियामेंट को भंग कर दिया था और उसके बिना भी दस वर्षों तक काम चलाता रहा। उसने अपने प्रमुख प्रतिद्वन्द्वियों को जेल मे बद कर दिया था। जैसाकि राजा का दल देश में स्वाधीनता को नष्ट करने पर तुला हुआ था, अधिकाश प्यूरिटनो को यह विश्वास हो चला कि देश छोड़कर अमरीका मे नये राज्य की स्थापना करना ही सर्वोत्तम मार्ग है। १६२८-१६४० के महान प्रयाण मे इंगलैड के लगभग बीस हजार श्रमप्रिय लोगों ने अपने घर छोड़कर अमरीका के लिए अभियान कर दिया। इन लोगो तथा मवेशियो व फर्नीचरो से भरे जहाजो ने अटलाटिक सागर के कम-से-कम भी बारह सौ चक्कर काटे। बोस्टन दुनिया का महत्वपूर्ण बन्दरगाह बन गया जहाँ चारो ओर सक्रियता व हलचल बिखरी पडी थी। हार्वर्ड कालेज स्थापित किया गया। इन आगन्तुकों मे फ्रैंकलीन, आडम्स और इमर्सन, हाथोर्न और लिंकन के पूर्वज भी थे। इस महाप्रयाण की एक बडी विशेषता यह थी कि केवल कुछ व्यक्तियो या परिवारों ने ही निष्क्रमण न करके पूरे के पूरे प्यूरिटन समुदायों ने निष्क्रमण किया था। इगलैड के कई शहरो की आबादी आधे से भी कम हो गयी। नयी बस्तियों मे केवल व्यापारी और किसान ही नही थे वरन् इनमें डाक्टर, वकील, अध्यापक, व्यवसायी, कारीगर और धार्मिक पादरीगण भी थे। न्यू इगलैड मानो पुराने इंगलैड की दूसरी झलक बन गया, यह एक ऐसा अंकुर था जिसमे भावी विकास की कोपले फूट रही थी।

१६४२ में जब इंगलैड में गृहयुद्ध छिडा तो प्यूरिटनों के आगमन का वेग शिथिल हो चला, परन्तु शीघ्र ही शाही समर्थक जनसमुदाय अमरीका मे बसने को चल पडे। १६४९ में जब कि चार्ल्स का सिर काटा गया इन लोगो की संख्या में अधिक वृद्धि हो चली, और यह क्रम १६६० तक जब कि पुनः शाही-सस्थापन हुआ जारी रहा। जैसा कि प्यूरिटनो के प्रवेश से न्यू इंगलैड की आबादी तीस हजार तक पहुँच गयी, वैसे ही इंगलैड के राजभक्त

लोगों के निष्क्रमण से वर्जीनिया की आबादी १६७० मे करीब करीब चालीस हजार तक पहुँच गयी। राजभक्तो के इस समुदाय मे सभी सैनिक नही थे, अधिकाश लोग धनाढ्य वर्ग के थे। इस तरह अमरीका मे पूजी का भी बडे पैमाने पर प्रवेश हुआ। पूजी होने के कारण उन्होने बड़ी बड़ी जमीन्दारियॉ खरीद ली और उनमे खेती करवायी। वर्जीनिया जिसमे पहले गरीब लोग भरे पडे थे अब समृद्ध लोगो से भर गया। इस निष्क्रमण के फलस्वरूप भी अमरीकी इतिहास मे कई नये नामो को स्थान मिला। वाशिगटन के प्रपितामह जान वाशिगटन १६५७ मे वर्जीनिया आये थे। मार्शल परिवार की वश परम्परा के अनुसार उनके पूर्वज गृहयुद्ध के समय शाही नौसेना मे अधिकारी थे और जब राजशाही के बुरे दिन आये तो वे वर्जीनिया चले आये। इस जनप्रवाह के बाद हमे वर्जीनिया के इतिहास मे हेरिसन वश, केरी, मेसन, कार्टर और टेलर वशो के उल्लेखनीय नाम मिलते हैं।

परन्तु मसाचुसेट्स और वर्जीनिया के सस्थापकों के बीच वास्तविक सामाजिक अंतर बताया जा सकता है। वे लोग जिन्होंने दोनो ही राष्ट्रों को महान् बनाया वास्तव मे अधिकाशतः मध्यमवर्ग के थे। इंगलैड के वाशिंगटन के पूर्वज छोटे से नाममात्र के जमींदार थे। नार्थम्पटनशायर में सुल्ग्रेव ग्राम मे उनकी छोटी-सी जागीर थी, तथा एक नार्थम्पटनशायर के मेयर थे। ऐसा लगता है कि जान मार्शल के प्रपितामह बढई थे। वर्जीनिया में प्रतिष्ठित प्रथम रान्डोल्फ परिवार के पूर्वज वारविकशायर की नाममात्र की जागीर के जागीरदार थे। इन राजभक्तो मे एक भी तो इतना समृद्ध व प्रतिष्ठित नही था जितना कि न्यू इगलैड का प्यूरिटन जान विन्थ्रोप। वह ऐसे समृद्ध परिवार से आया था जिसकी सफोल्क में ग्रोटोन जैसी विशाल जागीर थी। इनमें न कोई इतना अभिजातवर्गी था जितना सर रिचार्ड साल्टोनस्टाल थे, न्यू इगलैड मे जिनके कई प्रख्यात उत्तराधिकारी हुए। इनमें से न कोई विलियम ब्रेवेस्टर की तुलना मे ही आता है जिसने उपसचिव के तौर पर इगलैंड के राजदरबार मे अच्छा नाम कमाया था। सन् १६०० के पूर्व मसाचुसेट्स और वर्जीनिया के अधिकाश आगन्तुक नवयुवक कारीगर, दूकानदार और साधारण आय व्यय वाले किरानी थे, जबकि अमरीका के सभी भागो मे ऐसे लोगो की सख्या अधिक थी जिन्होने नौकरी करके अपनी यात्रा का ऋण चुकाया। उनकी वास्तविक पूजी तो उनकी ईमानदारी, आत्मविश्वास और श्रम थी।

स्वशासन का उदय : जहॉ कही भी ये उपनिवेशवासी गये, ये अपने साथ स्वतत्रचेता ब्रिटेनवासी के अधिकारों की सैद्धान्तिक विचारधारा तथा स्वाधीनता के लिए अंग्रेजों के सघर्ष की परम्परा को साथ लेते गये। इसकी स्पष्ट झलक वर्जीनिया के प्रथम अधिकारपत्र में मिलती है, जिसमें जोर देकर कहा गया है कि "बसने वालो को सभी स्वाधीनताएँ, मताधिकार व रियायते प्राप्त होगी ठीक उसी तरह जैसी वे इंगलैड मे जन्म लेने पर प्राप्त करते।" उन्हे मूल अधिकारपत्र मेग्ना कार्टा और आग्ल कानूनी परम्परा का सरक्षण प्राप्त था। यह एक अत्यंत ही महत्वपूर्ण बुनियादी सिद्धान्त था। परन्तु इसे व्यावहारिक रूप-देने के लिए जनता को सदा सतर्क रहना पडा और कई वार इसकी पूर्ति के लिए कडा सघर्ष भी करना पडा। अपने आरंभिक ऐतिहासिक दिनो से ही वे अपनी सवैधानिक सरकार के ताने वाने मे रुचि लेने लगे तथा सदा ही प्रतिनिधि सरकार पर जोर देते रहे। वे राजस्व व नियोजन पर अपना नियत्रण तथा व्यक्तिगत स्वाधीनता को पूर्ण सुरक्षित रखने को प्रयत्नशील थे।

वर्जीनिया धारा सभा—जिसका जन्म १६१९ मे हुआ—शीघ्र ही कई तरह के कानून वनाने मे जुट गयी। जब इंगलैड के राजा ने वर्जीनिया कंपनी के अधिकारपत्र को रद्द कर दिया तो भी प्रतिनिधियो ने विना हिचाकिचाहट या विना शिथिलाये ही अपना कार्य जारी रखा। वास्तव मे कुछ ही वर्षों मे उन्होंने अपने महत्वपूर्ण बुनियादी अधिकारो का नियमन कर लिया। वर्जीनिया धारासभा ने घोषणा की कि धारासभा जब तक गवर्नर को अधिकार न दे तब तक वह किसी तरह का कर नही लगा सकती है और साथ ही यह भी घोषणा की कि धारासभा के प्रतिनिधि गिरफ्तारी से मुक्त रहेंगे। कुछ ही दिनों बाद यह घोषणा की गयी कि धारासभा के कानूनो को कोई उलट नही सकेगा—साथ ही न्यायक्षेत्र में जॉच के लिए जूरी की व्यवस्था भी की गयी। जब तक इंगलैड मे क्रामवेल का शासन रहा वर्जीनिया प्रतिनिधि सभा एक शक्तिशाली सस्था बनी रही। दुर्भाग्यवश स्टूअर्ट नरेशो के पुनः आरूढ होते ही यह शक्तिहीन हो चली। परन्तु ब्रिटिश गवर्नर की मातहती मे इसे रखने के प्रयत्नो की व्यापक, गंभीर तथा उग्र प्रतिक्रिया हुई।

मसचुसेट्स के उपनिवेश में भी शीघ्र ही प्रतिनिधि सरकार ने स्वरूप ले लिया। शाही अधिकारपत्र के अनुसार जान विन्थ्रोप और उसके बारह साथियों को सभी बस्तियों पर प्रशासन के अधिकार प्राप्त थे। १६३० की पतझड़ मे बस्तियो के अधिकांश लोगो ने इस प्रशासन गुट्ट से प्रार्थना की कि

वे प्रजा न मानकर कारपोरेशन के प्रतिनिधि (फ्रीमेन) मान लिये जायें। दूसरे ही वर्ष इस प्रार्थना को स्वीकार कर यह निर्णय किया गया कि अंत तक इन प्रतिनिधियों में भले और ईमानदार व्यक्ति ही चुने जायें। और इसके बाद "केवल गिरजाघरों तथा उसकी सीमा में आने वाले कुछ लोगों को छोड़कर दूसरो को इस प्रशासन तंत्र का सदस्य नही बनाया जायेगा।" इस तरह एक धार्मिक राज्य की स्थापना की गयी। इसके साथ ही यह भी निर्णय लिया गया कि बारह सहकारी हर वर्ष अपने पद पर बने रहेंगे जब तक कि प्रतिनिधिगण विशेष मतदान द्वारा उन्हे हटा न दें। जैसा कि उनके हाथों में ही वैधानिक व न्याय सबधी सम्पूर्ण अधिकार थे एक विशेष गुट्ट के हाथों मे ही शासन सत्ता बनी रहने लगी। गवर्नर, सहकारी और पादरियों की मुट्ठी मे ही इस उपनिवेश का प्रशासनतंत्र बना रहा।

परन्तु शीघ्र ही इस व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह होते देर भी नही लगी। जब १६३२ मे सुरक्षा के लिए वाटरटाउन पर कर लगाया गया तो वहाँ के निवासियों ने असंतोष व्यक्त किया और इसे चुकाने में आनाकानी करते हुए यह भय व्यक्त किया कि "इससे वे स्वतत्र न रह, बधन में बध जायेंगे"। इस तरह की शिकायत करने वालों को संतुष्ट करने के लिए यह घोषणा की गयी कि गवर्नर तथा सहकारी कर लगाते समय ऐसे मंडल की सलाह से काम करेंगे जिसके सदस्यो में सभी नगरों के दो दो प्रतिनिधि रहेगे। इस तरह वास्तविक प्रतिनिधि सभा की नीव डाली गयी। गवर्नर और सहकारी तथा शहरों के दो दो प्रतिनिधियों वाली यह सभा एक सदन वाली प्रतिनिधि सभा का रूप लेने में सफल हुई। १६३४ में जब इसकी बैठक आरभ हुई तो इस सदन ने धारा सभा सबधी सभी अधिकार अपने हाथों मे ले लिये। यह सभा कानून पारित करती, नये प्रतिनिधि नियुक्त करती तथा पदों की शपथ भी दिलाने लगी। यूरोप में भी प्रतिनिधि शासन प्रणाली ने जन्म ले लिया था। चूंकि एक सदनीय धारासभा का काम ठीक नही चल सका इसलिए बाद में दो सदनों की व्यवस्था की गयी। सहकारी ऊपरी सदन के सदस्य बने रहे और शहरों के प्रतिनिधियों ने सामान्य प्रतिनिधि सभा का स्वरूप लिया। आधी शताब्दी तक मसाचुसेट्स बे उपनिवेश प्यूरिटन गणतंत्र बना रहा जिसका प्रशासन वहाँ के प्रतिनिधियों द्वारा किया जाता था और जब १६९१ मे शाही घोषणा द्वारा इसे एक शाही प्रदेश घोषित किया तब तक प्रतिनिधि सभा शक्तिशाली संस्था का रूप ले चुकी थी। इसके बाद ब्रिटिश सम्राट गवर्नर नियुक्त करता परन्तु

जनता ही धारासभा के प्रतिनिधि चुनती और प्रतिनिधि सदन ने राजस्व व नियोजन को अपने ही हाथों कसकर पकड़े रखा।

इसी दौरान में अमरीकी भूभाग में दो छोटे प्रजातंत्रों का उदय हुआ—रोढ द्वीप और कनेकक्टीक्ट। मसाचुसेट्स वे से प्रसारित जनप्रवाह ने कनेक्टीकट घाटी मे कई शहरों को आबाद किया। १६३९ में इन शहरों के स्वतंत्र नागरिक हार्टफोर्ड में सम्मिलित हुए और उन्होंने कनेक्टीकट के (संविधान) बुनियादी अधिकारों का प्रारूप तैयार कर लिया। यह दस्तावेज अमरीकी भूभाग मे तथा समस्त पश्चिमी जगत् में अपने ही ढंग का प्रथम लिखित सविधान था। इसमें गवर्नर, सहकारीगण, और निम्न प्रतिनिधिसदन की व्यवस्था थी जिसके अनुसार सदन के सदस्यों को प्रत्येक शहर की जनता द्वारा चार चार प्रतिनिधियो के चुने जाने की व्यवस्था थी। स्टूअर्ट वंश के राज्यारोहण के बाद कनेक्टीकट को ब्रिटिश सम्राट से नया अधिकारपत्र मिला (१६६२)। परन्तु इसमें आश्चर्यजनक उदार शर्तें ही थीं। शहरवासियों को अपनी इच्छानुसार शासन करने की स्वतंत्रता थी; केवल नाममात्र का यह प्रतिबंध था कि इस उपनिवेश के कानून इंगलैंड की पार्लियामेंट के कानूनों के प्रतिकूल न हों। रोढ द्वीप ने भी इस दिशा में अच्छी प्रगति की। जब यहाँ के शहरवासियों का सम्मेलन हुआ तो रोजर विलियम्स ने ऐसा शाही अधिकार पत्र प्राप्त करने मे सफलता पायी जिसमे अधिक से अधिक स्वशासन के यथासभव अधिकार प्राप्त थे। इंगलैंड में राजशाही के पुनस्सस्थापन के कारण अधिकारपत्र के लिए नये सिरे से अर्जी करना जरूरी हो गया था। परन्तु १६६३ के शाही अधिकारपत्र के अनुसार कनेक्टीकट ने ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत एक छोटे से प्रजातंत्र का स्वरूप ग्रहण कर लिया और क्रान्ति तक इसका ऐसा ही स्वरूप रहा। यहाँ के लोग अपने अधिकारियों का चुनाव करते, अपने कानून रचते मानो उस समय पृथ्वी के आचल पर केवल यही एक पूर्ण स्वतत्र समाज बस रहा था।

सन् १७०० तक सामान्य औपनिवेशिक शासन प्रणाली स्वरूप ले चुकी थी। कनेक्टीकट और रोढ द्वीप की अपनी विशेष प्रणाली थी। ये पूर्ण स्वशासित राज्य थे जहाँ जनता अपने अधिकारियों को चुना करती थी। दूसरे उपनिवेश या तो जमींदारियाँ थी या शाही उपनिवेश। परन्तु भले ही इनका स्तर कैसा ही क्यों न रहा हो राजनीतिक ढाचा एक सा ही था। गवर्नर जमींदार अथवा राजा द्वारा नियुक्त किया जाता था। उसके सहयोग के लिए एक समिति होती थी। मसाचुसेट्स को छोड़कर जिसकी नियुक्ति गवर्नर या

जमींदार किया करता था सर्वत्र यही व्यवस्था थी। परन्तु जबकि गवर्नर सदा ब्रिटिश होता था तो कौंसिलर आम तौर पर अमरीकी ही होते थे, भले ही वे सदा ही धनी वर्ग के प्रतिनिधि ही क्यो न होते। अधिकतर उनका दृष्टिकोण गवर्नर के दृष्टिकोण से विपरीत रहता था। आरम मे वे अधिकतर प्रशासनिक और न्यायसबधी मामलो को सम्हालते थे, परन्तु धीरे धीरे इन्होंने उच्च सदन का स्वरूप ले लिया। प्रत्येक उपनिवेश की अपनी धारासभा होती थी जिसके प्रतिनिधि उस उपनिवेश के वे वयस्क पुरुष चुनते थे जो निर्धारित सपत्ति तथा दूसरी योग्यता की पूर्त्ति करने मे समर्थ होते थे। जनता द्वारा चुनी गयी यह प्रतिनिधि सभा कानून बनाती, राजस्व व नियोजन निर्धारित करती तथा कर लगाती थी। इसकी शक्ति का स्रोत जनता द्वारा चुने जाने और आयव्यय-सबधी नियंत्रण मे था। ये ठीक वैसे ही तत्व थे जिनके कारण १६८९ के बाद ब्रिटिश पार्लियामेट शक्तिशाली हुई थी।

उपनिवेशवासियों ने इन जनप्रतिनिधि सभाओ के चुनाव जीतकर तथा इन सस्थाओ को बनाये रखकर अपने हित मे तथा उपनिवेशो की समृद्धि के लिए बहुत कुछ किया। तीन बुनियादी तत्व ऐसे हैं जिनसे उनकी राजनीतिक शासन प्रणाली का अंतर समझा जा सकता है। पहली बात तो यह थी कि उन्होंने लिखित अधिकारपत्रो को अपनी स्वाधीनताओं की सुरक्षा के रूप मे अधिक महत्व दिया। इगलैड का कोई लिखित सविधान नही है, परन्तु शुरू से ही इन उपनिवेशवासियो ने शाही अधिकारपत्रो द्वारा व्यावसायिक कपनियो, जमींदारो और जनता को जो लिखित अधिकार दिये गये उनको सदा ही पवित्र माना। इस तरह लिखित बुनियादी कानूनों के प्रति गभीर निष्ठा ने अमरीकी इतिहास पर अपना गहरा प्रभाव डाला। दूसरा महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि सदा ही इन प्रतिनिधि-सदनो और गवर्नर के बीच मतभेद रहा करता। ये दोनो ही एक दूसरे के विरोधाभासी हितो का प्रतिनिधित्व किया करते थे। गवर्नर सदा निहित स्वार्थों और शाही हितो के लिए अग्रसर रहता था और प्रतिनिधिसदन सार्वजनिक अधिकारो और स्थानिक हितों के पक्ष में रहते थे। अंत में औपनिवेशिक राजनीति की उल्लेखनीय विशेषता यह थी कि प्रतिनिधिसदन सदा ही आय व्यय को अपने नियत्रण मे रखने पर जोर दिया करते थे। वे कई विभिन्न उद्देश्यो की पूर्त्ति के प्रति जोर दिया करते थे जैसे चुनाव, अपने वर्ग से सरकारी पदाधिकारियों को अलग रखना, धारासभा के अध्यक्ष का चुनाव और इससे भी सर्वोपरि वे इस बात पर जोर दिया करते थे कि वे

कर अथवा व्यय की स्वीकृति दे सकते हैं। उन्हें बहुत अधिक विरोध का सामना करना पड़ा परन्तु वे अपनी माग की पूर्ति में बहुधा सफल रहे।

यह सत्य नही है कि इन ब्रिटिश उपनिवेशो मे निरकुशता का बोलबाला था। एक बडे पैमाने पर इन्हें इतनी अधिक राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त थी जो सत्रहवीं और अठारहवी सदी की दुनिया मे किसी भी राष्ट्र को प्राप्त नही थी। परन्तु इन उपनिवेशो मे प्रशासन एक वर्ग विशेष के शासन जैसा था। धर्म पर अवलबित न्यू-इंगलैड मे केवल एक गुट्ट विशेष के हाथो मे ही प्रशासन की बागडोर थी जिनकी सत्ता को बाद मे तोडना पड़ा। दक्षिण मे मुट्ठी भर भूमिपति और बनियो ने राजनीति को अपना एकाधिकार बना रखा था।

यदा-कदा वर्ग-निरकुशता का यह कलंक ऊपर झलक आता था और जब भी यह हालत होती, उपनिवेशवासी इस पर करारी चोट करते। इस तरह की पहली चोट वर्जीनिया मे बाकोन के विद्रोह द्वारा १६७६ मे की गयी। ऋण-ग्रस्त नौकर जिनका कार्यकाल समाप्त हो चुका था, सीमाप्रदेशो के किसान, छोटे बागान मालिक और कई मजदूरो तथा हब्शी दासो के व्यवस्थापको ने यह अनुभव किया कि उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है। १६७० के बाद भूमिहीनो को मत देने का अधिकार नही रहा, और भी कई तरीको से उन्हे राजनीति मे भाग लेने से वचित रख दिया गया। लबे समय तक प्रतिनिधिसदनो मे वे ही पुराने सदस्य बने रहते थे। एक सदन में तो १६६१ से लेकर १६७५ तक लगभग चौदह वर्षो तक एक से ही सदस्य बने रहे। सरकारी पद शाही गवर्नर और धनी बागान मालिको के भाई भतीजों मे बॉट दिये जाते थे। शिक्षा गरीबों की पहुँच के बाहर थी। इन लोगो की आदिवासियो के आक्रमण से बचने के लिए भी समुचित व्यवस्था नही थी क्योकि गवर्नर और उनके सहकारी फर चमड़े के व्यवसाय को ध्यान मे रखते हुए इन आदिवासियों से मिले हुए रहते थे। कर बहुत अधिक थे और भारी थे। बाहरी फार्मों से बाजार दूर पड़ते थे और जब तबाखू के दाम गिर गये तो किसान बेचारे दयनीय स्थिति मे ही छोड दिये गये।

अंत मे एक असुरक्षित बस्ती पर आदिवासियों के आक्रमण के कारण इस असतोष का स्वरूप नाटकीय रूप से एक विद्रोह ने ले लिया। बस्तीवालो ने सुरक्षा की माग पर जोर दिया परन्तु जब गवर्नर बर्कले और उसके सहयोगियो ने टालमटूल के उत्तर दिये तो लोगो का क्रोध फूट पड़ा। नाथानियल बेकोन

ने जेम्स और यार्क नदियों की ऊपरी तलहटी के क्रोधित लोगों का नेतृत्व करते हुए एक आदिवासी वस्ती पर आक्रमण किया और डेढ़सौ आदिवासियों को काटकर रख दिया। बाद में जब वह विलियम्सवर्ग असेम्वली में वैठने गया तो उद्दंड गवर्नर ने उसे पकड़ लिया; परन्तु तत्काल ही नदियों के ऊपरी प्रदेश में इस पर विद्रोह हो गया और उसे जबरन् छुड़वा लिया गया और वह वहाँ से भाग निकला। जब वह वापिस लौटा तो उसके साथ चार सौ सशस्त्र व्यक्ति थे जो अपने शस्त्रों को खनका रहे थे।

गवर्नर वर्कले और असेम्वली के सदस्य फुर्ती से राजधानी के बाहर निकल कर इस तरुण बागान मालिक से भेंट करने को लपके। अपना कुर्ता फाड़ते हुए तथा अपना सीना नगा करके गवर्नर वर्कले चिल्लाया, "यहाँ, मुझे गोली मार, भगवान के लिए इससे अच्छा निशाना और नहीं होगा! चला! गोली चला!" परन्तु बेकोन ने उत्तर दिया, "नहीं, श्रीमान् हम आपका बाल भी बाँका नहीं करेंगे और न किसी को क्षति ही पहुँचाने आये हैं। हम लोग आदिवासियो से रक्षा पाने की व्यवस्था प्राप्त करने आये हैं जिसके बारे में आप पहले ही कई बार वादा कर चुके हैं और अब हम वापिस लौटने के पहले यह व्यवस्था करवा कर ही जायेंगे।" उसके अनुयायी अपने निशान व शस्त्र हिलाकर एक स्वर में दुहरा रहे थे, "हम यह लेकर ही रहेंगे।" आध घण्टे तक इस तूफानी भगदड़ में असेम्वली को सम्बोधित करते हुए बेकोन ने बस्तीवासियों के लिए सुरक्षा की व्यवस्था, सार्वजनिक व्यय की पूरी व अच्छी तरह से जाँच, करों मे कमी तथा अन्य दूसरे सुधारों की माँग की।

विद्रोह तत्काल ही ग्रीष्म ऋतु के बवंडर की तरह वर्जीनिया के धूलभरे खेतों में दूर तक फैल गया। गवर्नर वर्कले और उसके सहयोगियों ने इसकी पूर्ति के लिए वादे भी किये जिनके बारे में सतर्क पर्यवेक्षकों की राय थी कि वे कभी पूरे नहीं किये जायेंगे। शीघ्र ही गवर्नर ने ग्लोचेस्टर और मिडिलसेक्स से बाहर हजार सैनिकों की इसलिए माँग की कि वे उसे विद्रोही बेकोन को दबाने में सहयोग दें। इस पर शीघ्र ही चारों ओर बेकोन! बेकोन! बेकोन!! की ध्वनि गूँजने लगी और ये जनसैनिक भी असंतुष्ट होकर बेकोन! बेकोन!! दुहराते चले गये। शीघ्र खुला युद्ध छिड गया। बेकोन ने जेम्सटाउन पर धावा बोल दिया और ग्रीष्म ऋतु में एक दिन उसे पूरी तरह जला कर खाक कर डाला। जेम्स नदी मे उसने बारह तोपों वाले जहाज पर भी कब्जा कर लिया। तभी अचानक अपने इस संघर्ष के महत्वपूर्ण काल में मलेरिया के

कारण उसकी मृत्यु हो गयी और विद्रोह दब चला। वास्तव में यह विद्रोह छोटे किसानो, मजदूरों और सीमाप्रदेशवासियो के इस स्वाभाविक न्यायोचित अधिकार की अभिव्यक्ति के रूप में उठा था कि आदिवासियों के आक्रमण से उनकी रक्षा की जाय। साथ ही वे उचित राजनीतिक और आर्थिक व्यवहार भी चाहते थे। शाही सरकार के विरुद्ध यह पहली खुली बगावत थी। प्रतिहिंसा की भावना से जलते हुए बर्कले ने बेकोन के एक सहयोगी—जिसे कैद कर रखा था—के सामने विद्रूप के रूप में झुकते हुए कहा, "ड्रूमण्ड महोदय! आपका सादर स्वागत है। मैं वर्जीनिया के दूसरे लोगो की अपेक्षा आपसे भेंट करके अधिक प्रसन्न हूँ। ड्रूमण्ड महोदय! आपको आधे घण्टे में फांसी लगा दी जायेगी।" परन्तु विद्रोह निरर्थक या क्षणिक ही क्यों न रहा हो, इसने सीमाप्रान्तवासियों की दृढ़ आत्मविश्वासी भावना को अभिव्यक्त किया—एक सच्ची अमरीकी भावना—और एक शानदार ढंग से उसे प्रस्तुत किया गया। इस विद्रोह को लोग भूल नहीं सके।

उपनिवेशों में प्रशासन और धर्म : जैसे जैसे अमरीका मे राजनीतिक स्वतन्त्रता की पिपासा जगी वैसे ही साथ साथ धार्मिक सहनशीलता की भावनाओं का भी विकास हुआ। प्रारम्भिक काल से ही ब्रिटिश बस्तियों में विभिन्न मतावलबी बसे हुए थे और वे आपसी मेल जोल और धार्मिक सहनशीलता से रहना सीख चुके थे।

वर्जीनिया मे पहले निवासियों ने अपनी बसावट के साथ ही इंगलैड के धार्मिक चर्च की नीव डाली। जेम्सटाउन मे पहले पहल जो मकान बनाये गये उसमे एक सीधासादा गिरजाघर भी था जिसे बाद मे पुनः (जल जाने के बाद) शानदार भवन के रूप में प्रतिष्ठित किया गया। यह अभी भी नदी-तट से दिखायी देता है। जब १६१६ मे लार्ड डेलावेर गवर्नर बन कर आया तो उसने इसकी मरम्मत करवायी और इसकी इमारत मे भी वृद्धि की। इस तरह यह एक प्रतिष्ठित व भव्य गिरजा बन गया। यही बागान मालिकों ने इगलैड से जहाजों मे भरकर लायी गयी लड़कियो से विवाह किया। यहीं उनके बच्चों का नामकरण किया गया। जैसे जैसे वर्जीनिया का विस्तार बढ़ा नयी बस्तियाँ खड़ी हुई और नये नये गिरजे बनाये गये। इनका सारा भार इंगलैड के चर्च की तरह सार्वजनिक कर पर निर्भर था। कुछ वर्षों तक पादरी के निर्वाह के लिए प्रत्येक किसान को कुछ गेहूँ व दस पौंड तम्बाखू प्रतिवर्ष देनी पड़ती

-थी। परन्तु यह समुचित नही था और १६३२ मे धारासभा ने एक विधेयक पारित कर यह अनिवार्य कर दिया कि इस भेट के अलावा हर बस्तीवाला अपना बीसवॉ बछड़ा, बीसवी बकरी, और बीसवॉ सुअर पादरी को दे। स्टूअर्ट शासन की पुनः स्थापना के बाद तबाखू की भेट मे अधिक वृद्धि कर दी गयी और उसे अधिक सुनिश्चित भी कर दिया गया। इसके अलावा पादरी को कर-रहित भूमि भी अलग से देने तथा तत्सबधी दूसरे साधनो की व्यवस्था की गयी। इस तरह ऐग्लिकन चर्च वर्जीनिया मे एक वास्तविकता बन गया, ठीक उसी तरह जैसे दक्षिण मे मेरीलैड और दक्षिणी करोलिना मे दृढता से यह स्थापित किया गया था।

इतना होने पर भी वर्जीनिया के गिरजाघर न तो भौतिक दृष्टि से ही सपन्न हुए और बस्तीवालों को न वे बौद्धिक और धार्मिक रूप से ही प्रभावित कर सके। उनके विकास में सामाजिक और आर्थिक स्थिति अनुकूल नही थी। बहुत से कस्बे छितराये हुए देहातो मे थे जहॉ नाम मात्र की आबादी थी। इनकी सीमाऍ नदियों के तटो के अनुवर्ती तीस से साठ मील तक लबी थी। जिन्हें गिरजा-घर जाना होता था उन्हे या तो ऊबडखाबड सडको पर मीलों दूर जाना होता या घण्टो नदी की धारा में डॉड़ चलाने पडते थे। स्वाभाविक ही था कि प्रार्थना के समय उपस्थिति अनियमित रहती, यहॉ तक कि जार्ज वाशिगटन जैसे कट्टर धार्मिक व्यक्ति के बारे मे भी यह कहा जाता है कि वे भी गिरजा मे बहुत कम उपस्थित हो पाते थे। कड़ाके की सर्दी की ऋतु मे पादरी को प्रार्थना भवन खाली ही मिला करता था। एक व्यक्ति की यह शिकायत थी कि वह पचास मील पार करके गिरजाघर पहुॅचा करता था फिर भी उसे वहॉ मुट्ठीभर लोग ही मिलते थे। इन छितरायी आबादी वाले कस्बों में पादरी का गुजारा भी मुश्किल से हो पाता था। जैसे ही मंदी आयी, चीजों के दाम गिरे, तबाखू और चौपायो में वसूल किया गया धार्मिक कर पूरा नही पड पाता था और जब धारासभाओं ने इस कर को बढ़ाया तो गरीब कस्बो ने इस बारे में कडी शिकायतें कीं।

जब कि वेतन कम था, नियुक्तिकाल का भरोसा नही और कई परेशानियॉ थी तो उत्साही, सुयोग्य और चरित्रवान पादरियों का मिलना कठिन हो गया। अच्छे पादरी इंगलैड छोड़कर उपनिवेशो मे जाना नही चाहते थे, उन्हे स्वदेश मे ही सुअवसर प्राप्त हो सकते थे। जो उपनिवेशो में आये वे भोंडे दिमाग के, आलसी या सदिग्ध चरित्र के थे। शीघ्र ही हमे गवर्नरो और दूसरे लोगो की यह शिकायतें देखने को मिलती है कि वर्जीनिया के पादरी ऐसे ही

पूर्वी उत्तर अमरीका का प्राकृतिक मानचित्र उन स्थानों सहित जहां जहां प्रारम्भिक समन्वेषक पहुंचे।
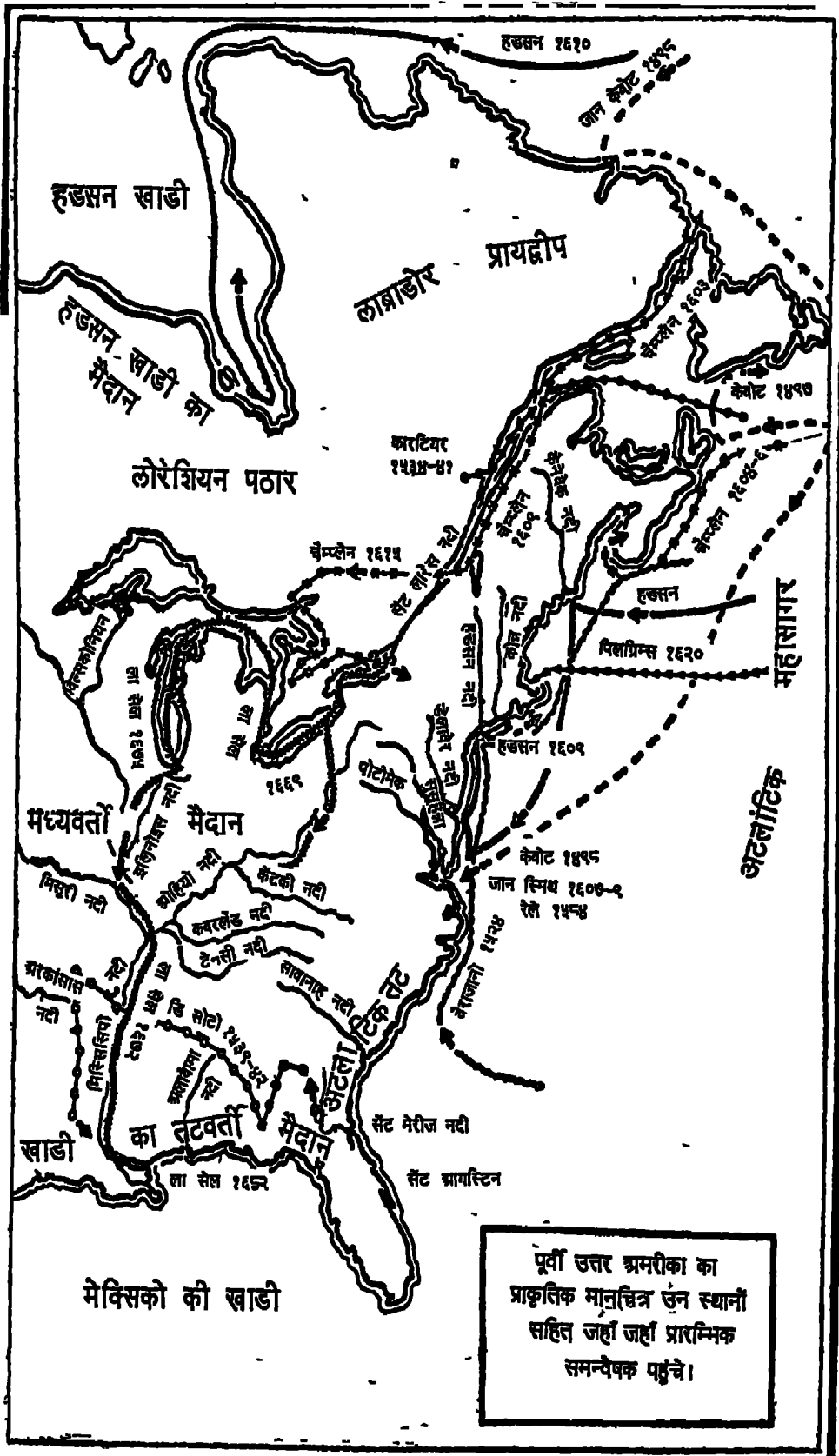
बदमाशों व लुच्चो का गुट्ट था, वे ऐसी गदी बातो मे डूबे रहते थे जो उनके साधु जैसे भेष को कलंकित करने वाली थीं। ये लोग सिर से पाव तक झूठी कसमें खाने, शराब पीने और लडाई दंगों में डूबे हुए थे। शीघ्र ही सुधार आदोलन उठाये गये जिनके कारण १६९३ मे दूसरे औपनिवेशिक कालेज 'विलियम और मेरी कालेज' की स्थापना की गयी, बुनियादी तौर पर इसका उद्देश्य तरुण पादरियों को शिक्षा देने का था। परन्तु इस मामले में पूर्ण सुधार क्राति-काल तक संतोषजनक रूप से नहीं हो सका।

वर्जीनिया और दक्षिण के दूसरे भागों में ऐग्लिकन चर्च को जनता का सहयोग अवश्य मिला परन्तु राज्य पर उसका नाममात्र का भी नियंत्रण नहीं था। मसाचुसेट्स और कनेक्टीकट में कई दशको तक चर्च और राज्य एक थे और प्रशासन पर इनका उल्लेखनीय नियन्त्रण था। वास्तव में लंबे समय तक इन राज्यों मे कट्टर धार्मिक निरंकुशता बनी रही।

मसाचुसेट्स में प्यूरिटनों के बसने का बुनियादी कारण एक धार्मिक राज्य की स्थापना का था, न कि धार्मिक स्वतंत्रता स्थापित करना था। प्यूरिटन उग्र धार्मिक सुधारक नही थे; वे धार्मिक तौर पर कट्टरपंथी थे। इंगलैड मे भी इंगलैड के चर्च में आस्था रखते थे परन्तु उसकी व्यवस्था में परिवर्तन चाहते थे। वे उसके कैथोलिक स्वरूप को हटा कर बाइबिल की व्यवस्था को कट्टर रूप से लागू करना चाहते थे तथा चरित्र को विशेष रूप से महत्व देना चाहते थे। इंग्लैंड में अपना दृष्टिकोण लागू करने में असफल होने पर उन्होंने अमरीकी वीरान भूभाग में अपना यह 'विशिष्ट गिरजा' स्थापित करना चाहा जो सार्वजनिक करों पर निर्भर रहे तथा राज्य के साथ उसका गठबंधन हो और किसी तरह से भी उसका विरोध बर्दाश्त नही किया जाये। जब एण्डीकोट ने सालेम में पहला प्यूरिटन चर्च स्थापित किया तब उसकी टोली के दो व्यक्तियो ने अपने सामान में से एग्लिकन प्रार्थना पुस्तक निकाली और उसमें से कुछ अंश सुनाने आरभ किये तो उसने तत्काल ही उनको और उनकी अपवित्र पुस्तकों को शीघ्र ही स्वदेश लौटने वाले जहाज पर चढ़ा कर इंग्लैंड रवाना कर दिया। प्यूरिटन नेताओं ने तत्काल शीघ्र ही धर्म-अवलबित राज्य की स्थापना कर ली। इस शासन की बागडोर कट्टर सुयोग्य निरकुश धार्मिक पादरियों के एक गुट्ट विशेष के हाथ में रही।

काल्विन-मतावलंबी इस धार्मिक राज्य की स्थापना तथा इसके कडे अनुशासन का अर्थ यह हुआ कि इंग्लैंड के चर्च से पृथक होने वाले 'धार्मिक यात्रियो'

का यह उद्देश्य कि स्वशासित धार्मिक तंत्र की स्थापना की जाये, गौण हो गया। इन धार्मिक यात्रियो ने प्लाइमाउथ मे एक छोटे से धार्मिक प्रजातंत्र की स्थापना की जहॉ श्रद्धालु जनता बिना पादरी या विशेष आडंबर के ही अपनी प्रार्थना कर सकते थे। परन्तु प्यूरिटनों को यह व्यवस्था अराजक और पतित लगी क्योकि वे लोग दृढ़ केन्द्रित नियन्त्रण मे विश्वास रखते थे।

मसाचुसेट्स मे इस धार्मिक राज्य की स्थापना के लिए चार महत्वपूर्ण कदम उठाये गये। पहली बुनियादी बात यह थी कि जब तक कोई व्यक्ति प्यूरिटन-मतावलंबी न होता तथा उसकी समाज में प्रतिष्ठा न होती, तो उसे मत देने या पद सम्हालने का अधिकार नही दिया जाता। दूसरी बात यह की गयी कि गिरजाघरो मे उपस्थिति अनिवार्य रखी गयी जिससे प्यूरिटन मत मे विश्वास नहीं रखने वाले लोगों से राज्य की रक्षा होती रहे। तीसरा कदम यह था कि नये चर्च की स्थापना की स्वीकृति राज्य और प्यूरिटन चर्च ही दे सकता था। मसाचुसेट्स में गैरमतावलंबी या प्यूरिटन-धर्म-विरोधी लोग दूकान नही खोल सकते थे। जो लोग प्यूरिटन अनुशासन से रिक्त दूसरे मत मे विश्वास रखते उनके लिए केवल यही चारा था कि वे इस राज्य को छोड़ कर कहीं अन्यत्र जा बसते। अंत मे राज्य के सहयोग के लिए यह नियम भी बनाया गया कि धार्मिक अधिकारियों के सहयोग से किसी तरह का विद्रोह या अनुशासनहीन लोगो को दंडित किया जा सकेगा। प्यूरिटन चर्चो की धार्मिक व्यवस्था (१६४६) के अनुसार यदि किसी चर्च की प्रजा या पादरियों ने इन नियमों या चर्च की धार्मिक व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह किया तो सरकार ऐसे पादरी का वेतन रोक सकती थी, उसे पद से हटा सकती थी और उसकी जगह ऐसे व्यक्ति को नियुक्त कर सकती थी जिसका धर्म मे विश्वास हो।

मसाचुसेट्स मे यह धार्मिक राज्य १६९१ तक शक्तिशाली बना रहा। १६९१ में विलियम और मेरी ने अधिक उदार अधिकारपत्र प्रदान करते हुए इस राज्य को शाही प्रदेश घोषित किया। इस धार्मिक प्रशासन ने एक महत्वपूर्ण उल्लेखनीय काम अवश्य किया। इस दृढ़ प्यूरिटन समाज ने चार्ल्स द्वितीय की निरकुशता का कड़ा विरोध किया; फलस्वरूप नयी दुनिया मे राजनीतिक स्वतंत्रता की भावनाओं व आदोलनो को बल मिला। इस विरोध ने दूसरी शताब्दी मे प्राप्त होने वाली राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया। परन्तु इस धार्मिक निरकुशता ने कई अपवादों को भी जन्म दिया। यह एक दमनीय निरकुशता थी। इस राज्य में क्वेकर्स (सुधारवादियों) व अन्य

दूसरे सुधारवादियो को लज्जाजनक रूप से पीड़ित किया गया। वाणी व विचारों की स्वतत्रता पर यहाँ कडा प्रतिबंध था और इसका पागलपन तब प्रकट हुआ जब सालेम में उन्नीस मर्दों और औरतो को भूतप्रेत से सबंध रखने वाले जादूगर मान कर फासी पर लटका दिया गया। जैसे ही जनसख्या मे वृद्धि हुई और नये विचारो की जडे जमने लगी, तो इन कट्टरपथियों के विरोध मे एक शक्तिशाली उदार दल का जन्म हुआ जिसका नेतृत्व इन्क्राज माथेर और उनके सुयोग्य पुत्र कोटोन ने किया। ये दोनो बोस्टन के ख्यातिप्राप्त पादरी थे। जिस दिन यह धार्मिक राज्य क्षीण हुआ वह अवसर अमरीका के लिए एक सुखद अवसर था।

धार्मिक स्वाधीनताओं के लिए मसाचुसेट्स राज्य दो महारथी विलियम्स और एन्ने हचिन्सन को आगे लाया। विलियम्स एक सुशिक्षित व पक्का ईसाई था जिसकी शिक्षा-दीक्षा इगलैड मे केम्ब्रिज मे हुई थी। वह प्यूरिटन धार्मिक रूढ़ियों का उग्र विरोधक था। उसका विश्वास था कि धर्म और राज्य को पूर्णतया अलग अलग होना चाहिए, लोगो को गिरजाघरो मे आने के लिए बाध्य करना मूर्खता है और गैरमतावलंबियों के साथ भी सहनशीलता का बर्ताव किया जाना चाहिए। उसके मतानुसार राज्य का यह कर्तव्य होना चाहिए कि वह सभी भले मतावलबियो व मतों को एक ही दृष्टि से देखते हुए उनकी रक्षा करे। मसा-चुसेटस के अधिकारियो ने विलियम्स को इगलैंड लौट जाने की आज्ञा दी, परन्तु वह बचकर बर्फीले रास्तों को पार करता हुआ रोढ द्वीप पहुँच गया जहाँ वह अपने सिद्धान्तो को व्यावहारिक रूप दे सकता था। अन्ने हचिन्सन का व्यक्तित्व इतना महत्वपूर्ण नहीं था। वह ठीक ऐसे ही सिद्धान्तो को प्रचारित कर रही थी जिन्हे बाद मे इमर्सन के काल मे महान अध्यात्मवाद कहा जाता था। उसका कहना था कि प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि वह अपनी अंतरात्मा की सच्ची पुकार का अनुसरण करे। उसके अनुसार आत्मा निहित अलख पवित्रता ही एक ऐसी वस्तु है जो व्यक्ति की रक्षा कर सकती है न कि भले कार्य और तपत्याग। कुछ समय तक रोढ द्वीप में रहने के बाद एक दिन आदिवासियों द्वारा किये गये हत्याकाड मे उसकी मृत्यु हो गयी।

मध्यवर्ती उपनिवेशो मे आरभ से ही सहनशीलता एक नियम बन चुका था। केवल न्यूयार्क मे ही एगलिकन चर्च की स्थापना के गंभीर प्रयत्न किये गये परन्तु वहाँ भी असफलता ही हाथ लगी। यहाँ अधिकाश जनमत दूसरे मतों को मानने वालो का था। जैसा कि समकालीन इतिहासज्ञ विलियम स्मिथ ने लिखा है, "जनता का विश्वास प्रोटेस्टेण्ट मतावलबियों के प्रति समान सार्वभौमिक

सहनशीलता बनाये रखने के पक्ष मे था।" यहूदी लोगो को अपने ढंग से पूजा करने की छूट थी। क्वेकर बस्तियो मे—डेलावेर और पेन्सिलवानिया मे सभी मतावलंबियो का स्वागत था और वहॉ कई छोटे मोटे सम्प्रदाय जो मुख्यतः जर्मन थे जड़े जमा चुके थे। कैथोलिको को अपमानित नहीं किया जाता था और फिलाडेल्फिया मे सार्वजनिक प्रार्थना की जाती थी। मेरीलैंड एक ऐसा प्रदेश था जहॉ सदियों से उग्रविरोधी मतावलंवी भी आपसी मेल-जोल से रह रहे थे। १६४९ मे धारासभा ने जिसके सदस्य कैथोलिक व प्रोटेस्टेण्ट थे एक धार्मिक सहनशीलता कानून पारित किया जो धार्मिक स्वतंत्रता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम माना जायेगा। यद्यपि इसमे दूसरे ईसाईयो व द्वैत-वादियों के प्रति कड़े व्यवहार का नियमन है परन्तु इस कानून ने प्रोटेस्टेण्टो और कैथोलिकों को एक ही स्तर पर रखा। मेरीलैड के इस कानून मे एक वाक्याश है जो भावी को इगित करता है। इसके उद्घोषको के अनुसार, "*सहन-शीलता मे बुद्धिमानी है क्योकि धार्मिक मामलो मे विभिन्न मत उस स्तर के नही रहें कि वे धार्मिक रूप से खतरनाक हों।*" जैसे ही कुछ दशक बीते, अधिकाश बस्तियो के लोगो को यह विश्वास हो चला कि इसीमे बुद्धिमानी है और यह बात न्यायसगत भी है कि मनुष्यो को जिस तरह से वे भगवान की पूजा करना चाहते हैं करने दी जाये।

दूसरा परिच्छेद

औपनिवेशिक परम्परा

अमरीकी समाज का विकास क्रम : औपनिवेशिक अवधि मे एक विशिष्ट अमरीकी राष्ट्रवाद के विकास मे दो प्रमुख पहलू विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। क्राति आरम्भ होने तक इस अवधि मे लोगों का एक राष्ट्रीय चरित्र सुनिश्चित हो चुका था। पहला पहलू था एक नयी जनभावना का विकसित होना जो विभिन्न राष्ट्रीय लोगो के सम्मिश्रण से बनी थी। दूसरा पहलू था एक नयी भूमि जो उपजाऊ और खाली पड़ी थी और उसकी समृद्धि केवल नवागंतुकों के उद्योग और साहस की प्रस्थापना पर निर्भर करती थी। १७७५ तक एक विशिष्ट अमरीकी समाज़ का जन्म हो चुका था जिसकी अपनी सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक विशेषताएं थी। कुछ बातों मे इस समाज की रूपरेखा यूरोपीय पद्धति से काफी मिलती-जुलती थी; बोस्टन और न्यूयार्क के व्यापारी, व्यवसायी और कारीगरो मे तथा लन्दन और ब्रिस्टल के उसी तरह के वर्गों के लोगों के साथ सरलता, से अन्तर स्थापित नहीं किया जा सकता था। अमरीका की अधिकाश जनता का विकास पुराने ढर्रे की यूरोपीय पद्धति से बिल्कुल ही विभिन्न हो रहा था।

सौभाग्य से अमरीका का प्रवास इस पद्धति से हुआ कि प्रत्येक स्थान पर अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी सस्थाओं का प्रभुत्व रहा जिससे देश मे एक सामान्य एकता कायम रही। जर्मन और फ्रांसीसी समुदायों ने अपने किसी अलग उपनिवेश की स्थापना नही की, हालांकि यदि वे ऐसा चाहते तो कर सकते थे; वे पहले से बसे हुए अंग्रेज प्रवासियों के साथ मिल-जुल गये और उनकी भाषा और दृष्टिकोण को अपना लिया। हडसन की घाटी में भी अंग्रेज प्रवासी डचों पर छा गये। फिर भी भाषा की एकता और मूलभूत सस्थाओं का यह सुखद सहअस्तित्व, राष्ट्रीयता के विकास मे बड़े महत्व के साथ बना रहा।

यह महत्व की बात है कि औपनिवेशिक काल मे जनता के इस आदानप्रदान के महत्व का उल्लेख हम न अधिक बढ़ा चढ़ा कर और न उसे घटाकर ही

कर सकते हैं। क्रांति के समय श्वेत प्रवासियों की ९।१० आबादी में से शायद ३।४ संख्या अंग्रेजों की वंशज थी। फिरभी डच, जर्मन और फ्रांस तथा यूरोप के अन्य देशों से आये हुए लोगों की संख्या भी महत्वपूर्ण थी। प्रवासियो के पहले जत्थे अंग्रेजों के थे और न्यू इंग्लैण्ड तथा दक्षिण की निचली भूमि की आबादी लगभग सम्पूर्ण रूप से अंग्रेजों की थी। इस प्रकार से मूल स्रोत के जारी रहने के बावजूद १८ वीं शताब्दी में यूरोप से जर्मनी, स्काटलैंड और आयरलैंड के प्रवासियों की अन्य दो बड़ी जन-लहरे आयीं। क्रांति के आरम्भ होने तक प्रत्येक शहर में हजारों प्रवासी बस गये थे।

जर्मनों के प्रवास ने ही पहले पहल एक महत्वपूर्ण घटना का रूप लिया। पश्चिमी जर्मनी विशेषकर राइनलैंड में असन्तोष और घोर कष्ट व्याप्त था। १४ वें लुई के अन्तर्गत फ्रांस की फौजों के आक्रमण अत्यन्त कष्टदायी थे। इसके बाद लूथर के मतावलंबियों और अन्य सम्प्रदायों पर लगातार धार्मिक अत्याचार होते रहे और बाद मे छोटे छोटे जर्मन राजाओ की राजनैतिक यातनाएँ लोगो को सहनी पड़ी। लेकिन जब रानी एनी की सरकार और उसके उत्तराधिकारियों ने अंग्रेजी ध्वज के नीचे धार्मिक स्वतंत्रता और स्वरक्षा प्रदान की तब हजारो जर्मन इंग्लैण्ड और उसके उपनिवेशो मे शरण लेने जा पहुँचे। विलियम पैन के आधिपत्य मे क्रीफेल्ड से एक अग्रिम दल १६८३ मे पहुँचा था और वहाँ पर उन्होने दस्तकारियो के केन्द्र, जर्मन टाउन, की स्थापना की। उपनिवेशो में कागज की पहली मिल, रिटिनहाउस परिवार ने कायम की थी; इसके बाद शराब बनाने और कपड़े बनाने का कार्य भी आरंभ किया गया। लेकिन १७०० के बाद ही प्रवासी लोगों के असली जत्थे आने आरम्भ हुए। कुछ लोग न्यूयार्क की मोहाक घाटी में, कुछ न्यू जर्सी के न्यूब्रन्सविक मे, और अधिकाश लोग पेन्सिलवानिया मे जा बसे। कुछ ही समय के बाद एक वर्ष के अन्दर जर्मनी और स्विटजर्लैण्ड के हजारों लोग यहाँ आ गये।

नवागंतुकों की यह बाढ़ इतनी विशाल थी कि क्रांति के पहले बैंजामिन फ्रेंकलिन ने पेन्सिलवानिया की एक तिहाई आबादी जर्मनों की आंकी थी। यहाँ अंग्रेजी बहुत थोड़े भाग में बोली जाती थी और १७३८ मे जर्मन टाउन से एक अखबार जर्मन भाषा में प्रकाशित किया जाने लगा। लूथरन, मोरेवियन, मैनोनाइट और यूनाइटेड ब्रद्रन के उपनिवेश प्रान्त भर मे फैल गये। बैरान स्टीगिल की लोहे की फाउन्ड्री और कांच की फेक्टरी काफी विख्यात हो गयी थी।

सौवर का मुद्रणालय भी प्रतिष्ठित हो चुका था। लेकिन अधिकाश जर्मन मित-व्ययी किसान थे, जिनके कठिन परिश्रम ने पैन्सिलवानिया की उपजाऊ भूमि को गेहूं उत्पादन का एक विशाल केन्द्र बना दिया था। इन लोगो ने क्षेत्रीय विस्तार की नीति को नहीं अपनाया और उसी क्षेत्र मे व्यापार करना पसन्द किया जहॉ पर वे बसे हुए थे और जो सरक्षित था तथा कुछ हद तक सुधारा भी जा चुका था। उन्होने जमीनो की अच्छी तरह सफाई की; मकान बनाने मे अपनी अधिक शक्ति व्यय करने के पहले उन्होने अनाज रखने के लिए बड़ी बडी खण्डियॉ बनायीं, अपने जानवरो को हृष्टपुष्ट और स्वस्थ रखा; उनके बाडो को ऊँचा और मजबूत बनाया। कम खर्च के साथ रह कर उन्होने अपने उत्पादन की अधिकतम मात्रा को बेचा। महिलाऍ खेतो मे काम करने के साथ साथ भरे पूरे परिवारो का पालन-पोषण भी करती थी।

स्काटलैंड और आयरलैंड के लोग अधिक उत्साही थे और वे पेन्सिल-वानिया, शिनानडोह की घाटी और करोलिना के ऊपरी भागो मे बस गये थे। ये लोग भी स्वदेश की यातनाओं से परेशान होकर भागे थे। आयरलैंड मे अंग्रेजी धार्मिक प्रतिष्ठान के अधीन उनको कष्ट दिया जाता था क्योकि आयर-लैंड के निर्माताओ के विरुद्ध बनाये गये अंग्रेजी कानून उनके बुनाई उद्योग के लिए घातक थे। इसलिए जब वे यहॉ आये तो उनमें अंग्रेजो के विरुद्ध एक तीव्र कटुता विद्यमान थी। आयरलैंड के निवासियो की अपेक्षा स्काटलैंड के लोग अधिक थे और अधिकाश प्रैसबीटेरियन सम्प्रदाय के थे जो गत शताब्दी मे अल्सटर चले गये थे। इसलिए प्रेसबीटेरियन चर्च सगठन ने इनको जनतान्त्रिक सस्थाओ का एक स्वाभाविक आश्रय और स्नेह प्रदान किया। उनमें से कुछ न्यूहैम्पशायर मे, कुछ अल्सटर मे, कुछ न्यूयार्क के ओरेन्ज क्षेत्रो मे बस गये थे। लेकिन उनका प्रधान आश्रय पेन्सिलवानिया और वर्जीनिया तथा करोलिना की दक्षिणी घाटियॉ थी। जगल मे घुस कर उन्होने शिकार, जमीनो की सफाई, लट्ठो के मकान बनाना और खेती करना आरम्भ किया। पेन्सिलवानिया के एक कर्मचारी के शब्दो मे, "बहादुर और तिरस्कृत प्रवासी" पेन तथा अन्य जमींदारो द्वारा लगाये गये कानूनी नियन्त्रण और उन्मोचन शुल्क चुकाते चुकाते धैर्य खो चुके थे। ये लोग आदिवासियो से घृणा करते थे और उनसे शीघ्र झगडा कर बैठते थे। इनकी हावी होने की प्रवृत्ति इस कथन मे निहित थी। वे रविवार को छोड सदैव कार्य के लिए उद्यत रहते थे। ये लोग अत्यन्त कार्यक्षम और उत्साही प्रवासी साबित हुए।

क्राति से पहले वे दक्षिण और पूर्व मे जार्जिया के पठार तथा कैन्टकी मे बस गये थे। वहाँ उनके बडे परिवारो ने राजनीति और आदिवासियो से संघर्ष करने मे काफी कुशलता दिखलाई। इस प्रकार स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड के इन प्रवासियो ने अमरीकी-जीवन पर एक सुदृढ छाप जमा दी। इन्ही लोगो मे से काल्हान, जैक्सन, पोप, हाउसटन, मैकनले जैसे विख्यात व्यक्ति पैदा हुए थे।

शिनानडोह तथा अन्य आतरिक घाटियो में स्काच, आयरिश, अंग्रेज, जर्मन, डच तथा अन्य लोग नयी अमरीकी जनता के समृद्ध समाज मे शीघ्र घुल-मिल गये। जार्जिया मे स्थापित अन्तिम बस्ती की आबादी में भी लोगो का सम्मिश्रण विद्यमान था। जनरल जेम्स-ओग्ले-थ्राप ने कई अंग्रेज-दानियों की सहायता से जार्जिया को निर्धन कर्जदार और अन्य भाग्यहीन लोगो के लिए एक आश्रय के रूप मे तथा स्पेन के लोगो और आदिवासियो के आक्रमण के विरुद्ध एक चौकी के रूप में १७३२ में एक शाही अधिकारपत्र द्वारा प्राप्त किया। मूल-ट्रस्टियो ने जार्जिया के लिए चुनी हुई अंग्रेजी जनता, जर्मन-प्रोटेस्टटों की भारी सख्या तथा स्काटलैण्ड के पहाड़ी स्थानों मे रहनेवाले लोगो को आमंत्रित किया। प्रारम्भ मे यहाँ पर गुलाम रखने की प्रथा निषिद्ध थी। सभी गैर-कैथोलिक सम्प्रदायों को यहाँ पर प्रोत्साहन मिला और एंग्लिकन, मूरेवियन, प्रेसबीटेरियन एनावेप्टिस्ट, लूथेरियन तथा यहूदी अपने अपने धर्म की आराधना करते थे। सावानाह का अंग्रेजी गिरजाघर दो विख्यात पादरी, जान वेस्ले और जार्ज व्हाइटफील्ड के लिए विख्यात था।

अंग्रेजो के अलावा अन्य वर्गों की सख्या कम थी, लेकिन वह महत्वपूर्ण थी। नानटीज की घोषणा रद्द होने के फलस्वरूप हजारो फ्रान्सीसी ह्यूजीनोट अंग्रेजो के उपनिवेशो मे आये और दक्षिण करोलिना मे लारेन्स और लिगारे, वर्जीनिया मे माउरे, न्यूयार्क मे डियोना और जे, मसाच्यूसेट्स मे रेवर और फेन्यूल जैसे नामो से पता चलता है कि ये लोग कितनी दूर दूर तक बसे हुए थे। जर्मनो के साथ स्विटजरलैण्ड के प्रवासी भी आये; डेलावेर के आसपास विशेषतया शहरों में स्वीडन और फिनलैण्ड के प्रवासी भी पर्याप्त सख्या में इटली और पुर्तगाल के यहूदियो के छोटे समूहों के साथ बसे हुए थे। पेन्सिलवानिया में रेडनोर और ब्रयन गावर तथा दक्षिण करोलिना मे वेल्शनेक नामो से पता चलता है कि वेल्स के निवासियो ने भी यहाँ बसने मे अपना योग दिया था। इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि औपनिवेशिक काल में भी अमरीका जनसमुदायो का सगम था।

अमरीकी राष्ट्रवाद की विशिष्ट रूपरेखा निर्धारित करने में दूसरा महान कारण यहा की भूमि और विशेषतया सीमाएं है। आरम्भ में समुद्री किनारे की पट्टी ही घने जंगलों से सटी हुई थी जिसने सीमा का कार्य किया। नये प्रवासी बिलकुल अनुभवहीन थे। धार्मिक प्रवासियों ने प्लाइमाउथ के जंगलो मे मसाले खोजना आरम्भ किया था और रात को बोलनेवाले जानवरों को शेर समझा था। जेम्सटाउन के कुछ डेण्डियों ने सोचा था कि वे लन्दन की तरह ही वहा रह सकते हैं। लेकिन नवागंतुकों के सामने कठोर वन्य जीवन के अनुकूल अपने को बनाने या मृत्यु को ग्रहण करने का ही विकल्प था। आरम्भ मे हमको केप्टन जान स्मिथ और माइल्स स्टेण्डिश जैसे साहसी और सहनशील व्यक्ति बाद के राबर्ट रोजर्स, डेनियल बून और किट कार्सन जैसे बहादुरों का स्मरण दिलाते हैं। प्रवासियों ने आदिवासियो से मक्का की खेती करना, नावें और बर्फ के जूते बनाना, शिकार फसाना, हिरन का चमड़ा कमाना और लकडी का काम सीखा। कठिन अनुभव के बाद ही प्रवासी अच्छे शिकारी, किसान और लडाकू बन पाये। फलस्वरूप एक नयी कृषि व्यवस्था, नयी स्थापत्य कला और एक नयी घरेलू आर्थिक व्यवस्था का सूत्रपात हुआ। दस वर्षों में ही नयी दुनिया की इस जनता में इगलैण्ड में रहनेवाले अपने पूर्व-पडोसियों से काफी कम समानता रह गयी और इनके बच्चों में तो वास्तव मे काफी परिवर्तन हो चुका था। उनमें अधिक सघर्षमय, व्यावहारिक और घरेलू जीवन की छाप लग चुकी थी। उन्होने सीमाओं को १७०० के आसपास नदियो के अधिकतम नौकानयन-केन्द्रों तक ढकेल दिया था। १७६५ तक एलीगिनीज तक और क्रांति से पहिले पहाडों के आरपार सीमाएं जा पहुंची थीं। भावी पीढ़ियों पर इसका प्रभाव पड़ा और एक विशाल अदम्य आकृति के नये वातावरण के साथ उन्होंने समन्वय स्थापित किया।

सीमाओं पर सामान्य सामाजिक समानता, एक नियम के समान विद्यमान थी—और वास्तव मे इस प्रकार की समानता कुछ बड़े शहरों के बाहर भी थी। इस अमरीकी समाज के विकास से किसी को ईर्ष्या नहीं थी। किराये पर लाये गये अंग्रेज श्रमिक अपनी यात्रा खर्च चुकाने के लिए पाच वर्ष का श्रम दे रहे थे, निर्धन कर्जदारों को जेलों से छोडा गया था, जर्मनी के लोग ध्वस्त पैलेटिनेट से भाग कर आये थे, स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड के निवासियों को अंग्रेजों के व्यापारिक कानूनों ने भगा दिया था—इस प्रकार इन लोगों के पास कुछ नहीं था। धन पैदा करने के लिए इनको संघर्ष करना पड़ा।

मध्यमवर्ग के लोगों की तरह ये लोग उन श्रीमंतों से घृणा करते थे जिन्होंने जमीनो के बड़े अनुदान प्राप्त कर लिये थे या जिन्होने व्यापार और सट्टे के जरिये काफी धन कमा लिया था। लेकिन अमरीका का एक साधारण व्यक्ति कितना ही निधन क्यो न हो उसे एक ऐसे अवसर और स्वाधीनता का अनुभव होता था, जो यूरोप में उसके लिए असमव था। इस भावना का उद्भव देश की विस्तृत भूमि और विपुल प्राकृतिक सम्पत्ति के कारण ही हुआ। सेन्ट जान क्रेविक्रायर नाम के एक फ्रासीसी व्यक्ति ने, जो अमरीका के उपनिवेशो मे १७५९ के आसपास आये, लिखा था कि "धनवान व्यक्ति यूरोप मे रहते हैं, केवल मध्यम और निधन वर्ग के लोगो ने ही अमरीका के लिये प्रवास किया है।" उन्होंने आगे लिखा, "यहां की प्रत्येक वस्तु उनको नयी स्फूर्ति प्रदान करती है; उसके नये कानून, जीवन का नया तरीका, एक नया सामाजिक जीवन, जिससे प्रेरणा पाकर वे मनुष्य बन गये हैं।" इसके बाद उन्होंने एक ओजस्वी विवरण में विस्तृत प्राकृतिक साधनों की इस भूमि पर स्वाधीनता के आधार पर विकसित होते हुए अमरीकीवाद का वर्णन किया है:—

"जब एक यूरोप का निवासी यहाँ पहली बार आता है तो वह अपने उद्देश्यों और दृष्टिकोणो मे सीमित होता है; लेकिन वह बहुत शीघ्र अपने इस प्रतिमान को बदल देता है। जैसे ही वह यहाँ की वायु मे सास लेता है, वह नयी योजनाएं बनाने लग जाता है और उस दिशा मे अग्रसर होने लगता है जिसके बारे में वह अपने देश मे कभी सोच नही सकता था। वहा पर समाज की बाहुल्यता अनेक लाभप्रद विचारों को सीमित रखती है और प्रायः इसी प्रकार की अधिकाश प्रशंसनीय योजनाएं समाप्त कर दी जाती हैं जो यहा पर साकार होती हैं। उसे क्रान्तिकारी प्रभावो का अनुभव होने लगता है; क्योंकि अभी तक वह जीवित नही था बल्कि वृक्ष की तरह बढ़ रहा था; अब वह अपने को एक मनुष्य अनुभव करता है क्योकि उसके साथ मनुष्य जैसा बर्ताव भी किया जाता है; उसके अपने देश के कानूनों ने उसे नगण्य मान कर उसकी अवहेलना की थी, लेकिन इस क्षेत्र के कानून उसकी रक्षा करते थे। अब आप इस व्यक्ति के मस्तिष्क और विचारो मे उठे हुए परिवर्तनों का अनुमान कीजिये, उसका हृदय अपने आप उत्साह से धड़कता है और उसकी प्रथम सफलता उन नये विचारों को प्रोत्साहित करती है, जो एक अमरीका निवासी की विशेषता है।"

लेकिन जब अमरीका के चरित्र का निर्माण हो रहा था तो १७५० तक बहुत थोड़े प्रवासियों को इस तथ्य की वास्तविक जानकारी थी। अधिकांश लोग अपने

को प्राथमिक रूप से आज्ञाकारी अंग्रेजी प्रजा और फिर वर्जीनिया, न्यूयार्क या रोढ द्वीप के निवासी मानते थे। १७५० तक १३ उपनिवेशों ने सुदृढ़ जड़ जमा ली थीं जिनकी आबादी लगभग १½ लाख थी। ये लोग उपनिवेश राण्ड्रोसकोजिन की घाटी के जंगलों से लेकर सेन्ट जान्स तक समस्त समुद्री किनारों पर फैले हुए थे। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अपनी विशेषताएं थीं जिनका चार वर्गों में विभाजन किया जा सकता है।

एक वर्ग न्यू इंग्लैण्ड का था, जो छोटे, पथरीले और अच्छी प्रकार से जुते हुए खेतों का क्षेत्र था। यहा पर लकड़ी और नौकानयन से सम्बन्धित विविध प्रकार के रोजगार उपलब्ध थे : लांगफैलो द्वारा "बिल्डिंग आफ दि शिप" में उल्लेख किये गये निर्माण कार्य, किपलिंग द्वारा "केप्टेन्स करेजियस" में वर्णित कोड मछलियों का शिकार करना और आर. एच. डाना द्वारा "टू ईयर्स बिफोर दि मास्ट" में किये गये वर्णनानुसार विदेशी व्यापार की सी साकार झलक यहाँ दिखाई देती थी। दूसरा वर्ग मध्यवर्ती उपनिवेशों का था, जो कुछ छोटे खेतों और कुछ बड़ी जायदादों से बना था। यहा पर लघु उद्योगों का काफी कार्य होता था तथा न्यूयार्क और फिलाडेल्फिया में जहाजों के जरिये माल भेजने का भी काफी अच्छा कार्य होता था। तीसरा वर्ग दक्षिणी उपनिवेशों का था जहां पर नील, चावल और तम्बाखू के विस्तृत खेत थे जिनमें काले हब्शी गुलाम काम करते थे। अन्त में था अमरीकी रूपरेखा का सबसे बड़ा क्षेत्र, जो मेन से जोर्जिया तक की विस्तृत पट्टी में फैला हुआ था और जहां पर उत्साही शिकारी लट्ठों के मकानों के निवासी और परिश्रमी किसान काफी अन्दर तक जा बसे थे। उत्तर और दक्षिण में यह देश एक ही प्रकार का था। पश्चिमी मसाचूसेट्स, पेन्सिलवानिया और पश्चिमी करोलिना के क्षेत्रों में परिश्रमी, साधनशील, पुस्तकीय, अध्ययन से अछूते, कर्मठ और साहसी व्यक्तियों का जन्म हुआ।

"भूखण्ड के एक किनारे पर बोस्टन का एक सुदृढ़ छोटा शहर विद्यमान है। इसके आसपास ३ पहाडिया, मीनारें, किला और जहाज से भरा हुआ बन्दरगाह दिखाई देता है। चौकीदार समय बतलाता है और सार्वजनिक घोषणा करनेवाला चिल्लाकर उसको दोहराता है। समुद्री लुटेरों का किनारों पर आने या कोम्टे डि फ्रोन्टेनेक के अपनी फ्रान्सीसी और आदिवासी फौजों के साथ न्यू इग्लैण्ड पर धावा बोलने के समाचार सुन कर नगर थर्रा जाता है। नागरिक लावारिस गायों को, सीवाल के शब्दों में, "शहर के एक किनारे से दूसरे किनारों तक"

खदेड़ते है; कहीं परिषद् के चुनाव के लिए चर्चा चल रही है; और कही लोग अपने मनपसन्द मनोरजन की ओर दौड़े जा रहे हैं। जब बन्दरगाह केसिल द्वीप तक मोटी बरफ से पट जाता है तब हमे कंपकपी छूटने लगती है। चर्च जानेवाले लोग भी ठिठुर कर जाते दिखाई देते हैं। बर्फ से ढका हुआ चर्च का पवित्र घण्टा रास्ते में ही बज जाता है। उसकी ध्वनि ऐसी मालूम पड़ती है जैसे कि घण्टा फूट गया हो। फिर शहर मे चेचक का प्रकोप होता है। बच्चे काफी सख्या मे पैदा होते हैं। लेकिन उनकी मृत्यु से गृहिणियो मे सन्तानोत्पत्ति का क्रम जारी रहता है। प्राचीन अस्त्रशस्त्रो से सजधज कर और वर्दिया पहिन कर बड़े उत्साह के साथ कवायद दिवस आयोजित किया जाता है। महिलाए और पुरुष घास पर लगे हुए तम्बुओ मे भोजन करते दिखाई दे रहे हैं। लाल कोटधारी सिपाहियो को हम पसन्द नही करते हैं और यह समाचार सुनकर बडी घृणा होती है कि शाही गवर्नर ने अपने महल मे एक बाल डास का आयोजन किया था जो रात को ३ बजे तक जारी रहा। बरोटनस हिल पर अपराधियो को फासी पर लटकते हुए देखने के लिए जाती हुई भीड़ में हम भी शामिल हो जाते हैं। बेकन हिल या प्यूरीट के माउंट व्हारेडम पर सिपाही खेलो को तितर-बितर करते हुए दिखाई देते हैं। एक मजिस्ट्रेट के रूप मे चार्ल्स टाउन या बोल्टन से सीवाल घोड़े पर सवार होकर शनिवार की शाम को निकलते हुए दिखाई देते हैं और दूकाने बन्द करने का आदेश दे रहे हैं।" लेकिन धीरे धीरे प्यूरिटनों का यह कठिन अनुशासन आधुनिक युग मे समाप्त हो चला था।

न्यू इंग्लैण्ड के उपनिवेश : न्यू इग्लैण्ड के किनारों की बस्तियो में विस्तार की भारी क्षमता थी। हम पहिले ही देख चुके हैं कि मसाच्यूसेट्स से स्थानातरित एक दल ने रोड द्वीप की नीव डाली और इसी प्रकार के एक दूसरे दल ने कनेक्टीकट और न्यू हेवन की स्थापना की थी जो बाद मे एक हो गये थे। प्यूरिटनो का तीसरा दल उत्तर की ओर मेन और न्यू हेम्पशायर के उन विस्तारों में फैल गया था जिन पर पहिले गैर-प्यूरिटनों के सरक्षकों ने दावा किया था। यहा शीघ्र ही प्यूरिटनों ने अपना प्रभुत्व जमा लिया। १६५० तक मसाच्यूसेट्स ने न्यू हेम्पशायर और मेन की बस्तियो पर राजनैतिक नियन्त्रण कर लिया था लेकिन शताब्दि के अन्त तक न्यू हेम्पशायर को एक विशेष शाही प्रान्त बना लिया गया। न्यू इंग्लैण्ड की जनता का फैलाव-क्रम पीढ़ियों

तक जारी रहा और प्यूरिटनो के वशजो के दल पश्चिम की ओर लगातार बढ़ते गये और वे प्रशान्त महासागर तक जा पहुचे।

न्यू इग्लैण्ड ने अपने समस्त औपनिवेशिक काल में एक ही प्रकार की आबादी रखी। क्रान्ति के समय उसकी ७ लाख जनता अंग्रेजी वंशज थी। ये लोग भाषा, व्यवहार, भावना और विचारो की दृष्टि से समान थे। राजनैतिक सिद्धान्तवादियो और भिन्न वर्गों के कारण केवल रोढ द्वीप की जनता की रूपरेखा ही कुछ अलग थी। याकियो का उद्भव प्रमुख रूप से अत्यन्त फुर्तीले, स्वाधीन और बुद्धिमान अंग्रेजो से ही हुआ था और ये लोग अपनी वश-परम्परा पर बडा गौरव करते थे। एक नेता ने इनके बारे में कहा कि ये लोग जगल मे छितरे हुए हैं। जो लोग खेती करते थे या समुद्र मे मछलियॉ पकडते थे वे आराम से जीवन बसर करते थे; लेकिन व्यापारी जहाज के मालिक और छोटे उत्पादक भी काफी रकम पैदा करते थे। केवल बोस्टन के विदेशी वाणिज्य मे १७७० तक ६०० जहाज कार्य करते थे। मसाचूसेट्स से लगभग १,२५० हजार डालर की मछलियों का निर्यात यूरोप और वेस्ट इण्डीज को होता था। इसी कारण शायद राष्ट्र मण्डल का चिन्ह कोड मछली बतायी गयी थी। न्यू इग्लैण्ड के अधिकाश परिवार आत्मभरित थे। वे स्वय अपने कपड़े बुनते थे, अपना भोजन पैदा करते थे, अपना काठ कबाड और जूते बनाते थे। उद्योग, कमखर्च, दृढप्रतिज्ञ होकर कार्य मे जुटना और थोड़ी बहुत ईश्वरभक्ति याकी लोगों की विशेषताएं थी; और यद्यपि एक वर्ग के व्यक्तियो को अन्य वर्ग वाले पसन्द नहीं करते थे फिर भी सभी लोगों का आदर किया जाता था।

न्यू इंग्लैण्ड में चर्च और पाठशालाओं को विशेष सम्मान प्राप्त था। सभी प्यूरिटन समुदाय अपने पादरियो को एक बुद्धिमान और धार्मिक गुरु के रूप में मानते थे। सभागृह को वे अपने सामाजिक समागम का एक बडा अंग समझते थे। धर्म-मण्डल भी शक्तिशाली और साहसी व्यक्तियों का होता था जो न केवल अपने अध्ययन मे ठोस होते थे बल्कि सामूहिक नेतृत्व में भी पारगत थे और उनके अनुयायी उनको सम्मान की दृष्टि से देखते थे। वे अधोगति सम्बन्धी सिद्धान्तों का प्रवचन बडे अध्ययन के साथ करते थे। पापियो की दुर्दशा पर जोनाथन एडवर्ड तर्कपूर्वक बडे विस्तार से प्रकाश डालते थे। जोन कोटन का कथन था कि वे सोने से पहिले प्रत्येक रात को केलविन के एक खण्ड का अध्ययन किया करते थे। फिर भी पादरी वर्ग को सत्यपरायण,

प्रतिभाशील और विद्वान होना-आवश्यक था। वे लोग धार्मिक ज्ञान और प्राचीन भाषाओं के पंडित होते थे। हार्वर्ड के प्रेसिडेण्ट चौन्सी ने, जो प्रातः-काल हिब्र्यु मे ओल्ड टेस्टामेण्ट सुनते थे और दोपहर को न्यू टेस्टामेट को ग्रीक भाषा मे सुनते थे, लेटिन भाषा मे इन पर एक टीका लिखी है। इस प्रकार की टीका और लोग भी कर सकते थे। सार्वजनिक शिक्षा की दिशा मे शीघ्र व्यवस्था की गयी। १६३६ मे हार्वर्ड कालेज की स्थापना की गयी और उसी दशाब्दि मे विभिन्न स्थानों पर प्राथमिक शालाएँ भी खोली गयीं। मसा-चूसेट्स की प्रारम्भिक अवस्था मे भी विधान मण्डल मे ५० मकानो के प्रत्येक गाव मे एक शाला की व्यवस्था की गयी।

जैसे जैसे समय बीतता गया न्यू इंगलैण्ड के प्रारम्भिक जीवन की रूढिवादिता धीरे धीरे समाप्त होती गयी। व्यापार और वाणिज्यवाले लोग अपने साथ धन के साथ साथ नये विचार भी लाये। डाक्टर तथा अन्य व्यवसायी लोगो की सख्या मे भी वृद्धि हुई। मसाच्यूसेट्स और कनेक्टीकट मे रविवार बडे नियम से मनाया जाता था। इसके मनाने का समय शनिवार के ६ बजे से लेकर रविवार के सूर्यास्त तक का था। इस समय के बीच कोई यात्रा नही की जाती थी। किसी भी शराब की दूकान पर किसी भी व्यक्ति को शराब नही दी जाती थी। खेल भी बन्द होता था और यहा तक कि सडकों पर खडे हुए व्यक्तियों के दलो को गिरफ्तार किया जाता था। लेकिन कृत्रिम बालो की टोपी पहिनने जैसी नयी फैशने आरम्भ हो गयी थी। ऐग्लीकनो ने क्रिस्मस को प्रसन्नता से मनाना शुरु किया, तथा राजनीति, धन पैदा करना, प्यार करना तथा दावतें देने की प्रथा जीवन का एक सामान्य अंग बन गयी।

मसाचूसेट्स मे पुराने युग से नये युग के संक्रामक काल का अद्वितीय विवरण सेम्युअल सीवाल की डायरी में मिलता है। उन्होंने १६७१ में हार्वर्ड से स्नातक परीक्षा पास की थी और उसके तीन वर्ष बाद डायरी लिखना आरभ किया जो उन्होंने १७२९ तक लिखी। ये पुरानी विचारधारा वाले प्यूरिटन थे जो बाद मे मुख्य न्यायाधीश बने। इनको मेडिरिया (एक किस्म की शराब) पीने और अपनी बग्घी पर चढ़ने का शौक था। लेकिन ये अन्य सुधारों के विरुद्ध थे। इनकी तीन खण्डों की डायरी को पढ़ने से हमारे सामने बहुरगी दृश्य साकार हो उठते हैं।

न्यू इंग्लैण्ड और अन्य उपनिवेशों के मितव्ययी लोगों मे अपराध की भावना तथा निर्धनता का अभाव था। किराये पर लाये गये नौकरो की

संख्या, जिनका पहिले अभाव था, १८ वी शताब्दि मे बहुत हो गयी थी। लेकिन उनको तथा अन्य श्रमिको को स्वाधीनता प्राप्त करना आसान हो गया और गुलामो की सख्या मे कमी होने लगी। सरकार की शहर पद्धति ने स्वाधीनता को सुदृढ बनाया। इस पद्धति के आधीन सार्वजनिक कार्यों का निपटारा प्रमाणित मतदाताओं द्वारा शहर की एक सभा मे किया जाता था। बोल्टन, न्यू हेवन अन्य बडे केन्द्रो मे अनेक श्रीमत पैदा हो गये जिनके पास अच्छे मकान, हथियार और सामानादि थे। वर्गभेद यथार्थ तथा स्पष्ट था। फिर भी यहा की जनता की तुलना मे दुनिया के किसी अन्य भाग में लोगों को इतनी सुदृढ स्वाधीनता प्राप्त न थी।

मध्यवर्ती उपनिवेश:—मध्यवर्ती उपनिवेशो की आबादी अपेक्षाकृत अधिक भिन्न थी। उसमें जातीय पक्षपात की भावना का अभाव था और वह अधिक सहनशील थी; आर्थिक दृष्टि से कम उन्नत और कम मेहनती भी थी। क्रांति के समय पेन्सिलवानिया और उसके निकट के प्रान्त डेलावेर की आबादी ३५ लाख की थी, न्यूयार्क और न्यू-जर्सी की भी आबादी लगभग इतनी ही थी। अमरीका के अन्य स्थानों के बाद यहा की अधिकाश आबादी का अवलम्ब जमीन ही थी। इन प्रान्तो के श्रेष्ठतर भागों मे जमीन के मालिक शीघ्र ही समृद्ध बन गये। उदाहरण के तौर पर पेन्सिलवानिया मे क्वेकरों के फार्मो मे ईटों के काफी मकान थे, उनके कमरों मे लकडी की पट्टिया या कागज जडे हुए थे। उनमे काफी फर्नीचर और श्रेष्ठ चीनी व काच के अच्छे सामान मौजूद थे। किसान और उनके नौकरो की एक साथ भोजन करने की मेजों पर सादा लेकिन विभिन्न प्रकार का भोजन रखा रहता था। गोश्त, जो यूरोप के अनेक भागों में दुर्लभ था, यहा रोजाना तीन बार खाया जाता था। खेती के औजारों की वृद्धि इतनी शीघ्रता से हुई कि १७६५ तक पेन्सिलवानिया में ९ हजार वेगन खेती के औजार हो गये। इन क्षेत्रों में अन्य स्थानों की अपेक्षा खेती की किस्मो मे काफी विपुलता थी। यहा अनेक प्रकार के अनाजों की खेती की जाती थी, फलो के अनेक बगीचे थे, सभी प्रकार की मुर्गिया आदि पाली जाती थी और अनेक जमीन के मालिकों के पास अपने अपने शहद के छत्ते और मछलियो के तालाब थे। हडसन की घाटी मे बेन रेनसेलायर्स, कोर्टलैण्डट्स, लिविंग्स्टन और अन्य श्रीमन्तो की बडी बडी जायदादें थी। उनके पास बडे बड़े मकान और बहुत से सेवक थे। उनकी वार्षिक लगान की आमदनी जागीर-

दारो को स्मरण दिलाती थी। लेकिन लॉग द्वीप और न्यूयार्क के ऊपरी क्षेत्रो मे छोटी छोटी जायदादों के मालिक फैले हुए थे।

पेन्सिलवानिया और न्यूयार्क में किसानो के अलावा दूकानदारो, व्यापारियो तथा कारीगरो की सख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई। इन लोगो का प्रमुख व्यवसाय लट्ठो, फर, अनाज तथा अन्य प्राकृतिक पदार्थों का निर्यात और तैयार माल, शक्कर और शराब का आयात करना था जिनसे उनको काफी लाभ होता था। क्राति के ठीक पहले लगभग ५०० जहाज डेलावेर की खाड़ी से आयात-निर्यात करते थे जिनमें सात हजार से भी अधिक लोग काम करते थे। हडसन और लॉग द्वीप साउण्ड मे भी जहाजों द्वारा काफी व्यापार होता था। फिलाडेलफिया और न्यूयार्क आंतरिक व्यापार के दो महान वितरण केन्द्र बन गये थे। इस समय धन कमाने के लिए व्यापारी वेस्ट-इण्डीज को अनाज और सूखी मछलिया बेचते थे और वहा से बदले मे गुलाम और गुड लाते थे। कुछ लोग अल्बानी से फर ले जाते थे और उनके बदले लन्दन से अच्छी अच्छी किस्म के कपडे, चीनी के बर्तन या फर्नीचर लाते थे। छोटे उत्पादको की उन्नति अच्छी तरह से होने लगी। पेन्सिलवानिया और न्यूजर्सी मे लोहे पिघलाने के भट्ठे कायम किये गये और लोहे की चीजो का निर्यात इतना बढ़ा कि फलस्वरूप इन पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए पार्लियामेट को एक कानून पास करना पड़ा। न्यूयार्क मे काच के सामान और फेल्ट-हेट बनते थे। जैसे जैसे इन क्षेत्रो में समृद्धि का विकास हुआ व्यावसायिक लोगो की संख्या भी बढ़ती गयी। प्रमुख शहरो के वकीलो ने राजनैतिक नेतृत्व ग्रहण किया और अन्य वर्गों के साथ इन्होने भी क्राति मे योग दिया।

न्यू इंग्लैण्ड की अपेक्षा न्यूयार्क और फिलाडेल्फिया में मिश्रित और सुसस्कृत समाज की प्रधानता थी। यूरोप से निकट का सम्बन्ध रखनेवाले व्यापारी और निर्यातक बडे मिलनसार और फैशनप्रिय थे। फिलाडेल्फिया जाते समय जब जान आदम्स न्यूयार्क में रुके तब वे वहा के आलीशान मकान तथा उनकी शानदार बैठको और सजधज को देख कर बहुत प्रभावित हुए। क्लब, नृत्य-कक्ष, सगीत-समारोह, रमणीय-उद्यान, कॉफी-गृह और निजी रगमच इस शहर की शान थे। कभी कभी न्यूयार्क मे किसी किसी की शव-यात्रा पर कई हजार डालर खर्च हो जाते थे। डच लोग छुट्टी मनाने के बड़े शौकीन थे। अंग्रेजो ने छुट्टी मनाने की कला उन्हीं से सीखी थी। रईस-लोग लन्दन के आधुनिकतम तरीकों के अनुसार रेशम और मखमल के कपड़े पहनते थे तथा बालों की

टोपी और छोटी तलवार लगाते थे। सम्प्रदाय और जातियों के परस्पर मिश्रण के फलस्वरूप विचारों का आदानप्रदान भी शीघ्रता से हुआ। फिलाडेल्फिया की चौड़ी सड़के और उसके स्वच्छ किनारो की गलिया बड़ी शानदार थीं।

यह शहर अपनी सार्वजनिक संस्थाओ के लिए विख्यात था और उनमे फ्रेंकलिन, बेन्जामिन, रश और विलियम बास्ट्रम जैसे वनस्पतिशास्त्रियों ने वैज्ञानिक अध्ययन मे ख्याति प्राप्त की थी। थामस जैफरसन को यह शहर लन्दन और पेरिस की अपेक्षा अधिक स्वच्छ, विस्तृत और समृद्धिशाली जान पडा। जैफरसन स्वय एक श्रेष्ठ न्यायाधीश थे। न्यूयार्क में धार्मिक सिद्धान्त इतने उदार हो गये थे कि पादरियों ने 'स्वतत्र विचारधारा' के विरुद्ध शिकायत की। ब्रिटिश अमरीका के किसी अन्य स्थान की अपेक्षा इस प्रान्त में राजनैतिक प्रवृत्तियॉ अधिक उत्तेजक थीं। पेन्सिलवानिया में, जो क्वेकरों का प्रमुख केन्द्र था, विचारधारा अधिक अनुदार थी, लेकिन क्राति के ठीक पहले राजनैतिक क्षेत्रो मे व्याप्त क्वेकरों की सत्ता को, स्काच, आयरिश तथा जर्मनों ने हिला दिया था।

सारे मध्यवर्ती उपनिवेशों मे नीग्रो लोगों की सख्या काफी महत्वपूर्ण रही। क्वकर गुलाम प्रथा के अत्यंत विरोधी थे। उपनिवेशवाद की अन्तिम अवधि मे अन्तरराष्ट्रीय रूप से कुख्यात दास-प्रथा के विरोधी महान नेता जान वूलमैन पैदा हुए। लेम्ब ने इनको 'एक सुन्दर आत्मा' की संज्ञा दी थी। स्काच, आयरिश तथा जर्मनों के बीच भी दास-प्रथा का प्रचार नही हुआ। ये लोग अपने खेतों मे स्वयं कड़ी मेहनत करते थे। फिर भी शहरो तथा हडसन के किनारे के क्षेत्रों में गुलामप्रथा प्रचलित थी। सामान्य रूप से न्यू इंग्लैण्ड की अपेक्षा मध्यवर्ती प्रान्तों में जीवन अधिक सुखमय था। यहा की जलवायु, मिट्टी और लोग इसके अधिक अनुकूल थे। न्यूयार्क में नूतनवर्ष दिवस जिस धूमधाम से मनाया जाता था उतना कोई दूसरा उत्सव उत्तर मे नहीं मनाया जाता था। इस दिन न्यूयार्क में सुबह सलामी दी जाती, लोग परस्पर एक दूसरे के घर जाकर अभिवादन करते तथा अच्छी अच्छी चीजें खाते और इतनी शराब पी लेते थे कि प्रायः उनको घर पर गाड़ी मे लाना पडता था। न्यूयार्क में नये शाही गवर्नर के उपलक्ष्य में या किसी जागीरदार के उत्तराधिकारी की शादी के अवसर पर बड़ी सजधज और शानशौकत के साथ स्वागत समारोह आयोजित किया जाता था।

दक्षिणी उपनिवेश :—अत्यन्त समृद्ध और शक्तिशाली दक्षिणी उपनिवेशों के, विशेषकर वर्जीनिया और दक्षिणी करोलिना के तीन विशिष्ट पहलू

थे। यहा के लोगों का जीवन ठेठ ग्रामीण था। चार्ल्सटन और बाल्टीमोर ही ऐसे शहर थे जो थोडा बहुत महत्व रखते थे। इन क्षेत्रों में बडी बडी जायदादो का प्रमुख स्थान था। इनमे गुलामो की कतारे, शानदार इमारते, और तड़क-भड़क का जीवन था। अन्तिम विशिष्ट पहलू था समाज का विभिन्न वर्गों में विभाजन। श्वेत वर्णो की उच्च श्रेणी मे समृद्ध और बागों के रईस मालिकों का समावेश था जो योग्य राजनैतिक नेतृत्व भी करते थे; मध्यम वर्ग के अन्तर्गत बागान के छोटे मालिक, किसान तथा कुछ व्यापारी और कारीगर शामिल थे। निम्न वर्ग 'निर्धन श्वेत वर्णो' का था। इन तीनों वर्गों के नीचे थे गुलाम, जिनकी संख्या १७७० मे वर्जीनिया मे उसकी साढ़े चार लाख आबादी की आधी थी। इसी प्रकार मेरीलैण्ड की कुल दो लाख की आबादी मे गुलामो की सख्या एक तिहाई और दक्षिणी करोलिना में तो इनका अनुपात श्वेत वर्णों से दुगुना था।

आबादी के दूर दूर फैलने का कारण कुछ अंशो मे बागान की पद्धति थी क्योंकि प्रत्येक जागीर पर्याप्त मात्रा मे स्वभरित थी और दूसरा कारण दक्षिण-वासियो की शहरो के प्रति अनिच्छा थी। बडे जमींदार इंग्लैण्ड या उत्तरी शहरों से सीधा व्यापार करते थे इसलिए उनको बड़े व्यावसायिक समुदाय की आवश्यकता न थी। गुलाम-प्रथा ने दस्तकारी उद्योग को नष्ट कर डाला था। वर्जीनिया ने बड़े शहरों की रचना के लिए कानून बनाये लेकिन वे असफल हुए। उदाहरण के तौर पर एक कानून में कहा गया था कि प्रत्येक तालुके को एक मकान विलियम्सबर्ग में बनाना चाहिए। लेकिन क्रांति आरम्भ होने के समय विशालतम केन्द्रीय उपनिवेश नोरफोक था जिसकी आबादी लगभग सात हजार थी और विलियम्सबर्ग मे केवल दो सौ ही बड़े मकान थे। फ्रेड्रिक्स-बर्ग के बारे में कर्नल वायर्ड ने १७३२ मे लिखा, 'इस स्थान के प्रमुख व्यक्ति' के अलावा यहा केवल 'एक दुकानदार, एक दर्जी, एक लुहार, एक साधारण चौकीदार और एक महिला थी जो लोगो की चिकित्सा के साथ एक साधारण कॉफी-हाऊस भी चलाती थी। दक्षिण के अन्य सभी स्थानो मे लगभग इसी प्रकार की स्थिति थी। क्राति के ठीक पहले चार्ल्सटन १५ हजार की आबादी का एक भद्दा शहर था जिसके आधे लोग नीग्रो थे। यहां की सड़के कच्ची थी। इसी प्रकार बाल्टीमोर भी इतने ही आकार का एक ऊबड-खाबड़ बन्दरगाह था और जो पृष्ठवर्ती प्रदेश के खेती के पदार्थों के व्यापार पर अवलम्बित था। बड़े शहर न होने के कारण यहा कुछ बातो का अभाव

बहुधा खटकता था। बोस्टन मे १६९० में ही एक समाचारपत्र का प्रकाशन शुरू हो गया था लेकिन वर्जीनिया गजट १७३६ मे प्रकाशित हुआ। क्रांति के पहले २५ वर्षों में वर्जीनिया मे किसी भी व्यावसायिक कम्पनी ने कोई नाटक नहीं खेला था। ब्रिटिश साम्राज्य के अपेक्षाकृत अधिक उत्साही क्षेत्रों को जब झाड़ुओं, कुर्सियों, घोडे की नालों तथा सामान्य चीनी मिट्टी के बर्तनों जैसी चीजों के लिए समुद्र के ज्वार पर अवलम्बित होना पड़ा तब दूरदर्शी नेताओं ने शिकायतें करना आरम्भ की।

मेरीलैण्ड, वर्जीनिया तथा दक्षिणी करोलिना के विशाल बागान सामान्य रूप से किसी नदी या खाडी के सामने निचले प्रदेशों मे फैले हुए थे जहा पर नदी या जलमार्गों से आने-जाने की सुविधाएं थीं। प्रत्येक व्यक्ति के पास पारिवारिक मकान था जो सामान्य रूप से ईंटों या पत्थर का बना होता था और उसके आसपास गोदाम, लुहार की दूकान, पीप बनानेवाले की दूकान और अन्य इमारतें तथा नीग्रो लोगों के इधर उधर झोपडे थे। जनरल रिंगगोल्ड का फाउन्टेन-रोक, विलियम बायर्ड का वेस्टओवर, जार्ज मेसन का गनस्टन हाल और चार्ल्सटन के निकट जान रटलेज की जायदाद जैसे बडे मकान अत्यन्त सुन्दरता के साथ सजे हुए थे। उनके अन्दर जडे हुए बडे कक्ष, शानदार जीने तथा बडे कमरे थे। उत्कृष्ट मकानों मे महोगनी की लकडी का सुन्दर फर्नीचर सज्जित था जो कुछ अमरीका का बना हुआ तथा अधिकांश लन्दन से मंगाया गया था, लन्दन की सील वाले चादी के सामान, रेशम और मखमल के पर्दे, परिवार के लोगों के अच्छे चित्र, कढ़ी हुई वस्तुएं, तथा काफी पुस्तकें सज्जित रहती थीं। नोमिनी-हाल के रोबर्ट कार्टर के पास १५०० से भी अधिक और तृतीय विलयम बायर्ड के पास ४ हजार से भी अधिक पुस्तकें थीं। बागान मे कार्य करनेवाले अनेक लोगों के पास अनापोलिस, विलियम्सबर्ग या चार्ल्सटन मे भी अपने ग्रामीण मकान थे जहा पर वे प्रत्येक शरद ऋतु मे नृत्य, भोज, ताश खेलने, दौड़ने तथा वैधानिक प्रवृत्तियों में भाग लेने के लिए अपने परिवार की गाड़ी मे सवार होकर जाते थे। बागान वर्ग के लोग प्रायः आलसी होते थे। लेकिन बड़े बड़े बागान की उचित देखभाल के लिए कठिन परिश्रम और देखरेख की आवश्यकता होती थी। वाशिंगटन अपने माउंट वर्नन मे सख्त मेहनत करते थे। नोमिनी हिल के राबर्ट कार्टर भी अत्यन्त व्यस्त रहते थे। इनके पास वर्जीनिया मे साठ हजार एकड़ भूमि थी। इसके अलावा इनके पास एक कपड़े की मिल और लोहे की फैक्टरी, विभिन्न खानों तथा दस्तकारी की दूकानों मे हिस्सा भी था। बागान

के लोगों में बौद्धिक रुचि का अभाव समझा जाता था, लेकिन उन्होने राजनीति में अत्यंत गहरी रुचि ली, चुनाव के जरिये अनेक पदो का कार्यभार संभाला और असाधारण योग्यता के साथ शासन सम्बन्धी प्रश्नो पर बहसें की और लिखा। काफी लोगों ने विज्ञान मे रुचि दिखलाई और वे रायल सोसायटी के लिए चुने गये। दक्षिण के छोटे बागों के मालिक और किसान कठिन परिश्रमी, बुद्धिमान और मितव्ययी थे। थामस जेफरसन के पिता पीटर इसी वर्ग के थे। इन्होंने सीमा के सस्ते भूक्षेत्र को प्राप्त कर स्वयं साफ किया था। यहॉ की आबादी ने जंगलों की सफाई की, छोटे घरो का निर्माण किया तथा जायदादो को बसाया। अनेक लोगो ने गुलामों की सहायता से बडे क्षेत्रों मे खेती करना आरम्भ किया। पीटर जेफरसन जैसे लोगो की शादियॉ श्रीमन्तों के परिवारो मे होने लगी। ये लोग संभ्रात परिवार के आत्मनिर्भर तथा स्वतत्र विचारधारा-वादी थे और अपनी ब्रिटिश स्वाधीनताओं को कायम रखने के लिए दृढ़-सकल्प थे। हालकि उनमे सौम्य एवं शिक्षा का अभाव था फिर भी उनमें व्यावहारिक ज्ञान काफी था और उन्होंने जेफरसन, जेम्स मेडीसन तथा पेट्रिक हेनरी जैसे लोकशाही विचारधारा के लोगों को जन्म दिया। धीरे धीरे दक्षिण के उच्च और मध्यम वर्ग के लोगों का अन्तर कम होता गया और दोनों वर्गो मे अन्तर-विवाहों के जरिये यह समाज सुगठित होता गया। अठारहवी शताब्दि मे विशेष रूप से मेरीलैण्ड मे बड़ी बडी जागीरों का विघटन छोटे तथा कार्यक्षम खेतों मे हुआ। जमींदारों की अपेक्षा व्यापारियो और वकीलों की संख्या कम थी; दुकानदारी को इंग्लैण्ड की तरह संरक्षण मिलता था। बाल्टीमोर और नोरफोक जैसे व्यवसायी समुदायो का स्थान औपनिवेशिक पूंजीपतियो की तुलना मे निस्सन्देह छोटा था। लेकिन दक्षिण तथा उत्तर के उत्कृष्ट क्षेत्रो मे जमीन संबंधी सट्टे का काफी प्रचार हुआ। १७३७ मे द्वितीय विलियम वायर्ड ने ऊपरी जेम्स की जागीर का विघटन कर उसे शहर मे बेच कर रिचमाण्ड की नीव डाली।

दक्षिण में समाज का निम्नतम श्वेत समुदाय स्पष्ट रूप से विभाजित था। यूरोप से आये हुए कुछ अपराधी, मुक्त कर्जदार और किराये पर लाये गये नौकरों की दशा सीमाक्षेत्रों में खराब हो गयी और उन्होंने निरक्षर, बेहूदों का एक ऐसा दल बनाया जिनसे नीग्रो तक घृणा करते थे; हालाकि किराये पर लाये गये सभी लोगो का इस प्रकार का पतन नही हुआ था। अनेक चरित्रवान लोगो ने अमरीका आने के किराये के रूप मे सेवा करने का वचन दिया था। इनमे इंग्लैण्ड और अन्य यूरोपीय देशों के कारीगर थे,

जैसे बढ़ई, दर्जी, सुथार, सर्राफ, बन्दूक बनानेवाले आदि लोग। ये लोग दक्षिण को काफी औद्योगीकृत कर सकते थे लेकिन गुलाम पद्धति की तीव्रता से वृद्धि होने के कारण ऐसा नही हो सका। प्रवास की सुविधाए मिलने के कारण लन्दन की जेलो से अच्छे लोग भाग आये। छोटे छोटे अपराधो पर ही अपराधियो को समुद्र पार भेज दिया जाता था और दुर्दिनों में इग्लैण्ड के कई लोग साधारण सा अपराध कर समुद्र पार भेज दिये जाने का दंड सहर्ष पाना चाहते थे। जब वे अमरीका आते थे तो अपनी सेवाए अधिक रकम देनेवाले को अर्पित कर देते थे। फिर भी दक्षिण मे काफी आलसी, उपद्रवी और बिना लक्ष्य से घूमनेवाले लोग अधिक हो गये थे। फलस्वरूप यहा के किसान आलसी और नागरिक निर्धन हो गये थे। कुछ समय बाद वैज्ञानिक शोध के कारण उनको पता चला कि स्वयं उनकी किसी अनियमितता की अपेक्षा भारी जलवायु, हानिकारक भोजन और कीडे मकोडे ही प्रमुख रूप से उनकी अस्वस्थता तथा आलस्य का कारण थे। गुलाम पृथा के कारण लोग शारीरिक श्रम को हेय दृष्टि से देखने लगे। विलियम बायर्ड ने अपने एक सर्वेक्षण अभिलेख (हिस्ट्री आफ दि डिवायडिग लाइन) मे बडे परिहास के साथ इन आलसी, साधारण सुविधाओं से ही तुष्ट, कानून, कर तथा स्थापित धर्म के विरोधी लोगो के बारे मे लिखते हुए कहा कि ये लोग "अजगर करे न चाकरी वाली कहावत को चरितार्थ करते है"।

नीग्रो गुलामो को प्रमुख रूप से अफ्रीका के पश्चिमी किनारे, उत्तर में सेनीगेम्बिया व दक्षिण मे अंगोला से लाया गया था। सत्रहवी शताब्दि के बाद जब रायल अफ्रीकन कम्पनी का एकाधिकार समाप्त हो गया तब गुलामों का व्यवसाय विभिन्न प्रकार के अमरीकी और ब्रिटिश फर्मों और व्यक्तियों के हाथ मे आ गया। इस व्यवसाय के फलस्वरूप बोस्टन, न्यूपोर्ट, न्यूयार्क तथा दक्षिणी बन्दरगाहो पर अनेक लोग धनी बन गये। इसका सबसे बडा बाजार चार्ल्स्टन मे था जहा पर अनेक प्रतियोगी फर्म यह व्यवसाय चलाते थे। १७५० के बाद के कुछ वर्षों के एक प्रमुख व्यापारी हेनरी लारेन्स ने लिखा है कि बागान के मालिक काफी दूर से बडी उत्सुकता से आते थे और ४० पौण्ड तक की बोली नवयुवक नीग्रो के लिए बोलते थे। उत्तर मे गुलामो की बिक्री आयातकों द्वारा सीधे खरीददारों को नकद रकम के आधार पर की जाती थी लेकिन दक्षिण मे गुलामो की बिक्री के लिए आयातक वर्ग व्यापारियो या मध्यस्थो के

पास जाता था जो गुलामो का विनिमय तम्बाकू, चावल, या नील से करते थे। खेतो मे काम करनेवाले गुलामों को मोटे कपडे पहिनाये जाते थे। उनको गन्दे झोपडों मे रखा जाता था तथा सख्त ओवरसियरों की देखरेख मे वे खेतो मे कड़ी मेहनत करते थे। घरेलू नौकरों के प्रति अपेक्षाकृत दया का बर्ताव किया जाता था। शीघ्र ही उत्तर और दक्षिण मे मुलेटो की सख्या काफी हो गयी। दक्षिण मे गुलाम प्रथा का जैसे जैसे विकास हुआ, वैसे ही किराये पर लाये गये नौकरों तथा अन्य श्वेत कामगारो की सख्या तम्बाकू और चावल के बड़े बडे खेतो मे काम करने लगी।

अतः यह स्पष्ट है कि न्यू इंगलैण्ड और दक्षिण की निचली भूमि मे काफी विभिन्नता थी, लेकिन मध्यवर्ती उपनिवेशो मे उत्तर तथा दक्षिण के गुण विद्यमान थे। न्यू इग्लैण्ड मे छोटे छोटे खेतो के अलावा कुछ नही था; लेकिन वर्जीनिया की निचली भूमि, दक्षिण करोलिना और ज्योर्जिया मे बडे बड़े बाग थे। न्यू इंग्लैण्ड की स्फूर्तिजनक जलवायु मे लोग अपने हाथो से ही कठिन परिश्रम करते थे; लेकिन वर्जीनिया मे ओवरसियरो की देखरेख मे कडी धूप मे गुलामो के दल कार्य करते थे। न्यू इंग्लैण्ड मे गैर-कब्जे के विस्तृत भूखण्ड तथा छोटे खेत होने के कारण मातापिता अपने बच्चो मे भूमि का वितरण समान रूप से करते थे· लेकिन दक्षिण मे गुलामो द्वारा कार्य की जानेवाली बडी बडी जागीरो का बिना आर्थिक हानि के विघटन नही हो सकता था इसलिए लोगो ने उनको प्रथम जन्माधिकार और वशपरम्परानुसार रखा। न्यू इंग्लैण्ड मे अपने गिरजो के समुदायों को जारी रखने के लिए लोग घने गावो मे बसे हुए थे; लेकिन दक्षिण मे अधिकाश क्षेत्रो मे गिरजों के समुदाय का कम महत्व था और बागान के क्षेत्र इतने विस्तृत हो गये थे कि गावो का आबाद होना असम्भव हो गया। न्यू इंग्लैण्ड मे कस्बा शासन एक स्वाभाविक घटक था (हालाकि काउन्टियो की स्थापना की गयी थी), लेकिन दक्षिण मे काउन्टी ही अत्यन्त महत्व की थी। न्यू इंग्लैण्ड मे यह आम नियम था कि स्थानीय अधिकारियों का चुनाव जनता द्वारा होना चाहिए; लेकिन दक्षिण मे कुछ अधिकारियों की नियुक्ति प्रान्तीय अधिकारियों द्वारा और कुछ का चुनाव श्रीमंतशाही गुट से होता था। उदाहरण के तौर पर पेरिस के गिरजे के भण्डारियों की नियुक्ति वहाँ के निवासियो द्वारा नही होती थी बल्कि वे लोग स्वयं अपने उत्तराधिकारियो को चुनते थे। प्यूरिटन स्वभाव के रूखे, विवेकहीन, और दुःखी व्यक्ति नही थे, जैसा कि प्रायः इनके बारे मे कहा जाता है। ये लोग बडे निष्ठावान और आत्मसयमी होते थे। दक्षिण

अमरीका मे उपनिवेशों की स्थापना के क्षेत्र
सेंट लारेन्स व मिस्सिसिपी पर फ्रान्सीसी किलों सहित
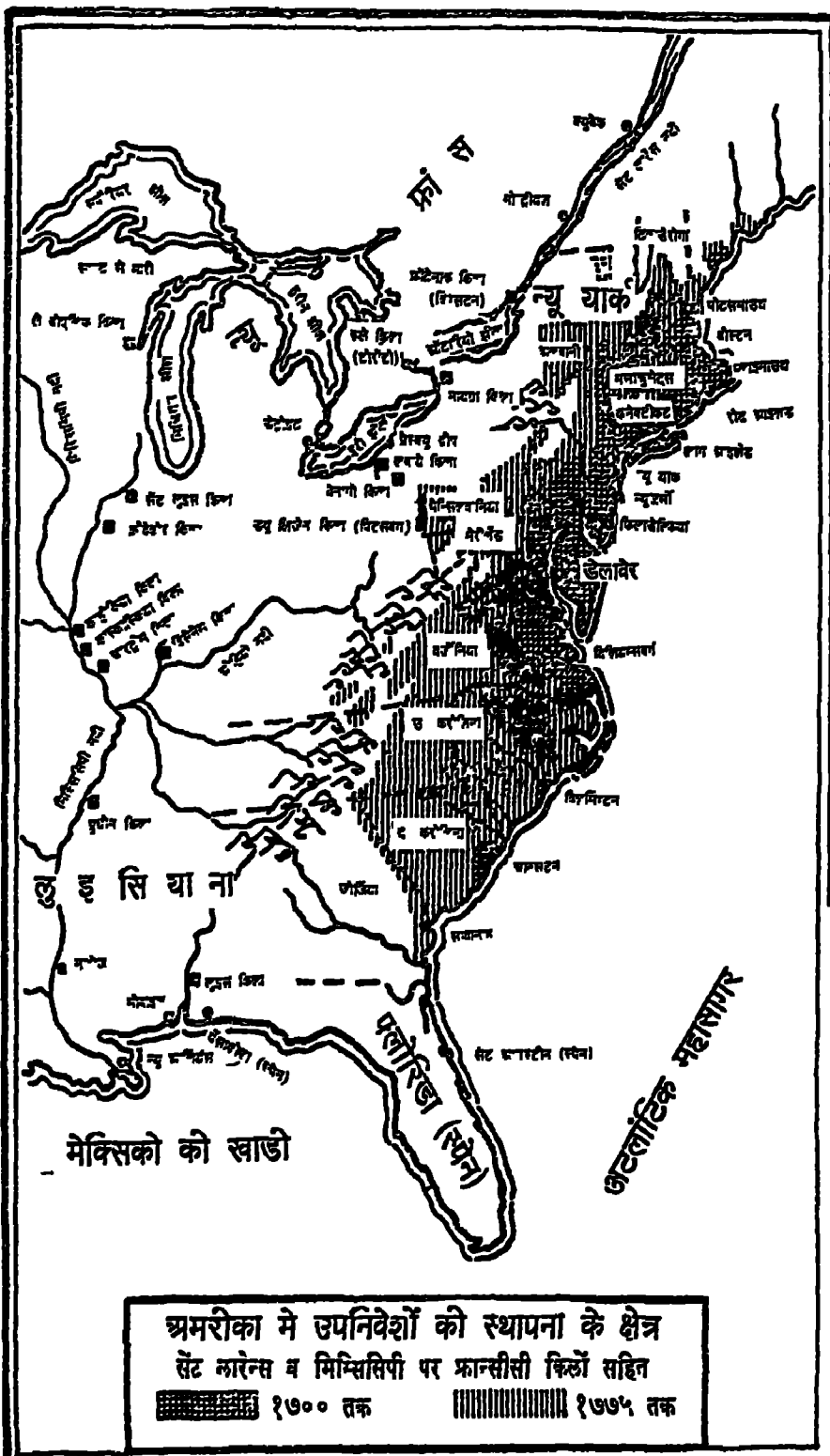
के लोग अपेक्षाकृत अधिक प्रसन्न, स्वतत्र और आनन्दप्रिय थे। इन दोनों के बीच के विभिन्न पहलू मध्यवर्ती उपनिवेशों में पाये जाते थे।

१८ वी शताब्दी के अन्त में जैसे ही आबादी और समृद्धि की वृद्धि हुई और समाज की रचना जटिल बनती गयी, सामाजिक और आर्थिक वर्गों का स्वरूप स्पष्ट होता गया। चार्ल्सटन और पोर्ट्समाउथ, नोरफोक और बोस्टन के व्यापार व्यस्त कार्यालयों में अनेक क्लर्क कार्य करते दिखाई देते थे। इन सभी लोगों के मकान श्रेष्ठ महोगिनी की लकड़ी तथा काच के बरतन आदि से सज्जित थे। एक दूसरे के यहा अक्सर दावते हुआ करती थीं। बन्दरगाहों के मेकेनिक करोलिना से मसाचुसेट्स तक लगभग एक ही प्रकार के आचरण वाले लोग थे। ये लोग अत्यन्त उच्छृंखल, भद्दा व्यवहार करनेवाले तथा उग्र वर्गचेतना से परिपूर्ण थे और वे किसी भी भीड़ मे जरा सी उत्तेजना पर ही झगड़ा करने के लिए तैयार हो जाते थे। न्यू हेमस्फियर और मेरीलेड तथा पेसिलवानिया व वर्जीनिया के छोटे किसान मितव्ययी, कठिन परिश्रमी और अनेक वातो मे आत्मनिर्भर थे। सीमा विस्तार के सभी उत्साही व्यक्तियों मे भी इसी प्रकार के गुण पाये जाते थे।

सीमान्त प्रदेश : उपनिवेशों का चौथा वडा भाग सीमाओ पर या पीछे के प्रदेशों मे फैला हुआ था। इनका अस्तित्व १८ वीं शताब्दी के अन्त मे हुआ था। इनका विस्तार ग्रीक माउन्टेन बोयज की बस्तियों मे तथा मोहाक घाटी के साफ किये गये जंगलों से लेकर वर्जीनिया की शिनानडोह घाटी से होकार अलेघेनीज के पूर्वी किनारे तक तथा करोलिना के पीडमोन्ट विस्तार तक फैला हुआ था। इन बस्तियों मे अक्खड, सादे और परिश्रमी लोग रहते थे जिनका दृष्टिकोण बिलकुल अमरीकी था। इन लोगों ने एक या दो शिलिग प्रति एकड़ भूमि के हिसाब से सस्ती जमीनें खरीदी थीं, घने जंगलों को साफ किया, झाडियो को आग लगायी और ज़मीनों में अनाज तथा गेहूं की खेती की। मकानों को विभिन्न प्रकार के लट्ठो को चारो ओर से एक दूसरे पर रख कर बनाया जाता था और दरारों को चिकनी मिट्टी से भर दिया जाता था। फर्श पीपों का बनाया जाता था और खिड़कियों मे सुअर या रीछ की चर्बी मे डुबाये हुए कागज़ो को जडा जाता था। पुरुष घर में बुनी हुई शिकारी कमीज़ और हिरन की खाल के पेन्ट पहिनते थे। प्रत्येक घर मे चर्खे और करघे होते थे। महिलाएं उन पर ऊनी वस्त्र बुनती थी। वे अपनी कुर्सियों और मेजों को

लकडी की कीलो से जोडते थे। घर की बनी चक्की से आटा आदि पीसा जाता था; जस्ते की चम्मचो को भोजन करने के लिए उपयोग मे लाया जाता था। लोग नगे पैर या चमडे के पट्टो से पैरो को ढक कर बाहर निकलते थे। उनके भोजन मे प्रमुख रूप से सुअर, हिरन का भुना हुआ मास, जगली मुर्गियॉ या तीतर और आसपास होनेवाली मछलियॉ शामिल होती थी। आदिवासियो से सुरक्षित रहने के लिए वे किसी केन्द्रीय झरने पर किला बनाते थे। उसमे गोलियॉ से सुरक्षित लट्ठो के मकान तथा लट्ठों का ढेर तैयार करते थे। उनके मनोरजन के तरीके बडे अजीब होते थे, जैसे राजनैतिक सम्मेलनों मे पूरे बैल को भूनना, नवदम्पति के गृहप्रवेश के समय नृत्य और शराब पीने का कार्यक्रम; मधुमक्खियो के छत्ते तोडना तथा बाल-डॉस आदि। स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड के जंगली भागो की तरह यहा के छोटे झगडे-फसाद भी बडे उत्तेजक होते थे। पेसिलवानिया की सीमा पर स्काटिश-आयरिश तथा जर्मनों के जम कर सघर्ष होते थे। वर्जीनिया और करोलिना मे व्यक्तिगत सघर्षो के कोई नियमादि नहीं होते थे और इस प्रकार की भिडन्त मे किसी की आख फूट जाना कोई बडी बात नहीं थी। सभी सीमान्त निवासी आदिवासियों को शत्रु समझते थे; हालाकि कुछ जनजातियों से उनका मेल था। फिर भी प्रवासियों ने जंगलों तथा रेड इण्डियनो से लगातार संघर्ष किया और इसीलिए उनमे सावधानी, कठोर जीवन तथा वर्गीय एकता की भावना कूट कूट कर भरी थी।

सीमाओ के उपनिवेशो मे आदिवासियो के साथ व्यापार करनेवाले अनेक उत्साही लोग पैदा हुये। इनमें उत्तर मे ज्यार्ज क्रोघन तथा दक्षिण-पश्चिम मे सुसस्कृत जेम्स एडायर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। ये दोनों जगली लोगो के मित्र होने के साथ साथ अत्यन्त उत्साही और पाश्चात्य विकास के प्रबल समर्थक थे। औपनिवेशिक काल के अंतिम दिनो मे क्रोघन इरोक्वीसों को न्यूयार्क मे शान्त रखने मे तथा ओहियो नदी के उद्गम से अन्दर जाने के मार्ग को खोलने में व्यस्त थे। एडायर का कथन था कि वे मूलनिवासियों के दो हजार मील क्षेत्रो के जानकार है। सीमाओ के क्षेत्र मे उत्तर करोलिना के रिचर्ड हैण्डरसन जैसे भूमि के अनेक सट्टेबाज पैदा हुए जिन्होंने क्राति से कुछ ही पहिले चिरोकीजों से वर्तमान केन्टकी के अधिकाश क्षेत्रो को खरीदा था और उसे एक प्रकार से अपने ही उपनिवेश के रूप में परिवर्तन किया था। इस क्षेत्र में राबर्ट राजर्स जैसे बहादुर लडाकू पैदा हुए जो न्यू हेमिसफियर के एक स्काच-आयरिश थे और जो उत्तरी-पूर्वी सीमाओ की फ्रान्सीसियो तथा

आदिवासियों की लडाई के नेता बने। इसी प्रकार जोन सेवियर को टेनेसी देशों मे "३५ युद्धो मे ३५ बार विजयश्री" प्राप्त करने का श्रेय प्राप्त था। इसके अलावा इस क्षेत्र मे उत्तरी करोलिना के डेवन वंश के डनियल बून जैसे अत्यन्त साहसी व्यक्ति पैदा हुए जिन्होने १९६९ मे केन्टकी में एपेलेशियन की दुर्गम्य प्राचीर के रहस्य द्वार, कम्बरलैण्ड गेप, को पार किया। मूलनिवासियों की इस समृद्ध शिकार भूमि की अनेक बार अकेले ही खोज कर बून ने केन्टकी के प्राकृतिक आकर्षण की अभिवृद्धि में काफी योग दिया और हैण्डरसन तथा उपनिवेशो के अन्य वर्गों की गहरी सेवाएं की। लेकिन सीमान्त क्षेत्रों की सबसे बडी देन वहा के मेहनती किसान थे जिन्होंने आबादी और सभ्यता के विस्तार का क्रमशः विकास किया।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि उक्त क्षेत्र कठिनाइयो और सघर्षों के बावजूद भी नवीनता और आकर्षण के महान केन्द्र थे। विलियम बायर्ड के विवरणो मे यहा के नैसर्गिक सौदर्य का आभास मिलता है।

सीमा पार के जगल मे प्रवेश करते समय के विवरण मे उन्होंने लिखा है, काले और सफेद रग के मीठे अंगूरों के गुच्छे पेडो पर लदे हुए हैं; जगली मुर्गियों के झुण्ड जगह-जगह पर घूमते हैं; कबूतरो के झुण्ड नल्फ से कनाडा जाते हुए आसमान मे दिखाई पडते हैं और शहतूत तथा ओक के वृक्षों की बड़ी शाखाए टूटी पडी दिखाई देती हैं। उनके विवरण मे धीरे धीरे नदिया पार करते हुए मोटे रीछो, जंगली फलों को खाते हुए ओपोस्सुम, रात को बोलनेवाले भेडियो और धीरे धीरे चरनेवाले भैसों तथा बायर्ड के दल द्वारा मारे गये दो वर्षीय शक्तिशाली साड का बडा रोचक वर्णन मिलता है। उन्होने गर्मी मे नदी के किनारे बैठी हुई स्टरजन मछलियो का भी उल्लेख किया है। बायर्ड ने बैगनी और श्वेत सगमरमर, बालू पर बहते हुए स्वच्छ जलप्रवाह, जिसमे सूरज की रोशनी मे मोडल सोने की तरह चमकता है, घने जगल, और सूर्यास्त के समय सुदूर चमकती हुई पहाड की चोटियों का सुरम्य विवरण, बडा ही रोचक लिखा है। धुंधले आसमान और आदिवासियों की बस्तियों का रोमाचकारी वर्णन करते हुए उन्होने लिखा है कि वहा के बहादुर लोग गम्भीर तथा रोबीले दिखाई देते थे और उनके चेहरे से रोब टपकता था। उनकी ताम्रवर्णी महिलाए जो न अत्यन्त साफ थी और न अत्यन्त पवित्र, श्वेत लोगो के सामने शरमाती थी। वन्य जीवन के ऐसे सौन्दर्य का रसास्वादन करने के पश्चात अनेक लोगो ने दूसरे स्थानो की अपेक्षा जगलो मे ही रहना पसन्द किया।

संस्कृति : औपनिवेशिक अवधि के अन्त मे समृद्ध परिवारो मे संस्कृति
ा तीव्रता से विकास हुआ। विशेष रूप से न्यू-इग्लैण्ड मे शिक्षा पर अधिक
ोर दिया जाने लगा। रौढ द्वीप को छोड़ कर, सभी उपनिवेशों मे आरम्भ
ा ही प्रारभिक शिक्षा अनिवार्य बना दी गयीं थी। उस समय अनेक ग्रामर-
कूलो की स्थापना की गयी। हार्वर्ड और येल में दो कालेजों की भी
थापना की गयी और कुछ समय बाद डार्टमथ और रौढ द्वीप के कालेज
जिसे अब ब्राउन कहते हैं) को भी आरम्भ किया गया। हार्वर्ड का कालेज
टों का एक विशाल भवन था, उसमें ५ हजार पुस्तकों का एक पुस्तकालय
ौर श्रेष्ठ वैज्ञानिक साधन उपलब्ध थे। वहा पर धर्म, दर्शन तथा विभिन्न
ास्त्रों की शिक्षा दी जाती थी। यह कालेज यूरोपीय विश्वविद्यालयों से कुछ
ी कम था।

मध्यवर्ती उपनिवेशों मे केवल मेरीलैण्ड मे ही सार्वजनिक शिक्षा की
द्धति थी जो अव्यवस्थित और शिथिल थी। क्वेकर और जर्मन इन शालाओं
ा संचालन करते थे जिन पर कुछ हद तक चर्च की देखरेख थी।
सिलवानिया मे विशेष रूप से फिलाडेल्फिया मे और उसके आसपास
नेक निजी शालाएं विद्यमान थी। न्यूयार्क मे भी लोग द्वीप पर कुछ श्रेष्ठ
ालाएं थी। न्यूयार्क शहर मे भी कुछ ग्रामर स्कूल थे लेकिन उनमें
िक्षा की कोई सामान्य पद्धति नहीं थी। दक्षिण मे शिक्षा की व्यवस्था
मुख रूप से निजी हाथो में थी। पादरी तथा अन्य लोग अनेक परन्तु श्रेष्ठ
ालाओ का सचालन करते थे; उदाहरण के तौर पर वर्जीनिया के रेक्टर
ोनाथन बूचर लडकों को २० पौण्ड की फीस पर दाखिल करते थे, जिनमे
ाशिग्टन का उपपुत्र भी था। वहा के बागों के धनाढ्य मालिक और
रोलिना के श्रीमंत लोग ग्रेटब्रिटेन तथा उत्तरी उपनिवेशों से निजी अध्यापक
तन पर लाते थे जो उनके बच्चों को पढ़ना, लिखना, व्यावहारिक गणित तथा
ैटिन और ग्रीक पढ़ाते थे। वर्जीनिया और दक्षिण करोलिना में केवल
ो निःशुल्क स्कूल थे। मध्यवर्ती और निचले उपनिवेशों में अनेक कालेजों
ी स्थापना की गयी, जैसे वर्जीनिया मे विलियम और मेरी, जहॉ पर जेफरसन
ौर अन्य अनेक सार्वजनिक नेताओं को प्रशिक्षण मिला; फिलाडेल्फिया का कालेज
जो आज पेसिलवानिया विश्वविद्यालय कहलाता है) जिसकी स्थापना मे
्रकलिन ने काफी योग दिया था; प्रिन्स्टन का कालेज; और न्यूयार्क में किंग्ज
ालेज, जो अब कोलंबिया विश्वविद्यालय कहलाता है और जहॉ पर एलेग्जाण्डर

हेमिल्टन और गवर्नर मोरिस को प्रशिक्षण प्राप्त हुआ था। न्यूयार्क तथा दक्षिण के समृद्ध परिवार अपने बच्चों को शिक्षा के लिए ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों या लन्दन मे कोर्ट की 'इनों' मे भेजते थे।

इन उपनिवेशो मे समाचार-पत्र, मेगजीन, पचाग तथा स्थायी महत्व की पुस्तके प्रकाशित होती थी। अमरीका के सबसे पहले मुद्रणालय की स्थापना १६३० मे केम्ब्रिज मे हुई थी और उसकी गतिविधियो मे कभी भी अवरोध उत्पन्न नही हुआ। क्राति के पहले बोस्टन मे ५ और फिलाडेल्फिया मे ३ समाचार-पत्र प्रकाशित होते थे। उपनिवेशों मे पुस्तक-विक्रेताओ का स्थान महत्वपूर्ण था और अनेक पुस्तकालयों की स्थापना की गयी। बोस्टन के पुस्तकालय की स्थापना १६५६ मे की गयी थी। १७७१ मे फिलाडेल्फिया के एक प्रकाशक ने ब्लैकस्टोन की टिप्पणियों की एक हजार प्रतियॉ आयात की थी और बाद मे स्वयं उसने एक हजार प्रतियॉ प्रकाशित की थीं। जोनाथन एडवर्ड्स ने धर्म तथा दर्शन मे और बेन्जामिन फ्रेंकलिन ने विज्ञान तथा पत्र-लेखन मे स्थायी यूरोपीय ख्याति प्राप्त कर ली थी। धनी न्यायाधीश सेमुअल सिवाल ने जो एक अनुदार, हठी और परिश्रमी प्रशासक थे, और बाग के मालिक वर्जीनिया के सुसंस्कृत विलियम बायर्ड ने जो रायल सोसायटी के सदस्य तथा वर्जीनिया के प्रथम नागरिक थे, अपनी डायरियॉ लिखी थीं जिनको वुलमेन्स जर्नल की तरह कभी भी भुलाया नही जा सकता है। साधारण क्वेकर किसान, जान बार्ट्रेम एक गंभीर वैज्ञानिक-द्रष्टा थे। लिनायस् ने इनको विश्व का एक महान 'प्राकृतिक वनस्पति-शास्त्री' कहा था। हिस्ट्री आफ दी फाइव इण्डियन नेशन्स के लेखक न्यूयार्क के केडवलाडेर कोल्डन ने भी ख्याति प्राप्त की थी। पेसिलवानिया के डेविड रिटनहाउस ने एक अन्तरराष्ट्रीय ज्योतिषी और गणितज्ञ के रूप मे ख्याति प्राप्त की। रोयल सोसायटी के सदस्य वर्जीनिया के जान मिचल ने वनस्पति-शास्त्र, औषधि और कृषि मे ख्याति प्राप्त की थी। उद्भट विद्वान काटन मेथर ने, जिनको न्यू इंग्लैण्ड का एक "साहित्यिक महारथी" कहा जाता था, लगभग ३८३ पुस्तकें और पुस्तिकाएँ लिखी थी, जिनमे से उनकी पुस्तक 'मॅगनालिया क्रिस्ति अमेरिकाना, 'ईसा का अमरीकी चमत्कार' स्वयं एक पुस्तकालय के समान है। औपनिवेशिक अवधि के अन्त के इतिहासकार, मसाचूसेट्स के निवासी थामस हेचिन्सन की पुस्तकों को अब भी बड़े चाव और लगन के थास अध्ययन किया जाता है। उपनिवेशों में अनेक उच्च कोटि के कलाकार भी विद्यमान थे। उनमे से बेन्जामिन वेस्ट विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं जो क्रांति के कुछ समय

पहिले अमरीका मे इंग्लैण्ड चले गये थे जहा पर वे रायल एकाडमी के अध्यक्ष के रूप मे सर जोशुआ रेनोल्ड्स के उत्तराधिकारी बने।

फ्रैंकलिन की आत्मकथा से यहा के सास्कृतिक साधनो के विकास का पता चलता है। फ्रैंकलिन का जन्म बोस्टन के एक बड़े परिवार में हुआ था। उनको अपने घर मे भोजन की मेज पर एक साथ १३ बच्चो का बैठना याद है। उन्होंने अपनी शिक्षा स्वय अपने आप प्राप्त की थी। उनके पिता इंग्लैण्ड के नोर्थम्पटन-शायर से अमेरिका आये थे। उनके पास पुस्तको का एक छोटा सग्रह था जिसमे धर्म की पुस्तको के अलावा डेफो के 'एसे आन प्रोजेक्ट्स', कोटन मेयर के 'एसेज टु डू गुड', और प्लूटार्क की जीवनियॉ आदि पुस्तके थी। वे १२ वर्ष की अवस्था मे एक मुद्रक के पास नौसिखिये रहे थे। वहा से उन्होंने बन्यन, लाक, शेफ्ट्सबरी, कोलिन्स द्वारा लिखित तथा कुछ प्राचीन श्रेष्ठ ग्रन्थों के अनुवाद प्राप्त किये। कुछ पेन्स खर्च कर उन्होंने एडीसन की 'स्पेक्टेटर' पुस्तक खरीदी जिसको पढ़ कर उनको लेख लिखने की स्फूर्ति मिली। जब वे फिलाडेल्फिया मे अध्ययन करने के लिए गये उस समय वहा साहित्यिक गति-विधिया आरम्भ हो रही थी। फेयर नाम के मुद्रक के पास उस समय एक पुराना प्रेस तथा एक छोटा घिसा हुआ अंग्रेजी का छपा था। इग्लैण्ड मे कुछ दिन ठहरने के बाद अदम्य उत्साही फ्रैंकलिन, क्वेकर-नगर को सुधारने की दृष्टि से चल पडे।

उन्होंने एक जन्टो या 'परस्पर सुधार के एक क्लब' की स्थापना ९ सदस्यो से आरम्भ की और उसकी प्रभावशाली शाखाओं की स्थापना की। उन्होंने एक चन्दे से चलते-फिरते पुस्तकालय की स्थापना की। अमरीका (१७३१) का यह पहिला पुस्तकालय था। इसका विस्तार बडी तेजी से हुआ। उन्होंने एक एकेडेमी की भी स्थापना की। पेन्स तथा अन्य लोगो के उपहार के फलस्वरूप यह एकेडेमी नियमित होकर एक विश्वविद्यालय बन गयी। वास्तविक समाचार प्रकाशित करने के लिए उन्होंने सटरडे ईवनिग पोस्ट नाम की एक पत्रिका निकाली। १७४३ मे उन्होंने अमरीकन फिलासाफिकल सोसायटी की स्थापना की। फ्रैंकलिन ने जार्ज व्हाइटफील्ड के ओजस्वी प्रवचनो का उल्लेख किया है जिनमे मितव्ययी क्वेकरो से भी धन उगाहने की क्षमता थी।

फ्रैंकलिन ने अपने घर मे सादे मिट्टी और जस्ते के बर्तनो के स्थान पर चीनी मिट्टी के बर्तनों तथा चादी के बर्तन आने और चेचक के टीको की शुरूआत का वर्णन किया है। जब उनके एक ४ वर्षीय पुत्र की मृत्यु हो गयी

तब उन्होंने उसकी लापरवाही का दोष अपने ऊपर ही लगाया। विज्ञान मे उनकी सदैव रुचि रही; और जब वे बादलों मे पतंग उडाते थे तब वे एक फ्रान्सिसी व्यंगकार के कथनानुसार आसमान से बिजली को पकड़ते थे। उन्होंने १७५४ से यथार्थ रूप मे राजनैतिक क्षेत्र मे प्रवेश किया और प्रथम अन्तर-उपनिवेशीय सम्मेलन (अल्बानी कांग्रेस) मे उन्होंने पेंसिलवानिया का प्रतिनिधित्व किया। १७५३ से १७७४ तक वे उपनिवेशों के उप-पोस्टमास्टर जनरल रहे और डाक व्यवस्था मे उनके द्वारा किये गये सुधारों ने अमरीकी संस्कृति के विकास मे काफी योग दिया है। संक्षेप मे फ्रेंकलिन के चरित्र से ये दो बाते स्पष्ट होती हैं कि उपनिवेशो के सांस्कृतिक साधनो का कितना उपयोग किया जा सकता था और उनको समृद्ध और सुदृढ़ बनाने मे एक योग्य नेता कितना योग दे सकता था।

समृद्धि मे लगातार वृद्धि होती गयी। अच्छे मकानो का निर्माण हुआ। भोजन और वस्त्रों की विपुलता बढी और सामान्य जनता मे फैशनयुक्त सम्मेलनों का प्रचार हुआ। १७५० तक समुद्री तटों के समृद्ध समाज मे उत्कृष्ट यूरोपीय विचारो की झलक फैल गयी। बोस्टन, न्यूयार्क, फिलाडेल्फिया और चार्ल्स्टन मे इंग्लैण्ड और फ्रांस के लन्दन और पेरिस के अलावा अन्य शहरो जैसी शानशौकत दिखाई देने लगी। लेकिन साथ साथ सीमाओं को पश्चिम की ओर ढकेला जा रहा था और प्रवासियो की प्रथम लहरे एपेलेशियन पहाड के दर्रों से ओहियो और केन्टकी के कस्बों मे बसने लगी थी। सीमाओं के परिश्रमी उत्साही लोग अपनी लम्बी रायफले तथा तेज धार के फरसे लिये आराम, फैशन या शिक्षा की परवाह न करते हुए अपने कार्य मे व्यस्त रहते थे। जगलो पर आधिपत्य कर उन्हे अपने अनुकूल बनाना उनके जीवन का उद्देश्य था। एक ओर फैशनदार बागान के मालिक और व्यापारी रहते थे और दूसरी ओर आदिवासियों को भगानेवाले सीमान्तवासी। इन दोनों के बीच के मैदान मे मध्यवर्गीय जनता रहती थी जो १७७५ के विशिष्ट अमरीकी थे। बड़े बड़े किसानों और छोटे बगीचो के मालिकों, मेकेनिको तथा व्यस्त दूकानदारो को अमेरिका के अलावा अन्यत्र व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ था। इन लोगों को अमरीकी जीवन के अतिरिक्त अन्य जीवन पसन्द नही था। ये लोग अंग्रेजी सत्ता की वफादार प्रजा थे तथा उनको इंग्लैण्ड तथा अंग्रेजी जीवनाधिकार का गौरव था; फिर भी इनको यह बात अनुभव होने लगी थी कि अमरीका का भी एक अपना भविष्य है।

औपनिवेशिक परम्परा:—इस तरुण राष्ट्र को औपनिवेशिक जीवन से प्राप्त होनेवाली परम्पराओं का स्वरूप स्पष्ट होने लगा था। एक सामान्य भाषा के रूप मे अंग्रेजी इनके लिए काफी मूल्यवान सिद्ध हुई। एक वास्तविक राष्ट्र के निर्माण मे इसने अत्यन्त महत्वपूर्ण योग दिया। इसके अलावा प्रतिनिधि सरकार पद्धति का व्यापक एव दीर्घकालीन प्रयोग भी इस परम्परा का एक अमूल्य अंग था। प्रतिनिधि स्वशासन की दिशा मे फ्रान्सिसियों और स्पेन निवासियों के उपनिवेशो ने कोई योग नही दिया, केवल अंग्रेजों ने आम एसेम्ब्लियों की रचना और चुने हुए प्रतिनिधियो द्वारा शासन की स्थापना की जिनको वास्तविक राजनैतिक दायित्व सौपा गया था। फलस्वरूप अंग्रेजों के उपनिवेश राजनैतिक क्षेत्र में जागरूक और अनुभवी थे। आवश्यक नागरिक अधिकारों के प्रति सम्मान इस परम्परा का दूसरा महत्वपूर्ण अंग था। उपनिवेशवासियों को इंग्लैण्ड मे अंग्रेजो की तरह ही भाषण, समाचारपत्रों और सभाओं के आयोजन करने की स्वतत्रता मे दृढ विश्वास था। यद्यपि अभी उन अधिकारों को सम्पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं किया गया था फिर भी उनको वाछनीया माना जाता था। उपनिवेशों मे धार्मिक सहनशीलता, सामान्य भावना तथा विभिन्न सम्प्रदायों को पूर्ण समन्वय के साथ रहने की मान्यता और वाछनीयत उपनिवेशीय परम्परा के बड़े महत्वपूर्ण एवं उल्लेखनीय पहलू थे। इग्लैण्ड में केथोलिक धर्म से परम्परागत भयभीत होने तथा १७६३ के बाद कुछ उपनिवेश-वासियों द्वारा पार्लियामेन्ट पर धर्म के प्रति अत्यधिक पक्षपात का आरोप लगाने के बावजूद भी इग्लैण्ड के ध्वज के अन्तर्गत प्रत्येक धर्म को आश्रय मिलता था। इसी प्रकार जातीय सहनशीलता की भावना भी काफी महत्वपूर्ण थी क्योंकि अंग्रेज, आयरिश, जर्मन, ह्युजिनोट, डच, स्वीडननिवासी आदि लोग बिना किसी भेदभाव के परस्पर मिलजुल गये और आपस मे ब्याहशादी करने लगे।

उपनिवेशों में वैयक्तिक उद्योग की भावना का तीव्र विकास विशेष रूप से उल्लेखनीय है। स्वय ब्रिटेन मे व्यक्तिवाद की भावना हमेशा ही महत्व की रही, लेकिन अमेरिका की समृद्ध किन्तु वन्य एवं कठिन भूमि के जीवन मे यह भावना और भी तीव्र हो उठी। अंग्रेजों ने अपने उपनिवेशों मे ऐसे एकाधिकारों को अनुमति प्रदान नहीं की जिन्होने फ्रान्सिसी और स्पेनी को कुचल दिया था। उद्योगी व्यक्तियों ने अवसरों के अनुसार अपने प्रयत्न जारी रखे। सक्षेप में औपनिवेशिक परम्परा के ये पहलू सोने चादी से लदे हुए जहाजों और लाखों हीरे मोतियो की अपेक्षा अधिक मूल्यवान थे।

औपनिवेशिक अवधि में दो मूलभूत सिद्धान्तों की भी नींव सुदृढ़ हुई। पहिला सिद्धान्त था लोकशाही का जिसका अर्थ था कि मोटे तौर से सभी लोगों को अवसरों की समानता प्रदान की जाय। इस प्रकार के अवसर स्वयं अपने लिए तथा नये विश्व के प्रवासियों के बच्चों के लिए प्राप्त करना आवश्यक माना गया। वे एक ऐसे समाज की रचना करना चाहते थे जिसमें न केवल समान अवसर ही मिल सके बल्कि सभी को एक श्रेष्ठ अवसर प्राप्त हो; जिसमे जनसाधारण छोटे से छोटे पद से लेकर बड़े से बड़े पद प्राप्त कर सके। अवसरो की इस समान माग के फलस्वरूप अमरीका के सामाजिक ढाचे मे उत्तरोत्तर परिवर्तन होते गये और सभी प्रकार के विशेषाधिकार समाप्त हो गये। इससे देश के शैक्षणिक और बौद्धिक जीवन पर काफी प्रभाव पड़ा और दुनिया में अमरीका एक अधिकांश आम शिक्षितो का देश कहलाने लगा। इससे कई बडे राजनैतिक परिवर्तन हुए जिनसे व्यक्ति विशेप को शासन पर सीधा नियन्त्रण करने की दिशा में अधिक अधिकार प्रदान किये गये। सक्षेप में लोकशाही के सिद्धान्त का कदम आम जनता के कल्याण का एक शक्तिशाली साधन बना।

दूसरा मूलभूत सिद्धान्त इस भावना का था कि अमरीकी जनता का एक विशेष उज्ज्वल भविष्य है और उनके सामने एक ऐसी कर्मभूमि विद्यमान है जो अन्य किसी राष्ट्र को प्राप्त नहीं है। देश की सामान्य समृद्धि, जनता की शक्ति और स्वाधीनता के वातावरण ने अमरीका-निवासियो में एक नवीन एवं तीव्र आशाजनक स्फूर्ति का सचार और प्रचण्ड आत्मविश्वास पैदा किया। प्रायद्वीप भर मे अमरीका की जनता के तीव्र गति से फैलने का प्रमुख कारण था एक उज्ज्वल भविष्य की स्पष्ट रूपरेखा। इस प्रकार की भावना से कभी कभी कुप्रभाव भी हुए; इसके कारण कई अमरीकावासियो ने भाग्य पर निर्भर रहना आरम्भ कर दिया जबकि उनको अपनी कठिनाइयो को सुलझाने के लिए कठिन परिश्रम करना आवश्यक था; वे इतने आत्मतुष्ट हो गये कि उन्होंने अपने कार्यों के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि से देखना बन्द कर दिया। लेकिन फिर भी प्रजातंत्र के विचार के साथ अमेरिका के जीवन को एक अद्वितीय ताजगी, जिन्दगी और प्रसन्नता प्राप्त हुई। अमरीका की नयी भूमि आशाओं, आकाक्षाओं एवं विशाल क्षितिज का देश बन चुकी थी।

तीसरा परिच्छेद

साम्राज्य की समस्या

फ्रान्सीसियों के साथ युद्ध : अमरीका में जैसे जैसे अंग्रेजो के उपनिवेश सुदृढ़ और विस्तृत होते गये उत्तर पश्चिम और दक्षिण स्थित अपने फ्रान्सीसी और स्पेनी प्रदेश के पड़ोसियो के साथ सघर्ष होने की आशका बढ़ती गयी। साथ साथ यह भी निश्चित हो गया कि पश्चिम मे यदि इग्लैण्ड, फ्रान्स और स्पेन मे सघर्ष हुआ तो नयी दुनिया मे भी इन राष्ट्रो की प्रजाओं मे संघर्ष ठन जायगा क्योकि न तो उस समय और न बाद मे अमरीका पश्चिमी दुनिया से अलग था। उत्तरी अमरीका के इतिहास की गाथाओं में लेटिन और एग्लो-सेक्सन जनता के बीच लगातार सघर्ष विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं जिनमे न केवल लोगों के बीच ही बल्कि अनेक विचारो और सस्कृतियो का भी सघर्ष था। ये सघर्ष अधिनायकवाद और लोकशाही, कठिन अनुशासनबद्ध एकाधिकार तथा स्वाधीन संस्थाओ, एक कट्टर असहनशील धर्मानुयायिओ और अनेक परस्पर सहनशील सम्प्रदायो के बीच थे। इन सघर्षों की पृष्ठभूमि मे विस्तृत बीहड क्षेत्र, सहयोगियो के रूप में आदिवासी कबीले तथा फ्रोन्टिनेक, मोन्टकाम, वुल्फ, एमहर्स्ट, वाशिंगटन जैसे बहादुर सिपाही थे। इनमें बर्बर निर्दयता, तथा बहादुरी, श्रेष्ठ रणकुशलता का परिचय मिलता है। इन सघर्षो का उद्देश्य था प्रायद्वीप पर नियन्त्रण।

उत्तरी अमरीका पर स्पेन के निवासियो ने ही सबसे पहिले सुदृढ आधिपत्य जमाया था। कोलम्बस द्वारा नयी दुनिया की खोज के पश्चात् शीघ्र ही स्पेननिवासियो ने प्रमुख वेस्ट इण्डियन द्वीपो पर आधिपत्य कर लिया था। १५१६ मे उनके एक बहादुर सरदार हरनान्डो कोर्टेज ने एक छोटी फौज के साथ मेक्सिको पर चढाई कर अजटेक के बादशाह मोन्टेजुमा को परास्त किया और देश पर आधिपत्य कर लिया था। बीस वर्ष बाद स्पेन के एक दूसरे दृढ़प्रतिज्ञ सरदार हरनानडो डि सोटो फ्लोरिडा मे (जहा पर पहिले भी स्पेन के अनेक साहसी लोग आ चुके थे) आये। इन्होंने आरिसियों को परास्त किया और वहाँ अपनी एक सैनिक टुकडी

छोडकर लगभग ६०० सिपाहियो को लेकर चार वर्ष के अनवरत अभियान के लिए निकल पडे और वर्तमान दक्षिणी राज्यो तथा पश्चिम मे ओकाहामा तथा टेक्सास मे घूमते रहे। कोरोनेडो नाम के स्पेन के एक दूसरे साहसी यात्री ने मेक्सिको को अपना केन्द्र बनाया और उन आश्चर्यजनक क्षेत्रो की खोज के लिए उत्तर की ओर अभियान किया जहाँ पर अत्यधिक ऊचाई पर किंवदन्ती के अनुसार सर्व श्रेष्ठ सात नगर विद्यमान बताये जाते थे। स्पेन-निवासियो ने १५६५ मे अपना प्रथम उपनिवेश फ्लोरिडा में सेन्ट आगस्टीन स्थापित किया था। सोलहवी शताब्दी के समाप्त होने के पहिले भयानक संघर्ष के बाद स्पेन के सिपाही और पादरी न्यू मेक्सिको मे बस गये थे और बाद मे सान्ता फे जैसे फौजी शासको ने लंबे समय तक उस सुनसान क्षेत्र पर शासन किया। इसी बीच इटलीवासी एक परिश्रमी धार्मिक कार्यकर्त्ता मूसिन्रियो फ्रान्सिसको किनो ने लोअर केलिफोर्निया और ओरेगोन प्रदेशो की खोज कर ली और गिरजाघरो का निर्माण किया तथा घुमक्कड आदिवासियो को ईसाई धर्मावलम्बी बना लिया। लेकिन १८६६ तक मुख्य केलिफोर्निया पर स्पेन के सिपाहियो ने बलपूर्वक आधिपत्य नहीं किया था। इस वर्ष सान डिएगो तथा मोन्टेरे की स्थापनार्थ जुनेवेरो सीरा के नेतृत्व मे फ्रान्सिसी पादरियों का आगमन हुआ। वर्जीनिया मे अंग्रेजों के उपनिवेश स्थापित होने के पहिले कनाडा मे फ्रान्सिसियो के पैर अच्छी तरह नही जम पाये थे। ब्रिटेनी के एक समुद्रयात्री जेक्स कार्टीयर १५३५ मे सेन्ट लोरेन्स तक मोन्ट्रीयल तक फ्रान्स का ध्वज लेकर गये थे और लगभग ६ वर्ष बाद इस नये क्षेत्र मे उपनिवेश स्थापित करने का विफल प्रयास किया था। आदिवासियो की लडाकू प्रवृत्ति तथा सर्दी मे भयानक शीत ने प्रवासियो को निरुत्साह कर घर लौटने को बाध्य किया। १६०३ मे न्यू फ्रान्स के संस्थापक सेम्युअल डि चेम्पलेन आये। छत्तीस वर्षीय इस बहादुर सिपाही और नाविक ने एक स्पेनवासी की तरह ही अपने अनुभवों को इतनी कुशलता-पूर्वक व्यक्त किया कि सम्राट ने उसे शाही भूगोलवेत्ता बना दिया। १६०८ मे उसने क्वेबेक की स्थापना की जो न्यू फ्रान्स मे योरोपीय लोगो का प्रथम स्थायी उपनिवेश था। खोज के उद्देश्य से वे अगले वर्ष इरोक्विस के विरुद्ध हुये तथा एलगोनक्विन्स के एक दल मे शामिल हुए और एक झील को पार करते हुए (जो अब उनके ही नाम से विख्यात है) लड़ाकू जंगली लोगो पर धावा वोला। इस घटना को इरोक्विस और फ्रान्सीसियों की दीर्घकालीन शत्रुता का कारण बताया जाता है लेकिन वास्तव मे इस शत्रुता का कारण नये

प्रदेश और फर का व्यापार था जिसमें अंग्रेजों और पश्चिमी जनजातियो के बीच पाच राष्ट्रों की स्वाभाविक रुचि थी। १६२८ में रिशलू के तत्वावधान में स्थापित कम्पनी आफ न्यू फ्रान्स के कारण उपनिवेशों की स्थापना में कुछ दृढ़ता प्राप्त हुई और जब १६६१ में चौदहवें लुई को फ्रान्स की सम्पूर्ण सत्ता प्राप्त हुई तो उसने अपने बुद्धिमान प्रधान मंत्री कोलबर्ट की सहायता से कनाडा के उपनिवेशो को उदार सहायता प्रदान की।

स्पेन, फ्रान्स और अंग्रेजों की औपनिवेशिक बस्तियाँ सामान्य रूप से अव्यवस्थित और अनियोजित थीं लेकिन अन्य मामलों में वे इससे काफी भिन्न थीं। स्पेनवासियों की विजय के फलस्वरूप शीघ्रता से धन कमाने के इच्छुक कुछ उत्साही सिपाहियो, व्यापारियों और साहसी व्यक्तियों ने बेकार बैठे हुए परिश्रमी स्थानीय आबादी की काफी सख्या पर आधिपत्य कर लिया था। फलस्वरूप स्पेन के प्रवासियों ने अमरीका में सामन्तशाही पद्धति के अनेक पहलू अपनाये और कुछ हजार बलवान और बर्बर लोगों ने कई लाख आदिवासी अपने अधीन कर लिये। लेस केसेल जैसे दयालु पादरियों ने आदिवासियों पर की जाने वाली सख्ती को कम कराने की निष्फल चेष्टा की। स्पेन के प्रवासियो ने समृद्ध खानें खोलीं, इन प्रदेशों में उन्होंने बड़े बडे चारागाहों में मवेशी पाले और गन्ना, वर्नीला, कोको तथा नील जैसे उष्ण कटिबध वाले पदार्थों की खेती की। इन स्थानों में स्पेन के लोग ही सबके मालिक थे; आदिवासी, नीग्रो (जिनको विशेष रूप से केरोबीन के क्षेत्रों तथा पुर्तगाली ब्राजील से बडी संख्या में मंगाया गया था।) और तीनों जातियों की मिश्रित संतानें इनकी गुलाम थीं। इस पद्धति से सपत्ति का उत्पादन तो काफी हुआ लेकिन उसके मालिक बहुत थोड़े ही लोग थे और अधिकाश जनता निर्धनता का जीवन व्यतीत करती रही। किसी निर्दिष्ट मध्यम वर्ग का विकास नहीं हुआ। स्पेन के प्रवासी जमींदार, पादरी या शूरमा बनना चाहते थे; व्यापारी, उद्योगपति नहीं। विदेशियों में विशेष रूप से प्रोटेस्टेन्ट मतानुयायियो को दृढ़ता के साथ दूर रखा गया। फलस्वरूप यहा पर सहन शीलता का विकास कभी नहीं हुआ और कभी कभी बाहरी देहाती परिषदों को छोड कर प्रतिनिधि संस्थाओं का कोई अस्तित्व नही था और सभी आदेश उच्च अधिकारियों से ही प्राप्त होते थे।

लेकिन स्पेन तथा पुर्तगाल के प्रवासियों ने लाखो आदिवासियों में ईसाई धर्म का प्रचार किया था; स्थानीय आबादी को नयी दस्तकारी, उच्च कृषि-व्यवस्था और यूरोपीय शिक्षा के मूलतत्व सिखाये थे। उन्होंने अपनी

जमीनों में लाखों मवेशी पालने की व्यवस्था की और ज्ञान प्राप्त करने तथा धार्मिक अध्ययन के लिए विश्वविद्यालयों की स्थापना की। कितनी भी असमानता और असहिष्णुता ही क्यों न रही हो, उन्होंने रियो ग्रान्डे के नीचे के विस्तारों में सभ्यता का प्रचार किया था।

अमरीका में फ्रान्सीसी लोग बहुत थोड़ी सख्या मे आये; और उनकी सभ्यता प्रमुख रूप से भौगोलिक और आर्थिक अवस्थाओं, फ्रान्सीसी सरकार की सार्वभौमिकता तथा कैथोलिक धर्म से प्रभावित हुई। वे सोने, चादी या चरागाहों के स्थान पर मछलियों और फर के इच्छुक थे। उन्होंने एक ठण्डे और ऐसे क्षेत्र मे प्रवेश किया जहाँ पर उनको अवाञ्छनीय समझा गया। वहाँ की आदिवासी आबादी उनके विरुद्ध थी। वे जितने अन्दर जाते थे उतने ही अधिक फर उनको प्राप्त होते थे। इसलिए वे अनेक साधारण कृषि उपनिवेश स्थापित कर सेन्ट लारेन्स, ग्रेट लेक्स, विसकोन्सिन, इलीनायस, वाबाश, मिस्सिसिपी और मनीटोबा के प्रमुख जलमार्गों का अनुसरण करते हुए अन्दर जंगलो मे प्रवेश करते गये। अंग्रेजों ने जहा अपने उपनिवेशों मे स्वशासित समुदायों की स्थापना की थी और अपार वैयक्तिक साहसिकता को अवसर प्रदान किया था उसके विपरीत पेरिस ने फ्रान्सीसी उपनिवेशो को एक अधिनायकवादी तथा पैतृक सरकार प्रदान की थी। हालाकि इन उपनिवेशो मे भी बड़े बडे साहसी नेता हुए लेकिन यहां की जनता ने अपने पैरो पर खडा होना और अपनी रक्षा करना कभी नहीं सीखा। इग्लैण्ड ने प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों को प्रवास करने के लिए प्रोत्साहित किया लेकिन फ्रान्स ने केवल केथोलिक सम्प्रदाय के लोगो को ही कनाडा की भूमि पर पैर रखने दिया और जब अन्तिम संघर्ष हुआ तब जनसंख्या के अनुपात मे बीस अंग्रेज और एक फ्रान्सिसी ब्रिटिश उपनिवेशों मे विद्यमान थे। अंग्रेज अच्छी तरह जमे हुए थे, लेकिन फ्रान्सीसी किसान सामन्तों के अधीन मजदूरी करते थे और उनका भूमि से समुचित लगाव न था। फ्रान्सीसी प्रवासी एक केन्द्रीय सत्ता पर अवलम्बित थे जबकि अंग्रेज क्रियाशील व साधन-सम्पन्न थे।

न्यू फ्रान्स का इतिहास पांच स्पष्ट अवस्थाओं से गुजरा। पहिली अवस्था परिश्रमी चेमप्लेन के काल के साथ ३५ वर्ष का प्रारम्भिक समय था। १६०३ मे उन्होंने सेन्ट लारेन्स मे ऊपर की ओर यात्रा की और बाद मे उन्होंने पोर्ट रायल (एनापोलिस) जिसे आज नोवास्कोटिया कहते हैं, खोजने मे सहायता की। १९३५ तक अपनी मृत्यु पर्यन्त उन्होंने कनाडा को प्रमुख रूप से एक

फ्रान्सीसी उपनिवेश बनाने का प्रयास किया, खोज के कार्य में प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से वे स्वय जोर्ज, ओनटेरियो और हुरन झीलो मे गये तथा फर के व्यापार को लाभप्रद स्तर पर लाये। दूसरा युग फ्रान्सिस, रिक्लेक्ट, उर्सुलिन और जैसुआइट सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व करनेवाले धार्मिक लोगों के समूहो द्वारा मिशनरी गतिविधियो के लिए अत्यधिक विख्यात है। आयजेक जोग्स और गीन डि वेव्युफ जैसे लोगो ने, जिनको इरोक्विसो ने यातना देकर मार डाला था, अजेय बहादुरी का प्रदर्शन किया। उन्होने अपनी 'रिलेशन्स' नाम की पुस्तक मे केथोलिक इतिहास का अत्यन्त प्रेरणाप्रद अध्याय लिखा है। लेकिन १६४६-५० मे जब इरोक्विसो ने हुरन की जनजातियो को, जहाँ पर जेसुआइट सम्प्रदाय अवलम्बियों को महानतम सफलता मिली थी, लगभग समाप्त कर दिया तब इन लोगो के प्रयत्नों का अत्यन्त लाभप्रद क्षेत्र नष्ट हो गया। १६५४ मे इसी प्रकार इरी जनजाति भी समाप्त कर दी गयी। व्यापारिक दृष्टि से यह अवधि असफलता की अवधि रही। १६६० मे समस्त कनाडा मे कुछ ही हजार फ्रान्सीसी इधर उधर बसे हुए थे। तीसरा युग अपेक्षाकृत अधिक लाभप्रद था। नया फ्रान्स प्रान्त एक शाही जागीर बन गया। वहाँ एक गवर्नर, तथा फ्रान्स के प्रान्तो की तरह अन्य कर्मचारी रखे गये। चौदहवें लुई ने इस क्षेत्र की समृद्धि मे अधिक व्यक्तिगत रुचि ली और इसके लिए उदार सहायता तथा आदेश और शर्तें प्रदान की। जहाजो मे भर कर नये प्रवासियो को भेजा गया। १६५९ मे क्वेबिन मे प्रथम पादरी फ्रान्सिस झेवियर डिलेवेल मान्ट मोरेन्सी आये जिन्होने कनाडा पर न्यू इग्लैण्ड की तरह प्यूरीटन धर्म राज्य की तरह एक सख्त और अनुशासनबद्ध सत्ता को लागू करने का सकल्प किया। उनकी छाप अब भी क्वेवेक के जीवन पर लगी हुई है क्योकि उनका अनेक गवर्नरों के साथ संघर्ष हुआ और उन्होने अपनी मनमानी की।

अन्त मे धर्म उत्साहियो को कॉट डि फ्रोन्टेनेक जैसे कट्टर व्यक्ति से सामना करना पडा जो १६७२ मे गवर्नर बन कर आये और जिन्होने चौथे युग का सूत्रपात किया। फ्रोन्टेनेक एक अत्यन्त योग्य और दृढ निश्चयी व्यक्ति थे। उन्होने धर्म को नागरिक अधिकारियो के आधिपत्य मे रखा। इरोक्विस की शक्ति का आसानी से विघटन कर दिया और सम्राट विलियम के युद्ध (१६९०) में क्वेवेक के विरुद्ध सर विलियम फिप्स के ३४ जहाजो का मुकाबला किया। इस अवधि मे फ्रान्स के कई महान खोजकर्ता सुदूर पश्चिम मे व्यस्त थे—रेडीसन और ग्रोसीलियस, जिन्होंने सुपीरियर झील के आगे तक खोज की; जोलियर

और मारक्वेट जिन्होंने मिस्सिसिपी की ऊपर की घाटी के अधिकाश भाग को ढूंढा और ला सेल, जो मिस्सिसिपी के मुहाने तक जा पहुचे, प्रमुख थे। इस शताब्दी के अन्त मे फ्रोन्टेनेक की मृत्यु के पहिले उन्होने अंग्रेजो के साथ एक भयानक युद्ध की तैयारी आरम्भ की दी जिसकी अपेक्षा सभी दूरदर्शी लोग करते थे। यह संघर्ष स्पेनिश तथा आस्ट्रियन राजगद्दी के उत्ताराधिकार युद्ध (रानी एने का युद्ध और किग ज्योर्ज का युद्ध) मे भी जारी रहता हुआ ७ वर्षो तक बना रहा और इस तरह नये फ्रान्स के इतिहास का पाचवा व अंतिम युग समाप्त हुआ।

दीर्घकालीन युद्ध मे फ्रान्सीसियों को कुछ लाभ थे। वे महत्वपूर्ण स्थानो पर मोर्चाबन्दी करने मे व्यस्त रहे। धीरे धीरे उन्होने किलों और फर-व्यवसाय के केन्द्रों पर इस प्रकार स्थान ग्रहण कर लिया मानो उनके साम्राज्य ने एक बड़े अर्द्धचन्द्राकार का रूप धारण कर लिया हो जिसका विस्तार उत्तर-पूर्व मे क्वेबेक से लेकर डिट्रोयट और सेन्ट लुई से होता हुआ दक्षिण मे न्यू आर्लियन्स तक चला गया था। वे इस विशाल अन्तरभूमि पर आधिपत्य कर उसका विकास करना चाहते थे और अंग्रेजों को एपेलेशियन की पूर्वी तंग पट्टी मे ही केन्द्रित रखना चाहते थे। फ्रान्स की फौजी ताकत इंग्लैण्ड की अपेक्षा अधिक थी और वे अपनी शक्तिशाली सेनाओं के जरिये धावा बोल सकते थे। न्यू फ्रान्स की सुदृढ़ केन्द्रीय सरकार कमजोर और असमन्वित औपनिवेशिक सरकारों की उपेक्षा करने के लिए अधिक उपयुक्त थी।

लेकिन तीन प्रमुख कारणो से अंग्रेजो की अन्तिम विजय सुनिश्चित थी। पहिला कारण यह था कि १७५४ मे अंग्रेज उपनिवेशों की आबादी १५ लाख थी और तेजी से बढ़ रही थी। ये सुगठित, परिश्रमी, और साधन सम्पन्न थे; जबकि न्यू फ्रान्स मे एक लाख से भी कम लोग थे जो बहादुर होने के बावजूद भी फैले हुए थे तथा उद्योग की दिशा मे कमजोर थे। दूसरे अंग्रेजों ने महत्वपूर्ण स्थानों पर कब्जा कर लिया था। आन्तरिक पक्तियों से ही कार्रवाई करते हुए वे पश्चिम मे वर्तमान पिट्सबर्ग, उत्तरपश्चिम मे नियागरा की ओर व उत्तर की ओर क्वेबेक और मोन्ट्रीयल पर प्रभावशाली तरीके से आक्रमण कर सकते थे। उनके पास सबसे अच्छी नौसेना थी इसलिए वे शीघ्रता से अपनी फौजो तथा रसद को भेज सकते थे और जलमार्ग के जरिये क्वेबेक पर घेरा डाल सकते थे। अन्त में, अंग्रेजों मे प्रशिक्षित सेनानायक तैयार करने की क्षमता थी। चेथम एक श्रेष्ठ राजनैतिक नेता प्रमाणित हुए और वुल्फ, एमहर्स्ट

और लोर्ड हो (जिनके लिए मसाचुसेट्स ने वेस्ट मिनिस्टर एबी मे एक स्मारक कायम किया था) जैसे जनरल फ्रान्सीसियो के पास नहीं थे। इसी प्रकार औपनिवेशिक अधिकारी वाशिंगटन जिन्होंने ब्राडाक की फौजों का मार्गदर्शन किया, फिनीज लायमन—जिन्होंने फ्रान्सीसियों को जोर्ज झील तक खदेडा था, और लेफ्टीनेंट कर्नल ब्रेडस्ट्रीट जिन्होंने फ्रोन्टिनेक के किले पर कब्जा करने का श्रेय प्राप्त था, विशेप रूप से उल्लेखनीय है। चेथम वास्तव में एक बड़े प्रतिभाशाली व्यक्ति थे। इन्होंने आग्ल-अमरीकी गतिविधि का लगभग दो वर्षों तक बडी योग्यता से सचालन किया। डक डि च्वा सियुल जैसे फ्रान्सीसी राजनीतिज्ञ की तुलना इनके साथ की जा सकती थी।

१७६३ मे समाप्त हुए ७०-वर्षीय संघर्ष का इतिहास बडी महत्वपूर्ण घटनाओ से भरा हुआ है। फ्रान्सीसियों ने अनेक विख्यात नेताओ को जन्म दिया जैसे केडिलक जिन्होंने डेट्रोयट की सस्थापना की, आयबरवाइल जिन्होंने हडसन की खाड़ी से वेस्ट इण्डीज की ओर अंग्रेजों को चुनौती दी, और बीनवाइल जिन्होंने न्यू आर्लियन्स की नीव डाली तथा ओहियो की घाटी पर दावा किया। अंग्रेजो की ओर फुर्तीले और योद्धा मसाचुसेट्स के गवर्नर विलियम शिरले, साहसी लडाकू सर विलियम पेपरेल और मेरीलैण्ड के चतुर गवर्नर होरेशियो थे। संघर्ष के इस दीर्घकालीन इतिहास मे लुइसबर्ग जैसे कड़े घेरों, जिस पर शाही फौजों ने दो बार कब्जा किया था, टिकोण्डिरोगा जैसे घमासान युद्ध जहा पहिले फ्रान्सीसियो की और बाद मे अंग्रेजों की विजय हुई; डियरफील्ड, मसाचुसेट्स जैसे सीमान्त नगरों पर आदिवासियों के लगातार आक्रमण तथा बीहड़ जंगलों मे कठिन यात्राओं की गाथाए मिलती हैं। १७५५ में पिट्सबर्ग के निकट फ्रान्सीसियों तथा आदिवासियो द्वारा ब्रडाक का धावा रक्तपिपासु मानव सहार था। लेकिन इस महत्वपूर्ण स्थान पर फोरबेस द्वारा शीघ्र आधिपत्य कर लेने से इस हार को विजय मे परिवर्तित कर दिया गया।

१७५९ में वुल्फ ने, जो मोन्टकाम के फन्दे में फंसने जा रहे थे, बड़ी तीव्रता से काम लिया और रात को एक ऊची पहाड़ी पर चढ़ कर शहर के अब्राहिम मैदान मे शत्रु की सेनाओं को बाहर आने को विवश कर दिया। बाद के युद्ध मे वे और मोन्टकाम दोनों मारे गये। वुल्फ इस समय ३३ वर्ष के नहीं हुए थे। युद्ध के पूर्व रात्रि को उन्होंने कहा था कि फ्रान्सीसियों को हराने के गौरव-प्राप्ति की अपेक्षा वे 'ग्रे की एलीजी' लिखना चाहते थे। उनका वास्तविक गौरव यह था कि उन्होंने उत्तरी अमरीका में अंग्रेजी भाषा-भाषी

जनता की प्रधानता के साथ अपने नाम को सदा के लिए जोड दिया क्योंकि क्वेबेक के आधिपत्य ने युद्ध की विजयश्री का निर्णय कर दिया था।

१७६३ की शान्ति-सन्धि के फलस्वरूप इंग्लैण्ड ने फ्रान्स से सारा कनाडा और स्पेन से फ्लोरिडा ले लिया, क्योंकि इन राष्ट्रों ने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध किया था। न्यू आर्लियन्स को छोड़ कर एटलांटिक से लेकर मिस्सिसिपी तक का उत्तरी अमरीका अंग्रेजो का हो गया। उसी समय लुइसियाना फ्रान्सीसियो के हाथों से निकल कर स्पेन-निवासियो की सार्वभौमिकता में आ गया। यहां यह बात उल्लेखनीय है कि कनाडा मे अंग्रेजो की विजय के साथ साथ भारत में क्लाइव के नेतृत्व मे अंग्रेजों की विजय हुई। विश्व इतिहास के ये दो युद्ध बडे ही निर्णायक रहे क्योकि उत्तर अमरीका की तरह भारत से भी फ्रान्सीसियों को भगा दिया गया।

शाही सम्बन्ध : इस सातवर्षीय युद्ध मे विजय ने अमरीकी उपनिवेशों का ग्रेटब्रिटेन के साथ बिल्कुल नया सम्बन्ध स्थापित कर दिया। सबसे पहिले तो उत्तर और पश्चिम के सशस्त्र फ्रान्सिसी उपनिवेशों का खतरा समाप्त हो गया। इसके अलावा दक्षिण से स्पेन का जो थोडा-बहुत खतरा था वह भी समाप्त हो गया। युद्ध के अभियान में अनेक औपनिवेशिक अधिकारियों और व्यक्तियो को युद्ध का मूल्यवान प्रशिक्षण प्राप्त हुआ और उनके आत्म-विश्वास में वृद्धि हुई। युद्ध के कारण प्रदेशो को सगठित होने की दिशा मे भी लाभ पहुँचा और एकीकरण के अनेक प्रस्ताव भी तैयार किये गये जिनमे १७५४ मे अलबानी कॉंग्रेस द्वारा तैयार किया गया प्रारूप अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस कॉंग्रेस मे सात उपनिवेशो के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इस योजना के अन्तर्गत, जिसे तैयार करने मे फ्रेंकलिन का प्रमुख हाथ था, सम्राट द्वारा एक प्रेसीडेन्ट जनरल की नियुक्ति और एक संघीय परिषद् की स्थापना प्रस्तावित की गयी थी जिसको यह निहित था कि इसके सदस्य औपनिवेशिक एसेम्बलियों द्वारा चुने गये हों तथा यह परिषद सामान्य सुरक्षा, आदिवासियों के साथ सम्बन्धों पर नियन्त्रण और सामान्य प्रयोजनों से कर लगाये और प्रेसीडेन्ट जनरल को वीटो (निषेधाधिकार) प्राप्त हो। यद्यपि इस योजना को समर्थन प्राप्त नही हुआ फिर भी इसने जनता को एकीकरण की विचारधारा के प्रति जागरूक कर दिया। विभिन्न प्रातों के लोगों के परस्पर संघर्ष के अनुभवो ने भी इस भावना के प्रचार को बल दिया।

युद्ध समाप्त होने के साथ जिस प्रकार ग्रेटब्रिटेन पर अवलम्बित रहना समाप्त हो गया उसी प्रकार उसके प्रति सम्मान भी कम हो गया। औपनिवेशिक फौजों ने अनेक स्थानों पर यह अनुभव किया कि वे साधनादि के अभाव और अनुशासनहीनता के बावजूद भी नियमित अंग्रेज सिपाहियों की तरह लड सकते हैं और जंगलों में तो वे उनकी अपेक्षा अधिक कौशल से लड सकते हैं। उन्होंने अनेक अंग्रेज अधिकारियों को भारी गलती करते हुए पाया जिस प्रकार कि अंग्रेजों ने अनेक उपनिवेश-वासियों को अयोग्य पाया था। उन्होंने इस बात का अनुभव किया कि बहादुर किन्तु अनुपयुक्त ब्रेडाक यदि जार्ज वाशिंगटन की सलाह मानता तो उसे कहीं अधिक सफलता प्राप्त होती। 'न्यू इग्लैण्ड' के लोग, जो अपने अधिकारियों का चुनाव लोकशाही के आधार पर करते थे, अंग्रेजों की कमान नियुक्त करने सम्बन्धी अमीरी पद्धति को बुरा समझते थे।

अन्त में युद्ध की विजय और साम्राज्य के विस्तृत विस्तार ने ऐसे प्रश्नों को पैदा कर दिया जिन्होंने उपनिवेशवासियों और ब्रिटिश सरकार के बीच तीव्र मतभेद पैदा कर दिया। साम्राज्य के प्रशासन को सुदृढ़ और नियमित बनाना आवश्यक था। द्वेषी पडोसियों के विरुद्ध सुरक्षा की व्यवस्था करना आवश्यक था और इसका अर्थ था कराधान। इसी प्रकार जहाजरानी सम्बन्धी व्यापार कानूनों के अन्तर्गत साम्राज्य की आर्थिक व्यवस्था को संशोधित और सुदृढ़ बनाना आवश्यक था।

अभी तक उपनिवेशों पर ब्रिटिश प्रशासनात्मक नियन्त्रण अत्यधिक ढीला था। शाही प्रशासन के अन्तर्गत सरकारी प्रमुख विभाग बागान और व्यापार कमिश्नरों का मंडल था, जिसका सम्पूर्ण स्वरूप १६९६ तक लगभग निश्चित हो चुका था। उसके प्रमुख मन्त्रि-गण पदेन सदस्य थे, और सामान्य रूप से अधिकाश कार्य विशेषज्ञों तथा परिश्रमी लोगों की एक छोटी संस्था द्वारा किया जाता था। यह संस्था मातृ-देश और उपनिवेशों के व्यावसायिक हितों की रक्षा करती थी· औपनिवेशिक वित्त और न्याय प्रणालियों की देखरेख, औपनिवेशिक उद्योगों का मार्गदर्शन, और नयी सरकारी नीतियों को प्रस्तावित करती थी। इसमें जाच-पडताल सम्बन्धी कुछ अधिकार निहित थे, वह सरकारी गवर्नरों को निर्देश देती थी· पदों के रिक्त होने पर औपनिवेशिक कर्मचारियों की नियुक्ति करती थी; और इन कार्यालयों से प्रतिवेदन मागती थी। इन उपनिवेशों पर पार्लियामेंट काफी वैधानिक अधिकारों का प्रयोग करती थी। वास्तव में यही एक संस्था थी जो ब्रिटिश साम्राज्य के आन्तरिक और बाहरी, व्यवसायिक और अन्य सम्बन्धों की

अधिकाश देखरेख करती थी। सम्राट के भी विस्तृत अधिकार थे। वे न केवल आठ शाही प्रान्तो के (क्योंकि १७६० तक केवल रौढ द्वीप और कनेक्टीकट ही स्वशासित चार्टर प्राप्त उपनिवेश थे, और केवल पेनसिलवानिया, डिलावेर और मेरीलैण्ड मालिकी उपनिवेश थे) गवर्नरो की नियुक्ति करते थे, बल्कि औपनिवेशिक विधान-मण्डलों द्वारा पारित किसी भी कानून को अस्वीकृत कर सकते थे। इस प्रकार के निषेधाधिकार सामान्य रूप से प्रिवी कौन्सिल द्वारा व्यापार बागान कमिश्नर मंडल की राय से लागू किये जाते थे। औपनिवेशिक मामलों में प्रिवी कौन्सिल एक अपील की अदालत के रूप मे भी बैठती थी।

सात-वर्षीय युद्ध समाप्त होने के पश्चात् पार्लियामेंट के प्रमुख कानून जहाजरानी सम्बन्धित थे जिनमे ब्रिटिश साम्राज्य के हित की दृष्टि से कुछ आर्थिक सिद्धान्त निर्धारित किये गये थे। तत्कालीन व्यापारिक सिद्धान्तानुसार राष्ट्रविशेष की सम्पत्ति का सीधा सम्बन्ध उसकी जायदाद, सोना या चान्दी के भण्डार से था और वैयक्तिक या सामूहिक उद्योग पर राज्य का नियन्त्रण आवश्यक माना गया था ताकि उसकी शक्ति मे वृद्धि हो सके। इस साम्राज्य को एक संघ के स्थान पर एक घटक, एक समन्वित राज्य के रूप मे माना गया था। इस घटक मे यह माना गया था कि उपनिवेशो को राष्ट्रीय समृद्धि और शक्ति सम्वर्द्धन मे योग देना चाहिए ताकि शाही जहाजरानी को रोजगार मिल सके और उन पदार्थों को पैदा किया जाय जिन्हें ब्रिटेन को विदेशों से खरीदना पडता है जैसे शक्कर, तम्बाकू, चावल, जहाजो के सामान और अन्य कच्चा माल आदि। इसके बदले मे मातृ-देश उपनिवेशो को तैयार माल भेज सके ओर इस तरह से साम्राज्य के दो प्रमुख तत्व एक दूसरे के पूरक बन रहें।

१६५१ मे पार्लियामेट ~~डचों के जहाजी बेडे के विस्तार से सतर्क हो गयी थी~~ और एक जहाजरानी सम्बन्धी कानून पारित किया गया जिसके अन्तर्गत इंग्लैण्ड को होनेवाला सभी औपनिवेशिक निर्यात केवल उन जहाजों द्वारा ही करना निर्धारित किया गया था जिनके मालिक अंग्रेज हो और जो अंग्रेजों द्वारा चलाये जाते हो। इसके बाद पारित किये गये कानूनों मे इस पद्धति को और भी व्यापक रूप दिया गया। इस कानूनो ने इग्लैड और उपनिवेशों को साम्राज्य के साथ व्यापार चलाने का एकाधिकार प्रदान किया और डचो तथा अन्य विदेशी जहाजो के मालिको से अपने हितो को सुरक्षित किया। इसके अलावा यूरोपीय देशों को निर्यात किये जाने वाले कुछ माल को इग्लैण्ड के बंदरगाहों को भेजने का निर्देश दिया गया और उपनिवेशों मे मगाये जानेवाले यूरोपीय माल पर

इस तरीके से नियन्त्रण किया गया कि अंग्रेज उत्पादकों को लाभ हो। इस तरह लन्दन ने कुछ दिशाओं मे औपनिवेशिक उद्योग को सीमित और कुछ मामलों मे प्रोत्साहित किया।

आरम्भ मे इन कानूनो को सम्पूर्ण रूप से लागू नही किया गया। लेकिन १७६३ मे जब ब्रिटेन ने औपनिवेशिक पद्धति पर दृढता से देखरेख करना आरम्भ किया तब व्यापार सम्बन्धी व्यवस्थाओं को प्रभावशाली व नये तरीकों से लागू किया गया।

साम्राज्य में संघवाद की समस्या : वास्तव में अब समस्त शाही पद्धति मे परिवर्तन हो चुका था और इस प्रक्रिया मे मातृ-देश से उपनिवेशों के साथ जो सम्बन्ध स्थापित हुए उनमें परिवर्तन की अपेक्षा की जाती थी। स्पष्ट तरीके से पहिली बार प्रस्तुत की गयी शाही प्रशासन के पुनर्गठन की इस समस्या ने आगामी पीढ़ी के जटिल एव अस्पष्ट इतिहास को एकरूपता और स्पष्टता प्रदान की। प्रश्न यह था कि साम्राज्य की व्यवस्था तथा शासन किस प्रकार किया जाय जिससे कि केन्द्रीय सत्ता से प्राप्त लाभों तथा स्थानीय स्वाधीनता को सरक्षित रखा जा सके। वास्तव मे यह प्रश्न युग विशेष के राजनीतिज्ञो के सामने हमेशा ही एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रश्न के रूप मे रहा है क्या इस प्रकार की कोई पद्धति अपनायी जा सकती है जिसके द्वारा इंग्लैण्ड की सरकार युद्ध, विदेशी मामलो, पश्चिमी भूमि, आदिवासी व व्यापार आदि सामान्य साम्राज्यी मामलो पर तो नियन्त्रण रखे और मसाचुसेट्स, वर्जीनिया, दक्षिण करोलिना और अन्यत्र स्थानों की विभिन्न स्थानीय सरकारो को सभी स्थानीय मामलो पर स्वनियत्रण करने दे ? क्या इन सामान्य एव स्थानीय मामलो के बारे में इस बुद्धिमानी से सीमा निर्धारित की जा सकती है जिससे कि केन्द्रीय सरकार के पास पर्याप्त अधिकार होने के बावजूद भी स्थानीय मामलों मे जनता की स्वाधीनता में हस्तक्षेप न किया जाय।

वास्तव मे यह समस्या सघवाद से सम्बन्धित थी। अठारहवीं शताब्दि के ब्रिटिश साम्राज्य का स्वरूप, सिद्धान्त या कानून की अपेक्षा कार्य एवं व्यवहार में एक सघवादी साम्राज्य का था। वह एक ऐसा साम्राज्य था जिसमें केन्द्रीय और स्थानीय सरकारों में अधिकार विभाजित थे। पार्लियामेन्ट ने लगभग डेढ़ शताब्दी तक सामान्य समस्याओ से सम्बन्धित सभी मामलो पर नियत्रण रखा आर स्थानीय एसेम्ब्लियों ने आरम्भ से ही स्थानीय बातों से सम्बन्धित सभी

मामलो पर व्यावहारिक नियंत्रण रखा था। यदि ब्रिटिश साम्राज्य १७५० मे समाप्त हो गया होता तो ये बाते स्पष्ट नजर आतीं।

किन्तु औपचारिक तौर से ब्रिटिश साम्राज्य सघ के रूप मे नही था बल्कि केन्द्रीय रूप मे था। वैधानिक तथा सैद्धान्तिक तौर से सभी अधिकार पार्लियामेंट के हाथ में थे। और जब १७६३ मे अंग्रेज राजनीतिज्ञो ने साम्राज्य को पुनर्गठित करने का कार्य आरम्भ किया तब वे पार्लियामेट की वैधानिक या सैद्धान्तिक महानता पर अवलम्बित रहे। १७६६ के उद्घोषक कानून (डिक्लेरेटरी एक्ट) के शब्दों मे उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उपनिवेश "ग्रेट ब्रिटेन की पार्लियामेंट और शाही शासन के आधीन हैं और उस पर निर्भर रहे हैं, और अभी भी निर्भर हैं, और उनको निर्भर रहना भी होगा व पार्लियामेट को उपनिवेशों और अमरीकी जनता को सभी मामलों मे बाध्य करने के लिए यथोचित शक्ति और वैधता के कानून और उपबन्ध बनाने के सम्पूर्ण अधिकार व सत्ता प्राप्त हैं।"

एक वास्तविक संघ पद्धति की स्थापना करने के अवसर से अंग्रेज राजनीतिज्ञों ने मुंह मोड लिया। लेकिन १७७६ मे इस समस्या का समाधान नहीं हुआ, और न उपनिवेशों के मातृदेश से अलग होने से ही उसका अंत हुआ। उसको केवल सयुक्त राज्य अमरीका को हस्तान्तरित कर दिया गया। १७७५ से १७८७ तक अमरीका के लोगों के सामने भी सामान्य प्रयोजनों के लिये एक समन्वित सरकार की स्थापना तथा स्थानीय मामलो पर राज्य सरकारो की स्वाधीनता अक्षुण्ण रखने की समस्या विद्यमान रही। इस समस्या को हल करने में आर्टिकिल्स आफ कान्फेडरेशन के जरिये अमरीकी जनता का प्रथम प्रयास निष्फल रहा। इसके बाद अमरीका की जनता ने अपने कटु अनुभवों की पृष्ठभूमि में फिर से प्रयत्न किया और १७८७ में एक स्थायी सघीय पद्धति पर आधारित सघीय संविधान तैयार किया।

अतः इस क्रातिकारी अवधि का एक प्रमुख विषय, जिसे हम सघर्षों और लोकशाही के अभियान के बीच का विषय मानते हैं आखों से ओझल नहीं कर सकते हैं, यह शाही सगठन की समस्या का समाधान और सघीय पद्धति का प्रादुर्भाव था। इस प्रद्धति का जो अन्तिम स्वरूप प्रस्तुत हुआ उसकी पृष्ठभूमि में अंग्रेजी साम्राज्य का एक शताब्दी का अनुभव, १७६३ के पश्चात् ब्रिटेन और अमरीका में हुए वाद-विवाद और विचार-विमर्श, युद्ध के प्रयोग और सघीकरण की दिशा मे अनुभव की गयी कठिनाइयां शामिल थीं।

सघवाद की अन्तिम सफलता १७८७ के सविधान के रूप मे हुई जो उस युग की एक महान रचनात्मक सफलता थी।

असन्तोष के सामान्य कारण : यद्यपि यह कहना सरल नहीं है कि क्राति का सूत्रपात कब हुआ लेकिन यह बात सुनिश्चित है कि वह १७७५ में आरम्भ नहीं हुई थी। जान आद्म्स ने मूल क्रातिकारी युद्धों के बीच यह घोषित कर अन्तर स्थापित करने का प्रयत्न किया है कि "मूल क्राति जब वास्तव मे समाप्त हो गयी उसके पश्चात् क्रातिकारी युद्ध प्रारम्भ हुआ"। उन्होने लिखा है, "जनता के विचारों मे और उपनिवेशों की एकता मे क्राति विद्यमान थी और सघर्ष आरम्भ होने से पहले दोनों मे समागम हो चुका था। १७६० से १७७६ तक के वर्षों मे क्राति और एकता का क्रमशः निर्माण हो रहा था।" आद्म्स एक द्रष्टा और महत्वाकाक्षी युवक वकील थे। अतः उनको तथ्यों का ज्ञान होना चाहिए। लेकिन उनके इस कथन से कि क्राति "जनता के विचारों मे थी" एक दूसरे अन्तर की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती है कि जुलाई १७७६ तक अमरीकी लोगों की केवल एक बहुत थोडी सी सख्या ही ब्रिटिश साम्राज्य से अलग होने की बुद्धिमत्ता में विश्वास करती थी। उस समय भी लगभग आधे अमरीकी ऐसे राजनैतिक तलाक के पक्ष मे नहीं थे। जान आद्म्स के कथनानुसार युद्ध की अवधि में लगभग एक तिहाई उपनिवेशवासी क्रातिकारियों के विरुद्ध थे और एक तिहाई उसमे कोई रुचि नहीं रखते थे। इसलिए यह कहना अधिक सही होगा कि १७७६ के पहिले क्राति केवल कुछ ही लोगों के मस्तिष्क में थी और १७७६-१७८१ का सघर्ष शेष जनता पर लादा गया था ताकि ब्रिटिश सरकार उसको मान सके।

क्राति के आर्थिक कारणों पर विचार करते समय हमको विभिन्न वर्गों और हितों के बीच गंभीरता से विवेचन करना होगा। उत्तर के व्यापारियों की शिकायतें दक्षिण के बागान मालिकों की शिकायतों से सर्वथा भिन्न थी और पश्चिमी भूमि के दलाल सट्टेबाजों की अपनी अलग ही समस्याएं थी।

व्यावसायिक और जहाजरानी सम्बन्धी कानूनों ने दक्षिण की अपेक्षा उत्तर के उपनिवेशों को अधिक हानि पहुचायी। उत्तरी उपनिवेशों के पास इस प्रकार के कोई मूल्यवान पदार्थ नहीं थे जिनको कि वे सीधे इंग्लैण्ड ले जाते और वहां से बदले मे तैयार सामान ला सकते। सामान्य रूप से इंग्लैण्ड से मगाये जानेवाले सामान के लिए उनको नकद रकम देनी पडती थी और उन

सामानों को मंगाने के लिए उनको वेस्ट इण्डीज से व्यापार करना पडता था। वे वेस्ट इण्डीज को गेहूं, गोश्त और कच्चा माल भेजते थे और इनके बदले में कपास, नील या शक्कर मंगाते थे। वे गुड़ भी मंगाते थे जिससे शराब बनाकर अफ्रीका के गुलामों को बेचते थे जिनको वेस्ट इण्डीज या दक्षिणी उपनिवेशों मे बेचा गया था। जब पार्लियामेंट ने १८३३ मे गुड कानून पारित किया तो निषेधात्मक नियमानुसार न्यू इंग्लैण्ड के व्यापार को वेस्ट इण्डीज के साथ नियन्त्रित कर केवल ब्रिटिश द्वीपों के साथ ही जारी रखा। यदि इस कानून को सख्ती से लागू किया गया होता तो न्यू इग्लैण्ड वालो को भारी हानि उठानी पड़ती। लेकिन गुड कानून को बडे व्यापक आधार पर टाला गया। उदाहरण के तौर पर रोढ़ द्वीप सालाना लगभग १४ हजार पीपे गुड मंगाता था जिसमें से ११,५०० फ्रान्सिसी और स्पेन के वेस्ट इण्डीज के हिस्सो से आता था। कर बचाकर तस्कर व्यापार करना कोई अपराध नही था। अंग्रेज अधिकारी-गण इस ओर अधिक ध्यान नहीं देते थे और कुछ ने तो यहा तक कहा कि अन्त मे इस प्रकार के गैरकानूनी व्यापार से आनेवाली रकम अंग्रेज़ व्यापारियों के ही पास जाती है। न्यूयार्क का लेविंग्स्टन परिवार और मसाचुसेट्स के जान हेनफाक सामान को चुरा कर बेचने से ही धनी बने थे।

१७६४ का शक्कर कानून वास्तव मे १७३३ के पुराने गुड कानून का ही उसी प्रकार की शर्तों के साथ कार्यान्वय मात्र था जिससे कि उसी को प्रभावशाली तरीके से लागू किया जा सके। ६ पेन्स प्रति गैलन वाली पुरानी दरें जो अत्यधिक और वसूल न की जा सकने वाली थी उसके स्थान पर तीन पेन्स कर दिया गया और कानून की अवहेलना करनेवाले सभी जहाजों को पकड़ने की व्यवस्था की गयी। शायद दो पेन्स की दर उचित होती लेकिन पार्लियामेंट में वेस्ट इण्डीज के प्रतिनिधियो ने उसको अधिक ही रखने का समर्थन किया। इससे न्यू इंग्लैण्ड के आर्थिक हितो को भारी धक्का लगा। रोढ़ द्वीप ने प्रतिवाद किया कि वेस्ट इण्डीज के व्यापार का सम्पूर्ण आधार उस उपनिवेश का इंग्लैण्ड के साथ का व्यापार है और अब गुड के १४ हजार पीपो मे से ब्रिटिश वेस्ट इण्डीज केवल २५०० ही भेज सकेंगे। एक अनुच्छेद मे यह व्यवस्था थी कि शक्कर कानून के अन्तर्गत मामलों की अमरीका की किसी भी वाईस एडमिरल की अदालत मे सुनवाई हो सकती है जिसका अर्थ था किसी भी व्यापारी और उसके जहाज तथा चालकों को मामलों की सुनवाई के लिए हेलीफेक्स तक लाया जा सकता था। यदि उसको मुकदमे मे निर्दोष भी ठहराया

जाता तो भी वह अपनी हानि का दावा नहीं कर सकता था। उपनिवेश के एक नेता जेरेड इंगरसल ने इस व्यवस्था पर कहा था कि यह पद्धति अनाज भण्डार को जलाकर अण्डा भूनने के समान है जिससे निस्सन्देह अनाज के भण्डार के मालिक को क्रोध आयगा।

असन्तोष का दूसरा कारण यह था कि ग्रेटब्रिटेन से उपनिवेश के लिए निर्यात किये गयी योरोपीय सामान पर निर्यात कर को १७६४ मे २·५ प्रतिशत से बढाकर ५ प्रतिशत कर दिया गया था। चुंगी अधिकारियो को आदेश दिये गये कि वे अधिक सख्ती से कार्य करे और विभिन्न तरीकों से कर्मचारियों की सख्या मे वृद्धि की गयी जैसेकि चोरी से माल ले जानेवालो को पकडने के लिए अमरीकी समुद्र मे युद्ध के जहाजो को तैनात करना और "सहायता आदेश" जारी करना ताकि शाही अधिकारी-गण सन्देहास्पद स्थानों की तलाशी ले सकें।

दक्षिण की स्थिति बिलकुल विभिन्न थी। वेस्ट इण्डीज के साथ उसका व्यापार नगण्य था। वह तम्बाकू, नील, जहाजो का सामान, खाले आदि अपने प्रमुख माल को सीधे इंग्लैण्ड भेजता था और बदले में तैयार सामान मंगाता था। फिर भी इंग्लैण्ड के साथ यह व्यापार मातृ-देश के प्रति लाभप्रद और उपनिवेशों के प्रति हानिकारक पद्धति पर आधारित था। व्यापार ब्रिटिश व्यापारियो और एजेन्टों के हाथ में था जो माल को बाहर भेजते थे। ये प्रतिनिधि तम्बाकू तथा अन्य सामानों को अनुचित व कम कीमतों पर खरीदते थे और कपडे, फर्नीचर, शराब, गाडिया तथा अन्य पदार्थों को प्रायः अनुचित व अधिक कीमतो पर बेचते थे। आरामपसन्द बागान के मालिक लन्दन से मनचाही वस्तुएं मंगाते थे और उनका भुगतान हुण्डियों से करते थे व अपने कर्जों को चुकाने मे तबाह हो जाते थे। कुछ कर्ज पिता से पुत्र तक परम्परागत हो जाते थे, जैसा कि क्राति के बाद जेफरसन ने लिखा, "बागान के ऐसे मालिक लन्दन के कुछ व्यावसायिक गृहों से सम्बद्ध जायदाद के खरीदे हुए जीव थे।"

वास्तव में क्राति के आरम्भ मे वर्जीनिया का ब्रिटिश व्यापारियों के प्रति कुल कर्ज का अन्दाज़ा जेफरसन ने २० लाख पौण्ड लगाया था। यह अन्दाजा वर्जीनिया में प्रचलित समस्त सपत्ति का बीस या तीस गुना आका गया था। इसलिए स्वाभाविक रूप से बागान के मालिक अपने अंग्रेज साहूकारों से उसी प्रकार घृणा करते थे जिस प्रकार कि बाद मे पश्चिमी किसान अपने पूर्वी

साहूकारों से करने लगे थे। वे इस तथ्य को अच्छी तरह जानते थे कि इस भारी बोझ से छुटकारा पाने का सबसे आसान तरीका अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध पूरी तौर से विद्रोह करना ही है और युद्ध द्वारा प्रस्तुत स्थगन मे ही आश्रय लेना है। इसके अलावा अंग्रेज़ व्यवसायियो की भी शिकायते थी। उन्होंने बागानों के मालिकों पर उपकार करने के लिए अपनी रकमों को जोखिम मे डाला था और फिर बीस लाख पौण्ड की हानि कोई कम भी नही थी।

१७५० से बाद के २५ वर्षों में दक्षिण के कुछ विधान मण्डलों ने उदार दिवालिया नियम और स्थगन कानून बनाये जो कर्जदारो के पक्ष में थे। लेकिन जब वे स्वीकृति के लिए इंग्लैण्ड पहुँचाये गये तब प्रिवी कौन्सिल ने लगभग हमेशा की तरह अपना निषेधाधिकार का प्रयोग किया। फलस्वरूप एक अपमानजनक भावना व्याप्त हो गयी कि इंग्लैण्ड के धनी लोग निर्धनों को सता रहे हैं। पार्लियामेंट ने उपनिवेशों को कागज़ की मुद्रा का अवलम्ब अपनाने की दिशा में भी रोक लगाने का प्रयत्न किया था। १७३० के बाद अधिकाश प्रान्तों ने काफी कागजी नोट देना जारी किया और कुछ ने तो उसे वैधानिक चलन का रूप दे दिया; लेकिन लन्दन मे इसका उत्तरोत्तर विरोध होता गया। अन्त मे १७६४ मे पार्लियामेट ने उपनिवेशों को कर्ज के लिए कागज़ी मुद्राओं को कानूनी चलन के रूप में स्वीकार करने के लिए स्पष्ट रूप से मना कर दिया और इस प्रकार समस्त ब्रिटिश अमरीका के कर्जदार वर्ग मे एक नया और महत्वपूर्ण असन्तोष पैदा हो गया।

दूसरा बड़ा आर्थिक हित भूमि के सट्टे और पश्चिम के बन्दोबस्त से सबधित था। पश्चिमी देश में धन दो प्रमुख तरीकों से पैदा किया जाता था: आदिवासियों के साथ फर के व्यापार के जरिये और जंगल के बडे बडे क्षेत्रों को प्राप्त करने, विभाजित करने और बेचने के लिए जमीन की कम्पनियो की स्थापना के रूप में। उस समय फर के व्यापारी और भूमि के सट्टेबाज अपने कार्य मे उसी प्रकार स्वतंत्रता चाहते थे जिस प्रकार कि तेल के उद्योगी और सागोन की लकड़ी काटनेवाले लोग आज स्वाधीनता के इच्छुक हैं। इन दो वर्गों के अलावा भी १७६० के बाद सात वर्षीय युद्ध के औपनिवेशिक बहादुर थे जिनको पश्चिम की जमीनें उपहार स्वरूप प्रदान की गयी थी। वर्जीनिया ने सिपाहियों को इस दिशा मे विशेष रूप से पुरस्कृत किया था जबकि गवर्नर डिनवर्डी ने उन फौजों को दो लाख एकड़ भूमि देने का वायदा किया था जो ओहियो की घाटी से फ्रान्सिसियो को भगा देने का बीडा उठा लेती।

मैरिलैण्ड, वर्जीनिया और कैरोलीना के बागानों के अनेक लोग जमीनें प्राप्त करने के लिए अत्यधिक उत्सुक थे। अतः युद्ध के अन्त में यह स्पष्ट हो गया कि शीघ्र ही पश्चिम के लिए एक बड़ी होड़ मच जायेगी। एक के बाद दूसरी जमीनों की कम्पनियां बनने लगीं: समुद्रतीर के महान व्यक्ति जैसे बेन्जामिन फ्रैंकलिन, जार्ज वाशिंगटन, सर विलियम जान्सन इस दिशा में विशेष रुचि रखते थे; और जमीनों के दावों, खरीदों और सर्वेक्षणों में गड़बड़ी होने लगी।

लेकिन जब वहां रहनेवाले लोग पश्चिमी जमीनों पर कब्जा करने में लगे हुए थे, ब्रिटिश सरकार पश्चिम से सम्बन्धित प्रबन्ध और नियन्त्रण की नयी नीति निर्धारित कर रही थी। मूल निवासियों के साथ झगड़ा करने, उपनिवेशों की आबादी को पश्चिम में ज्यादा दूर फैलकर अंग्रेजों के नियन्त्रण से बाहर जाने के उद्देश्य से उनको रोकने और परस्पर एक दूसरे के दावों से उत्पन्न हुई गड़बड़ी को समाप्त करने के उद्देश्य से ब्रिटिश सरकार ने १७६३ में घोषणा की कि एपेलेशियन पहाड़ की चोटी तक सभी बस्तियों को समाप्त हो जाना चाहिए। इस 'घोषित सीमा' के बाहर की ज़मीनों को शाही क्षेत्र के रूप में अस्थायी रूप से निषिद्ध कर दिया गया, और मूलनिवासियों की जमीनों को कहीं भी सम्राट की स्वीकृति के बिना बेचा नहीं जा सकेगा। इस घोषणा का आधार यह था कि थोड़े विलम्ब से कोई हानि नहीं होगी, इसीलिए आदिवासियों को चैन लेने के लिए समय देना चाहिए, और फिर बाद में जमीनों को औपनिवेशिक बस्तियों के लिए धीरे धीरे खोल दिया जायेगा। बोर्ड आफ ट्रेड एण्ड प्लान्टेशन ने शीघ्र ही वन्डालिया नाम के एक पश्चिमी उपनिवेश की योजना का समर्थन किया। लेकिन इस घोषणा से फर के व्यापारियों, जमीन की कम्पनियों, उपहार की जमीन धारण करनेवालों तथा पश्चिम में जमीनें प्राप्त करने के इच्छुक लोगों को भारी धक्का पहुंचा। ऐसा लगता था कि अब वे दरवाज़े फिर दृढ़ता से बन्द होनेवाले थे जिनको खुलवाने के लिए अमरीकियों ने हाल ही में फ्रान्सीसियों से युद्ध किया था।

उपनिवेशों की धर्म सम्बन्धी शिकायतें एंग्लीकन चर्च के प्रति केन्द्रित होने लगीं क्योंकि डेलावेर के दक्षिण के सभी उपनिवेशों में तथा न्यूयार्क के कुछ जिलों में भी इस चर्च को राज्य का समर्थन प्राप्त था। तीन उपनिवेशों में एक धर्म-मण्डल था, लेकिन उसका अनुशासन कठोर होने के बावजूद भी एंग्लीकन चर्च ने ही वहाँ विरोधी भावना को उभाड़ा था।

यह विरोध दो प्रमुख आधारों पर अवलम्बित था; पहिली बात यह थी कि उपनिवेशों के अनेक लोगों ने चर्च को कर देने का तीव्र विरोध किया था और दूसरा जनता को इपिस्कोपेलियन गुट की राजनैतिक प्रवृत्तियो से भय था। दक्षिण में प्रत्येक एंग्लीकन पादरी की अपनी प्रतिष्ठा थी, अपनी जमीन थी और करों के जरिये उसको निर्धारित वेतन तथा अच्छी फीस प्राप्त होती थी। सभी उपनिवेशो मे इपिस्कोपेलियन निश्चित रूप से अल्पसख्यक थे। वर्जीनिया मे निचली जमीनो के लगभग सभी बड़े परिवार जैसे वाशिंगटन, लीस, रेण्डोल्फ, कार्टरस, मेसोन्स, केरीज इपिस्कोपेलियन थे। लेकिन रिच-मोण्ड के पश्चिम मे क्वेकर, वैप्टिस्ट, लूथरन, प्रेसबीटेरियन, जैसे विरोधी धर्मावलबी काफी सख्या मे थे। उत्तरी करोलिना मे बहुत थोड़े इपिस्कोपे-लियन थे। वहा अधिकारियो ने जनता के केवल नौ इपिस्कोपेलियन पादरियों का समर्थन करने का प्रयत्न किया था। दक्षिण करोलिना मे चर्च शक्तिशाली थे लेकिन वहा पर भी विरोधियो का, जिनके लगभग ८० धर्म-मण्डल थे, भारी बहुमत था। इसलिए कोई भी धार्मिक, विरोधी इपिस्कोपेलियन पादरी को तथा अपने सम्प्रदाय के पादरी को रकम देना पसन्द नहीं करता था।

विवाद का दूसरा प्रश्न शाही सुरक्षा से सम्बन्धित था। मूलनिवासियों से किसी न किसी प्रकार का युद्ध निश्चित था। फ्रान्सिसी भी बदला लेने पर तुले हुए थे और मिस्सीसिपी के स्पेन-निवासियों पर भी विश्वास नहीं किया जा सकता था। ब्रिटिश सरकार का विश्वास था कि इस खतरे से उपनिवेश अपनी रक्षा नही कर सकते। उसने शिकायत की कि उपनिवेश हाल ही के युद्ध मे फौजो को तैयार करने में शिथिल और हिचकते रहे थे और वे एकता के साथ कार्रवाई करने मे असमर्थ थे। केन्द्रीय अभिकरण के रूप मे केवल लन्दन मे शाही सरकार थी। इसलिए शीघ्र ही यह निश्चय किया गया कि जार्ज ग्रिनवाइल के अधीन उत्तरी अमरीका मे दस हजार सिपाहियों को रखा जाय और उनकी देखरेख का एक तिहाई खर्चा उपनिवेशो से कराधान के जरिये वसूल किया जाय। इसका अर्थ था कि उपनिवेशो से ३ लाख पौण्ड सालाना वसूल किया जाय। ग्रिनवाइल ने एक वर्ष के नोटिस देने तथा उपनिवेशों को इस बात का आश्वासन देने के पश्चात कि यदि उपनिवेशों ने इससे भी बढ़िया दूसरा प्रस्ताव प्रस्तुत किया तो वे उसे स्वीकार करेंगे, समाचारपत्रो और कानूनी तथा अन्य कागजातो पर स्टाम्प कर लगाने सम्बन्धी एक विधेयक प्रस्तुत किया। पार्लियामेट ने बिना किसी विरोध के १७६५ मे उस विधेयक को इस

व्यवस्था के साथ पारित कर दिया कि उपनिवेशों को फौजों के ईंधन, रोशनी, बिस्तर, भोजन बनाने के बर्तनो और रहने के प्रबन्ध मे भी सहायता करनी पडेगी। इग्लैण्ड को इस प्रकार की व्यवस्था करना आसान जान पड़ा था लेकिन उपनिवेशवासियों के लिए स्टाम्प कानून बिना प्रतिनिधित्व के कराधान लागू करने का एक स्पष्ट मामला था।

अन्त मे, अमरीका की जनता गणतन्त्र या अर्द्धगणतन्त्र के सिद्धान्तो के लिए उपयुक्त जनता थी। यहा की आबादी गत डेढ शताब्दि से जनतंत्र के वातावरण मे रहती आयी थी, जहा पर आर्थिक सघर्ष की सभावनाएं कम थी और सभी के समक्ष आर्थिक अवसर समान रूप से खुले हुए थे। यहा पर जो कुछ भी रईसी विद्यमान थी उसने जनतात्रिक सिद्धान्तों के विकास मे ही सहायता की। जहाजों के मालिकों या इस प्रकार के वर्ग जिनके पास अधिकाश धन केन्द्रित हो, बहुत कम थे और दक्षिण करोलिना जैसे कुछ प्रान्तों की राजनैतिक शक्ति ने और आन्तरिक क्षेत्रों की उदीयमान लोकशाही ने इस दिशा मे काफी सघर्ष किया था। पठारी क्षेत्रो के छोटे किसानों, स्काटलैण्ड, आयरलैण्ड और जर्मनी के प्रवासियो, कस्बो के कामगारो और कारीगरों ने पुराने व्यापारियों और बागान के मालिकों के विरुद्ध अनवरत सघर्ष किया था। क्राति की एक पीढी पहिले से ही उन्होंने इस सघर्ष को इस दृढता के साथ छेडा था कि उनके विरोधियों के छक्के छूट गये थे और उसी भावना ने मातृ-देश के विरुद्ध उनके क्रातिकारी उत्साह को बल दिया था।

इग्लैण्ड के विरुद्ध क्रान्ति करनेवाले नेता प्रमुख रूप से दो वर्गों मे विभाजित थे। एक वर्ग शिक्षित लोगों, लेखकों और विचारकों का था जिसमें सेम्युअल एडम्स, जान एडेम्स, जान जे, जेम्स ओटिस, अलेक्जेण्डर हेमिल्टन, जान मोरिन स्काट, जाज विलन्टन, विलियम लिविंगस्टन, वेन्जामिन फ्रैंकलिन, जान डिकिन्स, केरोल्टन के चार्ल्स केरोल, थामस जेफरसन, रिचर्ड हेनरी ली, जार्ज मेसन, विलो जोन्स, और जान रटलेज शामिल थे। इनको अल्प शिक्षा या अशिक्षित दल के उग्रवादी लोगों का सहयोग प्राप्त था जो कारीगर या लकडी के काम करनेवाले वर्गों के थे। इस वर्ग मे न्यूयार्क के अलेक्जेण्डर, मेक्डेगल, आयजक सियर्स और जान लेम्ब पेन्सिलवानिया मे डेनियल, रोबड्यू और जार्ज ब्रयान; वर्जीनिया मे पेट्रिक हेनरी, उत्तरी करोलिना मे थामस परसन और टिमोथी बल्डवर्थ और दक्षिण करोलिना मे क्रिस्टोफर गेड्स्डेन और थामस समटर विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। दूसरा वर्ग हिंसक, उत्तेजित और उग्र-

वादियों का था, जो विशुद्ध जनतंत्र या उससे सन्निकट सरकार की स्थापना के समर्थक थे। वे जेफ़रसन और साम आडम्स जैसे बुद्धिमान व्यक्तियो से प्रेरणा लेते थे, लेकिन उन्होंने ही क्रान्तिकारी आन्दोलन का सूत्रपात किया जो बाद मे अपनी निहित नृशंस शक्ति के साथ व्याप्त हो गया। फिरभी उसका आरम्भ करने मे पहिले वर्ग का काफी महत्व था। शिक्षित लोगों ने अपने भाषणों और लेखनी का निष्ठा के साथ उपयोग किया। काफी सख्या मे पुस्तिकाए प्रकाशित की गयीं, समाचारपत्रो मे लेख लिखे गये और सार्वजनिक सभाओं के जरिये राजनैतिक दृष्टिकोण का प्रचार किया गया।

औपनिवेशिक लेखको और पुस्तिकाओ के लेखकों ने ब्रिटिश विचारको के दो शक्तिशाली वर्गों की सहायता ली: पहिला वर्ग था प्यूरिटन, जो राष्ट्रमंडल के सिद्धान्तों को उचित ठहराता था और दूसरा वर्ग वह था जिसने १६८८ की विग क्रान्ति को उचित ठहराया था। अर्थात् उन्होंने अपनी युक्तियो को सिडनी, मिल्टन और जान लाक से ग्रहण किया था। लाक की दूसरी पुस्तक "टू ट्रिटाईज़ आफ गवर्नमेंट" मे अमरीकी स्वाधीनता की घोषणा के मूलतत्व विद्यमान थे। लाक का सिद्धान्त था कि राज्य का सर्वोत्तम कर्तव्य जीवन, स्वाधीनता और जायदाद का सरक्षण करना है जिसका अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को है। उनका कहना था कि राजनैतिक सत्ता को केवल जनता के लाभ के लिए ही कायम किया जाता है। जनता के नैसर्गिक अधिकारो को जब भग किया जाता है तब जनता का अधिकार और कर्तव्य है कि सरकार का उन्मूलन या परिवर्तन कर दे। यह सिद्धान्त स्वाधीनता की घोषणा की भूमिका मे लिखा हुआ है। लाक ने कहा है, 'बिना अधिकार के बल का सही उपचार है विरोधी बल।' लाक ने क्रान्ति के लिए एक दूसरी महान आधारशिला का प्रतिपादन किया। जब उन्होंने अपने "लेटर आन टोलरेशन" मे इस बात का प्रतिवादन किया कि धर्म और राज्य के अपने अलग अलग क्षेत्र हैं और उनको अलग रखना चाहिए, तो उन्होने यह प्रमाणित किया कि धर्म एक ऐच्छिक सगठन है जिसका समर्थन उसके सदस्यो द्वारा स्वतंत्र रूप से होता है न कि सरकार की कराधान सम्बन्धी शक्ति से।

इस दृष्टि से लाक और उनके समर्थकों के प्रति राजनीति मे रुचि रखनेवाले सभी शिक्षित अमरीकनो ने इन्हे बड़ा सम्मान प्रदान किया। वास्तव मे अमरीकी जनता ने अपने राजनैतिक दर्शन को उसी समय अपनाया था जबकि ब्रिटिश जनता उससे परे हट रही थी। १६८८ के बाद ब्रिटिश सवैधानिक

पद्धति का विकास अव्यवस्थित और अजनतान्त्रिक प्रतिनिधित्व की पद्धति से हो रहा था। एक सामन्तशाही सत्ता का प्रादुर्भाव हो चुका था जिसका आधार था पुरानी दकियानूसी पद्धति, नये औद्योगिक नगरो के प्रतिनिधित्व को अस्वीकार करना और आबादी की काफी सख्या को मतदान से वचित रखना। मतदान से वंचित रखने और दकियानूसी देहाती क्षेत्रों जैसी प्रथा अमरीका मे भी थी, लेकिन उस हद तक नही। वास्तव मे मतदाताओं की सख्या बढाने और पुरानी बस्तियों के बजाय सात नयी काउन्टियों और पश्चिमी विस्तारो की जनता के समुचित प्रतिनिधित्व के लिए समस्त १८ वी सदी मे एक निरन्तर सघर्ष जारी रहा। अमरीका में एक ऐसी पद्धति थी जिसके अन्तर्गत प्रतिनिधित्व की सख्या में वृद्धि हो रही थी, लेकिन इंगलैण्ड की पद्धति मे यह सख्या कम हो रही थी। दोनों देशो की जनता प्राकृतिक अधिकारों मे विश्वास रखती थी—बिल आफ राइट्स ब्रिटेन की एक बडी परम्परा थी; लेकिन ब्रिटेन के अनेक लोग पार्लियामेट की लगभग सम्पूर्ण सत्ता स्वीकार करने लगे थे जबकि अमरीका मे लोगों ने उसे शीघ्र अस्वीकार कर दिया। १७६५ मे जब मातृदेश से विवाद बढा उस समय अमरीकियो के पास एक ऐसा राजनैतिक दर्शन था जो उनकी आवश्यकताओ के लिए पर्याप्त था।

भ्रान्त धारणा : क्रान्ति के पहले दस वर्षों मे अमरीकी उपनिवेशो और ब्रिटिश शासकों में एक दूसरे के प्रति जितनी भ्रान्त धारणा थी कदाचित् ही दो प्रतिस्पर्धियों में उतनी रही हो। हम यह बात दुबारा कहना चाहेगे कि ब्रिटेन ने अमरीका पर अत्याचार करने की अभिलाषा से प्रेरित होकर एक भी प्रारभिक कदम नही उठाया था। आदिवासियों की समस्या को सुलझाने का प्रयत्न, उपनिवेशों की उनकी अपनी सुरक्षा की दृष्टि से फौजो को रखना और चुगी वसूली की प्रथा को दृढ बनाना—ये सब बाते लन्दन मे रहनेवाले मंत्रि-मडल को सामान्य तथा उचित जान पडती थीं, लेकिन यही बातें अधिकाश अमरीकनों को अत्याचार के शिकजे की भाति दिखाई देती थी।

'सप्त-वर्षीय युद्ध' के पश्चात् मन्दी का बुरा समय आया। जो लोग, बेकार और निर्धन थे वे पर्वतो के उस पार बसने के लिए जाना चाहते थे—लेकिन इसे निषिद्ध कर दिया गया था। व्यापार की हालत बुरी थी और नगद रुपया बहुत कम, फिर भी अंग्रेजी सत्ता ने यह सुअवसर हाथ से न जाने दिया वे और भी नये नये महसूल-कर कठोरतापूर्वक लगाकर देश का सोना और

चांदी वहा ले गये। स्टाम्प एक्ट के अन्तर्गत उपनिवेशो पर उनकी अनुमति के विना कर लगाये जा रहे थे। इस प्रकार जो धन प्राप्त होता था उसे स्थायी सेनाओं के रखने मे व्यय किया जाता था जिसकी अधिकाश उपनिवेशो को कोई खास आवश्यकता नही जान पडती थी; और क्रूर सेना चुंगी के कठोर नियमो तथा अनुचित कर सम्बन्धी कानूनो को लागू करने मे सहायता देती थी। १७६१ मे शाही पदाधिकारियो ने न्यायालयो से "सहायता आदेश" मागे अर्थात् कर बचाकर माल लानेवालों के लिए जाच के वारंट जारी करने का अनुरोध किया। लेकिन उपनिवेशो के निवासियों को इस प्रकार के आदेश असह्य थे। इन आदेशो को प्रत्येक व्यक्ति पर लागू किया जाता था और जिन अधिकारियों के पास इस प्रकार के आदेश होते थे उन्हे सम्पूर्ण अधिकार होते थे। वे किसी भी व्यक्ति के घर या दूकान की जाच कर सकते थे। ब्रिटिश सरकार ने उपनिवेशों मे कुछ वस्तुओ के निर्माण पर प्रतिबंधात्मक कानून लागू कर दिये थे। शाही सत्ता ने इन कदमो को उचित ठहराया क्योंकि उसका विश्वास था कि साम्राज्य तभी समृद्ध बन सकेगा जब उपनिवेश कच्चे माल पर और ब्रिटेन तैयार माल बनाने की दिशा मे अपना ध्यान केन्द्रित करे। लेकिन अनेक उपनिवेशों ने इस हस्तक्षेप का विरोध किया और इन व्यावहारिक मामलो से सम्बन्धित विवादों के पीछे एक सैद्धान्तिक विरोध भी निहित था जिसने सारे प्रश्न को दोनों के बीच एक गहरी खाई मे परिवर्तित कर दिया था।

अधिकाश अंग्रेज अधिकारियों का विश्वास था कि पार्लियामेंट एक ऐसी शाही सत्ता है जो इंग्लैण्ड की तरह उपनिवेशो पर भी अपने अधिकारों को समान रूप से व्यवहार मे ला सकती है। उनका मत था कि पार्लियामेट जिस प्रकार बर्कशायर के लिए कानून बना सकती है ठीक उसी तरह वह मसाचुसेट्स के लिए भी कानून बना सकती है। उपनिवेशो की अपनी सरकारें भले ही थी लेकिन उनका स्वरूप केवल निगमो (कारपोरेशन) के रूप मे ही था और वे इंग्लैड की पार्लियामेंट के आधीन थे। पार्लियामेट मे अपनी इच्छानुसार उपनिवेशो की सरकारो को सीमित करने, बढ़ाने या समाप्त करने के अधिकार निहित माने जाते थे। अमरीकी नेता यह मानने को तैयार नही थे और वे "साम्राज्य" की पार्लियामेंट के भी अस्तित्व को नहीं मानते थे। उनका कहना था कि उनका केवल वैधानिक सम्बन्ध सम्राट से है। समुद्रपार उपनिवेश स्थापित करने की स्वीकृति इग्लैण्ड के बादशाह ने ही प्रदान की और बादशाह ने ही उनकी सरकारो की व्यवस्था की; इसलिए बादशाह जिस प्रकार इग्लैण्ड का

है उसी प्रकार मसाचुसेट्स का भी। लेकिन जिस प्रकार मसाचुसेट्स के विधान मण्डल को इंग्लैण्ड के लिए कानून बनाने का अधिकार नही है उसी प्रकार इंग्लैण्ड की पार्लियामेंट को भी मसाचुसेट्स के लिए भी कानून बनाने का अधिकार प्राप्त नहीं है। यदि बादशाह को किसी उपनिवेश से धन की आवश्यकता है तो वह उसे अनुदान के रूप में माँग सकता है; लेकिन पार्लियामेंट को यह अधिकार नहीं है कि वह स्टाम्प कानून या कोई दूसरा महसूल कानून पास कर रकम एकत्रित कर सके। सक्षेप मे ब्रिटिश प्रजा पर, चाहे वह इंग्लैण्ड मे हो या अमरीका मे, केवल अपने ही प्रतिनिधियों द्वारा कर लगाया जा सकता है।

फिर भी यह स्पष्ट था कि ब्रिटेन और अमरीका में मुख्य बातों पर विभिन्न मत थे, बढ़ती हुई स्पर्धा वास्तव में इतनी नहीं थी कि उपनिवेशो और इंग्लैण्ड के बीच सघर्ष हो जबकि स्वय उपनिवेशों के अन्दर और ग्रेट ब्रिटेन के अन्दर सघर्ष पैदा हो ऐसी थी। पार्लियामेंट मे विख्यात विग नेता जैसे चेथम, बर्क, बारे और फोक्स ने अमरीकी देशभक्तों की जोरदार तरफदारी की थी। इसी प्रकार उपनिवेशो मे टोरी दल के कट्टर समर्थकों ने ब्रिटिश सरकार का समर्थन किया। दोनो ओर कुछ ऐसे भी उग्र लोग थे जो अपने अपने विचारों के प्रचार के लिए विवाद का आश्रय लेने मे खुश थे। उदाहरण के तौर पर लार्ड ब्यूट की इच्छा थी कि जनतत्र की भावना को कम करने के लिए, जिसका प्रतिपादन जान विल्किज और अन्य लोगो ने इंगलैण्ड मे किया था, उपनिवेशो के साथ सख्ती का व्यवहार किया जाय। इसके विपरीत मसाचुसेट्स मे सेम्युअल आडम्स और वर्जीनिया मे पेट्रिक हेनरी औपनिवेशिक राजनीति मे अपने उग्रवादी विचारो के प्रचार के लिए सघर्ष का आश्रय लेना चाहते थे और सामान्य जनता से गहरा मित्रवत् सम्पर्क स्थापित कर नवसमाज की रचना के पक्ष में थे।

विद्रोह का आयोजन : ब्रिटिश सरकार के खिलाफ विद्रोह कोई व्यापक अथवा अनायास आन्दोलन नही था। इसका आयोजन बडे दूरदर्शी व्यक्तियों ने किया था और उसका कार्यान्वय अमरीका के कुछ अत्यधिक कुशल कर्मठ व्यक्तियों ने बडी सावधानी एव परिश्रम से किया था। यदि विद्रोह को अव्यवस्थित रूप मे ही छोड दिया जाता तो वह कभी भी सफल न होता। सफलता का सबसे बडा कारण था देशभक्तो का सुसगठित और टोरी या वफादार लोगों का अव्यवस्थित होना।

आन्दोलन की प्राथमिक कार्रवाई, ब्रिटिश कानूनो के विरुद्ध छुटपुट और अनियंत्रित दंगों के रूप मे आरम्भ हुई। १७६५ के स्टाम्प कानून के फल-स्वरूप अनेक उपनिवेशो मे इस प्रकार के दंगे हुए। विधान मण्डलों ने प्रतिवाद किया और वर्जीनिया ने विशेष रूप से प्रस्ताव पास किये। लेकिन सबसे अधिक प्रभावशाली कदम लोगो की उपद्रवी भीड़ ने उठाया। उसने मसाचुसेट्स, न्यूयार्क, वर्जीनिया, उत्तरी करोलिना तथा अन्य प्रान्तों मे टिकिटो और अन्य जायदादों को नष्ट किया, स्टाम्प कलेक्टरो को त्यागपत्र देने या भागने के लिए बाध्य किया और शाही गवर्नरो के जीवन को भी सकट में डाल दिया। इन दंगों का पहिले तो जनता ने काफी समर्थन किया लेकिन बाद मे अनुशासनबद्ध और धनी नागरिको ने शीघ्र ही इनके प्रति अपनी अस्वीकृति प्रकट की। पार्लियामेट की निरकुशता व अत्याचार के प्रति जनता का विरोध जारी रखने के लिए 'स्वाधीनता के बेटे' (सन्स आफ लिबर्टी) जैसी सस्थाओ का भी जन्म हुआ।

दूसरा कदम व्यवसायी वर्गों द्वारा आर्थिक बहिष्कार का था जिसे कभी कभी प्रान्तीय विधानसभाओं का भी समर्थन प्राप्त होता था। इसको टाउनशेण्ड कानून, (१७६७) का विरोधी आन्दोलन कहा जाता था, इस कानून के अन्तर्गत चाय, कागज़ और रगों पर कर लगाया गया था। व्यापारियो और विभिन्न समुदायो के नागरिको ने आयात या खपत न करने सम्बन्धी समझौतो को स्वीकार किया और उन वस्तुओ का बहिष्कार किया जिन पर ब्रिटेन के कर लगे थे। इस कदम को बोस्टन मे मार्च १७६८ मे स्वीकार किया गया और एक उपनिवेश के बाद दूसरे मे यह लहर फैली और यहां तक कि दो वर्षों मे सभी उपनिवेशों मे यह आंदोलन फैल गया। फलस्वरूप कुछ उपनिवेशों मे अंग्रेजी माल का आयात आधा रह गया और कुछ उपनिवेशों मे इन समझौतों को बुरी तरह लादा गया था। यह आन्दोलन १७७० मे समाप्त हो गया जबकि पार्लियामेट ने चाय को छोड़ कर सभी टाउनशेण्ड करो को समाप्त कर दिया।

तीसरा कदम पत्र-व्यवहार की स्थानीय और अन्तर-औपनिवेशिक समितियो की पद्धति की रचना थी। इस कार्य-सचालन के प्रमुख नेता मसाचुसेट्स के साम आदम्स थे जो एक जन्मजात प्रचारक और सगठक थे। स्वतंत्र लोगों की वृहद् सभा में वे अत्यधिक शक्तिशाली व्यक्ति थे। यह सभा फेन्युलि हाल मे होती थी और वह बोस्टन पर नियन्त्रण करती थी। आदम्स ने मसाचुसेट्स विधान मण्डल मे काफी महत्वपूर्ण कार्य किया। १७७२ की ग्रीष्म ऋतु मे

नागरिकों को मालूम हुआ कि शाही सरकार गवर्नर और वरिष्ठ न्यायाधीशों को स्थायी वेतन देगी और इस प्रकार से उनको सामान्य जनता के नियन्त्रण से मुक्त रखेगी। २ नवम्बर को शहर की एक सभा आमंत्रित की गयी जिसमें आवश्यक कदम उठाने का प्रस्ताव पारित किया गया जिसमें 'सम्पूर्ण क्रांति की भावना सम्मिलित' थी। उसने पत्र-व्यवहार की एक समिति की स्थापना की जो सम्पूर्ण प्रान्त के अन्य शहरों को उक्त सूचना दे सके। शीघ्र ही प्रत्येक मुहल्ले में इसी प्रकार की समिति की रचना की गयी, और सारा प्रान्त क्रोधित मधुमक्खियों के छत्ते की तरह गूंज उठा। मसाचुसेट्स की खाड़ी से वर्कशायर तक की जनता में खूब रोष भर दिया गया। बाद में एक टोरी लेखक ने लिखा कि "विद्रोह का यही साधन था। मैंने क्रांति के बीज को बोते हुए देखा है। वह बीज सरसों के दाने के बराबर था। लेकिन मैंने उस पौधे को एक बड़े पेड़ में परिवर्तित होते हुए देखा।" अन्य उपनिवेशों ने भी इसी प्रकार की स्थानीय समितियों की स्थापना की और १७७३ में वर्जीनिया कांग्रेस ने एक अन्तर-उपनिवेशीय पद्धति नियुक्त की जो तीव्रता से समस्त प्रायद्वीप में फैल गयी।

विद्रोह की दिशा में चौथा कदम था क्रांतिकारी विधान मण्डलों की स्थापना जिनको सामान्य रूप से प्रान्तीय कांग्रेस कहा जाता था। पुराने नियमित विधान-मण्डल दो कारणों से उग्रवादियों की सहायता नहीं करते थे। उनके अधिकांश सदस्य अनुदार व्यक्ति थे जो मालदार तथा विद्यमान व्यवस्था को माननेवाले तथा कार्य करने में सुस्त थे। इन पर आंशिक रूप से शाही गवर्नरों का नियन्त्रण था जो अपनी इच्छानुसार विधान-मण्डलों की अवधि को घटा बढ़ा सकते थे। बोस्टन बन्दरगाह कानून के पास होने के समाचार के पश्चात् पहिली प्रान्तीय कांग्रेसों की स्थापनाएं १७७४ में हुईं। जिन साधनों से इनकी स्थापना की गयी थी वे सामान्य रूप से अत्यन्त साधारण थे।

उदाहरण के तौर पर वर्जीनिया में बोस्टन बन्दरगाह कानून का समाचार मई १७७४ में पहुंचा और उसने प्रान्त भर में बिजली की लहर पैदा कर दी। उस समय विधान-मण्डल की बैठक हो रही थी। जेफरसन, पेट्रिक हेनरी, रिचर्ड ली और अन्य चार या पांच सदस्यों के साथ तत्काल एक बैठक परिषद् कक्ष में हुई। उन्होंने विरोध स्वरूप उपवास और प्रार्थना करने के लिए एक दिन नियत करने की घोषणा की। यह एक असाधारण समारोह था क्योंकि इस प्रकार का दिन सात-वर्षीय युद्ध के बाद से नहीं मनाया गया था। उन्होंने क्रामवेल

के आधीन पार्लियामेंट की परम्पराओ की ओर देखा और बर्गेसेज से १ जून १७७४ को उपवास और प्रार्थना का दिन निर्धारित करने का अनुरोध किया। गवर्नर डनमोर ने बर्गेसेज को गैर-मातहती मे तत्काल स्थगित कर दिया। इसके बाद वे जनता के साथ एक लम्बा रास्ता पार करते हुए रेले टेवर्न गये जहा पर एपोलो रूप में नृत्य और व्यायाम हो रहे थे। ये लोग अध्यक्ष पेटन रेन्डोल्फ के साथ आदेश देने आये थे। उग्रवादी सदस्यो ने एक नये गैर-नियति समझौते को प्रस्तावित किया। रिचर्ड हेनरी ली चाहते थे कि इससे अधिक और भी कड़े कदम उठाये जाय लेकिन कुछ लोगो ने उसे रोक रखा क्योंकि उनके तत्कालीन राज्य और हाउस आफ बर्गेसेज के बीच एक अन्तर स्थापित किया गया था। लेकिन वे काफी देर तक न रुक सके। २९ मई को बोस्टन से घुडसवार अन्य उपनिवेशो की राजधानियों से यह समाचार लेकर आये कि इंग्लैण्ड के साथ सभी प्रकार का व्यापार वन्द करना प्रस्तावित किया गया है। पेटन रैन्डोल्फ ने अपने पच्चीस बर्गेसेज सलाहकारों के साथ १ अगस्त को सदन के सदस्यो की बैठक आमन्त्रित की और इस बैठक के साथ ही उपनिवेशों मे प्रान्तीय कन्वेन्शन या क्रातिकारी विधान मण्डल का जन्म हुआ।

चौथा परिच्छेद

क्रान्ति और एकीकरण

शस्त्रों का सहारा : उपनिवेशो में धीरे धीरे विद्रोह और अशान्ति भड़कने लगी। विभिन्न शहरो में अंग्रेजी फौजो के बने रहने से उग्रवादी नेताओं को आजादी को उकसाने का अवसर मिला। न्यूयार्क में १७७० में रक्तहीन "गोल्डन हिल का युद्ध" हुआ। जैसा कि काडवालेडर ने लिखा है, "शहर के लोगो और सिपाहियों के बीच एक गंदा उपहास बडी चालाकी से उकसाया गया" और यहा तक कि जब शहर के कुछ लोग हथियार तैयार करने लगे तब सिपाही अपनी अपनी बैरकों से इन लोगो के समर्थन के लिए दौड़ पड़े और केवल फौजी अधिकारियों और मजिस्ट्रेटो के बीचबचाव से ही संघर्ष रुक सका। बोस्टन में इससे भी व्यापक स्तर पर सघर्ष हुआ। रविवार को जब सैनिक टुकडी की दो रेजीमेन्टों ने पहरेदार बदलने के लिए तुरई और ढोल की आवाज की तो शहर के कुछ लोग क्रोधित हो उठे और कुछ उच्छृंखल लोग तो सिपाहियो को चिढाने और परेशान करने लगे और चूकि सिपाहियों को अधिक सहनशीलता बरतने का आदेश दिया गया था इसलिए उनको और भी उच्छृखल कार्यो से परेशान किया जाने लगा।

अन्त में ५ मार्च को शहर के लोगों ने दो सिपाहियो पर आक्रमण कर दिया और उनको पीटा। लोगो को सडकों पर बुलाने के लिए घण्टे बजाये गये। चुंगीघर पर तैनात एक सन्तरी पर बर्फ तथा अन्य वस्तुए फेक कर मारी गयी। जब केप्टन प्रिस्टन और सैनिको की एक टुकडी सन्तरी को बचाने के लिए आयी तब उनको चिढाना और अपशब्द कहना और भी बढ गया। भीड चिल्लाने लगी, "हिम्मत हो तो गोली चलाओ—जरा गोली चला कर तो देखो।" सिपाहियो ने अपने को काफी काबू में रखा लेकिन किसी व्यक्ति ने एक सिपाही पर इतना कस कर सोटा मारा कि वह जमीन पर गिर पडा; फिर संभलते हुए उसने अपनी बन्दूक दाग दी। बस एक आम भगदड़ मच गयी और दूसरे सिपाहियों ने भी बिना आदेश के बन्दूके दाग दी। फलस्वरूप तत्काल घटना-

स्थल पर ३ व्यक्ति मर गये और दो सख्त घायल हो गये। सिपाहियो को बाहर आने के लिए जैसे ही ढोल बजाया गया, वैसे ही गवर्नर ने घटना स्थल पर पहुंच कर शान्ति स्थापित की। एक सख्त घायल व्यक्ति ने दम तोडते हुए कहा, "मैंने आयरलैण्ड मे भी भीडे देखी है लेकिन इतने सहनशील सिपाहियों को कभी नहीं देखा जो इतना परेशान किये जाने पर भी गोली नहीं चलाते है।" लेकिन अनेक लोग बोस्टन के इस हत्याकाड को अंग्रेज़ो के अत्याचार की पराकाष्ठा का नमूना मानते हैं। इस घटना की वर्षी बड़ी गभीरता से मनायी गयी और उसने जनता मे एक अभूतपूर्व भावना जागृत कर दी।

लार्ड नोर्थ के नेतृत्व में ब्रिटिश मंत्रि-मण्डल ने इस बढ़ते हुए वैमनस्य और विरोध से कोई सबक नही सीखा। १७७२ मे एक और महत्वपूर्ण घटना घटी। गेसपी नाम का आठ तोपो वाला एक छोटा युद्धपोत, जो रोढ द्वीप के समुद्र में तस्कर व्यापारियों के विरुद्ध कानून लागू करने के लिए तैनात था, जून मे प्रोविडेन्स के निकट किनारे पर आया। कुछ नागरिकों ने उस पर आक्रमण किया और उसके चालकों को गिरफ्तार कर उस कथित 'घृणास्पद' जहाज़ मे आग लगा दी। टाउनशेण्ड कानूनों द्वारा लगाये गये सभी करो को, सिवा चाय को छोड़ कर, रद्द कर दिया गया। चाय कर को केवल सिद्धान्त लागू करने के लिए ही जारी रखा गया था। उपनिवेशो मे चाय पीना लगभग बन्द हो चुका था और फलस्वरूप ईस्ट इण्डिया कम्पनी आर्थिक कठिनाइयों मे पड गयी थी। उसकी सहायता करने के लिए मन्त्रि-मडल ने १७७३ मे ऐसी शर्तों पर पर चाय को अमरीका भेजने की अनुमति प्रदान की थी जिससे कि वह बहुत सस्ती पड़ती थी लेकिन लार्ड नोर्थ ने उपनिवेशो मे तीन पेन्स प्रतिपौण्ड कर को जारी रखने का अनुरोध किया था ताकि शाही सत्ता का उपयोग जारी रहे। लेकिन अधिकार के इस प्रयोग से अमरीका मे विद्रोह उत्पन्न हो गया। अमरीकियों को इस बहाने पर बहुत क्रोध आया। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने अनेक जहाज भेजे, लेकिन प्रत्येक बन्दरगाह पर लोग उनका बहिष्कार करने के लिए डटे हुए थे। चार्लस्टन मे चाय को पेटियों मे बन्द कर ताला लगा दिया गया; फिलाडेल्फिया और न्यूयार्क मे उसको जहाजों से ही वापिस कर दिया गया। बोस्टन में भी काफी उत्तेजना बढ़ गयी थी। १६ दिसम्बर १७७३ को स्वयं साम आदम्स के नेतृत्व में लगभग पचास लोगो ने आदिवासियो का भेष बनाकर जहाजों पर आक्रमण कर दिया और ३४३ चाय की पेटियो को खोल कर समुद्र मे उड़ेल दिया। शहर के किसी भी अधिकारी ने माल की इस

बरबादी को नहीं रोका। बोस्टन शहर में हिंसा के इस कार्य द्वारा जिसे मेन से ज्योर्जिया तक समर्थन प्राप्त हुआ, ब्रिटेन की शाही सत्ता को चुनौती दी गयी और इसे तत्काल स्वीकार भी किया गया।

जार्ज तृतीय और पार्लियामेन्ट के अधिकांश सदस्य बोस्टन के इन विद्रोहियों को दण्ड देने के लिए दृढ़प्रतिज्ञ हो गये। बर्क और चैथम ने एक समझौता मार्ग अपनाने की सलाह दी। लेकिन मंत्रि-मण्डल ने पार्लियामेन्ट के जरिये पांच सख्त कानून बनाये। एक ने मसाचुसेट्स के अधिकारपत्र के अत्यन्त उदार पहलुओं को समाप्त कर उसे संशोधित किया। दूसरे कानून के अन्तर्गत मसाचुसेट्स के गवर्नर जनरल गेज को अमरीका में ब्रिटिश फौजी कमाण्डर नियुक्त किया गया और उनके आधीन चार रेजीमेन्ट रखीं तथा फौजों को जनता के घरों में रखने का अधिकार प्रदान किया। तीसरे कानून में अपने कर्तव्य के समय घातक अपराध करनेवाले नेताओं को मुकदमे के लिए गवाहियों के साथ इंग्लैण्ड भिजवाने की व्यवस्था की गयी। चौथे कानून में सभी प्रकार के व्यापार के लिए बोस्टन का बन्दरगाह तब तक के लिए बन्द कर दिया गया जब तक कि नष्ट की गयी चाय का मुआवजा नहीं दिया जाता और इस बात के प्रमाण प्रस्तुत नहीं किये जाते कि कर को वफादारी से अदा किया जायेगा। अन्त में क्वेबेक कानून को ओहियो के समस्त उत्तरी भागों में कनाडा की सीमाओं और एलघेनीज के पश्चिम में लागू करने की व्यवस्था की गयी। यह अंतिम कानून जिस पर काफी समय से विचार किया जा रहा था दण्डात्मक नहीं था, लेकिन उसको काफी सोच-विचार के बाद लागू किया गया और उसका उद्देश्य उत्तरी-पश्चिमी फर के व्यापार पर उचित तरीके से नियन्त्रण करना और मिचीगन तथा इलिनायस क्षेत्रों के फ्रान्सीसी कैथोलिक निवासियों को उपयुक्त सत्ता के आधीन रखना था। लेकिन यह कानून असामयिक था और तटीय उपनिवेशों के लोगों ने स्वाभाविक रूप से यह समझा कि इस कानून के जरिये अब उत्तर-पश्चिमी भाग उनके लिए बन्द हो गया है।

पार्लियामेंट के इन सख्त कानूनों ने घृणा और क्रोध का वातावरण पैदा कर दिया। पत्र-व्यवहार द्वारा, 'अन्तर-औपनिवेशिक पत्रव्यवहार समितियों' को कार्यवाही के लिए सचेत कर दिया गया। सभाएं आयोजित की गयीं, समाचार-पत्रों में लेख लिखे गये, तथा पत्रिकाएँ बाटी गयीं। वर्जीनिया के विधायकों ने जब अपने रेल टेवर्न की सभा में "अमरीका के संयुक्त हितों" पर विचार-विमर्श करने के लिए वार्षिक कांग्रेस को आमन्त्रित किया तो लोग तत्काल उत्साह-

पूर्वक प्रस्तुत हो गये। वर्जीनिया के प्रान्तीय अधिवेशन ने प्रतिनिधियों को चुना और अन्य प्रान्तों ने भी इसका अनुकरण किया। ५ सितम्बर १७७४ को प्रायद्वीप की काग्रेस का प्रथम अधिवेशन फिलाडेल्फिया मे हुआ जहा पर जोर्जिया को छोड़ कर प्रत्येक उपनिवेश का प्रतिनिधि था। इन ५१ प्रतिनिधियों मे वाशिंगटन, बेन्जामिन फ्रैंकलिन, जान आदम्स जैसे और अन्य कई सुयोग्य व्यक्ति शामिल थे। बडी सावधानी से पार्लियामेन्ट की उपेक्षा करते हुए उन्होंने बादशाह, तथा ब्रिटेन और अमरीका की जनता को सम्बोधित करना आरम्भ किया। उन्होंने औपनिवेशिक अधिकारों की एक सुदृढ़ रूपरेखा तैयार की जिसमें उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि उपनिवेशो को, शाही निषेधाधिकार के साथ, अपने मामलो से सबधित विधान बनाने का "पूर्ण अधिकार" प्राप्त है। लेकिन उन्होंने यह आश्वासन दिया कि साम्राज्य के यथार्थ हितो के लिए बनाये गये ससदीय कानूनों का वे पालन करेंगे।

लेकिन प्रायद्वीपीय काग्रेस ने इस तरह के दो कदम उठाये जिन्होंने ब्रिटिश मन्त्रि-मंडल के साथ स्पष्ट मतभेद व्यक्त किया। एक ऐसा इकरारनामा तैयार किया गया जिसके हस्ताक्षर-कर्ताओ को तीन महीने के अन्दर अग्रेजी सामान का सम्पूर्ण आयात बन्द करने के लिए तथा एक साल के अन्दर वेस्ट इण्डीज़ सहित ब्रिटिश बन्दरगाहो को सभी निर्यात बन्द करने के लिए बाध्य किया गया। इसके कारण वर्जीनिया के बागान-मालिक अपनी तम्बाकू को अंग्रेज उपभोक्ताओं को न भेज सके; मसाचुसेट्स के छोटे जहाजों के मालिक भी वेस्ट इण्डीज के साथ लाभप्रद व्यापार न कर सके। न्यूयार्क और जोर्जिया को छोड़ कर ११ उपनिवेशों ने "एसोसिएशन" का समर्थन किया और सभी १३ उत्साही स्थानीय समितियो ने उसे लागू किया। उन्होंने शपथे दिलायी, उनको भग करने वालों के नाम प्रकाशित किये और कई अभद्र स्थानों को विभिन्न तरीको से, जैसे तारकोल पोत कर और पखे लगा कर, उनकी ओर सकेत किया। इसके अलावा एक प्रस्ताव तैयार किया गया जो वास्तव मे एक चुनौती था जिसमे काग्रेस ने मसाचुसेट्स द्वारा पार्लियामेन्ट के हाल ही के कानूनो के विरोध का न केवल समर्थन किया बल्कि यह घोषणा भी की कि यदि इस उपनिवेश की जनता के विरुद्ध बल प्रयोग किया गया तो "समस्त अमरीका को" इसके प्रतिकार के लिए समर्थन करना चाहिए।

ऐसी अवस्था मे अब एक सघर्ष सुनिश्चित हो गया। स्थिति यह हो गयी कि या तो पार्लियामेन्ट के कानूनों को रद्द समझा जाय या उसके कार्यान्वय में बल प्रयोग किया जाय। कोई भी दल पीछे हटने को तैयार नही था। पार्लियामेन्ट

ने घोषित किया कि मसाचुसेट्स विद्रोही प्रदेश है और शाही शासन को विद्रोह दबाने के लिए साम्राज्य के साधनो का उपयोग करने के लिये कहा गया। देश भर मे हथियार खरीदे जा रहे थे और फौजो की टुकडिया कवायद करती दिखाई देती थीं। बोस्टन मे गेज का विश्वास था कि १७७५ की वसन्त मे उनकी फौजों पर धावा बोला जायगा। १८ अप्रेल की शाम को कोनकार्ड मे कुछ गैरकानूनी फौजी गोदामो पर कब्जा करने के लिए उन्होंने आठ सौ सिपाहियो की एक टुकडी भेजी। देशभक्त लोगो का दल ताक मे बैठा था। उसने उत्तरी गिरजाघर की मीनार से लालटेन के जरिये चार्ल्स नदी के पास पाल रेवर को सन्देश भेजा जिन्होंने तत्काल घोडे पर जाकर ग्रामीण क्षेत्रों को खबर कर दी। लडाकू किसान सुबह अपनी बन्दूको के साथ एकत्रित हो गये और उन्होने जैसा कि बाद मे इमरसन ने लिखा कि उन्होने ऐसी गोली चलाई जिसकी ध्वनि सारे ससार मे गूँज उठी। उस समय साम आदम्स बहुत दूर नही थे। बन्दूकों के धमाको को सुन कर उन्होंने कहा, "क्या शानदार सुबह है आज की!"

क्रान्तिकारी युद्ध : कुछ ही दिनों में उन अप्रशिक्षित और थोडे-से हथियारों से सज्जित कुपित देशभक्तो की सेनाओ ने गेज और उसकी फौजों को बोस्टन मे घेर लिया और कुछ ही सप्ताहों मे शाही सरकार के अन्तिम-अवशेषों को देशभर मे उलट दिया गया। १० मई को फिलाडेल्फिया मे स्पष्ट रूप से एक विद्रोही सस्था के रूप मे आयोजित की गयी द्वितीय प्रायद्वीपीय कॉंग्रेस (हालाकि उसने बादशाह के पास अन्तिम समझौते की अपील प्रस्तुत की थी) ने बोस्टन के आसपास अमरीकी सेना की रचना की और जार्ज वाशिंगटन को उसका सेनापति नियुक्त किया। टिकोण्डिरोगा के किले पर, जहा से कनाडा जाने का प्रमुख मार्ग था, ग्रीन माउन्टेन बोयज के मुखिया एथन एलन की टुकडियों ने बडी बहादुरी से कब्जा कर लिया। अमरीकी फौजें जैसे जैसे बोस्टन के निकट आने लगीं गेज ने अनुभव किया कि उन पर उत्तर में डेरिचेस्टर हाइट्स से और चार्ल्सटाउन के पीछे की पहाडियो से हमला किया जा सकता है। १६ और १७ जून को जब देशभक्तों ने उत्तर मे चार्ल्सटाउन के पीछे की पहाडियों पर पडाव डाला, तो उन्होंने सभावना प्रकट की कि युद्ध का प्रथम विशाल सघर्ष बकर हिल पर होगा।

सत्तासी वर्ष बाद बुलरन की तरह, बंकर हिल का महत्व भी तात्कालिक परिणामों के फलस्वरूप काफी महत्व का रहा। रात को ब्रीड हिल और बंकर-

हिल पर लगभग साढ़े तीन हजार सशक्त अमरीकियों ने घेरा डाल दिया और वहा एक छोटे दुर्ग का निर्माण किया। प्रातःकाल उनकी सैनिक हलचले दिखाई देने लगी। गेज ने युद्ध परिषद् को बुलाया और यद्यपि वे इन अमरीकियों को उनके पीछे की ओर से काट सकते थे लेकिन उन्होंने सामने से ही आक्रमण करना निश्चित किया। आमने सामने के युद्ध के लिए उत्सुक अंग्रेजों की तत्परता से ही शायद यह मोर्चा निश्चित किया गया था। अमरीकी पंक्ति के नीचे पैदल सेना को उतारा गया और ३ बजे शाम को आक्रमण का आदेश दिया गया। सम्पूर्ण वर्दी पहिने, झोलों में तीन दिन का राशन भरे, गोला बारूद, और बन्दूक सहित प्रत्येक व्यक्ति लगभग १२५ पौण्ड का कुल वजन लिये धीरे धीरे अनुशासन मे आगे बढ रहा था। जब वे खाडियो से ४० गज की दूरी पर रह गये अमरीकियों ने भयंकर गोलाबारी आरम्भ कर दी; अंग्रेजों ने सभल कर जैसे ही फिर आगे बढना चाहा घातक गोलियो की बौछार बीस गज की दूरी से फिर आने लगी; अंग्रेजों की सेनाओ ने फिर से पक्तिबद्ध होकर धावा बोला और इस बार देशभक्तों के अन्तिम दो राउण्ड दागे जाने के बाद् अंग्रेजो की सेनाओं ने खाईयो को रौध डाला। यह आक्रमण बडा शानदार रहा लेकिन साथ साथ अनावश्यक भी; क्योंकि लगभग इतनी ही फौजें, नौसैनिक सरक्षण मे चार्ल्सटन नेक पर कब्जा किये हुए थी और वह अमरीकियो को भूखा मार कर हथियार डालने को बाध्य कर सकती थी। इसमे अंग्रेजों के कुल १०४४ और अमरीकियों के केवल ४४१ सिपाही काम आये।

इस युद्ध ने अमरीकियों के सामने यह प्रमाणित कर दिया कि विना समुचित संगठन या साधनों के भी वे यूरोप की नियमित और प्रशिक्षित फौजों को ढकेल सकते हैं। इससे उनमे भारी विश्वास पैदा हो गया। हो, जो अंग्रेजो की कमान में था, इस भयानक सहार से इतना दुखी हो गया कि वह उसे कभी न भूल सका। जब उसने गेज का स्थान लिया, जिसे अपमान के साथ इंग्लैण्ड वापिस बुला लिया था, तब उसने अमरीकी फौजो को लडने के लिए बाध्य करने मे भय व्यक्त किया और इंग्लैण्ड को युद्ध मे हानि उठानी पडी।

अमरीकियों की कठिनाइयाँ : यह संघर्ष ६ वर्ष से भी अधिक समय तक चलता रहा और प्रत्येक उपनिवेश मे लडाइयाँ होती रही। लगभग एक दर्जन महत्वपूर्ण जम कर युद्ध हुए। अनेक बार देशभक्तो की सेनाएं बुरी तरह से नष्ट हो गयीं। मिश्रित और अप्रशिक्षित सिपाहियो से एक सुदृढ़ सेना का

निर्माण करना वाशिंगटन के लिए बडा कठिन था और इससे भी कठिन कार्य था उस सेना को सगठित रखना। देशभक्ति की भावनाओं का रूप बहुरगी था और सिपाहियो मे वेपरवाही भी काफी थी। न्यू इग्लैण्ड, वर्जीनिया और करोलिना के हिस्सो में जनता ने युद्ध के प्रति तीव्र रुचि दिखलाई। लेकिन न्यूयार्क मे देशभक्तो की जितनी सख्या थी उतने ही टोरी लोग भी थे; पेसिलवानिया मे क्वेकर लोग युद्ध नही चाहते थे, जबकि जर्मन अपने खलिहानो को छोड़ कर अन्यत्र नहीं जाना चाहते थे; उत्तरी करोलिना में पठार के अनेक निवासी जो मैदानों की जनता से घृणा करते थे, इग्लैण्ड के बादशाह के लिए युद्ध करने को तैयार थे और क्रीक लोगों से त्रस्त जोर्जिया के लोग जो विशेष शाही सहायता के लिए आभारी थे, युद्ध से दूर रहे। निम्न श्रेणी की आबादी से २५ हजार अमरीकी इग्लैण्ड की शाही सत्ता की ओर से युद्ध करने के लिए प्रस्तुत हुए और यदि इन वफादारों की सेनाओं को बुद्धिमानी से तैयार किया गया होता और उनको समुचित रूप से प्रशिक्षित किया गया होता तो युद्ध का परिणाम शायद कुछ दूसरा ही होता।

आरम्भ में देशभक्तों की सेनाएं बुरी तरह से अव्यवस्थित थीं। १७७८ में जब फ्रेडरिक महान् के एक अधिकारी वेरोन वान स्टयूवेन, जो बाद मे शीघ्र इन्स्पेक्टर जनरल बन गये, स्थिति को संभालने के लिए आये तो उनको तीन से लेकर तेईस कम्पनियों से गठित रेजीमेन्टें मिलीं। कमीशन-प्राप्त अधिकारियों की प्रशिक्षण योग्यता भी कम थीं, क्योंकि कुछ उपनिवेशों मे कोई भी अच्छे व्यक्तित्व वाला चापलूस व्यक्ति भी लोगों को खुश कर कप्तान बन जाता था या शराब और रिश्वत के जरिये अपने को ऊंचे ओहदे पर नियुक्त करवा लेता था। न्यू इग्लैण्ड और दूसरे स्थानो मे तो लोकतन्त्र का निर्माण गैर-मातहती के लिए ही हुआ था; जो किसान या ग्रामीण अपने कप्तान को एक पडोसी के रूप मे जानता था वह उससे आदेश लेने को तैयार न था और इसीलिए वाशिंगटन ने लिखा था कि अमरीकी अपने अधिकारियो को 'झाड़ू से अधिक नही समझते थे'। इसके अलावा अनेक सिपाहियों मे दायित्व की सुदृढ भावना नही थी। वे सोचते थे कि उन्होंने सेना मे नाम अपनी इच्छानुसार रहे उतनी अवधि तक ही दर्ज कराया है। इसलिए जब जाडे की ऋतु आती या जब उनको मालूम होता था कि फसलें पक कर तैयार हैं और उनको काटनेवाला कोई नहीं है या जब वे घर जाने के इच्छुक होते थे या निरुत्साह हो जाते थे, तब वे शिविरों से खिसक जाते थे। वाशिंगटन ने कांग्रेस

से दीर्घकालीन भर्ती की अनुमति मांगी जिसकी स्वीकृति १७७६ के सितम्बर माह मे प्रदान की गयी; लेकिन इससे भी समस्या का पूर्ण रूप से समाधान नही हुआ। अनुशासन को सख्त करने के उद्देश्य से वाशिंगटन ने अन्त मे काग्रेस से अपराधियो को कोर्ट मार्शल करने और उनको ज्यादा ज्यादा से पॉच सौ कोडे लगाने के अधिकार प्राप्त करने के लिए निवेदन किया।

अनेक बार फौजों मे सिपाहियों की सख्या अत्यधिक कम हो गयी। मार्च १७७६ मे देशभक्तों द्वारा बोस्टन पर कब्जा करने के पश्चात् जब वाशिंगटन ने अपनी फौजों को न्यूयार्क स्थानान्तरित कर दिया तब उनको केवल आठ हजार सिपाही ही कर्तव्य पालन करने के योग्य मिले, जबकि अंग्रेजों की कुछ सेनाए ३५ हजार थी और हो जब लौग द्वीप पर उतरे तब उनके पास कम से कम बीस हजार तैयार सिपाही थे। इसलिए स्वाभाविक तौर से उनको देशभक्तों की छोटी सेना को नष्ट करने मे, जो फ्लेटबुश मे तैनात थी, कोई कठिनाई नहीं हुई। उनके सामने केवल पचपन सौ सिपाही रह गये थे और यदि हो ने शीघ्रता से धावा बोला होता तो वह इन्हें गिरफ्तार कर सकता था; लेकिन उन्होंने अवसर खो दिया और वाशिंगटन कोहरे के आवरण मे मनहटन द्वीप की ओर भाग निकले। इसके बाद देशभक्तो की पराजय मनहटन और व्हाइट प्लेन्स मे हुई और जैसे ही वाशिंगटन न्यू जर्सी के पार पीछे हटे उनकी अधिकाश सेना भाग गयी। न्यूयार्क और न्यू इंग्लैण्ड की फौजों के समूह के समूह भाग खडे हुए। वाशिगटन को काफी रसद, सामान और तोपों की हानि उठानी पडी। डेलावेर नदी तक पहुंचने के पहिले न्यू जर्सी और मेरीलैण्ड के सिपाहियों ने भी वाशिगटन का साथ छोड दिया और जब उन्होने शीतकालीन डेरा डाला तब उनके पास केवल तैतीस सौ ही सिपाही थे जिनमे से आधे सिपाहियों की निष्ठा सदिग्ध थी। लेकिन उस शीतकाल मे उनके साहस और बुद्धि ने और ट्रेन्टन और प्रिन्स्टन मे उनके द्वारा किये गये धावो ने देश को बचा लिया। वाशिगटन ने ग्यारह हजार सिपाहियों के साथ १७७७ मे, जिसे टोरियों ने "तीन फन्दों का चक्र" कहा था, अभियान आरम्भ किया। २४ अगस्त १७७७ को इन सिपाहियो के साथ वाशिंगटन ने कूच किया जिनके बारे मे उस समय के एक लेखक ने "अव्यवस्थित, आलसी और वस्त्रहीन रेजीमेन्टों" की संज्ञा दी थी। हो ने बीस हजार प्रशिक्षित सिपाहियो के साथ फिलाडेल्फिया से कूच किया। वाशिंगटन की जर्मनटाउन मे पराजय हुई और उनको कडाके की ठंड मे फोर्ज की घाटी में शरण लेनी पडी।

देशभक्तो को युद्ध के लिए धन एकत्रित करने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। उनके पास जबरन वसूली जारी करने का कोई साधन नहीं था। कर लगाकर रकम एकत्रित करने का तो प्रश्न ही नहीं उठता था क्योंकि किसी भी प्रायद्वीपीय सत्ता को कर लगाने का अधिकार नहीं था। कर लगाने के लिए कांग्रेस को १३ राज्यों से निवेदन करना पड़ता था और चूकि राज्यों में परस्पर द्वेष, और विरोध की भावना विद्यमान होने के साथ साथ उनका प्रशासन भी खराब था इसलिए वे आनाकानी के साथ अपर्याप्त सहायता ही दे पाते थे। राज्यीय कराधान के जरिये १७८४ तक राष्ट्रीय प्रयोजनों से एकत्रित की गयी कुल नगद रकम ६० लाख डालर से भी कम थी अर्थात् दो डालर प्रति व्यक्ति। कर्जों के जरिये भी बहुत थोडी रकम एकत्रित हुई। घरेलू ऋणो से लगभग १२० लाख डालर और विदेशों से एकत्रित किया गया (प्रमुख रूप से फ्रान्स, हालैण्ड और स्पेन से प्राप्त) कर्जा पूरा ८० लाख डालर भी नहीं था। इसलिए अमरीका की क्रान्ति के लडने का प्रमुख आधार कागजी मुद्रा था।

पहिली और अन्तिम बार देश भर में कागजी नोटों का बोलबाला था। इनका मूल्य इतनी तीव्रता से गिरा कि उनकी छपी कीमत लगभग २४०,०००,००० डालर होने के बावजूद खजाने में उनके बदले ३८,०००,००० डालर से भी कम रकम प्राप्त हुई। १७८१ के वसन्त तक देश के नोट का मूल्य इतना नगण्य हो गया था कि हजामों की दूकानों में वे कागज की तरह लगे हुए थे और मजाकिये नाविक अपने जहाजो से वापस आने पर अपने वेतन के रूप मे प्राप्त उस बेकार धन के बण्डलों को लेकर उनके बने कपडे पहिन कर सड़कों पर घूमते थे। फलस्वरूप नोटों के मूल्यों की यह कमी एक महान अन्याय, असन्तोष और अव्यवस्था का कारण बन गयी। जैसा कि उस समय के एक दर्शक पिलाटिया वेब्स्टर ने लिखा था, "कागज की रकम ने हमारे कानूनों की समानता को अपवित्र कर दिया है, उनको अत्याचार के इंजिनों में परिवर्तित कर दिया है, हमारे सार्वजनिक प्रशासन के न्याय को भ्रष्ट कर दिया है, ऐसे हजारो व्यक्तियों की सम्पत्ति को नष्ट कर दिया है जिनका उनमे विश्वास था, हमारे देश के व्यापार, पशुपालन और उत्पादन को हानि पहुचायी है और हमारी जनता की नैतिकता को काफी हद तक नष्ट कर दिया है।"

विभिन्न उपनिवेशो के कांग्रेस के प्रति अविश्वास से तथा उनके परस्पर द्वेष से भी देशभक्तो के अभियान को भारी धक्का पहुचा। ऐसी स्थिति में एक

सुदृढ प्रायद्वीपीय सत्ता स्थापित करना बिलकुल असभव था। उपनिवेश एक केन्द्रीय नियन्त्रण के विरुद्ध थे और वे स्थानीय गृहशासन मे विश्वास रखते थे। इसके अलावा देशभक्ति की प्रथम लहर के समाप्त होने के पश्चात् उनमे एक दूसरे के प्रति भ्रातृत्व की भावना नही रह गयी थी। वर्जीनिया के निवासी यॅाकियों से घृणा करते थे और उनको वेहूदे, जिद्दी और आवश्यकता से अधिक जनतान्त्रिक चालबाज मानते थे, यहा तक कि वाशिंगटन जैसे गम्भीर व्यक्ति ने भी उनके बुरे तरीकों पर कटाक्ष के साथ लिखा था। यॅाकी लोग दक्षिणवासियों को अभिमानी और अभिजात समझते थे। प्रत्येक उपनिवेश अपने आप मे इतना ही सीमित था कि जब जान आदम्स ने प्रायद्वीपीय काग्रेस का नेतृत्व किया तब उनको न्यूयार्क और पेंसिलवानिया के प्रमुख नेताओं का नाम भी मालूम न था। काग्रेस को फौजों और खजाने के समर्थन के लिए झुकना पड़ता था और प्रायः उसके निवेदनो पर ध्यान नहीं दिया जाता था।

इसके अलावा अमरीकियों के पास वास्तव मे कोई नौसेना नही थी हालाकि जान पाल जोन्स ने अंग्रेजों पर समुद्र मे आक्रमण कर कुछ उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की थी। १७७८ तक अंग्रेजों का समुद्र पर सामान्य रूप से और उसके बाद भी आशिक रूप से नियन्त्रण रहा। लगभग १२०० मील लम्बे समुद्री किनारे पर वे जहा चाहते थे वहा आक्रमण कर सकते थे। उनके पास काफी धन और रसद थी। उन्होने लगभग बीस तीस हजार से भी अधिक जर्मन फौजें किराये पर ले ली थी और उनके अधिकारियों को फौजी कार्यों मे श्रेष्ठतर प्रशिक्षण प्राप्त था। इसलिए प्रारम्भ में उनकी विजय होना कोई आश्चर्यजनक न था।

अमरीकियों के लाभ : उपरोक्त कठिनाइयों के बावजूद भी अमरीकियो को कई लाभ थे। परिस्थितियों ने अन्त मे पॉसा पलट दिया। सबसे पहिला लाभ था सघर्ष क्षेत्र का। वे अपनी ही छितरी आबादी वाले क्षेत्रों में युद्ध करते थे जिसका अधिकाश भाग अभी भी बीहड़ था और जो ब्रिटेन से तीन हजार मील की दूरी पर स्थित था। एक फौज एक स्थान पर हार भी जाती तो भी सौ मील दूर एक दूसरे स्थान पर दूसरी फौज फिर खडी हो जाती थी। अंग्रेजों के बस की यह बात नही थी कि वे इतने बडे विस्तार पर नियन्त्रण कर सके और विद्रोह को दबा सके। विशाल सागर के जरिये

सिपाही और रसद भेजना खर्चीला और कठिन था और सारी ब्रिटिश फौजों की लन्दन ने समुचित मोर्चाबन्दी की व्यवस्था करना असम्भव था। दूसरा लाभ युद्ध की पवित्र भावना का था जिसे अमरीकी सेनाओं ने कुछ सकट-कालीन अवस्थाओं में प्रदर्शित किया था। ये किसान-सिपाही, जो शिकार के जंगलों या खेतों से आकर भर्ती हुए थे, और जिनका स्वभाव व्यक्तिवादी और अनिश्चित सा था, भले ही अपना तीन चौथाई समय क्रोध और उत्तेजना में गवाते रहे हों लेकिन कभी कभी वे बड़ी प्रेरणा के साथ युद्ध करते थे। उदाहरण के तौर पर उत्तर की फौजों ने, जिन्होंने १७७७ में बुरगोयन की आक्रमणकारी फौज को नष्ट करने का सकल्प किया था, और दक्षिण के सिपाहियों ने जिन्होंने १७८०-८१ में लगातार अपनी पराजय के बावजूद अन्तिम विजय प्राप्ति तक बार बार आक्रमण किये, यह प्रमाणित कर दिया कि देशभक्तों की सेनाओं को पराजित नहीं किया जा सकता था। १७७८ के बाद अमरीकियों को फ्रान्स के साथ सन्धि से और भी लाभ हुआ क्योंकि फ्रास ब्रिटेन से बदला लेने के लिए उतारू था। इस सन्धि के फलस्वरूप अमरीकियों को फ्रान्स से सिपाही, धन, प्रोत्साहन और अन्तिम कठिन परिस्थितियों में समुद्र किनारे की कमान का लाभ हुआ। साथ साथ बुरगोयन, हो और क्लिनटन की ब्रिटिश फौजों की अविवेकपूर्ण अव्यवस्था भी देशभक्तों को वरदान स्वरूप प्रमाणित हुई। अंग्रेजों के दूसरे नेता वुल्फ की मृत्यु हो गयी और वेलिंग्टन जैसा नेता भी दुबारा नहीं हुआ।

अमरीकियों का सबसे महत्वपूर्ण लाभ था उनके बीच जार्ज वाशिंगटन जैसे नेता का होना। कांग्रेस ने उनकी क्षमताओं को समुचित रूप से जाने बिना ही चुना था लेकिन वे देशभक्ति के उद्देश्य की सफलता के लिए कांग्रेस के एक सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक और समर्थक प्रमाणित हुए। उनकी आलोचना सकीर्ण फौजी आधार पर की जा सकती है। उन्होंने एक आधुनिक डिवीजन से बड़ी सेना को कभी भी नहीं सभाला था। उन्होंने अनेक गलत कदम उठाये थे और उनको अनेक बार हार खानी पड़ी। लेकिन तैंतालीस वर्ष की आयु में कमान हाथ में लेते समय वे युद्ध के प्रमुख स्फूर्ति केन्द्र बन गये। अपनी निष्ठायुक्त देशभक्ति, गम्भीरता, बुद्धिमानी, और नैतिक साहस के कारण वे युद्ध में एक प्रेरणा-पुंज बन गये। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने अपना धैर्य, दृढ़ता और विवेक नहीं खोया। वे उद्योग और सतर्कता के सामजस्य थे। अखण्ड निष्ठा, उत्साह और शालीनता के कारण अन्तिम विजयश्री उनकी

ही हुई। वे समय पर कार्रवाई करने मे दक्ष थे और अपनी धैर्यनिष्ठा के कारण ही उनको "रेफेवियस" की उपाधि मिली थी।

सहनशक्ति के परे उत्तेजित किये जाने पर वे अत्यन्त कुपित हो उठते थे जैसा कि मनमथ की लडाई मे देशद्रोही चार्ल्स ली का अनुभव था; लेकिन सामान्य रूप से वे आत्मसयम की प्रतिमा थे और यहा तक कि जब बाद के वर्षों मे एक अध्यक्षीय भोज के अवसर पर उनको आदिवासियो द्वारा बेन की भयंकर पराजय का समाचार सुनाया गया तो उस समय भी उन्होंने अतिथियों के सामने किसी प्रकार की भावनात्मक व्यग्रता नही दिखलायी। वे प्रत्येक बात के बारे मे बड़ी छानबीन करते थे। वे अपनी फौजो का सचालन बडी सख्ती और अनुशासन से करते थे और फौजी अपराधों पर कड़ी सजा देते थे; लेकिन अपने व्यक्तियों के प्रति न्याय और स्नेह दर्शाकर वे उनकी सम्पूर्ण वफादारी प्राप्त कर लेते थे। जब वे न्यूवर्ग मे अपने असन्तुष्ट और बिना वेतन प्राप्त सिपाहियो के सामने इन शब्दो के साथ भाषण देने लगे, "भाइयों, जरा आप लोग मुझे अपना चश्मा पहिनने की अनुमति दे दे क्योंकि मै अपने देश की सेवा मे केवल बुड्ढा ही नहीं हो गया हूँ बल्कि अन्धा भी", तब लोगो की आखो से आसू टपकने लगे। वाशिगटन की यह खूबी थी कि उन्होंने अपनी क्रान्तिकारी सेवाओ के लिए अपने खर्चे के सिवाय और कुछ नहीं लिया और इन खर्चो का हिसाब बड़ी बारीकी से रखा। जब युद्ध समाप्त हो गया तब सिन्सीनाटस की तरह उन्होंने अपने खेत को ही वापस जाने की इच्छा व्यक्त की जिसे वे अमरीका मे सर्व श्रेष्ठ बनाना चाहते थे। उन्होने लिखा था, "खेती मेरे जीवन का सर्वश्रेष्ठ मनोरजन रहा है।" लेकिन वे कर्तव्यपरायण बने रहे। सघ राज्य के अन्य नेताओं की तुलन मे मानवीय दृष्टिकोण से कम आकर्षक होने के बावजूद भी वे अपनी चारित्रिक विशालता, अपने उद्देश्यों की दृढ़ता और बुद्धिमानी तथा दूरदर्शिता के कारण विख्यात रहे। गोल्डविन स्मिथ ने उचित ही लिखा है कि क्रान्ति की उत्कृष्ट तीन चीजे थी, "वाशिगटन का चरित्र, फोर्ज की घाटी मे उनकी फौजो का बर्ताव, और उच्च वर्ग की वफादारी।"

स्वाधीनता : जो सघर्ष अंग्रेजो के अधिकार और कठिनाइयों से निवारण पाने के रूप मे प्रारम्भ हुआ था, एक वर्ष से कुछ अधिक काल मे ही स्वाधीनता सग्राम मे परिणत हो गया। यह बिलकुल स्वाभाविक भी था। पहिली काग्रेस ने अंग्रेजी सत्ता के प्रति वफादारी का जोरों से विरोध किया, किन्तु

रक्तपात एवं विध्वसजनित कटुता, जार्ज तृतीय की शत्रुतापूर्ण प्रवृत्ति से उत्पन्न रोप तथा अमरीकियों को अपने भविष्य निर्णय के स्वाभाविक अधिकार की भावना के कारण शीघ्र ही उनसे पूर्ण सम्बन्ध विच्छेद हो गया। १७७६ के प्रारम्भ में वाशिगटन की सेना ने एक पृथक अमरीकी ध्वज खडा किया। साथ ही साथ एक योग्य उग्रवादी युवक थामस पेन—जो हाल ही इंग्लैण्ड से आया था—द्वारा लिखित पुस्तिका "कामन सेन्स" का भी गहरा प्रभाव पड रहा था। उसके तर्क थे कि स्वाधीनता ही एक मात्र उपाय है जिसके द्वारा अमरीकी सघ की स्थापना सभव है और इसमे जितना ही विलम्ब होगा उसकी प्राप्ति उतनी ही कठिन हो जायगी। जैसे ही जून आया काग्रेस के बहुत से सदस्य अधीर हो गये। वर्जीनिया के एक प्रतिनिधि रिचार्ड हेनरी ली ने स्वाधीनता के लिए एक प्रस्ताव तैयार किया जिसका अनुमोदन जान एडम्स ने किया। पाच सदस्यों की एक समिति ने, जिनके नेता थामस जेफरसन थे, बाद में स्वाधीनता का एक अधिकृत घोषणापत्र तैयार किया जिसको काग्रेस ने २ जुलाई को स्वीकार किया और ४ जुलाई १७७६ को घोषित कर दिया।

जिन व्यक्तियों ने यह युगान्तरकारी घोषणापत्र प्रस्तुत किया और अपनाया उन्हें स्वाधीनता की घोपणा मात्र से सन्तोप नही हुआ। उन्होंने "मानवजाति के अभिमत को सादर स्वीकार किया" और जिन कारणों ने उन्हें "सम्बन्ध विच्छेद के लिए विवश किया" तथा जिस दर्शनशास्त्र ने इसे न्यायसंगत ठहराया उन्हें विस्तारपूर्वक प्रस्तुत न करने मे उन्हें खेद हुआ। न केवल इन कारणों ने—जिनमे से करीब पच्चीस या तीस अंकित हैं—इतने कठोर कदम को न्यायोचित ठहराया, बल्कि वे इसलिए अंकित किये गये थे कि यह सिद्ध किया जा सके कि जार्ज तृतीय उन्हे निरकुश शासन के अन्तर्गत रखना चाहते थे। यह एक महत्वपूर्ण बात है कि अपने राष्ट्रीय इतिहास के शैशवकाल मे अमरीकियों ने सिद्धान्तो पर अपना युद्ध प्रारम्भ किया और एक सिद्धान्त की घोषणा की।

"और ये कौन से राजकीय सिद्धान्त हैं जिन्होंने यहाँ अमर अभिव्यक्ति प्रदान की है?" जेफरसन ने लिखा है। "हम इन सिद्धान्तों को स्वयंसिद्ध मानते हैं। सभी मनुष्य समान पैदा हुये हैं। वे अपने स्रष्टा द्वारा कुछ अविच्छिन्न अधिकारों से विभूषित किये गये हैं। ये हैं जीवन, स्वाधीनता और सुख की खोज। इन अधिकारों की प्राप्ति के लिए ही मानव समाज मे सरकारों की स्थापना हुई जिन्होंने अपनी न्यायोचित सत्ता शासित की स्वीकृति से ग्रहण की।

जब कभी कोई सरकार इन उद्देश्यों पर कुठाराघात करती है तो प्रजा को यह अधिकार है कि वह उसे बदल दे अथवा उसका उन्मूलन कर दे और नयी सरकार स्थापित करे जिसकी आधारशिला ऐसे सिद्धान्तों पर हो और शक्ति का सगठन इस प्रकार किया जाये कि यह अनुभव हो कि वे उनकी सुरक्षा और सुख को सर्वाधिक रूप से प्रभावित करेंगे।"

"वास्तव में हमारे पास जो कुछ भी है वह है जनतन्त्र का दर्शन," एक ऐसा दर्शन जिसकी पहिले कभी भी इतनी सूक्ष्म एवं महत्वपूर्ण व्याख्या नही हुई थी। कुछ ऐसी भी वस्तुएँ हैं—जैसा कि अमरीकियो ने कहा है और जिनके विषय मे कोई भी समझदार व्यक्ति शंका प्रकट नही कर सकता, वे स्वयंसिद्ध सत्य हैं। यह सत्य है कि सभी मनुष्य समान बनाये गये हैं, सभी मनुष्य ईश्वर की तथा कानून की दृष्टि में समान हैं। किन्तु निश्चय रूप से ही जैसाकि जेफरसन ने भी लिखा है—"अमरीका मे असमानताएँ विद्यमान थी, जैसे कि धनी और निर्धन की असमानता, पुरुषो और स्त्रियो की असमानता, काले और गोरे की असमानता। किन्तु किसी समाज में एक आदर्श की असफलता उस आदर्श को अनुपयोगी नही बना देती और समानता का सिद्धात एक बार घोषित किये जाने पर उसने अमरीकी विचारधारा को सदा प्रज्वलित किया।"

घोषणा मे व्यक्त किया गया दूसरा महत्वपूर्ण सत्य यह था कि मनुष्य कुछ 'अविच्छिन्न' अधिकारों से विभूषित है जो है जीवन, स्वाधीनता और सुख की चाह। ये अधिकार किसी उदार सरकार द्वारा मनुष्य को दान में नही मिले हैं न सरकार की कृपा पर आधारित हैं, वास्तव मे ये अधिकार वे हैं जिन्हें मनुष्य जन्म से ही लेकर उत्पन्न हुआ है और जिनको वह खो नही सकता। इस सिद्धान्त ने भी अमरीकी जनता तथा अन्य लोगो के विचारों मे शोले का काम किया और सत्ता के प्रति उनकी विचारधारा बदल दी क्योंकि घोषणा में कहा गया है कि पहिले पहल सरकारो का गठन ही इन अधिकारों की सुरक्षा के लिए किया गया। हमारे पास यहाँ जो कुछ है वह राज्य का 'इकरार' सिद्धान्त है—यह सिद्धान्त कि मनुष्य कभी 'प्राकृतिक अवस्था' में रहते थे। ऐसी अवस्था मे वे सदैव भयातुर रहते थे और सुरक्षा के हेतु वे सगठित हुए और सरकारो की स्थापना की। उन सरकारो को मनुष्य ने अपने जीवन, स्वाधीनता और अपनी सपत्ति की सुरक्षा के लिए पर्याप्त अधिकार प्रदान किये। संक्षेप मे, मनुष्यों ने सरकार की स्थापना अपने हित के लिए की, अहित के लिए नही, अपनी सुरक्षा के लिए की, क्षति के लिए नहीं, और

जिस क्षण सरकार इन उद्देश्यों की पूर्त्ति मे, जिनके लिए इसकी स्थापना की गयी है, असफल हुई वह फिर मनुष्यों के सहयोग अथवा निष्ठा के उपयुक्त नही रह जाती।

यदि मनुष्य सरकार की स्थापना कर सकते हैं तो उसकी समाप्ति भी कर सकते हैं क्योंकि यह उनका अधिकार है कि वे अयोग्य सरकार बदल दे अथवा उन्मूलन कर दे और उसके स्थान पर नवीन सरकार की स्थापना करे और अल्प काल मे ही उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि यह केवल सिद्धान्त मात्र नही है। युद्ध की उथल-पुथल और दमन के अन्तर्गत जब कि क्राति की तैयारिया हो रही थीं उन्होंने इस सिद्धान्त को सत्यता में परिणित कर दिया। सम्मेलनों मे सगठित होकर उन्होंने वैधानिक ढंग से पुरानी सरकारों का उन्मूलन कर दिया और नवीन सरकार की रचना की। उन्होंने अपने संविधान मे जीवन, स्वाधीनता एव सुख की सुदृढ़ गारण्टी लिपिबद्ध की। शताब्दियो से जो विचार दार्शनिको की सम्पत्ति थे वे दर्शन की परिधि से निकाल कर कानून की रूप रेखा मे ढाले गये।

प्रयाण और युद्ध : सैनिक दृष्टिकोण से इन महत्वपूर्ण युद्ध का महा निर्णायक सघर्ष साराटोगा था। १७७६ के प्रारम्भ में कनाडा मे ब्रिटेन की बडी सेनाएं थीं और एक शक्तिशाली सेना न्यूयार्क मे हो के आधीन थी। यदि ये सेनाए न्यूयार्क मे जमा होती तो पैतीस हजार शक्तिशाली सुसज्जित शाही सैनिकों को युद्ध क्षेत्र में लाया जा सकता था। यदि एक साहसी ब्रिटिश सेनापति ने वाशिंगटन की आठ हजार महाद्वीप वासियों की छोटी सी सेना पर न्यूजर्सी में प्रहार करने के लिए क्रूरतापूर्वक उनका उपयोग किया होता, जिस प्रकार कि ग्रान्ट ने १८६४ में वर्जीनिया में ली पर किया था, तो क्राति सम्भवतः निश्चय ही कुचल दी जाती। यदि वाशिंगटन को सर्वाधिक कोई भय था तो वह था उसे नष्ट करने वाली इन ब्रिटिश फौजो का जमाव। लेकिन लन्दन के अधिकारियो ने बुर्गोयन—जो अवकाश पर घर आया हुआ था—की दुर्मन्त्रणा के कारण अपनी सेनाओ को विभक्त करने का निश्चय किया। बुर्गोयन के आधीन एक सेनादल कनाडा से दक्षिण की ओर एलबानी में हडसन के मुहाने पर प्रयाण करने को था और हो की न्यूयार्क स्थित सेनाए हडसन को उत्तर की ओर अलवेनी जाने को थी। ब्रिटिश सम्राट ने इस योजना की स्वीकृति दे दी थी। लन्दन से कनाडा के अधिकारियों के सयुक्त दल के अर्द्ध उत्तरीय

भाग को धावा बोलने के पूर्व आदेश भेज दिये गये थे। किन्तु हो को जिसने एलवेनी के बजाय फिलाडेल्फिया के विरुद्ध धावा बोल दिया था—कोई निश्चित आदेश नहीं भेजे गये थे।

बुर्गोयन योजना की महान त्रुटि यह थी कि वह ब्रिटिश सेनाओ के एकीकरण को रोकती थी। दूसरी मूलभूत त्रुटि यह थी कि एक बार उत्तरी सेना के अमरीकी सीमा मे घुस आने पर वह अपने अड्डे से बहुत दूर हो जाती थी। जब बुर्गोयन उत्तरी न्यूयार्क मे फोर्ड एडवर्ड पहुंचा वह मान्ट्रेयल से १८५ मील दूर था और प्रत्येक आगेवाला कदम उसकी सेना और रसद के अड्डो के बीच कठिन अडचन उपस्थित करता था। उसको खाद्यपूर्त्ति के लिए आसपास के प्रदेश की ओर ताकना पडता था। वेलिंगटन मे—जिसके दक्षिणी भाग मे अब वर्मोन्ट है—पशु और खाद्य-पदार्थ के बडे भण्डार थे जो केवल कुछ सैनिको द्वारा रक्षित थे। उन्हे हस्तगत करने के लिए और उस केन्द्र पर धावा बोलने के लिए—जहां महाद्वीप की सर्वाधिक फुर्तीली और विद्रोही जाति रहती थी और जो शक्तिशाली थी तथा मेरी बायी की ओर रहती थी—करीब तेरह सौ जर्मन और दूसरे सैनिको को वेलिंगटन के विरुद्ध भेजा। वे मधुमक्खियो के छत्ते से जा भिड़े। फ्रास के युद्ध मे ख्यातिप्राप्त जान स्टार्क के नेतृत्व मे न्यू इंग्लैड के शक्तिशाली दो हजार बहादुर सैनिकों ने उन पर अधिकार कर लिया।

इसी बीच अमरीका की तीव्र गति से बढ़ती हुई सेना की बुर्गोयन की मुख्य सेना से हडसन के ऊपरी भाग पर मुठभेड़ हो गयी (जब १६ सितम्बर १७७७ के फ्रीमेन फार्म पर दोनों सेनाओ की मुठभेड़ हुई तब अमरीकियो की संख्या करीब नौ हजार थी और ब्रिटेन की करीब ६ हजार) और भी दूसरे कार्यो से बुर्गोयन को, जो शीघ्र ही जंगल में फस गया, भारी क्षति उठानी पडी, जबकि अमरीकी सेना की सख्या-बढ़ कर बीस हजार हो गयी। १७ अक्टूबर को चारो ओर से घिर जाने पर उसकी सेना ने शस्त्र डाल दिये। सेना को अपने अड्डे से करीब सौ मील दूर एक बीहड प्रदेश मे जो विद्रोही शत्रु-सैनिको से भरा पड़ा था ले जाने की अपनी मूर्खता उसने सिद्ध कर दी।

बुर्गोयन की पराजय के परिणाम बड़े महत्वपूर्ण सिद्ध हुए। एक ही आक्रमण मे ब्रिटेन की करीब चौथाई सशस्त्र सेना अमरीका मे समाप्त हो गयी। हडसन स्थायी रूप से अमरीकियो के नियन्त्रण मे आ गया। देशभक्तो मे नवजीवन का सचार हुआ। पेरिस मे वेजामिन फ्रेंकलिन अपने प्रयत्नो द्वारा

विदेश मन्त्री बरगीन्स को अमरीकियों की सहायता भेजने के लिए राजी कर रहा था। जब यह समाचार मिला कि हो फिलाडेल्फिया मे है और बुर्गोयन ने टिकोरेन्डेरोगा ले लिया है, तो फ्रास का उत्साह ठडा पड गया। लेकिन जब साराटोगा का समाचार मिला तो कहा जाता है कि फ्रेंकलिन के मित्र बोर्मांकियर बादशाह को शीघ्र जाकर खबर देने की खुशी में अपना हाथ तक तोड बैठा। ६ फरवरी १७७८ को फ्रास और सयुक्त राज्य अमरीका ने एक सधिपत्र पर हस्ताक्षर किये जिसने युद्ध को पूर्ण रूप से एक नवीन दृष्टिकोण प्रदान कर दिया। वीर सेनानी "लाफायट" जो अपने खर्चे पर संयुक्त राज्य अमरीका की किसी भी रूप में सेवा करने के लिए आया था कांग्रेस द्वारा मेजर जनरल बना दिया गया। फ्रास और स्पेन के बादशाहों ने पहिले ही गुप्त रूप से कर्जा दे दिया था जिससे बडी सख्या में अस्त्र-शस्त्र खरीद लिये गये थे। अब शेचाम्बू के सेनापतित्व में फ्रास ६ हजार से भी अधिक प्रशिक्षित सेना वाशिगटन की सहायता के लिए भेजने को तैयार हो गया था। उन्होंने धन और रसद भारी मात्र मे दी और फ्रास के नौसैनिक बेड़े ने भी ब्रिटेन को अपनी सेनाओं को रसद पहुचने की कठिनाइयों को बहुत अधिक बढा दिया।

उत्तर को जीतने में असमर्थ रहने पर अंग्रेजों की सेनाएं दक्षिण की ओर मुडीं। उनकी योजना जोर्जिया पर कब्जा करने की थी, जो इस समय कमजोर था और उत्तर की ओर बिना रोक टोक बढ़ जाने की थी, जिससे कि आगे चढ़ते समय ब्रिटेन के वफादारों की सहायता प्राप्त हो सके। १७७८ के अन्तिम दिनो में उन्होंने सावानाह ले लिया और १७७९ में जोर्जिया और दक्षिण करोलिना के भीतर भागों पर अधिकार कर लिया। अमरीकियों ने जनरल बेन्जामिन लिकन को सामना करने के लिये भेजा। लेकिन वे चार्लस्टन मे घिर गये, और मई १७८० मे अंग्रेजो ने उनको तथा उनके पाच हजार सिपाहियो को गिरफ्तार कर लिया तथा प्रमुख बन्दरगाह सदर्न पर अधिकार कर लिया। शीघ्र शाति पाने की दिशा मे यह एक सबसे भारी क्षति थी। शीघ्र ही सम्पूर्ण दक्षिण करोलिना पर विजय प्राप्त कर ली गयी। इसके बाद "साराटोगा के विजेता" एक दूसरे अमरीकी कमाण्डर होरिशियो गेट्स को आक्रमण रोकने के लिए दक्षिण मे भेजा गया। लेकिन उनकी तीन हजार की छोटीसी सेना, जिसके आधे सिपाही नये थे, लार्ड कार्नवालिस द्वारा केमडन मे (१६ अगस्त १७८० को) कुचल दी गयी। हताहत और कैद किये गये कुछ सिपाहियों की सख्या २ हजार थी और गेट्स ने भाग कर दो सौ मील बाद दम लिया।

लेकिन इसी बीच किंग्स माउन्ट पर पश्चिमी करोलिना के एक हजार ब्रिटिश वफादारों की सेना एक बडी देशभक्त सेना द्वारा परास्त कर दी गयी। एक तीसरे अमरीकी सेनानायक नेथानील ग्रीन, जो अपने पहिले के सेनानायको से कहीं अधिक योग्य थे, अब दक्षिणी मोर्चे पर आये। वह भी १७८१ के प्रारम्भ में गिल्फर्ड कोर्ट हाउस मे पराजित कर दिया गया। लेकिन उसने लम्बे और तेज धावा करने में आश्चर्यजनक बुद्धि का परिचय दिया। वास्तव मे नौ महीनों मे उसने चार महत्वपूर्ण युद्धों मे हार खायी लेकिन उसने ब्रिटिश सेनाओं को ध्वस्त कर दिया और इस प्रदेश की जनता के सहयोग से अन्त मे ब्रिटेन को चार्ल्सटन और सावानाह मे हटने के लिए बाध्य किया। वाशिंगटन की भाति ग्रीन भी युद्ध मे पराजित हुए लेकिन अपने अभियानो में वे सफल रहे।

और जब ग्रीन दक्षिण के निचले भागों को साफ करने मे लगे थे, उसी समय अंग्रेजों की एक दूसरी सेना अपने सर्वनाश की दिशा मे अग्रसर हो रही थी। कार्नवालिस ने केप फियर के प्रान्त को वसन्त ऋतु के अन्त मे छोड दिया और उत्तर की ओर बढ़ कर वर्जीनिया मे देशद्रोही बेनेडिकेट आर्नोल्ड की सेनाओं से मिलने के लिए बढ़ा। लाफायट के नेतृत्व मे अमरीकी सेनाओ का असफल पीछा करने के पश्चात् वह यार्क नदी के मुहाने पर यार्कटाउन की ओर हट गया।

इस समय वाशिंगटन के पास न्यूयार्क के निकट लगभग छः हजार और रोढ द्वीप के न्यूपोर्ट पर रोचमब्यू के पास लगभग पाच हजार व्यक्ति थे। जैसे ही कार्नवालिस समुद्र के किनारे की ओर लौटा वेस्ट इण्डीज के फ्रान्सीसी एड-मिरल डि ग्रास से सन्देश प्राप्त हुआ कि वे अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं। वाशिंगटन ने इस अवसर का कुशलतापूर्वक लाभ उठाया। उन्होंने बड़े द्रुत प्रयाण के द्वारा अमरीकी और फ्रान्सीसी सेनाओं की सम्मिलित १६ हजार सेनाओं को यार्कटाउन के समक्ष जमा दिया। डि ग्रास के समुद्री बेडे ने कार्नवालिस की आठ हजार सेनाओं को समुद्री मार्ग से भाग निकलने का मार्ग अवरुद्ध कर दिया। उसके बाहरी मोर्चों पर कब्जा कर लिया गया और आन्तरिक मोर्चों को अमरीकी तोपखानों ने ध्वस्त कर दिया। १९ अक्टूबर को उन्होंने अपनी तलवार वाशिंगटन को भेजी। वाशिंगटन ने जनरल लिंकन को उस तलवार को ग्रहण करने का आदेश दिया और अंग्रेजी सेनाओं ने अपने घुटने टेक दिये और उनका बैण्ड पराजय की धुन "दि वर्ल्ड टर्ण्ड अपसाइड डाउन" बजाने लगा।

क
ना
डा
न्यू यार्क
पेंसिलवानियां
वर्जीनिया
उत्तरी करोलिना
दक्षिणी करोलिना
न्यू हेम्पशायर
अमरीकी क्रान्ति
---- वाशिंग्टन १७७६-७७
बर्गोयन
सेंट लेगर १७७७
होव १७७६-७७
कार्नवालिस १७७८-८१
वाशिंग्टन १७८१

युद्ध प्रायः अब समाप्त हो चुका था। कुछ समय तक बादशाह जार्ज पराजय अस्वीकार करते रहे। लेकिन १६८२ मे दक्षिण के सभी बन्दरगाहों को अंग्रेज़ों ने छोड़ दिया और शाही फौजो ने केवल न्यूयार्क शहर मे सैनिक स्थानों पर बिगुल बजाने के सिवाय दूसरे किसी भी अधिकार का उपयोग नहीं किया।

शान्ति सन्धि : जिस सन्धि द्वारा १७८३ मे युद्ध समाप्त हो गया उसमे ग्रेट ब्रिटेन ने उदार शर्तें रखीं। यदि वहाँ की सरकार चाहती तो वह कड़ा सौदा कर सकती थी। वेस्ट इण्डीज मे रोडनी के सेनापतित्व मे ब्रिटेन ने फ्रास पर निश्चयात्मक विजय प्राप्त कर ली थी और न्यूयार्क स्थित ब्रिटिश सेना निर्वासित नहीं की जा सकी थी। यह सत्य है कि जार्ज रोजर्स क्लार्क के नेतृत्व में अमरीकी बन्दूकधारी सैनिक ओहियो नदी के उत्तरी वन-प्रदेश मे घुस गये थे और जहा अब इण्डियाना, इलिनायस और मिचीगन हैं वहा ब्रिटिश अड्डों को हस्तगत कर लिया था। प्रमुख ब्रिटिश मंत्री शैल बर्न, जो अमरीकी राजदूत बैंजामिन फ्रैंकलिन, जान एडम्स और जान जे से वार्ता कर रहा था, यदि चाहता तो इन विजयों के कारण कड़ी शर्तें रख सकता था। लेकिन उसने नवीन गणतंत्र को अलेघेनीज और मिस्सीसिपी के बीच का सम्पूर्ण प्रदेश उत्तरी सीमा सहित, जो कि लगभग आज भी वैसा है, दे दिया। उसने फ्लोरिडा स्पेन को हस्तान्तरित कर दिया और अमरीकियों को कनाडा के सुदूर समुद्रीय तट पर मछली मारने के अधिकार दे दिये।

इस उदारता का परिणाम लाभप्रद हुआ। यदि ब्रिटेन ने उत्तर पश्चिमीय भाग को अधिकार मे किये रहने का प्रयत्न किया होता तो सयुक्त राज्य अमरीका के साथ सघर्ष (जो किसी प्रकार कम नहीं था) सदैव और गम्भीर बना रहता। गणतंत्र का स्वाभाविक प्रयाण पश्चिम की ओर था और इसकी महत्वपूर्ण शक्तियाँ ऐसी दिशा की ओर लगी हुई थीं जिसने अन्ततः फ्रास को ल्यूसियाना और मेक्सिको को रिओ ग्रेन्ड के उत्तरीय भाग को छोड़ने के लिए विवश कर दिया, लेकिन इतने पर भी मुख्यतः १८१५ के पश्चात्, ब्रिटिश साम्राज्य को किंचित मात्र चिंतित नहीं किया। वास्तव मे वे कनाडा और संयुक्त राज्य अमरीका के साथ समान रूप से विस्तार करते रहे और आज भी अन्तरग मित्रों तथा सहयोगियो के समान महाद्वीप के सर्वोत्तम भाग पर अधिकार किये हैं।

प्रजातन्त्र का विकास : विदेशी मामलो मे अमरीका ने एक उल्लेखनीय स्थान प्राप्त कर लिया था। लेकिन आन्तरिक मामलो में भी समान रूप से एक महत्वपूर्ण परिवर्तन हो गया था। ब्रिटेन से सम्बन्ध विच्छेद के समान ही महत्वपूर्ण थे इन वर्षों मे अमरीकी समाज मे हुए गम्भीर परिवर्तन।

वास्तव मे इंग्लैण्ड से अलग होने का अर्थ था राजनीतिक प्रजातन्त्र के क्षेत्र मे तात्कालिक लाभ। अब गवर्नर प्रजा द्वारा चुने जाते थे, बादशाह द्वारा नही, विधान मण्डलों के उच्च सदनों के लिए अब नियुक्ति न होकर निर्वाचन होने लगा और प्रजा द्वारा इच्छित कानून विशेषाधिकार से सुरक्षित थे। लेकिन आन्तरिक सुधार भी समान रूप से महत्वपूर्ण थे, जिनके अन्तर्गत निर्वाचन अधिकार का विस्तार हुआ और प्रतिनिधित्व में अधिक समानता आ पायी। १७७५-७६ मे पेंसिलवानिया मे दो प्रजातंत्रवादी कार्यों के लिए प्रबल माग की गयी—प्रथम, दूरदर्शी पश्चिमी प्रदेशों को उनकी जनसख्या के अनुसार विधान सभा मे प्रतिनिधित्व प्रदान करना, दूसरा, सपत्तिसबंधी योग्यताओं तथा नागरिकता सबन्धी शर्तो का उन्मूलन, जिनके अंतर्गत पहले मताधिकार एक विशेष वर्ग के तक सीमित कर दिया गया था। दोनों ही सुधार निश्चय रूप से लागू कर दिये गये थे। मार्च १७७६ में विधान मण्डल मे सतरह अतिरिक्त सदस्यों को प्रवेश मिला जिनमे बहुसख्यक पश्चिमी क्षेत्र से थे। इसके अलावा मताधिकार को भी शीघ्र ही व्यापक किया गया जिससे प्रत्येक कर-दाता पुरुष मत-दान कर सके। वर्जीनिया जैसे कुछ राज्यों मे पुराने बसे हुए धनी वर्ग अब भी विधान मण्डल में अनुचित रूप से बहुमत में थे और मसाचुसेट्स जैसे दूसरे राज्यों मे अब भी सपत्तिसबंधी योग्यता मतदान अधिकार के लिए आवश्यक थी। लेकिन पेंसिलवानिया, डेलावेर, उत्तरी करोलिना, जार्जिया और बर्मोण्ट मे मताधिकार बन्ध-रहित हो गया था जिससे शीघ्र ही कोई भी "जगली दुपाया" जैसेकि एक परेशान अनुदारवादी ने कहा है—मतदान कर सकता था।

ब्रिटिश वफादारों के विघटन ने प्रजातंत्र को एक दूसरा बडा भारी योगदान दिया। बहुत से अनुदारवादी और सम्पन्न टोरियों ने उन लोगों के लिए घृणा प्रदर्शित की थी जिसको दोरोथी हट विन्सन "घृणित समुदाय" पुकारते थे। लकीर के फकीर होने के कारण दुःख और घृणा की भावुकता में उन्होंने स्वयं को निर्वासित कर लिया था। जब हो ने बोस्टन छोडा तो लगभग एक हजार वफा-दार उनके साथ हो लिये और बाद मे शीघ्र ही लोगों ने उनका अनुकरण किया। उनका उद्देश्य था 'हैल, हल या हेलीफेक्स।' प्रायः न्यूयार्क प्रात के

सभी प्रमुख जमींदार टोरी थे। जब अंग्रेजों ने चार्ल्सटन छोडा तब वफादारो से भरा एक बडा चन्द्राकार, सौ जहाजों का बेड़ा खाडी से चल दिया। यह एक दयनीय दृश्य था। उत्तर कनाडा और तटीय प्रान्तों मे साठ हजार से भी अधिक शरणार्थी पहुंचे। वेस्ट इण्डीज मे भी हजारो लोग पहुंचे। इंग्लैण्ड भी एक निराश मेजबान बना। एक व्यक्ति ने लिखा था कि जब तक हम सब समाप्त होंगे तब तक शायद ही इंग्लैण्ड मे ऐसा कोई गाव बचे जिसमे कि अमरीका की मिट्टी न पहुँच जाय। उनके चले जाने के पश्चात् शात परिश्रमी कृषक, व्यवसायी और कारीगर अपनी इच्छानुसार सभ्यता के निर्माण करने मे स्वतंत्र थे। तदन्तर वैभव, फैशन और टीपटाप का महत्व कम हो गया और मेहनत तथा आत्म-विकास का महत्व बढ़ गया। अमरीकी समाज मे उत्साही और साहसी व्यवसायी प्रमुख थे। प्रत्येक व्यक्ति समान था, प्रत्येक व्यक्ति व्यस्त और प्रायः प्रत्येक व्यक्ति अधिक डालर कमाने की बात सोचता था।

विशेषाधिकारो की तीन प्रमुख दिशाओ मे सफल अधिक्रमण करने के पश्चात् जनतंत्र को काफी प्रोत्साहन मिला—अर्थात् परम्परागत साम्पत्तिक अधिकारो की समाप्ति, टोरियों की विशाल जायदादो का विघटन और जहा कहीं भी ऐग्लीकन चर्च के केन्द्र थे, उनकी समाप्ति। वर्जीनिया ऐसा उपनिवेश था जहा परम्परागत साम्पत्तिक अधिकारो की जड़े बडी मजबूत जमीं थी। उनको बडी बडी पारिवारिक जायदादो को सुरक्षित रखने के उद्देश्यो से लागू किया गया था। जैसा कि जेफरसन ने अपने 'नोट आन वर्जीनिया' मे कहा है कि इस तरह प्रदेश मे श्रीमन्त परिवारो का एक समूह विद्यमान था जो एक पैतृक व्यवस्था में गठित थे और अपने अपने सस्थानों के वैभव एवं कुलीनता से विख्यात थे। वेस्टओवर, शिरले, टकाहो और दूसरे समृद्ध गढ़ो के स्वामी अपनी इन रियासतो की रक्षा करते थे। थामस जेफरसन ने वर्जीनिया विधान-मण्डल के परम्परागत सम्पत्ति के अधिकारों पर प्रहार किया और १७७८ के प्रथम प्रहार मे ही प्रायः उनको समाप्त कर दिया गया। बाद मे ये सभी जायदादे बिना किसी प्रतिबन्ध के बेची जा सकती थी। १७७५ मे जेफरसन सपत्ति-गत पैतृक अधिकार का उन्मूलन करने मे भी सफल हुए। किसी ने प्रस्ताव रखा कि सबसे बड़े पुत्र को कम से कम दुगुना भाग मिलना चाहिए। इस पर जेफरसन ने उत्तर दिया कि "तब तक नही, जब तक कि वह दुगुना खाना न खाता हो और दुगुना काम न करता हो।" जब फ्रासीसी यात्री ब्रिसोटडिवारविले कुछ दिनों पश्चात् वर्जीनिया आये तो उन्होंने लिखा कि वर्ग-भेद समाप्त हो

चला था। बड़ी जायदादें बड़ी तेजी से पुत्रों में बट गयी थीं अथवा एक साथ नवागन्तुकों को बेच दी गयी थी और मालिकों के बच्चे पश्चिम की ओर चले गये थे। दूसरे दक्षिणी राज्यों—जोर्जिया, दक्षिणी करोलिना, मेरीलैण्ड—तीव्र गति से वर्जीनिया के उदाहरण का अनुकरण कर रहे थे।

इसी प्रकार धनी टोरियों और सम्पत्तिवालों की भूमि के बड़े भाग की जप्ती से छोटे भूमिधरों के प्रजातन्त्रवाद का विकास हुआ। इस प्रकार के दो प्रमुख भूमिस्वामी थे, पेसिलवानिया मे पेन परिवार और मेरीलैण्ड में लार्ड बाल्टीमोर परिवार। अपने सस्थापक की स्मृति मे पेसिलवानिया ने परिवार-वालों को १३०,००० पौण्ड स्वीकृत किये लेकिन हारफोर्ड को मेरीलैण्ड से केवल १०,००० पौण्ड ही प्राप्त हुआ। वर्जीनिया मे अगणित जायदादो की बेदखली हुई, मुख्य रूप से वाशिंगटन के परम मित्र लार्ड फैयरफैक्स षष्ठम की। उत्तरी करोलिना ने ग्रानविले की सैकड़ों एकड़ भूमि छीन ली थी। न्यूयार्क ने सम्पूर्ण शाही भूमि पर अधिकार कर लिया था और उनसठ मुख्य टोरी जायदादें—जिसमे फिलिप्स की करीब तीन सौ वर्गमील जमीन शामिल थी—भी जप्त कर ली गयी। वेस्ट-चेस्टर मे डी-लेन्सी इस्टेट और पुटनाम काउन्टी मे रोजर मोरिस की भूमि पाच सौ से अधिक भूमिधरो को बेच दी गयी थी। ऊपरी न्यूयार्क में सर जान जानसन की बेदखली से जायदाद पर दस हजार कृषक परिवारो को घर-बार मिला। मसाचुसेट्स ने भी अनेक जायदादों को जब्त कर लिया जिसमें मेन मे सर विलियम पैपरेल की भी जायदाद थी जो कि तीस मील तक सीधी लाइन मे अपनी जमीन पर घुड़सवारी कर सकते थे। न्यू हेमिसफियर से होकर जहा सर जान वेन्टवर्थ ने अपनी जायदाद खोयी थी, जोर्जिया तक—जहा सर जेम्स राइट को वही दुर्भाग्य देखना पड़ा था—छोटे कृषक उपजाऊ भूमि पर प्रसन्नतापूर्वक विचरण करते थे जहा पर एक समय वे केवल काश्तकार थे।

ब्रिटिश राज्य से सम्बन्धित धार्मिक एकाधिकार भी साम्पत्तिक प्रभुत्व और ब्रिटिश अफसरशाही के साथ ही समाप्त हो गया था। न्यू इंग्लैण्ड मे कान्ग्री-गेशनल चर्च के विशेष अधिकार, जिनका सम्राट से कोई सम्बन्ध नही था, अब भी कायम थे। मसाचुसेट्स में उनको और भी दृढ़ कर दिया गया था। लेकिन दक्षिण मे एंग्लिकन चर्च की सुविधाएं नष्ट हो गयी थी।

इस क्राति ने उत्तरी करोलिना के संस्थान को बुरी तरह नष्ट कर दिया जहा इसका एक भी पूजास्थान बिना कब्जे के नही रह गया था। दूसरे

राज्यो में इसने राजनीतिक सुधारवादियों, बेप्टिस्टो और प्रेसबीटेरियन जैसे विरोधी वर्गों को स्वर्ण अवसर प्रदान किया। उत्तरी करोलिना ने १७७६ मे एक विधान तैयार किया जिसने धार्मिक स्वतन्त्रता की गारण्टी दी। दक्षिणी करोलिना ने भी १७७८ के विधान मे वही कदम उठाया। जोर्जिया ने १७७७ के अपने विधान मे वैसा ही किया। लेकिन सबसे कठिन संघर्ष वर्जीनिया मे हुआ। यहा यह संस्थान दृढ़ता से जमा हुआ था क्योंकि अधिकतर शाही परिवार एग्लिकन थे। यहा तक कि पैट्रिक हेनरी जैसे राजनीतिज्ञ का विश्वास था कि श्रेष्ठ नैतिकता और दयाभाव के लिए धर्म को राज्य की सहायता आवश्यक है। लेकिन विरोधी वर्गों मे थामस जेफरसन और जेम्स मेडीसन जैसे दो बडे सुधारवादी नेता बड़े प्रभावशाली हुए। ये चर्च आफ इंग्लैण्ड में आस्था रखते थे।

इन नेताओ ने धार्मिक सहनशीलता सम्बन्धी गारण्टी प्रदान करने की दिशा मे आसानी से सफलता प्राप्त की। मेडीसन ने १७७६ के विधान मे यह सरल घोषणा लिखी कि 'सभी मनुष्य धार्मिक मामलो मे स्वतंत्र हैं।' लेकिन सस्थान कायम रहा और उसे उखाड़ फेकने के लिए दस वर्ष तक सघर्ष करना पडा। जेफरसन ने कहा है कि यह मेरे जीवन का सबसे कठिन सघर्ष था। १७७६ के प्रारम्भ से वे और उनके साथी धार्मिक कर स्थगित करने मे प्रतिवर्ष सफल होते रहे और १७७८ मे धार्मिक कर का सदा के लिए उन्मूलन हो गया। लेकिन उनके विरोधियों ने १७७६ मे एक प्रस्ताव द्वारा घोषणा की कि सभी चर्चो के लिए एक आम कर लगाने के प्रश्न को सुरक्षित रखा जाय और इस धार्मिक आम कर की माग के पीछे एक बड़ा शक्तिशाली दल प्रयत्नशील था। सक्षिप्त मे इस योजना का उद्देश्य ईसाइयों का प्रभुत्व कायम रखना, समान रूप से राज्यधर्म बनाना और राज्य के खजाने से उनका खर्च चलाना था। पैट्रिक हैनरी महान् इसके सबसे बड़े पक्षपाती थे।

क्राति का आरम्भ १७८४-१७८६ मे हुआ। अदम्य साहस के साथ हैनरी ने बरगेजिस की सभा मे एक प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए घोषणा की कि 'इस कामनवेल्थ की जनता को ईसाई चर्च अथवा किसी ईसाई समाज की सहायता के लिए उपयुक्त कर अथवा दान देना चाहिए।' लेकिन जब एक विशेष विधेयक द्वारा इस वक्तव्य को क्रियात्मक रूप देने का प्रयत्न किया गया तो विरोधी दल ने अपनी सम्पूर्ण शक्तिया लगा दी। हेनरी और मेडीसन के बीच भारी वाद-विवाद मे, मेडीसन बाजी मार ले गये। विधेयक स्थगित कर दिया गया

और इससे उदारवादी नेताओं को शिक्षा आन्दोलन चलाने का अवसर प्राप्त हो गया। १७८६ मे यह कार्रवाई अन्तिम रूप से समाप्त हो गयी और उसी के साथ जैफरसन का धार्मिक स्वतत्रता विषयक प्रसिद्ध विधेयक स्वीकृत हो गया जिसके अनुसार सरकार धार्मिक मामलो अथवा अन्तर-आत्मा सम्बन्धी मामलों मे कोई नियन्त्रण नही लगा सकती। यह ऐतिहासिक कदम वर्जीनिया मे ही नहीं, अपितु पश्चिम के सभी नये राज्यो मे धार्मिक स्वाधीनता की आधार-शिला बन गया।

शिक्षा के आधार को दृढ़ करने के लिए विभिन्न राज्यों मे जो कार्रवाइया की गयी उनके विषय मे बहुत कुछ कहा जा सकता है। निजी विद्यालयो तथा महाविद्यालयो पर इस सघर्ष का चिन्ताजनक परिणाम हुआ। येल कालेज फिलहाल बन्द कर दिया गया, किंग कालेज भी बन्द कर दिया जो अब कोलम्बिया कालेज के रूप मे है। १७९७ मे विलियम और मेरी कालेज का अध्यक्ष नगे पाव लडकों के एक समुदाय को पढ़ाता था और १८०० मे हारवर्ड विभाग मे एक अध्यक्ष, तीन प्राध्यापक और चार अध्यापक थे। १७८०–८५ में एक भी पुस्तक–विक्रेता ने बोस्टन के प्रमुख समाचारपत्र मे विज्ञापन नही दिया।

लेकिन क्रांति का एक सुपरिणाम यह हुआ कि स्वतंत्र सार्वजनिक स्कूलों तथा जनसाधारण की प्रशिक्षा की माग की गयी। यह तत्काल अनुभव किया गया कि प्रजातन्त्रीय स्वराज्य मे शिक्षित मतदाताओं का होना आवश्यक है। न्यूयार्क के गवर्नर जार्ज क्लिन्टन ने १७८२ मे कहा था कि 'जहा सर्वोच्च नौकरिया प्रत्येक स्थिति के नागरिक के लिए उपलब्ध है उस स्वाधीन राज्य की सरकार का यह विशेष कर्तव्य है कि उस स्तर के साहित्य का, विद्यालयों तथा विशेष संस्थाओ द्वारा प्रचार होना चाहिए जो जन सस्थानों की स्थापना के लिए आवश्यक है।' जेफरसन ने लिखा, "मै आशा करता हू कि सब चीजो से अधिक प्राथमिकता जन साधारण की शिक्षा को दी जायगी क्योंकि यह सिद्ध है कि जनता की सुबुद्धि पर ही स्वाधीनता के उचित स्तर को सुरक्षित रखना निर्भर है।" प्रारम्भ मे राज्यों की गरीबी इस कार्य मे बाधक हुई किन्तु इस नयी माग का परिणाम यह हुआ कि युद्ध के पूर्व से कहीं अधिक सुविधाए प्रारम्भिक शिक्षा के लिए प्राप्त होने लगी और शिक्षा सम्बन्धी बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय १७८५ के भूमि अध्यादेश मे थे जिसके द्वारा सार्वजनिक शिक्षण सस्थाओ को लाखो एकड़ सरकारी भूमि प्रधान की गयी।

एक राष्ट्रीय सरकार का अभाव : इस प्रकार नये गणतंत्र का दृष्टिकोण आशाजनक और प्रगतिशील था। फिर भी क्षितिज पर एक घना बादल मंडरा रहा था। तेरह राज्यो को एक वास्तविक राष्ट्रीय सरकार की स्थापना मे कभी सफलता नही मिली। उन्होंने मार्च १७८१ मे सघीकरण के कुछ नियम स्वीकार किये थे जो वास्तव मे केवल एक 'मित्रता का सघ' था तथा कमजोर और अपर्याप्त था।

कोई वास्तविक राष्ट्रीय कार्यकारिणी अस्तित्व मे नही थी। न्याय-व्यवस्था की किसी राष्ट्रीय पद्धति की स्थापना नहीं हुई थी। एक सदनवाली कान्टीनेन्टल-काग्रेस (महाद्वीपीय-काग्रेस), जिसमे प्रत्येक राज्य को एक ही मत देने का अधिकार था, अधिकार नही होने से कमजोर थी। यह कर नही लगा सकती थी, सेना भर्ती नही कर सकती थी, कानूनों को भग करने वालो को दण्ड नही दे सकती थी और न वह दूसरे देशो से की गयी सन्धि की पुष्टि कराने के लिए राज्यो को बाध्य ही कर सकती थी। सबसे बुरी बात यह थी कि सरकार के कर्तव्यों को पूर्ण करने के लिए अथवा राष्ट्रीय-ऋण का ब्याज चुकाने के लिए भी वह धन नही जुटा सकती थी।

सक्षेप मे, इस क्राति ने अमरीकी जनता को विश्व राष्ट्रो के परिवार मे एक स्वतत्र स्थान प्रदान किया। क्राति द्वारा उन्हे एक परिवर्तित सामाजिक अवस्था प्राप्त हुई जिसमे परम्परा, धन और विशेषाधिकारो का महत्व कम था और मानवीय समानता का महत्व अधिक, जिसमे कि सस्कृति और सभ्यता के स्तर अस्थायी रूप से निम्न थे किन्तु समानता के स्तर उठे हुए थे। इसने अपनी राष्ट्रीयता को दृढ बनाने के लिए उन्हे सहस्रों लोक-स्मृतिया प्रदान की जैसे— वाशिंगटन का केम्ब्रिज मे वृक्ष के नीचे अपनी तलवार को निकालना, बन्कर हिल के रक्तपूर्ण पठार, क्यूबेक की दीवालों के नीचे मौंटगुमरी की मृत्यु, नाथान हेल का यह कथन, 'मुझे दुःख है कि देश के लिए मै केवल एक बार ही जीवन-दान कर सकता हूँ', हडसन मे बन्दी जलयान, बेनेडिक्ट आर्नोल्ड के देशद्रोही प्रयत्न का नाश, फौर्ज घाटी की कडी ठिठुरन, दक्षिग करोलिना मे मेरिअनो का गुरिल्ला युद्ध जिससे उसका 'कीचड़ की लोमडी' नाम पड़ा, बैंजामिन फ्रैंकलिन का यह कथन, 'या तो हम सब एक साथ फांसी पर चढ़े या फिर हम सब अलग अलग फासी पर लटके', देशभक्त श्रीमंत राबर्ट मारिस का धैर्य के साथ इस कार्य के लिए धन इकट्ठा करना, एलेक्जेण्डर हैमिल्टन की यार्कशहर मे मोर्चाबन्दी, ब्रिटिश जंगी बेड़े का न्यूयार्क खाडी के बाहर महान निष्कासन आदि।

लेकिन अमरीकी जनता को अब भी यह प्रदर्शित करना था कि अपने गण-राज्य को सफल बनाने के लिए उनमें स्वायत्त शासन के लिए वास्तविक क्षमता है। उनको यह प्रदर्शित करना शेष था कि वे प्रशासनिक सगठन की समस्या को हल कर सकते हैं। यह वे अब तक सिद्ध नहीं कर पाये थे। उनके 'मित्रो का सघ' विरोधियों का सघ मालूम पड़ता था। उनकी काग्रेस अत्यधिक आपसी विद्वेष में डूबी हुई थी। राज्यों में झगड़े निश्चय रूप से भयानक रूप धारण करते जा रहे थे। सेना से अधिक किसी अन्य समुदाय की अराजकतापूर्ण दशा नहीं हुई जिसको न तो आवश्यकतानुसार खाना मिला, न कपड़े और न तनख्वाह ही मिली। अफसरों को प्रायः दावतें मिलती थीं; इसलिए फौजों की रही सही शक्ति इन्हीं अफसरों पर अवलम्बित थी।

पांचवां परिच्छेद

संविधान का निर्माण

एक ऐतिहासिक सफलता : आम समझौते के फलस्वरूप सयुक्त राज्य अमरीका को एक सबसे अधिक प्रभावशाली एव व्यापक सविधान प्राप्त हुआ। यह एक ऐसा सविधान था जो ब्रिटेन के सविधान जैसा न होकर लिखित था, किन्तु जिसका राष्ट्र के साथ विकास होता गया। यह किस प्रकार अस्तित्व मे आया इसकी कहानी बडी मनोरजक है। ग्लेडस्टन का कथन है, "जिस प्रकार ब्रिटेन का सविधान सबसे अधिक लचीला है जो प्रगतिशील इतिहास के साथ बढता रहा है उसी प्रकार अमरीकी सविधान भी एक निश्चित अवधि मे मानव के मस्तिष्क एवं उद्देश्य का सबसे अधिक चमत्कारपूर्ण कार्य है।" वास्तव मे काफी हद तक यह भी समय की गति की देन है। लेकिन इसने आधुनिक समय के एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण परिपाटी मे सामान्य रूप धारण किया।

यह सम्भवत सौभाग्य की बात थी कि राज्यों ने क्रान्ति के अन्त के पूर्व संघीकरण के जिन नियमों को अपनाया वे स्पष्ट रूप से काफी त्रुटिपूर्ण थे। यदि उन्होंने सरकार के कुछ अधिक अच्छे ढाचे को प्रस्तुत किया होता तो त्रुटियों मे सुधार करने का प्रयत्न न किया गया होता और देश कई दशाब्दियो तक एक कमजोर विधान के अन्तर्गत काम करता रहता। लेकिन वे सभी प्रयत्न सम्पूर्ण रूप से असफल हो चुके थे इसलिए उन्हे त्याग दिया गया। चूंकि यह असफलता उनकी कमजोरी से उत्पन्न हुई थी इसलिए नया संविधान बहुत ही मजबूत बनाया गया था। यह भी सौभाग्य की बात थी कि अमरीकी मामले १७८६ मे बडी बुरी दशा को पहुंच गये थे जबकि एक गम्भीर व्यापारिक मन्दी व्याप्त थी। केवल एक स्पष्ट क्राति ही तमाम सदिग्ध अमरीकियों को शक्तिशाली नयी सरकार को स्वीकार करने के लिए प्रेरित कर सकी।

संघीय सरकार की निर्बलता : १७८६ मे भविष्य अन्धकारमय प्रतीत होता था। केवल अमरीकी राष्ट्र ही बिना किसी वास्तविक राष्ट्रीय शासन

प्रणाली के नहीं था, अपितु तेरह राज्य इतने नियत्रणहीन हो गये थे कि लोग उनमें परस्पर युद्ध की सम्भावना की बात करने लगे थे। वे राज्यो की सीमा रेखा के बारे मे झगड रहे थे—पेसिलवानिया और वर्मान्ट मे इसके ऊपर सिर-फुटोवल तक हो रही थी। वहा के न्यायालय ऐसे निर्णय दे रहे थे जो परस्पर-विरोधी थे। राष्ट्रीय सरकार को आवश्यकतानुसार तटकर लगाने और वाणिज्य नियमित करने के अधिकार प्राप्त नही थे। सरकार को राष्ट्रीय कार्यों के लिए कर लगाने का अधिकार होना चाहिए था, लेकिन यह भी उसे नही था। इस सरकार का विदेशी मामलो पर पूरा नियन्त्रण होना चाहिए लेकिन बहुत से राज्यो ने विदेशी राज्यो से अपने अलग समझौते करने प्रारम्भ कर दिये थे। आदिवासी सम्बधी मामलों मे राष्ट्र को पूर्ण अधिकार होना चाहिए था परन्तु बहुत से राज्य अपनी सुविधानुसार आदिवासियों की व्यवस्था कर रहे थे और जोर्जिया ने एक आदिवासी युद्ध का प्रारम्भ और अन्त स्वेच्छा से किया।

जब आन्तरिक गडबडी के कारण बडे बडे क्षेत्रो मे सम्पत्ति की सुरक्षा को खतरा पहुचने लगा तो शातिप्रिय मध्यम वर्ग सतर्क हो गया। जब १७८५-८६ मे मन्दी सबसे अधिक हो गयी तो जहा कहीं मामूली आमदनीवाले लोग थे उन्हें बडी कठिनाई हो गयी। सीमा के चारों तरफ पैसे की कमी पड गयी, बाजार खाली पडे हुए थे और खरीददारों की कमी के कारण गल्ला जमीन पर पडा सडता था। जनता मे मुद्रा की अपेक्षा सामानो मे ही विनिमय पुनः प्रारम्भ हो गया। ऋणी-समुदाय यह माग करने लगे कि राज्य की सरकारे उनकी फसल को खरीदने के लिए और ऋण चुकाने के लिए कागज के नोटों को छापें। उन्होने ऋण वसूली के लिए सरकारी स्वीकृति मागी और गल्ले तथा अनाज को कानूनी सिक्का बनाने की माग की। जनवरी १७८६ मे ग्रीनविच, मेसाचुसेट्स के निवेदन मे कहा गया कि प्रतिदिन वास्तविक मूल्य के तृतीयाश पर भूमि की बिक्री होती है, जानवर आधे मूल्य पर बिकते है और पिछले वर्षो का कर खेतों के सम्पूर्ण लगान के बराबर हो गया है। राजनीतिक सघर्ष ने अब ऋणी और साहूकार वर्गो के बीच युद्ध का रूप धारण कर लिया था। बहुत से राज्यों मे गरीब और अमीर के बीच का विरोध गम्भीर हो गया था। दक्षिणी करोलिना ने एक विचित्र घोषणा द्वारा गवर्नर रटलेज और दूसरे सम्पन्न लोगों की निन्दा की और उनको इस राज्य का निरकुश शासक, चाटुकार, नीच आदि कहा।

१७८६ मे सात राज्यों के विधान-मण्डलों ने कागज़ के नोट चालू किये। रोढ द्वीप मे उन्होंने ऐसे कानून जारी कर दिये जिनके द्वारा प्रत्येक व्यक्ति अपना कर्ज मूल्यहीन सिक्कों मे अदा कर सकता था। एक गीतकार ने लिखा था :

'दिवालिया लोग अपने साहूकारों का बड़े जोरों से पीछा करते थे। कर्जदारों से जान छुड़ाने का कोई चारा नहीं था।'

चूकि दूसरे राज्यो मे सिक्का कर्जदारो के लिए अधिकृत सिक्का था इसलिए कनेक्टीकट और मसाचुसेट्स ने भी अनिच्छापूर्वक प्रतिकार स्वरूप वैसे ही कानून लागू कर दिये। सारे मसाचुसेट्स और न्यू हेमिसफियर के दो विधान मण्डल, जो सम्पूर्ण उत्तरी न्यू इंग्लैण्ड पर प्रभुत्व रखते थे, कागज के सिक्के को चलाने मे असमर्थ रहे और वहाँ सशस्त्र विद्रोह प्रारम्भ हो गया। तत्कालीन मसाचुसेट्स का विधान बडा अनुदार था। इसमे मतदान योग्यता तथा पदाधिकार योग्यता के लिए सम्पत्ति विषयक कुछ प्रमुख सुरक्षाएँ रखी गयी थीं। अनुदार विधानमण्डल ने तदन्तर क्रातिकारी ऋण, जो कि अधिकतर सट्टेबाजो के पास था, चुकाने के लिए भारी कर लाद रखे थे। इस लिए एक कृषक क्राति उठ खड़ी होना कोई आश्चर्य की बात नही थी। जुलाई १७८६ मे विधान मण्डल के स्थगन ने विद्रोह की सूचना दी जो बकर हिल के नेतृत्व मे सम्पन्न हुआ और इतिहास मे डेनियल शेज के विद्रोह के नाम से विख्यात है।

गवर्नर ब्रोडविन, जनरल लिंकन तथा कुछ दूसरे धनी लोगों—जिन्होंने सक्रमण काल मे अपना धनदान किया—के अन्तर्गत राज्य का बड़े उत्साहपूर्वक सचालन हुआ और शेज के प्रयाण को रोकना और उसकी सेना को तितर-बितर करना सरल हो गया जबकि उसने स्प्रिंगफील्ड में राष्ट्रीय शस्त्रागार को लूटने का प्रयत्न किया। लेकिन इस अल्पकालीन युद्ध ने सपूर्ण राष्ट्र मे अनुदारवादियो के वर्ग को गम्भीर रूप से सचेत कर दिया। वह उग्र वर्ग की ओर से क्रातिकारी आदोलन की भविष्यवाणी सा प्रतीत होता था। जनरल नौक्स ने वाशिंगटन को लिखा कि न्यू इग्लैण्ड में दस या पन्द्रह हजार निराश व्यक्ति थे जिनको समतावादी उग्र विचारधारा वाले कहा जा सकता था। उनका मत यह था कि संयुक्त राज्य अमरीका की सम्पत्ति ब्रिटेन के पंजे से सभी व्यक्तियों के सगठित प्रयत्न से छुडायी गयी है इसलिए वह सब की समान रूप से सम्पत्ति होनी चाहिए। उन्होंने न्यू इंग्लैण्ड मे 'सम्पत्ति तथा सिद्धान्त-प्रिय प्रत्येक व्यक्ति को संकट मे डाल दिया।' वाशिगटन ने, जिन्होंने सोचा था कि मसाचुसेट्स के अधिकारी-गण शायद कही अधिक सख्त रहे हो,

स्पष्ट लिखा कि 'हर राज्य मे विस्फोटक तत्व रहते है जो एक चिनगारी से ही धधक सकते हैं।' यह सामान्य दृष्टिकोण था और तर्कपूर्ण निष्कर्ष यह था कि राज्यों के विद्रोह को दबाने के लिए एक शक्तिशाली राष्ट्रीय सरकार की आवश्यकता थी। मसाचुसेट्स के स्टीफेन्सन हिगिन्सन ने नथानील डेन को लिखा था, "यह बात मेरे विचार से स्पष्ट है कि हम अपनी आधुनिक प्रणाली के अन्तर्गत दीर्घकाल तक कायम नही रह सकते और जब तक हम किसी न किसी साधन द्वारा सघ के लिए अधिक शक्ति उपलब्ध नहीं कर लेते, विद्रोही फिर अपना सर ऊचा उठायेंगे और हमसे शासन की बागडोर छीन लेगे। हम निश्चय रूप से दलदल मे फेक दिये जायेंगे—परिणाम होगा अधिक रक्तपात द्वारा एक या अधिक सरकारों की स्थापना।"

राज्य सरकारो के झगडो ने परस्पर समुदायों मे पहिले बडी गडबडी उत्पन्न कर दी थी जिनकी जीविका कुछ हद तक सहयोग पर निर्भर करती थी। व्यापारी समान मुद्रा के अभाव के कारण चिंतित थे। उन्हे एक दर्जन राष्ट्रों द्वारा प्रचलित विचित्र कागजी मुद्राओं व सिक्कों को उपयोग मे लाना पड़ता था जिनमे अधिकतर चपटे, वजन मे कम और जिनमे जाली टुकडों और मूर्खतापूर्ण विभिन्न प्रकार के प्रान्तीय एव राष्ट्रीय कागज की हुडिया होती थीं जिनका मूल्य बडी तेजी से घट रहा था। अतः यह स्पष्ट था कि एक सर्वमान्य राष्ट्रीय मुद्रा की विशेष आवश्यकता थी। अमरीकी सामान विदेशी बाजारों मे बेचने का प्रयत्न करनेवाले सभी निर्यातकर्ता सुरक्षा की कमी के कारण क्षोभ प्रकट करते थे। अशक्त महाद्वीपी काग्रेस को ब्रिटिश साम्राज्य के साथ पुराने व्यापारिक सम्बन्ध पुनः स्थापित करने मे कठिनाई प्रतीत होती थी और मुख्य रूप से वेस्ट इण्डीज के साथ। स्पेन ने भी इन दिनों अमरीकी व्यापार के लिए मिस्सीसिपी का मुहाना बन्द कर रखा था। देश मे भी ऐसे कोई साधन उपलब्ध नहीं थे जिनके द्वारा व्यापारी अपना धन वसूल करने के विषय मे निश्चित हो सकते। एक न्यूयार्कनिवासी यदि कर्ज वसूली के लिए पेसिलवानिया मे मुकदमा दायर करता तो उसे पेसिलवानिया के न्यायालय एवं जूरी की कृपा पर निर्भर रहना पडता था जो स्वभावतः अपने साथी नागरिको का पक्ष लिया करते थे। तेजी से बढता हुआ अमरीकी उत्पादकों का समुदाय यूरोप की मूल्य प्रतियोगिता पर निर्भर करता था।

लेकिन सबसे अधिक बुराइया तब उत्पन्न हुई जब कि राज्यों के बीच पारस्परिक व्यापारिक आदान-प्रदान मे जान-बूझ कर अड़चने उत्पन्न की जाने

लगी। अधिकतर राज्यों ने यूरोपीय सामान की भरती को रोकने तथा राजस्व की प्राप्ति के लिए सभी आयातो पर तट कर लगा दिये। इस प्रक्रिया में तीन अवस्थाएं उत्पन्न हुई। युद्ध के समय केवल वर्जीनिया ने ही काफी सामानों पर कर लगाया था क्योंकि उसके आधीन का अधिकाश आयात वाणिज्य था। वह तम्बाकू का निर्यात तथा विभिन्न पदार्थों का आयात करता था इसलिए वह कराधान की व्यवस्था करने मे समर्थ भी था। शान्ति के बाद प्रथम तीन वर्षों में न्यू जर्सी को छोडकर सभी राज्यो ने आयात पर कर लगाया। लेकिन यह कराधान केवल राजस्व के लिए था, संरक्षण के लिए नही। अन्त मे १७८५ तक न्यूइंग्लैण्ड तथा अधिकाश मध्यवर्ती राज्यो ने उज्ज्वल भविष्य वाले गृह-उद्योगों का विकास कर लिया था और उनको भी यूरोपीय प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा था; इसलिए उन्होने सरक्षणात्मक उप-कर लगाये।

इसके बाद शीघ्र ही एक अन्तर-राज्यीय बदला लेने की भावना जागृत हो गयी। दक्षिणी राज्यों तथा कुछ उत्तरी राज्यो के पास बहुत कम उत्पादक थे और उनको आयात किये हुए सामानों की आवश्यकता थी। योरोप के सामानों के लिए डेलावेर और न्यू जर्सी ने स्वतत्र बन्दरगाहो की स्थापना कर दी। कनेक्टीकट ने भी योरोपीय सामानों को सीधा मंगाने की दिशा मे प्रोत्साहन देने के लिए कानून पास कर दिये। जहाजो के आवागमन पर भी नियन्त्रण लगा दिये गये। उदाहरण के तौर पर, न्यू जर्सी के लोग न्यूयार्क में सब्जिया बेचने के लिए बिना भारी रकम चुकाये हडसन को पार नही कर सकते थे। इस प्रकार स्वभाविक रूप से राज्यों मे परस्पर कटु भावनाएं बढने लगी। उत्तरी करोलिना के लोगों ने वर्जीनिया और दक्षिण करोलिना की निन्दा की और अपने राज्य की एक ऐसे पीपे से तुलना की जिसके दोनों किनारों पर छेद हो। ओलीवर एल्सवर्थ ने लिखा, "छोटा कनेक्टीकट एक मजबूत गधे की तरह है जो दो भारों से दबा जा रहा है।"

व्यापारियों और उत्पादको के अलावा साहूकारों के एक बड़े समुदाय ने एक ऐसी राष्ट्रीय सत्ता के अभाव की भर्त्सना की जो उग्रवादी विधायकों की 'समता' करने की प्रवृत्ति पर प्रभावशाली तरीके से नियन्त्रण लगा सके। इन लोगो में वे साहूकार और ऋणदाता भी शामिल थे जो राज्य के -'यथावत्' कानूनों तथा धन देने सम्बन्धी मामलो से परेशान थे। इनमे कुछ अमरीकियों को अंग्रेजों के पावनो को भी चुकाना था और कुछ विधान-मण्डलों पर उग्रवादी वर्गों का नियन्त्रण होने के फलस्वरूप अदालतों ने ब्रिटेन को दिये जानेवाले

दावों के भुगतान को अयोग्य ठहराया था। इसके अलावा इस असन्तुष्ट वर्ग मे ऐसे अनेक अधिकारी और सैनिक भी थे जिनको उनकी क्रान्तकारी सेवाओ के बदले जमीन पर कब्जा करने के अधिकारपत्र प्राप्त हुए थे। भूमि के सट्टेबाज भी अप्रसन्न थे जिन्होंने सैनिको की जमीनो मे या जप्त भूमियों मे बड़े विस्तारो को सस्ती कीमतों पर खरीद लिया था और जो उनको फिरसे बेचने के इच्छुक थे। ये भूमिधारी चाहते थे कि एक सुदृढ राष्ट्रीय सरकार की स्थापना की जाय जो सीमाओं की आदिवासियों से रक्षा कर सके, नये आबाद विस्तारो मे शान्तिव्यवस्था स्थापित कर सके और उनके अधिकारों की रक्षा कर सके।

और अन्त मे सघीय और राज्य की सिक्यूरिटियो को धारण करनेवाली एक महत्वपूर्ण संस्था ने तत्कालीन अव्यवस्थित अर्थव्यवस्था और करो के प्रति आम बचाव की भावना के प्रति रोष व्यक्त किया। सघीकरण के नियमों के अन्तर्गत गत १४ महीनो मे आन्तरिक और बाहरी ऋण पर लगभग १४,०००,००० डालर ब्याज हो गया था जबकि राष्ट्रीय राजस्व ४००,००० डालर ही था। १७८५ में जेम्स वारेन को लिखते हुए वाशिंगटन ने स्थिति का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार लिखा था : 'सरकार के पहिये भार से दब गये हैं।'

उत्तर-पश्चिमी अध्यादेश : संघीकरण सरकार को निस्सन्देह एक बडी सफलता प्राप्त हुई थी। अलेघेनीज के पश्चिम की निर्जन जमीनो के बारे मे (जहा पर राज्यों ने सामान्य सरकार के अपने दावो को समर्पित कर दिया था) उसने एक बुद्धिमत्तापूर्ण योजना को लागू किया जिसने सयुक्त राज्य अमरीका के निर्माण की दिशा मे काफी योग दिया। सरकार ने उन जमीनों को एक व्यवस्थित और विकासशील आबादी के लिए खोल दिया; नियमित प्रक्रियाओ द्वारा स्वशासन विकसित करने की दिशा में वहा की आबादी को प्रोत्साहित किया; और अन्त मे मूल तेरह राज्यो की सार्वभौमिक सत्ता के समान ही एक नये राष्ट्र के निर्माण की व्यवस्था की गयी। यह योजना उत्तर-पश्चिमी अध्यादेश (१७८७) मे निहित थी, जिसके अन्तर्गत ओहियो का उत्तरी क्षेत्र था। उसमे अन्त मे तीन से पाच राज्यो की स्थापना करने का प्रबन्ध था। दास-प्रथा का वहा सदा के लिए निषेध था। सरकार की तीन नियमित अवस्थाओं की व्यवस्था की गयी। काग्रेस पहिले एक "प्रदेश" (टेरीटरी) की स्थापना करेगी जिसके लिए एक गवर्नर और न्यायाधीशो की नियुक्तिया की जायेगी और कानून बनायेगी जिन पर काग्रेस को निषेधाधिकार प्रयोग करने का अधिकार

रहेगा। बाद मे जब आबादी ५ हजार तक पहुंच जायेगी तब वहा की जनता दो सदनो का विधान मण्डल बना सकेगी जिसमे निम्न सदन के सदस्यों का वह स्वयं चुनाव करेगी और अन्त मे जब "प्रदेश" की आबादी ६० हजार हो जायेगी उसे एक सम्पूर्ण राज्य बना दिया जायगा। इस प्रकार से सयुक्त राज्य अमरीका ने अपनी "औपनिवेशिक समस्या" का हल किया। जैसे जैसे राष्ट्र का विकास प्रशान्त महासागर की ओर होता गया, उसने इसी पद्धति को अपनाया और इसके फलस्वरूप ४८ राज्यो की स्थापना हुई।

लेकिन फिर भी अन्य मामलो मे सघ को निराशाओ का सामना करना पडा। वाशिगटन ने लिखा था कि राज्यो का आपसी सबध केवल बालू की नीव सा ही था। एक दूसरे पर्यवेक्षक ने घोषित किया, "हमारा असन्तोष गृहयुद्ध की दिशा मे पनप रहा है।" एक श्रेष्ठतर सरकारी तंत्र की स्थापना के उद्देश्य के लिए कांग्रेस मे योग्य व्यक्ति बहुत कम थे, और उसकी इज्जत भी घट गई थी। थामस पेन ने काफी पहिले सुझाव दिया था, "एक प्रायद्वीप प्राधिकार पत्र तैयार करने के लिए एक प्रायद्वीपीय अधिवेशन आयोजित किया जाना चाहिए।" कुछ दूरदर्शी नेताओ ने, जो व्यावसायिक प्रश्नो पर विचार करने के लिए एकत्रित हुए थे, इस प्रश्न पर भी प्रकाश डाला।

अधिवेशन का आमन्त्रण : सविधानिक अधिवेशन की प्राथमिक तैयारिया एक सुपरिचित कहानी है। विचारशील व्यक्ति जब राष्ट्रीय निर्बलता तथा राज्यो की कटुता से परेशान थे उस समय एक विशेष वाणिज्यिक समस्या ध्यान आकर्षित कर रही थी। मेरीलैण्ड की पूरी पोटोमक नदी पर सार्वभौमिकता थी जहा वह दक्षिणी किनारे से वर्जीनिया को विभाजित करती थी। वर्जीनिया के लोगो को भय था कि उस नदी मे स्वतंत्र रूप से नौकानयन करने मे मेरीलैण्ड हस्तक्षेप करेगा; और १७८५ मे वर्जीनिया तथा मेरीलैण्ड के प्रतिनिधियो ने माउन्ट वर्नन मे जोर्ज वाशिगटन से भेंट की और पोटोमेक तथा चिसापेक की खाड़ी मे नौकानयन सम्बन्धी प्रश्न पर विचार-विमर्श किया। मेडीसन को, जो वहा उपस्थित थे, वाणिज्य की आम अवस्था पर काफी असन्तोष हुआ और उन्होंने यह मत व्यक्त किया कि राज्यो को अपने अधिकारो से कांग्रेस को शक्ति प्रदान करने के उद्देश्य से एक वृहत्तर सम्मेलन आयोजित करना चाहिए। १७८६ मे इस प्रकार का सम्मेलन एनापोलिस मे सम्पन्न हुआ, जहा पर केवल पाच राज्यों के प्रतिनिधि उपस्थित हुए और वह बिलकुल असफल प्रतीत हुआ।

लेकिन सौभाग्य से उनमें से एक प्रतिनिधि उत्साही अलेक्जेण्डर हेमिल्टन थे, जिन्होंने असफलता को सफलता में परिवर्तित कर दिया। उन्होंने सभासदों को इस बात पर राजी करा लिया कि वे राज्यों से कमिश्नरों की नियुक्ति के लिए कहें जिनकी बैठक संयुक्त राज्य अमरीका की स्थिति पर विचार करने के लिए आगामी मई में फिलाडेल्फिया में आयोजित की जाय और 'उस बैठक में इस प्रकार की व्यवस्थाएं की जायें जो सब की आवश्यकतानुसार संघीय सरकार के संविधान के लिए पर्याप्त हो।' इस प्रभावशाली कदम पर पहिले तो प्रायद्वीपीय कांग्रेस खिन्न हो उठी लेकिन उसका प्रतिवाद उस समय समाप्त हो गया जब उसने सुना कि वर्जीनिया ने वाशिंगटन को प्रतिनिधि के रूप में चुना है। कांग्रेस ने भी स्वीकृति प्रदान कर दी और मई १७८७ के दूसरे सोमवार को बैठक की तारीख निर्धारित कर दी गयी। पतझड और शरद् में रोड द्वीप को छोड़ सभी राज्यों ने अपने प्रतिनिधियों को चुन लिया।

इन प्रतिनिधियों को राज्य के विधान-मण्डलों ने चुना था। कुछ विधान मण्डलों पर उग्र ग्रामीण वर्गों का आधिपत्य था और वे सभी राज्य की सार्वभौमिकता के प्रबल समर्थक थे। फिर भी अधिकांश विधान-मण्डलों ने अपने अपने प्रतिनिधियों को निर्देश दे दिया था कि वे एक सुदृढ़ राष्ट्रीय सरकार की स्थापना करें और फिलाडेलफिया अधिवेशन में ऐसे व्यक्तियों को भेजा जो अपने राजनैतिक दर्शन में अत्यन्त अनुदार और अपने दृष्टिकोणों में कट्टर राष्ट्रीय थे। इसका आंशिक कारण यह भी था कि अभी तक लोगों में वर्तमान दलभाव जाग्रत नहीं हुआ था, दूसरा कारण यह था कि नये वाणिज्य नियमन पर दिये जानेवाले महत्व के फलस्वरूप यह सुझाव दिया गया था कि इन मामलों में निपुण लोगों को ही चुना जाय, और तीसरा कारण यह था कि वर्जीनिया द्वारा वाशिंगटन को प्रतिनिधि चुनने की शीघ्र घोषणा के फलस्वरूप अन्य राज्यों ने भी सोचा कि दृढ़ और गम्भीर व्यक्तियों का ही चुनाव किया जाय।

मई के आरम्भ में फिलाडेल्फिया में इक्के-दुक्के प्रतिनिधि आते आरम्भ हो गये। वाशिंगटन विशेष रूप से निश्चित समय पर १३ तारीख को आये। वे काले मखमल के वस्त्र पहने हुए तथा एक तलवार लटकाये हुए थे। सभी लोगों का ध्यान उनकी ओर आकर्षित हुआ। १६ तारीख को बेन्जामिन फ्रैंकलिन ने शहर में उपस्थित सभी प्रतिनिधियों को एक चिर-स्मरणीय भोज दिया। उस दिन बहुत पुरानी मदिरा लोगों को पीने को मिली। उनके

अतिथियों मे वर्जीनिया के जेम्स मेडिसन भी शामिल थे जो कद में छोटे लेकिन राजनैतिक स्थितियो के विश्लेषण मे प्रकाड पण्डित थे। वे प्रिन्स्टन के स्नातक, वकील और बागान मालिक भी थे। उन्होंने अपना काफी समय अपने श्रेष्ठ पुस्तकालय मे ही व्यतीत किया था। अधिवेशन में उपस्थित विद्वान प्रतिनिधियों मे उनका क्रम फ्रैंकलिन के बाद ही था। वे एक अत्यन्त परिश्रमी और रचनात्मक प्रतिनिधि प्रमाणित हुए। दूसरे अतिथि थे ६५ वर्षीय जार्ज विथ, जिन्होंने जेफ़रसन, मेडीसन, जान मार्शल और वर्जीनिया के वकील सघ के अनेक प्रतिभाशाली लोगों को पढ़ाया था। तीसरे प्रमुख अतिथि थे वर्जीनिया के गवर्नर एडमण्ड रेण्डोल्फ जो लगभग ७ हजार एकड़ भूमि तथा २०० गुलामो के मालिक थे।

पेसिलवानिया के प्रतिनिधियो मे धनी बैंकर रोबर्ट मारिस थे जिन्होंने क्रान्ति के सकटकालीन दिनों मे वाशिगटन की सेनाओ को मैदान मे बनाये रखा था। अधिवेशन अवधि में मारिस के सुन्दर भवन मे ही वाशिगटन ठहरे थे। गौवेरनर मारिस भी उपस्थित थे जो न्यूयार्क के एक धनी परिवार के पुत्र थे और इस समय वे फिलाडेल्फिया के एक प्रमुख वकील और भूमि के व्यवसायी थे रूखे स्वभाव वाले इंगरसल भी उपस्थित थे। इन्होंने मिडिल टेम्पिल मे अध्ययन किया था और वे पेसिलवानिया के सर्वश्रेष्ठ वकीलो मे गिने जाते थे। इसके अलावा अक्खड स्वभाव वाले जेम्स विल्सन थे। इनका जन्म और शिक्षा-दीक्षा स्काटलैण्ड मे हुई थी। अमरीका मे वे एक अत्यधिक अध्ययनशील विधि-वेत्ता माने जाते थे। १७८७ मे दुनिया मे इतने बुद्धिमान और चरित्रवान व्यक्तियों का किसी भी भोज मे सम्मिलित होना बड़ा ही दुर्लभ था और पुरानी दुनिया का कोई भी समुदाय वाशिगटन जैसे गम्भीर और सम्मानित और फ्रेंकलिन जैसे बुद्धिमान और उदार व्यक्तियो का दावा नहीं कर सकता था। फ्रेंकलिन के बारे मे उस समय के एक लेखक ने लिखा था: 'उनके व्यक्तित्व से अनवरत स्वाधीनता और प्रसन्नता टपकती थी।'

यह ध्यान देने की बात है कि क्रान्ति का सूत्रपात और उसमे सक्रिय रूप से भाग लेनेवाले कुछ लोग इस अधिवेशन के प्रतिनिधि नही थे। जेफरसन फ्रान्स मे थे, पेट्रिक हेनरी ने चुनाव अस्वीकार कर दिया था, जान आदम्स इग्लैण्ड के मिनिस्टर थे; और टाम पेन, साम एडम्स और क्रिस्टोफर गेडस्डेन जैसे क्रान्तिकारियों को चुना नहीं गया था। सक्षेप में उग्र विचारधारा वाले व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व पर्याप्त रूप से नही किया गया था। कुछ इतिहासकारों

ने इस बात पर अधिक महत्व दिया है कि अधिकाश प्रतिनिधि सम्पन्न व्यक्ति थे और उनके पास प्रायद्वीपीय या राज्य की सिक्यूरिटिया थीं। लेकिन यह बात ध्यान देने योग्य है कि अमरीका की अधिकाश जनता सम्पन्न और मध्यम वर्ग की थी। उस समय अमरीका मे अत्यंत सम्पन्न बहुत थोडे और अत्यन्त निर्धन कोई नहीं था।

अधिवेशन का कार्य : इस अधिवेशन ने वास्तव मे एक अद्वितीय विचारशील सस्था का रूप धारण किया। प्रतिनिधियों के बारे मे यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि प्रत्येक राज्य को उसकी इच्छानुसार प्रतिनिधियो को भेजने की अनुमति प्रदान की गयी थी। प्रत्येक राज्य ने एक घटक के रूप में मतदान किया था। लेकिन खर्चे की दृष्टि से अधिकाश राज्यो ने कम सख्या के ही प्रतिनिधि मण्डलों को भेजा। अधिवेशन मे कुल ५५ व्यक्तियों ने भाग लिया; कुछ लोग बहुत थोड़े ही समय के लिए आये थे; और अन्त मे केवल ३९ प्रतिनिधि ही उपस्थित थे। कुछ लोग, जिसमे वाशिंगटन भी सम्मिलित थे, बहस मे स्वभावतः शान्त रहे। प्रतिनिधियो मे आधे कालेज के छात्र थे और वकीलों का भारी बहुमत था और इसीलिए उन्होने सक्षेप मे और अच्छी तरह अपने विचारो को व्यक्त किया। बहसों की मौखिक रिपोर्टों का सकलन नहीं किया गया था और मेडिसन द्वारा तथा अन्य पत्रिकाओ मे प्रकाशित विवरणों मे बहुत सी अनावश्यक बातो की काटछाट कर दी गयी थी। लेकिन जो भी व्यक्ति इन सक्षिप्त विवरणो को पढ़ेगा वह अधिकाश भाषणो के तर्क से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेगा। बहस मे कई बातो को गुप्त रखने के नियम लागू किये गये थे जिसका अधिवेशन ने बडी सख्ती से पालन किया। प्रचार के जरिये मतभेदों को बढा-चढा कर कहा जा सकता था। प्रचार की भावना से प्रतिनिधिगण श्रोताओ या समाचारपत्रो के लिए भाषण दे सकते थे, और इससे उन पर अपने मतदाताओ से भी दबाव पड सकता था। फिलाडेल्फिया की भद्र जनता की इस बात के लिए तारीफ करना चाहिए कि उसने अधिवेशन की कार्रवाही के बारे मे अधिक उत्सुकता नहीं दिखाई। एक बार फ्रैंकलिन ने एक भोज की मेज से अपने मित्रो को दो मुंहवाले साप की एक पुरानी गाथा सुनाई जो भूखों मर गया क्योंकि उसके दोनों मुह इस बात पर राजी नहीं हुए कि उसको पेड के किस ओर जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वे इस सम्बन्ध मे अधिवेशन के एक प्रसग का उल्लेख कर सकते हैं लेकिन उनके

मित्रों ने उनको बहस-संबंधी मुद्दो को गुप्त रखने सम्बन्धी नियम का स्मरण दिलाया और उनको वैसा कहने से रोक दिया।

आरम्भ मे प्रतिनिधि-गण इस बात पर राज़ी हो गये कि वे संघीकरण के नियमों में सशोधन नही करेंगे बल्कि एक सम्पूर्ण नया संविधान लिखेंगे। इस निर्णय मे वे अपने अधिकारो से भी बढ़ गये थे। प्रायद्वीपीय काग्रेस ने अधिवेशन को 'कोनफेडरेशन के नियमों मे सशोधन करने के ही एक मात्र स्पष्ट उद्देश्य से' आमन्त्रित किया था। लेकिन जैसा कि मेडिसन ने बाद मे लिखा कि प्रतिनिधियो ने 'अपने देश के प्रति पौरुषयुक्त विश्वास व्यक्त करते हुए इन नियमो को एक तरफ रख दिया और नयी सरकार की रचना की दिशा मे अग्रसर हो गये।' हेमिल्टन के कथनानुसार यह एक क्रान्तिकारी कदम था और विख्यात विद्वान जान डब्ल्यू बर्गेस ने बाद में कहा कि यदि नेपोलियन ने यह कार्य किया होता तो उससे विद्रोह हो जाता; लेकिन हमको यह बात ध्यान मे रखनी चाहिए कि अनेक राज्यों ने अपने प्रतिनिधियो को विशेष रूप से निर्देश दिया था कि वे एक इस प्रकार के संघ की स्थापना करे जो सभी सकट-कालीन आवश्यकताओं को झेल सके।

अधिवेशन के कार्य का उल्लेख करते हुए यह आवश्यक है कि कुछ महत्व-पूर्ण बातो पर प्रकाश डाला जाय। प्रतिनिधियों को यह बात मालूम थी कि एक जटिल व्यवस्था की स्थापना करना है और साधारण स्तर की सरकार की स्थापना पर्याप्त नहीं होगी। इसलिए उन्होंने दो विभिन्न अधिकारो पर आसानी से समझौता कर लिया, ये थे स्थानीय नियन्त्रण अधिकार, जिनका उपयोग तेरह-अर्द्ध-स्वाधीन राज्य पहिले से ही कर रहे थे, तथा हाल ही मे स्थापित नयी केन्द्रीय सरकार के अधिकार। इस समझौते का आधार केवल ब्रिटिश साम्राज्य मे उपलब्ध होता है। १७६३ के पहिले जो साम्राज्य विद्यमान था वह व्यावहारिक रूप से और उद्देश्यो में एक संघीय पद्धति पर आधारित था जिसमे केन्द्रीय और स्थानीय अधिकारियो में प्रशासन के अधिकारों का विभाजन था। लेकिन इस समय तक स्थापित अन्य सघो के अन्तर्गत बिना अपवाद के विस्तार छोटा था; उनका आपसी सम्बन्ध भी ढीला था और वे दीर्घकाल तक सफल भी नही हो सके थे। जेम्स मेडीसन तथा कई अन्य लोगो ने सामान्य रूप से सरकारो के बारे मे और विशेष रूप से यूनानी गणतंत्रों तथा डच संघों के बारे में अध्ययन किया था। इसके अलावा भी अधिकाश प्रतिनिधियों का राजनैतिक सिद्धान्तों के बारे मे अच्छा अध्ययन था। इसलिए यह सिद्धान्त स्वीकार किया गया कि

राष्ट्रीय सरकार के कार्यों एवं अधिकारों की सावधानीपूर्वक व्याख्या की जाय और अन्य कार्यों तथा अधिकारों को राज्य में निहित माना जाय। चूंकि राष्ट्रीय सार्वभौमिकता के अधिकार नये थे इसलिए उसके सामान्य एवं निहित अधिकारों को स्पष्ट करना आवश्यक था।

अन्तिम स्वरूप का निर्धारण : अधिकार एवं कार्यों की व्याख्या के साथ राष्ट्रीय तंत्र के निर्माण का कार्य भी जारी रहा। इस रचना-कार्य का आधार भी एक सामान्य सिद्धान्त पर आधारित था। यह निश्चित किया गया कि सरकार की तीन विभिन्न शाखाओं की स्थापना की जाय जो समान अधिकार और एक दूसरे से सम्बन्धित हों। ये तीन शाखाएं थीं : वैधानिक, कार्यकारी और न्यायिक अधिकारों की। इनको इस प्रकार व्यवस्थित और सम्बन्धित करना था कि उनका कार्य एक साथ चलता रहे लेकिन वह इस प्रकार सुसन्तुलित हो कि कोई भी एक दूसरे पर हावी न हो जाय। अधिकारों को सन्तुलित रखने के इस १८ वीं शताब्दी के सिद्धान्त को राजनीति में 'न्यूटन का सिद्धान्त' कहते हैं। इस सिद्धान्त को स्वाभाविक रूप से औपनिवेशिक अनुभव पर आधारित किया गया था और उसे लाक और मान्टेस्क्यू की कृतियों से पुष्टि मिली थी जिससे कि अधिकांश प्रतिनिधि परिचित थे। अमरीकी परिभाषा के अन्तर्गत एक निरकुश सरकार की सत्ता वह मानी जाती थी जहां पर एक ही वर्ग प्रमुख रूप से हावी होता था। इसलिए यह स्वाभाविक था कि औपनिवेशिक विधान-मण्डलों तथा ब्रिटिश पार्लियामेंट की तरह वैधानिक शाखा को दो सदनों का बनाया जाय। प्रत्येक व्यक्ति केवल एक ही कार्यकारिणी में विश्वास नहीं रखता था· लेकिन बहुमुखी कार्यकारिणी के समर्थक, उपनिवेशों और राज्यों के सामान्य उदाहरण के आकर्षण से, शान्त थे।

दो शाखाओं के एक विधान-मण्डल की स्थापना सम्बन्धी निर्णय ने अधिवेशन में छोटे और बड़े राज्यों के अधिकारों के बारे में पैदा हुए विवाद को आसानी से हल कर दिया। छोटे राज्यों ने कहा 'कि संघ के अन्तर्गत उनको बडे राज्यों के समान ही अधिकार प्रदान किये जायं; कनेक्टीकट के छोटे राज्य पर विशाल न्यूयार्क का या छोटे मेरीलैण्ड पर विशाल वर्जीनिया का अतिक्रमण न किया जाय। लेकिन बड़े राज्यों ने कहा कि अधिकारों को राज्य के आकार, आबादी और समृद्धि के आधार पर निर्धारित किया जाय।

अन्त में समझौते में यह स्वीकार किया गया कि छोटे राज्यों को सीनेट में

बड़े राज्यो के साथ समान प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाय लेकिन प्रतिनिधि-सदन में प्रतिनिधित्व को आबादी के आधार पर निर्धारित किया जाय। कार्यकारिणी के प्रश्न पर चुनाव के तरीके को निर्धारित करने मे सबसे बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ा। प्रश्न था कि क्या राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव कांग्रेस द्वारा हो? यदि ऐसा किया जाता है तो राष्ट्राध्यक्ष वैधानिक शाखा पर आश्रित हो जायंगे और इस तरह से अधिकारो का असन्तुलन हो जायगा। तो फिर क्या उनको आम चुनाव से चुना जाय? सयुक्त राज्य अमरीका की जनता विस्तृत क्षेत्रों मे फैली हुई थी और संचार-वहन की व्यवस्था भी पर्याप्त नहीं थी। इसलिए उनके लिए एक या कुछ उम्मीदवारों पर ध्यान केन्द्रित करना कठिन था; और लोग काफी लोगो को चुनेंगे और इस प्रकार से किसी एक व्यक्ति की अधिकांश मतदाताओं के पास पहुंच नही हो सकेगी। इसलिए अन्त मे यह निश्चित किया गया कि एक चुनाव कक्ष की स्थापना की जाय जिसमे प्रत्येक राज्य के उतने ही चुनाव-कर्ता हो जितने कि उसके सिनेटर और प्रतिनिधि हो। लेकिन यह पद्धति उसकी रचना करनेवाले की कल्पनानुसार कार्यान्वित नही हुई क्योंकि उन्होंने दल-विकास की संभावना पर विचार नहीं किया था जिसका आरम्भ शीघ्र ही हुआ। संघीय न्यायपालिका के बारे मे निश्चय किया गया कि सीनेट की सलाह और स्वीकृति के अनुसार न्यायाधीशो की नियुक्ति उनके अच्छे बर्ताव जारी रहने तक जीवन भर के लिए राष्ट्राध्यक्ष द्वारा की जाय।

सविधान के निर्माताओ की दूरदर्शिता तथा बुद्धिमानी से हम चकित रह जाते है। उन्होने मानव द्वारा रचित एक अत्यधिक जटिल सरकार की स्थापना की और उसकी शान एवं सुरक्षा की भी व्यवस्था की। प्रत्येक तीन शाखाएं स्वाधीन और समन्वित होते हुए भी उन पर परस्पर एक दूसरे का नियन्त्रण रहता है। काग्रेस द्वारा पारित नियम तब तक कानून नही बनते जब तक कि उन पर राष्ट्राध्यक्ष की स्वीकृति प्राप्त नही हो जाती; इसके विपरीत राष्ट्राध्यक्ष को अपनी अनेक नियुक्तियो व सभी सन्धियो को सीनेट को प्रस्तुत करना आवश्यक होता है और काग्रेस उस पर लाछन लगा कर उसे पदच्युत भी कर सकती है। 'कानून तथा सविधान के अन्तर्गत उत्पन्न होनेवाले सभी मामलों की सुनवाई न्यायपालिका करेगी और इसलिए उसे मूलभूत तथा अभिलिखित कानूनों पर मत व्यक्त करने का अधिकार है। लेकिन न्यायपालिका की नियुक्ति राष्ट्राध्यक्ष द्वारा की जाती है और उसकी पुष्टि सीनेट द्वारा होती है तथा उनकी भी आलोचना काग्रेस द्वारा की जा सकती है। चूंकि राज्य विधान मण्डलों

द्वारा सिनेटरों की नियुक्ति छः वर्षों के लिए की जाती है, राष्ट्राध्यक्ष की नियुक्ति चुनाव कक्ष द्वारा की जाती है और चूकि न्यायाधीशों की नियुक्ति की जाती है इसलिए सरकार का कोई भी अंग, कांग्रेस के निचले सदन को छोड कर, सीधे सार्वजनिक प्रभाव के अन्तर्गत नहीं आ सकता है। इसके अलावा दो वर्षों से लेकर जीवन पर्यन्त इतनी विभिन्न प्रकार की अवधियों के लिए सरकारी अधिकारियों को नियुक्त किया जाता है कि क्रान्ति के बिना इन व्यक्तियों का सम्पूर्णतया हटाना सभव नहीं है।'

कुछ लोगों ने इस अधिवेशन को एक राजनैतिक सस्था के स्थान पर उसे एक आर्थिक सस्था की सज्ञा प्रदान की और घोषित किया कि उसके प्रमुख निर्णयों ने जायदाद के मालिको, व्यापारी वर्ग और साहूकारो के 'वर्ग' का पक्ष लिया है। लेकिन यहा हमको एक बात फिर ध्यान मे रखना चाहिए कि १७८७ मे अमरीका लगभग सभी किसानों, बागान मालिकों, दूकानदारों, व्यवसायी व्यक्तियों की भूमि थी जहा सभी लोग सज्जन थे और वर्ग सीमाए कम और अस्पष्ट थी, और इन सुरक्षात्मक कदमो ने सभी को लाभ पहुंचाया। इसलिए भले ही इस अधिवेशन का स्वरूप कुछ हद तक आर्थिक था भी लेकिन उसे बहुत बढ़ा चढ़ा कर बताया गया है।

जिन निर्णयों के साथ अधिवेशन ने यह सुनिश्चित किया था कि सघीय सरकार शान्ति स्थापित करने तथा जायदाद को सुरक्षित रखने में सफल होगी, अन्य मामलों मे बडे खतरनाक तरीके से विस्फोटात्मक थी। लेकिन अधिकाश निर्णयो को सक्षिप्त और शान्त बहस के बाद ही स्वीकार कर लिया गया था। सघीय सरकार को सम्पूर्ण और खुले रूप से कर लगाने के अधिकार प्रदान कर दिये गये थे और इस प्रकार से दीर्घकालीन कर्ज को चुकाने, अपनी साख स्थापित करने और सामान्य जनकल्याण के लिए रकम एकत्रित करने की व्यवस्था की गयी। सघीय सरकार को ऋण लेने, समान रूप से चुंगी-कर और आबकारी-कर लगाने तथा दिवालियापन से सम्बन्धित समान कानून पारित करने के अधिकार प्राप्त थे। उसको सिक्के चलाने, वजन और माप निर्धारित करने, पेटेन्ट और कापीराइट देने और डाकखाने तथा चुंगीघर व मार्ग स्थापित करने के अधिकार दिये गये। सेना और नौसेना को रखने के भी अधिकार दिये गये। अन्तरराज्यीय वाणिज्य पर वह नियन्त्रण कर सकती थी। आदिवासियों के साथ सम्पर्क स्थापित करने, अन्तरराष्ट्रीय मामलों तथा युद्ध सम्बन्धी सभी देखरेख भी उसको सौंपी गयी। यदि किसी राज्य में "घरेलू

हिंसा' आरम्भ होती है और विधान मण्डल या गवर्नर सहायता मागता है तो शान्ति एवं व्यवस्था कायम करने के लिए सघीय सरकार हस्तक्षेप कर सकती थी। वह विदेशियों को देश मे रहने सम्बन्धी कानून पारित कर सकती थी। सार्वजनिक जमीनो पर नियन्त्रण रखते हुए वह पुराने राज्यों के समकक्ष ही नये राज्यों को प्रवेश दे सकती थी। वह किसी भी जिले मे अपनी राजधानी स्थापित कर सकती थी जिसका क्षेत्रफल १० वर्गमील से अधिक न हो। सक्षेप मे, आरम्भ से ही राष्ट्रीयसरकार सुदृढ़ थी और सर्वोच्च न्यायालय द्वारा की गयी सविधान की व्याख्या से सघीय सरकार और भी सुदृढ़ बन गयी। कोनफेडरेशन की कमजोरी के फलस्वरूप यह प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक था।

फिर भी राज्यों की स्थिति भी सुदृढ़ रही। स्थानीय शासन के सभी अधिकार राज्य सरकारो मे ही निहित थे और उन्होने जनता से सम्बन्धित अधिकाश व्यवस्थाओ को नियमित किया। शालाए, स्थानीय अदालते, पुलिस, कस्बो और नगरों की मागों की पूर्ति, बैको और व्यवसायी कम्पनियो का पंजीकरण, पुलो, सडकों और नहरो की देखरेख जैसे अन्य अनेक मामले राज्यो के आधीन थे। राज्यों को यह निर्णय लेने का अधिकार था कि कौन व्यक्ति मतदान का अधिकारी है और ऐसे मतदान का क्या क्या तरीका होगा। नागरिक स्वाधीनताओं की सुरक्षा के लिए राज्य प्रमुख रूप से जिम्मेदार थे। काफी समय तक लोग अपने को अमरीकी मानने के स्थान पर जोर्जिया, पेसिलवानिया या वर्जीनिया के निवासी ही मानते रहे।

अन्त मे अधिवेशन को एक सबसे महत्वपूर्ण समस्या का सामना करना पडा, और वह समस्या थी कि नयी राष्ट्रीय सरकार को दिये गये अधिकारो को किस प्रकार लागू किया जाय? पुराने कोनफेडरेशन मे काफी लिखित कागजी अधिकार प्रदान किये गये थे, हालाकि ये अधिकार भी पर्याप्त नहीं थे लेकिन व्यवहार मे ये अधिकार नहीं के बराबर ही थे क्योंकि राज्य उन पर कोई ध्यान नहीं देते थे। इसलिए वे इस दिशा मे सोचने लगे कि नयी सरकार को भी ऐसी कठिनाइया न उठानी पडे या उनके अधिकारो की अवहेलना न हो, इसके लिए क्या किया जाय। आरम्भ मे अधिकाश प्रतिनिधियों ने एक ही उत्तर दिया था। वर्जीनिया ने प्रस्तावित किया कि काग्रेस मे यह अधिकार निहित किये जायें कि 'कानून के अन्तर्गत कर्तव्यपालन न करनेवाले किसी भी राज्य के विरुद्ध सघ द्वारा बलप्रयोग करना चाहिए।' सैद्धान्तिक रूप से यह प्रस्ताव गलत था क्योंकि बलप्रयोग अन्तरराष्ट्रीय कानून का एक साधन था। यदि व्यवहार मे

उसका उपयोग किया जाता तो उसका अर्थ होता गृहयुद्ध। इसके अलावा वलप्रयोग करने के फलस्वरूप रक्तपात और ध्वंस के बीच संघ का विघटन हो जाता।

इसलिए प्रश्न था कि क्या किया जाय? इसी दौरान मे एक नया तथा सन्तोषजनक हल निकल आया। यह निश्चय किया गया कि सघ सरकार को राज्यो पर कार्रवाई नही करनी चाहिए। इसके स्थान पर उसको राज्यों के अन्दर जनता पर ही कार्रवाई करनी चाहिए। इसलिए सघीय सरकार को राज्य सरकारों की उपेक्षा करते हुए देश के नागरिकों के लिए विधान बनाना चाहिए और उसका उनसे पालन करवाना चाहिए। जैसाकि मेडिसन ने जेफरसन को लिखा था: "सघीय कानून के जरिये सभी सदस्यों की ऐच्छिक रूप से देखरेख करने की कभी भी आशा नही की जा सकती है। अनिवार्य देखरेख को वस्तुतः कभी भी व्यावहारिक नही बनाया जा सकता है और यदि ऐसा किया भी गया तो उससे अपराधी और गैर-अपराधी लोगों को समान रूप से कष्ट होगा और सामान्य रूप से एक नियमित सरकार के प्रशासन के स्थान पर एक गृहयुद्ध उठ खडा होगा। इसलिए राज्यों पर कार्रवाई करनेवाली सरकार की अपेक्षा एक ऐसी सरकार को अपनाया गया जो राज्यो के प्रशासन मे सीधे हस्तक्षेप के विना भी नागरिकों के लिए कारवाही करेगी।" अधिवेशन ने सविधान के एक मूलाधार के रूप मे निम्न सक्षिप्त अनुच्छेद स्वीकार किया:—
'यह सविधान और सयुक्त राज्य अमरीका के कानून, जिनको तदनुसार बनाया जायगा और सयुक्त राज्य अमरीका की सरकार की ओर से जो सन्धिया की गयी हैं या की जायेगी वे इस भूमि के सर्वोच्च कानून के रूप मे लागू होगी और प्रत्येक राज्य के न्यायाधीशों को किसी भी राज्य के कानूनों के सविधान मे विपरीत व्यवस्था होने के बावजूद भी उनका पालन करना होगा।'

इस उपबन्ध के अन्तर्गत सयुक्त राज्य अमरीका के कानून स्वयं अपनी राष्ट्रीय अदालतों में अपने ही न्यायाधीशों और सैनिक न्यायाधीशों के जरिये लागू होने लगे। उन कानूनों को राज्य की अदालतों में राज्य के न्यायाधीशों तथा राज्य के कानूनी अधिकारियों के जरिये भी लागू किया गया। इस उपबन्ध ने सविधान मे एक ऐसी सजीवता पैदा कर दी जो अन्यथा सभव नहीं थी, और इसमे सामान्य बुद्धि और प्रेरणा, व्यावहारिक कुशलता और दूरदर्शिता का एक ऐसा विलक्षण सामजस्य किया गया जिससे कि वह एक आदर्श कानून बन गया।

सोमवार, १७ सितम्बर को अपना सर्वोत्तम कार्य करने के पश्चात् सदन की अन्तिम बैठक हुई। विचार-विमर्श के जरिये किया गया यह कार्य अपने ढंग का पहिला कार्य था।

उपस्थित प्रतिनिधियों मे से केवल तीन ने हस्ताक्षर करना अस्वीकार कर दिया लेकिन अधिकाश सदस्य प्रसन्न थे। वृद्ध फ्रेंकलिन ने घोषित किया कि हालाकि वे सविधान के सभी भागों का समर्थन नही करते हैं फिर भी उसको सम्पूर्णता के इतने निकट देख कर उन्हें अत्यन्त आश्चर्य होता है। उन्होंने उन व्यक्तियों से निवेदन किया जिनको सविधान के कुछ पहलू पसन्द नहीं थे कि वे स्वय अपनी ही त्रुटिक्षमता पर सन्देह कर सविधान को स्वीकार करे। उत्साही युवक एलेकजेण्डर हेमिल्टन ने भी लगभग इसी प्रकार का वक्तव्य दिया। उनकी इच्छा एक अधिक केन्द्रीभूत और अधिक शानदार पद्धति की सरकार स्थापित करने की थी, लेकिन फिर उन्होंने कहा कि एक सच्चा देशभक्त अराजकता व अव्यवस्था तथा सुव्यवस्था वं प्रगति के बीच कैसे ढुलमुल रह कर बिना निर्णय किये रह सकता है ? बारह राज्यों के प्रतिनिधि दस्तखत करने के लिए आगे बढे। अनेक लोग इस अवसर की पवित्रता से अत्यधिक प्रभावित दिखायी देने लगे और वाशिंगटन एक गम्भीर विचारधारा मे डूबे हुए थे। लेकिन फ्रेंकलिन ने अपनी स्वाभाविक सरलता से शान्ति भंग की। वाशिगटन की कुर्सी पर चमकीले सुनहरे रग से चित्रित आधे सूर्य की ओर इगित करते हुए उन्होंने कहा कि कलाकारों को उगते और अस्त होनेवाले सूर्य मे अन्तर मालूम करना सदैव कठिन लगा है। अधिवेशन के सूत्र के दौरान मे, और उसके मामलों से सम्बन्धित आशाओं और निराशाओ के उतार-चढ़ाव मे राष्ट्राध्यक्ष की ओर देखता रहा हूं लेकिन मै यह नहीं जान सकता था कि यह सूर्य उग रहा है अथवा अस्त हो रहा है; लेकिन आखिर अब मुझे यह जानकर प्रसन्नता होती है कि यह वास्तव मे उगता हुआ सूर्य है, अस्त होता हुआ नही।

स्वीकृति : लेकिन प्रश्न था कि क्या नये संविधान को सभी राज्य स्वीकृति प्रदान करेंगे ? अनेक साधारण व्यक्तियों के लिए वह खतरों से भरा था क्योंकि उनको भय था कि क्या एक सुदृढ़ केन्द्रीय सरकार जिसकी स्थापना सविधान के जरिये की जायगी, उनके ऊपर अत्याचार नहीं करेगी, क्या भारी कर लगा कर उनको परेशान तो नहीं करेगी और क्या उनको विदेशी युद्धों मे तो नही घसीट ले

जायगी ? अधिवेशन में यह निश्चय किया जा चुका था कि जैसे ही तेरह राज्यों में से नौ राज्य सविधान को स्वीकार कर लेंगे उसको शीघ्र ही लागू कर देना चाहिए। १७८७ के अन्त के पहले डेलावेर, पेंसिलवानिया और न्यू जर्सी ने सविधान को स्वीकृति प्रदान कर दी। लेकिन क्या शेष ६ राज्य भी उनका अनुकरण करेंगे ? इस प्रश्न पर नये सविधान के निर्माताओं ने काफी चिंता व्यक्त की।

सविधान के प्रति स्वीकृति प्रदान करने के आन्दोलन के फलस्वरूप फेडरेलिस्ट (सघवादी) और एण्टी-फेडरेलिस्ट (सघ-विरोधी) नाम के दो दल उठ खड़े हुए· जिनमें से एक दल सुदृढ़ सरकार के पक्ष में था और दूसरा दल केवल राज्यों का ही सघ चाहता था जिनमें सर्वोपरि सत्ता राज्यों मे ही निहित रहे। यह विवाद समाचारपत्रों, विधानमण्डलों और राज्यों के अधिवेशनों मे जारी रहा। दोनों ओर से उत्तेजनापूर्ण दलीलें प्रस्तुत की जाने लगीं। नये सविधान के समर्थन में एलेक्जेण्डर हेमिल्टन, जेम्स मेडीसन और जान जे ने फेडरेलिस्ट समाचारपत्र में एक लेखमाला प्रकाशित की जो राजनीति-शास्त्र मे एक स्थायी स्थान रखती है। मसाचुसेट्स, न्यूयार्क और वर्जीनिया मे यह आन्दोलन बडा गंभीर प्रमाणित हुआ। मसाचुसेट्स में बोस्टन के जहाज-मालिकों, धातुओं के कामगारों और अन्य मेकेनिकों ने वकीलों, व्यापारियों और किसानों की भारी संख्या के सहयोग से सविधान का जोरदार समर्थन किया। न्यूयार्क मे एलेक्जेण्डर हेमिल्टन के वक्तव्य ने प्रमुख विरोधियों के विचारों को परिवर्तित कर दिया, उनके दलों मे फूट डाल दी और काफी बहुमत से सविधान की स्वीकृति प्राप्त कर ली। इसी प्रकार वर्जीनिया में जार्ज वाशिंगटन के प्रभाव ने (जो सर्वत्र शक्तिशाली था) और मेडीसन के ठोस तर्कों ने विजय पा ली। वर्जीनिया द्वारा अन्तिम निर्णय लेने तक अन्य नौ राज्यों ने स्वीकृति प्रदान कर दी थी और इस प्रकार सरकार की स्थापना सुनिश्चित थी; लेकिन वाशिंगटन के राज्य का पूर्ण समर्थन अपरिहार्य था और उसके प्राप्त होने पर बडी खुशियॉ मनायी गयीं।

४ जुलाई, १७८८ को फिलाडेल्फिया ने नयी पद्धति की सरकार स्वीकृति किये जाने पर एक विशाल जुलूस का आयोजन किया। एक प्रतीकात्मक झॉकी मे पुरानी कोनफेडरेसी का चित्रण किया गया था (जो वास्तव में कोनफेडरेशन के नियमों के अन्तर्गत एक निर्बल सरकार का प्रतीक था); दूसरी झॉकी में सविधान नाम का विशाल जहाज समुद्र में उतरने के लिए तत्पर दिखाया गया था। इसके बाद राष्ट्राध्यक्ष और कांग्रेस के चुनाव की तैयारियां होने लगीं ताकि

१७८९ की वसन्त में नयी सरकार स्थापित की जा सके। उस समय प्रत्येक मनुष्य की जबान पर नये राज्य के प्रमुख के लिए एक ही व्यक्ति का नाम था और वाशिंगटन सर्व सम्मति से राष्ट्राध्यक्ष चुन लिये गये।

इस प्रकार हाल ही के अन्धकारमय वर्षों के पश्चात् उज्ज्वल अरुणोदय हुआ जिसका उल्लेख फ्रेंकलिन ने फिलाडेल्फिया के लिबर्टी हाल मे किया था। अमरीका के प्रारम्भिक इतिहास से सम्बन्धित अनेक आनंदप्रद घटनाओ मे वाशिगटन द्वारा की गई वह यात्रा भी सम्मिलित है जो उन्होंने पोटोमेक मे स्थित अपने सुन्दर निवासस्थान से नयी सरकार की सत्ता जमाने के लिए न्यूयार्क के लिए की थी। अप्रेल के मध्य मे जब वर्जीनिया की पहाडियो पर वसन्त का उन्माद फैल रहा था, वाशिंगटन ने अपनी यात्रा प्रारम की। वे सडको के जरिये उत्तर की ओर बढे। उनकी यात्रा के कुछ मार्ग उन सड़को के समानातर थे जिनसे वे कॉर्नवालिस पर आधिपत्य करने के लिए १७८१ मे गये थे। प्रत्येक गाव, कस्बे और शहरो की जनता ने उनका हार्दिक अभिवादन किया। फिलाडेल्फिया मे घुडसवारो की एक परेड हुई, और वे हरी वन्दनवारो और मेहराबो के नीचे से घोडे पर चढ़ कर निकले। ट्रिनटन में वे एक दिन दोपहर को पहुंचे, जहा पर बारह वर्ष पहले उन्होंने बर्फ से भरे हुए डेलावेर को अन्धेरे मे पार किया था और अपने जीवन का अत्यधिक महत्वपूर्ण फौजी आक्रमण आयोजित किया था। यहा पर धवल-वस्त्र-धारी तरुणियों के एक दल ने उनको पुष्पमालाएं पहनायी और उनके प्रति एक स्तुति-गान किया। न्यूयार्क की खाडी के किनारे उन्हे जहाज पर चढ़ाने के लिए श्वेत-वस्त्र-धारी तेरह लोगो के दल ने उनका स्वागत किया और जैसे ही वे न्यूयार्क शहर के निकट पहुचे उनको तेरह तोपो की सलामी दी गयी। जहाज से उतरने पर उन्होने शहर मे प्रसन्न जनसमुदाय को देखा जिनमे अनेक विख्यात क्रांतिकारी भी शामिल थे। ३० अप्रेल को वे अपार जनसमूह के सामने वाली स्ट्रीट मे स्थित फेडरल हाल के छज्जे मे अपने पद की शपथ लेने के लिए खडे हुए। न्यूयॉर्क के चांसलर ने उनकी शपथ-विधि सम्पन्न करायी और फिर उन्होंने जनता की ओर मुड़ कर कहा, "सयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्राध्यक्ष जार्ज वाशिंगटन जिन्दाबाद।" यह सुनते ही नीचे खडा हुआ अपार जन समूह प्रसन्नता से तुमुल हर्षध्वनि कर उठा।

१७८९ में अमरीका : अब एक उत्साही गणतंत्र अपना जीवन आरम्भ करने को तैयार हो चुका था। वाशिंगटन के उद्घाटन-काल के एक वर्ष बाद की

गयी जनगणनानुसार नये गणतंत्र की आबादी लगभग ४५ लाख की थी जिसमें से लगभग ३५ लाख गोरे लोग थे। यह आबादी लगभग सम्पूर्ण रूप से ग्रामीण थी। शहर कहे जानेवाले केवल पांच ही स्थान थे: फिलाडेल्फिया, की आबादी ४२,०००; न्यूयार्क की आबादी ३२,०००: बोस्टन की आबादी १८,००० चार्ल्सटन की आबादी १६,०००; और बाल्टीमोर की आबादी १२,००० थी। आबादी का अधिकांश भाग खेतों, बागानों या छोटे गावों में रहता था। यातायात की व्यवस्था बहुत कम और शिथिल थी क्योंकि सडकें खराब थीं, बग्घियां आरामप्रद नहीं थीं और पालवाले जहाजों का आवागमन अनिश्चित था। लेकिन टर्नपाइक कम्पनियों की स्थापना होने लगी थी (फिलाडेल्फिया से लैंकास्टर तक एक अच्छी सड़क शीघ्र ही बनायी गयी), और कई नहरों को भी शीघ्र खोदा गया। अधिकांश लोग तुलनात्मक दृष्टि से एकाकी जीवन व्यतीत करते थे जहां पर शालाओं, पुस्तकों और समाचारपत्रों की सुविधाएं बहुत कम थीं। यूरोपीय यात्रियों को अमरीका के बारे में स्वाधीनता, भौतिक समृद्धि और अपार आत्मविश्वास के साथ साथ रूखे, असुविधाजनक, असभ्य तरीके और हल्की संस्कृति का आभास मिलता था। फिर भी सांस्कृतिक और भौतिक दृष्टि से अमरीका का विकास दृढ़ आधार पर हो रहा था। पुरानी दुनिया से प्रवासी इतनी संख्या में आये कि प्रायः अमरीकी लोग सोचने लगते थे कि लगभग आधा पश्चिमी यूरोप उनकी भूमि पर आ रहा है। सस्ती कीमतों पर अच्छे खेतों को खरीदा जा सकता था; श्रमिकों की काफी मांग थी और उनका वेतन भी अच्छा था। प्रवासियों की ओर सरकार का अच्छा रुख था और वाशिंगटन ने विशेष रूप से ब्रिटेन से प्रवर किसानों को बुलाने का समर्थन किया ताकि वे अमरीका के निवासियों को खेती के श्रेष्ठतर तरीके सीखा सकें। उत्तरी न्यूयार्क की मुहाक और गिनीसी की घाटियों, उत्तरी पेंसिलवानिया में सुसुहन्ना, और वर्जीनिया के सिनानडोह के क्षेत्र शीघ्र ही गेहूं उत्पादन के विशाल केन्द्र बन गये। न्यू इंग्लैण्ड और पेंसिलवानिया के निवासी ओहियो की ओर, वर्जीनिया और करोलिना के निवासी केन्टकी और टेनेसी की ओर बढ़ रहे थे।

उत्पादकों की संख्या में भी वृद्धि हो रही थी और राज्य की ओर से उनको सुविधाएं प्राप्त होती थीं। मेसाचुसेट्स और रोड द्वीपों में महत्वपूर्ण वस्त्रोद्योग को आरम्भ किया जा रहा था और वहां पर इंग्लैण्ड से आयात की हुई मशीनों को प्रस्थापित किया जा रहा था। कनेक्टीकट में टीन के सामान और

घडियो के कारखाने तथा मध्य राज्यों मे कागज, कांच और छोटे कारखानें खोले गये। लेकिन अमरीका मे अभी तक ऐसे कोई मिल-विस्तार नहीं थे जहा की आबादी सम्पूर्ण रूप से फैक्टरी के कार्य मे लगी हो। वास्तव में उत्पादन का अधिकाश कार्य अब भी घरों मे ही किया जाता था। किसान जाड़ो की लम्बी रातो मे मोटा कपड़ा, चमड़े का सामान, मिट्टी के बरतन, लोहे के सादे औज़ार, शक्कर और लकड़ी के सामानादि का निर्माण करते थे। जब मिलों और फैक्टरियो की स्थापना की गयी तब उसके मालिक भी अपने कर्मचारियो के साथ कार्य करते थे।

जहाज उद्योग का भी विकास हुआ और समुद्री व्यापार में अमरीका का स्थान इंग्लैण्ड से दूसरा था। किनारे के व्यापार, काड मछलिया पकडने, व्हेल मछलियों का शिकार करने और यूरोप को खाद्य-पदार्थ, तम्बाकू, लुग्दी तथा अन्य सामान ले जाने के लिए जहाजो का निर्माण बड़ी सख्या मे हुआ। क्राति के समाप्त होने के बाद ही एम्प्रेस जहाज ने केन्टन की यात्रा की और वहाँ से पूर्वी देशो से व्यापार करने की संभावना का समाचार सुनाया, जिसने न्यू इंग्लैण्ड के निवासियो को सावधान कर दिया। फलस्वरूप एक नये वाणिज्य का सूत्रपात हुआ। व्यापार मे इतनी प्रतियोगिता बढ़ी कि १७८७ मे पाच अमरीकी जहाज चीन जा पहुंचे। पूर्व के निवासी फर प्राप्त करने के बड़े उत्सुक थे और बोस्टन के कुछ व्यापारियों ने उत्तरी-पश्चिमी किनारों मे अपने जहाज भेजे। वहा इण्डियनो से फर खरीद कर चीन ले गये और वहा से चाय तथा रेशम का सामान लेकर स्वदेश लौटे। यह नयी योजना काफी सफल रही। अब क्या था, कोलम्बिया जहाज के मास्टर केप्टन रोबर्ट ग्रे ने ऊपरी प्रशान्तसागरीय तट की विशाल नदी मे प्रवेश किया जिसका नाम उन्होंने बाद में अपने जहाज के नाम पर रखा और इस प्रकार सयुक्त राज्य अमरीका का ओरेगोन प्रदेश पर अधिकार स्थापित किया।

अमरीकियो का अभियान प्रमुख रूप से पश्चिम की ओर हो रहा था। ओहियो के जंगलो से लेकर ज्यार्जिया की झाडियों तक समस्त क्षेत्र को साफ कर दिया गया। अलेघेनीज के लम्बे ढालों से हिमाच्छादित कानस्टोगा की चोटी तक प्रवासियो की टोलियाँ जा पहुँची। कम्बरलैण्ड दर्रे से चमड़े के वस्त्र पहने तथा आपत्तियो को झेलते हुए शिकारियों और अन्वेषको ने फर्नीचर, बीजो, खेती के सादे औजारो की गाडियो तथा घरेलू जानवरो के साथ केन्टकी मे प्रवेश किया। जगल तथा उपजाऊ भूमि के अपने स्थानो को साफ कर

[illegible] [illegible] और उनके पड़ोसी लट्ठों के मकान बना कर बस गये। बाद [illegible] में ओहियो और मिस्सीसिपी नदियों के द्वारा अमरीकनों की लट्ठे की [illegible] न्यू आर्लीयन्स तक अनाज, नमकीन गोश्त और पोटाश लेकर पहुँचने लगीं। धीरे धीरे पश्चिमी नगरों का, जैसे ओहियो पर सिनसिनाटी, टेनेसी [illegible], केन्टकी में लेक्जिन्टन अधिक महत्वपूर्ण बनते गये। लोगों को आदिवासियों के आक्रमणों, मलेरिया, जंगली जानवरों, सीमान्त के [illegible] लुटेरों तथा अन्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। इसके अलावा दूसरी कठिनाइयों, निर्धनता और रोगों से भी अनेक लोगों की मृत्यु हुई। लेकिन फिर भी जंगली विस्तारों में दस हज़ार प्रवासी फैल चुके थे, सीमान्त [illegible] का भी विकास होता गया और औपनिवेशिक दिनों के बारे में पादरी, [illegible] का यह कथन सत्य होता गया : 'साम्राज्य का पश्चिम की ओर विकास होता गया।'

छठा परिच्छेद

गणराज्य का अस्तित्व

वाशिंगटन के अधीन सरकार की स्थापना : १७८९ में न्यूयार्क अस्थायी रूप से एक राष्ट्रीय राजधानी के रूप में खिल उठा। उसके भव्य मकानों को बड़ी सजधज के साथ सजाया गया; उस ग्रीष्म ऋतु में वहा की सडकों पर कांग्रेस के सदस्यों, मनोनीत पदाधिकारियों और दर्शकों आदि की भीड़ दिखाई देती थी। राष्ट्राध्यक्ष वाशिंगटन ने पहिले अपना आवास शहर के बाहर फ्रेंकलिन चौराहे पर स्थापित किया और इसके बाद निचले ब्राडवे स्थित शानदार मेकोम भवन में किया। इसका स्वागत कक्ष बहुत सुन्दर था। उपराष्ट्राध्यक्ष जान आदम्स ने रिचमाण्ड हिल पर एक बड़े भवन को अपना आवास बनाया। कांग्रेस का अधिवेशन वाल और ब्राड स्ट्रीट स्थित फेडरल हाल में होता था। राष्ट्र की पहिली राजनैतिक राजधानी बाद में आर्थिक राजधानी भी बनी। यहा पर उच्च स्तर की बैठके और नृत्यों के आयोजन होते थे। राष्ट्राध्यक्ष शानदार भोज देते थे और प्रायः मित्रो के साथ जान स्ट्रीट स्थित थिएटर जाते थे। जब वे कांग्रेस में भाग लेने जाते थे तब वे वर्जीनिया नस्ल के सफेद घोडों से जुते हुए बदामी रंग की बग्घी से निकलते थे। उनके आगे पीछे सिपाही होते थे। कांग्रेस की बहसो में नागरिकों को प्रवेश नहीं दिया जाता था लेकिन बाहर की सड़को पर लोगो के गुट रोजमर्रा के गम्भीर मामलो पर वादविवाद करते थे।

वाशिंगटन का विवेकशील नेतृत्व नयी सरकार के लिए अपरिहार्य था। राजनैतिक दृष्टि से वे रचनात्मक क्रियाशील या प्रतिभाशील पहल के व्यक्ति नही थे। वे विचारशील लेखक और सार्वजनिक भाषण की कला में भी अधिक प्रभावशाली नही थे। उनको प्रशासन के सिद्धान्तो का भी कम ज्ञान था। लेकिन फिर भी लोग उनके आज्ञाकारी ही नहीं बल्कि उनकी एक प्रकार से मन ही मन श्रद्धा भी करते थे; और वे स्वयं अद्वितीय ढंग से संघ की भावना का प्रतिनिधित्व करते थे। प्रत्येक दल और वर्ग के जिम्मेदार व्यक्तियो

ने उनकी निष्पक्षता, विचारों की गम्भीरता तथा बुद्धिमानी पर विश्वास किया। उनका 'गणतंत्री दरबार' दबदबे और गम्भीर औपचारिकता के लिए विख्यात था। समारोहों में वे काले मखमल और साटन के वस्त्र जोड़ों पर हीरे के बकल, बंधे हुए केश, हाथों में फौजी टोप और बगल में हरी म्यान में एक सज्जित तलवार लिये आते थे। कांग्रेस और प्रशासन अधिकारियों के साथ उनका सम्बन्ध दलीय मतभेदों से परे रहता था। उनकी विचारधारा राष्ट्रीय थी और संघीय विचारधारा वाले व्यक्तियों से उनकी सहानुभूति थी। वे सदैव सतर्क और व्यस्त रहते थे। अपने कार्यक्रमानुसार उनकी दैनिक कार्यावधि काफी लम्बी होती थी। अपने सफल कठिन परिश्रम के फलस्वरूप उन्होंने सरकार की प्रतिष्ठा में वृद्धि की थी और राष्ट्र को अपनी चेतावनी से प्रभावित किया था, जो उन्होंने १७९६ में अपने 'विदाई समारोह' के अवसर पर निम्न शब्दों में दी थी: "सर्वदित रहो—अमरीकी बनो।"

अगस्त में कांग्रेस की कार्रवाई दिसम्बर तक के लिए फिर फिलाडेल्फिया में आयोजित होने के लिए स्थगित हो गयी। फिलाडेल्फिया एक स्वच्छ शान्त और सामाजिक शहर था और उसे १० वर्ष तक राजधानी रहना था। इस अवधि में राष्ट्रीय मामलों को व्यवस्थित करने की दिशा में काफी कार्रवाई की गयी।

सरकार का संगठन करना कोई आसान कार्य नहीं था। कांग्रेस ने तीव्र गति से स्टेट (परराष्ट्र), वार (युद्ध) और ट्रेजरी (अर्थ) विभागों की स्थापना की। वाशिंगटन ने पहिले पद पर थामस जेफरसन को, जो फ्रान्स में राजदूत पद की सेवाओं से हाल ही में लौटे थे; दूसरे पद पर मसाचुसेट्स के एक साधारण किन्तु लोकप्रिय जनरल हेनरी नोक्स को और तीसरे पद पर अर्थसम्बन्धी विशिष्ट ज्ञान रखनेवाले एलेक्जेण्डर हेमिल्टन को नियुक्त किया। कांग्रेस ने एटर्नी जनरल के कार्यालय की भी स्थापना की। यह पद पहिले एक विभागीय प्रमुख के रूप में नहीं बल्कि सरकार का केवल कानूनी सलाहकार के रूप में था। वाशिंगटन ने इस पद पर वर्जीनिया के एडमण्ड रेण्डोल्फ को नियुक्त किया। हेमिल्टन और नोक्स की विचारधारा संघवादी और जेफरसन तथा रेण्डोल्फ की विचारधारा संविरोधी कही जाती थी। इसके अलावा कांग्रेस ने एक संघीय न्यायप्रणाली की भी स्थापना की। उसने न केवल एक सर्वोच्च न्यायालय की स्थापना की, जिसमें

एक मुख्य न्यायाधीश और पाच सहायक न्यायाधीश थे, बल्कि तीन सर्किट न्यायालय और तेरह राज्य न्यायालयों की भी स्थापना की। सघीय विभागो के प्रमुखों की तरह सभी न्यायाधीशों की नियुक्तिया राष्ट्राध्यक्ष द्वारा किया जाना और उनकी पुष्टि सिनेट द्वारा किये जाना प्रस्तावित किया गया। १७९० के अन्त तक तीन परराष्ट्र-युद्ध-अर्थ के राष्ट्रीय न्यायालयो ने, अपने आधीन काफी कर्मचारियों के साथ कार्यारंभ कर दिया।

इस समय तक दल-गत राजनीति का जन्म हो चुका था—हालाकि अनेक अमरीकियो ने बिना राजनीति के गणतत्र की कल्पना भी की थी। फलस्वरूप उनकी प्रारभिक हलचलो से संविधान को सशोधित करने सम्बन्धी एक आन्दो-लन उठ खडा हुआ। अनेक राज्यों ने उसमे परिवर्तन करने के लिए आवश्यक सिफारिशों के साथ कदम भी उठा लिये थे। पहले तो ऐसा प्रतीत होता था कि काग्रेस इन सुझावों पर कोई ध्यान नहीं देगी। लेकिन पेट्रिक हेनरी और अन्य लोगो ने आन्दोलन उठाया जिसके फलस्वरूप विचार करना पडा और काग्रेस ने सम्बन्धित प्रस्तावों को एक समिति के सुपुर्द कर दिया। फल यह हुआ कि काग्रेस के बहुमत ने सरकारी योजना को परिवर्तित करने सम्बन्धी सभी सुझावो को अस्वीकृत कर दिया, लेकिन राज्यों को एक अधिकार-विधेयक (बिल आफ राइट्स) के रूप मे बारह सशोधनों को भेज दिया। इनमे से नागरिक स्वाधीनता की सुरक्षा से सम्बन्धित दस सशोधनों को स्वीकार कर लिया गया। सघ-विरोधी लोगो ने असन्तोष व्यक्त किया कि अधिक सुविधाए प्रदान नही की गयी और अपने प्रतिवादों के जरिये आन्दोलन जारी रखा। लेकिन इस समय तक संघवादियो तथा सघविरोधियों के विवाद का मूल आधार भी समाप्त होता जा रहा था, क्योकि देश ने सविधान को एक तरह से स्थायी मान लिया था। नये मामले सामने आने लगे, एक सुदृढ केन्द्रीय सरकार का सघीय दल (फेडरलिस्ट पार्टी), बढ़ते हुए व्यापारिक तथा वाणिज्यिक हित, राज्याधिकारों का समर्थक सघ-विरोधी दल (एण्टि-फेडरलिस्ट पार्टी) और जमीन जायदाद सम्बन्धी मामले नया रुख अपना रहे थे और नये नेताओ का भी आविर्भाव हो रहा था।

जिस प्रकार क्रातिकारी अमरीका ने वाशिंगटन और फ्रेंकलिन जैसे दो महान विश्वविख्यात नेताओ को जन्म दिया था उसी प्रकार नव गणतत्र ने एलेक्जेण्डर हेमिल्टन और थामस जेफरसन जैसे प्रतिभाशाली दो योग्य नेताओ को जन्म दिया जिनकी ख्याति देशदेशान्तरों मे फैल गयी। लेकिन इन दोनो नेताओ

को, उनकी विशिष्ट वैयक्तिक प्रतिभा के कारण स्मरण नही किया जाता है, हालाकि वे दोनो बडे बुद्धिमान थे। ये दोनो नेता अमरीकी जीवन की दो शक्तिशाली और आवश्यक और कुछ हद तक विरोधी प्रवृत्तियो का प्रतिनिधित्व करते थे। हेमिल्टन समन्वित सघ और एक सुदृढ राष्ट्रीय सरकार की प्रवृत्ति का और जेफरसन एक उदार और अपेक्षाकृत स्वतत्र जनतत्र की प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करते थे। इस दृष्टि से १७९० से १८३० तक की अवधि मे अमरीकी इतिहास की अनिवार्य पश्चिमी अभियान के बाद सबसे महत्वपूर्ण घटनाए थीं राष्ट्रीयता तथा जनतत्र की सफलताएं।

एलेक्जेण्डर हेमिल्टन : हेमिल्टन का जन्म शक्कर उत्पादक लेसर इन्टीलीस के छोटे द्वीप मे हुआ था। उनके पिता स्काटलैण्ड के तथा माता ह्यूजनोट थी। स्टीवेन्स के "एलेन बेक आफ किडनेप्ड" के स्काटलैण्ड के व्यक्तियो की तरह हेमिल्टन का विकास एक उत्साही, उदार, निष्ठावान, स्वाभिमानी, पल मे गर्म और पल मे ठण्डे, स्पष्ट विचारशील और अथक परिश्रमी के रूप मे हुआ था। उनकी सफलताओं का आधार था उनकी प्रतिभा, आत्म-विश्वास, महत्वाकाक्षा और पौरुष का अद्भुत सामजस्य। उन्होंने अपने इन गुणो को बड़ी विलक्षणता से प्रदर्शित किया। इनके पिता को व्यापार मे नुकसान आ जाने के कारण उनके पास इन्हे कालेज मे अध्ययन कराने के लिए धन नही रह गया था। इसी बीच एन्टीलीस पर एक भयानक तूफान आया जिसका वर्णन इन्होने इतनी सजीवता से किया कि उनकी चाची ने उनको अमरीकी मुख्य भूमि पर अध्ययन करने के लिए भेज दिया। उन्होंने न्यूयार्क मे किंग्स कालेज मे प्रवेश प्राप्त किया। यह स्थान उनको पसन्द आया क्योंकि यहा पर उनको शहर के उन उग्र नेताओ से सम्पर्क स्थापित करने का अवसर मिला जो शाही सत्ता के विरुद्ध विद्रोह का आयोजन कर रहे थे। इन्होने अपनी १८ वर्ष की आयु के पहिले ही दो पुस्तिकाए लिखी जिनमे उन्होने प्रदेश के प्रमुख टोरी दल के नेताओ के विरुद्ध अच्छी धाक जमा ली थी। बीस वर्ष की अवस्था मे जब वे एक तोपखाने की टुकड़ी के नायक बने उस समय भी उनको पढने का अत्यन्त शौक था और वे काफी रात तक पढते रहते थे।

प्रतिभा और महत्वाकाक्षा के साथ साथ हेमिल्टन मे अन्य गुण भी विद्यमान थे जिनके कारण उनको काफी सफलता मिली। उनका व्यक्तित्व बडा आकर्षक

था। उनके हल्के लाल-भूरे केश, चमकीली भूरी आंखे, चौड़ा ललाट, और सुन्दर चेहरा और दाढ़ी के साथ वे अत्यन्त आकर्षक लगते थे। बातचीत करते समय उनका चेहरा कान्तिमय और तथा कार्य करते समय गम्भीर और विचारशील लगता था। उनको दावतो मे शामिल होने का शौक था। वे ऐसी मण्डलियों मे भी प्रायः शामिल होते थे जहा अच्छी शराब, बुद्धिमान मित्र और विनोदी बाते होती थी। दूरदर्शिता तथा तत्काल निर्णय लेना उनकी खूबी थी। भाषण देने की कला मे वे निपुण थे तथा ठीक समय पर ठीक कदम उठाने के लिए विख्यात थे। उनके भाषणो ने उनको न्यूयार्क मे देशभक्तों का नेता बना दिया, और वाशिगटन का ध्यान भी उनकी ओर आकर्षित किया और वे उनके प्रमुख सहायक बन गये। यार्कटाउन के घेरे के समय एक नाटकीय आक्रमण की विजयश्री का तथा न्यूयार्क के वकीलो के सघ का नेतृत्व प्राप्त करने का श्रेय भी इनकी वक्तृत्व कला को था। अपनी भाषण कला से ही वे वाशिगटन के प्रशासन के प्रमुख व्यक्ति और एक महान दल के नेता बने। उनमे कार्य करने तथा सगठन करने की बडी विलक्षण शक्ति थी। वे बडे उत्साह और ओज के साथ लिखते तथा भाषण देते थे। इन गुणों के बावजूद उनमे कुछ विशेष दुर्गुण भी विद्यमान थे। उनका स्वभाव उत्तेजक, शीघ्र गुस्सेबाज और निराश होने पर चिडचिडा हो जाता था। मनमथ के युद्ध मे जब वाशिगटन ने पीछे हटने के लिए जनरल चार्ल्स ली को डाटा तब हेमिल्टन अपने घोडे से नीचे कूद कर तलवार खीच कर चिल्ला पडे कि हमको धोखा दिया गया है। इस पर वाशिगटन ने उनको इस आदेश से शान्त कर दिया था—"मिस्टर हेमिल्टन, अपने घोडे पर चढ जाओ।" युद्ध की समाप्ति के समय वे वाशिगटन से झगड़ा कर बैठे, और अपने ससुर को इस घटना के बारे मे एक झूठा और द्वेषपूर्ण पत्र लिख दिया तथा इस मतभेद को मिटाने के लिए वाशिगटन द्वारा किये गये प्रयत्नों को भी अस्वीकार कर दिया। उनकी तुनकमिजाजी, शीघ्र झगडने की आतुरता तथा क्रोधी और अभिमानी स्वभाव ने लोगो के साथ अवाछनीय कटुता पैदा कर दी जिसके फलस्वरूप जेफरसन के साथ विवाद हो जाने पर उन्होंने वाशिगटन के प्रशासन मे अवरोध उत्पन्न कर दिया था, जान एडेम्स के साथ मनमुटाव होने पर फेडरलिस्ट पार्टी मे गत्यवरोध पैदा किया और आरोन बर के साथ मतभेद हो जाने पर उन्होने एक द्वन्द्व मे आखिर अपनी जान ही गवॉ दी।

हैमिल्टन के सार्वजनिक जीवन का प्रमुख पहलू था कार्यक्षमता, व्यवस्था

और संगठन के प्रति उनकी निष्ठा। उनकी यही एक प्रबल शक्ति थी जिसके जरिये उन्होंने नये राष्ट्र की अविस्मरणीय सेवाए की है। १७७५ से १७८९ तक उन्होंने अपने आसपास सभी क्षेत्रो मे सुस्ती और शिथिलता की हालत देखी। उन्होंने इस अव्यवस्था की कडी भर्त्सना की। वाशिगटन के सचिव के रूप मे उन्होंने उनकी अनेक महत्वपूर्ण योजनाओ को कार्यान्वित किया। यदि हम क्रातिकारी अवधि के वाशिगटन के पत्रो को देखे तो पता चलता है कि सरकार की दुर्बलता के कारण उनको कितना भयभीत रहना पडता था। उनके भयभीत रहने का कारण यह था कि राज्य उनको पर्याप्त फौजों की पूर्ति नही करते थे, वे अपर्याप्त हथियार, कपडे, तथा धन भेजते और जब देश का एक भाग सक्रियता से कार्य करता था तो दूसरा निष्क्रिय बैठा रहता था। फौजो मे अनुशासन के अभाव के कारण भी उनको भयभीत रहना पडता था क्योंकि फौजें दूर दूर तक फैली हुई थी और लूटपाट करती थी तथा थोडे से बहाने पर ही सिपाही प्रायः बिस्तर बाध कर भाग जाया करते थे। इन सभी चिन्ताओं को हल करने मे हेमिल्टन ने भी हाथ बटाया और बाद मे सघीकरण के कठिन समय में हेमिल्टन न्यूयार्क मे व्यापारिक वर्गो के एक सक्रिय सलाहकार थे और वे व्यापार सम्बन्धी कठिनाइयो तथा जायदाद की असुरक्षा सम्बन्धी कठिनाइयो को अच्छी तरह से जानते थे। उन्होने अपने विचारो मे राज्य की उचित रूपरेखा के निर्धारण मे अमरीकी विचारधारा के स्थान पर यूरोपीय विचारधारा को ही श्रेष्ठतर माना था और उन्होंने अपने सपूर्ण जीवन भर अंग्रेजों की सरकार को ही सर्वोत्कृष्ट माना था। इसीलिए वे एक कार्यक्षम और शक्तिशाली सुदृढ़ सघीय सत्ता के प्रबल समर्थक बने रहे।

थामस जेफरसन : जब हम जेफरसन की चर्चा करते है तब वास्तव में हम एक कर्मठ व्यक्ति से एक विचारशील व्यक्ति की ओर बढते हैं। हेमिल्टन की प्रवृत्ति कार्य करने की थी, लेकिन जेफरसन एक विचारशील और दार्शनिक व्यक्ति थे। हेमिल्टन को एक सुदृढ़ शासन-व्यवस्था की स्थापना तथा उसके कार्यक्षम सचालन मे आनन्द आता था, लेकिन जेफरसन को जनता के बीच और उनको सन्तुष्ट देखने मे ही आनन्द आता था, वे चाहे कार्यक्षम हो या नहीं। वर्जीनिया के गवर्नर के रूप मे उनकी कार्यक्षमता को बहुत बढा-चढा कर कहा गया है हालाकि उन्होंने अपने पद को बदनामी के कारण ही त्याग दिया था और वे कोई विशेष कार्यक्षम विदेश मत्री भी प्रमाणित नही हुए थे।

लेकिन एक राजनैतिक विचारक और लेखक के रूप मे वे स्वय अपनी ही पीढ़ी मे बर्क की मृत्यु के बाद सारे विश्व भर मे अपना सानी नहीं रखते थे। जब उन्होंने अपनी कब्र पर कुछ शब्द खोदे जाने का सुझाव दिया तब उन्होंने पदो और कार्यो के बारे मे सुझाव नही दिया, बल्कि विचारधारा की दिशा मे अपने तीन प्रमुख योगो का उल्लेख किया। उनकी कब्र पर लिखा है: "अमरीकी स्वातंत्र्य-घोषणा और धार्मिक स्वाधीनता के लिए वर्जीनिया के विधान के रचयिता तथा वर्जीनिया विश्वविद्यालय के जन्मदाता थामस जेफरसन ने यहा चिरविश्राम लिया।"

जेफरसन का पालनपोषण वर्जीनिया के अव्यवस्थित, असुविधाजनक और बेपरवाह लोगो के वातावरण मे हुआ था। युवावस्था मे वे "नाचने, दावते खाने और मौज उडाने" मे व्यस्त थे। उनको घुडसवारी, वन्य जीवन देखने और वायलिन बजाने का शौक था। उन्होने फील्डिग, स्मालेट और स्टर्न के उपन्यास पढ़े थे तथा ओसियन के प्रति गहरी रुचि रखते थे। इनका बाद का जीवन प्रकृति, पुस्तको और व्यक्तियो के काफी निकट रहा जिन्होने इनकी बौद्धिक गतिशीलता को जागरूक रखा। उन्होंने लगभग आधी दर्जन भाषाओ, गणित, सर्वेक्षण, मेकेनिक, सगीत, स्थापत्य तथा कानून और सरकार सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त किया था। उनका एक बड़ा पुस्तकालय था जिसमे कई महत्वपूर्ण पुस्तको का सग्रह था। उन्होने वनस्पति और जानवरो, इतिहास, राजनीति और शिक्षा के बारे मे बडी मौलिकता और गम्भीरता से लिखा। मोन्टीसिलो के विख्यात भवन तथा वर्जीनिया विश्वविद्यालय के सुन्दर कक्षो की डिजायनें उन्होने तैयार की थी। उनको गहरे, सरसरे और बहुमुखी पत्रलेखन का बडा चाव था और वे अपने समय के उत्कृष्ट पत्रलेखको मे से समझे जाते थे। जेफरसन को मोन्टीसिलो का ऋषि कहा जाता था। इनके यहा प्रायः पचास पचास व्यक्ति रात रात भर रहते थे और वे उसी सौजन्य और शालीनता से विद्वान नीग्रो से मिलते थे जितना कि किसी भद्र यूरोपीय से। उन्होने अपने जीवन भर स्वाधीनता, आराम और सम्पर्क की व्यापकता को प्रिय और मूल्यवान समझा।

राजनैतिक क्षेत्र मे जेफरसन की प्रवृत्ति हेमिल्टन के विपरीत थी जिसकी पुष्टि उनके प्रशिक्षण ने की। वर्षो तक उनको वर्जीनिया से अभिन्न माना जाता था, पहिले एक विधायक नेता के रूप मे और बाद मे वहा के गवर्नर के रूप मे। इस प्रारभिक अवधि मे वे वाशिंगटन तथा देश के अन्य नेताओ

की चिन्ताओं को पूर्ण रूप से कभी नहीं समझ पाये थे। इसके विपरीत उनको लगता था कि राज्यों द्वारा ही उनकी सभी मांगों को पूरा करना कितना कठिन है। जब वे फ्रान्स में राजदूत बन कर विदेश गये, जहां पर उनको अमरीकी कर्ज के बारे में वार्ता करने के लिए भेजा गया था, उस समय उनको इस बात का अनुभव हुआ कि विदेशी मामलों में एक सख्त, सुदृढ़ राष्ट्रीय सरकार काफी सहायक हो सकती है, लेकिन फिर भी अनेक अन्य मामलों में वे सुदृढ़ सरकार के विरोधी थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा था: "मैं एक अत्यन्त शक्तिशाली सरकार का मित्र नहीं हूं।" उन्होंने तो यहां तक कहा था कि "संघीकरण के दुर्बल अनुच्छेद भी एक विलक्षण रूप में पूर्ण व्यवस्थाएं हैं।" उनको डर था कि कहीं सुदृढ़ सरकार जनता पर हावी न हो जाय। स्वाधीनता के लिए उन्होंने ब्रिटिश सत्ता, धार्मिक नियन्त्रण, श्रीमन्त जमींदारों तथा धार्मिक असमानताओं के विरुद्ध संघर्ष किये। वे इगेलिटेरियन जनतंत्र में विश्वास रखते थे। उनको शहरों, बड़े उत्पादन प्रतिष्ठानों, तथा बड़े बैंकिंग और व्यावसायिक संगठनों से घृणा थी। उनका विचार था कि इनसे असमानता में वृद्धि होती है, और हालांकि उन्होंने अपने बाद के वर्षों में यह माना कि देश की आर्थिक स्वतंत्रता के लिए औद्योगीकरण करना आवश्यक है, फिर भी उनका विश्वास था कि यदि अमरीका मुख्यतया एक कृषिप्रधान राष्ट्र बना रहे तो वह सबसे सुखी देश होगा।

हेमिल्टन का महान उद्देश्य देश के लिए एक अधिक कार्यक्षम व्यवस्था का आयोजन करना था, लेकिन जेफरसन का महान उद्देश्य था जनता को अधिक स्वाधीनता देना। संयुक्त राष्ट्र अमरीका को इन दोनों ही बातों की आवश्यकता थी। देश को एक ऐसी सुदृढ़ राष्ट्रीय सरकार की आवश्यकता थी जो सामान्य व्यक्ति के जीवन में हस्तक्षेप न करे। यदि अमरीका में केवल हेमिल्टन या जेफरसन का ही जन्म हुआ होता तो उसको नुकसान होता। यह सौभाग्य की बात है कि यहां दोनों विभूतियों ने जन्म लिया और समय पर अपनी अपनी प्रवृत्तियों का विस्तार किया और कुछ हद तक परस्पर समझौता भी।

हेमिल्टन के आर्थिक कदम : वाशिंगटन के अर्थमंत्री बनने के पश्चात् हेमिल्टन ने ऐसे महत्वपूर्ण कदम उठाये जिनसे वे अमरीका के इतिहास में एक महानतम अर्थमंत्री बन गये। उनका कार्यक्रम न केवल प्रभावशाली बल्कि रचनात्मक भी था। अनेक लोगों की इच्छा थी कि लगभग ५६,०००,०००

डालर के राष्ट्रीय ऋण को त्याग दिया जाय या उसका आंशिक रूप से भुगतान किया जाय, लेकिन उनके विरोध के बावजूद हेमिल्टन ने उसका पुनर्गठन किया और सारे ऋण को अदा करने की योजना बनायी। क्रान्ति की सहायतार्थ विभिन्न राज्यो द्वारा ली गयी लगभग १८० लाख डालर से भी अधिक की बकाया कर्ज की रकम को सघीय सरकार द्वारा अदा करने की एक योजना को हेमिल्टन ने लागू किया। उन्होंने प्रमुख रूप से बैंक आफ इंग्लैण्ड के नमूने पर आधारित बैंक आफ यूनाइटेड स्टेट्स की स्थापना की। विख्यात उत्पादन प्रतिवेदन (रिपोर्ट आन मेन्युफेक्चर्स) लिखते हुए उन्होंने राष्ट्रीय उद्योगों के विकास के लिए सामान्य कराधान करने की सिफारिशें की और कांग्रेस ने एक कराधान कानून पारित किया जिसने बहुत कम कर लगाये जाने के बावजूद अमरीकी उत्पादकों को स्पष्ट सहायता प्रदान की। अन्त मे, हेमिल्टन ने सभी तरह की शराब पर आबकारी कर लगाने सम्बन्धी एक कानून पास करवाया।

इन कदमो का तात्कालिक प्रभाव पडा और इनका असर तीन दिशाओ मे हुआ। हेमिल्टन ने राष्ट्रीय सरकार की इज्जत को एक सुदृढ आधार पर स्थापित किया और उसके लिए आवश्यक राजस्व का प्रबध किया। उन्होंने उद्योग और वाणिज्य को भी प्रोत्साहित किया। सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह हुई कि इन कदमो के फलस्वरूप प्रत्येक राज्य के शक्तिशाली वर्गों के लोगो को राष्ट्रीय सरकार से सम्बद्ध कर दिया। राष्ट्रीय ऋण के अदा होने के पश्चात् और राज्यो के ऋणो का भुगतान आरम्भ होने पर अनेक लोग, जिनके पास ऋण सम्बन्धी प्रायद्वीपीय और राज्य के ऋण सम्बन्धी कागजात थे, अपनी रकम की वापसी के लिए नयी सरकार का मुंह ताकने लगे। इसी प्रकार नये तटकर कानून के फलस्वरूप समृद्ध निर्माता भी सरकार से आश रखने लगे। राष्ट्रीय बैंक ने धनी व्यक्तियो के प्रभावशाली वर्गों का समर्थन प्राप्त कर लिया था क्योंकि उसने आर्थिक लेन-देन को अधिक आसान और सुरक्षित बना दिया था। आबकारी कर ने न केवल राजस्व प्राप्त किया था, बल्कि उसे प्रत्येक स्थान के शराबनिर्माण के केन्द्रो से एकत्रित किये जाने के फलस्वरूप आम-जनता को सघीय सरकार की सत्ता का अनुभव होने लगा। सक्षेप मे, हेमिल्टन की नीतियो ने उन जायदादवाले व्यक्तियो का एक ऐसा सुदृढ वर्ग तैयार कर दिया था जो राष्ट्रीय सरकार का दृढ़ता के साथ समर्थन करता था और उसको कमजोर करनेवाले प्रयत्नो का प्रतिकार

करता था, और इस प्रकार से उसने सरकार को पहले की अपेक्षा कही अधिक प्रभावशाली बना दिया।

संविधान की व्याख्या : 'निहित अधिकार' : हेमिल्टन ने बस इतना ही नहीं किया। उसके कदमो के लिए सविधान के एक नये और महत्वपूर्ण व्याख्या की आवश्यकता थी। हेमिल्टन ने जब एक राष्ट्रीय बैक की अपनी योजना प्रस्तुत की, तब राष्ट्रीय अधिकारो के विरुद्ध राज्य के अधिकारो मे विश्वास रखनेवालो तथा बडे निगमो (कारपोरेशनो) और धन के प्रभाव से भयभीत होनेवाले सभी लोगो की ओर से बोलते हुए जेफरसन ने उसका विरोध किया। वाशिगटन के पास उन्होंने एक दृढ विरोध-पत्र भेजा। उन्होने कहा कि सविधान मे सघीय सरकार के अधिकारो की स्पष्ट व्याख्या की गयी है और अन्य अधिकार राज्यो के लिए सुरक्षित किये गये हैं। उन्होने आगे कहा कि सविधान मे एक बैक की स्थापना के बारे मे कही नही लिखा गया है। यह एक अच्छा तर्क मालूम होता था। वाशिगटन इस विधेयक पर अपना निषेधाधिकार का प्रयोग करने ही वाले थे। लेकिन हेमिल्टन ने इससे भी अधिक युक्तिपूर्ण तर्क प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय सरकार के सभी अधिकारो को स्पष्ट रूप से शब्दो मे नही लिखा जा सकता है क्योकि उसका अर्थ होगा असीम विवरण। अधिकारो के वृहद् समूह को सामान्य अनुच्छेदो के जरिये ही निहित किया जा सकता है, और इनमे से एक अनुच्छेद मे काग्रेस को अधिकार दिया गया है कि वह "इस प्रकार के सभी कानून बनाये जो आवश्यक और उचित हो" ताकि अन्य प्रदत्त अधिकारों का पालन किया जा सके। इस अनुच्छेद का उल्लेख करते हुए हेमिल्टन ने "उचित" शब्द पर बल दिया। उदाहरण के तौर पर, सविधान के युद्ध सम्बन्धी अधिकारो मे सरकार को किसी क्षेत्र पर विजय पाने का स्पष्ट अधिकार प्राप्त है। अतः सरकार को इस विजित क्षेत्र पर प्रशासन करने का "इसके फलस्वरूप अधिकार प्राप्त" है, हालाकि सविधान मे इसके बारे मे कोई उल्लेख नही है। सविधान मे कहा गया है कि सरकार वाणिज्य और जहाजी व्यापार का नियमन करेगी, अतः उसको लाइट हाउस बनाने का इसके "फलस्वरूप अधिकार" प्राप्त है। इसी प्रकार सविधान मे घोषित किया गया है कि राष्ट्रीय सरकार को कर लगाने और वसूल करने, ऋण अदा करने और रकम उधार लेने का अधिकार प्राप्त है। कर एकत्रित करने, हुण्डियों का दूर के स्थानो पर भुगतान करने और रकम लेने मे एक

राष्ट्रीय बैंक वास्तविक रूप से सहायक होगा। इसलिए सरकार को अपने "निहित अधिकारों" के अन्तर्गत, राष्ट्रीय बैंक की स्थापना करने का अधिकार प्राप्त है। वाशिंगटन ने इस तर्क को स्वीकार किया और हेमिल्टन के विधेयक पर हस्ताक्षर कर दिये।

व्हिस्की के विद्रोही : जे की सन्धि : जेफरसन ने सोचा था हेमिल्टन का आबकारी कानून "घृणास्पद" है और वाशिंगटन को लिखा कि "यह एक विवेकहीन कदम है क्योकि इसके कार्यान्वय मे कुछ अंशो मे सरकार वचनबद्ध हो गयी है और जिसके कार्यान्वय मे विरोध होना बहुत सभव है, लेकिन उसके लिए बल प्रयोग करना अव्यवहारिक है।" इससे उनका अर्थ प्रमुख रूप से पेसिलवानिया था। यह प्रदेश स्काटलैण्ड और आयरलैण्ड के हठीले व्यक्तियो से भरा हुआ था। उनको पूर्व की ओर से पहाडो के पार अपने अनाजो को बेचने के लिए जाने के साधन उपलब्ध नही थे। उनको धन की आवश्यकता थी और उनको व्हिस्की बनाने की स्काटलैण्ड की कला ज्ञात थी। इसलिए उन्होंने आसानी से शराब बनाने के लिए लगभग प्रत्येक खेत के निकट भट्टी बना ली थी। लोगो को आबकारी कर इस निजी फसल पर अनुचित लगा। इसके अलावा इस कानून के जरिये इनके व्यवसाय मे हस्तक्षेप किया जा सकता था। पिट्सबर्ग के ठीक दक्षिण के चार गावों मे क्रोधित नेताओ ने खुला विद्रोह शुरू कर दिया। इस पर वाशिंगटन ने एक चेतावनी की घोषणा की लेकिन लोगो ने उसकी परवाह न की, और १७९४ मे जब गवर्नर ने राजस्व अधिकारियों का विद्रोह करनेवाले व्यक्तियों को गिरफ्तार किया तब हिसात्मक घटनाए शुरू हो गयीं। उपद्रवी भीड ने सघ के निरीक्षक को अपनी जान लेकर भागने को बाध्य किया और पिट्सबर्ग की फौज की छोटी टुकडी को भी धमकी दी। गवर्नर को फौजो का उपयोग करना चाहिए था, लेकिन पश्चिमी मतदाताओ मे अपने अप्रिय हो जाने के भय से उन्होंने वैसा नही किया।

इसके बाद वाशिंगटन ने हेमिल्टन के परामर्श से सख्त कारवाई करने के का निश्चय किया। इस 'विद्रोह' को एक हजार सिपाहियों की सेना आसानी से दबा सकती थी जो वास्तव मे केवल एक अव्यवस्थित प्रदर्शन ही था। लेकिन हेमिल्टन सरकार की भारी शक्ति के नमूने को प्रदर्शित करने के इच्छुक थे। उन्होंने वर्जीनिया, मेरीलैण्ड, पेसिलवानिया से पन्द्रह हजार फौजो को बुलावा भेजा—यह सख्या लगभग उतनी ही बडी थी जिसने कार्नवालिस को

परास्त किया था। अप्रभावित किसानों में से कूच करती हुई इस सेना ने असन्तुष्ट लोगों का मर्दन कर दिया। हेमिल्टन उस सेना के साथ गये और १८ व्यक्तियों को फिलाडेल्फिया में मुकदमा चलाने के लिए पकड़वा लाये। लेकिन केवल दो व्यक्तियों को अपराधी पाया गया और उनको भी वाशिंगटन ने माफ़ कर दिया।

इन व्हिस्की-विद्रोहियों ने बड़ी उत्तेजना पैदा की, सत्तावादी लोगों द्वारा सरकार के सख्त कदमों का समर्थन हुआ और सत्ता-विरोधी लोगों द्वारा इन कदमों को अनावश्यक और फौजी रौब कह कर भर्त्सना की गयी। लेकिन हेमिल्टन की नीति ने राष्ट्रीय सत्ता के सम्मान को बढ़ा दिया। लेकिन साथ साथ इस नीति ने आम जनता में अधिक विरोध और अविश्वास पैदा कर दिया और इसे गलत कदम ठहराया। जैसे ही जेफरसन के समर्थक सत्तारूढ़ हुए उन्होंने आबकारी कर को रद्द कर दिया।

विदेशी मामलों में वाशिंगटन के प्रशासन की नीति भी लोकप्रिय नहीं थी। १७९३ में फ्रांस और ब्रिटेन के बीच यूरोप में युद्ध आरम्भ हुआ। इसकी प्रतिक्रिया अमरीका में भी जोरों से हुई। विशेष रूप से न्यू इंग्लैण्ड में व्यावसायिक वर्ग तथा अनेक धार्मिक व्यक्ति गणराज्य से घृणा करते थे क्योंकि उसने जायदाद सम्बन्धी हितों में परिवर्तन कर दिया था और एक विवेकशील पद्धति लागू की थी। दक्षिण के किसानों और शहरों के मेकेनिकों की सहानुभूति फ्रांसीसियों के साथ थी। वाशिंगटन ने बड़ी बुद्धिमानी से एक तटस्थ घोषणा जारी की। इसका इतनी जोरों से प्रतिकार किया गया कि अमरीका में फ्रांस के तेजमिजाज राजदूत, गिनेट ने उसकी अवहेलना की। उन्होंने अपनी सरकार को लिखा कि वाशिंगटन एक बूढ़ा व कमजोर व्यक्ति है जिसके ऊपर अंग्रेजों का प्रभाव है। उन्होंने अमरीकी जनता से सीधी अपील करने की बातचीत की और जब सरकार ने अमरीकी बन्दरगाहों को फ्रांसीसियों के निजी सशस्त्र जहाजों के सञ्चालन के लिए बन्द कर दिया तब उसने उक्त आदेश का उल्लंघन किया। इस पर वाशिंगटन ने क्रोधित होकर उत्तर मांगा कि क्या वे इस सरकार के आदेशों का उल्लंघन करना चाहते हैं? गिनेट को घर लौट जाने का आदेश दिया गया। लेकिन तब तक फ्रांस में पासा पलट गया था। गिनेट की जान खतरे में पड़ गयी थी। वे दण्ड के भय से वहां नहीं गये और उन्होंने न्यूयार्क के गवर्नर की लड़की से शादी करली तथा अमरीका में ही वृद्धावस्था तक आराम से जीवन बिताते रहे। उनके

इस व्यवहार से अमरीका मे फ्रान्सीसी समर्थक दल को बडा लज्जित होना पडा। फिर भी १७९४ मे इस दल ने इंग्लैण्ड से युद्ध करने की माग की। उनकी इस माग का प्रमुख आधार यह था कि अंग्रेजों ने फ्रेन्च वेस्टइण्डीज को जाते हुए अमरीकी जहाजों को गैरकानूनी तौर से पकड लिया था और अंग्रेज १७८३ की सन्धि का उल्लघन करते हुए अब भी उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रो मे केन्द्र स्थापित किये हुए थे। यदि इस समय अमरीका ने युद्ध छेडा होता तो युद्ध स्वयं उसके लिए बडा घातक होता। वाशिंगटन ने ग्रेटब्रिटेन से अनेक बातो पर समझौता करने के लिए एक अनुभवी कूटनीतिज्ञ जान जे को, जो इस समय मुख्य न्यायाधीश थे, एक असाधारण राजदूत के रूप में लन्दन भेजा। वाशिगटन को जान जे से श्रेष्ठ व्यक्ति मिलना कठिन था। जे का विश्वास था कि 'राजनीति मे दूत कला के स्थान पर अच्छा स्वभाव व बुद्धिमानी काफी कार्य कर सकती है।' इस उदारता और जागरूकता के साथ उन्होंने एक सन्धि की कि जिससे अमरीका को यथासाध्य लाभ प्राप्त हुआ। उन्होंने इस बात का आश्वासन प्राप्त किया कि पश्चिमी केन्द्रो को, जिस पर अंग्रेजी जहाजो द्वारा पकडे गये अमरीकी जहाजो की हानि के दावे को एक कमीशन के सुपुर्द किया जाये और अन्त मे उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इण्डीज और वेस्ट इण्डीज मे महत्त्वपूर्ण वाणिज्यिक विशेषाधिकारों को प्राप्त कर लिया गया। इस सन्धि पर लोगों ने बडी भयकर उत्तेजना प्रदर्शित की। क्रोधित भीड ने जे के पुतले जलाये। कुपित वक्ताओ और सम्पादकों ने वाशिंगटन के ऊपर कीचड उछाला। लेकिन वाशिगटन और जे ने जनता के इस अस्थायी असन्तोष पर कोई ध्यान नही दिया। कुछ सशोधनो के साथ सिनेट ने इस सन्धि को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार व्यापारियों और जहाज के मालिकों ने राष्ट्रीय सरकार के प्रति एक बार फिर आभार व्यक्त किया।

जान आदम्स : जब वाशिंगटन ने अवकाश ग्रहण किया तब सुयोग्य और अत्यन्त विचारशील व्यक्ति जान आदम्स ने उनका पद ग्रहण किया। वे सख्त, हठी और झक्की स्वभाव के थे। उनके हठीले और चातुर्यहीन स्वभाव के कारण यह बात स्पष्ट हो गयी कि उनका पद सदा सकट मे रहेगा। हेमिल्टन की सलाह की वे परवाह नही करते थे और प्रेसिडेण्ट बनने के पहले भी वे उनसे झगड चुके थे और इस प्रकार से उनका दल विभाजित हो गया और मन्त्रि-मण्डल मे भी फूट पड़ गयी, क्योंकि विभागों के प्रमुख दलीय मामलो मे

हेमिल्टन के दृष्टिकोण का ही समर्थन करते थे। दक्षिण के बहुत से लोग आदम्स को उनके न्यू-इग्लैण्ड के होने के कारण घृणा करते थे और दलीय भावनाओ मे उत्तरोत्तर कटुता बढती गयी। इसके अलावा अन्तरराष्ट्रीय वातावरण भी पहले की अपेक्षा अधिक विक्षुब्ध हो गया था।

इस बार फ्रास से युद्ध होने की नौबत आ पहुँची थी। फ्रासीसी गणराज्य का शासन करनेवाली सरकार जे की सन्धि से कुपित हो उठी थी और उसने आदम्स द्वारा भेजे गये राजदूत का अपमान कर दिया था और वास्तव मे उसको गिरफतार करने की धमकी दी थी। इस तिरस्कारपूर्ण घटना ने अमरीकी भावनाओ को जोरों से उत्तेजित कर दिया। जब आदम्स ने कठिनाइयो को सुलझाने के लिए तीन कमिश्नरो को पेरिस भेजा तो उनको वहाँ दूसरे ही ढग से अपमानित किया गया। फ्रासीसी विदेशी मामलों के अधिकारी टेलेरैण्ड ने उनके साथ बातचीत करने से साफ इन्कार कर दिया। उनके दलालो ने, जिन्हे बाद मे अमरीकी प्रतिनिधियों ने क, ख, ग कह कर पुकारा, सुझाव दिया था कि यदि वे अढाई लाख डालर की रिश्वत दे तो कुछ किया जा सकता है और अन्त मे टेलरैण्ड ने एक रूखा अपमानजनक सन्देश भेज कर वार्ता भंग कर दी। उस सन्देश मे उन्होंने अमरीका पर दोहरे बर्ताव का लाछन लगाया था। क, ख, ग के कागजातों का प्रकाशन होने के पश्चात् अमरीका मे क्रोध की भावना और भी बढ़ गयी। फौजों की भर्ती की गयी और नौसेना मे भी वृद्धि की गयी। १७६८ मे अनेक छुटपुट समुद्री झडपे हुई जिनमे अमरीकी जहाजों ने फ्रास के जहाजों को एक के बाद एक परास्त किया। कुछ समय तक एक खुला युद्ध अनिवार्य बन गया था। सकट के इस काल मे आदम्स के सुदृढ व्यक्तिवाद ने राष्ट्र की अच्छी सेवा की। उन्होने हेमिल्टन की सलाह को एक तरफ रख कर, जो युद्ध चाहते थे, अचानक एक नये राजदूत को फ्रास भेजा और नेपोलियन ने, जो उस समय सत्तारूढ हो चुके थे, उसका अच्छी तरह स्वागत किया। फलस्वरूप सघर्ष की सभावनाए शीघ्र ही समाप्त हो गयी। लेकिन दुर्भाग्य से घरेलू मामलो मे आदम्स ने सकीर्णता और चातुर्यहीनता से बर्ताव किया जिसके लिए अमरीकी जनता ने उनको माफ नही किया। उन्होने तथा सघीय काग्रेस ने ऐसे अवाच्छनीय चार कानून बनाये, जिन्होने प्रशासन को बरबाद करने मे काफी योग दिया। पहला कानून था कि किसी विदेशी व्यक्ति को अमरीका का नागरिक बनने के पहले ५ वर्ष के बजाय १४ वर्ष की अवधि तक रहना होगा। दूसरे

कानून ने राष्ट्राध्यक्ष को किसी भी खतरनाक विदेशी को दो साल के लिए देश से बाहर करने का अधिकार दिया था। तीसरे कानून मे यह व्यवस्था की गयी थी कि युद्ध के समय विदेशियो को बाहर भेजा जा सकता है या उनको राष्ट्राध्यक्ष की इच्छानुसार कैद किया जा सकता है। चौथे कानून मे सरकार के किसी कानूनी कदम के विरुद्ध षड्यंत्र करना या किसी सार्वजनिक अधिकारी के कार्य मे अवरोध उत्पन्न करना और यहाँ तक कि उसकी आलोचना करना एक भारी अपराध माना गया था।

ये विदेशी और देशद्रोही कानून अत्यधिक अपमानजनक प्रतीत होते थे और व्यक्तिगत तथा नागरिक स्वाधीनताओं का भारी अपहरण करने वाले थे। जेफरसन और मेडीसन ने जिनका विश्वास था कि सघवादी राष्ट्रीय सरकार मे खतरनाक अधिकारों को केन्द्रित किया जा रहा है, इनके विरुद्ध मोर्चा लेने का दृढ़ सकल्प किया। उन्होंने दो तरह के प्रस्तावो को लिखा जिनमे से जेफरसन के प्रस्ताव केन्टकी के विधानमण्डल द्वारा और मेडीसन के प्रस्ताव वर्जीनिया विधान सभा द्वारा स्वीकृत किये गये। इस सिद्धान्त को प्रतिपादित करते हुए कि राष्ट्रीय सरकार को राज्यों के समन्वय से स्थापित किया गया है, केन्टकी और वर्जीनिया के प्रस्तावो ने घोषित किया कि राज्य किसी अवैधानिक कानून पर निषेधाधिकार का प्रयोग कर सकता है।

१८०० में देश मे परिवर्तन के योग्य वातावरण बन गया था। वास्तव मे इस वर्ष महान राजनैतिक उथल-पुथल हुई। वाशिंगटन और आदम्स के नेतृत्व मे सघवादियों ने एक सुदृढ़ सरकार की स्थापना मे काफी कार्य किया। १७८९ की तरह अब किसी ने राष्ट्र एवं विधान के अस्तित्व के बारे मे सन्देह व्यक्त नही किया। लेकिन सघवादियों ने इस बात की ओर ध्यान नही दिया कि अमरीकी सरकार की रूपरेखा प्रमुख रूप से लोकप्रिय होनी चाहिए। उन्होंने इस प्रकार की नीतियों को अपनाया जिन्होंने विशेष वर्गों को ही सरकार का नियन्त्रण सौपा और उनको लाभान्वित किया। जेफरसन ने जो वास्तव मे एक लोकप्रिय नेता के रूप मे आगे बढ़े थे—धीरे धीरे उन्होंने छोटे किसानो, कारीगरो, दूकानदारों तथा अन्य धार्मिकों के विशाल समुदाय को अपने पक्ष मे कर लिया था। उनका उद्देश्य था कि देश मे एक जनता की सरकार की स्थापना हो, न कि कुछ विशेष लोगों की। इस प्रकार की सरकार की स्थापना के लिए उन्होंने काफी प्रयत्न भी किया था। १८०० के चुनाव मे आदम्स ने न्यू इंग्लैण्ड मे विजय प्राप्त की थी। लेकिन समस्त दक्षिणी राज्यों मे विरोधियो

सातवाँ परिच्छेद

राष्ट्रीय एकता का अभ्युदय

जेफरसन का प्रशासन : जिस रूप मे जेफरसन ने १८०१ मे राष्ट्राध्यक्ष-पद ग्रहण किया, उससे इस तथ्य को बल मिला कि प्रजातंत्र ही सत्तारूढ़ हुआ है। सर्वप्रथम वाशिंगटन मे समारोह हुए, जिसे हाल ही मे राजधानी बनाया गया था। तब तक वह पोटोमेक के उत्तरी किनारे पर स्थित केवल एक वन्यग्राम था। उसके रास्ते दलदली थे क्योकि वे झाड़ियो को साफ कर दलदली जमीन मे से होकर बनाये गये थे। उस समय वहाँ केवल कुछ गन्दे मकान ही थे; एक भूतपूर्व मंत्रि-मण्डल के अनुकूल उनमे से अधिकाश छोटे और तंग झोपडे ही थे। गावेर्न्यूर मारिस ने व्यंग मे कहा था कि राजधानी का भविष्य महान है। "हमे यहाँ मकान, गोदाम, रसोईघर, जानवर, व्यक्ति, सुहृद महिलाएँ और इसी तरह की अन्य छोटी-मोटी वस्तुएँ ही चाहिएँ ताकि हमारा नगर आदर्श बन सके।" जेफरसन वाशिंगटन व आदम्स की टीमटामवाली पोशाक से उदासीन एक पहाडी पर स्थित अपने साधारण बोर्डिंग हाउस मे अनेक मित्रों के साथ नयी राजधानी मे रहने लगे। सिनेट चेम्बर मे प्रवेश करते हुए उन्होंने अपने तात्कालिक विवेकहीन प्रतिद्वंद्वी उप-राष्ट्राध्यक्ष बर से हाथ मिलाया। एक अन्य व्यक्ति, जिस पर उन्हे विश्वास न था, करीब ही खडे थे। वे थे एक दूर के रिश्तेदार, वर्जीनिया के जान मार्शल जिन्हे आदम्स ने कुछ समय पहिले ही मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया था। जेफरसन ने नये राष्ट्राध्यक्ष की हैसियत से जो भाषण दिया वह अब तक दिये जानेवाले भाषणो के इतिहास मे एक श्रेष्ठ भाषण था।

जेफरसन के भाषण का कुछ अंश परमावश्यक समझौते की भावना से ओत-प्रोत था। जो राजनीतिक वादविवाद अभी समाप्त हुआ था, वह इतना कटु और निन्दापूर्ण था कि कई व्यक्ति, विशेषकर न्यूयार्कवासी, यह विश्वास करते थे कि जेफरसन एक नास्तिक, सामाजिक भेद के सिद्धान्त को तोडनेवाले और यहाँ तक कि एक अराजकवादी है। जेफरसन ने नागरिको से विनम्र भाव से

निवेदन किया कि उनको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि राजनीतिक असहिष्णुता वर्गीय असहिष्णुता के समान ही बुरी है और सब के संरक्षण के उद्देश्य से अमरीकावासियों को संगठित होना चाहिए जिससे कि प्रतिनिधि सरकार प्रभावशाली बन सके और राष्ट्रीय साधनों का विकास हो सके। भाषण के अन्तिम भाग में नये शासन के राजनीतिक सिद्धान्तों की चर्चा थी। उन्होंने कहा, 'देश को बुद्धिमान और मितव्ययी सरकार की आवश्यकता है, जो देशवासियों में व्यवस्था स्थापित रखे· किन्तु वह सरकार उन्हें स्वयं उद्योग और सुधार करने के प्रयत्नों के लिए स्वतंत्र रखे और जनता के श्रम से अर्जित रोटी उनके मुँह से नहीं छीने। उसे राज्यों के अधिकारों की सुरक्षा करनी चाहिए। उसे सभी राष्ट्रों के साथ ईमानदारी से मित्रता स्थापित करने का प्रयत्न करना चाहिए किन्तु किसी के साथ उलझनपूर्ण मित्रता नहीं स्थापित करनी चाहिए।' यह एक ऐसा मुहावरा था जो बहुत दिनों तक याद रखा गया। जेफरसन ने वचन दिया कि सब को सम्पूर्ण वैज्ञानिक प्रभाव द्वारा वे 'सैनिक अधिकारियों के ऊपर नागरिक अधिकारियों की श्रेष्ठता' को सुरक्षित रखने और रक्त क्रांति को टालने के लिए लोकप्रिय चुनावों का मार्ग अपना कर सुदृढ बना देंगे।

जेफरसन का व्हाइट हाउस में राष्ट्राध्यक्ष के रूप में दो अवधियों तक रहने से ही, देश भर में प्रजातान्त्रिक कार्यवाहियों को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला। उन्होंने राष्ट्राध्यक्ष पद के साथ ठाटबाट और वैभवशाली रीतिरिवाजों को समाप्त कर दिया। साप्ताहिक दरबार बन्द कर दिये गये, दरबारी तौरतरीकों को समाप्तप्राय· करके, "एक्सीलेन्सी" जैसे सम्मान के खिताबों को समाप्त कर दिया गया। जेफरसन एक सामान्य नागरिक और उच्च अधिकारी का समान रूप से सम्मान करते थे। वे खुद अपने को जनता का ट्रस्टी मान कर चले तथा अपने सहायकों को भी ऐसे ही चलने की शिक्षा दी। उन्होंने कृषि को प्रोत्साहन दिया, आदिवासियों की जमीनें खरीद कर भूमि का बन्दोबस्त किया और उनको पश्चिम की ओर बसने में सहायता प्रदान की। यूरोप में अत्याचार से पीडित लोगों के लिए अमरीका को स्वर्गतुल्य बनाने के उद्देश्य से उन्होंने आवास सम्बन्धी उदार कानूनों के जरिये प्रवास को प्रोत्साहन दिया। उन्होंने अन्य राष्ट्रों के साथ शान्ति बनाये रखने के लिए भरसक प्रयत्न किया क्योंकि युद्ध का अर्थ होता अधिक सरकारी कार्यवाही, अधिक कर और स्वाधीनता में कमी। स्विटजरलैण्ड में जन्मे एक दूरदर्शी अर्थशास्त्री गिलटिन

१८२५-१८५० मे पश्चिम के अभियान मे प्रयुक्त मुख्य सड़कें व नहरें
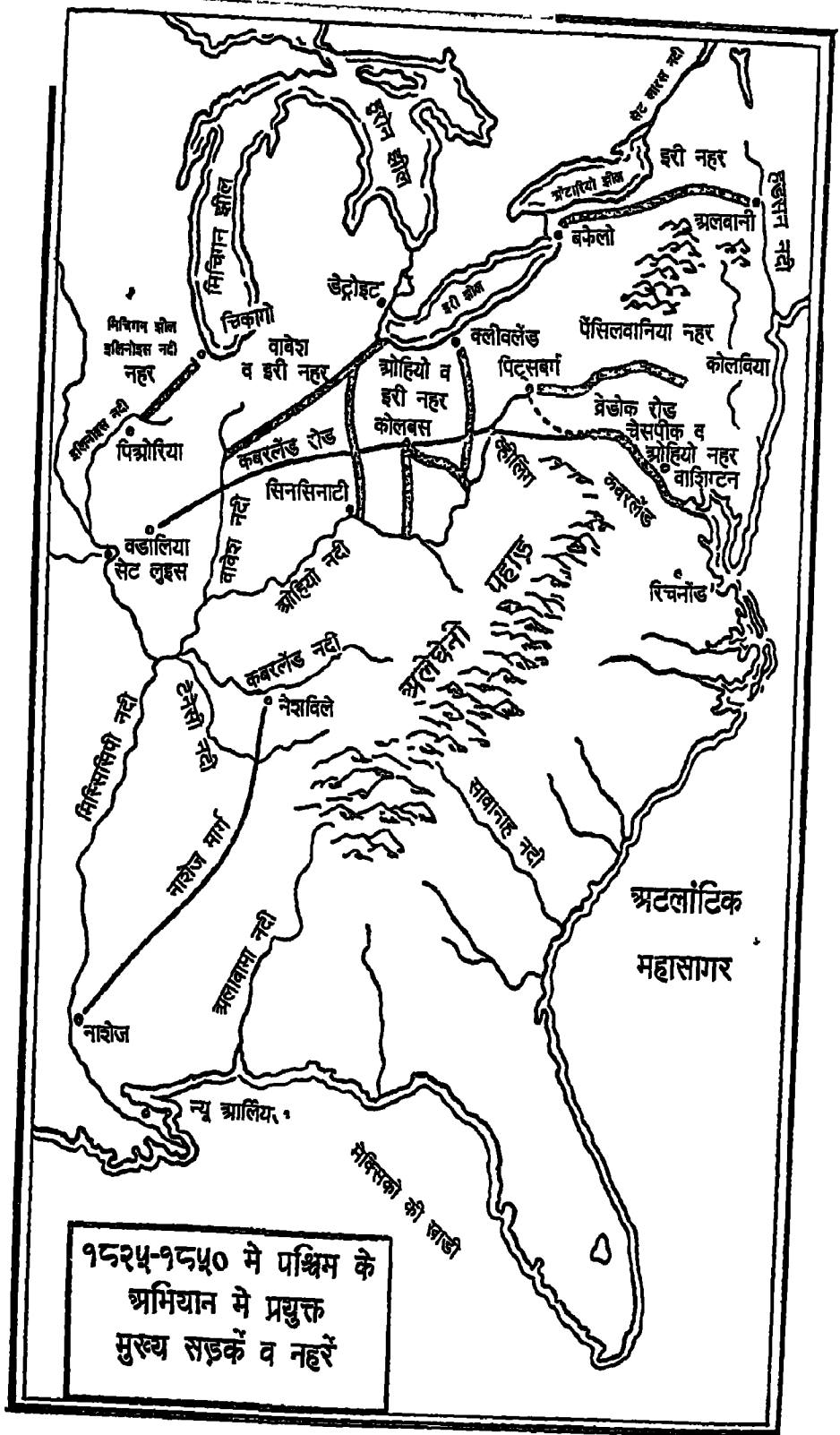
को गैलेटिन ने वित्त-सचिव नियुक्त किया और उन्हें सरकारी खर्च में कमी करने तथा राष्ट्रीय ऋण को चुकाने की दिशा में प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप १८०२ तक राष्ट्रीय आय १ करोड़ ४५ लाख डालर और खर्च ८५ लाख डालर हुआ और ६० लाख डालर की रकम बचत के रूप में उपलब्ध हुई। १८०३ के अन्त तक मितव्ययी गैलेटिन ने राष्ट्रीय ऋण को घटा कर ७ करोड़ ५० लाख डालर तक कर दिया। सारे राष्ट्र में जेफरसन-वाद की लहर व्याप्त हो गयी और जनसाधारण ने इसे सराहा। एक राज्य के पश्चात दूसरा राज्य मताधिकार और नियुक्ति के लिए निर्धारित जायदाद सम्बन्धी शर्ते रद्द कर रहा था और कर्जदारों तथा तत्सम्बंधी अपराधियों से सम्बन्धित अधिक उदार कानून पारित किया जा रहा था।

लेकिन भाग्य ने जेफरसन और देश को एक ऐसी दिशा में मोड़ दिया, जिस दिशा में उनको मुड़ने की इच्छा नहीं थी। जो कदम उठा कर जेफरसन ने, जो संविधान के 'दृढ़ निर्माण' के एक रचयिता थे, संघीय सरकार के अधिकारों का अत्यधिक विस्तार कर दिया था और जब उन्होंने पद का त्याग किया तो युद्ध जिससे उन्हें घृणा थी, सामने ही खड़ा था।

लुइसियाना का क्रय : बर का षड्यंत्र : उनके एक कार्य ने राष्ट्र के विस्तार क्षेत्र को दुगुना कर दिया। मिस्सिसिपी के पश्चिम का प्रदेश, जिसके मुहाने पर न्यू आर्लियन्स का बन्दरगाह था, काफी समय से स्पेन के अधिकार में था। किन्तु जेफरसन के पदारूढ़ होने के पश्चात अविलम्ब ही नेपोलियन ने कमजोर स्पेनी सरकार को लुइसियाना का विस्तृत क्षेत्र पुनः फ्रांस को वापस करने के लिए बाध्य किया। नेपोलियन के ऐसा करते ही दूरदर्शी अमरीकी आशंका और क्रोध से तिलमिला उठे। ओहियो और मिस्सिसिपी घाटियों के अमरीकी उत्पादन को जहाजों द्वारा निर्यात करने का न्यू आर्लियन्स ही एकमात्र बन्दरगाह था। नेपोलियन की यह योजना थी कि अमरीका के पश्चिम की ओर फ्रांस का एक महान औपनिवेशिक साम्राज्य हो, जो उत्तरी अमरीका के एंग्लो-सेक्सन उपनिवेशों के सन्तुलन के रूप में रहे। नेपोलियन की इस योजना ने सभी आन्तरिक प्रदेशों के व्यापारिक अधिकारों और सुरक्षा के लिए संकट पैदा कर दिया था। स्पेन जैसे दुर्बल राष्ट्र ने पहले से ही दक्षिण-पश्चिमी देश के लिए सारे विवाद खड़ा कर रखा था। फिर फ्रांस जो संसार का सबसे शक्तिशाली राष्ट्र था उसके लिए क्या कसर छोड़ देता?

जेफरसन ने दृढतापूर्वक कहा कि यदि फ्रास ने लुइसियाना पर अधिकार कर लिया तो उसी क्षण हमे ब्रिटेन और ब्रिटिश गुट्ट के साथ गठबन्धन कर लेना चाहिए और यूरोपीय युद्ध मे दागा गया प्रथम गोला न्यू आरलियन्स के विरुद्ध एंग्लो-अमरीकी सेना के अभियान का सकेत होगा। नेपोलियन को विश्वास हो गया कि अमरीका और इग्लैण्ड मिलकर ऐसा ही प्रहार करेगे। उसे ज्ञात था कि आमीन्स की शाति कुछ काल के लिए ही होगी और उसके पश्चात् ब्रिटेन से युद्ध अनिवार्य है और युद्ध प्रारम्भ होते ही लुइसियाना निश्चय ही हाथ से निकल जायेगा। फ्रास शासित हैटी का नीग्रो गवर्नर टौसियान्टैल्ल जब बूवरचर के महान विद्रोह का दमन करने मे अयोग्य ठहरा वह भी इससे निरुत्साहित हो गया था। १८०२ मे हैटी विद्रोहियो और शीतज्वर ने मिल कर २४ हजार फ्रासीसी सेना का नाश कर दिया था। अतएव उसने अपने खाली कोष को भरने और लुइसियाना को ब्रिटिश अधिकार से बाहर रखने का निश्चय किया। उसने लुइसियाना अमरीका को बेच कर उसकी मित्रता प्राप्त करने का प्रयत्न किया। १ करोड ५० लाख डालर मे ही यह विस्तृत क्षेत्र गणतत्र के अधिकार मे आ गया। जेफरसन ने उसके क्रय हेतु सविधान को इतना झुकाया कि उसमे दरार पड गयी क्योंकि विदेशी क्षेत्र को क्रय करने का अधिकार दान करने सम्बन्धी भी धारा उसमे नही थी। उन्होने काग्रेस की स्वीकृति के बिना ही यह कार्य किया।

इस लाभप्रद व्यापार से अमरीका को १० लाख वर्गमील से अधिक क्षेत्र और उसके साथ न्यू आरलियन्स का महत्वपूर्ण बन्दरगाह प्राप्त हो गया। न्यू आरलियन्स सुंदर ईटो और चिकने पत्थरो का मिस्सिसिपी के तट पर बसा हुआ नगर था जिसकी पृष्ठभूमि मे सघन और सुन्दर वन था। १८०३ की वसन्त के एक दिन पेस डी. आर्मिस मे एक छोटे से जन समूह ने, जिसमे रगबिरगी वर्दी पहने फ्रास के सैनिक, स्पेन और फ्रास मे जन्मे फैशनेबल पोशाक पहने हुए लोग, शिकारियों की वेशभूषा मे अन्वेषक और ताम्रवर्णी आदिवासी और काले गुलाम थे, फ्रास के ध्वज को उतरते और अमरीका के ध्वज को लहराते देखा। अमरीका को एक ऐसा बहुमूल्य क्षेत्र मिला गया जो ८० वर्षों में ससार मे गेहू के उत्पादन का एक प्रमुख केन्द्र बन गया। उसने प्रायद्वीप की समूची केन्द्रीय नदी-प्रणाली पर नियन्त्रण पा लिया था। पहली बार अमरीकी, जैसा कि लिंकन ने बाद मे गृहयुद्ध के समय कहा था, कह सकते थे कि अब हमारी नदियॉ स्वच्छन्द होकर सागर से मिलने चली है। चार ही वर्षो मे राबर्ट फल्टन ने हडसन पर

मफलनापूर्वक भाप चालित जहाज चलाना प्रारम्भ किया। इससे आन्तरिक जल मार्ग को सरल और सस्ते मूल्य पर उपयोग मे लाने की समस्या का हल हो गया। धुऑ छोडते हुए जहाज शीघ्र ही सभी पश्चिमी जल-धाराओ मे होकर, अमरीका मे बसने के इच्छुक लोगो को लाने लगे। वे अपने साथ फर, खाद्यान्न, मास और अन्य कितने ही उत्पादन भी बेचने के लिए लाते थे।

अपनी पहिली अवधि की समाप्ति के निकट आ जाने तक, जेफरसन को सुदूर क्षेत्रो मे भी लोकप्रियता प्राप्त हो चुकी थी क्योंकि लुइसियाना स्पष्ट रूप से बडा पुरस्कार था, व्यापार समृद्ध था, और राष्ट्राध्यक्ष ने सभी लोगों को सुखी करने के प्रयत्न किये थे। उनका पुनर्निर्वाचन निश्चित था और १८०४ में वास्तव मे ही उन्हे १७६ चुनाव मतो मे से १४ को छोड कर सभी मत प्राप्त हुए। प्रत्येक राज्य ने, यहॉ तक कि न्यू इग्लैण्ड ने भी कनेक्टीकट को छोड कर, उनका समर्थन किया था। अपनी पार्टी को दृढ अनुशासन के साथ शासित करने की योग्यता के साथ उन्होने उत्कट पदलोलुप और हर समय षड्यन्त्र करने वाले आरन बर को दबाने के लिए भी कदम उठाये थे। इस चालाक न्यूयार्कवासी ने, जिसे सघीय कार्यालयो मे कोई पद नहीं दिया गया था और जो व्यावहारिक रूप से पार्टी से निष्कासित सा हो चुका था, न्यू-इंग्लैण्ड के कट्टर फेडरलिस्टो से साठ-गाठ की। १८७४ की बसन्त मे वह फेडरलिस्ट मच पर न्यूयार्क के गवर्नर पद के लिए खडा हुआ। किन्तु मुख्यतया हैमिल्टन के विरोध के कारण—जिन्हे यह सन्देह था कि बर और टिमोथी पिकरिंग जैसे लोग अमरीकी एकता के विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहे थे—उसकी बुरी तरह पराजय हुई। प्रतिशोध लेने के लिए सिद्धान्तहीन बर ने हैमिल्टन को एक द्वद्व (युद्ध) के लिए उकसाया। जुलाई मास की एक प्रातः को हडसन के जर्सी तट पर यह द्वद्व हुआ और उसमे हैमिल्टन की मृत्यु हो गयी। इतने प्रतिभावान तथा लोकप्रिय नेता की क्षति ने समाज को क्रोध और क्षोभ के कारण पागल-सा कर दिया और बर को अपनी सुरक्षा के लिए गायब हो जाना पडा। पूर्व मे उसका भविष्य अन्धकारमय हो गया किन्तु निरर्थक दम्भ के साथ वह नये कारनामो के लिए पश्चिम की ओर मुडा।

साधारण पुरस्कार और पद बर जैसे अति पदलोलुप के लिए कोई अर्थ नही रखते थे। सत्ता अथवा सर्वनाश ही उसके जीवन का ध्येय था और उसने अपने ही निरकुश राज्य की स्थापना की योजना बनायी। वह राज्य कहॉ स्थापित होता और कब होता, अब भी विवाद का प्रश्न है। इतिहास के कई विद्यार्थियों को

विश्वास है कि वह पश्चिम मे एक छोटी सी सेना एकत्रित करने का इच्छुक था ताकि मिस्सिसिपी मे होकर न्यू आरलियन्स पर अधिकार करने के पश्चात् लुइसियाना को अमरीकी सघ से पृथक् कर सके। ऐसी ही कुछ योजनाए ब्रिटिश और स्पेनिश अधिकारियों को बतला कर उसने लन्दन और मैड्रिड से आर्थिक सहायता पाने का प्रयत्न किया। अंग्रेजो से उसने कहा कि अपने राज्य को वह उनके सरक्षण के अन्तर्गत रखेगा जबकि स्पेन वालो को उसने यह सूचित किया कि वह इस राज्य को मेक्सिको और अमरीका के बीच का एक स्वतंत्र राज्य बनायेगा। किन्तु दोनो मे से एक ने भी उसका साथ नहीं दिया। अन्य इतिहासज्ञो का कहना है कि बर का वास्तविक उद्देश्य अपनी सेना को वेराक्रुज और मेक्सिको नगर के स्पेनिश अधिकारियों के विरुद्ध उपयोग करना था ताकि वह मेक्सिको पर आधिपत्य जमा सके। वास्तव मे उसने टेनेसी के एण्ड्रयू जेफरसन जैसे नेताओ को, जिन्हें स्पेन से घृणा थी, अपना यही अभिप्राय बतलाया था। सम्भवतया उसे खुद को भी नही मालूम था कि उसका ध्येय लुइसियाना को हस्तगत करना था अथवा मेक्सिको को, शायद वह दोनो पर ही आधिपत्य जमाना चाहता था।

जो भी हो, ल्यूसीफर की तरह ही बर का भी बुरी तरह पतन हुआ। दक्षिण-पश्चिम के राष्ट्रप्रेमियो को उसके षड्यत्र का पता चल गया और १८०६ के अन्त में उन्होंने उस पर अभियोग लगाये। उसे गिरफतार करके रिचमन्ड वर्जीनिया मे देशद्रोह के आरोप मे मुकदमा चलाने के लिए भेज दिया गया। जान मार्शल इस मुकदमे के न्यायाधीश बने। षडयत्र के सबूत स्पष्ट नहीं होने से उन्होंने बर को मुक्त कर दिया, किन्तु जब तक उसका इतना पतन हो चुका था कि वह सम्भल नहीं सका।

अमरीकी तटस्थता : एम्बार्गो कानून : जेफरसन ने अपने सघीय अधिकार का दूसरा असाधारण प्रयोग, ग्रेटब्रिटेन और नेपोलियन के मध्य भीषण सघर्ष मे, अमरीका को तटस्थ बनाये रखने का प्रयत्न करके किया। वह जानते थे कि अल्पायु और अपरिपक्व गणतत्र को शांति की आवश्यकता है और चूकि युद्ध भूमि और सागर पर लडा जा रहा था, उन्हे आशा थी कि युद्ध के चक्र से वे अमरीका को बाहर रख सकेंगे। ग्रेटब्रिटेन समूचे यूरोप को एक व्यक्ति की निरकुश सत्ता के आधीन किये जाने के विरुद्ध युद्ध कर रहा था। स्वाभाविक रूप से वाणिज्य सम्बन्धी यह युद्ध उसके सर्वोत्तम

हितो मे से एक था। इस महत्व को समझते ही ब्रिटेन ने नेपोलियन के साम्राज्य की मोर्चाबन्दी करने की शीघ्रता की और नेपोलियन ने इसके प्रत्युत्तर मे बर्लिन और मिलान की घोषणा द्वारा ग्रेटब्रिटेन की मोर्चाबन्दी करने की घोषणा की। इस सबध मे दोनों शक्तियो ने अमरीकी वाणिज्य पर तीव्र प्रहार किये। ब्रिटन ने अमरीकी जहाजों द्वारा फ्रेन्च वेस्ट इण्डीज के उत्पादनो के ढोने का मूल्यवान व्यापार बन्द कर दिया और स्पेन से लेकर एल्ब तक लगभग समूचे यूरोपीय तट से उन्हे अलग कर दिया। फ्रास ने ऐसे अमरीकी जहाजों को बन्दी बनाने का आदेश दे दिया जो ब्रिटिश जलसेना की तलाशी को स्वीकार कर लेते थे अथवा किसी ब्रिटिश बन्दरगाह से होकर आ-जा रहे थे। सक्षेप मे युद्ध एक ऐसी स्थिति पर पहुँच गया जब कि कोई भी अमरीकी जहाज ब्रिटेन द्वारा बिना बन्दी बनाये या बिना फ्रास के नियन्त्रण मे विस्तृत क्षेत्र के साथ व्यापार नही कर सकता था और न कोई ब्रिटेन के साथ फ्रास द्वारा बन्दी बनाये गये बिना (यदि वह पकड मे आ गया तो) व्यापार कर सकता था। ब्रिटिश सरकार ने न्यायोचित सख्ती बरती जबकि फ्रेन्च जरा सा बहाना पाने पर ही अमरीकी जहाजो को जब्त कर लेते थे।

जिस समस्या ने विशेष रूप से अमरीका की भावना को ब्रिटेन के विरुद्ध उभाडा वह थी बलपूर्वक नाविक के रूप मे लोगों से काम लेने की समस्या। युद्ध जीतने के लिए ब्रिटेन को अपनी नौसेना का इतना अधिक विस्तार करना पडा कि उसे ७०० से अधिक युद्धपोत काम मे लाने पडे जिनमे लगभग १ लाख ५० हजार नाविक थे। जहाजों की इस दीवार ने ब्रिटेन को सुरक्षित रखा, उसके व्यापार की रक्षा की और उपनिवेशों के साथ उसके सचार को चालू रखा। यह ब्रिटेन के अस्तित्व के लिए आवश्यक था। फिर भी इन जहाजी वेडों के लोग कम वेतन और कम भोजन पाते थे तथा उनके साथ इस तरह का दुर्व्यवहार होता था कि स्वेच्छा से उनकी भर्ती नही की जा सकती थी। कई नाविक भाग निकले और उन्होंने अधिक अच्छे और सुरक्षित अमरीकी जहाजों मे शरण पाकर छुटकारे की सॉस ली। ऐसी स्थिति मे ब्रिटिश अधिकारियों ने अमरीकी जहाजों की तलाशी लेना और ब्रिटिश प्रजा को अपने साथ ले जाना अनिवार्य माना। उन्होंने अमरीकी नाविकों को बलपूर्वक काम पर लगाने का अधिकार कभी नहीं मागा किन्तु साथ ही उन्होंने यह मानने से इन्कार कर दिया कि कोई अंग्रेज अमरीकी नागरिक बनाया जा सकता है। अमरीकी दृष्टिकोण इस माग के सर्वथा विरुद्ध था। अमरीकी जहाजो के लिए यह अपमान

की बात थी कि ब्रिटिश युद्धपोत के सम्मुख वे लगर डाल दे जबकि एक लेफ्टिनेन्ट तथा कुछ अन्य कर्मचारी उनकी तलाशी ले। इसके अतिरिक्त कई ब्रिटिश अधिकारी दम्भी और अन्याय करनेवाले थे। यह आरोप लगाया गया कि उन्होने वास्तविक अमरीकी नाविको को दर्जनो, सैकडो और अन्त मे हजारो की सख्या मे बलपूर्वक भर्ती किया।

ग्रेटब्रिटेन और फ्रास को बिना युद्ध के अमरीकी जहाजो के साथ यथोचित व्यवहार करने के लिए जेफरसन ने अन्त मे काग्रेस से निर्यात आयात रोक कानून स्वीकार करवाया जिसके अन्तर्गत वैदेशिक व्यापार पूर्णतया बन्द कर दिया गया। यह एक कठिन प्रयोग था। इस कार्यवाही से जहाजरानी लगभग नष्टप्राय: हो गयी और न्यू इंग्लैण्ड तथा न्यूयार्क मे असन्तोष बढ़ गया। फिर कृषकों ने भी अपने को बहुत क्षति पहुँचते देखा क्योकि जब दक्षिण और पश्चिम के कृषक अपने बचे हुए खाद्यान्न, मास और तम्बाकू समुद्रपार निर्यात न कर सके तो इन वस्तुओ के मूल्य मे भारी गिरावट आ गयी। किन्तु उनकी यह आशा कि इससे ग्रेटब्रिटेन मे दुष्काल आ जायेगा और वह अपनी नीति मे परिवर्तन करने को बाध्य होगा, निराशा मे सिद्ध हुई। ब्रिटिश सरकार जरा भी टस से मस न हुई। घर मे अशान्ति बढते देख जेफरसन ने एक उदार नीति अपनायी। इस कानून के बजाय यह स्वीकार किया गया कि ब्रिटेन अथवा फ्रान्स के साथ जिसमे उन पर निर्भर देश भी सम्मिलित थे, व्यापार पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाये। किन्तु यह वचन दिया गया था कि यह प्रतिबध उस देश पर लागू नही होगा जो तटस्थ व्यापार पर प्रहार करना बन्द कर देगा। नेपोलियन ने १८१० मे अधिकृत रूप से घोषित किया कि उसने अपनी कार्यवाही का परित्याग कर दिया है। यह मिथ्या घोषणा थी—उसने वैसी कार्यवाही जारी रखी थी। किन्तु अमरीका ने उस पर विश्वास कर लिया और यह कानून ग्रेटबिटेन तक ही सीमित रहा।

१८१२ का युद्ध : इससे ग्रेटब्रिटेन के साथ सम्बन्ध और भी बिगड गये और दोनो देश युद्ध की ओर अग्रसर होते गये। अनेक घटनाओं के कारण दुर्भावना उत्तेजित हो उठी थी। उदाहरणार्थ, ब्रिटिश युद्धपोत लेपर्ड ने अमरीकी जहाज चेसापीक को आदेश दिया कि वह कुछ ब्रिटिश भगोड़ो को उसके हवाले करे—यद्यपि जहाज पर मात्र एक ही भगोडा था। कुछ प्रतिवाद किये जाने पर उसने चेसापीक पर १५ मिनिट के लिए गोले बरसाये और

लेपर्ड के लोग उस पर पहुँच गये। डेक रक्तरंजित हो उठा था, वे चार व्यक्तियों को अपने साथ ले गये। कुछ देर पश्चात् राष्ट्राध्यक्ष ने काग्रेस के सम्मुख एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसके अनुसार ब्रिटेन ने विगत तीन वर्षों मे ६०५७ बार अमरीकी नागरिको की बलपूर्वक भर्ती की थी। उस स्थिति मे कुछ अन्य तत्वों का समावेश भी हो गया। उत्तरी पश्चिमी निवासियों आदिवासियो के आक्रमण सहने पडे थे और उनका विश्वास था कि कनाडा स्थित ब्रिटिश एजेन्टों ने ही उन बर्बर लोगों को इस कार्य के लिए उभाडा था। इसके अतिरिक्त एक और कारण था जो पूर्णरूप से ब्रिटिश स्वार्थ का द्योतक था। पश्चिम के कई भूमि-लोलुप व्यक्ति, जिनका प्रतिनिधित्व काग्रेस में सुयोग्य वक्ता केन्टकी के हेनरी क्ले करते थे, समस्त कनाडा को हड़प जाना चाहते थे। और उनका समर्थन दक्षिण के लोग, सुयोग्य जान सी. कालहोन के नेतृत्व मे कर रहे थे, जिन्हे स्पेन के फ्लोरिडा पर, जो कि अब ब्रिटेन का मित्र था, अधिकार कर लेने की आशा थी। परिणामस्वरूप मेडीसन के व्हाइट हाउस मे राष्ट्राध्यक्ष होने पर १८१२ मे ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी गयी।

यह युद्ध कई अर्थों मे अमरीकी इतिहास की सबसे अधिक दुर्भाग्यपूर्ण घटना थी। एक कारण तो यह था कि यह अनावश्यक था, "ब्रिटिश आर्डर्स इन काउन्सिल" को जो सारे झगडों की जड़ थी, अमरीकी कॉग्रेस के युद्ध की घोषणा के साथ ही बिना शर्त रद्द किया जा रहा था। दूसरा कारण यह था कि अमरीका मे गम्भीर रूप से आन्तरिक मतभेद थे। जबकि दक्षिण और पश्चिम युद्ध चाहते थे, न्यूयार्क और न्यू इंग्लैण्ड उसके विरुद्ध थे और युद्ध के अन्तिम दिनों मे न्यू इग्लैण्ड के लोग देशद्रोह की सीमा तक जा पहुँचे। तीसरा कारण यह था कि सैनिक अभियानों मे विजयश्री बहुत दूर थी।

अमरीकी सेना को जेफरसन की मितव्ययिता ने १८०९ मे ३ हजार सैनिकों से भी कम कर दिया था। इस सेना मे अप्रशिक्षित, कवायद न जाननेवाले और अनुशासनहीन लोग थे जो युद्ध की दृष्टि से बडे कमजोर थे। इनमे कई नियमित सैनिक अपराधी-शराबी व निकम्मे व्यक्ति थे। विनफिल्ड स्काट नामक एक वर्जीनियावासी/जो कुछ ही दिनों पूर्व सेना में प्रविष्ट हुए थे और एक प्रतिभावान व्यक्ति थे, ने लिखा, "सेनापति दो दलों मे विभक्त थे। पुराने अधिकारी नियमित रूप से आलसी, अज्ञानी अथवा अत्यधिक शराबी थे; नये अधिकारी अधिकाशतया राजनीतिक कारणो से नियुक्त किये गये थे; कुछ अच्छे थे, किन्तु अधिकाश या तो बिलकुल असभ्य या कोरे थे और यदि शिक्षित हुए

भी तो शेखी बघारने वाले, आलसी और निकम्मे रईस थे। बाकी के लोग किसी भी काम के न थे।" युद्ध प्रारम्भ होने के समय ६० से अधिक आयु के अकुशल हेनरी डियरबोर्न सीनियर मेजर जनरल थे। उन्होंने रणक्षेत्र मे रेजीमेन्ट से बड़ी टुकड़ी का कभी सचालन नही किया था। सीनियर ब्रिगेडियर जनरल के पद पर जेम्स विल्किन्सान था जिसे अब अमरीका के शत्रु राष्ट्र स्पेन से पेन्शन पानेवाले और एरान बर के साथी के रूप मे जाना जाता है। वह भ्रष्टाचारी, व्यसनी और आदेशो का उल्लघन करनेवाला था। उसके जितने भी परिचित थे वे उससे घृणा करते थे। एकमात्र अनुभवी ब्रिगेडियर जनरल विलियम हल थे जिन्हें क्राति मे कर्नल का पद प्राप्त हो चुका लेकिन अब वह अशक्त और वृद्ध हो चले थे। उन्होंने बिना एक गोली चलाये ही डेट्रायन के समर्पण के साथ युद्ध का प्रारम्भ किया।

विपत्ति पर विपत्ति आती गयी। कनाडा पर आक्रमण करने के अमरीकी प्रयत्न विफल रहे। पहले वर्ष की अवधि मे, जैसा कि एक ब्रिटिश इतिहासकार ने लिखा है, 'यह पता नही चलता है कि सेना और स्वयसेवको ने लडने का निश्चय कर लिया था या न लडने का।' उत्तरी सीमान्त की सबसे कठिन लड़ाई नियागरा के समीप लुण्डीस लेन की थी। इस लड़ाई मे कोई विजयी न हुआ क्योकि दोनों ने विजयी होने का दावा किया था (जुलाई १८१४), लेकिन इससे अमरीका की कनाडा मे आगे बढ़ने की योजना अस्थायी रूप से विनष्ट हो चुकी थी, इसलिए ब्रिटेन और कनाडा को उल्लास मनाने का अधिकार था। जब स्पेन मे नेपोलियन की सेनाएँ पराजित हो गयीं; तब ब्रिटेन ने वेलिंगटन के कुशल सैनिकों को भारी सख्या मे अपनी सेनाओ मे सम्मिलित कर दिया। लेक चेम्पलेन स्थित न्यूयार्क के प्लेट्सबर्ग स्थान मे भी एक अनुभवी टुकडी घुस आयी, किन्तु ब्रिटिश जहाजी बेड़े को अट्ठाईसवर्षीय नवयुवक कोमोडोफ थोमस मैकडोनो के हाथो निश्चित रूप से पराजय स्वीकार करनी पडी। ब्रिटिश सेना के सचार-साधनो की उपयोगिता सदिग्ध हो उठी और उसे पीछे हटना पड़ा। एक अन्य ब्रिटिश सेना, जो ५ हजार से कम व्यक्तियो की थी, वाशिंगटन के करीब पहुँची और बैडेन्सबर्ग के समीप उसे अपनी अपेक्षा कुछ बड़ी सेना का सामना करना पडा। इस मुठभेड मे दस व्यक्तियो की मृत्यु और ४० के घायल हो जाने पर ही अमरीकी सेना ने प्रतिरोध छोड दिया और वाशिंगटन की दिशा मे इतनी तेजी से भागे कि उनका बराबर पीछा करने मे कई अंग्रेजों को लू लग गयी। योर्क (अब टोरेन्टो) के सार्वजनिक भवनो को

अमरीका द्वारा क्षति पहुँचाने के प्रतिशोध मे ब्रिटिश टुकडियो ने राजधानी और व्हाइट हाउस पर गोले बरसाये। किन्तु जब ब्रिटिश बेडे ने बाल्टीमोर के समीप फोर्ट मेकेहेनरी पर रात्रि के समय लम्बी मार के गोले बरसाने प्रारम्भ किये—छिछले पानी के कारण निकट से गोले बरसाना असम्भव बन गया था—तो उससे कुछ लाभ नहीं हो सका। वाशिगटन के युवक एटार्नी प्रिन्सिस स्काट ने, जो एक ब्रिटिश जहाज पर बन्दियो की अदला-बदली की व्यवस्था का प्रयत्न कर रहे थे, प्रातःकालीन समीर मे राष्ट्रीय ध्वज को देखा तो इतने उत्साहित हो उठे कि उन्होंने "स्टार स्पैन्गल्ड बैनर" की रचना कर डाली।

केवल समुद्री लडाई मे ही अमरीकियो ने कुछ विजय प्राप्त की। नौसैनिक बेडा, जो वाशिंगटन और एदम्स के निरीक्षण मे तैयार किया गया था, फ्रास के साथ अल्प अवधि के युद्ध मे और १८०३-१८०४ मे ट्रिपोलिटन समुद्री डाकूओं के विरुद्ध कार्यवाही मे (अमरीकी जहाजरानी के विरुद्ध जिनकी लूटमार बर्दाश्त से बाहर थी) प्रशिक्षित हो चुका था। स्थल के विपरीत नौबेड़े को प्रारम्भ मे ही एक महान सगठनकर्ता वरदान के रूप मे प्राप्त हो चुका था। यह थे एडवर्ड प्रेबेल जिन्होंने भूमध्यसागरीय जहाजी बेडे को कठोर किन्तु कुशल प्रशिक्षण दिया। उन्होने अपने लोगो मे साहस, शौर्य और अनुशासन की भावना भर दी और जहाजी बेडे के लिए यह एक परम्परा बन गयी। उन्होंने स्टीफेन डिकाटर जैसे उच्च अधिकारियो को उच्च पद के लिए प्रशिक्षित किया। सख्या की दृष्टि से नौबेडा छोटा था क्योकि जेफरसन ने तटीय रक्षा के लिए तोपधारी नावो के निर्माण मे अदूरदर्शितापूर्ण नीति अपनायी थी। १८१७ मे केवल एक दर्जन शक्तिशाली जहाज ही गिनाये जा सकते थे। किन्तु अकेले जहाजो की कार्यवाही के क्रम मे—उदाहरणार्थ कास्टीट्यूशन (ओल्ड आयर्नसाइड्स) और न्यूएरीएर तथा यूनाइटेड स्टेट्स और मेसीडोनियन—अमरीकी कप्तानों ने अपने बराबरी के या अधिक बडे जहाजों को लगातार पराजित किया। ग्रेटब्रिटेन पर भी अमरीकियों ने अपना शौर्य प्रकट किया। कप्तान ओलीवर हैजार्ड पेरी नाम के ३० वर्ष से कम उम्र के एक और अधिकारी ने लेक एरी पर एक बेडे का निर्माण किया और एक छोटी ब्रिटिश सेना की टुकडी की तलाशी ली। दृढ़तापूर्ण कार्यवाही के पश्चात् उसने एक सक्षिप्त सन्देश भेज कर देश को पुलकित कर दिया, "हमने शत्रु से भेट कर ली है और वह हमारे हाथ मे है।" फिर भी अन्त मे अपेक्षाकृत शक्तिशाली ब्रिटिश नौ-बेडे ने समुद्रो पर पूरा आधिपत्य जमा लिया, अमरीकी व्यापार को अवरुद्ध कर दिया और अमरीकी तट की दृढ़ नाकाबन्दी कर दी।

जब युद्ध की समाप्ति हुई तो घेन्ट की सन्धि (१८१४) मे जिसके लिए चर्चा करनेवालो मे क्विन्सी एडेम्स, हेनरी क्ले और अन्य लोग थे, बलपूर्वक भर्ती करने और तटस्थता के अधिकारो के बारे मे एक शब्द भी नही कहा गया जो कि स्पष्ट रूप से युद्ध के मुख्य कारणो मे से थे। केवल वह नाटकीय विजय जो एक अजीब किन्तु सुदृढ़ सीमान्त के लोगो की सेना के अनुभवी-आदिवासियो के विरुद्ध आक्रमणो से योद्धा एन्ड्र्यु जैकसन के नेतृत्व मे लडी गयी थी, राष्ट्र को वास्तविक रूप मे उल्लासित कर सकी। यह विजय वेलिंगटन के साहसी सहायक एडवर्ड पेकेनहेम के नेतृत्व मे एक शक्तिशाली ब्रिटिश सेना पर प्राप्त हुई थी। यह ८ जनवरी १८१५ की सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिये जाने के पश्चात की घटना है किन्तु अमरीका मे उसके बारे मे लोगो को जानकारी न थी। इसने उच्छृंखल दम्भी जेक्सन को एक महान राष्ट्रीय नेता बना दिया।

राष्ट्रीय एकता : फिर भी एक तरह से युद्ध ने गणतंत्र के विकास मे काफी योगदान दिया। अशाति और मतभेद के बीच प्रारम्भ हो कर लबे समय तक जारी रहकर भी उसने राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति की भावनाओ को सुदृढ़ बनाया। इसके लिए अनेक कारण बताये जा सकते हैं। यत्र-तत्र मिली सफलताओं और विशेषकर नौवेडे की जीतो और न्यू आरलियन्स मे पेकेनहेम की पराजय ने अमरीकियो को गर्व और आत्मविश्वास के लिए एक नया आधार प्रदान किया। जेफरसन की आत्मसमर्पण की नीति के परिणामस्वरूप अपने को हीन समझने की भावनाओ को उन्होंने दूर कर दिया। दूसरे इस तथ्य ने कि विभिन्न राज्यो के लोग कन्धे से-कन्धा मिला कर लडे और उत्तरी टुकडियो को योग्यतम सेनापति के रूप मे वर्जीनियावासी विनफील्ड स्काट प्राप्त हुए, राष्ट्रीय एकता की भावना मे वृद्धि करने मे सहायता दी। पश्चिमी टुकडियो ने कुछ ऐसी लडाइयो मे विजय प्राप्त की जिन्हें वे भुला न सके और पहले की तरह राज्यों के निवासियो की अपेक्षा अपने राज्य के प्रति उनकी निष्ठा कम और देश के प्रति अधिक थी। इस समय के बाद अमरीकी जीवन मे पश्चिम के महत्व मे वृद्धि हो गयी और पश्चिम की भावना भी निरन्तर राष्ट्रीय रही।

अंत मे लोग उन स्वार्थी और सकुचित तत्वो से चिढ़ गये जिन्होंने युद्ध के समय देशभक्तिहीन भावनाएँ प्रदर्शित की थी। युद्ध के अन्तिम दिनो मे न्यू इग्लैण्ड के असन्तुष्ट निवासियों ने अपनी शिकायतो पर विचार करने के लिए

हार्टफोर्ड के कन्वेन्शन मे प्रतिनिधि भेजे थे और यह 'हार्टफोर्ड कन्वेन्शन' निन्दा और तिरस्कार का एक उदाहरण बन गया।

सक्षिप्त मे नौसिखियो द्वारा लडे गये इस युद्ध ने गणतंत्र को अधिक परिपक्व और अधिक आत्मभरित बनने, उसे एक होने और उसकी व्यवस्था को सुदृढ़ करने की दिशा मे बहुत कुछ किया। अल्बर्ट गेलाटिन ने संघर्ष के पूर्व दृढता से कहा था कि अमरीकी अत्यधिक स्वार्थी, भौतिकवादी और पतित हो रहे हैं जिससे वे स्थानीय मामलों पर विचार नही कर सकते। उन्होंने कहा, "क्रांति द्वारा प्रदत्त राष्ट्रीय भावना और चरित्र का जो नित्य प्रतिहास होता जा रहा था, उसका इस युद्ध से पुनर्जीवन और पुनःस्थापन हुआ है। लोगों को अब निष्ठा की ऐसी सामान्य शक्तियाँ प्राप्त हो गयी हैं जिनके साथ उनका स्वाभिमान और राजनीतिक दृष्टिकोण सम्बद्ध हैं। वे अब अधिक अमरीकी है, वे अपने को एक राष्ट्र के नागरिक के रूप मे अधिक मानने लगे हैं, और राष्ट्रीय कार्यो मे उनकी अधिक रुचि हो गयी है। मुझे आशा है कि इन कारणों से संघ पहले की अपेक्षा अधिक स्थायी बन गया है।" चूकि युद्ध काफी निकट से लडा गया था, इसलिए उसके अंत के पश्चात् बहुत कम दुर्भावना शेष रह गयी थी। इसलिए इग्लैण्ड और अमरीका के लोग सौ वर्ष के पश्चात् युद्धक्षेत्र मे मिले तो एक साथी के रूप मे और हार्दिक भावना से ओतप्रोत होकर मिले।

बाद की घटनाओं ने प्रमाणित कर दिया कि चाहे जो भी पार्टी देश का शासन करती रही हो, चाहे हैमिल्टन की फेडरलिस्ट पार्टी अथवा जेफरसन की डेमोक्रेट पार्टी, राष्ट्रीय एकता मे वृद्धि होती गयी और केन्द्रीय सरकार की शक्ति उत्तरोत्तर बढ़ती गयी। राष्ट्रीय विकास की परिस्थिति के कारण ही यह सम्भव बन सका। लुइसियाना को प्राप्त करने, फ्रास और ब्रिटेन के साथ व्यापारिक प्रतिद्वद्विता करने, बर्बर समुद्री डाकुओं पर प्रहार के लिए युद्ध करने—इन सभी के लिए एक सुदृढ केन्द्रीय सत्ता की आवश्यकता थी।

यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि ऐसे समय में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय भी सरकार को सुदृढ बनाने में अधिक सहायक हो रहे थे। फेडेरलिस्ट विचार-धारा मे विश्वास रखने वाले वर्जीनिया के जार्ज मार्शल, जो जेफरसन के राष्ट्राध्यक्ष पद ग्रहण के कुछ ही समय पूर्व मुख्य न्यायाधीश बनाये गये थे, १८३५ मे अपनी मृत्यु तक उस पद पर बने रहे। न्यायालय शक्तिहीन थे और उसकी कोई प्रतिष्ठा न थी, उन्होंने शक्तिशाली और प्रतिष्ठापूर्ण ट्रिब्युनल का रूप दे दिया जो पद में काँग्रेस और राष्ट्राध्यक्ष के समान ही महत्वपूर्ण बन गया।

अपनी रुचि और व्यवहार मे मार्शल अपने राज्य के आगान समाज के लोगो के समान ही सरल थे। वे साधारण पोशाक पहनते और बाजार से लादकर स्वयं अपना राशन घर ले जाते थे। उनकी रुचि ताश खेलने, तीर, भाला, बरछी और लोहे के चक्र को निशाने पर फेकने मे थी। किन्तु अपने विचारो मे वे बोस्टन और न्यूयोर्क जैसे नगरो के व्यवसायी क्षेत्रो का प्रतिनिधित्व करते थे। उनके ऐतिहासिक निर्णयों से जो कि उनके गंभीर मस्तिष्क की देन थे, यह ज्ञात होता है कि दो मूल सिद्धान्तो से वे बहुत अधिक प्रभावित थे—एक सघीय सरकार की सार्वभौमिकता और दूसरे निजी सम्पत्ति के प्रति निष्ठा।

मार्शल एक महान न्यायाधीश थे। उनके निर्णय अधिकारपूर्ण तर्कों से भरे पड़े हैं, जो लगभग हर मामले मे पाठक का विश्वास प्राप्त कर लेते हैं। शैली की दृष्टि से वे सरल होते थे और प्रभावशाली शिक्षा और पूर्ण विश्लेषण पर आधारित उनका स्वभाव था कि वे सर्वप्रथम पूर्वकथन को पूर्णरूपेण स्थापित कर लेते थे। तत्पश्चात् उससे साराश निकालते थे। ऐसा करने मे वे प्रत्येक आपत्ति का खंडन कर देते थे। अन्त मे वे अपने निर्णय को उद्धरणो और उदाहरणो के साथ प्रस्तुत करते थे। सर्वोच्च न्यायालय के नेता के रूप मे उन्होने उसे अनुरूपता प्रदान की जिससे कि प्रतिकूल दृष्टिकोण और विभिन्न राय के निर्णय कम ही होते थे। किन्तु मार्शल एक महान न्यायाधीश से भी कुछ अधिक थे—वे एक महान सवैधानिक राजनीतिज्ञ थे। उन्होने लगभग ५० मामलो में, जो स्पष्टतया सविधान की समस्याओं से सम्बद्ध थे, निर्णय दिये। उन्होने उन पर सुपरिपक्व राजनीतिक दर्शनशास्त्र पर आधारित दृष्टिकोण से विचार किया। ये निर्णय प्रायः सविधान के सभी महत्वपूर्ण अंगो से सम्बन्धित थे। परिणामस्वरूप जब उन्होंने अपने लम्बे सेवा-कार्य की अवधि समाप्त की, तो देश भर मे न्यायालयों द्वारा लागू किया गया सविधान बहुत कुछ अंशो मे मार्शल द्वारा व्याख्या किया गया सविधान ही था। यह कहा जा सकता है कि उन्होंने उसे अपने स्पष्ट दृष्टिकोण के अनुसार ही रूप दिया।

उनके मुख्य निर्णयों की केवल गणना करने से अधिक उनके विस्तार में जाना सभव नहीं है। मेरवरी बनाम मेडीसन (१८०३) के मामले मे उन्होंने निश्चित रूप से सर्वोच्च न्यायालय द्वारा कॉग्रेस अथवा राज्य विधान सभा के किसी भी कानून पर विचार करने के अधिकार को स्थापित किया। उन्होंने लिखा है, "यह निश्चय ही न्यायालय का क्षेत्र और कर्तव्य है कि वह बताये कि कानून क्या है।" कोहेन्स बनाम वर्जीनिया (१८२१) के मामले मे

उन्होने उन लोंगों के तर्कों को उलट दिया जिन्होंने घोषणा की थी कि राज्य के कानूनो से उत्पन्न होनेवाले मामलों मे राज्य-न्यायालयों के निर्णय ही अन्तिम रूप से मान्य होने चाहिए। इस ओर इगित करते हुए उन्होने कहा, "इससे देश भ्रम मे पड जायगा—क्योकि सघीय-विधान अथवा सघीय-सन्धियों के अन्तर्गत कानूनो की वैधानिकता के बारे मे राज्य अनेक विभिन्न दृष्टिकोण अपनायेंगे।" इसलिए उन्होंने दृढ़तापूर्वक निर्देश दिया कि अन्तिम निर्णय राष्ट्रीय न्यायालयों का ही मान्य होना चाहिए। मेकुल्लोच बनाम मैरीलैण्ड (१८१९) के मामलों मे उन्होंने सविधान के अन्तर्गत सरकार के निहित अधिकारो के बारे मे प्रकाश डाला। उन्होने साहसपूर्वक हैमिल्टन के उस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया जिसके अन्तर्गत सविधान मे सम्बद्ध कार्यो से भी सरकार को वे अधिकार प्रदान किये गये हैं, जिनका वहॉ स्पष्ट उल्लेख नही मिलता है। गिबन्स बनाम आगडेन (१८२४) के मामले मे मार्शल ने राज्य को अन्तर-राज्यीय-वाणिज्य का नियत्रण करने का अधिकार प्रदान किया था। हडसन पर स्टीमबोट चालन अधिकारो से सम्बन्धित विवाद से उत्पन्न एक मामले मे मार्शल ने निर्णय दिया कि राष्ट्रीय नियन्त्रण के अधिकार की व्याख्या विस्तृत रूप मे होनी चाहिए, सीमित रूप मे नही। डार्टमाउथ कालेज के मामले मे मार्शल ने सविधान समझौते से सम्बन्धित अनुच्छेद का उपयोग सामाजिक घोषणा पत्र की वैधानिकता के लिए किया। सक्षेप मे मार्शल ने अमरीकी जनता के केन्द्रीय सरकार को सक्रिय और सुदृढ बनाने के हेतु अनेकानेक प्रमुख नेताओं के समान ही अथक प्रयत्न किया।

राष्ट्रीयता का अविराम गति से विकास हो रहा था। साथ ही साथ नये साहित्य की भी रचना हो रही थी जिसे अमरीकी कहा जा सकता है—विलियम क्लेन ब्रायन्ट की "थानाटोपसिस" १८१७ मे, इरविंग की "स्केच बुक" १८१९ मे, फेनीयोर कूपर के कई उपन्यासों मे से प्रथम १८२० मे प्रकाशित हुए जबकि १८१५ मे विख्यात "नार्थ अमेरिकन रिव्यू" का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ जो ब्रिटिश त्रैमासिको को आदर्श मान कर आरम्भ किया गया था किन्तु मुख्यतया वह अमरीकी हितों के लिए था। हडसन रिवर स्कूल आफ पेन्टर्स यद्यपि अब भी बहुत कुछ यूरोप से प्रभावित था तथापि उसके कलाकार मुख्य-तया अमरीकी दृश्य ही चित्रित करते थे। जेफरसन ने इटली की स्थापत्यकला और शास्त्रीय भवन निर्माण कला को अमरीका की आवश्यकतानुसार अपनाया और वर्जीनिया विश्वविद्यालय के भवनों मे एक सुसगत भवन निर्माण कला को

प्रस्तुत किया जिसकी तुलना किसी भी ऐसी समुद्रपारीय निर्माण कला से की जा सकती थी। एक श्रेष्ठतर भूमि प्रणाली की सराहना भी की जा रही थी। १८२० मे एक ऐसा कानून बना जिसने सरकारी भूमि का मूल्य २ डालर प्रति एकड से घटा कर सवा डालर प्रति एकड कर दिया। व्यापार अमरीकी जनता को एक राष्ट्रीय इकाई के रूप मे जोड रहा था। १८१६ के तटकरो ने युद्धकाल की ही उच्च दरो को जारी रखा और निर्माताओ को वास्तविक सरक्षण प्रदान किया। उसी वर्ष अमरीका का दूसरा बैक (पहले को विघटित हो जाने दिया गया था) सरकार की वित्तिय कार्यवाहियो को सहायता प्रदान करने और एक दृढ़ नोट प्रणाली के लिए स्थापित किया गया। हेनरी क्ले व दक्षिणी करोलिना के नेता जान सी. काल्होन तथा अन्य लोगो ने अन्तरिक सुधारो सबन्धी एक राष्ट्रीय प्रणाली का उत्साहपूर्वक समर्थन किया। इन लोगो ने बतलाया कि अधिक अच्छी सडके और नहरे पूर्व तथा पश्चिम को एक दूसरे से जोड देगी और ज्यों ज्यो राष्ट्रीय एकता प्रगति करती गयी, प्रजातत्र भी आगे बढता गया।

आठवाँ परिच्छेद

जेक्सन लोकशाही का समागमन

मुनरो सिद्धान्त : १८१७ मे वृद्ध और कुशल जेम्स मेडिसन का पद जेम्स मुनरो ने सम्हाला जो शारीरिक रूप से लबे, दुबले व बेडौल थे। उन्होंने साधारण परिवार मे जन्म लेकर भी असाधारण सार्वजनिक जीवन बिताया। वे एक के पश्चात् दूसरे पद पर आसीन हुए—सिनेटर, गवर्नर, फ्रास और इग्लैण्ड मे राजदूत, विदेश सचिव और अन्त मे राष्ट्राध्यक्ष। यद्यपि यह युग सद्भावना की अपेक्षा दुर्भावना का युग कहा जा सकता है, किन्तु राजनीतिक दलो का कुछ दिनो तक कही कोई अस्तित्व नही था। अतएव १८२१ मे उन्हें पुनर्निर्वाचित होने का गौरव प्राप्त हुआ जबकि एक के अतिरिक्त उन्हें सभी चुनाव मत मिले। जो एक मत उन्हे नही मिला था, वह न्यू हेमिसफियर के मतदाता द्वारा प्रदत्त था, जो इस बात का इच्छुक था कि सर्व सम्मति से यह पद प्राप्त करने का गौरव केवल वाशिंगटन को ही प्राप्त हो। फिर भी मुनरो, जो आकर्षण-रहित थे, कभी अधिक लोकप्रिय नही हुए और उनकी पत्नी जो कठोर, गंभीर और सुन्दर महिला थी, आकर्षक डाली मेडिसन की अपेक्षा बहुत कम पसन्द की जाती थी। मुनरो के दो असाधारण गुण थे, उनकी प्रखर सहजबुद्धि और प्रबल इच्छाशक्ति। जान क्विंसी एडम्स के शब्दों मे 'उनका मस्तिष्क अन्तिम रूप से निर्णय लेने और अपने अन्तिम लक्ष्य पर पहुँचने मे सुदृढ था।'

उनके प्रशासन की जिस घटना ने उनके नाम को अमर कर दिया है, वह है उनके द्वारा तथाकथित मुनरो सिद्धान्त का प्रतिपादन। इस सिद्धान्त से दो मुख्य आशय सम्बद्ध थे जो वास्तव मे १८२३ की कांग्रेस को दिये गये उनके वार्षिक सन्देश के अंग हैं। एक आशय था गैर-उपनिवेशवाद जिसमे दृढ़तापूर्वक कहा गया था कि पश्चिमी गोलार्द्ध मे यूरोप को आश्रित राज्यों की स्थापना करने से रोका जाय: दूसरा आशय हस्तक्षेप न करने सबंधी था, जिसके द्वारा घोषित किया गया था कि यूरोप को नये विश्व के देशो के मामले मे इस प्रकार

हस्तक्षेप नही करना चाहिए कि उनकी स्वतत्रता के लिए खतरा उत्पन्न हो जाय। इन विचारो की उत्पत्ति दो भिन्न परिस्थितियो से हुई।

पहले का उद्भव प्राथमिक रूप से अलास्का के दक्षिण के क्षेत्र पर ५५ वे समानान्तर तक रूस के दावे के कारण हुआ था। रूस की इस महत्वाकाक्षा का, प्रशान्त के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र पर अमरीकी और ब्रिटिश दावो से सघर्ष होता था। दूसरे का आवाहन तब किया गया जब यूरोप की प्रतिगामी चतुर्थ सन्धि के कारण दक्षिणी अमरीका के लोगो को, जो कुछ ही समय हुए बोलिवर के नेतृत्व मे स्वतंत्र हुए थे, खतरा उत्पन्न हो गया। इन सधि राष्ट्रो ने स्पेन और इटली के प्रजातात्रिक आन्दोलनों को कुचलने के लिए कदम उठाये थे। १८२२ मे बेरोना मे काग्रेस की एक बैठक बुला कर, उन्होने समुद्रपार दक्षिण अमरीका को सेनाएँ भेजने के बारे मे विचार-विमर्श किया ताकि कम से कम कुछ कमजोर एवं नव-स्वतंत्र गणतत्रों को स्पेन के प्रभुत्व के अन्तर्गत लाने को बाध्य किया जा सके। फ्रास को ऐसे अभियान मे प्रमुख भाग लेने को कहा गया और अपने लिए उसे नये क्षेत्र प्राप्त करने का निर्देश दिया गया।

इसकी सूचना पाते ही प्रखर बुद्धि वाले विदेश सचिव जार्ज कैनिंग को गहरी चिन्ता हो उठी। उन्होंने सुझाव दिया कि अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन मिल-जुल कर ऐसे कदम उठायें जिससे ऐसा हस्तक्षेप रोका जा सके। कुछ समय तक तो यह लगा कि अमरीकी सरकार ऐसे प्रस्ताव को स्वीकार कर लेगी। जेफरसन और मेडिसन ने सयुक्त कार्यवाही के लिए मुनरो को परामर्श दिया। किन्तु जान क्वीन्सी एडम्स ने विदेश सचिव के रूप मे उचित ही बल दिया कि अमरीका को इस दिशा मे अकेले ही अग्रसर होना चाहिए और अन्त मे मुनरो ने उनके ही दृष्टिकोण को स्वीकार किया। काग्रेस को दिये गये अपने सन्देश मे उन्होंने सर्वप्रथम यह घोषित किया कि अमरीकी प्रायद्वीप आगे से किसी भी यूरोपीय शक्ति द्वारा भविष्य मे उपनिवेश स्थापित करने के लिए खुले क्षेत्र नही रह सकेगे और दूसरा यह कि दक्षिणी अमरीकी राज्यो का शोषण करने के यूरोपीय दृष्टिकोण अथवा किसी भी रूप मे उनके भाग्य का नियन्त्रण ऐसे कार्य होंगे जिन्हे अमरीका अमैत्रीपूर्ण मानेगा। इस प्रकार अमरीकी विदेश नीति मे एक ऐसे महान पहलू की स्थापना हुई जिसे एक शताब्दी से भी अधिक समय तक स्थायी बने रहने का सौभाग्य मिला।

मिसूरी का समझौता : गुलाम प्रथा की ओर यद्यपि अब तक बहुत कम अंशों मे ही जनता का ध्यान आकर्षित हुआ था, फिर भी उसका दीर्घ

से एक महान शक्ति के रूप मे विकास हो रहा था। और १८१९ मे एक आश्चर्यजनक घटना के साथ—"रात मे खतरे के लिए बजायी गयी घण्टी के समान"—जेफरसन ने लिखा—"इस भयकर समस्या की ओर जनता का ध्यान आकर्षित हुआ। गणतंत्र के प्रारम्भिक दिनो मे, जबकि उत्तरी राज्य अविलम्ब अथवा क्रमशः मुक्ति की व्यवस्था कर रहे थे, कई नेताओं की यह मान्यता थी कि दासप्रथा सर्वत्र शीघ्र ही स्वतः नष्ट हो जायगी। १७८६ मे वाशिंगटन ने लाफायेत को लिखा कि उनकी उत्कट अभिलाषा है कि कोई ऐसी योजना अपनायी जाय जिससे दासप्रथा धीरे धीरे निश्चित रूप मे मिटायी जा सके। अपनी वसीयत द्वारा उन्होने सभी गुलामो को स्वतत्र कर दिया था। जेफरसन का दृष्टिकोण था कि दासप्रथा का अन्त दो मिलेजुले तरीकों से किया जाय—एक तो उन्हे मुक्ति देकर तथा दूसरा उन्हे निष्कासित करके। उन्होने कहा, 'अपने देश के प्रति मेरी व्याकुलता बढ़ जाती है जब मै सोचता हूँ कि भगवान का न्याय अनिवार्य रूप से होकर ही रहता है।' पैट्रिक हैनरी, मेडिसन, मुनरो और कई अन्य लोगो ने भी इस प्रकार की घोषणाएँ की। १८०८ मे जब दास-व्यापार का अन्त किया गया तो असख्य दक्षिणी लोगो ने सोचा कि दासप्रथा केवल अस्थाई बुराई ही प्रमाणित होगी।

किन्तु आगामी पीढी मे दक्षिण के विचारो मे परिवर्तन हो गया और वह दासप्रथा की रक्षा के लिए एक दृढ़ समुदाय के रूप मे सगठित हो गया। इसका क्या कारण था? दक्षिण से दासप्रथा के उन्मूलन की यह भावना कैसे लुप्त हो गयी? इसका एक कारण तो यह था कि दार्शनिक उदारता की वह भावना जो क्राति के दिनो मे अत्यधिक प्रज्ज्वलित हुई थी, शिथिल हो गयी थी। दूसरा कारण यह था कि सुधारवादी न्यू इग्लैण्ड और दासप्रथा के क्षेत्र दक्षिण मे सामान्य कटुता स्पष्ट हो गयी। १८१२ के युद्ध, तटकर, और अन्य प्रमुख समस्याओ पर उनका मतभेद था। दक्षिण को उत्तर के मुक्ति-सम्बन्धी विचार पसन्द नही आये। किन्तु सबसे अधिक कुछ नये आर्थिक पहलूओ ने दासप्रथा को १७९० की अपेक्षा अधिक लाभकर बना दिया था।

आर्थिक परिवर्तन का एक अंश तो सर्वविदित है—दक्षिण मे रुई-उत्पादन का विकास। यह आशिक रूप से सुधरी किस्म की कपास के अस्तित्व मे आने के कारण जिसमे अधिक अच्छे रेशे थे और मुख्यतया १७८३ मे एली व्हिटनी के कपास साफ करने की कल के महान आविष्कार पर आधारित था। कपास-उत्पादक समाज तीव्र गति से पश्चिम की दिशा मे करोलिना और जार्जिया

तक अग्रसर हुआ और निम्न दक्षिण के अधिकाश भूभाग मे मिस्सिसिपी नदी तक विस्तरित होकर अन्त मे टेक्साज तक फैल गया था। एक दूसरा कारण जिसने दासप्रथा को नये आधार पर रखा था, वह था गन्ने का उत्पादन। दक्षिणपूर्व लुइसियाना मे नदी के मुहानो की उपजाऊ और उष्णकटिबधीय भूमि गन्ने के लिए आदर्श है। १७९४-९५ मे न्यू आरलियन्स के एक उद्योगी व्यक्ति इटिन-बोर ने यह प्रमाणित कर दिया कि गन्ने की फसल काफी लाभप्रद हो सकती है। उसने चरखियाँ और कडाह लगाये और न्यू आरलियन्स मे रस को उबलते हुए देखने के लिए आये जन-समूह ने जब ठडे तरल-पदार्थ चीनी के प्रथम दाने देखे तो वे हर्ष-ध्वनि करने लगे। 'यह तो दानेदार हो गया है' के हर्षोच्चारण ने लुइसियाना मे एक नये युग का प्रारम्भ कर दिया। परिणामस्वरूप एक महान समृद्धि काल आया और १८६० तक यह राज्य अकेले ही समूचे राष्ट्र की चीनी की खपत के अर्धांश की पूर्ति करने लगा। इसके लिए दासो की आवश्यकता थी जो हजारो की सख्या मे पूर्वीय सागर-तट से लाये गये थे।

अन्त मे तम्बाकू-उत्पादक समाज का भी पश्चिम की ओर विस्तार हुआ और वह अपने साथ साथ दासप्रथा को भी लेता गया। लगातार फसले उगाने के कारण वर्जीनिया की भूमि की खेती-योग्य धरती जो किसी समय ससार की सबसे बडी कपास-उत्पादक भूमि थी, बजर बनती जा रही थी। अतएव कपास-उत्पादक खुशी-खुशी केन्टकी और टेनेसी की ओर जाने लगे और अपने साथ नीग्रो लोगो को भी लेते गये। उसके पश्चात् ऊपरी दक्षिण मे दासो की बढती हुई आबादी को निम्न दक्षिण और पश्चिम की ओर लाया गया। दासप्रथा के इस विस्तार से कई पर्यवेक्षको को चैन की सास मिली क्योकि उससे नाट टर्नर के विद्रोह जैसे दास विद्रोह का खतरा कम हो गया। यह विद्रोह वर्जीनिया के ६०-७० गुलामो ने १८३१ मे किया था। इस आकस्मिक विद्रोह से दक्षिणवासियो के मुक्ति सम्बधी सिद्धान्तो के प्रति उनकी आशंका जो थी उसमे वृद्धि हो गयी।

ज्यो-ज्यो उत्तर का स्वतंत्र समाज और दक्षिण का दास-समर्थक समाज पश्चिम की ओर बढ़ता गया, यह वाछनीय लगा कि दोनो के मध्य एक सामान्य सन्तुलन रखा जाय। १८१८ मे जब इलिनायस को सघ का सदस्य बना लिया गया, तब दस दास-प्रथावाले राज्य और ग्यारह मुक्त राज्य थे। १८१९ मे अलाबामा और मिसूरी दोनो ने सदस्यता के लिए आवेदनपत्र भेजे। अब स्थिति यह थी कि अलाबामा को जार्जिया की प्राथमिक भूमि परित्याग की शर्त

के अनुसार, दासप्रथा वाला राज्य रहना था और उसके प्रवेश से दासप्रथा वाले राज्यो और स्वतत्र राज्यो के मध्य सन्तुलन स्थापित हो जाता। किन्तु कई उत्तरवासियो ने अविलम्ब एक साथ मिल कर मिसूरी के प्रवेश का विरोध किया और कहा कि वह स्वतंत्र राज्य के रूप मे ही प्रवेश पा सकता है। न्यूयार्क के प्रतिनिधि टेलमेज ने प्रवेश-विधेयक मे एक सशोधन प्रस्तुत किया कि मिसूरी क्रमशः मुक्ति की नीति अपनाये। देश भर मे एक प्रबल तूफान उठ खडा हुआ। कुछ समय तक तो कॉग्रेस का कार्य—जहाँ स्वतंत्र न्यूयार्क के लोगो द्वारा प्रतिनिधि सदन का नियन्त्रण तथा दासता के समर्थकों के हाथों मे सिनेट का नियन्त्रण था—पूर्वरूपेण अवरुद्ध रहा। लोगों को इस पर रक्तपात का भय भी हुआ।

हेनरी क्ले के प्रशान्त नेतृत्व मे तब एक समझौते की व्यवस्था की गयी। मिसूरी को दास-राज्य के रूप मे प्रवेश दिया गया किन्तु उसी समय मेन को भी स्वतत्र राज्य के रूप मे प्रवेश मिल गया। कॉग्रेस ने यह निश्चय किया कि लुइ-सियाना क्रय द्वारा ३६·३०° समानातर के उत्तर मे प्राप्त प्रदेश को मिसूरी के दक्षिणी राज्यों के प्रवेश से सदा के लिए पृथक कर दिया जाय। वातावरण फिर स्पष्ट हो गया। किन्तु प्रत्येक दूरदर्शी दर्शक ने जान लिया था कि तूफान फिर आयेगा। जेफरसन ने लिखा कि रात्रिकाल मे खतरे की यह घण्टी उन्हे संघ की मृत्यु की कराह के समान लगी।

इसी बीच दक्षिण को भी आनेवाले तूफान का आभास मिला। १८२१ मे एक युवक वेन्जामिन लुण्डी ने 'जीनियस आफ इमैन्सीपेसन' नाम की एक दासप्रथा-विरोधी पत्रिका की स्थापना की। १८८३ मे अंग्रेज सुधारक विल्बर-फोर्स ने एक दासप्रथा-विरोधी सस्था स्थापित की जिसके सदस्य जेकारी मेकाले तथा अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति बने।

जेफरसन का प्रादुर्भाव : १८२४ मे राष्ट्राध्यक्ष-पद के लिए देश के सामने पाच उम्मीदवारो के नाम आये। इन पाचों मे से जान किन्सी एडम्स और काल्होन पूर्ण रूप से योग्य थे और जार्जिया के डब्ल्यू. एच. क्रोफोर्ड योग्यतम राजनीतिज्ञ थे। किन्तु इन सबसे अधिक लोकप्रिय उम्मीदवार एन्ड्रयू जेक्सन थे। न्यू आरलियन्स के इस नेता के पश्चिमी प्रशसक इसे सबसे महान सैनिक मानते थे। कुछ लोगो के विचारानुसार सीजर, नेपोलियन, और मार्लबरो उनकी तुलना मे कुछ भी नही थे। पूर्व के कई अनुदार व्यक्ति उनका विश्वास

नहीं करते थे। जेफरसन के साथ ही उन्होंने भी माना कि सिनेट के वाद-विवाद में इनका कंठ क्रोध से इतना अवरुद्ध हो जाता था कि वह बोल ही नहीं पाते थे। उन्होंने याद किया कि सेनापति के रूप मे जैक्सन ने कितनी तेजी से स्पेनिश फ्लोरिडा पर प्रहार किया और कितनी तत्परता से वहा पर उन्होंने दो अंग्रेजो को फासी दे दी। एडम्स के दृष्टिकोण से वे एक आदर्श उप-राष्ट्राध्यक्ष बनने योग्य थे। वही पद उनके लिए गौरवपूर्ण होता, उनकी कीर्ति पुनः दीप्त हो उठती और यह खतरा नही रहता कि वे किसी को फासी चढ़ा देगे।

चुनाव मे जैक्सन ने लोकप्रिय मतों मे सबसे अधिक मत पाये। किन्तु निर्वाचन कक्ष मे किसी को बहुमत प्राप्त नही हो सका और चुनाव सदन के हाथ मे चला गया जिसने अन्त मे विद्वान, अनुभवी और कुशल राजनीतिज्ञ किन्तु जिद्दी एडम्स को चुना दिया।

एडम्स अपनी दो महान राष्ट्रीय सफलताओ के साथ पदारूढ़ हुए। मुनरो सिद्धान्त प्रथमतया उनका ही कार्य था जबकि १८१६ मे स्पेन की सरकार को सन्धि करने के लिए बाध्य करनेवाले—जिससे फ्लोरिडा अमरीका का एक अंग बन गया—भी वे ही थे। वे असाधारण बुद्धिमान, सौम्य, चरित्रवान और जनसेवी व्यक्ति थे। किन्तु उनकी अति-मितव्ययिता, रूखा व्यवहार और तीव्र पूर्वाग्रह उनकी प्रगति मे रोड़े बन गये। राष्ट्राध्यक्ष के रूप मे वे बहुत कम सफलता प्राप्त कर पाये क्योकि जैक्सन के अनुयायियो के उग्र प्रतिवाद ने उन्हे प्रत्येक कदम पर पराजित किया। उन्होंने उन पर यह अभियोग लगाया था कि क्ले के साथ भ्रष्ट सौदेबाजी करके ही वे इस पद पर पहुँचे हैं। दलीय कटुता मे इतनी वृद्धि शायद ही कभी हुई हो। व्यंग करनेवाले दोनोक के जान रैन्डाल्फ ने फील्डिंग के टाम जोन्स के सन्दर्भ मे, एडम्स और क्ले को रक्तपिपासु भ्रष्ट जार्ज का आदर्श बतलाया, जो कि प्यूरीटन और ब्लैकलेग के बारे मे एक मनगढ़न्त बात थी। ऐसे प्रहारो के मारे चिढ़ कर एडम्स ने अपनी डायरी मे लिखा: 'दल के अपवाद करनेवाले नीच मनुष्य हाउस आफ रिप्रेजेन्टेटिव्स (प्रतिनिधि सभा) के आसपास मंडराते रहे हैं ताकि संघ के वातावरण को वहाँ और भी दूषित कर सके।' उन्होने रेन्डाल्फ को 'मदिरालयो और गलियो मे चक्कर काटनेवाला' बतलाया।

प्रशासन की अवधि मे नयी मित्रताएँ बढ़ीं। एडम्स और क्ले के अनुयायियो ने नेशनल रिपब्लिकन्स दल का नाम अपनाया जो बाद मे 'विग्स' कर दिया गया। जैक्सन के अनुयायियों ने डेमोक्रेटिक दल को नया रूप दिया। एडम्स

ने ईमानदारी और कुशलता से शासन किया और आन्तरिक सुधारो के लिए एक राष्ट्रीय प्रणाली के गठन का काफी प्रयत्न किया। उनके अथक परिश्रम का वर्णन उनकी डायरी के एक अनुच्छेद मे इस प्रकार दिया गया है : 'जो जीवन मैंने व्यतीत किया है वह शायद अन्य किसी समय के जीवन की अपेक्षा अधिक नियमित रहा हो। यह परम्परा स्थापित हो चुकी है कि अमरीका का राष्ट्राध्यक्ष किन्ही व्यक्तिगत मित्रों के साथ बाहर नही जाता; मै इस परम्परा को स्वीकृति प्रदान करता हूँ। अतएव मै इस बात के लिए बाध्य हो गया हूँ कि यदि व्यायाम करूँ तो प्रातःकाल नाश्ते से पूर्व। मै प्रायः ५-६ के बीच सो कर उठता हूँ; इसका अर्थ है कि वर्ष के इस समय, सूर्योदय से घण्टा-डेढ़ घण्टा पूर्व। मै चन्द्रमा या तारों के प्रकाश मे या प्रकाश के बिना भी, चार मील तक टहलने जाता हूँ। जब यहाँ (व्हाइट हाउस) लौटता हूँ तो प्रायः पूर्वी कक्ष से सूर्य के दर्शन होने का समय हो जाता है। तब मै अग्नि प्रज्वलित कर बाइबिल के तीन अध्याय पढता हूँ। स्काट और वेलेट के भाष्य के साथ पाठ करता हूँ। ९ बजे तक समाचारपत्र पढ़ता हूँ। नाश्ते के पश्चात्, ९ से ५ बजे तक आगतुको का जो तॉता लगा रहता है, उनसे मिलता हूँ। कभी कभी बीच मे, जो शायद आधे घण्टे से अधिक नही हो पाता, ऐसा कार्य करता हूँ जिसमे अधिक एकाग्र-चित्त होने की आवश्यकता नही पडती। ५ बजे से साढे ६ बजे तक हम भोजन करते हैं, उसके पश्चात् लगभग चार घण्टे मै अपने कक्ष मे अकेला बिताता हूँ। इस समय मै इस डायरी मे कुछ लिखता हूँ अथवा सार्वजनिक कार्य सम्बन्धी कागज-पत्र पढता हूँ।'

१८२८ का चुनाव एक भूकम्प के समान था, जिसमे जैक्सन के अनुयायियों नें एडम्स और उनके समर्थकों को बहुत अधिक मतों से पराजित किया। कटुता मे इतनी वृद्धि हो चुकी थी कि वाशिंगटन पहुँचने पर मनोनीत राष्ट्राध्यक्ष जेक्संन ने पहले के राष्ट्राध्यक्ष से भेट करने की परम्परा का निर्वाह करने से इनकार कर दिया जब कि एडम्स ने अपने उत्तराधिकारी के साथ राजधानी में प्रवेश करने से इनकार किया।

जैक्सन का सत्तारूढ़ होना अमरीकी जीवन में एक नये युग का द्योतक है। वह एक ऐसा उद्घाटन था जैसा देश ने कभी नहीं देखा था। वाशिंगटन के दर्शकों ने उसकी तुलना रोम पर बारकेरिएन (असभ्य लोगों) के आक्रमण से की। डैनियल वेब्सटर ने बहुत दिनों बाद लिखा कि नगर दर्शकों, पद के इच्छुक लोगों, विजयी राजनीतिज्ञों और सरलहृदय पश्चिम और पूर्व के निवासियों से

भरा पड़ा है। लोग पॉच-पॉच सौ मील को दूरी पर से अपने नायक को राष्ट्राध्यक्ष पदग्रहण करते देखने आये थे और वे ऐसी बातचीत कर रहे थे कि मानो देश को किसी भारी सकट से मुक्त कर लिया गया हो। सडको पर जब वे जेक्सन की जयजयकार करते घूमते थे तब उनमे से कई इतने उल्लासपूर्ण होते थे कि सभ्य लोगों को उनसे दूर रहने को बाध्य होना पड़ा। एक दर्शक ने इस अवसर का निम्न प्रकार से वर्णन किया है :

'उद्घाटन की प्रातःवेला मे राजधानी के आसपास का क्षेत्र एक बडे, अशान्त सागर सा लग रहा था। ऐतिहासिक स्थल व्हाइट हाउस को जानेवाली प्रत्येक सडक जनता से इस प्रकार भरी पडी थी कि मनोनीत राष्ट्राध्यक्ष के साथ पूर्वी कक्ष तक जानेवाला अधिकृत जुलूस जहॉ समारोह होनेवाला था, कठिनाई से ही गुजरने का रास्ता पा सका। सामने की भीड़ को पीछे ढकलने के लिए, मोटा तार सीढ़ियो के उस भाग की ओर, जहॉ से राजधानी का मार्ग है, दो तिहाई भाग तक लगा दिया गया। किन्तु समय समय पर लगता कि मानों इस व्यवस्था से भी भीड के उत्साह को जिसमे से प्रत्येक राष्ट्राध्यक्ष से हाथ मिलाने का गौरव प्राप्त करना चाहता था, नहीं नियन्त्रित किया जा सकेगा। मै उस दृश्य को कभी भूल नही सकता जो चारों ओर दिखलाई पड़ रहा था; न मै वह विद्युत् की सी तेजी से आनेवाले क्षणो को भूल सकता हूँ जबकि उत्सुकतापूर्ण प्रतीक्षा करते हुए विशाल और विचित्र पोशाको से सज्जित जनसमूह ने अपनी श्रद्धा के पात्र सुयोग्य और प्रभावशाली राष्ट्राध्यक्ष के मण्डप से भीतर प्रवेश करते समय दर्शन किये। सारी जनता का हर्ष मानों किसी जादू से तुरन्त ही प्रस्फुरित हो गया। सबके टोप अभिवादन के लिए तुरन्त उतर गये और दस हजार से अधिक चेहरे हर्ष और उल्लास से प्रदीप्त हो उठे। हर्षोल्लास की ध्वनि वायु-मण्डल मे गूँज उठी।'

किन्तु विशेष महत्वपूर्ण दृश्य समारोह के पश्चात् उपस्थित हुआ। उत्साह मे भरे डेमोक्रेटो का समूह व्हाइट हाउस की ओर उमड़ पड़ा। प्रत्येक को ज्ञात था कि वहॉ जलपान का आयोजन होगा, प्रत्येक राष्ट्राध्यक्ष को अपने निवास-स्थान मे देखने का इच्छुक था। नारगी से बनी मदिरा से भरे पीपे और गिलास लिये हुए सेवकों को जन-समूह ने अस्तव्यस्त कर दिया। उन्होंने जैक्सन को दीवार तक हटने को बाध्य कर दिया जहॉ उनकी रक्षा के हेतु उनके मित्रो को अपने हाथो को बॉध घेरा बनाना पड़ा। वे सब कीचड से सने जूतो मे साटिन से सज्जित फर्नीचर पर खड़े थे। न्यायाधीश स्टोरी ने लिखा है

'मैंने इस प्रकार के मिश्रित समूह को कभी नहीं देखा।' मानो भीड की सत्ता ही विजयी लग रही थी।

जैक्सन का दृष्टिकोण : जैक्सन उन इने-गिने राष्ट्राध्यक्षो मे से थे जिनकी आत्मा और मस्तिष्क आम लोगों के साथ थे। उन्हे उनके प्रति सहानुभूति और विश्वास था क्योंकि वे स्वय भी उनमे से एक थे। वे बडी निर्धन स्थिति मे पैदा हुए थे। उनके निर्धन पिता, जो अल्स्टर स्काटलैण्ड मे कपडा बेचते थे, वे उत्तरी करोलिना मे जगलों मे आ बसे थे। उन्होने वहाँ जंगल साफ करके एक फार्म तैयार किया था और एण्ड्रयू के उत्पन्न होने के पूर्व ही स्वर्ग सिधार गये थे। उनका परिवार उनकी समाधि के लिए पत्थर खरीदने मे भी असमर्थ था। उनकी माँ एक रिश्तेदार के यहाँ उसके घर की देखभाल करने लगी। लडका जिसका लालन-पालन कठिनाई और असुरक्षा की भावना के बीच हुआ, सस्ती पोशाक पहनने और मनोदौर्बल्य रोग का शिकार होने के कारण बारम्बार अपमानित किया गया। बचपन से ही गरीबी के वातावरण में पलने के कारण उनमे विस्फोटक क्रोध और तीव्र भावुकता भर गयी थी। यही कारण था कि वे जीवन भर पीडित वर्ग के समर्थक रहे। एक किशोर के रूप मे ही उन्होंने क्रांति मे भाग लिया था, जिसमे उनके दो भाई शहीद हो गये थे।

जैक्सन मे, आशिक रूप से पश्चिमी सीमा के वातावरण और आशिक रूप से दुर्भाग्यहीन व्यक्तिगत अनुभवो के कारण, पूर्वीय पूंजीवादी सगठनों के प्रति गहरे अविश्वास की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। कानून के अध्ययन के पश्चात्, वे टेनेसी गये, जहा उन्होंने जीवन-क्षेत्र मे आगे बढ़ने का प्रयत्न किया। उन्होने भूमि का क्रय-विक्रय किया, घोड़ों और गुलामों का व्यापार किया और कुछ समय तक एक जनरल स्टोर भी चलाया। उस क्षेत्र मे कानून-विशेषज्ञ को व्यापारी भी बनना पडता था क्योकि उसे फीस के रूप मे भालू की खाल, चमड़ा, कपास और भूमि भी प्राप्त होती थी। १७९८ मे जैक्सन ने फिलाडेल्फिया मे लगभग ७ हजार डालर की लागत की भूमि को बेचा ताकि एक व्यापारी को जिसकी हुंडी पर जैक्सन ने हस्ताक्षर किये थे, किन्तु जो नहीं चल सकी, रकम अदा की जा सके। इससे उन पर काफी कर्ज चढ़ गया और उन्होंने इस भावना के साथ वह रकम अदा की कि पूर्व की वित्तीय प्रणाली ने ही उन पर यह अत्याचार किया है। उन्होने जुआ नहीं खेला था, उन्होने केवल

फिलाडेल्फिया के व्यापारियों के बीच प्रचलन वाली हुंडियो मे से कुछ ले ली थी और जब तक यह भ्रम दूर हुआ तब तक व्यापारियों ने उनकी भूमि और नकद रकम दोनों पर अधिकार कर लिया।

इसके अतिरिक्त एक सीमान्त कानून विशेषज्ञ और एक व्यापारी के नाते जेक्सन को ज्ञात हो गया था कि पूर्व का पश्चिम के वाणिज्य पर बहुत कुछ आधिपत्य है। उन्हे अपनी कपास, खाद्यान्न और सुअर नदी के रास्ते से ले जाकर न्यू आरलियन्स मे बेचने पडते थे, अपने नेशवायल के स्टोर के लिए सामान्य वस्तुएँ भी उन्हे फिलाडेल्फिया मे खरीदनी पडती थी। वे फिलाडेल्फिया से वस्तुएं मंगाने के लिए आर्डर भेजते तब तक वस्तुओं के मूल्यो मे भारी वृद्धि हो जाती थी। वे अपने उत्पादनों को मिस्सिसिपी से नीचे की ओर भेजते और उनको अनुभव होता था कि उनका मूल्य अत्यधिक गिर गया है। सीमा के दोनो ओर ऋण देने वाले मोटे होते गये जब कि जैक्सन और उनके पडौसियो को जीवन निर्वाह करने मे कठिनाई हो रही थी। इस तथ्य से उनके बैंको के प्रति अविश्वास और घृणा मे वृद्धि होती गयी—वही अविश्वास जिसके कारण पश्चिम सदा बदनाम रहा है। जैक्सन को विश्वास हो चला कि धनिकों को उनकी सेवाओं के बदले बहुत अधिक दिया जा रहा है। यह विचित्र बात थी कि फिलाडेल्फिया और न्यूयार्क के आरामतलब बैंक-व्यवसायियो को टेनेसी के कठोर परिश्रम करनेवाले लोगों को विनष्ट करने की शक्ति प्राप्त हो।

तीसरी बात यह थी कि जैक्सन मे ऐसा ही पश्चिमी विश्वास था कि साधारण व्यक्ति भी असाधारण सफलताएँ प्राप्त करने मे समर्थ है। पश्चिम वालों का विश्वास था कि साहसी व्यक्ति, जो किसी सैनिक टुकडी का सचालन कर सकता हो, बागान चला सकता हो और राजनीतिक विषय पर अच्छा भाषण दे सकता हो, किसी भी पद के योग्य है। उनका एक क्षण के लिए भी यह विश्वास नहीं था कि सार्वजनिक जीवन के प्रतिष्ठित पद धनी, कुलीन और शिक्षितों के लिए हीं सुरक्षित हैं। रीछ के शिकारी को भी उनकी दृष्टि मे उतना ही अधिकार प्राप्त था जितना कि हार्वर्ड के एक ग्रेज्यूएट को। उनके इस दृष्टिकोण के पीछे कई कारण थे। टेनेसी मे आदिवासियो के विरुद्ध लड़े जाने वाले युद्ध मे जैक्सन ने—जिनकी पत्नी सींग का बना पाइप पीती थी और जो 'यूरोप' भी ठीक ठीक नही लिख सकती थी—ऐसा शिक्षण पाया कि वह एक महान राष्ट्रीय नेता बन गये। इलिनोइस मे लोहे की छड़ो को चीरनेवाला एक दुबला-पतला व्यक्ति, जो सभ्य तौरतरीको और लैटिन के क्रियापदों से पूर्णतया अपरिचित था, आगे

बढ रहा था। उसे ही सघ को बचाने का श्रेय प्राप्त था। जैक्सन ने बैकवुड के लोगों को विलिगटन जैसे योद्धाओं को पराजित करते देखा था। उन्होंने क्ले तथा वेन्ट जैसे अपनी योग्यता से आगे बढ़नेवाले व्यक्तियों को देखा था, जिन्होंने राष्ट्रीय काग्रेस पर पूर्ण प्रभुत्व स्थापित कर लिया था।

सक्षिप्त मे जैक्सन के सिद्धान्त को एक मुहावरे मे कहा जा सकता है:— 'जन-साधारण मे विश्वास, राजनीतिक समानता में विश्वास; समान आर्थिक अवसर देने मे विश्वास; एकाधिकार, विशेषाधिकारो और पूजीवादी वित्त की जटिलताओं के प्रति घृणा।'

जैक्सन का समर्थन करनेवाली विभिन्न प्रकार के स्वार्थों से बनी डेमोक्रेटिक पार्टी मे दो निःस्वार्थ पहचाने जा सकते थे। दल के बहुमत मे राष्ट्र के कृषक मतदाताओं, अन्वेषकों, किसानों, छोटे बागान मालिकों और ग्रामीण दूकानदारो का समावेश था। अलेघेनी से परे पश्चिम के क्षेत्रों की, जिसकी १८३० तक एक-तिहाई जनसख्या थी, अपनी विशेषताएँ थीं। उसकी भावना अत्याधिक राष्ट्रवादी थी, नये क्षेत्रों मे १३ राज्यों की अपेक्षा राज्य सम्बन्धी भावना बहुत कम थी, सघ के प्रति ही उनका लगाव था। इसके अतिरिक्त पश्चिम में राजनैतिक समानता एक तथ्य के रूप मे स्वीकार की जाती थी। वहाँ का प्रत्येक वयस्क गौरवर्णी मतदान और पद प्राप्त करने का अधिकारी था। लेकिन पूर्व मे मतदान पर बहुत दिनों तक प्रतिबन्ध बना रहा। और, उसको दूर करने के आन्दोलन का मसाचुसेट्स मे वेबस्टर, न्यूयार्क मे जेम्स केन्ट, वर्जीनिया में जार्ज मार्शल जैसे अनुदारों ने घृणा के साथ विरोध किया। किन्तु अलाबामा और मिसूरी, इण्डियाना और इलिनोइस ने प्रत्येक गौरवर्ण के व्यक्ति को अधिकार दिया।

इसके अलावा पश्चिम एक सरल प्रजातत्र था। जैक्सन के अनुयायियों ने काग्रेस द्वारा राष्ट्राध्यक्ष पद के लिए उम्मीदवार मनोनीत करने के पुराने तरीके पर प्रहार किया और नये और सीधे तरीके से अधिवेशन को मनोनीत करने के तरीके का समर्थन किया। यह तरीका १८३६ में दृढ़ता से स्थापित हो गया। उन्होंने निर्वाचित न्यायाधीशों को मनोनीत न्यायाधीशों की अपेक्षा प्राथमिकता दी। अन्तिम रूप से, पश्चिमी कृषक–मतदाता नये प्रकार की राजनीतिक मागों मे रुचि रखते थे। वे पूर्वीय नियन्त्रण मे बैकिंग सस्थाओं को नहीं चाहते थे। वे देनदार की अपेक्षा लेनदार के अनुकूल थे। उन्हें एकाधिकार जैसी प्रत्येक वस्तु से, जैसे स्टीमबोट से लेकर बैकों के घोषणापत्रों और पेटेन्ट सम्बन्धी

अधिकारों तक से घृणा थी। वे सार्वजनिक भूमि को सस्ती दर पर और सरल शर्तों पर खरीदने के इच्छुक थे।

जैक्सन की लोकशाही का दूसरा प्रमुख पहलू था पूर्वीय नगरों का श्रमिकवर्ग। १८१२ के युद्ध और सरक्षित तटकरों, तथा आयात प्रतिबन्ध से प्रोत्साहित होकर न्यू इग्लैण्ड और मध्य के राज्यों मे महत्वपूर्ण कारखाने बन रहे थे। मेरीसेफ घाटी और प्रावीडेन्स के क्षेत्र सूती-वस्त्रोद्योग के प्रगतिशील केन्द्र बने। मसाचुसेट्स स्थित लावेल मे १८३७ में लगभग ५ हजार श्रमिक थे। उस वर्ष तक न्यूयार्क के २० हजार कारखानो और जहाज के श्रमिकों ने तथा अग्रेज, आयरिश, जर्मनो प्रवासियों ने डेमोक्रेटिक पक्ष को रिपब्लिकन पक्ष की अपेक्षा अधिक पसद किया। नये श्रमिक वर्ग की अधिकाधिक सख्या ने न्यूयार्क को सघीय नगर से परिवर्तित कर एक लोकशाही नगर बना दिया और फिलाडेल्फिया तथा पिट्सबर्ग को जैक्सन की भावनाओ के केन्द्र का रूप दे दिया। उन्होंने इस युग मे अनेक श्रमिक सघो (जो सर्वप्रथम अधिकाश ट्रेड एसोसिएशन के नाम से पुकारे गये) की स्थापना की और विलियम लागेट जैसे ओजस्वी वक्ताओं के अन्तर्गत प्रतिक्रियावादी न्यायालयो पर, जो हडतालो को पुराने षड्यंत्रकारी कानून के अन्तर्गत दोषी ठहराते थे, प्रहार किये। उन्होंने जैक्सन द्वारा १८३६ मे राष्ट्रीय जहाजी यार्ड मे १० घण्टे (क्योकि मसाचुसेट्स के कारखाने तब प्रति सप्ताह ५ डालर देकर लोगो को प्रतिदिन १० से अधिक अथवा १४ घण्टे काम करवाते थे) के कार्य-सम्बन्धी कानून का स्वागत किया।

जैक्सन के कदम : एक बार सत्तारूढ़ हो जाने पर जैक्सन ने अपने मुख्य प्रस्तावो को उदारतापूर्वक कार्यरूप मे परिणत किया। जिस ढंग से कॉंग्रेस स्थानीय सड़को और नहरों पर धन खर्च करने सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकार कर रही थी, उन्होंने उसका विरोध किया। खजाने से हो रहे खर्चों को उन्होंने तत्काल अपने "मेसवाइल अधिकार" द्वारा रोक लिया और केन्टकी मे लेक्सिनटन से मेसवाइल तक जानेवाली सडक-योजना को उन्होने अस्वीकार कर दिया। दक्षिण करोलिना ने जब १८२८ मे सरक्षण करों को समाप्त करने का प्रयत्न किया तो उन्होंने उसके विरुद्ध कड़ी कार्रवाई की। १८३० मे जेफर-सन दिवस पर आयोजित भोज के अवसर पर उन्होने दक्षिण करोलिना के नेता काल्होन की ओर सकेत करते हुए कहा: "हमे सघ की रक्षा करनी ही होगी।" जब दक्षिण करोलिना ने अपनी ही नीति पर चलना जारी रखा तब

जनरल स्काट और नौसैनिक वेड़े को चार्ल्स्टन भेज कर और एक घोषणापत्र जारी कर, जिसमे उन्होंने घोषित किया था कि सेना का सघ के विरुद्ध जाना देशद्रोह है, उन्होंने दिखा दिया कि वे उचित कार्रवाई करने से चूकनेवाले नही हैं। वे आवश्यकता पडने पर काल्होन को फासी पर लटकाने के लिए तत्पर थे, और बाद के वर्षो मे उन्हे पश्चाताप हुआ कि उन्होने ऐसा क्यों नहीं किया। एक ओजस्वी भाषण मे डेनियल वेवस्टर ने दक्षिण करोलिना के मुख्य समर्थक रावर्ट वाई हेन को सिनेट मे निरुत्तर कर दिया। उनके भाषण का उपसहार था: 'स्वतत्रता और सघ, अब और हमेशा, एक और अभिन्न'। यह एक राष्ट्रीय एकता का नारा बन गया था। भाग्यवश दक्षिण करोलिना दक्षिण को अपने साथ न मिला सका और उसने कर समाप्ति का परित्याग कर दिया क्योकि शातिप्रेमी क्ले ने करो मे कमी करने के बारे मे एक समझौता करवा दिया। जैक्सन ने अमरीका के द्वितीय बैंक से साहसपूर्ण और सफल सघर्ष किया और उसकी पहले जैसी वित्त और एकाधिकारी सत्ता का अन्त कर दिया। उसके प्रधान, चतुर निकोलस विडल को हेनरी क्ले और व्हिगो का समर्थन प्राप्त था। सामान्य रूप से बैंक अच्छी तरह चलाया गया था और राष्ट्र के प्रति उसने बहुमूल्य सेवाए की थी। किन्तु जेफरसन ने एक केन्द्रीय धनसत्ता को नापसद करते हुए १८३२ मे उसको पुनः अधिकार देने सम्बन्धी प्रस्ताव पर विशेषाधिकार का कठोर प्रयोग किया। आगामी वर्ष बैंक से सरकारी डिपाजिटो को निकाल कर उन्होंने उन्हे राज्य बैंकों मे जमा कर दिया ताकि वे केन्द्रीय सस्था के विशेष कार्य को स्वयं कर सके। निःसन्देह बैंक ने राजनीति मे हस्तक्षेप किया था। इसमे भी सन्देह नही कि यह एक व्यक्तिगत ठेकेदारी भी थी जिसने आन्तरिक व्यक्तियो के एक दल को असाधारण रूप से लाभ पहुँचाया था। जनता की भावना जैक्सन के साथ थी और यद्यपि अपने सम्पूर्ण दल का समर्थन प्राप्त करने मे उन्हें प्रबल सघर्ष करना पडा तथापि उन्होने निक टिडल के महान बैंक को समाप्त कर के ही दम लिया।

दूसरे मामलो मे भी राष्ट्राध्यक्ष ने दृढ़ निश्चय के साथ कार्य किया। जब फ्रास ने अपने कई ऋण अमरीका को चुकाने बन्द कर दिये तब उन्होंने फ्रास की अचल सम्पत्ति को जब्त करने का परामर्श देकर उसे ठीक कर दिया। जार्जिया से आदिवासियों को लगभग हटा दिया था; किन्तु जब टेक्सास ने मेक्सिको के प्रति विद्रोह कर दिया और विलय के लिए अमरीका से आग्रह किया तो उन्होंने बुद्धिमानी से अलग रहने का रुख अपनाया। अपनी द्वितीय अवधि के अन्त तक उन्होंने अपनी व्यापक लोकप्रियता कायम रखी।

अन्य प्रजातांत्रिक प्रवृत्तियाँ : प्रजातंत्र की उस विशाल लहर में, जो जैक्सन के दिनो मे उमड आयी थी, ऐसे जनसमूह का भी समावेश था जिसे जेफरसन का प्रजातंत्र स्पर्श नही कर पाया था। तीसवी दशाब्दी मे पुरुषो को अधिकाश ऐसे राज्यो में, जहाँ मतदान की योग्यता के लिए जायदाद सम्बन्धी प्रतिबध लगा हुआ था, मतदान का अधिकार प्राप्त हो चुका था। ऐसे मतदान के अधिकार का अर्थ था राष्ट्रीय मामलो मे रुचि लेनेवाले लोगों की संख्या मे वृद्धि। १८२४ में राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव मे कुल मिला कर केवल ३ लाख ५६ मत दिये गये थे; १८३६ में यह सख्या बढ़ कर १५ लाख तक जा पहुँची; और १८४० मे २४ लाख तक मत दिये गये। यह सख्या १६ वर्ष पूर्व की सख्या की सात गुनी अधिक थी। यद्यपि यह वृद्धि आशिक रूप मे जनसख्या मे वृद्धि होने के कारण थी, फिर भी इसका प्रमुख कारण मतदान सम्बन्धी प्रतिबधो का हटना और राजनीति मे जनता की बदलती हुई रुचि ही थी। राष्ट्राध्यक्ष को निर्वाचित करनेवाले प्रतिनिधियो को विधानसभा द्वारा चुना जाना बन्द कर दिया गया (दक्षिण करोलिना को छोड़कर) और वे लोकप्रिय मतों से चुने जाने लगे। राष्ट्रीय मामलों मे पदों पर बारी बारी से नियुक्तियाँ करना एक नियम सा बन गया। जैक्सन ने इस प्रणाली मे स्पष्ट रूप से आस्था प्रकट करते हुए कई राजनीतिक विरोधियो को अपदस्थ कर दिया। यद्यपि उन्होने बाद मे आनेवाले राष्ट्राध्यक्षो की अपेक्षा कम लोगो को अपदस्थ किया, किन्तु न्यूयार्क मे विलियम एल मर्सी द्वारा स्पष्ट किये गये नियम को उन्होंने स्वीकार कर लिया : 'विजेताओ को ही लूट का माल पाने का अधिकार है।'

लोगो के व्यवहार अधिक प्रजातान्त्रिक, कम औपचारिक और नियमो की जटिलताओ से मुक्त होते जा रहे थे। विदेशी पर्यवेक्षको को उत्तरी नगरो में सामान्य रूप से तम्बाकू थूकने, टेबल पर तीव्र गति से भोजन करने, अभद्रतापूर्ण उत्सुकता, शोरगुल, दम और जल्दबाजी देखकर आघात पहुँचा। इसके अलावा अमरीकी सस्कृति पर धृष्ट जीवन और हिंसात्मक कार्य की मुहर भी लग चुकी थी। जैसा कि तीव्र गति से विकास की ओर अग्रसर होनेवाले देश के लिए स्वाभाविक था, मानव श्रम से अधिक कार्य की पूर्ति का महत्व था। स्टीम बोटो और रेलमार्गों मे जनजीवन की सुरक्षा की ओर कम ध्यान दिया गया। द्वन्द्व युद्ध सामान्य हो गये थे और दक्षिग तथा पश्चिम मे लम्बे छुरो और पिस्तौल के खुले उपयोग द्वारा बहुधा पारिवारिक झगडे हल किये जा रहे थे। ऐसे क्षेत्रो मे जहाँ न्यायालय और कानून से सम्बन्धित अधिकारी

नहीं थे, कत्ल करना स्वाभाविक रिवाज के तौर पर ही जडे जमा चुका था। १८४० में जब हैनरी हैरीसन विगो द्वारा राष्ट्राध्यक्ष निर्वाचित हुए तब उनके पक्ष को यह ढोंग रचना पडा कि वे एक शिक्षित और साधारण रूप से धनी व्यक्ति हैं जो सिनसिनाटी मे अपनी दो हजार एकड भूमि पर ग्रामीण भद्रपुरुष के रूप मे रहते हं और जो वास्तव मे लकडी के केबिन मे रहनेवाले और तेज मदिरा पीनेवाले एक उत्साही नेता थे। फिर भी वास्तविक रूप मे लोक-व्यवहार का औसत स्तर गणतंत्र के प्रारम्भिक दिनो की अपेक्षा गिरा हुआ नहीं था। वे तब के ऊँचे वर्ग के व्यवहार की अपेक्षा बुरे अवश्य बन गये थे किन्तु अज्ञानी और अभद्र श्रमिकों की अपेक्षा अच्छे थे। ऊँचे वर्ग के अच्छे व्यवहार और समूह के बुरे व्यवहार के बीच दिखलाई पडनेवाला तीव्र अन्तर बहुत कुछ अंशों मे नष्ट हो चुका था।

कई प्रकार से जीवन अधिक प्रजातान्त्रिक बन रहा था। एक सस्ते समाचार-पत्र की भी शुरूआत हो रही थी। लन्दन के सस्ते समाचारपत्रों का अनुकरण करके बेन्जामिन डे ने १८३३ मे सस्ती कीमत पर 'न्यूयार्क सन' की स्थापना की। दो वर्ष पश्चात् जेम्स गार्डन बेनेट ने सनसनीखेज 'न्यूयार्क हेराल्ड' की स्थापना करके असाधारण सफलता प्राप्त की। पहली लोकप्रिय पत्रिका जैक्सन के युग मे ही प्रकाशित हुई क्योंकि 'गोडीज लेडीज बुक' की १८३० मे फिलाडेल्फिया मे स्थापना हुई थी जबकि बहुपठित साहित्यिक मासिक पत्रिका 'निकरबोकर' तीन वर्ष पश्चात् प्रारम्भ हुई। शिक्षा के क्षेत्र में निःशुल्क सार्वजनिक स्कूलो के लिए—जो असाम्प्रदायिक लोक नियन्त्रित और करों से समर्थित हो, सघर्ष चल रहा था। इस सघर्ष मे मसाचुसेट्स के होरेस मैन ने नेतृत्व किया। वास्तव मे यह भविष्य की पीढ़ियो द्वारा सोच समझ कर किये जाने वाले सघर्षो की अपेक्षा अधिक था। एक पक्ष मे प्रजातान्त्रिक और मानवतावादी कहीं बुद्धिमान श्रमिक, काल्विनिस्ट और यूनीटेरियन थे तो दूसरे पक्ष में रईसी दृष्टिकोण के व्यक्ति कृपण, अनुदार, लूथर के अनुयायी, कैथलिक और सीमित सुविधाएं प्रदान करनेवाले स्कूलों के समर्थक क्वेकर, बागान के अनेक मालिक कृषक और निजी स्कूलो के अध्यापक थे। कटु सघर्ष के पश्चात् एक के बाद दूसरे राज्य को एक ही पंक्ति मे आने को बाध्य होना पडा। न्यू इंग्लैण्ड के एक निवासी का दावा था, 'पढ़ने से मास्तिष्क सड जाता है'; इण्डियाना के एक निवासी ने अपनी कब्र के पत्थर पर यह वाक्य खोदने को कहा था: 'स्वतंत्र स्कूलो का एक शत्रु यहा गडा हुआ है।' किन्तु ऐसे कानून का

अनुसरण, जिनके अन्तर्गत कस्बों अथवा नगरो को स्वतंत्र स्कूल के लिए कर लेने की अनुमति दी गयी थी, मिडल स्टेट्स और पश्चिम मे किया गया और स्थानीय इकाइयों को ऐसा करने के लिये वाध्य किया गया।

यहाँ तक कि धर्म भी, जिसका प्रचार पश्चिमी सीमान्त की ओर हो रहा था, प्रजातात्रिक हो उठा। पश्चिम मे फैले हुए सम्प्रदायों मे बेपटिस्ट, मेथाडिस्ट केम्पबेलिस्ट्स और प्रेसबीटेरियन थे, जिनमे से सभी अपनी शासन-प्रणाली मे प्रजातान्त्रिक थे और उनका इस दिशा मे उत्तरोत्तर विकास हो रहा था। विशेष रूप से प्रथम दो सम्प्रदायो ने दो धार्मिक तत्वो पर बल दिया जिसे सीमान्त क्षेत्रों ने पसन्द किया; भावनाओ को जोर-शोर, गायन और प्रार्थना करके उभाड़ना और व्यक्तिगत रूप से धर्म अंगीकार करने का तरीका, जिसका वर्णन मार्क ट्वेन की 'हकेलबरी फिन' मे किया गया है जिसके अनुसार उत्साही प्रति-द्वन्द्वी और कोलाहलपूर्ण शिविर सभाओं की आयोजना होती थी। साहित्य मे भी प्रजातात्रिक भावनाएँ परिलक्षित हो रही थी। ब्रायन्ट, फेनीमोर, कूपर, और वाशिंगटन, इरविंग सभी जैक्सन के प्रबल समर्थक थे। पूर्वी समाज पर कूपर की पुस्तक और बीहड़ पश्चिमी क्षेत्रो से सम्बधित इरविग की पुस्तकों ने समान रूप से प्रजातात्रिक विचारों पर बल दिया। लोकप्रिय रचनाएँ जैसे कि 'डेविड क्रोफेट की आत्मकथा' (१८३४) और आगस्टस वी. लॉगस्ट्रीट की 'जार्जिया सीन्स' (१८३५) ने सीमान्त के प्रभाव को दिग्दर्शित किया। जार्ज बनक्राफ्ट की प्रथम पुस्तक 'हिस्ट्री आफ दि युनाइटेड स्टेट्स' (अमरीका का इतिहास) मे असदिग्ध रूप से जैक्सन का समर्थन किया गया।

नवाँ परिच्छेद

पश्चिम और प्रजातंत्र

सीमा का विस्तार : आरम्भ से अमरीकी जीवन को जिन शक्तियों ने स्वरूप प्रदान किया उनमें सीमा भी एक है। इसकी परिभाषा हम सीमा प्रदेश के रूप में कर सकते हैं जहाँ की छितरी हुई जनसंख्या (एक वर्गमील में छः व्यक्ति से अधिक नहीं) मुख्यतः भूमि साफ करने, खेत तैयार करने और रहने के लिए घरों के निर्माण में जुटी हुई थी। सारे महाद्वीप को पार करती हुई अटलांटिक महासागर से लेकर राकीज पर्वतों तक इस जनसंख्या ने अमरीकी चरित्र पर गहरा असर डाला। यह एक प्रसार या स्थानान्तर नहीं थी, वरन् यह एक सामाजिक प्रक्रिया थी। इसने व्यक्तिगत पुरुषार्थ व उद्योग को प्रोत्साहन दिया, इसने राजनीतिक और आर्थिक प्रजातंत्र को जन्म दिया, इसने तौर तरीकों की औपचारिकता समाप्त कर दी और अनुदारवाद को नष्ट किया, इसने स्थानीय आत्मनिर्णय के साथ साथ राष्ट्रीय सत्ता के प्रति श्रद्धा को पनपाया।

जब हम सीमा की बात करते हैं तो हमारा अर्थ पश्चिमी अमरीका से है। परन्तु अटलांटिक तटीय भूभाग पहली सीमा थी और लंबे समय तक यह पहली सीमा प्रदेश बनी रही जिसमें मेन, जहाँ पहले के न्यू इंग्लैंड से १७१०–१८०० में चालीस हजार लोग आकर बस गये थे, क्रांति के बाद एक पीढ़ी तक सीमाक्षेत्र बना रहा। दूसरी सीमा-तटीय नदियों की ऊपरी घाटियों तथा अप्पलाशियन पर्वतों वाला क्षेत्र था। क्रांति के अंतिम दिनों में सीमा क्षेत्र पश्चिमी न्यूयार्क प्रदेश जहां १७८६ में दो पूंजीपतियों ने साठ लाख एकड़ वन्य भूमि के अधिकारपत्र प्राप्त कर लिये थे, पेंसिलवानिया की व्योमिंग घाटी जहाँ कनेक्टीकट के लोग बस गये थे, सिंसिनाटी का निकटवर्ती भूभाग जहाँ १७८८ में १३० परिवार और ३६ सैनिक थे, पूर्वी टेनेसी क्षेत्र जहाँ १७८४ में स्वतंत्र विचारकों ने अल्पकालीन 'फ्रैंकलीन राज्य' की नींव डाली थी, तथा ऊपरी जार्जिया प्रदेश था। १८०० के लगभग

मिस्सिसिपी और ओहियो घाटी प्रदेश एक महत्वपूर्ण और विशाल तीसरा सीमा क्षेत्र का रूप ले रहा था। हजारो प्रवासियो का यह सगीत बन गया- "ही ओ हीयो दूर हम जाते है, ओहियो नदी की धार मे तैरते हुए नीचे की ओर।" वसन्त में सविधान के लिखे जाने के बाद ही रूफुज पुटनाम पहले प्रवासियो को लेकर पश्चिम की ओर बढ़ा तथा मेरियाटी का पता लगाया। इस तरह उसने बीस लाख एकड भूभाग को खोल दिया जिसे काग्रेस ने ओहियो कपनी को हस्तान्तरण कर दिया था। उसी वर्ष भूमि के दलालो व सटोरियो ने सिनसिनाटी की नीव डाली। बहुत ही तेजी के साथ आश्चर्य-जनक रूप से केन्टकी और टेनेसी मे आबादी बढ़ रही थी। शाति के बाद पहले वर्ष में ही दस हजार लोगो ने केन्टकी मे प्रवेश किया और १७८० मे राष्ट्रीय जनसख्या के अनुसार केन्टकी और टेनेसी दोनो राज्यो की आबादी एक लाख से अधिक थी।

बिना रुके ही यह जन शैवाल सारे उत्तर प्रदेश और दक्षिण पश्चिम मे फैल गया। १७९६ मे केन्टकी व टेनेसी पूर्ण अधिकारसपन्न राज्य बन चुके थे और ओहियो जिसमे पेसिलवानिया की सीमा तथा ओहियो नदी से सटा भूभाग था, जो आबाद हो चुका था, शीघ्र ही एक नया राज्य बनने जा रहा था। १८२० तक उत्तर पश्चिम मे इण्डियाना और इलिनोइस, दक्षिण पश्चिम मे अलाबामा और मिस्सीसिपी सभी राज्य बन चुके थे। पहली सीमा यूरोप के साथ दृढ़ता से जुडी हुई थी, दूसरी सीमा तटीय बस्तियो की थी, परन्तु मिस्सीसिपी की घाटी स्वतत्र थी, यहाँ के लोग पूर्व मे बढ़ने की अपेक्षा पश्चिम की ओर विस्तार करना पसन्द करते थे।

सीमा क्षेत्र के वासी : यह स्वाभाविक ही था कि सीमा क्षेत्र के लोग विभिन्न प्रकृति के थे, परन्तु प्रारम्भिक पर्यवेक्षकों ने इन्हे तीन प्रमुख गुट्टो मे विभाजित किया था। निष्क्रमण की इस पंक्ति मे शिकारी या बहेलिये थे। एक अंग्रेज यात्री फोर्दाम ने इन यात्रियों का, जो कुँआरे थे, दयनीय वर्णन किया है।

"परिश्रमी मनुष्यों की एक साहसी जाति जो बुरी तरह से सुविधाहीन अटपटे लकडी के केबिनों मे रहते हैं जिन्हे वे आदिवासियो से युद्ध होने पर किलेबंद कर लेते हैं। इन आदिवासियो से ये लोग नफरत भले ही करते हो परन्तु वेशभूषा और तौर तरीको मे ये भी उनके जैसे ही हैं। भले ही ये लोग

उजड्ड हैं परन्तु अच्छे मेहमान हैं, अजनबी लोगों के प्रति दयालु हैं, ईमानदार हैं और विश्वासपात्र लोग हैं। ये लोग थोड़ी-बहुत आदिवासी फसल-मक्का, कुम्हड़े, लौकी आदि पैदा कर लेते हैं, कभी कभी इनके यहाँ एक दो गायें भी मिल जाती हैं, या प्रत्येक परिवार के पास दो या तीन घोड़े भी मिल जाते हैं परन्तु इनकी आजीविका का प्रमुख साधन इनकी बंदूक है।'

जब वे अपने पड़ौसी की बंदूक का धड़ाका सुनते, वे उसी समय रवाना हो जाते। फनीमोर कूपर ने नाट्टी बम्पो के इन प्रारम्भिक शिकारियों और उनके वन्य जीवन का अच्छा चित्रण 'द परेरी' में किया है। लोग कुल्हाड़ी, बंदूक, और मछली पकड़ने की वंशी के उपयोग में दक्ष थे, उन्होंने वन जलाकर मार्ग बनाये पहले लकड़ी के मकान बनाये, आदिवासियों को खदेड़ा और इस तरह दूसरे दल के प्रवेश के लिए मार्ग प्रशस्त किया। दूसरी ओर उत्तर में बड़े बड़े उद्योग विकसित हो उठे थे जिनमें लोहा, कपड़े, जूते, घड़ियाँ, खेती के औजार और हजारों दूसरी चीजों का विशाल उत्पादन होता था, जहाज बनाने, माँस लपेटने आटा पीसने से लेकर और भी कई उद्योग तेजी से यान्त्रिक विकास की ओर बढ़ रहे थे। लगभग सभी विशाल यूरोपीय जनप्रवाह (१८५०-१८६० में दो करोड़ चार लाख बावन हजार लोग) उत्तर और पश्चिम में बसे। आयरिश लोग शहरों में, अधिकांश जर्मन और डच लोग फार्मों और ब्रिटिश लोग इधर उधर बस गये। इस समुदाय के सामने वास्तव में अव्यवस्था व गंदे व भोंडमरे मकानों की भीषण समस्या थी। दक्षिण में भी प्रवासियों का स्वागत ही होता परन्तु वहाँ बहुत कम पहुँचे, क्योंकि प्रवासी हब्शी गुलामों से प्रतिद्वन्द्विता की चिन्ता नहीं करते थे। रेलमार्गों का निर्माण भी दक्षिण की अपेक्षा उत्तर में अधिक विकसित था। अप्पालेशियन और दूरी में तीन सीधे रेलमार्ग बन गये थे और न्यूयार्क राज्य ने बफेलो क्षेत्र तक १८५१ में रेलवेमार्ग बना लिया, पेंसिलवानिया ने १८५२ में फिलाडेल्फिया से पिट्सबर्ग तक रेलमार्ग पूरा कर लिया और फोरमाम ने इस दूसरे दल को वास्तविक ही बसने वाले लोगों का दल माना जिसमें शिकारी और किसान मिले जुले थे। लकड़ी के केबिनों के बजाय उन्होंने लट्ठे के मकान बनाये जिनमें शीशेजड़ी खिड़कियाँ, रसोईघर की चिमनी और कई कमरे होते थे। ये मकान इतने ही सुविधाजनक थे जितने अंग्रेजी खेतों पर किसानों के मकान होते हैं। झरनों को काम में लेने के बजाय इन्होंने कुंए खोदे। ये उद्योगी पुरुष पेड़ों से भरे भूभाग को शीघ्र साफ कर लेते, लकड़ी जलाकर खाद बनाते और पेड़ों के ठूंठों को नष्ट कर देते। ये लोग अपने

अन्न और फल पैदा करते, वनों को हरिण, जंगली मुर्ग और शहद के लिए छान मारते, नजदीक की नदियों मे मछलियाँ पकडते, सुअरो और मवेशियो की देखभाल करते। ये लोग जीवन के एकाकीपन या कठोरताओं से कभी परेशान या चिन्तित नही होते थे। इनमे से अधिक कुशल व्यक्तियो ने सस्ती दरो पर बडे बडे भूभाग खरीद लिये, इस सिद्धान्त पर कि ऐसा करना बुद्धिमानी है। बाद मे जब भूमि के मूल्य मे वृद्धि हुई इन्होने अपने भूभाग बेच डाले और पश्चिम की ओर बढ गये। इस तरह उन्होंने तीसरे दल के लिए मार्ग प्रशस्त किया जो इन दोनो से अत्यधिक महत्वपूर्ण था।

इस तीसरे दल मे केवल किसान ही नहीं थे वरन् डाक्टर, वकील, दूकानदार, सपादक, धार्मिक उपदेशक, मेकेनिक, नेतागण और भूमि के सटोरिये भी थे अर्थात् एक शक्तिशाली समाज को जन्म देनेवाले सभी तत्व थे। परन्तु इनमे किसान अधिक महत्वपूर्ण थे। वे लोग जहाँ बस जाते वही जीवन भर रहने का इरादा करते और उनकी यह भी आशा रहती कि उनके बाद उनके बालबच्चे भी बड़े होकर वही रहेगे। इन्होने अपने पहले से रहने वालो से भी बडे-बडे खलिहान बनाये, और अपने मकान मजबूत ईंटो के या अच्छे ढाचे पर बनाये। उन्होने अच्छी बाडे बनायीं, अच्छी नस्ल के मवेशी पाले, खेत को और भी अधिक कौशल से जोता तथा अधिक उत्पादन वाले ऊँची किस्म के बीज बोये। इनमे से कुछ लोगो ने आटे की चक्कियाँ, लकड़ी चीरने की मिले या शराब बनाने की भट्टियाँ बनायीं, उन्होंने अच्छे रास्ते तैयार किये, गिरजो व स्कूलो की इमारते बनायीं। जैसे जैसे शहर विकसित हुए इस तीसरे दल मे से बहुत से लोग बैक-व्यवसायी, व्यापारी और जमीन के सौदेवाले धनी बन गये। सक्षेप में यह कहा जा सकता है कि वे अमरीकी सभ्यता का प्रतिनिधित्व करते थे। पश्चिम का विकास इतनी तेजी से हुआ कि इस तीसरे जन समुदाय ने कुछ ही वर्षो मे अत्यन्त महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी काम पूरे कर डाले। १८३० तक शिकागो एक महत्वहीन व्यापारिक ग्राम था जहाँ एक किला भी था, परन्तु इसको बसाने वाले लोगो के जीवन काल मे ही यह विश्व के सबसे धनी और विशाल नगरो मे स्थान पा गया।

इस नये पश्चिम मे कई विशिष्ट जातियो का मिश्रण हुआ। दक्षिण के पठारी प्रदेश के किसान इनमे प्रमुख थे और इन्ही लोगो मे अब्राहम लिकन और जेफर्सन डेविस जैसे महान नेताओ ने लट्ठो से बने इन मकानों मे जन्म लिया। स्काटलैडवासी, आयरलैडवासी, जो व्यावहारिक अधिक थे सैद्धान्तिक

कम, पेसिलवानिया के कजूस जर्मन, उद्योगशील याकी और दूसरी कई जातियो के लोगो ने यहॉ अपनी भूमिकाएँ अदा की। इन सभी लोगो मे सामान्यतः दो विशिष्टताएँ पायी जाती थी, ये थी व्यक्तिवाद और प्रजातंत्र। १८३० तक आधे से अधिक अमरीकी उस वातावरण मे पलपोष कर बडे हुए थे जिसमे यूरोप या पुरानी दुनिया की परम्पराएं और प्रथाएँ नहीं थी या थी भी तो वे बहुत ही कमजोर थी। पश्चिम के लोगों को अपने ही पैरों खडा होना पडा। उनका आदर या महत्व उनके परिवार या विरासत मे पाये धन अथवा अधिक शिक्षा पाने के कारण न होकर उनके अपने पुरुषार्थ के कारण हुआ। लोगों को खेत इतनी कम रकम मे मिल जाते थे कि कोई भी मितव्ययी व्यक्ति आसानी से जमा कर सकता था। १८२० के बाद सरकारी भूमि का मूल्य एक एकड का सवा डालर था और १८६२ के बाद तो केवल भूमि को आबाद कर लेने से ही किसी व्यक्ति का उस पर अधिकार हो सकता था। उन्हे खेती के लिए जरूरी साधन भी आसानी से उपलब्ध थे। तब जैसा कि होरेस ग्रीली ने कहा है, "जैसे जैसे देश विकसित होता गया वे भी विकसित होने लगे। आर्थिक अवसरो की इस समानता ने सामाजिक और राजनीतिक समानता की भावनाओ को पनपाया और नेतृत्व की स्वाभाविक विशेषता वाले व्यक्तियो को शीघ्र आगे आने का मौका मिल गया।" यहाँ यह बात और भी कही जा सकती है कि समुद्र ने भी व्यावहारिक तौर पर जो दूसरी सीमा की तरह था अमरीकी चरित्र को व्यापक रूप से प्रभावित किया। जहाज छोटे छोटे थे अतएव जहाजी कर्मचारी भी इनमे कम होते थे, मछली पकडने या व्हेल मछली के शिकार वाली जहाजें साझेदारी में चलायी जाती थीं। प्रारंभिक शिकारियों, सीमाप्रदेश के किसानों व पूर्वी मल्लाहों में समान रूप से आगे बढने की भावना, साहस और व्यक्तिगत पुरुषार्थ व कठोर जीवन से नेह रखने की विशेषताएँ समान रूप से पायी जाती थी।

सीमा प्रदेश के लाभ और खामियाँ : आपसी सम्पर्क और उदाहरणों के अनुकरण द्वारा प्रजातत्र और व्यक्तिवाद इस तरुण राष्ट्र के नगरो की विशेषता बन गया। खुली स्वतत्रता जिसकी विलियम कोवेट ने गहरी सराहना की थी न्यूयार्क और फिलाडेल्फिया मे किसी भी यात्री को आश्चर्यचकित कर देने-वाली थी। इन पर्यवेक्षकों ने लिखा कि श्रमिक व कर्मचारी लोग एक शिलिग कमाने के लिए दस बार झुक कर सलाम नहीं किया करते थे। यहाँ तक कि

कुली लोग भी इस तरह काम करते मानो वे अहसान कर रहे हो। कोवेट ने प्रसन्नता के साथ लिखा कि अमरीकी नौकर निम्न नही समझे जाते थे और आम तौर पर मालिक के परिवार के साथ ही खाना खाते थे। इन लोगों को "सहायक" कहा जाता था। उसे अमरीका भर मे दो भिखारी नजर आये और वे दोनों ही विदेशी थे। राल्फ वाल्डो इमरसन के सर्वश्रेष्ठ अमरीकी लेखो मे से एक लेख 'आत्मनिर्भरता' पर है। उन्होने उस समय के विशिष्ट यांकी के बारे मे कहा है कि कैसे वह पश्चिम मे जाने पर बारी बारी से किसान, दूकानदार, भूमिव्यवसायी, वकील, कांग्रेस सदस्य, न्यायाधीश और हरफनमौला हो जाता है और यह सब वह अपने ही बलबूते से होता है। यह कोई अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण नहीं है। गृहयुद्ध के दिनो के सुयोग्य सेनानायको मे से एक सेनानायक डब्ल्यू. टी. शर्मन आरभ मे नौसिखिया सिपाही, युद्ध मे सैनिक, सानफ्रासिसको मे बैक-व्यवसायी, लीवनवर्थ मे वकील, कन्सास सीमाप्रदेश मे फार्म मैनेजर, ल्यूशियाना मे सैनिक कालेज का प्रमुख तथा बाद मे फिर सैनिक बना।

परन्तु सीमाप्रदेश ने विशिष्ट गुणो को प्रदान किया तो साथ साथ कई बुराइयाँ भी वहाँ पनपी। सीमावासी आम तौर पर अनियन्त्रित, अनुशासनहीन और अत्यधिक आत्मविश्वासी व अधिक "घमण्डी" थे। १८१२ के युद्ध मे अधिकाश पराजयो का कारण सीमाप्रदेशवासियो की प्रशिक्षण व अनुशासन के प्रति अरुचि थी। सीमावर्ती अशिक्षित अमरीकी सभी कामों को हडबडी मे तथा बेढगेपन से किया करते थे। ऐसे बहुत-से काम जिनमे सावधानी के साथ साजसज्जा की आवश्यकता रहती थी इन लोगो के लिए व्यर्थ ही समय बर्बाद करने जैसा था। इन अमरीकियों ने ईंट और पत्थर के टिकाऊ मकान बनाने के बजाय जल्दी ही घरों के ढाचे खड़े कर लिये। इन्होंने सडके भी ऊबडखाबड बनायीं, खेतों को जोतने के बजाय इन्होंने उन्हे एक तरह से खोद ही डाले। न्यूयार्क मे सारी रात आग बुझाने वाली गाडियो की घटियाँ बजती रहती थी क्योंकि वहाँ मकान भय्य से जल जाया करते थे जबकि १८३६ मे शहर के दो बड़े बड़े भवन वास्तव मे ढह ही गये। रेलो का टकरा जाना और जहाजों मे विस्फोट होना रोजमर्रा की बातें थी। स्वाभाविक ही है कि तौरतरीको व सास्कृतिक विकास की ओर बहुत ही कम ध्यान दिया जाता था, सीमा-प्रदेशवासी को इसके लिए फुर्सत ही नहीं थी। सबसे बुरी बात तो यह थी कि सीमाप्रदेश घृणित अपराधवृत्ति के लिए कुख्यात हो गये थे। समाज के घृणित

व अपराधी तत्वों ने भागकर सीमा क्षेत्रों में शरण ले रखी थी। वहाँ के लोग बात बात में आगबबूला हो जाया करते थे और वे लोग अपने झगडे फिसाद को पिस्तौल या घूसां से निपटाना अधिक पसन्द करते थे। न्यायाधीशों को बहुत कठोर व सतर्क रहना पडता था तथा उन्हें अपना एक हाथ सदा ही पिस्तौल के घोडे पर सतर्कतापूर्वक रखना पड़ता था।

/

आदिवासियों से युद्ध : सीमावासियों के अनुशासनहीन जीवन का एक दुष्प्रभाव यह पडा कि आदिवासियो के साथ उनकी पटरी नहीं बैठ सकी और इसके घातक परिणाम निकले। ये लोग आदिवासियो के साथ की गयी सधि को ताक मे रखकर सदा ही उनकी भूमि पर कब्जा कर बैठते थे, इन्होंने बनो मे उस शिकार को नष्ट कर डाला जिस पर आदिवासी अपनी खुराक व वेशभूषा के लिए निर्भर रहते थे और बहुत से लोग तो ताम्रवर्णी को देखते ही काट फेंकने को आमादा रहते थे। जब आदिवासियो ने अपनी सुरक्षा के प्रयत्न किये तब युद्ध छिड गया। यह सत्य है कि ये जंगली लोग भी कभी कभी आक्रमण कर बैठते थे फिर भी अपार जनसमूह का पश्चिम की ओर प्रयाण ही इन सघर्षों का प्रमुख कारण था। सबसे अधिक रक्तरजित युद्ध दक्षिण मे क्रीक लोगो के साथ लडे गये, जहाँ एन्ड्रू जैक्सन को फ्लोरिडा की दलदली भूमि और झाड़ियों मे इण्डियाना मे रक्तरजित विजय प्राप्त हुई।

युवा अब्राहम लिंकन ब्लेक हाक जाति के विरुद्ध खूख्वार युद्ध मे एक सैनिक टुकडी का नायक था। ब्लेक हाक जाति के कुछ प्रमुख कबीलो सावक और फोक्स आदिवासियों ने पाच करोड पाच लाख एकड भूमि का अधिकार सरकार को समर्पित कर दिया था। परन्तु कबीलो के मुखिया व अधिकाश जातियो ने इसे अस्वीकार कर दिया। सघर्ष की आशका से घबरा कर ब्लेक हाल इलिनोइस के अपने मक्का के खेतों से भाग कर मिस्सिसिपी के पश्चिमी तट पर चला गया। परन्तु इस जाति को जब वहाँ भूखों मरना पडा तो उन्होंने दूसरे ही वसन्त काल मे मिस्सिसिपी इस उद्देश्य से पार की कि अपने पडौसी कबीले विन्नेबागो के साथ विस्कोन्सिस मे जाकर बसे और वहाँ मक्का की फसल पैदा कर सके। उनको मानो बालसुलभ विश्वास था कि उनके नेक इरादों को श्वेताग स्वीकार कर लेंगे, परन्तु शीघ्र ही उन्होंने इन पर आक्रमण किया। ब्लेक हाक सधि और सुलह की याचना करता हुआ पीछे हटा परन्तु दो हजार स्थानीय सैनिकों ने उसकी याचना ठुकरा दी। उसके थके हुए हताश घायल अनुयायिओ को

पुनः विसकॅन्सिस के दक्षिण मे मिस्सिसिपी की ओर खदेड दिया गया और जैसे ही इन लोगो ने पुनः नदी पार करने की कोशिश की तो इनके मर्द, औरतों और बच्चो को क्रूरतापूर्वक मौत के घाट उतार दिया गया। एक बन्दूकधारी ने लिखा, 'यह रोमाचक दृश्य था, जो आखो से देखा नहीं जा सकता था कि कैसे घायल छोटे बच्चो का पीडामय रुदन और चीत्कार हृदय को कंपा देने वाला था—भले ही वे जंगली शत्रुओ के बच्चे क्यो न थे।' यह सीमावासियो की हीनतम क्रूरता थी।

पूर्वी आदिवासियों को—मिस्सिसिपी के पार विशाल मैदानो मे पहले बंजर समझा गया था—खदेड़ने की योजना पर एक लंबे समय से विचार किया जा रहा था, इसे मुनरो के प्रशासनकाल मे अधिकृत रूप से स्वीकार कर लिया गया और जैक्सन के कार्यकाल मे सक्रियता से लागू किया गया। काग्रेस ने राष्ट्राध्यक्ष को यह अधिकार दे दिया कि पश्चिम के आदिवासियों को अपनी भूमि छोडने के एवज मे दूसरी जगह जमीन आदि की सुविधा दे। इस तरह एक 'आदिवासी प्रदेश' की रचना की जो प्रारम मे कनाडा से लेकर टेक्साज तक फैला हुआ था। इस क्षेत्र मे उत्तरी आदिवासियो को बिना अधिक झझट के हटाया जा सका। परन्तु दक्षिण मे जहॉ की जातियॉ शक्तिशाली और अधिक थी वहॉ आदिवासियो ने इसका कडा प्रतिरोध किया और इसका परिणाम दुखदायी रहा। तथाकथित पाच अर्ध सभ्य जनजातियॉ—क्रीक, चोक्का, चिकासा और चेरोकी—अपने घरो मे ही रहना पसन्द करती थी। इनमे से अधिकाश क्रीक और चेरोकी मितव्ययी किसानो का जीवना बिताना सीख चुके थे। इन्होंने अच्छे मकान बनाये, चौपाये पाल लिये, पनचक्कियॉ खडी की और अपने बच्चो को मिशनरी स्कूलो मे शिक्षा देने लगे। वे अंत तक अपने खेतो से चिपटे रहे और इनमें से कुछ लोगो को केवल बलप्रयोग द्वारा ही हटाया जा सका। इन लोगों को अपनी यात्रा का अधिकाश भाग गाड़ियो मे व पैदल सफर करना पडा जहॉ इनमे से अधिकाश लोग भूख, बीमारी और ताप व शीत के कारण मर गये; तथापि १८४० तक सभी आदिवासियो को मिस्सिसिपी के पूर्व में हटा दिया गया।

इन्हे हटा देने से मिस्सिसिपी घाटी को पूरी तरह आबाद करने की सहूलियत मिल गयी। यह घाटी सारे देश मे अत्यधिक उपजाऊ व विशिष्टतापूर्ण थी। पूर्वी मिस्सिसिपी क्षेत्र के अंतिम राज्य विस्कोन्सिस को १८४८ तक सघराज्य मे शामिल कर लिया गया। अब तक इस नदी के पश्चिम मे भी कई राज्यो का

गठन् हो चला था, क्योंकि १८२१ मे मिस्टरी के प्रवेश के बाद १८३६ मे अरकान्सास का राज्य बना और दस साल बाद आइओवा राज्य ने स्वरूप लिया जब कि १८४९ मे मिन्नेसोटा राज्य की सीमाएँ निर्धारित की गयीं। १८३७ के सकट ने—जो मुख्यतया मिस्सिसिपी क्षेत्र मे अधिक उत्पादन के कारण हुआ था—आगे बढ़ने की गति को रोक लिया परन्तु बहुत ही कम समय के लिए। फसल काटने की मशीन के आविष्कारक सायरस एचमि मकोरक ने १८४७ मे शिकागो मे मशीने बनाने का कारखाना खडा कर लिया और फसल काटने की मशीने धडल्ले से किसानों को मिलने लगी जिनके कारण पश्चिमी खलिहानों को अनाज से पूर देना आसान हो गया। रेलमार्ग बनने आरभ हुए और शीघ्र ही समतल भूमि पर रेल की पटरियों के जाल बिछने लगे। १८५४ मे शिकागो मे रोजाना ७४ रेलगाडियॉ पहुँचा करती थी और यह नगर विश्व की सबसे बडी अनाजमडी बन गया। इसी वर्ष गालेना और शिकागो रेलमार्ग द्वारा औसतन प्रतिमाह चार हजार प्रवासी आइओवा मे बसने को पहुँचने लगे और हजारों प्रवासी सडको से सफर करते हुए वहॉ जा पहुँचे। जर्मन, स्काडिनेविया-वासी और ब्रिटिश लोग ऊपरी घाटी मे भर गये और उन्होंने टेक्साज अरकान्सास तक मे अपने घर बसा डाले। १८५४ मे एक अंग्रेज यह देख कर चकित रह गया कि सुदूर मिन्नेसोटा नगर मे जिसकी जनसख्या सात या आठ हजार लोगो की थी और जहॉ चार पॉच होटल थे, वहॉ सेट पाल तथा दूसरे एक दर्जन के लगभग अच्छे गिरजाघर थे, जेट्टियॉ थी जहॉ प्रतिवर्ष सामान्यतः तीनसौ जहाज आते थे। इसके अलावा अच्छे फुटपाथ वाली सडके, ईटों के बने बड़े-बडे गोदाम, और दूकाने व स्टोर थे और इनमे काफी सामान रहता था उतना ही जितना सघराज्य के विकसित राज्यो की दूकानो मे मिला करता था। १८५० के पहले ही नये पश्चिमी नेता महत्व ग्रहण करने लगे, इनमे इलिनोइस मे स्टेफन डगलस और अब्राहम लिंकन, मिसूरी के आर. एचिसन, मिस्सिसिपी के जेफर्सन डेविस, और टेक्साज राज्य की स्वतंत्रता के शूरवीर साम हस्टन जैसे व्यक्ति थे।

निकटवर्ती पश्चिम में बसाहट : मिस्सिसिपी घाटी के विकास मे सबसे अधिक हिस्सा सचार साधनों के विकास ने लिया। पश्चिम को पहुँचने का प्रमुख मार्ग कम्बरलैड सडक थी जो अधिकाशतः १८११ मे सघीय वित्त से बनायी गयी थी। कंबरलैड से यह सडक मेरीलैड तथा पहाडों पर से होकर

ओहियो मे जेन्टसविले और कोलम्बस होती हुई इन्डियाना राज्य मे तेरे हारे से बढ़ती हुई अंत मे इलिनायस मे वन्जालिया तक पहुँची। जब यह पूरी तैयार हुई तो इसकी लंबाई ६०० मील थी और चौडाई साठ फीट तथा इसके बीच मे मकादम के सिद्धान्तो के अनुसार बीस फीट चौड़ी पक्की पगडंडी बनी हुई थी।

इस 'राष्ट्रीय मार्ग' (नेशनल पाइक) पर पश्चिमी सामान व डाक विशेष डाक-दर पर भेजी जाती थी। सुविधाजनक स्थानों पर होटल व सराये बन गयी। बसने वाले लोगों का जनप्रवाह इस मार्ग पर धडल्ले से बढ़ने लग गया, यहाँ तक कि गर्मी मे इस मार्ग पर इन यात्रियो का ताता लगा रहता था। १८२४ मे एक पर्यवेक्षक ने लिखा, 'सैंकडो परिवार आराम और सहूलियत के साथ पश्चिम की ओर प्रयाण करते हुए देखे जा सकते हैं। पश्चिम के गडरिये अपने साथ सभी तरह के मवेशियो के टोले लिये पूर्व की ओर बाजार की खोज मे इस मार्ग से गुजरा करते हैं।' वास्तव मे इस राजमार्ग की तुलना किसी भी भीडभरे शहर की सडक से की जा सकती है जहाँ पटरियो पर पैदल यात्री, घुड़सवार व गाडियो मे यात्रियों की भी देखी जा सकती थी। वीलींग के निकट यह सड़क ओहियो नदी तट से होकर गुजरती थी और सफर के लिए यह नदी-मार्ग भी यात्रियो की चहलपहल से भरा रहने लगा। शुरू मे इसमे तख्तों वाली नावें, डोंगियाँ और होडी चलती थी 'जो धारा-प्रवाह पर आधारित रहती थी' और खाद्यान्न, गल्ला, मॉस, मुर्गी तथा आटा नीचे न्यू आरलियन्स को पहुँचाती थी। निकोलस रूजवेल्ट ने जिसका परिवार बाद मे प्रसिद्धि प्राप्त हुआ—एक भाप का जहाज बनाया तथा १८११ मे पिट्सबर्ग से लेकर न्यू-आरलियन्स तक सीधा पहुँचकर वापिस यात्रा मे पिट्सबर्ग लौटने मे भी समर्थ हुआ और शीघ्र ही बहुत से लोगों ने निकोलस रूजवेल्ट का अनुकरण किया।

परन्तु पश्चिम का सबसे प्रसिद्ध मार्ग एरी नहर थी जिसने हडसन नदी और अटलांटिक सागर को बड़ी झीलो से मिला दिया था। इस तरह से इस प्रायद्वीप के अंतराल तक एक जलमार्ग बन चुका था। लोगो ने इस संभावना की कल्पना अठारहवी सदी मे कर ली थी। इससे अप्पालाशियन पर्वत श्रेणियों तक प्रवासियों का आवागमन व व्यापार सभव हो सका। परन्तु लगभग चारसौ मील नहर की खुदाई का काम इतना विकट था कि नेतागण यह साहस करने मे हिचकिचाते थे। अंत मे अदम्य साहसी न्यूयार्कवासी डी. विह. क्लिण्टन ने इस स्वप्न को स्वरूप देने का अभियान आरभ किया।

यह न्यूयार्क का गवर्नर चुना गया और १८१७ मे नहर का काम आरभ किया और कई वर्षों के कडे परिश्रम के बाद "क्लिण्टन की यह खाडी" पूरी की गयी। १८२५ मे इस नहर मे नावों के एक प्रथम काफिले का हृदय से स्वागत किया गया और विशाल भीड़ के समक्ष क्लिण्टन ने इरी झील का जल अटलांटिक महासागर में डाला। इस नहर ने बफेलो को एक समृद्ध बन्दरगाह बना दिया और इसके किनारे किनारे कई नये कस्बे और शहर उठ खडे हुए तथा न्यूयार्क को अमरीकी नेतृत्व, व्यवसाय व आर्थिक दृष्टि से प्रथम श्रेणी का स्थान मिल गया।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण योग इस नहर ने पश्चिम के विकास में दिया। न्यू इग्लैण्डवासी और न्यूयार्कवासियों की भीड़ इस विशाल नहर से होकर पश्चिम मे बढने लगी। प्रवासियों के इस जनप्रवाह ने क्लीवलैण्ड, डेट्रायट और शिकागो को चहलपहलभरे विशाल नगर बना दिये तथा उत्तर पश्चिमी क्षेत्र को स्पष्टता याकी स्वरूप प्रदान किया। अमरीकी जनप्रवाह व आबादी को वितरित करने में इसका महत्वपूर्ण योग रहा तथा इससे सघराज्य के रक्षण में भी काफी सहायता मिली क्योंकि गृहयुद्ध फट पड़ने के पूर्व ही इस नहर ने ऊपरी मिस्सिसिपी घाटी का दृढ संबध उत्तरी अटलांटिक राज्यों से जोड दिया था। इस मामले में पेसिलवानिया राज्य की अधिकाश नहरों से भी सहायता मिली जिनको इस नहर से जोड़ दिया गया था। 'क्लिण्टन खाडी' की प्रसिद्धि से प्रेरणा पाकर फिलाडेल्फिया ने भी विशाल यातायात प्रणाली के लिए चार करोड डालर खर्च किये और ऐसा जलमार्ग बनाया कि फिलाडेल्फिया से चार सौ मील की दूरी पर स्थित पिट्सबर्ग के बीच संबध जुड़ गया। कुछ अंशो मे उन्होंने नदियों व नहरो से सहायता ली तथा ऊँची अलेघेनी घाटियो को समतल करके वहाँ भापचालित जहाजों, सामान व यात्रियों के आवागमन को संभव बनाया। वास्तव में यह अदम्य साहसिक योजना थी, भले ही इससे उस राज्यका खजाना ही क्यों न खाली हो गया। इसने महत्वपूर्ण काम किया और पेनसिलवानिया को एक प्रमुख औद्योगिक राज्य बनाने में योग दिया।

जनप्रवाह देशान्तरों के समानान्तर प्रवाहित होने लगा। अलाबामा और मिस्सिसिपी राज्य दक्षिणी लोगों से भर गये तथा मिचीगन और विस्कोन्सिन मे उत्तरी लोग बस गये। ओहियो, इण्डियाना और इलिनोइस राज्यों मे उत्तरी तथा दक्षिणी लोगो की मिश्रित जनसख्या हो चली। दक्षिणी लोगों का

जनप्रवाह ओहियो नदी से प्रवाहित हो चला तथा उत्तरी लोगो का जनप्रवाह दूकी नहर और बड़ी झीलो से होता हुआ शातिपूर्वक इन राज्यो मे मिल गया। दोनों ही लोगों ने कोलंबस, इण्डियानापोलिस और स्प्रिगफिल्ड जैसे शहरो को बसाया, इन्होंने आपस में तथा यूरोपीय लोगो के साथ शादी-विवाह करके आपसी सम्पर्क साधे। यहीं "प्रजातत्र की घाटी" का जन्म हुआ।

मिस्सिसिपी पार का पश्चिम : जब हम मिस्सिसिपी के पश्चिमी विशाल प्रदेश की ओर ध्यान देते है तो यहॉ की बस्तियों की कहानी और भी मनोरजक लगती है। सबसे पहले राष्ट्र को इसका पता जेफर्सन द्वारा इसकी खोज के लिए भेजे गये अभियानकर्त्ताओं से चला। अभियानकारियोका यह दल सीमाप्रदेश से परिचित दो तरुण साहसी वरजीनियावासी नेता मेरीवेदर लेविस और विलियम क्लार्क के नेतृत्व में ठेठ प्रशान्त महासागर तक पहुॅचा था। इस महान अमियन के लिए—जिसने अमरीका के भौगोलिक इतिहास मे एक महत्वपूर्ण अध्याय जोडा—संघराज्य ने केवल अढाई हजार डालर की राशि ही स्वीकार की। जेफर्सन सदा ही बीहड़ पश्चिम की शोध मे गहरी रुचि लेते रहे। उन्होंने विस्तारपूर्वक आदिवासियो—जिनकी उन्होंने सराहना की—तथा विशाल ओहियो घाटी की खोज के बारे मे लिखा। परन्तु जब उन्होने विलियम और क्लार्क को मिस्सिसिपी प्रदेश के खोज के लिए भेजा तब उनके सामने इसके दो उद्देश्य थे। इस प्रदेश के बारे मे वैज्ञानिक महत्व की खोज के अलावा वे मिसूरी नदी प्रदेश को अमरीकी फर व्यापारियों के लिए खोलना चाहते थे। उस समय इस क्षेत्र के आदिवासी अपना फर कनाडा जाकर ब्रिटिश व्यापारियो को बेचा करते थे। जेफर्सन की राय थी कि इडियन इस जलमार्ग का लाभ उठा कर नदी की धारा में नीचे की ओर अमरीकी व्यापारियों के हाथ अपना सामान आसानी से बेच सकेगे।

दोनों ही उद्देश्यो की पूर्ति हुई। विलियम और क्लार्क मिसूरी नदी की ऊपरी जलधारा मे बढे, रोकिज पर्वतों को पार किया और कोलम्बिया प्रदेश मे उतरते हुए प्रशान्त महासागर तक जा पहुॅचे। उनके इस खोज-कार्य को विश्व इतिहास मे आश्चर्यजनक व अत्यंत महत्वपूर्ण खोज कार्य ठहराया गया। उन्हे वास्तविक संकट का अधिक सामना नहीं करना पड़ा क्योंकि उन्होने युद्धप्रिय आदिवासी कबीले सियाक्स के क्षेत्रो मे प्रवेश नही किया और अठारह माह मे उन्होंने एकतरफा यात्रा के चार हजार मील पार किये। उन्होंने सावधानी के

साथ इन प्रदेशों के मानचित्र बनाये और विस्तारपूर्वक जानकारी प्रदान की। उन्होंने धनी ब्रिटिश फर व्यवसायी कंपनियों के साथ अपना सामान घोडों व खच्चरो पर लादकर और ऊबडखाबड खतरनाक प्रदेश मे लगभग आठ सौ मील पार करके बहुत ही अच्छे दामो मे सान्ता फे (मेक्सिको चौकी) मे अपना माल बेचा। दूसरे साल वह इस यात्रा मे अपना माल गाड़ियों मे भर कर ले गया। दूसरे व्यापारियो ने भी उसका अनुकरण किया और यह 'सान्ता फे ट्रेल' मार्ग अच्छी तरह से खुल गया। जो व्यापारी इस मार्ग से जाते थे उन्हे काफी खतरा उठाना पडता था। इस मार्ग मे पडने वाला अधिकाश प्रदेश रेगिस्तान जैसा था जहॉ तेज गर्मी पडती थी और पानी की भारी कमी रहती थी। उन्हे गहरी नदियों को पार करना होता था तथा सदा ही कोमान्चे, अरापाहो और चेयेन्ने आदिवासी युद्धप्रिय कबीलो के आक्रमण का भय बना रहता था। जबकि अस्सी या सौ आदमियो की टोली बहुत कुछ सुरक्षित रहती थी परन्तु दस या बारह आदमियो के गिरोहो को वे लोग आसानी से कब्जे कर लेते थे। समयानुसार इन प्रारमिक खोजकर्ताओं ने एक ऐसा अमरीकी मार्ग तैयार किया जिससे दक्षिण पश्चिमी प्रदेश को सघराज्य मे शामिल करने मे अधिक सहायता मिल सकी।

दूसरी महत्वपूर्ण घटना १८२२ में विलियम आशले द्वारा रोकी पर्वत पर कपनी की स्थापना थी। आशले मिसूरी के सेट लुई जनसेना का नायक था जिसने यह विज्ञापन दिया कि उसे ऐसे सौ नवयुवकों की आवश्यकता है जो मिसूरी के ऊपरी प्रदेश मे एक से तीन साल तक रहकर कपनी के लिए फर इकट्ठा करे। यही एक पहली कंपनी थी जो आदिवासियो से फर नहीं खरीद कर स्वयं अपने कर्मचारियों द्वारा शिकार करवा कर फर इकट्ठा करती थी। इस कंपनी के कर्मचारियो मे कई उल्लेखनीय खोज करने वाले साहसी युवक थे जिनमे किटि कारसन—जो कुशल अहेरिया, लडाकू, स्काउट और गाइड था जिसके साहसिक अभियान अतीव मनोरजक तथा शैलानी जीवन की झाकियों से चित्रित किये गये—और ज्रेडेडियाह स्मिथ जैसे खोजकर्ता प्रमुख थे।

तीसरी घटना मिसूरी के ऊपरी प्रदेश मे आदिवासियों को कब्जे मे लाने के लिए महत्वपूर्ण सैनिक अभियान था। इस मिसूरी सैनिक टुकडी को राष्ट्रीय सरकार सेट लुई के फर व्यवसायियो ने खडी की थी। इससे यह स्पष्ट हो गया कि अमरीका अपने फर व्यावसायी व कर्मचारियो को सुरक्षा को आधार दिया। इस अभियान से लौटने के बाद शीघ्र ही क्लार्क ने मिसूरी फर कंपनी के

सगठन में योग दिया और मिसूरी नदी पर कई स्थानों परे किले भी कायम किये गये। इसके बाद शीघ्र ही जान आस्टर की प्रसिद्ध अमरीकी फर व्यवसाय कंपनी ने उत्तर पश्चिमी क्षेत्र मे प्रवेश किया। अब तक यह कंपनी बड़ी झीलो के निकटवर्ती क्षेत्र मे ही प्रमुख रूप से व्यवसाय करती थी, परन्तु आस्टर ने शीघ्र ही कोलंबिया के मुहाने पर अपनी व्यवसायिक चौकी स्थापित करने का दृढ़-निश्चय किया। १८११ मे उसके एक जहाज 'टोन्किन' ने केपहोर्न का चक्कर काटा और उत्तर की ओर बढ़ते हुए आस्टोरिया की नीव डाली। ठीक ऐसा ही एक अभियान दल स्थलमार्ग से आगामी साल प्रायद्वीप को पार करके इसी स्थान पर पहुँचा।

श्रीगणेश अच्छा हुआ और १८२० मे और भी तीन महत्वपूर्ण बातें पश्चिम के विकास मे तेजी ले आयीं। एक तो यह थी कि साता फे ट्रेल से सुदूर दक्षिण-पश्चिम का व्यापार जो अब तक मेक्सिको वालो के हाथ मे था पश्चिम के लिए खुल गया। मिसूरी के एक पुरुषार्थी व साहसी व्यवसायी विलियम बेकनेल ने सत्तर व्यापारियो की एक टोली को लेकर इस प्रदेश मे प्रयाण किया। उन्होंने वहाँ के जलवायु और प्राकृतिक दृश्यो के बारे मे जो पत्र लिखे वे उत्साहप्रद थे जिससे उनके मित्रो व सबंधियो मे भी नया उत्साह भरा चला और शीघ्र ही हर वर्ष बसने वालो के काफिले ओरेगोन प्रदेश मे बसने के लिए इन मैदानों और पहाडो को पार करने लगे।

ओरेगोन मार्ग : प्रारम्भिक खोजकर्ताओं ने तथा फर व्यापारियो ने मिसूरी नदी से लेकर कोलबिया तक जिस रास्ते से यात्रा की वह कुछ ही समय बाद ओरेगोन मार्ग कहलाया और १८४० से १८५० के बीच के वर्षों मे वहाँ एक विशाल पक्की सड़क बन गयी। यह कोई दो हजार मील लबी थी; इस पर यात्रा करना खतरों व कठिनाइयो से भरा था। मिसूरी मे इन्डिपेडेस नामक स्थान से आरम्भ होकर यह रोकीज पर्वतों तक मैदानो मे होती हुई पहुँची तथा वहाँ से नीचे के स्लो दर्रे मे होकर पहाडी मैदानों को पार करके स्नेक नदी पर फोर्ट हाल तक गयी तथा वहाँ से ब्लू जैसे अगम पर्वतो को पार करती हुई यह सडक उमरीला नदी और ठेठ कोलम्बिया तक पहुँची।

सुदूर पूर्व मे आतरिक भागों मे गहरे प्रवेश की धर्मप्रचारको की कार्यवाही ने भी महत्वपूर्ण योग दिया। गिरजाघर कई वर्षों से सीमा क्षेत्रों मे सक्रिय थे, परन्तु १८३१ मे एक अजीबोगरीब घटना ने उनमें नयी प्रेरणा भर दी। ऊपरी कोलंबिया की जनजातियाँ ब्रिटिश व्यापारियो के ससर्ग से धर्म की थोडी बहुत

रूप-रेखा जान चुकी थी परन्तु वे और भी अधिक जानकारी पाना चाहते थे। आदिवासी नेता नेज पेर्से ने विलियम क्लार्क के यहाँ चार मुखियाओं को भेजकर "स्वर्ग की पुस्तक" (बाइबिल) की माग की थी। जब धार्मिक पत्रों ने इस घटना को छापा तो इस बारे में लोगों की गहरी अभिरुचि पैदा हो चली। प्रोटेस्टेण्ट मतावलम्बिओं ने शीघ्र ही कई पादरी व उनके सहायकों को सुदूर पश्चिमी प्रदेश में भेजा, और उन्होंने विलामेरे घाटी में एक धर्मप्रचार केन्द्र तथा स्नेक और कोलंबिया के निकट ऐसे ही दूसरे केन्द्र की स्थापना की। इस मामले में प्रमुख व्यक्ति डा. मारकिस विटमेन थे। इन केन्द्रों ने आदिवासियों को ईसाई बनाने में अपूर्व योग दिया। उन्होंने आदर्श खेत तैयार किये और आदिवासी ईसाइयों को ईंटों के घर बनाना, खेत साफ करना सिखाया। ठीक इसके पर्याय दूसरी सड़क बड़ी साल्ट झीलों से आरम्भ होकर केलीफोर्निया को गयी। जोन बिडवेल के नेतृत्व में पहला प्रवासी काफिला जिसमें अस्सी मर्द, औरतें और बच्चे थे सफलतापूर्वक बीहड़ प्रदेशों को पार करता हुआ १८४१ में प्रशान्तसागरीय तट स्थित ओरेगोन प्रदेश में बसने को जा पहुँचा। आनेवाले जनप्रवाह की यह पहली धारा थी। १८४३ में 'महाप्रयाण' आरम्भ हुआ जिसमें दो सौ के लगभग परिवार जिनमें कई हजार लोग थे, अपने साथ सैकड़ों मवेशियों को हाँकते हुए मैदानों और पहाड़ों को पार करते हुए सफलतापूर्वक अपने लक्ष्य पर पहुँच गये। दो मील प्रति घण्टे के हिसाब से बैलों की गाड़ियों पर लदा यह कारवाँ अच्छे मौसम में रोज पच्चीस मील पार कर लेता जबकि खराब दिनों में यह गति दिन भर में पाँच या दस मील ही रहती। १८४५ में यह मानवीय धारा से बढ़कर विशाल जनप्रवाह हो चली। उस वर्ष विलामेरे घाटी में तीन हजार से भी अधिक व्यक्ति आ पहुँचे।

यह एक 'ऐतिहासिक प्रयाण' था। सुबह होते ही 'आगे बढ़ो! आगे बढ़ो!! आगे बढ़ो!!!' की आवाजें गूँजा करती और लंबी कतारें, चुने हुए नेताओं के मार्गदर्शन में आगे बढ़तीं, रात के समय ये लोग घेरा डाल कर आराम करते, बाहर की ओर गाड़ियाँ, सामान और मर्द रहते, महिलाएँ, बच्चे और मवेशी घेरे के अंदर रखे जाते। रास्ते में सतर्कतापूर्वक संतरी पहरे पर नियुक्त किये जाते; खाना पकाया जाता और कपड़े धोये जाते। यात्रा के दौरान में प्रणय चलता, बच्चे पैदा होते, कमजोर व वृद्धों के मर जाने पर उन्हें अज्ञातनाम कब्रों में गाड़ दिया जाता, जब थके बैल या खच्चर गाड़ियाँ अथवा सामान खींचने में लाचार

पश्चिमी अमरीका मे जन-प्रवाह के स्थलीय मार्ग

अमरीका का राजनीतिक विस्तार
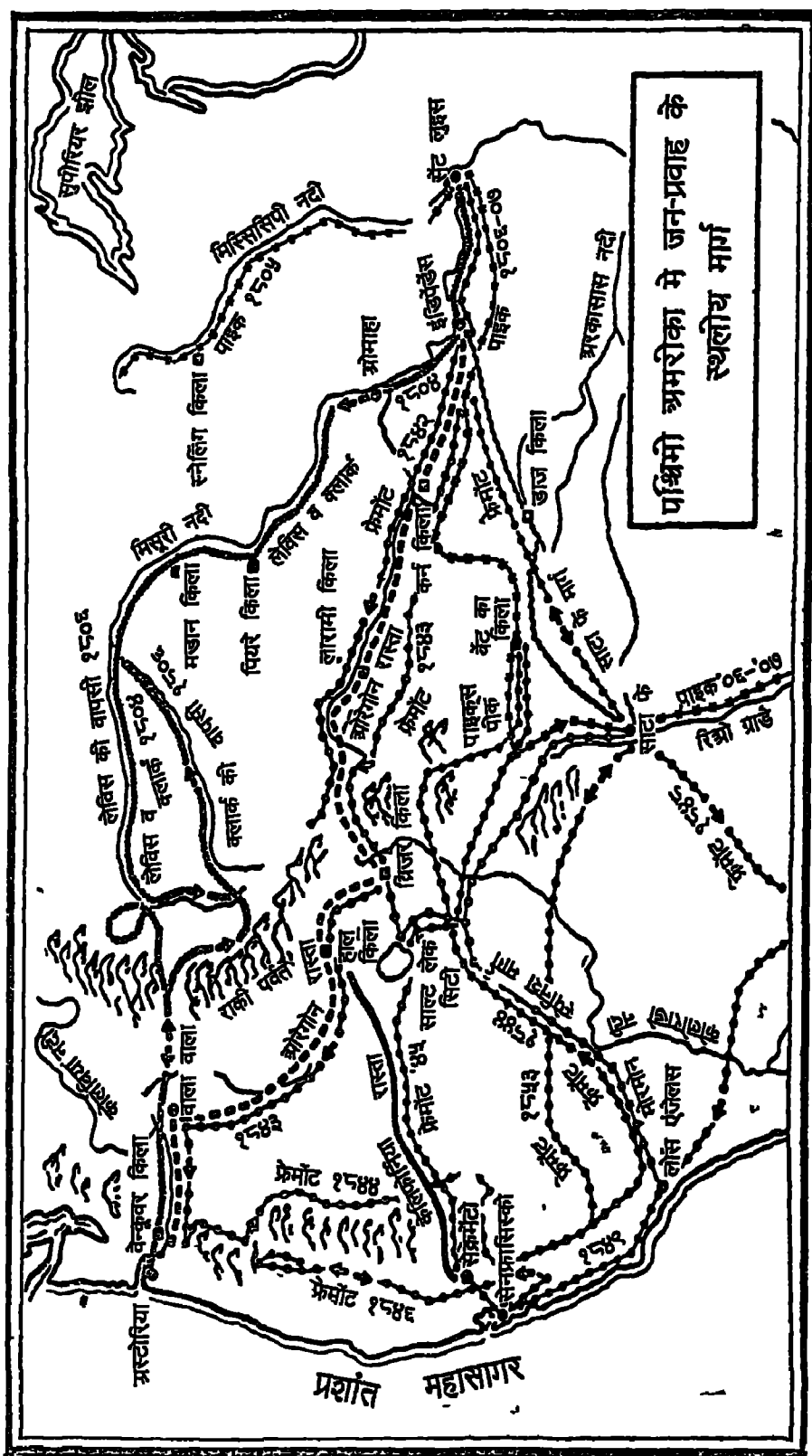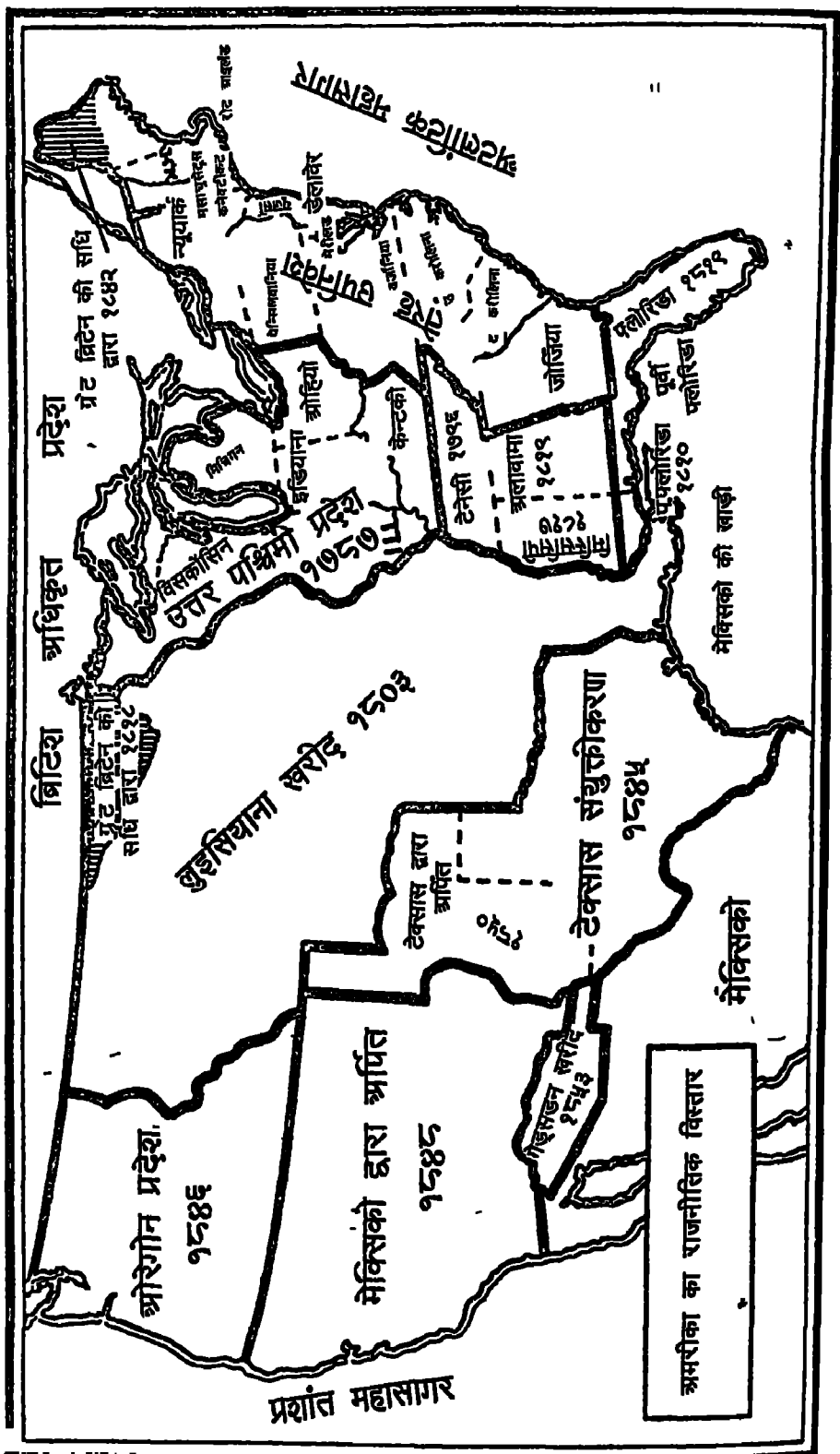
रहते तो उन्हें पीछे मार्ग मे ही छोड दिया जाता। कुछ लोगो को, जिन्हें आदिवासियो, बीमारियों व भयानक हैजे या बुरे मौसम का सामना करता पडता, उनके लिए कष्टों का पार ही नहीं था जबकि दूसरे लोगों के लिए यह यात्रा मानों एक मनोरजक पिकनिक की तरह थी जहॉ उन्हे भॉति भॉति के प्राकृतिक दृश्य, विशाल मैदानों के अनोखे जानवर, आदिवासियों तथा पहाड़ी प्रदेशों के अहेरिये और व्यवसायी मिला करते थे। इस जनप्रवाह ने ओरेगोन को अमरीकी समाज का ही अंग बना दिया और शीघ्र ही उसे सयुक्त राष्ट्र अमरीका मे शामिल कर लिया गया। इस भूभाग को इन लोगों ने इतना अच्छी तरह बसा दिया कि १८४९ मे इसकी सीमाएं निर्धारित की गयीं और दस वर्ष बाद यह पूर्ण राज्य बन गया।

मोरमोन : पश्चिम मे सबसे महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय धार्मिक लोग उटा के मोरमोन थे। व्यक्तिवाद, मतों की विभिन्नताओ तथा परस्पर सहनशीलता की परम्पराओ ने अजीबोगरीब जातियो को इस धरती पर शरण दी। इनमे से कई तो पुरानी जातियों की ही शाखाएँ थी परन्तु मोरमोन एक नया ही समाज था। इस मत के सस्थापक ऊपरी न्यूयार्कवासी संत जोसेफ स्मिथ थे जिन्होंने १८२० मे एक दिन यह विश्वास दिलाया कि वे जंगल मे प्रार्थना करने को गये थे तब दो चमकदार व्यक्ति उनके समीप आये और उन्हें कहा कि वे धरती पर परमात्मा के आदर्शों की पूर्ण प्राति के लिए कुछ समय वही ठहरे। कुछ ही समय बाद एक देवदूत मोरोनी वहॉ पहुचे और उनसे वहॉ गडे हुए स्वर्णाक्षरों अंकित लेख का उल्लेख किया जिसमे उत्तरी अमरीका के प्राचीन निवासियो के इतिहास का उल्लेख था। उन्होने कहा कि उस देवदूत द्वारा दिये गये साधनों से उस इतिहास का अनुवाद कर लिया गया। १८३० में यह ग्रन्थ 'मोरमोन' प्रकाशित हुआ। इसी वर्ष इसके गिरजाघर स्थापित किये गये और तेजी से उनका प्रचार बढ़ चला। इसका केन्द्र कई समारोहों के बाद इलिनोइस मे स्थानातरित किया गया। यही मिस्सिसिपी नदी तट पर मारमूनों ने नाडवा नगर की नींव डाली, एक विश्वविद्यालय की स्थापना की तथा विशाल मन्दिर का निर्माण आरभ किया। उन्होनें बहुविवाह की प्रथा प्रचलित की, इस प्रथा के कारण उनके धर्म के विरुद्ध विरोधाभासों तथा राजनीतिक व आर्थिक ईर्ष्याजनित डाह ने एक दगे का रूप ले लिया। क्रुद्ध भीड ने स्मिथ और उसके भाई को जेल से निकाल कर फॉसी पर लटका कर मार

डाला और शीघ्र ही इसके बाद मोरमोनों को राज्य से निकाल दिया गया। इन लोगों का नेता अब ब्रिगाम यंग था जिसने इन्हें साथ लेकर मिस्सिसिपी पार की और सुदूर पश्चिम में शान्ति व सुरक्षा पाने के लिए प्रयाण कर दिया।

इसका फल बहुत ही शानदार निकला। इन लोगों ने एक समृद्ध बस्ती बसायी और जिसे लोग रेतीली जमीन व ऊसर भूमि समझते थे वहाँ लहलहाती फसलें पैदा कीं। ब्रिगाम यंग अपने लोगों को मैदानों के पार बड़ी साल्ट झीलों वाले प्रदेश की घाटी में ले गया। वहाँ चारों ओर ऊंचे पर्वतों से घिरे एक उपजाऊ प्रदेश में जहाँ स्वास्थ्यप्रद जलवायु था और सिंचाई के लिए खूब पानी था, बसने का निर्णय किया। उसने खेतों के लिए जमीन साफ़ करने का आदेश दिया, शहर बसाने की जगह चुनी, और पूर्व के साथ सम्पर्क व संचारवहन स्थापित किया। पहले वर्ष थोड़ी बहुत तंगी रही, परन्तु इसके बाद उटाह में हर एक के लिए अपार अन्न आदि पैदा होने लगा। खेत और सिंचाई की नहरें शीघ्र सारी घाटी में ऊपर और नीचे की ओर फैल गयीं। ब्रिगाम यंग ने एक सामन्त की तरह शासन किया परन्तु उसकी बुद्धिमानी और उदारता ने इसे स्थायी बनाये रखा। उसने और उसके गिरजे के अधिकारियों ने अपने उत्पादनों के बेचने की व्यवस्था की, उन्होंने बस्तियों को नियन्त्रित किया, नये नगरों के लिए जगहें चुनीं और प्रत्येक शहर के लिए आवश्यक कारीगर भेजे और उन्होंने साल्टलेक नगर बसाया जहाँ सुन्दर व चौड़ी चौड़ी सड़कें व पानी से भरी क्यारियाँ थीं, तथा उनके मन्दिर व पूजागृह थे जो अमरीका में सबसे मनोरंजक स्थलों में से हैं। नियंत्रित आर्थिक नीति को लेकर अमरीका में यह पहला प्रयत्न था, और यह सफल भी हुआ। थोड़े दिनों तक बहुविवाह प्रथा जारी रही—और इसने बसने के उद्देश्य में बहुत कुछ सहायता दी क्योंकि नये मतावलंबियों में महिलाओं का आधिक्य था और सीमा प्रदेश में कुंआरों और संतानहीन महिलाओं के लिए जगह नहीं थी। १८५० तक उटाह एक प्रदेश बन गया।

टेक्साज का विलय : टेक्साज के विलय और केलिफोर्निया और दक्षिण पश्चिमी भूभाग को शिथिल मेक्सिको के हाथों में से अमरीकी लोगों द्वारा जीत लेने से अन्त में पश्चिम में अमरीकी प्रभुत्व कायम हो ही गया। १८४० के आसपास के वर्षों में अमरीका की सीमाएं इस प्रायद्वीप के घने उपजाऊ समृद्ध तथा प्राकृतिक दृश्यों से परिपूर्ण भूभाग तक पहुंच गयीं। कई लेखकों ने मेक्सिको

से इस भूभाग को हडपने के कार्य को अनैतिक ठहराया। जेम्स रूसेल लोवेल ने लिखा, 'दक्षिण टेक्साज को अपने मे इसलिए मिलाना चाहता था कि गुलामो के घेरे को बढ़ा सके।' परन्तु यह लाछन अनुचित है। एक स्वाभाविक और अवश्यंभावी प्रक्रिया ने अमरीका मे इस भूभाग की वृद्धि की—एक ऐसी प्रक्रिया जिसे हम 'स्पष्ट लक्ष्य' के अनुसार उचित ठहरा सकते हैं।

आरभ में मेक्सिको के अधीन टैक्साज-जर्मनी जितना विशाल भूभाग था, जहाँ केवल थोडे से गडरिये व शिकारी रहते थे। शीघ्र ही इसने कुछ अमरीकियों और अंग्रेजो को अपनी ओर आकर्षित किया। स्टेफन एफ. आस्टिन ने १८२१ मे प्रथम आग्ल-अमरीकी बस्ती बसायी। दक्षिणी राज्यो मे मुफ्त जमीन प्राप्ति के कारण लोग इस ओर आकर्षित हुए। मेक्सिको सरकार निकम्मी, भ्रष्ट और निरंकुश थी। १८३५ मे इन बस्तियों के लोगो ने विद्रोह कर दिया, और कई युद्धों मे जीतने के बाद वे अपने को स्वतंत्र कर सके। ऐसी ही एक घटना सान अन्टोनियों मे अलामो किले पर मेक्सिकोवालो का आक्रमण था जहाँ किले की रक्षा करने मे तैनात सभी अमरीकी मारे गये। "थर्मापली की पराजय का सदेश देने को एक व्यक्ति बचा था परन्तु अलामो के पतन की सूचना देने वाला कोई नहीं।" एक बार स्थापित हो जाने के बाद टेक्साज गणतंत्र ने समृद्धि की ओर कदम उठाया और कई नये अमरीकी बस्तीवासियो को आकर्षित किया। परन्तु यहाँ के अमरीकियों ने धीरे धीरे अपना विचार बदल डाला। एक तो यह बात थी कि वे जनहीन अविकसित पश्चिम मे बढना अपना कर्तव्य मानते थे। दूसरी यह बात थी कि ये लोग ऐसे थे जिनका स्वाभाविक व वास्तविक स्थान अमरीकी झंडे के नीचे था। तीसरा उन्हे यह डर था कि ब्रिटेन कहीं टेक्साज मे हस्तक्षेप करके उसे अपना उपनिवेश न बना डाले और अंत मे अधिक धनी होने का उद्देश्य भी सामने था। उत्तरी लोग टेक्साज मे अपने खेतों का उत्पादन तथा तैयार माल बेचना चाहते थे, जहाज मालिकों ने देखा कि उनके जहाज गाल्वेस्टन तक सफल यात्रा करके अच्छा लाभ कमा सकते हैं। याकी मिल मालिक टेक्साज की सस्ती रुई चाहते थे। अधिकाश दक्षिणवासी वहाँ बसना चाहते थे परन्तु वे अमरीकी झडे की छत्रछाया को छोडना नही चाहते थे।

१८४४ के राष्ट्रीय चुनाव ने यह दर्शाया कि अधिकाश मतदाता अपने छोटे से प्रजातंत्र को गणराज्य मे मिलाने को तैयार थे और दूसरे वर्ष के आरभ में अमरीकी झडा वहाँ लहरा उठा।

मेक्सिको युद्ध और केलिफोर्निया तथा दक्षिण पश्चिम की प्राप्ति : इसी दौरान में अधिकांश अमरीकी इसी तरह शांतिपूर्ण तरीकों से केलिफोर्निया पर नियन्त्रण करने को कटिबद्ध थे। केलिफोर्निया की विशिष्ट स्थिति के कारण उन्होंने इस तरह के विचार बनाये। केलिफोर्निया जैसे विशाल प्रदेश की जनसंख्या ग्यारह हजार की थी और वह भी समुद्री तट पर बसी हुई। इन लोगों के पास न तो संपत्ति थी, न सेना और न राजनैतिक अनुभव ही। मेक्सिकोवासियों की अपेक्षा ये लोग स्पेनवासियों के वंशज थे और अपने को उनसे शारीरिक तथा बौद्धिक दृष्टि से उच्च समझते थे, और ये लोग केवल नाममात्र के लिए ही मेक्सिको पर आधारित थे। वास्तव में यदि इन लोगों में आपसी झगड़े नहीं होते और उत्तरी तथा दक्षिणी केलिफोर्निया में मतभेद नहीं होता तो ये लोग मेक्सिको सरकार को कभी की उखाड़ फेंक चुके होते। उन दिनों मेक्सिको ने न तो वहाँ अदालतें खोलीं, न पुलिस तथा नियमित डाक की सुविधाएँ ही प्रदान की। केलिफोर्निया और मेक्सिको शहर के बीच संचार-वहन कभी कभार और अनिश्चित था। मेक्सिको ने भी इस क्षेत्र पर अपने शिथिल नियंत्रण को इतने खुले रूप से स्वीकार किया कि १८४० के बाद के वर्षों में वह इसे ब्रिटेन को बेचने को तैयार हो गया था। प्रतिवर्ष वहाँ अमरीकी तत्वों का बाहुल्य होता गया और उनकी आक्रामक कार्यवाहियाँ भी बढ़ने लगीं। अमरीकी जहाज एक लंबे समय से ही तटीय व्यापार में संलग्न थे और वे प्रवासी लोग जो इस सुनहरी जलवायु में रहकर मवेशियों व गेहूँ पैदा कर पैसा पैदा करना चाहते थे १८३० से ही पहाड़ों को पार कर यहाँ बसने के लिए पहुँचने लगे। १८४६ तक केलिफोर्निया में १२०० विदेशी थे जिनमें अधिकांश अमरीकी थे। इसमें कहीं कोई आश्चर्य की बात नहीं है जैसा कि कुछ लोगों की राय थी कि मेक्सिको एक पके हुए सेब की तरह अमरीकी हाथों में चला जायेगा—और शक्ति प्रयोग की आवश्यकता नहीं रहेगी।

कदाचित यही बात सत्य सिद्ध होती यदि मेक्सिको-युद्ध नहीं छिड़ जाता। इसका एक अप्रत्यक्ष कारण तो यह था कि दोनों देशों के बीच अविश्वास की भावना पनप रही थी परन्तु युद्ध छिड़ने का तात्कालिक कारण टेक्सास की सीमा को लेकर था। अमरीका के लिए यह संघर्ष छोटा और शानदार रहा। जाचारी टेलर के नेतृत्व में एक अमरीकी सेना उत्तरी मेक्सिको में भेजी गयी जिसने किलेबंदी किये गये शहर मोन्टेरे पर अधिकार कर लिया और ब्यूनेविस्टा के युद्ध में काफी संघर्ष के बाद एक विशाल मेक्सिको सेना को हरा दिया।

दूसरी सेना १८२० के युद्ध शूरमा विनफिल्ड स्काट के नेतृत्व मे वेरा क्रुज पर उतरी और तेजी से पश्चिमी पहाडो को पार कर कडे व व्यापक संघर्ष के बाद उसने मेक्सिको शहर पर कब्जा कर लिया। यहाँ स्काट ने मोन्टेजुमा के हाल पर अमरीकी झण्डा फहरा दिया। जब सुलह हुई तो अमरीका को केवल केलिफोर्निया ही नही मिला वरन् केलिफोर्निया और टेक्साज के बीच का विशाल प्रदेश न्यूमेक्सिको जिसमे नेवाडा और उटाह भी थे प्राप्त हो गया। इस तरह इस प्रदेश और टेक्साज मे अमरीका को ९१८ हजार वर्गमील भूमि मिली।

इसके अतिरिक्त यह भूप्रदेश उनके लिए एक खजाना सावित हुआ क्योकि जब सधि की पुष्टि की जा रही थी तभी केलिफोर्निया की पहाड़ियो मे सोने का पता चला। तत्काल ही अपने भाग्य की परीक्षा करने वाले लोगों के समूह इधर उमड पडे। इनमे से कुछ लोग जहाजो से तथा कुछ लोग स्थलमार्ग से उस जगह पहुँचे जहाँ रेत को या तो पानी से धोकर या कडाही मे गलाकर सोना निकाला जाता था। पहाडों मे सर्वत्र चहलपहलभरे डेरे व तम्बू खडे हो गये, एक ही रात मे सानफ्रान्सिसको नगर चहलपहलभरा विशाल शहर बन गया जहाँ दुर्गुण, विलास और सक्रिया पनप उठी, और केलिफोर्निया एक सुस्त, शैलानी स्पेनी पशुपालको के देश से पलक मारते ही आग्लसेक्सन लोगो की विशाल जनसख्या व हलचलों से भर गया। अमरीकी इतिहास मे ये अतीत के दिन, सोना पाने के दिन तथा १८४९ के स्वर्णदिवस अत्यंत महत्वपूर्ण बन गये। केलिफोर्निया का विकास इतनी तेजी से हुआ कि १८५० मे उसे सघराज्य मे एक राज्य के रूप मे स्थान मिला।

पश्चिम मे इतने बडे नये भूभाग की प्राप्ति ने अमरीकियो को कई ऐसी समस्याओं की ओर ध्यान देने को बाध्य किया जिनकी अभी तक अवहेलना की गयी थी। इनमे करिबियन समस्या, प्रशान्त महासागर की समस्या, मध्यवर्ती नहर की समस्या और इन सबसे बढ़कर गुलामी की समस्या प्रमुख थी जो सारे क्षेत्र मे बढ़ने जा रही थी।

दसवॉ परिच्छेद

आपसी संघर्ष

गुलामी : 'एक अजीबोगरीब प्रथा' : गृह युद्ध के छः वर्षो पूर्व एक चतुर न्यूयार्कवासी पर्यवेक्षक, फ्रेडरिक ला ओमस्टेड ने मिस्सिसिपी में एक सर्वोत्तम कपास का फार्म देखा। उसे वहॉ एक विशाल व शानदार महल देखने को मिला। लगभग एक हजार चार सौ एकड़ जमीन मे कपास, मक्का और दूसरी फसले बोयी हुई थीं और वहॉ दो सौ सूअर भी थे। १३५ हब्शी गुलामों मे से लगभग सत्तर खेतों में काम करते थे, तीन मेकेनिक थे और नौ हब्शी घरों मे काम करते या सईस थे। ये लोग सुबह पौ फटने से लेकर रात तक परिश्रम करते थे; कभी कभी रविवार और शनिवार को अवकाश पाते थे। गर्मी मे यह विशाल टोली इस तरह १६ घण्टो तक रोजाना काम करती थी केवल दोपहर को थोड़ी सी देर के लिए आराम मिलता था। खाने के लिए इन्हें प्रति सप्ताह मका और चार पौड सूअर का मॉस मिलता था, इसके साथ साथ इन हब्शियों द्वारा अपने लिए उगायी गयी शाक सब्जियॉ, अण्डे और मुर्गियॉ भी थी। क्रिसमस व त्यौहारों पर इन्हे काफी, तंबाखू और कपड़े उदारता-पूर्वक दिये जाते थे। ये हब्शी अपने ईधन के लिए लकड़ी पास ही के दलदली जगल से लाते थे जबकि रविवार को ये लोग शहतीरें काट कर बेचते थे और इस पैसे से अपने आराम की चीजें खरीदते थे। खेतो मे काम करने वालों को हॉकने के लिए एक हब्शी रहता था जो उन्हे काम में लगे रहने के लिए अपने कोड़े को फटकारता रहता था, कभी कभी यह कोड़ा उन गुलामो के शरीर पर हल्का सा पड भी जाता था। इन गुलामों की देखरेख करनेवाले एक गौराग ने ओमस्टेड को कहा कि अनुशासन अच्छा है फिर भी उसने बताया कि उसे एक गुलाम को बेच देना पडा जिसने उसको छुरा मारने की चेष्टा की थी। "उसके हब्शी अधिकतर भागा नही करते हैं क्योंकि वे सदा ही पकड़ लिये जाते थे। जैसे ही उसे पता चलता कि कोई हब्शी भाग गया है, वह उसके पीछे कुत्ते छोड देता है।"

यह एक अच्छे नमूने का खेत बताया जाता था। अन्य पर्यवेक्षकों की तरह ओमस्टेड ने ऐसे भी बागान देखे जहाँ दास-प्रथा कठोर व क्रूर थी जबकि कुछ बागान ऐसे भी थे जहाँ गुलामों के साथ उदारता का व्यवहार होता था। आलोचकों ने गुलामी को इसलिए आडे हाथों लिया कि एक तो इनसे कस कर काम लिया जाता था, कोडो से मारा जाता था, उनको बेच दिया जाता था। इस तरह निर्दयतापूर्वक उनके परिवारों को भग कर दिया जाता था, हब्शियों को अपने उत्थान तथा शिक्षा से वचित रखा जाता था। इस प्रथा के समर्थकों ने इसे इसलिए सराहा कि काम करनेवालो को बेकारी, बीमारी और वृद्धावस्था में सरक्षण व सुरक्षा मिलती थी, इसने दक्षिण को हडतालों व श्रमिक-सघर्षों से मुक्त रखा, इसने निम्न लोगो को ईसाईयत सिखाई और उन्हे सभ्य बनाया। उनका कहना था कि मालिक इससे साहसी तथा नौकर स्वामिभक्त बने रहते थे। आर्थिक पहलुओं पर दासता के समर्थक और विरोधी दोनों ही पाये जाते थे। ओमस्टेड की तरह ही 'आनेवाला सकट' नामक पुस्तक के लेखक उत्तरी करोलिनावासी हिन्टन रोवान हेल्पर का यह मत था कि इसने दक्षिग को पिछडा हुआ बनाये रखा, परतु दक्षिणी नेताओ का यह कहना था कि 'दक्षिण' के पिछड़े रहने का कारण उत्तर वालो की शोषण की नीति है। सामाजिक तौर पर, उत्तर वालों ने घोषणा की कि गुलामी की प्रथा से काले और गोरो का एक सा ही अहित हुआ है, परन्तु अधिकाश दक्षिणवासियो का यह दावा था कि हब्शियों की विशाल जनसख्या को नियन्त्रित रखने व गोरे लोगों की प्रभुता बनाये रखने का यही एकमात्र हल है।

वास्तव कुछ अमरीकी उत्तरी और दक्षिणी इस विशिष्ट प्रथा के बारे मे अच्छी तरह से समझ चुके थे—वह प्रथा जिस पर कुछ लोग बुरी तरह चोट करने को आमादा थे और कुछ लोग जिसे हार्दिक रूप से पसन्द करते थे। इस अमरीकी दासता की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि यह हब्शी गुलामी थी; इस प्रथा में सन्निहित अधिकाश तत्व किसी वर्ग या श्रेणी से सम्बन्ध न रख कर एक जाति से सम्बन्ध रखते थे। यह सारी प्रथा काले और गोरो के आपसी सबंधों पर आधारित थी, न कि मालिक और गुलाम जैसा पहलू ही इसमे कहीं था और यद्यपि गृहयुद्ध और सविधान मे तेरहवें सशोधन ने हब्शियो के स्तर को पूरी तरह बदल डाला फिरभी हब्शियो व गोरे लोगों के आर्थिक व सामाजिक सबंधो मे इससे कोई विशेष फर्क नहीं पड़ा। गुलामी की प्रथा को उचित ठहराने वाले तर्कों तथा गोरे लोगों की प्रभुता के सिद्धान्तो को गृहयुद्ध

के बाद भी उतनी ही शक्ति से तथा उसी सिलसिले में लागू किया जा सकता
था तथा इस प्रथा के उन्मूलनवादी आलोचकों के तर्कों को भी ठीक ढंग से
प्रस्तुत कर युद्धोत्तर काल में काम में लाया जा सकता था। जब यांकी लोग यह
तर्क दे रहे थे कि गुलामी की प्रथा ने दक्षिण की प्रगति को पिछड़ी रखी तथा
कृषि शिक्षा व उद्योग में आगे नहीं बढ़ने दिया तब वास्तव में वे निरक्षर काले
लोगों की सस्ती श्रमशक्ति को ध्यान में रखकर यह बात कह रहे थे। परन्तु ऐसी
स्थिति गृहयुद्ध व मुक्ति के बाद भी लंबे समय तक बनी रही। कुछ दक्षिणवासियों
ने यह बात समझ भी ली थी, परन्तु उन्होंने इसे बौद्धिक चेतना के तौर पर न
ग्रहण कर अपने सहज ज्ञान से ही माना था और वे यह समझने में असफल रहे
कि जातियों के आपसी सम्बन्धों में गुलामी की प्रथा एक अस्थायी सी चीज है
और चूंकि उत्तरी लोग यह बात नहीं समझ पाये थे कि इनकी मुक्ति में महत्व-
पूर्ण क्या बात है, अतएव इसका नतीजा यह हुआ कि वे भी इससे—जो गहरी
निराशा पैदा हुई—उससे हताश हो चले।

१८५० तक जब देश की कुल जनसंख्या २ करोड़ तीस लाख से भी बढ़
गयी (आगामी दशक में यह जनसंख्या इंग्लैंड की जनसंख्या से भी बढ़
गयी), तब दासों की कुल संख्या बत्तीस लाख थी। दक्षिणी कैरोलिना और
मिसिसिपी में वे वहां की गोरी जनसंख्या से अधिक थे, लुइसियाना में उनकी
जनसंख्या गोरों जितनी ही थी, और अलाबामा में उनकी जनसंख्या प्रति सात
गोरे के पीछे तीन की थी, दक्षिण में ऐसे भी विशाल प्रदेश थे जहां काले
लोगों की संख्या जनसंख्या के दसवें भाग के बराबर भी नहीं थी। मेरीलैंड से
लेकर अलाबामा अप्लेशियन पर्वतीय भूभाग इन लोगों से अधिकांशतः अछूता
था। इसके अलावा कई भागों में इनकी अधिकता थी। चार्ल्सटन के उत्तर में
काले लोग ८८ प्रतिशत थे, जॉर्जिया समुद्री तट पर अस्सी प्रतिशत, केन्द्रिय
अलाबामा में लगभग सत्तर तथा निम्न मिसिसिपी नदी की एक पट्टी में इनकी
नब्बे प्रतिशत से भी अधिक आबादी थी। जहां जलवायु गर्म था, जमीन समतल
और उपजाऊ थी, काले गुलामों की संख्या सबसे अधिक थी। जो भूभाग पहाड़ी
या बंजर था वहाँ इनकी संख्या नहीं के बराबर थी। दक्षिणी लोगों में अधिकांश
के पास गुलाम नहीं थे, केवल कुछ ही लोगों के पास गुलाम थे। १८५० की
जनगणना के अनुसार ६० लाख लोगों में से केवल ३४,७२५ गोरे लोग ही
दास-मालिक थे। यद्यपि अधिकांश हब्शी छोटी-छोटी टोलियों में थे तो भी,
रुई, गन्ना व चावल-उत्पादक क्षेत्रों में तीन या चार हजार परिवारों के पास

हजारों हब्शी गुलाम थे। ये मालिक परिवार अच्छी से अच्छी उपजाऊ भूमि के स्वामी थे, और कुल आय का तीन चौथाई इनकी जेबों में जाता था। उदाहरण के तौर पर, जोर्जिया के होवेल कोत्र एक हजार हब्शी गुलामो से दस हजार एकड़ भूमि पर कपास की खेती करते थे। इसी तरह राजनीतिक और बौद्धिक नेतृत्व एक छोटे और सामान्यत सामन्तशाही गुट्ट के हाथो मे था।

१८३० से आरम्भ होकर गुलामी के बारे में यह विरोधाभास दिनोंदिन स्पष्टतः गंभीर होता गया। उत्तरी राज्यो मे गुलाम उन्मूलन तथा दासरहित राज्यो की भावना अधिक शक्तिशाली हो चली थी। तेज तर्राट विलियम लायड गेरिसन ने बोस्टन मे अपने पत्र 'लिब्रेटर' की स्थापना की। गेरिसन को अनावश्यक अधिक महत्व दिया गया, परन्तु इस आदोलन मे सक्रिय व प्रभावशाली भूमिका सी. जी. फिने तथा आदोलनकारी थियोडोर डी. वेड के नेतृत्व में ओहियो के साहसी लोगों की एक टोली तथा आर्थर टापान के नेतृत्व मे न्यूयार्कवासियो के दल ने अदा की। ये लोग सम्पूर्ण मुक्ति आंदोलन के सफल सचालक थे। इन लोगो के दमन से और भी ज्वाला धधकी। जब एलिजा पी. लवजोय इलिनोइस के एल्टन शहर मे भीड के आक्रमण से मुक्ति आदोलन का प्रचार करने वाले अपने छापेखाने की रक्षा करते हुए मार डाला गया तो इस धर्मयुद्ध ने और भी तेजी पकड ली। नागरिक अधिकारो मे हस्तक्षेप के कारण बहुत से लोगो को यह विश्वास हो चला कि मानवीय स्वतंत्रता ही सकट मे है। गारीसन पर भीड़ द्वारा आक्रमण करने के कारण सफल अभिभाषक बोस्टनवासी वण्डेल फिलिप्स को इस आदोलन मे शामिल होने की प्रेरणा मिली। उत्तरी न्यूयार्कवासी धनिक गेरिट स्मिथ ने जब एक भीड को उटीका मे गुलाम प्रथा विरोधी सभा पर आक्रमण करते हुए देखा तथा ओहियो के सुयोग्य राजनीतिक नेता साल्मन पी. चेस ने अपने ही राज्य मे छापाखानों पर आक्रमण होते देखे तभी उन्होंने इस आन्दोलन का समर्थन करना आरम्भ कर दिया। उन्मूलनकारियों को अधिक सफलता नहीं मिली परन्तु स्वतंत्र भूमिवासियो ने—जिनकी मॉग यह थी कि दासप्रथा अब एक इंच भी आगे नहीं बढ़े—इन आंदोलनकारियो को शरण दी। इसी दौरान में दक्षिण मे कई नेताओं ने 'गुलामी' की प्रथा को वास्तविक रूप से अच्छी प्रथा के तौर पर घोषित किया। विलियम एण्ड मेरी कालेज के थामस ड्यू ने इसके पक्ष मे एक पुस्तक लिखी, दक्षिणी करोलिना के गवर्नर हामोंड ने १८३५ मे घोषणा की कि गुलाम-प्रथा हमारे पवित्र जीवन का आधार है।

काल्होन ने पुराने एथेन्स का उदाहरण देते हुए जोर देकर कहा कि शानदार संस्कृति के लिए गुलाम-प्रथा एक दृढ़ आधार है।

बहुत समय पहले ही दूरद्रष्टा जानते थे कि इस आपसी संघर्ष से संघराज्य पर खतरा आयेगा। जान क्विन्सी एडम्स ने कांग्रेस में कई बार दक्षिण को चेतावनी दी कि अलगाव का अर्थ युद्ध होगा और "जिस क्षण तुम्हारे गुलामों से भरे राज्य युद्ध के आंचल बन जायेंगे, चाहे यह युद्ध गृहयुद्ध हो, दासों का हो या विदेशी शक्तियों से हो, उसी क्षण संविधान प्रदत्त सैनिक अधिकार इस गुलाम-प्रथा के मामले में आगे बढ़ कर हस्तक्षेप करेंगे।' लिंकन ने इसी भविष्यवाणी को सिद्ध किया।

उठता हुआ तूफान : जिस क्षण टेक्सास के सवाल ने और मेक्सिको युद्ध ने यह निश्चित कर दिया कि अमरीका में दक्षिण पश्चिमी विशाल भूभाग का विलय निश्चित है, उसी क्षण से गुलाम-प्रथा-संबंधी संघर्ष ने गंभीर रूप धारण कर लिया। जेफर्सन के शब्दों में दुर्दिन की सूचना की तरह रात को ही यह खतरे की घण्टी बज उठी। १८४४ तक दास-प्रथा-समर्थकों का यही दावा था कि जिन राज्यों में यह प्रथा जारी है, वहाँ यह बिना किसी तरह के हस्तक्षेप के जारी रहने दी जाये। मिसूरी समझौते के अनुसार इसकी सीमा निर्धारित की गयी और कभी भी इसका उल्लंघन नहीं किया गया। और जब इस प्रथा ने आगे बढ़ने के अपने अधिकार का दावा किया तो कई उत्तरवासी विरोध में उठ खड़े हुए। उनका यह विश्वास था कि यदि इस प्रथा को सीमित दायरे में ही रखा गया तो यह अंत में स्वाभाविक रूप से ही मर जायेगी, उन्होंने इस पर जोर दिया कि वाशिंगटन, जेफर्सन और गणतंत्र को जन्म देने वाले अन्य पूर्वजों ने भी यही दृष्टिकोण अपना रखा था, और इस दिशा में प्रतिबंध संबंधी उदाहरण के रूप में उन्होंने १७८७ के अध्यादेश पर जोर दिया जिसमें उत्तर पश्चिम में दास-प्रथा के प्रवेश पर रोक लगाने के आदेश थे। जैसा कि टेक्सास में पहले से गुलाम प्रथा थी, अतएव स्वाभाविक रूप से गुलाम-प्रथा वाले राज्य के तौर पर उसे गणतंत्र में शामिल किया गया। परन्तु केलिफोर्निया, न्यू मेक्सिको और उटाह में यह प्रथा नहीं थी। जब गणतंत्र में इस क्षेत्र के शामिल किये जाने का सवाल उठा तो कांग्रेस में पेंसिलवानिया के डेमोक्रेट सदस्य डेविड विलमोर ने इन राज्यों के व्यय विधेयक के साथ यह धारा भी जोड़ दी कि मेक्सिको से जो भूभाग प्राप्त

हो उसमें सदा के लिए दास-प्रथा पर प्रतिबंध रहे। काग्रेस ने इसे पारित कर दिया, परन्तु सीनेट ने इसे ठुकरा दिया। दक्षिणवासियो को यह बुरी तरह से अनुचित सी बात लगी कि जिस क्षेत्र को जीतने मे उन्होंने भी अपना खून बहाया उसको दक्षिणी व उत्तरी लोगो के लिए एकसा निर्बाध क्यो नहीं खोला जाता है, जब कि एक दल मशीने लेकर वहॉ पहुॅचने को स्वतंत्र है तो दूसरे दल को भी यह स्वतंत्रता होनी चाहिए कि वह अपनी 'गुलाम सपत्ति' लेकर वहॉ पहुॅचे। स्वतंत्र भूमिवासियों को यह अपमानजनक व क्षुब्ध कर देने जैसा लगा कि नयी भूमि को एक ऐसी प्रथा के लिए खोल दिया जाय जो स्वतंत्र उद्यम व उद्योगों को नष्ट करने वाली तथा उनकी नैतिक चेतना पर आघात पहॅुचाने वाली थी। इस राजनीतिक मुद्दे के साथ एक सवैधानिक प्रश्न भी जुड़ा हुआ था। क्या सविधान राष्ट्रीय सीमाओं मे गुलाम-प्रथा के नियमन या जारी रखने के बारे मे आज्ञा देता है अथवा नहीं देता है? काग्रेस ने कई बार ऐसा किया परन्तु यह अस्पष्ट ही रहा और काल्होन और अन्य दक्षिणी उग्रवादियों ने जोर दिया कि सामान्य क्षेत्रों मे जहॉ अमरीकी ध्वज लहराता है गुलामी की प्रथा के लिए दरवाजे बद नही किये जा सकते। पहली बार १८४८ मे चुनाव अभियान मे शक्तिशाली स्वतत्र भूमिदल देखने को मिला। इस दल ने मार्टिन वान बुरेन को राष्ट्रपति पद के लिए नामजद किया और राष्ट्रपतिपद के चुनाव-अभियान के राजनीतिक मंच को इन शब्दो से गुजा दिया कि 'हमारे ध्वजों पर हम स्वतत्र भूमि, स्वाधीन श्रम, वाणी स्वातत्र्य और मानव की स्वतंत्रता अंकित करते हैं। इनके नीचे हम सदा अंत तक लडते रहेगे जब तक कि हमारी विजयश्री रग नहीं लाये।' इस दल को शानदार मत मिले, डेमोक्रेट लोग अपनी हरकतों के कारण चुनाव हार गये और विग दल के अन्तिम राष्ट्राध्यक्ष युद्धशूरमा जाकारी टेलर राष्ट्राध्यक्ष चुन लिये गये।

चुनाव-अभियान मे और उसके बाद भी यह स्पष्ट हो गया कि विल्मोर कानून के सामने झुकने के पहले दक्षिण के निम्नवर्ती राज्य पृथक हो जायेंगे। इसके साथ-साथ यह भी इतना ही स्पष्ट हो गया कि काल्होन की इस मॉग को कि नये प्रदेशों मे सर्वत्र दासप्रथा को प्रवेश दिया जाय उत्तरवाले हर्गिज मजूर करने को तैयार नहीं थे। इसके लिएं किसी आपसी अधिकृत समझौते की आवश्यकता थी। उदार सदस्यों के एक गुट्ट ने सुझाया कि मिसूरी समझौते की ३७°-३०° वाली समझौता रेखा को प्रशान्त तट तक विस्तृत कर दिया जाय। इसके उत्तर मे दासरहित राज्य तथा दक्षिण मे दासप्रथावाले राज्य रहे। उदार सदस्यो के एक

दूसरे दल ने—जिसका नेतृत्व मिचीगन के लेविस कास और इलिनोइस के स्टेफन ए. डगलस कर रहे थे—यह सुझाया कि यह प्रश्न सार्वजनिक जनमत को सौंपा जाय, राष्ट्रीय सरकार इस मामले से हाथ खींच ले, और उसे चाहिए कि नये प्रदेशों में दासों सहित और दासरहित लोगों को बसने दे और जब इन प्रदेशों को राज्यों के तौर पर संगठित करने का समय आये तब जनता खुद ही इसका निर्णय करे। जब १८४९ के अंत में कांग्रेस की बैठक हुई तो दक्षिणी लोगों ने खुले रूप से पृथक हो जाने की धमकी दी। उत्तरी प्रस्ताव के एक विरोधी जार्जिया के राबर्ट टूम्ब्स ने चिल्लाकर कहा, "यदि यह पारित हो गया तो मैं पृथकता का प्रस्ताव रखने जा रहा हूँ।"

१८५० का समझौता : इस संकट की घड़ी में हेनरी क्ले ने समझदारी से एक समझौते द्वारा इस खतरनाक आपसी संघर्ष को टाल दिया। उसकी योजना यह थी कि कैलिफोर्निया को स्वतंत्र राज्य की तरह शामिल किया जाय और न्यू मेक्सिको और उटाह को ऐसे प्रदेश बनने दिये जायें जहाँ दासता या दास-विरोधी अंकुश न हों और भगोड़े दासों को उनके मालिकों को लौटाने के लिए एक अधिक प्रभावशाली तंत्र की स्थापना की जाय, कि कोलंबिया में दास-व्यापार का निषेध कर दिया जाये और टेक्सास प्रदेश को अपनी कुछ भूमि न्यू मेक्सिको में मिलाने के कारण मुआवजा दिया जाय। दोनों ही पक्षों को इसमें थोड़ा-बहुत त्याग करना पड़ा। इस योजना के अधिकांश प्रस्ताव डगलस की उपज थीं, परन्तु क्ले ने उन्हें स्वरूप प्रदान किया, और इस योजना में उसके समर्थन से इंकार नहीं किया जा सकता। इन प्रस्तावों को सफल बनाने के लिए सभी वर्गों में उसकी प्रतिष्ठा, उसका व्यवहार, हार्दिक ईमानदारी, और दक्षिण पर उसका प्रभाव तथा उसके व्यक्तित्व का उपयोग जरूरी था।

१८५० के समझौते को स्वरूप देने के लिए जो वाद-प्रतिवाद हुआ वह अमरीकी इतिहास में बहुत ही शानदार था। सीनेट में उन दिनों पार्लियामेन्टरी पद्धति के तीन महारथी क्ले, वेब्स्टर और काल्होन थे, ये सभी अपनी कब्र में पाँव लटकाये बैठे थे। ऊँची सूझबूझ व विद्वत्तावाले कई तरुण स्टेफन ए. डगलस, जेफर्सन डेविस, विलियम एच. सेवार्ड और सामन पी. चेस थे। इन लोगों में काल्होन और डेविस ने समझौते को अनुचित ठहराते हुए उसका विरोध किया। काल्होन ने इसके बारे में विख्यात तर्क प्रस्तुत करते हुए घोषणा की कि एक खतरनाक संघर्ष को टालने के लिए दक्षिण की शिकायतें दूर की

जानी चाहिए। उसने कहा, "उत्तर और दक्षिण को आपस मे बॉधने वाली कडियॉ एक एक करके टूट रही हैं। अब तक मेथोडिस्ट और बेप्टिस्ट चर्च पृथक हो चुके हैं। यदि आदोलन इतना ही तेज जारी रहा और उसमे तेज उन्माद बढ़ा तो अंत मे ये सभी कडियॉ चकनाचूर हो जायेगी और तब राज्यो को एकता मे बाधने के लिए जोर-जबरदस्ती के अलावा कुछ भी नही बच रहेगा।" अपने भाषण को पढ़ने मे वह इतना कमजोर था कि अपनी सीट पर भी बैठा-बैठा लडखडा रहा था जबकि उसके वर्जीनियावाले साथी को भाषण पढना पडा। सेवार्ड और चेस ने इस समझौते को अनुचित ठहराते हुए विरोध किया। परतु क्ले का वेब्स्टर ने शानदार समर्थन किया। सात मार्च को वेब्स्टर ने एक शानदार भाषण द्वारा, जो उनके जीवन का अंतिम भाषण था, यह तर्क प्रस्तुत किया कि मसाचुसेट्वासी या उत्तरवासी की तरह इस समस्या पर विचार न कर एक अमरीकी की तरह एकता का दृष्टिकोण रख कर सोचे।

उसने घोषणा की कि *शान्तिपूर्ण अलगाव असभव है*। उसके द्वारा समझौते के समर्थन ने न्यू इंग्लैड के दासता-विरोधी उग्रवादियो के क्रोध को भडका दिया और वास्तव मे यह एक बहुत बडे साहस का काम था—परन्तु यह एक महान् कूटनीतिज्ञता भरा काम था जो राष्ट्र के प्रति उसकी अंतिम महान सेवा थी। अंत मे क्ले. वेब्स्टर, डगलस की उदार भावना की विजय हुई। समझौता-प्रस्ताव पारित किये गये और देश ने छुटकारे की गहरी सॉस ली। यदि जाकारी टेलर राष्ट्राध्यक्ष-पद पर होता तो निश्चय ही वह इन पर वीटो कर देता, परन्तु गर्मी मे ही उसका देहान्त हो चुका था और उसके उत्तराधिकारी मिलार्ड फिलमोरे ने प्रसन्नतापूर्वक इन पर हस्ताक्षर कर दिये।

केवल तीन वर्षों तक ही ऐसा लगा मानों इस समझौते ने सभी विवादों का अंत ला दिया है। विग और डेमोक्रेट दलों मे से बहुमत ने इनका हार्दिक समर्थन किया था, फिर भी भीतर ही भीतर असतोष की आग धधक रही थी, बढ रही थी। भगोडे दासों को पकड़ने सबधी नये कानून से कई उत्तरी लोगो के सम्मान को गहरी ठेस लगी थी। उन्होने भागे दासो को पकडने मे किसी भी तरह की सहायता देने से इंकार कर दिया, इसके बजाय उन्होंने भगोडे दासो को बच निकलने मे सहायता दी। 'भूमिगत रेलमार्ग' द्वारा अर्थात् रातो को भगोडे दासो का भाग निकलना अधिक तेज व निष्कटक हो चला। तट प्रदेशों के कई गुलाम जहाजों पर चढकर भाग निकले। कुछ लोग रात को यात्रा करते, ध्रुवतारे से मार्गदर्शन लेते हुए अपने बागानो से ओहियो नदी तक

भाग आये जहाँ से उन्हे क्नाडा को बच निकलने मे सहायता दी गयी। कुछ दास अप्पालेशियन पर्वत-श्रेणियों मे होकर पेंसिलवानिया को जा पहुँचे। उत्तरी राज्य इन भगोडे दासो के लिए शरणस्थली बन गये और लेवी कोफिन जैसे लोगो ने जो इन भूनिगत रेल मार्गों के सचालक थे—कइयो को सुरक्षित पहुँचने मे सहायता दी। १८५० मे उत्तरी राज्यों ने बस गये बीस हजार भगोडे दासो को फिर से पकड़ने का कानून लागू किया गया, परन्तु इन लोगों को पकडने की कोशिश होने पर दंगे उठ खडे हुए।

इसी भागे हुए दास गिरफ्तारी कानून के उत्पीड़न से श्रीमती हेरियट बीचर स्टोव को "टामा काका की कुटिया" नामक उपन्यास लिखने की प्रेरणा मिली जिसमे दासप्रथा का वैविध्य भरा इतना गहरा व नग्न चित्रण किया गया है कि उससे उत्तर व दक्षिण के लोगो मे दासप्रथा की वीभत्सताओं के प्रति एक-सी ही गहरी घृणा भर दी। टामा काका की कुटिया पुस्तक रूप मे १८५२ में प्रकाशित हुई थी। श्रीमती स्टोव सिनसिनाटी सीमान्त नगर मे रही थी तथा केन्टकी के बागान मालिकों के घरो को देख चुकी थी। अपने उपन्यास मे उन्होंने उदार तथा सज्जन दास मालिको के साथ पूरा न्याय किया था, परन्तु उपन्यास का खल पात्र दासो का सचालक साइमन लेग्री यांकी था। श्रीमती स्टोव ने बताया कि अत्याचार को दासता से पृथक नही किया जा सकता और स्वतत्र समाज तथा दास समाज मे कितना गहरा विरोधाभास था। इस उपन्यास का बीसियो दूसरी भाषाओ मे अनुवाद हुआ और इसकी दस लाख से भी अधिक प्रतियाँ ब्रिटिश राष्ट्रमंडल मे बिकीं और जब इसका नाटक मे रूपान्तर किया गया तो देखने वाले रोमाचित हो उठे। उत्तर मे मतदाताओं की भावी पीढ़ी इससे व्यापक रूप से प्रेरित हुई।

१८५४ मे प्रदेशों मे दासप्रथा का यह सवाल फिर से उठ खडा हुआ और जैसे ही सघर्ष मे कटुता आयी, दोनों ही पक्षों मे नये नये लोग नेतृत्व के लिए आगे आये। दक्षिण के उग्र नेता मिसूरी समझौते को भंग कर सारी ऊपरी मिस्सी घाटी को दासता के लिए पा लेना चाहते थे। जब इस लक्ष्य को पाने की कोशिश की गयी तो सारा उत्तरी समाज एक क्रुद्ध दैत्य की तरह उठ खडा हुआ।

मिसूरी नदी के नीचे की उपजाऊ भूमि, जो नेब्रास्का व कासास राज्य मे थी, बसने वालो को आकर्षित करने लगी। यदि आदिवासियों को हटाकर स्थायी सरकार बनाने पर उसके शीघ्र विकास की व्यापक सभावनाएँ थीं। महान्

खोजकर्ता जान सी. फ्रेमोण्ट तथा दूसरे लोगो ने इस धारणा को नष्ट कर दिया कि यह भूभाग एक महान् रेतीला बंजर प्रदेश है और अधिकाश उत्तरी लोगों को यह विश्वास हो चला कि इन्हे प्रदेशो मे सगठित कर दिया जाये तो बसने वालों की भीड वहॉ लग जायेगी, साथ ही इस भूभाग मे होकर चिकागो से प्रशान्त तट तक रेलमार्ग आसानी से बनाया जा सकेगा। न्यू ओरलियन्स से पश्चिम की ओर बढने वाले रेलमार्ग के लिए यहॉ दक्षिणी क्षेत्र की सभावना भी थी।

इसके लिए शीघ्र कार्यवाही की जरूरत थी क्योंकि दक्षिणी मार्ग पहले से घने बसे टेक्साज और मेक्सिको प्रदेश से होकर गुजरता और वहॉ आदिवासियो के आक्रमण की सभावना नही थी और रेलमार्ग-निर्माण के लिए सार्वजनिक भूमि उपलब्ध हो सकती थी। मिसूरी समझौते की इस उत्तरी सीमा को जल्दी ही मिटा देने के बारे मे सबसे अधिक उत्सुक शिकागोवासी स्टेफन ए. डगलस था जो भूमि सपत्ति का दलाल व सट्टेबाज था और इन प्रदेशो के लिए गठित सीनेट समिति का सदस्य भी था। परन्तु उसका कडा विरोध हुआ। 'मिसूरी समझौते' के अंतर्गत यह सारा प्रदेश दासता के लिए निषिद्ध करार दिया गया था और मिसूरी ने अपने पश्चिमी सीमा-तट से सटे कन्सास भूभाग के स्वतंत्र प्रदेश घोषित करने का विरोध किया। मिसूरी के हब्शी गुलामों का इस स्वतंत्र राज्य मे भाग जाना बाये हाथ का खेल था। इसके अतिरिक्त फिर मिसूरी प्रदेश के तीन स्वतत्र पडौसी प्रदेश होते जहॉ कि पहले से ही तेज आदोलन जारी था जिसके दबाव से मिसूरी को भी स्वतत्र (दास रहित) प्रदेश घोषित करना पड़ता। कुछ समय के लिए वाशिंगटन स्थित मिसूरी नेताओं ने दक्षिण की मदद से कासास के स्वतंत्र होने के सभी प्रयत्नों को निष्फल कर दिया।

१८५४ मे सिनेट सदस्य डगलस ने विरोधों के बावजूद एक नया प्रस्ताव रखा जिसने सभी स्वतत्र राज्यों तथा प्रदेशो के लोगो को रोष से भर दिया। यह उसकी अपनी नीति "लोकप्रिय सार्वभौमिकता" पर आधारित योजना थी। इस योजना का अंतिम स्वरूप यह था कि १८५० की समझौता धाराओं के कारण मिसूरी समझौता कभी का नष्ट हो चुका है, जिसके अंतर्गत उटाह और न्यू मेक्सिको को दास या दासरहित राज्य बनने की स्वतत्रता दी गयी तथा कंसास और नेब्रास्का को दो प्रदेशों का रूप दिया गया जहॉ बसने वाले अपने साथ हब्शी दास ले जाने को स्वतंत्र थे। इसने इन प्रदेशवासियो का

अधिकार दिया कि वे सघराज्य मे स्वतत्र अथवा दासराज्य की हैसियत से प्रवेश करने का स्वय ही निर्णय कर सकते हैं। डगलस के उद्देश्य निश्चित ही मिलेजुले थे। उस पर यह आरोप लगाया गया कि वह १८५६ मे राष्ट्राध्यक्ष-पद पाने के लिए दक्षिणी लोगो को खुश करना चाहता है, और उसकी राजनीतिक महत्वाकाक्षाएँ भी वास्तव मे गहरी थी। उसके डेमोक्रेटिक दल के सहयोगी भी अधिकाश दक्षिणी ही थे, उसने दक्षिणवासी महिला से विवाह किया था, उसकी दासप्रथा के अंत अथवा विस्तार से जरा भी रुचि नही थी। उसका मुख्य उद्देश्य जैसे भी हो इस क्षेत्र के शीघ्र विकास से था—ऐसा क्षेत्र जिसकी जलवायु उसके अनुसार दासप्रथा पनपने के लिए किसी भी तरह उपयोगी नहीं थी।

परन्तु उसका यदि यह विश्वास था कि उत्तरी भावनाएँ शीघ्र ही इसे मजूर कर लेगी तो शीघ्र ही उसका भ्रम निवारण भी हो गया। इन विशाल उपजाऊ पश्चिमी परेरी मैदानो को दासप्रथा के खोलने की बात ने ही लाखो लोगों को चौका दिया। यह ऐसी बात थी कि वे इसे कभी भी माफ नही कर सकते थे। कन्सास नेब्रास्का विधेयक पर तीव्र वादविवाद उठा। स्वतत्र राज्यों के पत्रों ने उसकी तीव्र भर्त्सना की। उत्तरी पादरियों ने अपने चर्चों की हजारो प्रार्थना समाजो मे उसे निन्दित किया। अब तक व्यवसायी लोग जो उसका पक्ष लेते थे तत्काल ही उन्होने मुँह मोड़ लिया। उत्तर के सभी प्रमुख नगरो मे विशाल सभाएँ आयोजित कर डगलस और उसकी योजना का विरोध किया गया। डगलस ने खुद मजूर किया कि वह वाशिगटन से लेकर शिकागो तक अंधेरी रात मे केवल उसकी जो अर्थियाँ जलायी गयी उसी रोशनी मे आसानी से सफर कर सकता था। मार्च की एक प्रातःकाल यह विधेयक दक्षिणी लोगों द्वारा विजयघोष के स्वरूप तोप की सलामी के बीच पारित किया गया। चेस ने सीनेट भवन की बाहर की सीढियाँ उतरते हुए मसाचुसेट्स के चार्ल्स सम्नर की फब्तियो के उत्तर मे कहा, "वे अपनी इस विजय की खुशी मना रहे हैं परन्तु इससे जो प्रति-ध्वनियाँ वे जगा रहे है वे तब तक शात नहीं होगी जबतक कि दासप्रथा की मृत्यु नही हो जाती।" जब डगलस बाद मे शिकागो मे अपनी सफाई देने के लिए पहुँचा तो जहाजरानी ने शोक मे अपने झडे आधे मस्तूल तक झुका लिए, एक घटे तक गिरजाघरों के शोकसूचक घण्टे बजते रहे, और दस हजार लोगो की भीड उसे दुत्कारती रही और उसकी बोलती बद कर दी। अपने प्रयत्नो मे उसने असफल होने पर जैसा कि कुछ दर्शको का

कथन है—घडी निकाली और अपने श्रोताओ को कहा कि "यह रविवार का सुबह है, मैं तो चर्च मे जा रहा हूँ और तुम नर्क मे जाओ !"

डगलस के इस दुर्भाग्यजनित कदम का तात्कालिक प्रभाव भी व्यापक हुआ। विग दल जो नये प्रदेशो मे दासता के प्रश्न के विस्तार को टालता रहा था समाप्त हो चुका था और उसके बजाय एक नये शक्तिशाली राजनीतिक दल 'रिपब्लिकन' दल का उदय हुआ। यह दल आदर्शवादी, प्रेरणाप्रद, विद्वान व शक्तिशाली नवयुवकों के आकर्षण केन्द्र की तरह पूर्वी व्यवसायिओ और पश्चिमी किसानों मे एक-सा लोकप्रिय होने के अलावा आरभ से ही शक्तिशाली था। उसकी बुनियादी माग यह थी कि सभी 'प्रदेशों' को दासप्रथा से रहित रखा जाये। १८५६ मे इस दल ने राष्ट्राध्यक्ष-पद के लिए सुदूर पश्चिम में पॉच बार महान् अभियानो को सफलता से यशस्वी जोन सी. फ्रेमोण्ट को अपना उम्मीदवार नामजद किया तथा अधिकाश उत्तरी राज्यो मे छा गये और अक्टूबर चुनाव में पेन्सिलवानिया तक पहुँच गये, और यहॉ तक सभावना थी कि शायद डेमोक्रेटिक उम्मीदवार जोन बुक्नन को हरा देते। "स्वतंत्र भूमि" के सेवार्ड और चेस जैसे नेताओ का प्रभाव बहुत बढ़ चला और इनके साथ साथ एक लंबा कद्दावर इलिनोइस का वकील—अब्राहम लिकन जिसने इन नये मुद्दो पर शानदार तर्क प्रस्तुत किये—महान घटना-चक्र की ओर कदम बढा रहा था।

अब तक 'स्वतत्र भूमि' सिद्धान्तो के बारे मे प्रस्तुत वक्तव्यो मे सर्वश्रेष्ठ वक्तव्य १६ अक्टूबर १८५४ मे पवोरिया मे दिया गया अब्राहम लिंकन का भाषण था। उसने कहा कि वह दासता जिस स्थिति मे है, उसमे हस्तक्षेप नहीं करना चाहता है। "यदि मुझे सारे भौतिक अधिकार या शक्तियॉ भी मिल जाये तो भी मै यह नही जानना चाहूँगा कि मुझे दास-प्रथा की इस स्थिति मे उनका क्या उपयोग करना है।" उसने घोषणा की कि काग्रेस को मिसूरी समझौते को—जो विभिन्न समुदायो के मध्य किया गया समझौता है—भंग करने का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। ठीक उसी तरह जैसे उसे उत्तरी अफ्रीका से दास-व्यापार पर लगाये गये प्रतिबंध को भंग करने का अधिकार नहीं है। उसने घोषणा की कि सभी कानून हमारे पूर्वजो द्वारा निर्धारित सविधान की इस मान्यता से रचे जाने चाहिए कि दास-प्रथा एक सकुचित प्रथा है जिसे अत मे नष्ट होना है। उसने कहा कि "लोकप्रिय सार्वभौमिकता" का सिद्धान्त मिथ्या है क्योकि पश्चिम मे दासप्रथा का प्रश्न केवल वहॉ के निवासियो का

ही सवाल नहीं है, परन्तु सारे संयुक्त राष्ट्र अमरीका का सवाल है। "इकतीस राज्यों के लोगों के यह कहने की अपेक्षा कि बतीसवें राज्य में दासप्रथा नहीं प्रवेश करेगी नेब्रास्का के इकतीस लोगों का यह कहना कि बतीसवें को दास रखने का अधिकार नहीं है कहाँ का नैतिक अधिकार है!"

दक्षिण के दासमालिकों व उत्तर के स्वतंत्र लोगों के कंसास में बसने की प्रक्रिया ने आपसी गहरे संघर्षों को जन्म दिया जिनमें से कईयों ने खूंख्वार व छापामार लड़ाई का रूप ले लिया। दोनों ही समुदायों ने अपने पक्ष के बसने वालों को इस प्रदेश को हथियाने के लिए भेजने के कदम उठाये। इनमें उत्तर में प्रवासी सहायक संघ अधिक सक्रिय व व्यस्त रहा। ये लोग पूरी तरह से शस्त्र-सज्जित होकर पहुँचे। बुक्नेन के लोकप्रिय पादरी हेनरी वार्ड बीचर ने एक सभा में जहाँ शस्त्रों की माँग की जा रही थी भाषण देते हुए कहा कि शार्पे की रायफल बाइबिल की अपेक्षा वहाँ अधिक नैतिकतापूर्ण साधन है और उनकी इस उक्ति ने बाद में रायफलों को 'बीचर की बाइबिल' की संज्ञा दे दी। शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि वहाँ अच्छी स्थिति हो गयी है। एक तो पड़ौसी प्रदेश ऊपरी मिस्सिसिपी घाटी में 'स्वतंत्र' लोगों की अधिकता तथा एक ऐसे प्रदेश में दासों को ले जाने में यह खतरा भी कि कहीं बाद में वह 'स्वतंत्र' तो न हो जाये, दक्षिण में अधिक उत्साह नहीं दिखाया गया। फिर भी सीमा प्रदेश के कई बदमाश व आवारा' मिसूरी से नदी पार करके उत्तरी निवासियों को धमकाने या गैरवैधानिक मत डालने के लिए वहाँ कन्सास में पहुँच गये जबकि दास रखने वाले दक्षिणी लोगों को वाशिंगटन में बुकनन प्रशासन का समर्थन प्राप्त था। इसलिए यह संघर्ष कई दिनों तक खिंचता रहा और सारे राष्ट्र में इसके कारण तनाव पैदा होता रहा। जब इस तरह भयंकर भूलें करने वाले राष्ट्राध्यक्ष बुकनन कांग्रेस के दोनों ही सदनों को—जहाँ डेमोक्रेटिकों का आधिपत्य था—लेकोंपटन संविधान के अंतर्गत कांसास को दास राज्य की तरह स्वीकार करने के लिए ललचाने लगा तो उत्तर में तूफान उठ खड़ा हुआ, यहाँ तक कि डगलस के भी अपने संबंध राष्ट्राध्यक्ष बुकनन से बुरी तरह बिगड़ गये।

इसी दौरान में अधिकांश उत्तरवासियों ने जब यह देखा कि दक्षिण द्वारा १८५० का समझौता भंग कर दिया गया है तो भगोड़े दास कानून का पालन करने से इंकार कर दिया, क्योंकि यह कानून भी इस समझौते का ही प्रतिफल था। भागे हुए दास को छुड़वाना या उसके मामले में उत्तर में विशाल भीड़ों द्वारा घेर लिया जाना साधारण बात हो चली थी। बहुत से उत्तरी राज्यों ने

अपने यहाँ व्यक्तिगत स्वाधीनता कानून पारित किये जिन्होंने भागे दासों को पकडने सम्बंधी सघीय कानून को निरर्थक कर दिया। जब बोस्टन मे एक हब्शी दास एन्थोनी बर्न्स पकडा गया तो प्रख्यात नेता शीघ्र ही उसके बचाव को जा पहुँचे। समस्त पूर्वी मिन्चीगन से क्रुद्ध लोगो की भीड उमड़ पडी और धमकियाँ देती हुई लोगों की टोलियाँ सड़को पर उमड़ पड़ी और एक काले हब्शी को फिर से पकड कर दास बनाकर ले जाने मे सारे शहर की पुलिस, स्थानीय सैनिक, राष्ट्रीय स्थल सेना और नौसेना की सहायता लेनी पडी।

युद्ध की ओर : हर साल राष्ट्र युद्ध की ओर बढ रहा था, मानो एक नक्कारा सघर्ष के लिए कूच के रण का धौंसा बजा रहा था। १८५६ मे एक बदमिजाज काग्रेस सदस्य प्रेस्टन ब्रूक्स ने मसाचुसेट्स के सीनेट सदस्य सुम्नर के सिर मे सीनेट भवन मे उनकी मेज के पास ही जोरो से उठाकर लाठी मारी कि वे कई वर्षों तक घायल रहे। इस उत्तेजना का कारण सुम्नर का एक निदाभरा भाषण था, परन्तु इस पर इतनी निर्लज्जता कहाँ तक उचित थी। १८५७ मे पहले सर्वोच्च न्यायाधीश टेने और सुप्रीम कोर्ट के अधिकाश न्यायाधीशो ने ड्रेड स्काट मामले मे घोषणा की कि काग्रेस को प्रदेशो से दास-प्रथा को दूर रखने का कोई अधिकार नही है। सविधान का ऐसा अर्थ करना बुरा था और इसके लिए प्रस्तुत तर्क भी अनुचित थे। तत्काल ही स्वतंत्र राज्यों के पत्रों और राजनीतिज्ञो ने न्यायालय को इतनी कटुता के साथ आड़े हाथों लिया जितना पहले कभी नहीं लिया गया था। साथ ही यह भी घोषणा की कि वे जल्दी ही देख लेना चाहते हैं कि ऐसे गलत सविधान को ठीक कर लिया जाय। प्रसिद्ध कवि व सपादक विलियम कुलेन ब्रायन्ट ने लिखा, "इसके बाद यदि निर्णय कानून है तो दासता, जिसे दास राज्य वाले अपनी विशिष्ट प्रथा मानते हैं, अब सघ राज्यो के लिए तिरस्कार व निर्लज्जता की निशानी के रूप मे है चाहे वे राज्य जो अपने साथ 'स्वतंत्र' का खिताब जोडते रहे हों अथवा वे राज्य जो 'गुलामभूमि' का घृणित स्वरूप लिये हुए ही क्यो न हो। इसके बाद जहाँ जहाँ हमारा न्याय चलता है इसके साथ साकल बेडी और कोडे भी लाजिमी रहेंगे, जहाँ भी हमारा ध्वज लहराता है वह दासता का झडा है। यदि यही बात है तो हमे हमारे ध्वज पर से तारों का प्रकाश व प्रभात की लाल किरणो को मिटा देना चाहिए, इसे काला रग देना चाहिए और इस पर कोडे और बेड़ियाँ अंकित कर देनी चाहिए। क्या

हमें, बिना सर हिलाये सविधान के इन नये अर्थों को स्वीकार करना है ... ?
कदापि नहीं! कदापि नहीं!"

१८५८ मे इलिनोइस मे लिंकन और डगलस के बीच जो एक क्षेत्र से सीनेट के उम्मीदवार थे, उल्लेखनीय वादविवाद का आरभ हुआ। ऊपरी तौर से इस विवाद मे गभीर बात नहीं है। डगलस एक बौने कद का भारी भरकम बडी खोपडी का आदमी था जबकि लिंकन अटपटा, दैत्य की तरह लंबा आदमी था और उसकी गवारू बातों से देहातीपन झलकता था। देहाती लिंकन और सुसभ्य डगलस की योंही ऊपरी तुलना करे तो लिंकन काफी हल्का रहता था। परन्तु इन लोगों ने जितनी बारीकी, स्फुरण या सेक्शन काल की तार्किक शक्ति दर्शायी वह अंग्रेजी भाषा के वादविवाद मे बहुत कम मिलती है। दोनो ने इन समस्याओ के बारे मे देश को जाग्रत करने मे गहरा योगदान दिया। इसके अलावा लिंकन ने डगलस को यह कहने के लिए बाध्य करने मे सफलता प्राप्त की कि ड्रेड स्काट निर्णय इन प्रदेशों मे उसके 'लोकप्रिय सार्वभौमिकता' के सिद्धान्तों का हनन नही करता है। डगलस ने समझाया कि यह सत्य है कि न तो कांग्रेस न राज्य धारासभाएं दासप्रथा मे हस्तक्षेप कर सकती हैं, परन्तु दासविरोधी समाज मे दासप्रथा तब तक नहीं रह सकती जब तक कि पुलिस का सक्रिय सहयोग न मिले और राज्य धारासभाएं कानून पारित कर ऐसी रोक लगाकर उसे गयी गुजरी स्थिति डाल दे जिससे वह स्वयं नष्ट हो जाये। जब दक्षिणवासियों ने यह साहसी गर्वोक्ति सुनी तो अधिकाश लोग डगलस को डेमोक्रेटिक दल से खदेडने के लिए बुकनन के साथ हो गये। डगलस सिनेट का चुनाव जीत गया परन्तु इस वर्ष के गुजरते ही लिंकन एक राष्ट्रीय हस्ती बन गया।

तब ही १८५९ मे जान ब्राउन का हार्पर्स फेरी का काड हुआ। एक छोटी सी टुकडी ने उन्मादवश वर्जीनिया मे छापा मारा इस आशा से कि गुलामों को स्वतत्र करके शस्त्रसज्जित किया जाय। यह शेखचिल्ली का सा मनसूबा और अभियान बुरी तरह असफल हुआ। दक्षिण मे इससे क्रोधाग्नि भडकना स्वाभाविक ही था परन्तु ब्राउन और उसके छः अनुयायिओं को फासी पर लटकाया गया, अधिकाश उत्तरवासियों ने मृत दासप्रथा उन्मूलनकारियों को शहीद मान लिया और दो वर्ष बाद सैनिकों ने 'जान-ब्राउन का शव' सगीत पर कदम बढ़ाते हुए रण के लिए कूच किया।

इन घटनाओं का इतना गंभीर रूप ले लेने का आतरिक कारण यह था कि

क ना डा
वाशिंगटन प्रदेश
१८५३
ओरेगोन प्रदेश
१८४८
नेब्रास्का प्रदेश
१८५४
मिन्नेसोटा प्रदेश
१८४९
उटाह प्रदेश १८५०
कांसास प्रदेश १८५४
कैलिफोर्निया
(स्वतन्त्र राज्य समझौता
१८५०
३६' ३० रेखा
न्यू मेक्सिको प्रदेश
१८५०
प्रशांत महासागर
विसकौंसिन
मिशिगन
स्वाधीन राज्य
आइओवा
इलिनोइस
इंडियाना
ओहियो
पेंसिलवानिया
न्यू यार्क
वरमौंट
न्यू हैम्पशायर
मेन
मसाचुसेट्स
कनेक्टीकट
रोड आइलैंड
न्यू जर्सी
डेलावेर
मेरीलैंड
प वर्जीनिया
वर्जीनिया
मिसूरी
केंटकी
टेनेसी
उ करोलिना
द करोलिना
इंडियन प्रदेश
(परिसंघ)
अरकांसास
मिस्सिसिपी
अलाबामा
जोर्जिया
टेक्सास
लुइसियाना
फ्लोरिडा
अटलांटिक महासागर
मेक्सिको की खाडी
दासप्रथा व पृथकतासूचक क्षेत्र
दास राज्यों की सीमा
११ संघीय राज्यों की सीमा
रूई-उत्पादक राज्यों का क्षेत्र

उत्तर और दक्षिण ऐसे फिरकों में बट गये थे जो आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक रूप से पूर्णतया असमान थे। सम्पूर्ण दक्षिण ही केवल एक नार्थ आरलियन्स को अपवाद स्वरूप छोडकर लगभग पूर्णतया ग्रामीण था। उत्तर के बडे भूभागों मे शहरी बस्तियॉ बस चुकी थी, और न्यूयार्क की आबादी तेजी से दस लाख तक पहुॅचने जा रही थी। दक्षिण मे उत्पादन के कारखाने भी बहुत कम थे, तथापि ऐसे कुछ उद्योग जैसे ट्रेडेगर आयरन वर्क्स रिचमण्ड मे पनप उठे थे दक्षिण की सूती मिलों में—वास्तव मे मसाचुसेट्स के एक कस्बे और बाल्टीमोर और ओहियो मे बाल्टीमोर से वीलिंग तक १८५३ मे रेलमार्ग का पूरा निर्माण कर लिया गया था। पश्चिमी रेलमार्गों में सबसे बडा रेलमार्ग इलिनोइस सेण्ट्रल रेलमार्ग था जिसे २६ लाख एकड सार्वजनिक भूमि मिली थी और यह रेलमार्ग चिकागो से गल्फ स्ट्रीम तक था। १८५०-१८६० मे जो बीस हजार मील रेलमार्ग बना उसका अधिकाश भाग उत्तर मे था।

अधिकाश उत्तरवासी सरक्षित टटकर के हिमायती थे जब कि दक्षिण सस्ते तैयार माल की अभिलाषा मे इनका विरोधी था। उत्तर सार्वजनिक भूमि को शीघ्र ही छोटे छोटे-फार्मों मे वितरित करने के पक्ष मे था। सभी निवासियों की खेत के साथ घर की माग जोर पकड रही थी। "अपने फार्म के लिए वोट दो" यह ध्वनि चारों ओर गूज रही थी। दक्षिण की यह इच्छा थी कि इस राष्ट्रीय जमीन को वितरित न किया जाय और इसे अच्छे दामों में बेची जाये। उत्तरपश्चिम आतरिक विकास चाहता था जिसके लिए दक्षिण अनमना था। उत्तर सुव्यवस्थित राष्ट्रीय बैंक प्रथा चाहता था, जबकि दक्षिण जहॉ लोगों के पास थोडा बहुत ही जमा था केन्द्रीय बैंक प्रणाली का विरोधी था। सामाजिक रूप से उत्तर—जहॉ शहरों मे अनापशनाप सपत्ति व गरीबी पनप रही थी दक्षिण की अपेक्षा अधिक प्रजातान्त्रिक था। दक्षिण मे गुलाम-मालिकों का एक वर्ग ही सपत्ति व सत्ता को हथियाये हुए था।

फिर भी, ये मतभेद महत्वपूर्ण होने पर भी उत्तर दक्षिण को विभाजित नहीं कर पाते यदि भय और ऊँच-नीच की भावना नहीं पनपती और राजनीतिक भाषणबाज इन्हें नहीं उकसाते। दक्षिण यह अच्छी तरह जानता था कि दास-प्रथा मे भी एक ऐसी वर्गभेद की समस्या निहित है जिसका हल नहीं पाया जा सकता। जैसा कि जेफर्सन ने कहा था, "दक्षिण ने भेड़िये के कान पकड रखे हैं जिन्हे न तो वह पकडे रह सकता है और न छोड ही सकता है।" दासताउन्मूलनकारी आन्दोलन ने दक्षिण में यह भय भर दिया था कि उत्तर, जहॉ

दासप्रथा स्थित है, उस स्थिति पर भी चोट करेगा और दक्षिण की एतिहासिक श्रमप्रणाली को भंग कर देगा और एक जाति द्वारा दूसरी जाति को नष्ट करने के लिए आपस मे लडायेगा। उत्तर की अधिकाश आलोचना वास्तव में स्वार्थ-भरी बकवास, अव्यावहारिक और अपमानजनक थी। दूसरी ओर उत्तर मे लिंकन जैसे सज्जन व्यक्तियों को भी यह डर था कि दक्षिण सारे भूभाग में दास-प्रथा फैला देना चाहता है। उन्हें यह भी भय था कि निम्नवर्ती दक्षिणी राज्य फिर से दास-व्यापार खोलने के प्रयत्न मे हैं, जैसा कि उनके कई नेता कह भी रहे थे, और अपनी इस प्रथा के विस्तार मे सारे राष्ट्र को क्यूबा या मेक्सिको या केन्द्रीय अमरीका को जीतने के लिए युद्ध भी छेडना पड़ सकता है।

कई उत्तरी पत्रकारों, पादरियों और राजनीतिज्ञों ने दासप्रथा की बुराइयो और दासमालिकों के इरादों को अतिरंजित किया। कट्टर दक्षिणी आग उगलने वाले नेताओं ने औद्योगिक समाज की कमियों और स्वतंत्रभूमि वालो के उद्देश्यों को भयावह चित्रित किया। एक बुद्धिमान न्यूयार्कवासी नेता ने कहा कि यदि अधिक उत्तेजक आन्दोलनकारियों को उत्तर और दक्षिण मे से पकड़ कर एक गाडी मे भर पोटोमाक नदी की तली मे पन्द्रह मिनिट तक पानी मे डुबाये रखा जाय तो शान्ति सम्भवतः मिल ही जायेगी। परन्तु यह उनकी निरी आशावादिता थी। दूसरे लोग तेजी से इनका आसन ग्रहण कर लेते।

लिंकन का चुनाव : राज्यों का पृथक् होना : १८६० मे रिपब्लिकन दल की जीत—जिससे दक्षिण राज्य सघराज्य से अलग हुआ—डेमोक्रेटिक दल मे फूट के कारण ही सभव हो सकी। इस फूट के पीछे अमरीकी इतिहास की अत्यन्त नाटकीय घटनाएँ भरी पडी हैं।

कई वर्षों से दक्षिणी उग्र कट्टरपंथी यह मॉग कर रहे थे कि कॉग्रेस ऐसे कानून पारित करे जिनसे प्रदेशों में दास-प्रथा को सुरक्षित रखा जा सके। जब डगलस ने यह घोषणा की कि राज्यों मे विरुद्ध कानून बनाकर ड्रेडस्काट फैसले को निरर्थक किया जा सकता है तो दक्षिण की यह मॉग और भी तेजी से बुलन्द होने लगी। यह मॉग तीन प्रमुख रूई-उत्पादक राज्यो के प्रवक्ता, मिस्सिसिपी के जेफर्सन डेविस, अलाबामा के विलियम एल. चान्से और जार्जिया के रोबर्ट टूम्ब्स ने व्यक्त की। १८५९ के पूर्वार्ध मे सीनेट ने मिस्सिसिपी के अल्बर्ट जी. ब्राउन ने यह मॉग दुहरायी और डगलस की ओर मुड कर कहा कि वह इस

मामले मे किस ओर है? उसने पूछा, "यदि प्रादेशिक धारासभा ऐसा करने से इंकार कर देती हैं तो क्या तुम यह काम करोगे? यदि वे दासता के विरुद्ध कानून पारित कर लेती है तो क्या तुम उन्हे निरर्थक करके और उनके बजाय दासप्रथा समर्थक दूसरा कानून लागू करोगे?" उसने कहा, "दक्षिण का तकाजा इस कार्रवाई के लिए है—कारगर बिना रोकटोक निर्बाध कार्रवाई के लिए।" दूसरे दक्षिण प्रतिनिधि भी उसके समर्थन को उठ खडे हुए।

परन्तु डगलस वह प्राणी नही था जो इन गीदड भभकियों से कॉप उठता। उसने घोषणा की, "ब्राउन की मॉग प्रदेशों के सार्वजनिक जन अधिकारों को भग करने वाली मॉग है। अमरीकी इतिहास मे आज तक कॉग्रेस ने किसी भी प्रदेश के लिए अपराधी दंड विधान या प्रदेशों मे सपत्ति संरक्षण कानून कदापि नहीं गढे है। १७८९ से ही काग्रेस ने ये मामले राज्यों को व प्रदेशों को प्रदान कर रखे है। अब वह अपने इस अच्छे नियम को क्यों भंग करे? वर्षो से डेमोक्रेटिक दल ने घोषणा की है कि दल राज्यों में काग्रेस के हस्तक्षेप के विरुद्ध है। अब वह अपने इस उचित सिद्धान्त को क्यों छोड़ दे?" डगलस ने जोर देकर कहा, यदि आप हस्तक्षेप नहीं करने के सिद्धान्त को भंग करते हैं और काग्रेस द्वारा दासप्रथा कानून बनवाना चाहते हैं उन राज्यों के लिए जो इसे नही चाहते है तो आप लोगों को डेमोक्रेटिक दल के रगमंच से उतर जाना चाहिए . .. दक्षिण के सज्जनों! मै आपको प्रतिष्ठापूर्वक यह कहना चाहता हूॅ कि मुझे इस बात मे रचमात्र भी विश्वास नहीं है कि एक डेमोक्रेटिक सदस्य उत्तर के किसी भी डेमोक्रेटिक पक्ष के समर्थक राज्य को उस मन्च पर खडा कर सके जिसका यह सिद्धान्त हो कि सघीय सरकार का यह कर्तव्य है कि उन राज्यो पर दास-प्रथा थोपी जाये जहॉ कि लोग इसे पसन्द नहीं करते हो।" जेफर्सन डेविस ने बीच में कहा कि काग्रेस को अमरीकी नागरिको के अधिकारों पर जोर देना चाहिए और यदि कोई प्रदेश इन्हे लागू नही करे तो उसे लागू करना चाहिए। डगलस ने चिल्ला कर कहा, "कदापि नही। रत्ती भर भी नही। यदि ओरेगोन खच्चरों को बढ़ावा देने के बारे मे कोई कानून नहीं बनाना चाहता है तो मै वाशिगटन में कभी भी उन खच्चरों को थोपने का कानून नही पारित करूगा, यदि ओरेगोन सीग वाले पशुओं को बढावा देने के पक्ष मे कानून पारित नहीं करता है तो मै उन पर कदापि पशुओं को नही लादूगा और यदि ओरेगोन दासों को स्वीकार नहीं करता है तो मै वहॉ की जनता पर दास-प्रथा नहीं लादूंगा।"

यही वह चट्टान थी जिससे डगलस और बुक्नन प्रशासन के समर्थको में कलह के कारण १८६० का डेमोक्रेटिक अधिवेशन टकराकर भंग हो गया। प्रतिनिधिगण चार्ल्सटन नगरी मे मिले—वह नगरी जहाँ दास-प्रथा का उत्तेजक उन्माद था। काल्होन, हापने और 'मर्करी' के लेखक आर. बी. हेट की नगरी चार्ल्सटन यही थी। ये लोग गत दो वर्षों से सीनेट मे डेविस और डगलस के बीच जो सघर्ष चल रहा था उसे जारी रखने के लिए मिले। यदि डगलस जीत जाता तो डेमोक्रेटिक दल एक सच्चे राष्ट्रीय दल के रूप मे उत्तर पश्चिम तथा दक्षिण मे शक्तिशाली दल के रूप मे जारी रहता। यदि डेविस की जीत होती, जो अनमने समुदायो पर भी दास-प्रथा लादने का सिद्धान्तवादी था, तो डेमोक्रेटिक दल केवल दक्षिण का दल रह जाता। कुछ समय के लिए तो ऐसा लगा कि एक समझौताप्रिय उम्मीदवार को नामजद कर लिया जायेगा जो दोनो ही बातो से परे हो। परन्तु डेविस, यान्से, रेट्ट, टूम्ब्स, और ल्यूसियाना के जुडा. पी. बेजामिन जैसे उग्र कट्टर नेता दल की सत्ता या दल के सर्वनाश पर तुले हुए थे।

जब इन लोगो ने अपनी माग को राजनीतिक मंच पर लादने की जोरदार चेष्टा की तो डगलस-समर्थक ओहियो के पुग ने कहा, "दक्षिण के भद्रजनो ! आप हमे गलत समझ रहे हैं, हम यह कदापि नहीं करेगे।" डेविस-यान्से सिद्धान्त के विरुद्ध अधिकाश प्रतिनिधि दृढ बने रहे। इसपर अलाबामा प्रतिनिधि मंडल ने प्रतिवाद स्वरूप खडे होकर वाकआउट कर दिया। दक्षिणी करोलिना प्रतिनिधिमडल ने भी यही किया और निम्न दक्षिण के राज्यो ने भी उनका ही अनुसरण किया। जब दल पूरी तरह भंग हो गया तो चार्ल्सटन अधिवेशन नामजदगी के लिए आवश्यक औपचारिक सख्या पूरी नही होने के कारण स्थगित होगया। इसके दोनो अंगो ने शीघ्र ही अलग-अलग अधिवेशनो का आयोजन किया, दक्षिणी कट्टर डेमोक्रेटो ने केन्टकी के ब्रेकिन्रीज को तथा उनके प्रतिद्वन्द्वी उत्तरी डेमोक्रेटो ने डगलस को राष्ट्राध्यक्ष पद के लिए नामजद किया। इस फूट का महत्त्व जितना कम उस समय आका गया था उससे कहीं अधिक निकला। केवल डेमोक्रेटो की पराजय ही निश्चित नही हुई, उत्तर और दक्षिण को एक रखनेवाले महान सम्बंध की एक और कड़ी टूट गयी थी।

रिपब्लिकन दल ने चुनाव अभियान मे पूर्ण एकता से काम लिया। शिकागो मे एक उत्साहप्रद अधिवेशन मे इस दल ने अपने लोकप्रिय मध्यपूर्वी अमरीकी

नेता लिकन को नामजद किया और उसके प्रतिद्वन्द्वी चेस और सेवार्ड को निराशा ही हाथ लगी। फिर भी वे इस 'रेलों की पटरियें चीरने वाले' को विजयी बनाने के लिए पूरी वफादारी से जुट गये। दलीय भावना को अत्यंत तीव्र कर दिया गया, एक दृढ़ विश्वास, एक सुधारक साहसी श्रम ने लाखो मत-दाताओं को जागृत कर दिया जिन्होंने यह घोषणा की कि वे दासप्रथा को जरा भी आगे नहीं बढ़ने देगे। दल पूंजिपतियो से आर्थिक सहायता पाने मे इतना अधिक सफल रहा कि वह पिछले चार वर्षों मे भी इतना चन्दा इकट्ठा नही कर पाया था। १८५७ के छोटे से परन्तु भयकर आर्थिक सकट ने औद्योगिक समुदायों मे सरक्षित तटकर की माग को अनुप्रेरित किया; इन समुदायो ने व्यावसायिक और वित्तीय क्षेत्रों मे यह माग भी उठायी कि सुव्यवस्थित बैंक प्रणाली-होनी चाहिए। रिपब्लिकन दल ने इसकी पूर्त्ति का वचन दिया। इसी के साथ साथ उत्तरवासियो को भी उन्होंने वचन दिया कि अमरीका मे प्रत्येक घरबार वाले को निःशुल्क जमीन देने का कानून बनाया जायेगा। आर्थिक तौर पर दल ने पेंसिलवानिया के कई बडे पूंजी सस्थानों को महत्वपूर्ण वादे दिये, यह राज्य १८५६ मे डेमोक्रेटिक दल के हाथ से जाता रहा था। तटकर की आशा इस दल की नाव को विजय के तट की ओर तेजी से खेने लगी। उत्तरपश्चिम मे आतरिक विकास के आश्वासन से हजारो मत मिले। केन्द्रीय पश्चिम मे घर-जमीन का आश्वासन काम कर गया।

चुनाव के रोज लिकन को १,८६६,४५२ मत मिले, डगलस को १,३७५,१५७ मत मिले, बीकिंरीज को ८४७,९५३ मत मिले और दोनो पक्ष की सुलह राजनीति के उमीदवार टेनेसी के जान बेल को ५९०,६३१ मत मिले। पोपुलर मत लिकन के कम थे परन्तु चुनाव कक्ष मे उसको निर्णायक बहुमत प्राप्त था। पोपुलर मत निस्सदेह दासप्रथा को सीमित करने के पक्ष मे था, परन्तु साथ साथ एकता व शाति के पक्ष मे भी था। पृथकता पक्षी बीकिरिज ही अकेला ऐसा उम्मीदवार था जिसे कुल मतो के पाचवें हिस्से से भी कम मत मिले।

दक्षिण मे कट्टरपंथी फिर भी राज्यों मे सत्तारूढ़ रहे। जार्जिया के गणराज्य व एकतावादी विचारक अलेग्जेंडर एच. स्टेफेंस ने लिखा, "लोग पागल हो गये हैं, वे लोग क्रोध और उन्माद से बावले हो रहे हैं।" निश्चय ही दक्षिणी करोलिना ने पृथकता का निर्णय कर लिया था। इसकी सभावना मिलती है कि न तो दासप्रथा और न दक्षिण को ही किसी तरह का वास्तविक

खतरा था। लगभग अपने पहले प्रशासनकाल की पूर्ति तक लिंकन (यदि दक्षिणी राज्य संघराज्य मे रहते) को काग्रेस मे विरोधी बहुमत का सामना करना पड़ता, सुप्रीम कोर्ट मे भी अधिकाश न्यायाधीश दक्षिण के थे, उसके हाथ भी बंधे हुए थे। इसीलिए लिकन ने खुले रूप से दासप्रथा को जिस स्थिति मे वह थी उसे छेडना अस्वीकार कर दिया। दक्षिण मे दास प्रथा बिना सविधान मे सशोधन किये मिटायी नही जा सकती थी और यह आनेवाले कई दशकों मे भी असमव बात थी। फिर भी कदम उठाया गया—यह जानते हुए उठाया गया कि इसका निश्चित दुष्परिणाम होगा। स्टेफेंस ने भविष्यवाणी के स्वरो मे कहा था, शीघ्र ही देखते देखते ही मनुष्य एक दूसरे का गला काटने लग जायेंगे।

कदम उठा लिया गया था, पर इस बात के पक्के सबूत नहीं है कि दक्षिणी करोलिना के बाहर के अधिकाश लोगों ने इसका समर्थन किया हो। सम्पूर्ण दक्षिग मे सघराज्य व एकता को बनाये रखने की भावना गहरी थी—यहॉ तक कि पाल्मेट्टो राज्य की शाति के बारे मे दृढ़ भावनाएं थी। १८६० के चुनाव मे १४ दास राज्यों के मतदाताओं ने समझौतावादी उम्मीदवारो डगलस और बेल के पक्ष मे १२४ हजार अधिक मत डाले वनिस्पत बीकिंरिज के। सुदूर व अंतराल दक्षिण के मतो का यदि गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया जाये तो हम यह कह सकते हैं कि यदि पृथकता को समस्या बना कर उचित व खुला जनमत सग्रह किया जाता तो वह गिर जाता। पृथकता और युद्ध छिड़ जाने के बाद भी दक्षिण मे कई शक्तिशाली गुट्ट बने रहे जो दक्षिणी राज्यसमूह के विरुद्ध थे। पश्चिमी वर्जीनिया के लोग पुराने वर्जीनिया राज्य से अलग हो गये, और पश्चिमी उत्तर करोलिना मे लामबदी लागू नही की जा सकी और यहॉ तक कहा जाता है कि टेनेसी की जनता ने उत्तर की सेनाओ को इतने स्वयंसेवक दिये जितने उत्तर के किसी प्रदेश ने नही दिये थे। फिर भी यह बात याद रखने की है कि आम तौर पर क्रान्ति लाना केवल कुछ निश्चयी अल्पमतों का काम होता है और १८६० मे पृथकता के पक्ष मे अच्छा व्यापक जनमत था ठीक उसी भाति जैसे १७७६ में इगलैड मे जार्ज तृतीय के शासन के विरुद्ध बगावत के पक्ष में लोगों का था।

निम्न दक्षिण द्वारा कदम उठाने में कई भावनाएँ काम कर रही थीं: उत्तर के प्रति घृणा, चुनाव मे अपनी पराजय से जलन, प्रदेशो के प्रति किये गये निर्णय को स्वीकार करने से अरुचि, अपने ही झण्डे के नीचे

गुर्वी और समृद्ध दिनों का मुख्य स्वप्न और इसमें भी सर्वोपरि थी भय की भावना। यह भय कि कहीं उन्मूलन आंदोलकों जैसी विचारधारा वाली सरकार द्वारा उनके संस्थानों व विशिष्ट सभ्यता को बुरी तरह उखाड़ फेंकने का प्रयत्न तो न होगा। दक्षिणी कैरोलिना ने २० दिसम्बर १८६० को नेतृत्व करते हुए यह घोषणा की, "उत्तर ने एक ऐसे व्यक्ति को राष्ट्राध्यक्ष चुना है जिसके सिद्धान्त और विचारधारा दासप्रथा के तीव्र विरोधी हैं।" इसका अनुकरण करते हुए मिस्सिसिपी ने भी ज़ोर दिया, "उत्तरी जनता ने दक्षिणी राज्यों के प्रति एक बगावत की सी स्थिति खड़ी कर रखी है," और दक्षिणी कट्टर नेताओं ने— जिन्होंने यह कभी सोचा भी नहीं कि उत्तर वास्तव में लड़ेगा ही—यह देखा कि यदि यह मौका चूका तो चूक ही गये। राष्ट्राध्यक्ष जैक्सन ने दक्षिणी कैरोलिना की कार्यवाही को निरर्थक कर दी। एक राज्य द्वारा पृथक्करण असम्भव था। यदि दक्षिण बिना स्वतन्त्रता की घोषणा किये ही इस संकट को गुज़र जाने देता तो ऐसा अवसर ही नहीं आता। दक्षिणी राज्य समूह को कदाचित विश्व-राष्ट्रों में महत्त्वपूर्ण स्थान मिल जाता और उसके दक्षिण में करेबियन तक फैल जाने की भी व्यापक सम्भावनाएँ थीं। फरवरी के आरम्भ में ही सात अलग होनेवाले राज्यों की बैठक अलाबामा राज्य के मांटगोमरी नामक स्थान पर हुई जहाँ अमरीकी कान्फेडरेट स्टेट्स का गठन किया गया और उसका राष्ट्राध्यक्ष जेफर्सन डेविस को चुना गया।

हिचकिचाहट वाले ऊपरी उत्तर के चार अन्य राज्यों ने भी अपने ही समाज का शीघ्र अनुकरण किया, परन्तु इन में सबसे उल्लेखनीय जान जे. क्रिटेन्डेन की वह योजना थी जिसमें उसने पुनः मिसूरी समझौते की रेखा ३६°–३०' पर वापिस आने का सुझाव दिया था। लिंकन ने (अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रह कर) दासप्रथा के किसी भी राज्य में प्रवेश को अस्वीकार करते हुए इसे ठुकरा दिया। १२ अप्रैल १८६१ की सूर्योदय वेला में दक्षिणी तोपों ने चार्ल्सटन बन्दरगाह में फोर्ट सुम्टर पर गोले बरसाने आरम्भ किये।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

भाई-भाई का युद्ध

जनशक्ति और साधनस्रोत : जनरल विलियम-टी. शर्मन के अपने भाई को लिखे जून १८६४ के पत्र मे ये पक्तियाँ महत्वपूर्ण है:—"चारो ओर आज मौत और बरबादी का जो भयकर ताण्डव चल रहा है वह सारी दुनिया को थर्रा देने के लिए काफी है। लगातार पिछले दो बरस से यह ताण्डव दिनोंदिन बढ़ता ही गया है। मुझे तो लगता ही नही कि यह काण्ड दोनो पक्षो मे से एक या दोनो के ही नष्ट होने से पहले रुक सकेगा। ... हजार दो हजार व्यक्तियो की मौत या उनका अंगभंग मुझे मानो एक छोटी-सी घटना अथवा छोटी सी मुठभेड़ भर लगने लगी है—और शायद हमारे दिल इतने कठोर बन गये हैं।" उन्होने आगे लिखा, "अभी लडाई की सबसे भयंकर विभीषिका तो शुरू ही नही हुई है।" जार्जिया के बारे मे, जिसके शहरो और खेती के फार्मों की बरबादी, पहाड़ों से लेकर समुद्र तक खुद उन्ही के हाथों होने को थी—इस बारे मे उनका उपर्युक्त वाक्य वास्तव मे सच्चा साबित हुआ। उनका यह वाक्य वर्जीनिया के बारे मे तथा ग्राण्ट और ली की उन सेनाओ के बारे मे भी सही निकला जिनका रक्तरजित युद्ध तब शुरू ही हुआ था। लेकिन देशव्यापी लड़ाई की शुरूआत आरभ मे इतनी भयंकर भावनाओ से नही हुई थी। उत्तर के लोगो का नारा था—"रिचमण्ड पर धावा बोल दो" और दक्षिण के लोग सिर्फ यॅाकी "खुराफात" पर अपनी बहादुरी का सिक्का बैठाना चाहते थे। दोनो ही पक्षों का ख्याल था कि यह सघर्ष थोडी देर ही चलेगा और शानदार रहेगा।

फोर्ट सुम्टर की लड़ाई के धक्के ने तुरन्त ही उत्तर के लोगो मे और साथ ही साथ दक्षिणवासियों मे भी दलीय एकता स्थापित कर दी। वर्जीनिया मे फैली क्रोधाग्नि ने उसे सघराज्य से पृथक करके दक्षिणी संघ मे शामिल करा दिया और इस पुराने उपनिवेश ने दक्षिणी राज्य समूह को रिचमड मे राजधानी भी बनाने दी क्योंकि जेफरसन डेविस १८६१ के जून महीने के आखिरी दिनो मे अपनी

सरकार के साथ रिचमण्ड आ पहुँचा था और दक्षिणी योग्यतम नेता राबर्ट ई. ली को—जो मेक्सिको की लडाई मे सेरोगोर्दो तथा शापल्टेपेक के वीर के नाम से प्रसिद्धि लाभ कर चुका था तथा वेस्ट पाइन्ट का सुपरिन्टेन्डेन्ट रह चुका था और टेक्सास विभाग का कमाण्डेण्ट भी था—अपने राज्य का नारा राष्ट्रीय नारे से कहीं अधिक प्रिय लगा और उसने अपने राज्य का साथ देना उचित समझा। टेनेसी राज्य भी दक्षिणी राज्यों के साथ शामिल हो गया। उत्तर मे ऊपर मिस्सिसिपी वैली घाटी राज्य इस घोषणा के साथ कि वह खाडी और अपने बीच चुंगीघरों की स्थापना नहीं चाहता सघराज्य में सदलबल शामिल हो गया। दूरस्थ कैलिफोर्निया ने भी ऐसा ही किया। सीमान्त राज्य, मैरीलैण्ड, केन्टकी और मिसूरी के लोग अपनी भावनाओं मे मतभेद के कारण असमजस में ही पडे रहे। प्रथकतावादी लोग बाल्टीमोर पर कुछ दिनो तक अधिकार जमाये रहे, यहा तक कि एक समय तो ऐसा लगा कि वे शायद सेन्ट लुई पर भी अधिकार कर लेगे। लेकिन अन्त तक फ्रासिस स्काट हेनरी के तथा टामस हार्ट बेन्टन के तीनो राज्य अपनी पुरानी राज्यभक्ति पर दृढ़ बने रहे। उत्तरी तथा दक्षिणी भेद आरजी तौर पर समाप्त हो गया। नये राष्ट्राध्यक्ष लिंकन जब अपना प्रारभिक भाषण देने के लिए आगे आये तब डगलस द्वारा उनका टोप अपने हाथो में उठाये रखना, एक लाक्षणिक महत्व रखता था। अलक्जेण्डर एच. स्टीफेन्स को, जो आजन्म सघवादी बना रहा, राज्य का उपराष्टाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

प्रत्येक पक्ष को कुछ विशिष्ट सुविधाएँ प्राप्त थीं। उत्तर का दल आजादी, औद्योगिक साधनस्रोतों, तथा धन की दृष्टि से दक्षिग की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली था। सन् १८६० की जनगणना के अनुसार 'धारियों तथा सितारों' वाले झण्डे के नीचे आनेवाले २३ राज्यों (जिनमें राजभक्त वर्जीनिया अथवा कासास, जो शीघ्र ही सघराज्य में शामिल हो गये थे, के कुछ भागो को लेकर निर्मित पश्चिमी वर्जीनिया का राज्य शामिल नहीं है) की आबादी २ करोड़ ३० लाख थी, जबकि सितारों क्रास के झण्डे के तले के ११ राज्यों की आबादी कुल ९० लाख ही थी। दक्षिग की आबादी मे ३५ लाख से ज्यादा हब्शी भी शामिल थे। उत्तरी रेलवे प्रणाली का विस्तार २२ हजार मील में फैला हुआ था जबकि दक्षिण की रेलवे कुल ९ हजार मील लम्बी थी। उत्तर अपने औद्योगिक विकास के कारण और भी अच्छी स्थिति मे था क्योंकि अकेला न्यूयार्क और पेसिलवानिया ही दक्षिण के जितना उत्पादन करते थे। सघर्ष के अंतिम

तीन वर्षों में उत्तरी पक्ष ने अपनी सभी युद्ध सम्बन्धी जरूरते खुद ही पूरी कर लीं थीं जबकि दक्षिणी पक्ष को बन्दूकों, तोपों, दवाइयों तथा चीरफाड़ के उपकरणों के लिए तथा भारी मात्रा मे गोला बारूद के लिए भी विदेशों का मुंह ताकना पड़ता था। नौसेना पर भी उत्तर का ही अधिकार था और इसलिए समुद्र पर भी उसका नियन्त्रण था। उसकी अर्थ-व्यवस्था सरल और व्यावहारिक तथा विविध रूप वाली थी। उत्तर में प्रवासी प्रवाह भी उसे जनशक्ति देता रहा, गेटिसबर्ग के युद्ध तक कुछ कमी के बाद यह प्रवाह फिर सबल हो उठा।

दक्षिण को अपनी जनता की उस भावना का बडा अवलब था जिसके कारण उसने अनेकों किले और शस्त्रास्त्र हस्तगत कर लिये थे। इसके अलावा उसकी कृषिप्रणाली का सगठन भी उत्तर की अपेक्षा अधिक अच्छा था और चूंकि दक्षिण अपने बचाव के लिए युद्ध कर रहा था इसलिए भी सामरिक सुविधा उसे अधिक प्राप्त थी। दक्षिणी सेनाओं को उनकी आन्तरिक पंक्तियो पर ही काम करना पड़ता था। सबसे बड़ी सुविधा यह थी कि सफलता-प्राप्ति के लिए सामरिक दृष्टि से युद्ध मे विजय प्राप्त करने की उसे अधिक आवश्यकता न थी, यानी उत्तरी प्रदेश पर आक्रमण करके उसे सर करने की जरूरत न थी बल्कि उसे तो इतना ही करना था कि लड़ाई इतनी सख्त और लम्बी बना दी जाय कि उत्तर के लोगों को विश्वास हो जाय कि दक्षिण को जीतना सम्भव नहीं है, और यह कि छोटे मोटे युद्धों की हार वह सहन कर सकता है तथा पराजय के बाद पराजय का भार भी वह उठा सकता है। अगर उसने उत्तर के लोगों को इतना विश्वास दिला दिया कि सघराज्य की विजय बेहद महंगी पडेगी और यह भी कि गलती करनेवाली दक्षिण रियासतो को वापिस चले जाने देना ही ज्यादा बेहतर होगा, तो दर असल नये 'राज्य समूह' की जीत ही समझी जायेगी।"

बहुत से लोगों का ख्याल था कि "दक्षिण की रियासतों को, दुनिया के प्रमुख रूई व्यापार पर उनका नियन्त्रण होने के कारण, काफी सुविधा प्राप्त थी और यह कि अपने यहाँ की कपडा मिलों को कार्यव्यस्त रखने के लिए कपास का इच्छुक ब्रिटेन दक्षिणी राष्ट्रों की तरफदारी करेगा।" लेकिन शीघ्र ही आगे चलकर घटनाओ ने बताया कि ऐसा सोचना गलत था और यह भी कि दक्षिणी रूई की भाँति उत्तरी गेहूँ की भी ब्रिटेन को उतनी ही जरूरत थी। आपत्ति-काल में भी दक्षिण के लोगो मे मुसीबतों को शान के साथ सहन करने और उनकी परवाह न करने की भावना भी मौजूद रही, लेकिन उधर उत्तर के लोगो

मे भी उतनी ही दृढ़-निश्चयता मौजूद रही। दक्षिण के सैनिक उत्तर की अपेक्षा ज्यादा कुशल और फुर्तीले थे, लेकिन राष्ट्रपति लिंकन, जेफरसन डेविस की अपेक्षा राष्ट्रीय तौर पर बहुत बड़े व्यावहारिक साबित हुए। डेविस यद्यपि बौद्धिक दृष्टि से श्रेष्ठ थे, बड़प्पन भी उनमे था और श्रेष्ठत्व की भावना भी उनमे थी, लेकिन दृष्टिकोण की विशालता की उनमें कमी थी और वे कभी कभी तुनुकमिजाजी, जल्दबाजी और व्यक्तिगत भावनाओं को अपने निर्णयों पर हावी हो जाने देते थे। सभी दृष्टियों से देखा जाय तो उत्तर के लोग दक्षिणवालों से कही ज्यादा शक्तिशाली थे, लेकिन दक्षिणवालो की जीत की आशा बहुत कुछ इसी बात पर टिकी हुई थी कि इतने लम्बे-चौड़े प्रदेश तथा इतनी बड़ी असन्तुष्ट आबादी को जीतना कठिन होगा।

उत्तर के जो लोग सोचते थे कि युद्ध बहुत लम्बा नहीं चलेगा उन्हें 'बुलरन' से अच्छा सबक मिला। 'बुलरन' गहरी खाइयो-भरा उत्तरी वर्जीनिया राज्य का एक स्थान था। उसके पृष्ठभाग मे दक्षिणी राज्यसमूह की लगभग ३० हजार सेना इकट्ठी हुई थी। इसका मुकाबला करने के लिए वाशिंगटन मे लगभग इतनी ही बडी सेना ताबडतोब इकट्ठी की गयी और लडने के लिए भेज दी गयी। यूनियन की यह सेना १६ जुलाई को दक्षिणी राज्यसमूह की सेनाओं के बीच से निकल गयी, लेकिन तुरत ही आगे चलकर सामूहिक दक्षिणी पार्श्व ने उस पर करारा आक्रमण कर दिया। उत्तर की यह इतनी बडी सेना सिर्फ नियमित सैनिकों को छोड कर, पॉव पीटती और हबड़ दबड लडती वाशिंगटन की ओर मुडकर भागी और सडकों पर पीछे छूटे हुए आदमियो, तोपों, बन्दूकों, छूटे हुए सामानों और कुछ कांग्रेस सदस्यों को सम्हाल नही सकी। ये कांग्रेस सदस्य यह समझ कर कि जीत तो क्षण भर मे ही हो जायेगी चलो कुछ मजा ही देख लें, सेना के साथ साथ इधर आये थे। मिसूरी तथा पोटोमेक स्थित बाल्सब्लफ नामक स्थान पर भी उत्तर की सेनाए हार गयी। बाल्सब्लफ मे आलिवर वेण्डल होम्स, जो आगे चलकर सर्वोच्च न्यायाधीश के रूप मे प्रसिद्ध हुए, घायल हो गये थे। दोनो ही पक्षों ने फिर एक बार भयंकर लडाई के लिए कमर कसना शुरू किया।

अन्त मे लडाई चार बरस तक खिंचती चली गयी और तभी जाकर बन्द हुई जब तक कि दक्षिण के लोग थक कर चूर न हो गये। रुपये-पैसे, जायदाद, तथा मनुष्यों की भयकर बरबादी इसके कारण हुई। उत्तर ने अन्दाजन २० लाख आदमी लडाई के लिए भरती किये थे और युद्ध की समाप्ति पर उनमे

से सिर्फ १० लाख ही बचे थे। दक्षिणी राज्यो ने भी ७ लाख से लेकर १० लाख तक सैनिक भरती किये थे। लेकिन ठीक ठीक सख्या का किसी को भी पता नहीं है। उत्तरी पक्ष के लगभग ३,६०,००० व्यक्ति मारे गये और दक्षिण पक्ष के मृत व्यक्तियो का अन्दाज़ा २,५८,००० लगाया गया है। दक्षिण का बहुत बडा भाग बिलकुल उजाड हो गया था। शिनान्डोह की घाटी एक सिरे से दूसरे तक उजाड दी गयी थी। शर्मन ने ५ करोड़ मूल्य की सार्वजनिक इमारतो और करोडो के मूल्य की व्यक्तिगत इमारतो को सिर्फ जोर्जिया राज्य मे ही खडहर कर दी थी। कोलम्बिया, रिचमण्ड तथा अटलाण्टा जैसे शहर आग लगा कर नष्ट कर दिये गये थे। रेल की पटरियॉ उखाड कर फेकी गयी थी और फेक्टरियॉ नेस्त नाबूद कर दी गयी थी। पुरानी श्रम प्रणाली के नष्ट होने तथा भौतिक सपत्ति के विनाश के कारण दक्षिण आर्थिक दृष्टि से एकदम खत्म सा ही हो गया था। लडाई के ध्वसावशेष अब भी उस अनुभाग मे दृग्गोचर हो रहे हैं। लडाई की समाप्ति पर यद्यपि उत्तर की औद्योगिक हालत काफी अच्छी थी, लेकिन उसे भी बहुत नुकसान हुआ था—उससे भी ज्यादा जितना अन्दाज शुरू शुरू मे किया गया था।

अभियान : युद्ध के चार मोर्चे विशेष रूप से उल्लेखनीय थे—समुद्र, मिस्सिसिपी घाटी, वर्जीनिया तथा पूर्वी तटवर्ती राज्य और कूटनीतिक क्षेत्र। इनमे से पहले क्षेत्र का ज्यादा जिक्र करना जरूरी नही। विग्रह के प्रारम्भ मे लगभग ४० जहाजों की पूरी नौसेना उत्तर के ही हाथो मे थी। लेकिन वह बिखरी हुई थी, वाशिगटन स्थित एक योग्य अधिकारी गिडियन वेल्स ने (जिसे उसकी उल्लेखनीय युद्ध डायरी के कारण लोग ज्याढा याद करते हैं) शीघ्र ही इस नौसेना को सगठित और शक्तिशाली बना दिया। लिंकन ने जब दक्षिणी समुद्र-तट की घेरेबंदी की घोषणा की, तब शुरू मे बेहद कमजोर होने पर भी यह घेरेबंदी १८६३ तक बहुत प्रभावकारी बन गयी। इसके कारण दक्षिणी राज्यो से यूरोप को कपास का निर्यात बन्द हो गया और उनके लिए अत्यन्त आवश्यक गोला-बारूद, कपड़ो तथा दवादारू का आयात भी रुक गया। इसी बीच डेविड जी फरागट नामक एक तेजस्वी नौसेनाध्यक्ष का भी प्रादुर्भाव हुआ और उसने दो विशिष्ट आक्रमणों का नेतृत्व किया। पहले अभियान मे वह उत्तर के जहाजी बेडे को मिस्सिसिपी नदी के मुहाने के भीतर ले गया और दो मजबूत किलो को पार करता हुआ न्यू आर्लियन्स तक जा पहुँचा तथा उस नगर को

उसने जीत लिया। यह शहर दक्षिण का सबसे बडा तथा समृद्ध शहर था। दूसरे अभियान मे उसने मोबाइल बे की दुर्गाकार नाकाबन्दी तोड कर दक्षिण के एक बख्तरबन्द जहाज पर कब्जा कर लिया और बन्दरगाह को बन्द कर डाला। इसी जमाने मे बख्तरबंद जहाज लकडी के जहाजों का स्थान शीघ्रता से लेने लगे थे। लडाई का बेहद मुसीबत (मार्च १८६२) का काल कडा सकट का था जब दक्षिग के नये बख्तरबंद जहाज मेरीमेक ने वर्जीनिया राज्य के नार्फोक बन्दर से बाहर आकर जेम्स नदी के मुहाने-स्थित हैम्प्टन रोड्स स्थान के निकट उत्तर के दो छोटे जहाजों को नष्ट कर दिया और वाशिंगटन अथवा न्यूयार्क पर भी आक्रमण के लिए चल दिया। सौभाग्य से उसी समय, न्यूयार्क मे बना, विचित्र आकृतिवाला उत्तर का एक बख्तरबद लडाकू जहाज जो तैरते हुए पनीर के एक डब्बे जैसा लगता था, दक्षिण की तरफ तेजी से ठीक समय पर आ पहुँचा और मेरीमैक पर झपट पडा जिससे उस बहादुर लडाकू जहाज की विजययात्रा असफल रही। उत्तरी जहाजी बेडे ने एक और अच्छा पडाव तब मारा जब अल्बामा नामक दक्षिणी सामूहिक क्रूजर को जो इंग्लैण्ड मे बना था, शैरबर्ग के निकट डुबा दिया। जहाजी बेड़े ने दक्षिण का घेरा डाल कर तथा सागर तटवर्ती महत्वपूर्ण स्थानो पर कब्जा कर लिया और अनेक राष्ट्रो के सामूहिक व्यापारी विध्वसक जहाजों को पकड कर अथवा उन्हें नष्ट करके उत्तर की बडी सेवा की।

मिस्सिसिपी घाटी मे उत्तरी सेनाओं को लगातार विजय पर विजय प्राप्त होती गयी। अपनी धुन के पक्के, सैनिक चालों की बाबत स्पष्ट दृष्टि वाले किन्तु अदूरदर्शी यूलिसिस एस. ग्रान्ट नामक, इलिनोइस राज्यवासी एक व्यक्ति को पश्चिमी सेनाओं का सेनानी बनाया गया था। उसने टेनेसी तथा कम्बरलैण्ड नदियो स्थित फोर्ट हेनरी तथा फोर्ट डोनेल्सन नामक किलो को जीतकर टेनेसी राज्यस्थित विशाल दक्षिणी सेना पक्ति को भंग करना शुरू किया जिसकी वजह से उस राज्य के पश्चिमी भाग का अधिकाश भाग उत्तर के कब्जे मे आ सका। दक्षिणी लोगों को इसी कारण नैशविले नामक महत्वपूर्ण नगर छोड़ देना पड़ा और उत्तरी सेनाओ को टेनेसी राज्य की दक्षिणी सीमा तक, जो दक्षिणी क्षेत्र मे २०० मील तक चली गयी थी, जा पहुँचने का मौका मिला। इस स्थान पर दक्षिणी सैन्य एल्बर्ट सिडनी जान्स्टन तथा साहसी वीर पी. जी. टी. ब्योरे-गार्ड की कमान मे जमा हुई और अप्रैल सन १८६२ मे उन्होने उत्तर की सेनाओ को इस तरह झकझोरा कि सेनापति ग्रान्ट वहाँ से भाग खडे होने की

सोचने लगा। दक्षिणी सेनाओं ने ग्रान्ट की सेना को पिट्सबर्ग लैण्डिग नामक स्थान में जो टेनेसी नदी पर है अव्यवस्थित हालत मे बुरी तरह घर दबाया जब कि प्रवाहपूरित नदी की धारा उनकी पीठ पर थी और उसकी हरावल एकदम असुरक्षित थी। इस आकस्मिक आक्रमण से ग्रान्ट की सेना एकदम घबडा गयी लेकिन इसी समय अकस्मात कुमुक आ पहुँची और उधर दक्षिणी सेनाओ का तेजस्वी सेनानी जनरल जान्स्टन मारा गया। नतीजा यह हुआ कि दक्षिणी सेनाओ को मिस्सिसिपी राज्य के कोरिंथ नामक स्थान तक पीछे हट जाना पड़ा। दोनों ही दलो का शिलोह की लड़ाई मे भारी नुकसान हुआ। उत्तर के तो ६३,००० सैनिको मे से १३,००० सैनिक मारे गये। फिर भी लिंकन ने ग्रान्ट के बारे में कहा, "मै इस आदमी को छोड नही सकता—वह लड़ता है"।

सन १८६३ के वसन्तकाल मे ग्रान्ट की बुरी तरह ठुकीपिटी सेनाएँ दृढ़ किन्तु मन्दगति से दक्षिण की ओर बढ़ी। उनका इरादा तो मिस्सिसिपी राज्य पर पूरी तरह कब्जा करने का था। फरौट द्वारा न्यूआर्लियन्स विजय कर लेने के बाद, इस राज्य के निचले भाग से दक्षिणी सेनाओं को भगा दिया गया था। कुछ समय तक ग्रान्ट का मार्ग विक्सबर्ग मे रोक दिया गया था क्योकि यहॉ के ऊँचे पठारो पर दक्षिणी सैनिको ने मजबूत मोर्चेबन्दी कर रखी थी और जहाजी बेड़ा उस ऊँचाई पर सफलतापूर्वक गोलाबारी न कर पा रहा था। लेकिन ग्रान्ट ने साहसिक चाल का सहारा लेकर अपनी सेनाऍ पहाडी के तले तक पहुँचा दी और विक्सबर्ग का घेरा डाल दिया गया। यह घेरा ६ सप्ताह तक रहा जब कि ४ जुलाई को, दक्षिण की सब से मजबूत पश्चिमी किलेबदी विक्सबर्ग नगर पर उत्तरी सैनिको का अधिकार हो गया। इसी विजय के उपलक्ष्य मे लिंकन ने कहा था, "हमारी महानदी अब निर्बाध होकर समुद्र से भेंट करने जा रही है।" इसके बाद दक्षिण दो हिस्सो मे विभक्त हो गया और नदी के पार टेक्सास तथा अर्कन्सास नामक उपजाऊ प्रदेशो से पूर्व की रियासतो के लिए रसद ला सकना लगभग असम्भव ही हो गया।

लेकिन इसी बीच, वर्जीनिया मे उत्तरी सेनाओ को पराजय के बाद पराजय उठानी पड़ी। उत्तर की राजधानी वाशिंगटन और दक्षिण की राजधानी रिचमण्ड के बीच कुल १०० मील का फासला था। लेकिन दोनो के बीच के प्रदेश मे बहुत-सी नदियो का व्यवधान था और उनके कारण आत्मरक्षा के मजबूत स्थान भी प्राप्त हो गये थे। इसके अलावा दक्षिण के पास राबर्ट एफ. ली तथा टामस जे. (स्टोनवाल) जैक्सन नामक दो ऐसे

सेनानी भी थे जिनका तेजस्वी सैन्यचालन, प्रारंभिक उत्तरी सेनानियो के नेतृत्व से बहुत अधिक बढ़ा चढ़ा था। उन बहुत से अभियानों का, जिनमें उत्तरी सेनाओ को, रिचमण्ड पर कब्जा करने तथा दक्षिणी सेनाओं का नाश करने के प्रयत्नो मे बार बार मुँह की खानी पडी, विस्तारपूर्वक वर्णन करना असम्भव है। सन् १८६२ के प्रारभ मे जार्ज बी. मैकलेन ने यार्क तथा जेम्स नदियो के बीच के अन्तरीप पर समुद्र मार्ग से १० हजार सैनिकों की एक अति सुशिक्षित सेना ला उतारी और ली की अत्यन्त कमजोर फौज के मुकाबले के लिए कूच करके ठीक रिचमण्ड के निकट मे लगातार सात दिन तक घमासान युद्ध किया। वे शहर के इतने पास पहुँच गये थे कि कभी कभी तो उसकी सेनाओं को दक्षिणी राजधानी रिचमण्ड के गिर्जाघरों के घटों की टन टन तक सुनाई पड जाती थी, लेकिन फिर भी उत्तरी सेनाओं को करारा नुकसान उठाकर पीछे ही हटना पडा। गलती पर गलती करने वाला सेनानी जान पोप बुलरन की लडाई मे असफल रहा और वाशिंगटन की ओर खदेड़ दिया गया। उधर उत्तर को खुद अपनी रक्षा के लाले पडे थे। फ्रेडरिक्सबर्ग कस्बे के पिछवाडे की ऊँची टेकरियों पर आक्रमण करते हुए उत्तर का एक और सेनानी बुरी तरह हारा और बुरी तरह अपनी फौजें कटवा कर वहाँ से भाग निकला। इसी तरह एक और उत्तरी सेनापति की सेनाएँ चान्सलर्सविले की खूनी लडाई मे बेतरह पीटी गयीं लेकिन इस युद्ध मे दक्षिणी सेनाओं के सेनापति ली का दाहिना हाथ वीर जैक्सन—जिसका सन् १८६२ का शेनान्दोआ घाटी का साहसिक अभियान जिसमे उसने लगातार कई बार उत्तरी सेनाओं को पराजित किया और वाशिगटन के छक्के छुडा दिये, शायद समग्र युद्ध का सबसे अधिक रोमहर्षक अभियान था—मारा गया। इसी तरह सन् १८६३ की गर्मियो तक दक्षिणी सेनाएँ पूर्व की ओर बराबर सफल होती रहीं।

लेकिन दक्षिणी सेनाओं की इन सब विजयो मे से एक भी निर्णयात्मक नहीं थी। उत्तरी सरकार प्रत्येक हार के बाद नयी फौज भरती करके फिर मैदान मे आ खडी होती थी। जिस तरह उत्तरी सेनाएँ रिचमण्ड पर कब्जा करने मे असमर्थ रहीं उसी तरह दक्षिणी सेनाओं को भी खास सफलता अपने आक्रमणात्मक अभियानों मे नही मिली। अगस्त सन् १८६२ में ली का ख्याल था कि उत्तर पर आक्रमण का अच्छा मौका उसे हाथ लगेगा। लेकिन, पश्चिमी मेरीलैण्ड के अन्टिटम के मैदान मे मैक्लेलन से उसका सामना हुआ जिसने उसकी गति रोक दी और उसे जहाँ का तहाँ खड़े रहने को मजबूर कर दिया। यद्यपि यह

लड़ाई दोनों तरफ से बराबर रही कही जाती है, लेकिन ली इसके बाद पीछे हटा और लिंकन को भी, यद्यपि वह विजय के लिए बेतरह आतुर था, इस अवसर को ही 'छुटकारे की घोषणा' के लिए सफल मानकर उसका ऐलान कर देना पड़ा। इसके बाद अगली गर्मियों मे चान्सलरविले के मैदान मे उत्तरी सेनाओं की करारी हार के बाद ली उत्तर की तरफ बढ़ा और पेसिलवानिया पर चढ़ दौड़ा। उसकी सेना राज्य की राजधानी तक जा पहुँची और बाल्टीमोर तथा फिलाडेल्फिया एकदम भयाक्रान्त हो उठे। लेकिन उत्तरी सेनाओं की अधिक शक्तिशालिनी टुकड़ियो ने गेटिसबर्ग मे उसका रास्ता रोक दिया और यहाँ १ जुलाई से ३ जुलाई तक हुए युद्ध मे ली के ७५,००० वीर सैनिकों ने जार्ज एस. मीड की कमान मे खड़े ८८००० उत्तरी सैनिको को पीछे हटाने की सरतोड़ कोशिश की। अगर उसकी सेना ने, उस समय ही जब कि उत्तरी सेनाएँ केन्द्रित हो रही थीं, विध्वंसात्मक आक्रमण कर दिया होता तो उसे सफलता शायद मिल जाती। लेकिन ऐसा न करने से अन्त में उसे अपने से अधिक संख्यावाली तथा बेहतर मुहिम पर तैनात फौज का मुकाबला करना पड़ा। इस लड़ाई में आखिरी दिन भयकर गोलाबारी के बावजूद पिकेट का शौर्यपूर्ण आक्रमण युद्ध के श्रेष्ठतम साहसिक आक्रमणो मे गिना जायगा। लेकिन यह आक्रमण असफल रहा और अगले दिन ली के वृद्ध योद्धाओ को, उन हानियों के कारण जिन्होंने उन्हे स्थायी रूप से पंगु कर दिया था, दिल मसोस कर पोटोमक तक पीछे हट आना पड़ा और यह स्पष्ट रूप से समझा जाने लगा कि गेटिसबर्ग की उत्कृष्टतम सफलता ही दक्षिण की आशाओ की उच्चतम सीमा रहेगी।

उस समय ग्रान्ट की सेनाएँ विक्सबर्ग पर कब्जा करने मे लगी हुई थी। दक्षिणी सागरविला का घेरा तब तक ऐसा फौलादी घेरा बन चुका था जिसे तोड़ कर शायद ही कोई जहाज भीतर आ सकता। दक्षिण की फैक्टरियो मे मशीनो और सामान की कमी होने लगी और उसकी रेल-पटरियाँ नष्ट होने लगी, उसके साधन स्रोत समाप्तप्राय हो चले। इसके विपरीत उत्तरी राज्य पहले से ज्यादा समृद्धिशाली दिखाई पड़ने लगे। उनकी मिले और कारखाने पूरी तेजी के साथ चल रहे थे, उनके खेत-खलिहान भरीपूरी फसलो का योरोप को निर्यात करते थे और युद्ध मे नष्ट होती हुई उनकी मानवशक्ति, बाहर से आकर बसने वाले व्यक्तियो द्वारा पूरी होती जा रही थी।

दक्षिण पूर्व के टेनेसी राज्य मे भी मिस्सिसिपी घाटी अभियान के अन्तिम

आक्रमण का परिणाम दक्षिणी सेनाओं के विरुद्ध ही रहा। दक्षिण के लिए इस क्षेत्र के चट्टानूगा नामक स्थान रेलवे स्टेशन का महत्त्व रिचमण्ड तथा विक्सबर्ग से कुछ ही कम था। दक्षिण पश्चिम, दक्षिण पूर्व की ओर जानेवाली सभी रेलों का यह केन्द्रस्थल था तथा उसकी स्थिति ऐसी थी कि ग्रेट स्मोकी पर्वत श्रेणी के आसपास पड़ी उत्तर सेनाओं को दूर दक्षिण की तरफ जाने से वह रोकता था। दक्षिण जाने का वह द्वार था। डब्लू. एस. रोजक्रान्स की कमान में एक उत्तरी सेना सन् १८६३ के सितम्बर मास के प्रारम्भ में वहाँ जा पहुँची जहाँ उसका सामना ब्रैक्सटन ब्रैग नामक एक दूसरे दर्जे के सेनानायक के नेतृत्व में एकत्रित एक बहुत बड़ी दक्षिणी सेना से हुआ। चिकामुगा की भयंकर लड़ाई में ब्रैग की विजय लगभग निश्चित-सी हो चुकी थी कि इसी समय जनरल जार्ज एच. टामस नामक एक वर्जीनियावासी ने जो उत्तर का साथ दे रहा था, उसमें अवरोध पैदा कर दिया और ब्रैग को लेने के देने पड़ गये। अयोग्य सेनानी रोजक्रान्स अपनी सेनासहित चट्टानूगा में घिर रह गया। तब ग्राण्ट को उसे छुड़ाने के लिए भेजा गया। नवम्बर के महीने में शर्मन तथा टामस की उपयुक्त सहायता से ग्राण्ट ने अप्रतिहत आक्रमण कर के दक्षिणी सेनाओं को मिशनरी रिज से मार भगाया। इस प्रकार उत्तरी सेनाओं की स्थिति इतनी मजबूत हो गयी कि बाद में वे जार्जिया के उस अभियान के लिए समर्थ हो सकीं जिसे शर्मन ने विजयोल्लासपूर्वक पूरा किया। टेनेसी में दक्षिण की एक टुकड़ी ने जो हुड की कमान में थी फ्रैंकलिन में उत्तरी सेना के साथ भयंकर लड़ाई लड़ी और दोनों ही सेनाएँ टक्कर के जोड़ की रहीं। फिर भी इस सेना को १८६४ के दिसम्बर मास में टामस ने नैशविले की लड़ाई में बिल्कुल समाप्त कर दिया। उसका यह आक्रमण युद्ध का सब से भयंकर प्रहार कहा जा सकता है।

दक्षिण के लिए यह बहुत अच्छा मौका था अगर वह अपनी भावी पराजय की सम्भावना से चिन्तित होकर उसे स्वीकार करके उदारहृदय लिंकन से सन्धि करने की कोशिश करता। लेकिन आपसी भावनाएँ इतनी कटु हो चुकी थीं कि ऐसा होना मुश्किल था। दक्षिण इसीलिए तब तक लड़ता चला गया जब तक कि विरोध करना असम्भव न हो गया। १८६३ में उसे फ्रान्स अथवा ब्रिटेन द्वारा बीचबचाव कराये जाने की आशा भी न रही। दूसरी ओर उत्तरी सरकार को कूटनीतिक क्षेत्र में बहुत बड़ी सुविधाएँ प्राप्त थीं और उनका उसने दक्षतापूर्वक उपयोग भी किया। गेटिसबर्ग की विजय के बाद तो स्थिति ऐसी हो गयी कि यूरोपीय देशों का कोई भी राजदूत हारने वाले दक्षिणी सब राज्यों का

साथ देने को तैयार न होता था। इसके अलावा १८६३ में लिंकन 'मुक्ति घोषणा' का एलान कर चुका था जिसके द्वारा उसने गुलामी की प्रथा का अन्त करना भी युद्ध का मुख्य उद्देश्य घोषित किया था। इसीलिए ब्रिटेन की अधिकाश जनता की सहानुभूति उसके साथ हो गयी थी। उत्तर घेरे के कारण रूई की आशा से वंचित होकर भी लंकाशायर के गरीब श्रमिक लोगों ने दृढ़तापूर्वक उत्तर का साथ देकर इस बात का पक्का सबूत पेश किया कि ब्रिटेन के लोग सिद्धान्तों के कितने पक्के होते हैं।

सन् १८६४ के प्रारम के दिनों मे ग्राण्ट को पूर्व की ओर भेजा गया और उसे उत्तरी सेनाओ का सेनापति नियुक्त किया गया। एक के बाद एक कई युद्धों मे उसने ली की सेना को लगातार हराया और धीरे-धीरे वह दक्षिण की प्रधान सेना की ओर बढता चला गया। इसी बीच मई १८६४ मे जनरल शर्मन ने जार्जिया पर अधिकार करने के लिए अभियान की तैयारियॉ शुरू की। सितंबर के शुरू मे अटलाण्टा पर अधिकार करके वह समुद्र की ओर बढ़ा और मार्ग के सभी स्टोरो, रेलो तथा उन अन्य सैनिक महत्व के स्थलो व रसद साधनों को, जो ६० मील लम्बे उस क्षेत्र मे उनके सामने आये, नष्टभ्रष्ट करता हुआ आगे बढता गया। दिसम्बर मे वह सावानाह जा पहुँचा और उसे जीत कर उसने राष्ट्र को बडे दिन का उपहार प्रस्तुत किया। अब उसने उत्तर की ओर मुंह किया और कोलम्बिया जीत कर शार्लेटन को अपनी वीरता स्वीकार करने के लिये मजबूर किया। उसी साल पतझड की ऋतु मे घुडसवार सेना के नायक वीर फिल शेरिडन ने शेनान्दोआ घाटी की फसल को इस बुरी तरह तहसनहस कर डाला कि 'उस घाटी पर से उड़ कर जाते समय कौओ तक को अपना चुगा अपने साथ ले जाने की जरूरत पड़ने लगी'। अन्तोगत्वा ली को रिचमण्ड छोड़कर भागना पड़ा और ९ अप्रेल १८६५ को अपोमेटोक्स स्थान पर उसकी सेनाओं ने आत्मसमर्पण कर दिया।

अन्तःकलह : भयानक सघर्ष के इन दिनों मे दक्षिण तथा उत्तर की जनता मे भीतर ही भीतर चलने वाले अन्तःकलहो के बारे मे भी बहुत कुछ कहा जा सकता है। दोनो ही पक्ष की सरकारो ने कुशल शासन का रत्ती भर भी परिचय नही दिया। सेनाओं मे गलतियोभरे तथा अन्यायपूर्ण कायदे अमल मे आते थे। बलात् सैनिक सेवा के कानून बनाये गये थे, लेकिन वे न्याययुक्त तथा गणतान्त्रिक रूप मे तैयार नहीं किये गये थे। उत्तर मे, जहाँ

लोगो को पैसा देकर अपना एवजी प्रस्तुत करने का अधिकार था, इन कानूनों के कारण क्रोधपूर्ण दगे भी हुए। दोनों ही पक्ष आन्तरिक राजनीतिक कलह-पूर्ण सघर्षों के कारण परेशान थे। रिपब्लिकी दल के "तुग्रेल" लोग—जिनके नेता पेसिलवानिया के थैडियस स्टीवन्स, ओहियो के बेनवेड तथा मसा-चुसेट्स के चार्ल्स समनर थे—लिकन पर यह कहकर फब्तियॉ कसते रहते थे कि वह युद्ध मे बेहद कमजोरी से काम ले रहा है तथा लुइसियाना आदि जीते हुए राज्यो के पुनर्गठन मे अधिक उत्सुकता से काम ले रहा है। दक्षिण मे भी जार्जिया के जोसेफ ई. ब्राउन तथा नार्थ करोलिना के जेबुलन वास जैसे गवर्नर राज्यीय अधिकारों के विषय मे अडियल होकर रिचमण्ड के अधिकारियों की नाक मे दम किये रहते थे। फौजी लोगों की नियुक्ति के बारे मे भी दोनों दलों मे, खास तौर पर उत्तरीय दल मे, राजनीतिक भावनाओं का दुर्भाग्यपूर्ण बोलबाला काफी था। राजनीतिक दल बेजामिन बटलर तथा एम्ब्रोज बर्नसाइड जैसे अयोग्य व्यक्तियो को आगे बढ़ाने तथा टामस जैसे योग्य और बहादुर नेताओ को पीछे धकेलने की कोशिश किया करते थे। दोनों ही तरफ झगडो की सख्या काफी बडी थी जिसके परिणामस्वरूप अन्त मे दक्षिणी सेनाओ के पॉव ही उखड गये थे।

उत्तर के लोगों ने दक्षिणी शासन पर रिचमण्ड के लिब्बी कारागार तथा जार्जिया के एण्डरसनविले आदि कारागारों मे भयंकर अत्याचार करने के आरोप लगाये। लेकिन उत्तर के कारागार भी गैरकानूनी कार्रवाइयों में कम न थे। सभी जगह आपाधापी, तरफदारी, छलफरेब और भ्रष्टाचार का बोलाबाला था। वाशिग्टन बेईमान ठेकेदारों, सट्टेबाजों तथा अन्य निहित स्वार्थी लोगों का अड्डा बन गया था। इसी तरह दक्षिणी सटोरिये आदि हारती पाली के बल पर रुपया बनाने की तरकीबे लड़ाया करते थे। कागजी नोटों के दाम दक्षिण मे बेहद घट गये थे और बाजारी चीजों के भाव आकाश छू रहे थे जिससे बहुसख्यक मेहनतकश लोगो के लिये बरबादी तक की नौबत आ गयी थी। उत्तर मे भी मुद्रास्फीति इतनी बढ़ गयी थी कि लोग उसके बल पर बेहिसाब जुएबाजी करने और खतरेभरे व्यवसाय करके रुपया बनाने लगे थे। इसीलिए वहॉ निर्लज्ज लखपतियों की बाढ़-सी आ गयी थी। समग्र रूप से देखा जाय तो, चारों ओर युद्ध की एक दुर्भावनापूर्ण तसवीर ही देखने को मिलती थी; लेकिन उसके दौरान मे वीरता, शूरता तथा श्रद्धापूर्ण अनुरक्ति, परोपकारपूर्ण प्रयत्न तथा देश ~ त्याग के उदाहरण भी अनगिनत देखने को मिलते हैं।

राबर्ट ई. ली तथा अब्राहम लिंकन : युद्ध के कारण दक्षिणी राज्यो को राबर्ट ई. ली जैसा शूरवीर मिला जो सेनापतियों मे सबसे अधिक उदात्त वीर कहा जा सकता है। उसका तेजस्वी नेतृत्व, उसकी अनवरत सेवा-भावना, युद्ध के दौरान मे भी उसकी मानवीय भावना तथा पराजय मे उसका महान औदार्य, जिसके कारण उसने दक्षिण के लोगों से अपने भूतपूर्व शत्रुओ के साथ सच्ची भागीदारी का व्यवहार करने का अनुरोध किया था, सदा प्रशंसनीय रहेगा। उसके दोष भी उसके गुणों के ही परिणाम थे। वह इस हद तक सज्जन तथा दूसरो का ख्याल रखनेवाला था कि अपने जिद्दी अनुयायियो को अपनी इच्छानुसार चलाने के लिए वह अपने को असमर्थ पाता था। फौजी पैतरेबाजी की अपेक्षा वह व्यूहरचना का अधिक विशेषज्ञ था। विरोधियो की योजनाओ को पहले से ही समझ लेने मे भी वह दक्ष था और फौजी सवादो का सदुपयोग करने मे अत्यन्त पटु। फौजी टुकड़ियों की सख्या तथा स्थिति के विषय मे उसका अन्दाज अत्यन्त विचक्षण हुआ करता था। अपनी सगठनशक्ति, विगतो के प्रति पूर्ण जागरूकता, अपने सैनिको के प्रति सहृदय भावना, अपरिमित साहस तथा स्वय अपने आकर्षक व्यक्तित्व के कारण वह अपनी सेना के जवानो का पूर्ण श्रद्धापात्र बन गया था। वाशिंग्टन के समान ही उसमे इतना आत्म-नियंत्रण था कि वह कभी आपे से बाहर न होता था, अगर होता भी था तो बहुत थोडी देर के लिए ही। यह सत्पुरुष हारजीत, विग्रह और शान्ति आदि सभी काल मे महान ही बना रहता था। युद्ध की समाप्ति के बाद वह सिर्फ ५ साल जिन्दा रहा। इस काल में उसने अपना सारा समय आर्थिक, सास्कृतिक तथा राजनीतिक क्षेत्रों मे दक्षिण का पुनर्गठन करने मे ही लगाया।

इसी प्रकार युद्ध के ही कारण उत्तर को भी ली से कहीं महान् अब्राहम लिंकन नामक नेता मिला। ऊपर से उज्जड़ देहाती लेकिन सीधे-सादे, और अर्धशिक्षित से दिखाई पडनेवाले इस पश्चिम देशीय वकील के समग्र रूप का अन्दाजा, शुरू के कुछ महीनों तक बहुत कम लोग ही लगा पाते थे। उसका द्वितीय युद्ध सचिव एडविन एम. स्टैण्टन भी कुछ दिनों तक उसे 'गोरिल्ला' कहा करता था, यद्यपि बाद मे वह उसे सर्वकालीन महापुरुषी नेताओं मे सर्वश्रेष्ठ कहने लगा था। उसके विरोधी पत्रकार भी पहले उसे अकर्मण्य कहा करते थे। लेकिन धीरे-धीरे राष्ट्र ने उसकी गभीर दूरदर्शिता को, जो सावधान अध्ययन तथा गहरी विचारशीलता पर आधारित थी तथा उसकी सत्यनिष्ठा, अटूट धैर्य और असीम हार्दिक उदारता की थाह पाना शुरू

किया और अन्त मे उसके सच्चे रूप को पहचाना। कभी-कभी यद्यपि वह हिचकता अथवा ढुलमुल होता दिखाई पड़ता था लेकिन आगे चलकर समय ने यह साबित कर दिखाया कि वह राष्ट्रीय लाभ के अवसरो की प्रतीक्षा करना तथा शक्ति के साथ चातुर्य का समन्वय करना जानता था। अमरीकी जनता से अच्छी तरह परिचित होने के कारण वह यह अच्छी तरह जानता था कि जनभावना को अपनी ओर झुकाने के लिए कब तक प्रतीक्षा करनी होगी और कब साहसपूर्वक आगे बढ़ना होगा। वह नेताओ मे सबसे ज्यादा ईमानदार नेता था। दक्ष राजनीतिज्ञ होते हुए भी वह कभी हीन व निम्न तरीको से काम नही लेता था। वह मतदाताओं की अज्ञानता का लाभ न उठाकर सदा उनकी समझदारी पर ही निर्भर रहना पसन्द करता था। कर्म और विचार मे वह इतना उदार था कि युद्ध की इतनी लम्बी और व्यथामयी अवधि मे उसने कभी भी दक्षिण के लोगों के लिए द्वेषपूर्ण शब्द नहीं कहे, बल्कि वह तो पूरे देश को एक करके एक ऐसा सयुक्तराष्ट्र बनाना चाहता था जो जबरदस्ती सयुक्त न किया गया हो बल्कि एक दूसरे के दिलो को मिलाकर बनाया गया हो। युद्ध के आखिरी दिनों मे जब उत्तरी सेनाएँ जीत पर जीत प्राप्त करती जा रही थी दक्षिण के विजित निवासियों के गुलामो की स्वतन्त्रता के लिए वह उन्हें अच्छा मुआवजा भी देने को प्रस्तुत था। विदेशी नीति के मामले मे वह सदा प्रतिष्ठा, एकनिष्ठा तथा स्थैर्य और दृढ़ता से काम लेता था। यद्यपि उसे अभूतपूर्व शक्ति और अधिकार प्राप्त थे और उनका वह उपयोग भी करता था लेकिन लोकतान्त्रिक स्वशासन मे उसका दृढ विश्वास था और जनता की श्रद्धा और भावना को कैसे जाग्रत किया जा सकता है यह उसे अच्छी तरह ज्ञात था। इसीलिए अन्ततोगत्वा जब वह जार की तरह सर्वाधिकारों का उपयोग करने लगा था तब भी जनता उसपर अटूट श्रद्धा रखती थी। ज्यों ज्यो वाग्मिता की उसे जरूरत होती गयी त्यों त्यो उसकी वक्तृत्व शक्ति भी बढ़ती गयी यहाँ तक कि गेटिसबर्ग में दिया गया उसका व्याख्यान, द्वितीय उद्घाटन भाषण तथा उसके कुछ पत्र अंग्रेजी के श्रेष्ठतम गद्य साहित्य में गिने जाने लगे थे। अपोमेटोक्स की घटना के बाद सप्ताह भर भी पूरा न हो पाया था कि १४ अप्रैल १८६५ को उसकी हत्या के समाचार ने राष्ट्र को भारी धक्का पहुँचाया और विजयी तथा विजित दोनो के लिए ही वह एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना साबित हुई। श्री जेम्स रसेल लावेल ने ठीक ही लिखा कि इस स्तम्भित रख देने वाले अप्रैल के प्रभात के पहले इतने विशाल जनसमूह ने शायद ही कभी उस व्यक्ति के

गृहयुद्ध

संघीय शक्ति के पीछे हटने की रेखाएँ, युद्ध-क्षेत्र और संघ द्वारा दक्षिण की घेरेबंदी
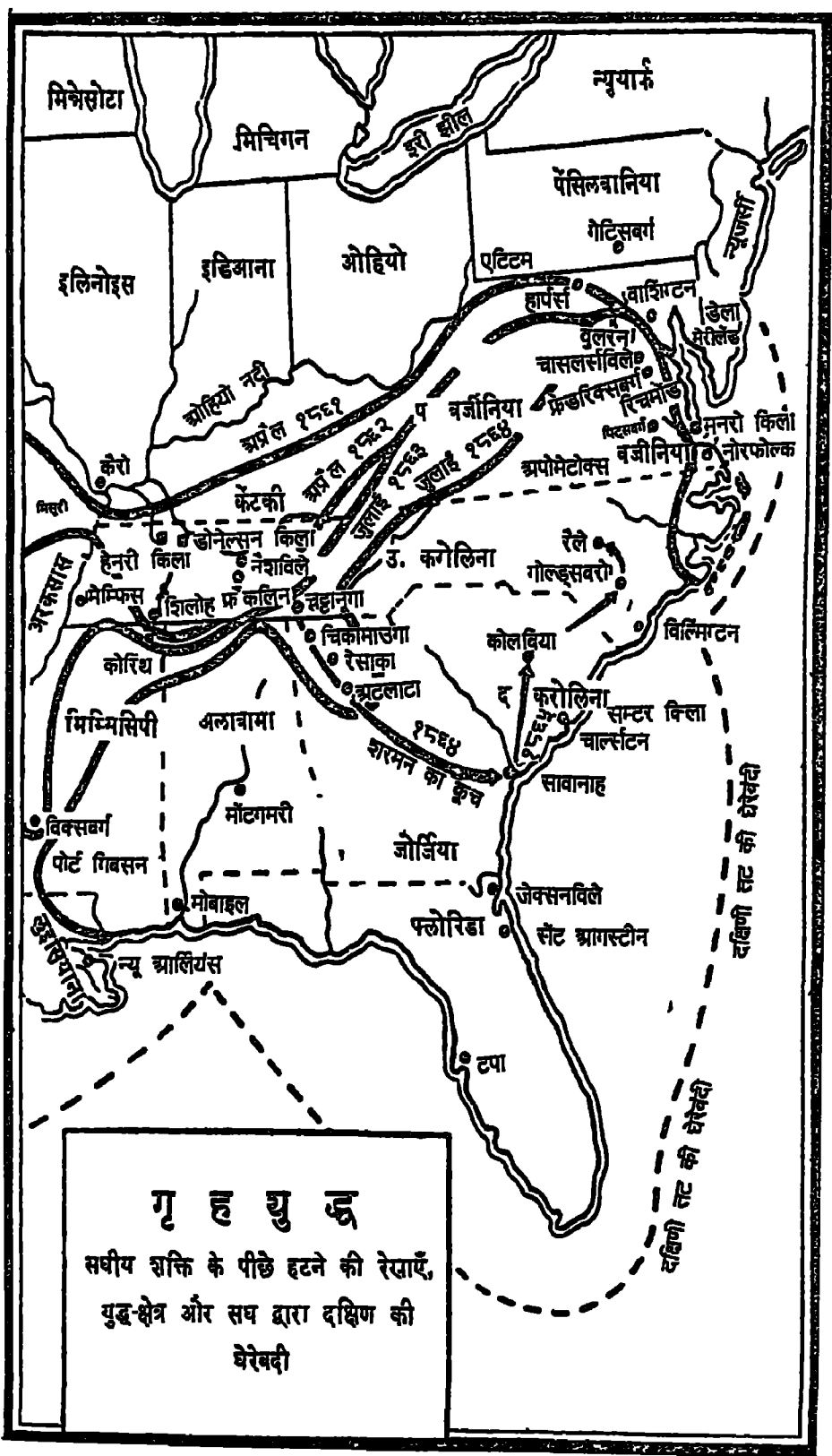
लिए आसू बहाये होंगे जिसे उन्होंने कभी देखा भी न होगा। ऐसा लगता मानो उनके ही परिवार का कोई सगा चला बसा हो और उन्हे अन्धेरे मे ठोकरें खाने और जीवन की निर्दयता से जूझने के लिए छोड गया हो। इसके पहले कभी भी किसी की शव-यात्रा मे इतना मर्मान्तक विलाप न था जो अजनवी चेहरो पर बिखरी मूक सहानुभूति से झलक उठा था। मानों उस सर्वव्यापी मानवता का एक परिजन खो गया था।

युद्ध की विरासत : एण्डू जान्सन जैसे अनुभवहीन और कलहप्रिय नेता के नेतृत्व मे राष्ट्र को पुनर्गठन तथा पुनर्निर्माण जैसी थका देनेवाली समस्याओं का सामना करना पडा। लिंकन की हत्या के बाद, जब कि चारों ओर से बदला लेने की मॉग की जाने लगी, ये समस्याएँ और भी जटिल हो गयीं थी। स्वार्थ-पूर्ण राजनीतिक तथा आर्थिक भावनाओ—यानी रिपब्लिकन दल की परिस्थितियों से लाभ उठाकर अपनी शक्ति चिरस्थायिनी बनाने की भावना तथा स्वार्थी व्यापारी गुटो की इन परिस्थितियों को अपने हितानुकूल बनाने की इच्छा—के कारण ये समस्याएँ और भी उलझ गयी। वे बडे उद्योगपति जो भारी तटकर लगवाना चाहते थे, वे साहूकार जो अपने कर्ज की अदायगी सोने मे चाहते थे तथा रेल-पटरी बिछाने वाले ठेकेदार जो भूमि का अनुदान चाहते थे, सभी रिपब्लिकन शासन के अनुयायी बनकर उसका समर्थन करने लगे।

भले और बुरे दोनो ही तरह के परिणाम देश को युद्ध की विरासत में मिले। यद्यपि युद्ध के कारण गणतंत्र बच गया और उसे एक अक्षयरूप प्राप्त हुआ लेकिन युद्ध के बाद का गणतत्र वह गणतत्र न था जिसका निर्माण राष्ट्रपिताओ ने किया था। नये गणतत्र ने दासप्रथा का सदा के लिए अन्त कर दिया था लेकिन यह अन्त हिसा तथा बल प्रयोग के आधार पर किया गया था और इस बात का तनिक भी विचार नही किया गया था कि दासता से उन्मुक्त लोगों की भलाई किस बात मे है तथा जिस समाज मे उन्हें रहना है उसका कल्याण कैसे होगा अथवा जिस अर्थव्यवस्था से उन्हे वास्ता पडेगा उसमे उनकी स्थिति कैसी रहेगी। दक्षिण में रईसी शासक वर्ग को पराजित व नष्ट कर दिया गया था लेकिन उसकी जगह राजनीतिक नेतृत्व सम्हालने वाला कोई अन्य वर्ग वहाँ नही था, इसी कारण दक्षिण मे स्वाभाविक नेताओ का एक पीढी तक अभाव ही रहा। लिकन ने बारबार जनता से अनुरोध किया था कि वह अपने हित के लिए जनता की ही सरकार स्थापित

करे, लेकिन कोई भी निष्पक्ष दर्शक नतीजा निकाल सकता था कि युद्ध के द्वारा लोकतान्त्रिक शासन को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से कोई भी लाभ नही पहुँचा था।

लडाई की वजह से दक्षिण और उत्तर के बीच परस्पर घृणा की भावना उत्पन्न हुई। वह कई दशको तक चलती रही हालाकि लिंकन इस भावना को ही मिटाना चाहता था। इस भावना के कारण बहुत से लोग आपस मे, खास तौर पर राजनीतिक क्षेत्र मे, परस्पर असहिष्णु बन गये। उत्तर के बहुतेरे रिपब्लिकन दली मत पाने के लिए अक्सर "खून से सनी कमीज" का प्रदर्शन किया करते थे यानी वे दक्षिण के डेमोक्रेट लोगो के विरुद्ध वर्तमान जन-दुराग्रह से लाभ उठाया करते थे। इसके विपरीत विरोधी दल के लोगो ने डेमोक्रेट झंडे तले एकत्र होकर 'सुगठित दक्षिण दल' का रूप धारण कर लिया। इस तरह की गहरी दलबन्दी वास्तव मे बडी दुर्भाग्यपूर्ण थी। लडाई खत्म होने के बीस साल बाद जाकर कहीं डेमोक्रेट दल अमरीकी काग्रेस व्हाइट हाउस मे प्रवेश पा सका और ५० वर्ष बाद दक्षिणी राज्यो मे उत्पन्न एक व्यक्ति वुडरो विल्सन राष्ट्राध्यक्ष बन सका। लडाई की वजह से उत्तर मे युद्ध के पुराने सैनिको का ऐसा दल उत्पन्न हो गया था जिसके हाथ मे वोटो की अपरिमित शक्ति थी। इस दल के लोगो ने सरकार से पेशनो की मॉग करनी शुरू कर दी और खुशामदी राजनीतिक नेता सार्वजनिक धन बडी निर्लज्जता व बेपरवाही के साथ उन्हे लुटाने लगे। देश की सामाजिक स्थिति पर भी इस सघर्ष का बुरा प्रभाव पडा। इसके कारण इस किस्म के लोग उभर आये जो पैसे और अधिकारों के भूखे थे तथा जिनकी रुचि भोंडी थी और जो बुरे से बुरा काम भी बेहिचक कर सकते थे। निस्सन्देह अमरीकी जनता का अधिकाश भाग उस समय भी बडा मेहनती, कर्तव्यनिष्ठ तथा देशभक्त था लेकिन पहले की अपेक्षा तब, एक अवसर परस्त, पैसे को दात से पकडने वाला लोभी तबका विशेष रूप से परिलक्षित होने लगा था।

दक्षिण का पुनर्निर्माण : दक्षिण की पराजय के बाद अब उसका पुन-र्निर्माण जरूरी हो गया और इस काम मे एक दर्जन बरस लग गये यानी १८६५ से १८७७ तक यह काम चला। लिंकन अगर जिन्दा रहा होता तो वह जरूर दक्षिण के लोगों के साथ उदारता का व्यवहार करने पर जोर देता और मुमकिन था कि वह अपने इस दृष्टिकोण के समर्थन मे काग्रेस के बहुमत को झुका लेता।

लेकिन एण्ड्रू जान्सन, जिसके विचार भी इस बारे में अजीब तरह के थे, स्वय बडा जल्दबाज, सूझबूझहीन और बदमिजाज था। वह 'फ्रीमैन्स ब्यूरोज' के जरिये नीग्रो लोगों को सहायता देने तथा सिविल राइट्स एक्ट के द्वारा उन्हें सरक्षण देने सम्बन्धी ऐसे दो बिलों के सिलसिले मे, जिनके द्वारा दक्षिणी राज्यो की अधिकार सीमा का अवैधानिक अतिक्रमण होता था, काग्रेस से लड बैठा और चूकि उसने उस दल के कट्टरपथी अथवा उग्र नेताओं की चालबाजियो के आगे सिर झुकाया और बदनामी मोल ली इसलिए वस्तुस्थिति पर उसका कोई काबू न रहा। दरअसल उसका पद ही उसके हाथ से छिनते छिनते रह गया। काग्रेस ने उसके वीटो करने के अधिकार के बावजूद एक कानून पास किया जिसके जरिये उसे मनाही की गयी थी कि वह काग्रेस की बिना मजूरी के किन्हीं खास-खास पदों पर काम करने वाले लोगो को बर्खास्त न कर सके। उसने अपने धोखेबाज युद्धसचिव स्टैन्टन को बर्खास्त कर इस कानून को अदालत मे चुनौती देनी चाही। इस पर सन १८१८ की फरवरी मास मे रेडिकल दल के लोगों ने उस पर 'उच्चकोटि के अपराध और दुराचरण' के आरोप लगाकर सीनेट के सामने उस पर मुकदमा चलाया और अगर एक वोट कम न रह जाता तो वे उसे ह्वाइट हाउस से निकाल बाहर करने में सफल हो गये होते। इसी बीच सन् १८६६ मे काग्रेस के चुनावों में सफल हो जाने के कारण रेडिकल लोगो ने पुनर्निर्माण के काम का जिम्मा अपने हाथो मे लिया और दक्षिण के लोगों को ऐसी पुनर्गठन योजना स्वीकार करने के लिए बाध्य कर दिया जो जितनी अपमानजनक थी उतनी ही दुर्बुद्धिपूर्ण थी।

बदला लेने की भावना से भरे पेंसिलवानियानिवासी थाडियस स्टीवेन्स, मसाचुसेट्स के स्वार्थान्ध चार्ल्स सम्नर, तथा अन्य रेडिकल नेताओं द्वारा कठोरतापूर्वक चलायी जानेवाली इस पुनर्निर्माण योजना के तीन मुख्य अंग थे। पहला यह कि सारा दक्षिण प्रदेश फौजी नियत्रण मे रख दिया जाये और उसे पाच जिलो मे विभक्त करके पाच जनरलों के, जिनकी सहायता के लिए फौजें भी दी गयी थीं, अधिकार मे ये जिले रखे जाय। दूसरा यह कि दक्षिण के गोरे लोगों को न केवल उस चौदहवें सशोधन को ही जिसके अनुसार रोजमर्रा के रोजगार के सबध मे निग्रो लोगो को गोरे लोगो के बराबर अधिकारो का आश्वासन दिया गया था, मजूर करने के लिए मजबूर किया गया बल्कि पन्द्रहवें सशोधन को भी स्वीकार करने के लिए कहा गया जिसके अनुसार इन सभी काले लोगों को जो प्रायः निरक्षर और लगभग एकदम ही कोरे थे मत-

दान का अधिकार दिया गया था। ऐसे हाल के गुलाम लोगो को भी जिनके दादा-परदादा शायद अफ्रीका के जगली रहे हों और जो खुद छपे हुए अक्षरों की पंक्ति भी नही पढ़ सकते थे तथा जिनकी सारी जिन्दगी कपास के खेतों मे बीती थी, सार्वजनिक अफसरों के चुनाव मे राय देने का और कानून बनाने का पूरा अधिकार दे दिया गया था। तीसरी बात यह थी कि इन काले मतदाताओं, गरीब गोरो और उत्तरी राज्यो से रुपया बनाने की फिराक मे आये हुए सटोरियो (कारपेट बैगर्स) का एक शृंखलित उपयोग करके दक्षिण मे नये प्रकार की राज्य सरकारे खडी करने का प्रयत्न किया गया था।

हब्शियों और 'कारपेट बैगर्स' की इस तरह की सरकार किसी भी आग्ल भाषाभाषी देश मे पहले कभी भी स्थापित हुई बुरी से बुरी सरकार से भी समवतः गयी बीती थी। कुछ काल तक तो कई राज्य परिषदो पर काले लोगों का ही नियन्त्रण रहा, वे ही कॉग्रेस के लिए सदस्यों को चुनते थे और छोटे मोटे राजकीय पदो पर भी आसीन होते रहते थे। 'कारपेट बैगर्स' ही ज्यादा-तर अपनी मनमानी कर पाते थे। यह सही है कि इन पुनर्निर्माण करनेवाली सरकारों ने कुछ मूल्यवान काम भी किये, यानी कुछ सडके बनवायीं, पुल बनवाये तथा शिक्षा और दान-सबधी अनेक अच्छे कानून भी पास कराये लेकिन समग्र रूप से देखने पर ये सरकारे अयोग्य, फिजूलखर्च और भ्रष्ट थी। वे बाल्टियॉ भर रुपया उलीचती और बर्बाद करती थी और उनकी कमी पूरी करने के लिए ऐसे कर लगाती थी जिन्हे धन-विरहित गरीब गोरे बिल्कुल बर्दाश्त नही कर सकते थे। इस प्रकार दक्षिण कुछ काल तक निराशा के सागर मे गोते खाता रहा।

लेकिन यह निराश बहुत दिनो तक नहीं चली। धीरे धीरे करके उस क्षेत्र के प्रतिष्ठावान् गोरो ने अपने ऊपर शासन करने का अधिकार स्वयं फिर प्राप्त कर लिया। कुछ अधिकार तो उन्होंने हिसा और धमकी के जरिये भी प्राप्त किया। उन्होंने कूक्लसक्लैन की स्थापना की जिसने बहुत से 'कारपेट बैगर्स' को उत्तर की ओर रवाना होने के लिए मजबूर कर दिया और हब्शियों को इतना डराया कि वे मतदान स्थानों से दूर भागने लगे। लेकिन उन लोगों ने अधिकाशतः यह काम पुरानी राजनीतिक मशीनरी को शातिपूर्ण तरीकों से चलाकर किया। बहुत से काले लोग भी उत्तर के चालाक राजनीतिज्ञों के हाथ की कठपुतली बने रहने से तग आ गये थे और उन्होंने मत देना ही बन्द कर दिया था। कुछ लोग अपने पुराने गोरे नेताओ के

अनुयायी भी बन गये थे। डेमोक्रेटिक पार्टी का अधिकार एक राज्य के बाद दूसरे राज्य पर फिर से होता चला गया यहाँ तक कि सन् १८७६ में लुइसियाना, फ्लोरिडा और दक्षिणी करोलिना के सिर्फ तीन राज्य ही "काले और भूरे" रिपब्लिकन दल के हाथ में रह गये और इन तीन राज्यों में भी नीग्रो और 'कारपेट बैगर्स' का अधिकार केवल सघीय सेनाओ के बल पर ही कायम रखा गया था। १८७६ के चुनाव ने, जो अमरीकी इतिहास का सबसे अधिक सघर्षपूर्ण और सघर्पभरा चुनाव था, यह स्पष्ट कर दिया कि दक्षिण के लोग तब तक शाति स्थापित न होने देगे जब तक फौजें वहाँ से न हटा ली जायें। अगले वर्ष राष्ट्राध्यक्ष रदरफोर्ड बी. हैज ने इसीलिए उन्हें वहाँ से हटा दिया और ऐसा करके रिपब्लिकन नेताओं ने यह स्वीकार कर लिया कि उनकी कट्टरपथी पुनर्निर्माण नीति असफल हुई है। दर असल यह नीति प्रधानतः दो कारणों से अख्तियार की गयी थी। पहला कारण तो यह था कि दल का आदर्शवादी पक्ष हब्शियो की रक्षा करना चाहता था और दूसरा यह कि दल का भौतिकवादी पक्ष दक्षिण पर वहाँ के वोटो, पदो और अधिकारों के लिए कब्जा बनाये रखना चाहता था। इस नीति का परिणाम यह हुआ कि नीग्रो लोगों की उन्नति रुक गयी और उनकी हालत बिगड गयी और साथ ही दक्षिण के सब राज्य डेमोक्रेटिक पार्टी के हाथ मे चले गये।

जब हम सन् १८५० से लेकर सन् १८७७ तक के नागरिक सघर्ष और विग्रह के इस काल पर दृष्टिपात करते हैं तो वह एकदम विशुद्ध दुःखान्त घटना सा मालूम होता है। जैसी कि लिंकन की बहुत दिनों तक इच्छा थी कि दास-प्रथा का अन्त धीरे-धीरे होता और दास-मालिकों को उचित मुआवजा देने के बाद होता तो शायद देश की दशा बहुत कुछ सुखद बनी रहती। ऐसा करने पर नीग्रो लोगों को समाज मे अपना नया स्थान बनाने के लिए प्रशिक्षित होने का मौका मिल जाता। साथ ही राष्ट्र के लिए वे छः लाख शक्तिशाली नौजवान जिन्होंने (तीन करोड दस लाख की आबादी मे से) इस युद्ध मे अपनी जान होम दी तथा वे दस लाख बच्चे भी जो उनसे पैदा होते, बचे रहते। दक्षिण के राज्य भी उस भयकर विनाश से, जिसने उसे आज तक पगु कर रखा, बच जाते। इसके अतिरिक्त दोनो पक्ष ही उस वहशीपन के प्रभाव से जो स्पष्ट रूप से युद्धोत्तरकालीन भोंडेपन और रुपये की लूटखसोट के युग मे परिलक्षित हुए बच गये होते।

लेकिन, ऊपर गिनायी गयी बातों के अतिरिक्त कुछ अच्छे परिणाम भी युद्ध के बाद देखने मे आये। युद्ध के इस अन्धड ने राष्ट्र को एक ऐसी सुसघटित

इकाई मे गूथ दिया जो शायद् किसी धीमी प्रक्रिया द्वारा कभी सभव न होता। सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से दक्षिण अब उत्तर के काफी अनुरूप बन गया। राष्ट्रीय चरित्र को गहरा तथा प्रौढ़ बनाने मे भी युद्ध ने बडी सहायता पहुँचायी। साहित्य तथा शिक्षा भी बहुत-सी बातो मे गंभीर हो गयी। इसके अतिरिक्त इस युद्ध के कारण देश को कटु तथा नाटकीय स्मृतियो की ऐसी परम्परा भी प्राप्त हुई जो उसके हृदय को गति तथा कल्पना को उभार देने के लिए पर्याप्त थी। आगे आने वाली सदियॉ उन्हे स्मरण कर के चमत्कृत होती रहेगी। समटर दुर्ग पर हुई गोलाबारी, मेरीमाक और मानीटोर का द्वद्व युद्ध, शिनान्डोआ के बीच से स्टोनवाल जेक्सन का अप्रतिहत अभियान अपने पीछे पराजित उत्तरी सेनाओ की शृंखला छोड़ता चला गया था, मिस्सिसिपी नदी के वक्ष पर तैरती हुई वे तोप-सज्जित नौकाएं जो विक्सबर्ग पर बरसते गोलो मे से प्रत्याक्रमण करती थी, सिमिट्रीरिच पर हैकाक की नीली वर्दीधारी सेनाओं के साथ भूरी वर्दीवाली पिकेट की सेनाओ का आमरणान्त द्वन्द्व-युद्ध, चट्टानूगा की तलहटी पर सेनाओ का वह भयकर आक्रमण जिसे सेनापति ग्राण्ट की सुव्यवस्थित सेनाएँ भी न रोक सकी और जिसने अपने चमत्कार से बालक्लावा के युद्ध को भी मात कर दिया था, फ्रेकलिन के युद्धस्थल मे हुड के उन क्षत-विक्षत योद्धाओ का उत्तरी सेनाओं पर अति साहसिक आक्रमण जिसमे दो घटे के भीतर ही उनमे से छः हजार के लगभग वीर या तो धराशायी हुए अथवा आहत, किअरसार्ज नामक युद्धपोत का अलाबामा युद्धपोत के चारो ओर तब तक चक्कर लगाते रहना जब तक कि वह स्वयम् समुद्र के गर्भ मे विलीन न हो गया, रत्नजटित तलवार लिये ली का, साधारण सिपाही के लिवासवाले ग्राण्ट के साथ अपोमेटोक्स स्थान पर हाथ मिलाना, रिचमण्ड की आग से काली पडी हुई गलियो मे लिंकन का जलूस, शहीद राष्ट्राध्यक्ष के शव की एक हजार मील लम्बी सम्मान-यात्रा, युद्ध के अन्तिम पटाक्षेप के समय पेसिलवानिया-एवेन्यु मे होकर पूर्वीय तथा पश्चिमीय सेनाओ के सैनिको की अनन्त पक्तियो का शानदार प्रदर्शन आदि घटनाएँ एक महाकाव्य के कथादृश्यों के समान मालूम देती हैं और ये कथाएँ युगयुगान्त तक किंवदन्ती बन कर बार-बार दोहरायी जाती रहेगी।

वारहवाँ परिच्छेद

नये अमरीका का जन्म

युद्ध का प्रभाव : उत्तरी तथा दक्षिणी दोनों ही अमरीकी क्षेत्रो की समाज-रचना तथा अर्थ-व्यवस्था पर इस गृह-युद्ध का बडा क्रान्तिकारी प्रभाव पड़ा। यद्यपि आज के अमरीका की नीव युद्धपूर्व के अनेक वर्षो मे गहरी हो गयी थी, लेकिन उसका वास्तविक उत्कर्ष हम युद्धकाल से ही गिन सकते हैं। युद्ध के कारण उद्योगो को वेहद प्रोत्साहन मिला। प्राकृतिक साधन-स्रोतो का शीघ्रतापूर्वक उपयोग होने लगा। बडे पैमाने पर उत्पादन का विकास हुआ। वैक के कारोबार मे लगी पूॅजी मे तेजी से वृद्धि हुई। विदेशी व्यापार मे विस्तार हुआ और 'औद्योगिक नायको' 'पूजीपतियों' के नये वर्ग का महत्व वढा तथा सामने आ गया। युद्ध के कारण ही रेल्वे-लाइन के निर्माण मे तेजी आयी। तार का जाल देश भर मे बिछ गया और देश मे रेल-मार्गों का युग प्रारम्भ हुआ। नये आविष्कारों तथा श्रम की बचत करने वाली तरकीबो को प्रश्रय मिला और कृषि तथा उद्योग मे इन दोनो का बडे पैमाने पर विनियोग होने लगा। इसीलिए नये विशाल क्षेत्र खेती तथा चरागाहो के लिए प्रस्तुत किये गये और देश मे खेतिहर क्राति तथा फार्म-सबधी समस्याओं का सूत्रपात हुआ। युद्ध के कारण ही, नये-नये शहरो की उत्पत्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियॉ उत्पन्न हुई और उन हजारो-लाखों प्रवासियो के लिए जो विशाल समूहो मे एकत्र होकर नयी दुनिया में आ रहे थे, रोजगार के मौके प्राप्त हुए। दक्षिण के राज्यों मे इस युद्ध की पराजय ने वगानमालिको से वर्ग का वहुत-कुछ नाश कर दिया; हब्शी लोगों को स्वतत्रता दिलायी और कृषि फार्म-सवधी अर्थ-व्यवस्था मे क्रान्तिकारी परिवर्तन किये तथा एक नये मध्यम वर्ग को प्रधानता प्रदान की। उसके कारण उस नवीन दक्षिण की नींव पडी जिसका स्वरूप अगली पीढ़ी में दिखायी देने वाला था। उत्तर मे युद्ध के कारण पूॅजी लगाने तथा उद्योगों के नये क्षेत्र उत्पन्न हुए। युद्ध के कारण 'युद्धकालीन लखपतियों' की वाढ सी आ गयी। इसके अलावा साधन-

स्रोतों, उद्योगों तथा वित्त के नियत्रण के बडे-बडे शहरी केन्द्रों पर केन्द्रीकरण की प्रक्रिया मे तेजी आयी। दक्षिण तथा पश्चिम, उत्तर-पूर्व के अनुयायी बने और पुराने वर्ग-विभेद के स्थान पर नये वर्गों तथा श्रेणियो का उद्भव हुआ।

अपोमेटोक्स के समझौते के बाद आने वाली पीढ़ी के जमाने मे वर्तमान अमरीकी समाज तथा अर्थव्यवस्था की रूपरेखा तैयार हुई। क्षेत्रफल, सख्या, सम्पत्ति, शक्ति, सामाजिक समस्याओ तथा आर्थिक दृढ़ता आदि सभी दिशाओं मे उन्नति इस काल का सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथ्य था। गणतत्र के राजनीतिक भूभागो को निर्णायक रूप दिया गया और लगभग एक दर्जन नये राज्य यूनियन मे शामिल किये गये तथा सयुक्त-अमरीकी-गणराज्य की स्थापना की गयी। लगभग चालीस वर्ष की अवधि मे आबादी तीन करोड़ दस लाख से बढ़ कर सात करोड छः लाख तक पहुँच गयी। एक करोड पचास लाख प्रवासी जिनमे दक्षिणी तथा पूर्वीय यूरोप से आनेवालो की सख्या प्रतिदिन बढती जाती थी इस जाने-पहचाने देश मे लगातार घुसे आ रहे थे और न्यूयार्क, चिकागो, पिट्सबर्ग, क्लीवलैण्ड तथा डेट्रोइट जैसे नये बडे शहरो का आकार दुगुना और चौगुना तक बढ गया। इसके बाद तुरत ही आदिवासियों को उनके पठारी ऊँचे मैदानों, पहाडी तथा घाटियों मे फैले उनके प्राचीन निवासस्थानो से बाहर खदेडा गया और निश्चित स्थानो पर उन्हें बसा दिया गया। खानो की खुदाई और पशुओं के रोजगार द्वारा नये-नये धनपति पैदा हुए और खत्म हुए। पश्चिम मे लोगों को बसाया गया और वहॉ कृषि के 'फार्म' खोले गये तथा शताब्दी के अन्त तक सीमाक्षेत्र नाम जैसी कोई वस्तु पश्चिम मे शेप न रह गयी। कच्चे लोहे, ताबे और तेल के नये-नये विशाल क्षेत्र ढूँढ निकाले गये, जिनके कारण बीसियों नये उद्योग उठ खडे हुए और छोटे-मोटे रोजगार बडे-बडे कारोबारों मे परिवर्तित हो गये। नयी अर्थ-व्यवस्था को चलाने के लिए कार्पोरेशन एक प्रभाशाली उपकरण बन चला और ट्रस्ट तथा शेयर-होल्डिंग-कम्पनियॉ उसके सघटन के विशिष्ट रूप कहलाये। मारगन्स-बैंक -जैसे बडे-बडे बैंकिंग सस्थान राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को नियन्त्रण करते हुए शक्तिशाली रूप में सामने आये। रेल-मार्गों का जाल लगभग पहले ही पूरा हो चुका था और उसकी लम्बाई तीस हजार मील से बढ़कर दो लाख मील तक जा पहुँची। यह ससार के सब देशों के रेल मार्गो से बडा रेलमार्ग था। लडाई के पूर्व श्रमिक सघटनो की सख्या बहुत कम थी और वे सघटन भी बेहद कमजोर थे, लेकिन युद्ध के बाद उनकी सदस्य सख्या बेहद बढ गयी और देश

की अर्थ-व्यवस्था मे उनका स्थान स्पष्ट तौर पर निश्चित हो गया। औद्योगिक विवाद जो पहले बहुत हलके तथा कभी-कभी ही उठा करते थे, अब संघटित तथा गभीर हो चले। अमरीका का छोटा-सा लोकतन्त्र अब विश्वशक्ति में परिणत हो गया और उसका विस्तार कैरीबियन तथा प्रशान्त महासागर तक जा पहुँचा, जबकि इस नवीन लोकतन्त्र के उद्योगों ने नये बाजारों के लिए उत्सुक होकर तथा इसके महाजनों ने पूँजी लगाने के लिए एक दूसरे से बाजी लगाकर औद्योगिक साम्राज्यवाद की नयी प्रक्रिया को विकसित किया। अमरीकी इतिहास की किसी भी पीढी ने ऐसे सत्वर व क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं देखे जैसे कि लिंकन तथा ली के उस ग्रामीण लोकतन्त्र ने देखे जो इस समय बढकर मेक्लिन और रूजवेल्ट के शहरी औद्योगिक साम्राज्य मे परिवर्तित हो गया था।

पेचीदा तथा मुहतोड समस्याओं की एक नयी शृखला का सामना अमरीकी लोगो को करना पडा; लेकिन इन समस्याओं के स्वरूप को समझने के लिए उनमे बहुत ही कम अनुभव था और वे इतने अधिक व्यस्त थे कि उन्हे समझने के लिए वे विशेष गभीरतापूर्वक ध्यान भी नहीं दे पाते थे। इन समस्याओं में सबसे अधिक तात्कालिक समस्या थी सम्पत्ति का वितरण, विशाल तथा शक्तिशाली पूजीसग्रहों का नियन्त्रण, राजनीतिक लोकतन्त्र की अलोकतान्त्रिक अर्थव्यवस्था को सघर्ष से सुरक्षित रखना, बृहद्स्तरीय बेरोजगारी तथा श्रम-सबधी कठिनाइयॉ, शहरों की बढती हुई आबादी और विदेशोत्पन्न लोगों को आत्मसात् करना, फार्म-संबधी आमदनी की कमी, फार्मों पर खेतिहर लोगों की वृद्धि, उन प्राकृतिक साधनस्रोतो का सरक्षण जो लापरवाह दोहन द्वारा खत्म हो रहे थे, समुद्रपार-शासन तथा विश्व-राजनीति की जिम्मेदारियॉ, उन राजनीतिक सस्थाओ के लिए उचित स्थान की व्यवस्था करना जो एक छोटे-से ग्रामीण लोकतन्त्र की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सघटित की गयी थी, लेकिन जिन्हे अब एक महान् औद्योगिक राष्ट्र की आवश्यकताओं की पूर्ति करनी थी।

दक्षिण का रूप-परिवर्तन : युद्ध तथा पराजय का प्रभाव दक्षिण पर तात्कालिक और प्रलयंकर हुआ। नैशविले तथा अपोमेटोक्स की घटनाओ के बाद जब भूरी वर्दी पहने दक्षिण के पुराने योद्धा थके-थकाए घर लौटे तो उनकी ऑखों के सामने बरबादी का वह प्रलयंकरी नजारा था। वैसा दृश्य अमरीका के इतिहास में दूसरा नहीं था। विग्रहरत सेनाओ ने

वर्जीनिया व टेनेसी राज्यो के विशाल भूभागो को एकदम बरबाद कर दिया था। शर्मन ने जार्जिया तथा दक्षिणी करोलिना के बीचोबीच साठ मील चौडा भूभाग एकदम उजाड़ कर दिया था। हंटर और शेरिडन ने वर्जीनिया की घनी उपजाऊ व सुसम्पन्न घाटी का सत्यानाश ही कर डाला था। उत्तरी अलाबामा, मिस्सिसिपी और अरकंसास के विशाल क्षेत्र तहस-नहस कर दिये गये थे। रिचमण्ड, चार्ल्सटन, कोलम्बिया और अटलाण्टा जैसे उन्नत नगर या तो भस्मीभूत कर दिये गये थे या गोलाबारी ने उनकी धज्जियाँ उड़ा दी थी। पुल टूटे पड़े थे, सडके बेमरम्मत थी और सैकडों मील तक रेल की पटरियाँ उखडी पडी थी। रेल के डिब्बे तोड-फोड दिये गये थे और खाडियो व बन्दरगाहों मे-सडाँद फैली हुई थी। देश का साधारण आर्थिक जीवन एकदम ठप्प पडा था। सघराज्य के सिक्को का मूल्य नही के बराबर था और केवल वे पुराने सिक्के ही चलते, थे जिन्हे लोगो ने जमा करके रखा था अथवा जिन्हे सघराज्य की सेनाएँ अपने साथ विजित प्रदेश मे लायी थी। बैको ने अपने दरवाजो पर ताले लगा दिये थे, बीमा-कम्पनियो ने दिवाले निकाल दिये थे। उद्योग तथा कारबार बिल्कुल समाप्त हो गये थे और गोदामो मे भरी पडी रूई का अधिकाश या तो आग लगाकर नष्ट कर दिया गया था अथवा फौजी अफसरो द्वारा जब्त कर लिया गया था।

नागरिक प्रशासन करीब-करीब खत्म ही हो गया था और कर इकट्ठा करने, स्कूल चलाने, सडकों को ठीक हालत मे रखने तथा देहात मे अत्याचार तथा आक्रमण करने वाले लुटेरो और छुटपुट हमला करने वाले जत्थो के खिलाफ व्यवस्था तथा कानून का प्रतिपादन कराने के लिए कोई भी प्रभावशाली अधिकार-शक्ति बाकी न थी। गिरजे जला दिये गये थे और भक्त तितर-बितर कर दिये गये थे। कालेजो को दान मे दी गयी सपत्ति नष्ट कर दी गयी थी। उनके पुस्तकालय तथा प्रयोगशालाएँ खत्म कर दी गयी थी। अलाबामा-युनिवर्सिटी का पुस्तकाध्यक्ष केवल एक ही पुस्तक को जलने से बचा सका और वह थी कुरान। अधिकाश सार्वजनिक स्कूल बन्द पड़े थे और शिक्षा एकदम स्थगित थी।

खेती की हालत भी बडी निराशाजनक थी। 'फार्मों' की हजारो एकड भूमि छोड दी गयी थी। बाडे जमींदोज पडी थी। नहरो मे झाड-झाखाड़ पैदा हो गये थे। बाँध और नाले टूटे पडे थे। घोडे और खच्चर या तो मर चुके थे या चुरा लिये गये थे और हल खेतो मे पडे जंग खा रहे थे तथा श्रम-प्रणाली

और श्रमिक एकदम विसंगठित हो चुके थे। करोलिना का चावल-उद्योग सदा के लिए नष्ट हो चुका था; क्योंकि खारा पानी खेतों में भर गया था। लुइसियाना का शक्कर-उद्योग भी खत्म कर दिया गया था। सन् १८७० में वर्जीनिया की तम्बाकू की खेती सन् १८६० की अपेक्षा दो लाख एकड़ कम भूमि में हुई थी। कपास की उतनी बड़ी फसल जितनी कि सबंध-विच्छेद के साल दक्षिण में पैदा हुई थी सन् १८७९ से पहले वहाँ दुबारा पैदा न हो सकी थी। सन १८६५ के जाड़े के मौसम में भुखमरी का ताडव दक्षिण के विशाल भूभागों में इतना जोर का छा चला था कि गोरे और काले सभी लोगों के लिए सघीय सेनाओं तथा नवगठित विमुक्त जाति-सघों को उनकी सहायता करना आवश्यक हो गया था। जैसा कि दक्षिण के कवि सिडनी लानियर ने लिखा था, "जिन्दगी के सभी पहलू करीब करीब मौत की घड़ियाँ गिन रहे थे, लेकिन उनकी दम न निकल पा रहा था।"

पुनर्निर्माण के कारण ऐसी नयी परेशानियाँ और नयी जिम्मेदारियाँ, जो युद्ध की जिम्मेदारियों से कम न थीं, उठ खड़ी हुईं। दक्षिणी सघ राज्य द्वारा लिया गया कर्ज तो मिट्टी में मिल ही चुका था' लेकिन उसके साथ-साथ वह लागत पूँजी भी असदिग्ध रूप से नष्ट हो गयी थी, जिसे देश की खातिर देशभक्त दक्षिणवासियों ने युद्ध-कार्य में लगायी थी। इतने पर भी दक्षिण से माँग की गयी थी कि वह राष्ट्रीय ऋण तथा राष्ट्रीय सरकार के चालू खर्चे में भी अपने हिस्से का उचित भाग अदा करे। इसके अलावा उस पर कपास-सबधी एक और भारी आबकारी-कर लाद दिया गया था। यद्यपि यह कर न तो गैरवाजिब ही था न बहुत ज्यादा; लेकिन राज्य तथा स्थानीय शासन-सम्बन्धी कर्जे और कर अनुचित और बेहद थे। ये काग्रेस में रेडिकल-गुट द्वारा दक्षिण पर लादे गये थे। 'कारपेट-बैगर' शासन-काल में करोड़ों डालर इत्र, व्हिस्की तथा संसद-सदस्यों के लिए सोने के पतरे चढ़े बर्तनों की खरीददारी में फिजूल खर्च कर दिये गये थे। लाखों डालर एकदम या तो चुरा लिये गये थे और कई लाख रेल-मार्ग निर्माण-जैसे सदिग्ध व्यवसायों में, जिनसे शायद कभी डालर पीछे दस दमड़ी की वसूली होने की भी उम्मीद थी, बेहिसाब झोंक दिये गये थे। कई अनुभागों में सम्पत्ति का मूल्य आधे से भी कम रह गया था, लेकिन कर और कर्जे बेहिसाब ऊँचे चढ़ गये थे। 'कारपेट-बैगर' तथा रैडिकल-प्रशासनो के जमाने में दक्षिणी करोलिना का सार्वजनिक कर्जा पाच लाख डालर से बढ़कर उन्तीस लाख डालर तक जा पहुँचा था, अरकंसास का तीन से पन्द्रह तक, और लुइसियाना का

ग्यारह से पचास तक। कर भी बेहद ऊँचे चढ़ चुके थे। लुइसियाना में वे आठ गुने हो गये थे और मिस्सिसिपी मे चौदह गुने। यहाँ तक कि सैकड़ो किसानो ने एकदम निराश तथा परेशान होकर अपने फार्म-कर कलक्टर के हक मे बेबाक कर दिये थे।

लेकिन, पराजित दक्षिण ने आश्चर्यजनक तत्परता के साथ भौतिक पुनर्निर्माण और कृषि-सबधी अर्थव्यवस्था के पुनर्वास तथा सभ्य समाज-सबंधी सस्थाओं की पुनःस्थापना के महत्वपूर्ण कार्य मे योगदान दिया जैसा कि आगे चलकर हेनरी ग्रेडी नामक जार्जिया राज्य के एक सपादक ने लिखा था "विनाश ही इससे पहले कभी इतना अधिक व्यापक न हुआ था, इतना ही पुनर्निर्माण भी कभी इतना त्वरित अथवा सत्वर नही हुआ।" रिचमण्ड, चार्ल्सटन और कोलम्बिया के खडहरों पर फिर से नये शहर उठ खडे हुए। अटलाटा मे युद्ध के छः महीने बाद जाने वाले एक यात्री ने लिखा था कि वहाँ आश्चर्यजनक तेजी के साथ एक नया शहर खडा हो रहा है। रेल-मार्ग की पटरियाँ फिर से बिछा दी गयी हैं और दक्षिण पश्चिम मे नयी सडके बन गयी हैं। पुल फिर से बना दिये गये। बाँध और नाले भी फिर से बाँध दिये गये। नारफोक, चार्ल्सटन और मोबील के बन्दरगाहो मे जहाज फिर से पहुँचा दिये गये। देहाती व्यापारी, छोटे पैमाने के बनिये, और कुछ दिन बाद बैंक और बीमा-कम्पनियाँ भी अपना-अपना काम करने लग गयी।

किसी तरह कारखाने भी फिर खुल गये और नये-नये उद्योगो मे लगाने के लिए पूँजी भी—कभी-कभी तो विनाशकारी दरो पर भी—प्रस्तुत होने लगी। सफेद तथा पीले देवदार के विशाल वनों के कारण, लकडी-उद्योग के लिए भी आधार प्रस्तुत हो गया। उन सैनिको ने जो डरहम और उतरी करोलिना मे होकर गुजर चुके थे और जिन्होंने वाशिगटन ड्यूक की बनायी तम्बाकू का मजा लिया था, उत्तर से उस तम्बाकू के लिए आर्डर भेजना शुरू किया और इस तरह उसी करोलिना के तम्बाकू उद्योग का आरभ हुआ। सन् १८१८ तक डरहम मे ससार की सबसे बडी तम्बाकू कम्पनी स्थापित हो चुकी थी और हर साल एक करोड रुपये की तम्बाकू वहाँ से बाहर भेजी जाया करती थी। स्थानीय आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए आटे और दलिये की चक्कियाँ खुल गयीं। कपास की उपज के लिए आवश्यक खार-उद्योग भी फिर से स्थापित हो गया। टेनेसी उथा उत्तरी अलाबामा मे कोयले तथा लोहे की संपन्न खदाने ढूँढ़ निकाली गयीं। बरमिघम जो १८७० मे एक उत्पादक रुई

क्षेत्र था, बीस वर्ष के भीतर ही पचास हजार की जनसंख्यावाला एक बड़ा शहर और इस्पात व लौह उद्योग का एक सम्पन्न केन्द्र तथा छः रेलमार्ग वाला स्टेशन व शहर बन गया था। सन् १८९० में दक्षिण, राष्ट्र भर के कच्चे लोहे के उत्पादन का पाँचवाँ हिस्सा पैदा करता था। चट्टानूगा, डरहम, विंस्टन, सलेम और हैनविले जैसे शहर भी वैभवशाली उत्पादक नगर बन चुके थे।

१८४६ में जब विलियम ग्रे ने साउथ कैरोलिना के ग्रेनाइट विले-नामक स्थान पर अपनी कपास-मिलें स्थापित की थीं, तबसे ही दक्षिण के सागर-तट पर सूती-वस्त्र-उद्योग लगातार पनपता चला आ रहा था। अन्य उद्योगों की तरह इस उद्योग को भी युद्ध ने पूरी तरह तहस-नहस कर दिया था। १८७० के आगे के दशक में इस उद्योग को सस्ती मजदूरी, जलविद्युत् की निकटता और कच्चे माल तक आसान पहुँच आदि के सुयोग का पूरा फायदा उठाते हुए एक बार फिर आगे बढ़ने का मौका मिला। जार्जिया तथा कैरोलिना के पठारों के चारों ओर केवल स्थानीय पूँजी के बल पर ही, बीसों छोटी-छोटी फैक्टरियाँ उठ खड़ी हुईं। १८९० तक दक्षिणी कैरोलिना में आधे करोड़ के लगभग तकुए चालू हो चुके थे और समग्र दक्षिण में चल रहे तकुओं की तादाद इससे चौगुनी थी। न्यू इंग्लैंड के उद्योगपति इस अनुभाग की स्पर्धा के कारण पहले से ही परेशान थे। सन् १८९० में ही दक्षिण में उस श्रम-समस्या का प्रारम्भ हो गया था, जो आगामी वर्षों में और भी अधिक गंभीर रूप धारण करनेवाली थी।

दक्षिण का सूती-वस्त्र-उद्योग स्थानीय ही बना रहा; लेकिन अधिकांशतः आवश्यकतावश उसने एक विचित्र सामन्तवादी रूप धारण किया। ऊपर से अत्यधिक दिखायी पड़नेवाली मजदूरी तथा लगातार काम के कारण आकृष्ट होकर बहुत से परिवार नष्ट-प्राय कृषि-फार्मों को छोड़कर समीप के सूती मिल-वाले गाँवों में जा बसे और अपने साथ श्रमिक स्वभाव तथा आदतें भी लेते गये, जिनका विकास खेतों के काम में हुआ था। लगातार बहुत से घंटों तक काम करते रहना और उस काम में मर्दों-औरतों तथा बच्चों सहित पूरे खानदान का काम में जुटे रहना उनके लिए स्वाभाविक ही था। मिलों वाले इन गाँवों पर, जो कि किसी कस्बे के निकट उठ खड़े हुए थे, उन्हीं कार्यकर्ताओं का जिन्होंने मिलों का निर्माण किया था, स्वामित्व तथा आधिपत्य था। मजदूर, कम्पनी के गिरजाघरों और स्कूलों का ही इस्तेमाल किया करते थे। कम्पनी के 'स्टोरों' से ही अपना भोजन तथा वस्त्र खरीद किया करते थे। कम्पनी के डाइरेक्टरों के हाथों उनकी पैदाइश होती थी और कम्पनी के पादरियों के जरिये ही वे कम्पनी

के स्मशानों में दफनाये जाते थे। यह एक नये प्रकार का सामन्तवाद था और यद्यपि इसने प्रारम्भ के वर्षों मे बहुत अच्छा काम दिया; लेकिन भविष्य के लिए इस पद्धति में बहुत बड़ा खतरा मौजूद था।

लेकिन, लोहा-लक्कड़, तम्बाकू और वस्त्रोद्योगो की उन्नति के बावजूद दक्षिण प्रधानतः ग्रामीण और खेतिहर बना रहा। सन् १९०० से वहाँ एक लाख आबादी वाले न्यू-आर्लियन्स के सिवाय एक भी बडा शहर नही था। उसके सभी उद्योग भी खेती से ही सबद्ध थे। तम्बाकू और वस्त्रो का उत्पादन यद्यपि बहुत बडा था, लेकिन उनकी उत्पादन-लागत अपेक्षाकृत बहुत कम थी। दक्षिणवासियों की विशाल सख्या ज्यादातर अपने 'फार्मों' पर ही रहती थी और स्थायी फसले पैदा किया करती थी; लेकिन युद्ध के दिनो मे खेती का काम भी बहुत विघटित हो गया था और यह विघटन दास-प्रथा तथा श्रम-पद्धति (जो खेती पर ही निर्भर थे) के विनाश के कारण और भी अधिक गहरा हो गया था। इसलिए, कृषि पद्धति मे भी रद्दोबदल करना पडा।

बडे-बडे बगानमालिक भी युद्ध तथा पुनर्गठन के कारण बहुत गरीब हो गये थे। उनकी पूँजी का बहुत बडा भाग गुलामों की खरीद मे लगा हुआ था और अब गुलाम सब स्वतत्र थे। इसलिए, उनकी सब पूँजी बह गयी थी। श्रमिक लोग भी तितर-बितर हो चुके थे और मजदूर मिलना मुश्किल हो गया था। बढते हुए टैक्स और ऊपरी खर्चों के कारण बहुतेरे बगानमालिको को मजबूर होकर या तो अपने 'फार्म' को खुद ही तोड देने पडे अथवा करो तथा कर्जों के चुकाने मे नीलाम हो जाने देना पडा। इसका परिणाम अमरीकी इतिहास मे भू-स्वामित्व के लिए एक व्यापक क्रान्ति सिद्ध हुआ। चूंकि अच्छी जमीन उन दिनो तीन या चार डालर प्रति एकड के हिसाब से बिक रही थी इसलिए हजारों छोटे–छोटे किसानो ने अपनी अराजी का इजाफा कर लिया और लाखो गरीब गोरे विमुक्त लोगों, भूमिहीन यात्रिको और दूकानदारो को अपनी जमीन की भूख शान्त करने का मौका मिला और वे भू-स्वामी बन बैठे। सन १८६० मे दक्षिणी करोलिना मे लगभग तेतीस हजार 'फार्म' थे। बीस वर्ष के बाद इनकी सख्या चौरानवे हजार हो गयी। मिस्सिसिपी-राज्य मे दस एकड से कम छः सौ से कम ही खेत थे· लेकिन दस वर्ष के अन्दर ही उनकी सख्या बढकर ग्यारह हजार हो गयी। समग्र दक्षिण मे एक हजार एकड वाले 'फार्मों' की सख्या आधी से भी कम रह गयी और औसत दर्जे के 'फार्म' का आकार बीस साल के अरसे मे तीन सौ पैतीस एकड से घटकर एक सौ

तिरपन एकड़ हो गया। इसीके साथ-साथ नयी अच्छी जमीनें भी अरकसास और टैक्साज मे नौतोड़ की गयी और शीघ्र ही ओक्लाहामा में बन्दोबस्त कर दिया गया। कपास की छूट जो कुछ साल पहले खत्म कर दी गयी थी, फिर से कायम कर दी गयी और रूई का साम्राज्य फिर विस्तृत होने लगा।

गुलामी की प्रथा का अन्त हो जाने के कारण, उसका स्थान लेने के लिए एक उपयुक्त मजदूर-व्यवस्था की जरूरत महसूस होने लगी थी। बगान-मालिकों के पास इतना रुपया न था कि वे मजदूरी अदा कर सके और नीग्रो लोगों के पास भी इतना पैसा न था कि वे किराये पर खेती की जमीनें ले सके। इसलिए, सामयिक आवश्यकता ने एक तीसरी व्यवस्था को जन्म दिया। इस समय लिखी गयी अनेक आत्मकथाओं और संस्मरण-ग्रन्थों से इस परिवर्तन के जन्म का पता हमे मिलता है। ज्यों-ही लड़ाई खत्म हुई बगान-मालिकों ने अपने-अपने दासों को बुलाया और उनसे कह दिया कि वे अब आजाद कर दिये गये हैं। तब उन्होंने उन गुलामो से कहा कि वे अपनी पुरानी जगहों पर यदि रहना चाहें तो बने रह सकते हैं और काम कर सकते हैं। लेकिन, चूँकि मजदूरी उन्हे नहीं दी जा सकती, फसल तैयार होने पर 'प्लान्टर' उसे उनके साथ बॉटकर उनकी मेहनत की अदायगी कर देगा। इस व्यवस्था ने फसल-बटँवारा-प्रणाली को जन्म दिया और आगे चलकर यह प्रणाली काफी व्यवस्थित और नियमित बन गयी। कर्षक (फार्मर) लोग अपने खेतिहरो को रहने की कोठरियाँ, जोतने की जमीन, औजार, खाद और खच्चर तो देते ही थे, साथ-ही-साथ फसल तैयार होने तक उनकी जीवन-यात्रा चलाने का जिम्मा भी ले लेते थे। फसल का भागीदार या बटाईदार अपनी मजदूरी के एवज में कुल फसल का एक तिहाई भाग पाने का हकदार होता था। यह प्रणाली इतनी सफलतापूर्वक चली और दोनों के लिए इतनी सुविधाजनक साबित हुई कि वह आगे जाकर गोरे और काले दोनों ही खेतिहरो पर लागू होने लगी।

लेकिन, कठिन परिस्थितियों के वक्त कामचलाऊ तौर पर अपनायी गयी इस बटाई प्रथा ने क्रियात्मक रूप में अनेक बड़ी खराबियाँ पैदा कर दीं। छोटे पैमाने के प्रायः सभी कृषक जो ज्यादातर अपनी फ़सल के बल पर ही जिन्दा रहा करते थे, कर्जदार हो चले और उनकी हालत उस तरह की हो गयी जिन्होंने मानों बड़े कृषको के यहाँ अपनी फसल बन्ध रख दी हो या ऐसे व्यापारी के हाथ सौप दिया जो उसे अपने साथ ले जाया करता हो। चूँकि ऐसे कृषकों के

पास बन्धक रखने या जमानत देने लायक कोई भी जायदाद न होती थी, इस-लिए बड़े कृषकों तथा व्यापारियों से प्राप्त हुई वस्तुओ की एवज मे वे अपनी फसल ही बन्धक रख दिया करते थे। इस प्रक्रिया ने आगे चलकर 'फसल-बन्धक' जैसी दुष्प्रवृत्ति को जन्म दिया। इसके कारण औसत दर्जे के खेतिहर को अपनी फसल के प्रति कोई विशेष लगाव और हार्दिक आकर्षण न रह जाता था। वह उटपटांग और अवैज्ञानिक तरीकों पर खेती करने लगता था और बडे कृषकों या व्यापारियों के हाथ की कठपुतली बन जाता था। साथ-ही-साथ खेतिहरों के साथ उसके सम्बन्ध भी कटु हो जाते थे। चूँकि कपास ही एक ऐसी फसल थी जो भरोसे की फ़सल कही जा सकती थी, इसलिए कर्जा देनेवाले लोग खेतिहरों को मजबूर करते थे कि वे और कुछ न बोकर सिर्फ कपास ही बोयें। इस तरह पर दूसरे क़िस्म की फसलों की बुवाई बन्द हो गयी और दक्षिण की गहरी ज़मीन को मजबूर होकर 'एक जिंसी खेती' की विनाश-कारिणी अर्थ-व्यवस्था का शिकार होना पडा। भूमि पर विविध प्रकार की खेती करने और विक्रीकरण के सपने एक ही पीढी के जीवन-काल मे खत्म हो गये और स्वस्थ किसानी प्रथा के उद्भव की आशाएँ धूल मे मिल गयीं। दक्षिण के बहुत से भूभागों मे ७० से लेकर ८० प्रतिशत तक कृषक केवल खेतिहर भर ही रह गये थे और हर खेत औसतन कम-से-कम एक जगह जरूर ही बन्धक रखा हुआ था। सन् १९०० मे दक्षिणी भूभाग, सन् १८६० के दक्षिण की अपेक्षा कम आत्मनिर्भर रह गया था और कई जगहों पर तो खेतिहर-सम्पत्ति का मूल्य इन वर्षों मे बेहद कम हो गया था। राकफेलर-फाउण्डेशन की स्थापना तथा स्मिथलीवर-एक्ट के पास होने के बाद ही दक्षिण के देहात की हालत सुधरनी शुरू हुई और इनके कारण जन्मी कृषि-शिक्षा तथा उन्नत स्वास्थ्य-व्यवस्था के कारण वहाँ खेती की हालत सुधरने लगी।

नीग्रो लोगों को भी पता चल गया कि कानूनी आजादी यद्यपि उन्हें मिली; लेकिन उनकी वास्तविक स्वतन्त्रता अब भी परिमित और सीमित थी। कांग्रेस ने यद्यपि कानून पास करके उन्हें आजादी दिला दी थी; लेकिन आर्थिक रूप से उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए उसने उनके लिए कुछ भी न किया था। वह अपनी सब ताकत उन्हें समान राजनीतिक अधिकार दिलाने मे ही बर्बाद करती आ रही थी। दो-एक साल तक नीग्रो लोगो की हालत किसी युद्धग्रस्त क्षेत्र के शरणार्थियों-जैसी बनी रही। हजारो नीग्रो तो भाग खडे हुए और निरुद्देश्य रूप में एक जिले से दूसरे जिले का चक्कर काटने लगे। यह कहना ठीक होगा कि

स्वतन्त्रता के प्रथम वर्ष में इतने कुटुम्ब तितर-बितर हुए जितने दासप्रथा के किसी भी साल में नहीं हुए थे। हजारों काले लोग बीमारी और भूख से मर गये या उनकी हत्या कर दी गयी। अन्त में कुछ जिम्मेदार दक्षिणवासियों के प्रयत्नों या संयुक्त राष्ट्रीय अधिकारियों के सहयोग के कारण यह अव्यवस्था दूर की गयी। नीग्रो लोगों ने जब अच्छी तरह समझ लिया कि उन्हें उनके स्वप्नों की प्रतिज्ञान "४० एकड़ भूमि और एक खच्चर" कभी भी नहीं मिल सकता, तब वे लोग आये और खेती के उस एकमात्र धन्धे में जिसे वे अच्छी तरह जानते थे, लग गये। उनमें से कुछ साहसी लोग उत्तर की ओर चले गये और कुछ दक्षिण के उदीयमान औद्योगिक शहरों में जा बसे। लेकिन, नीग्रो लोगों की अधिकांश तादाद भागीदारी काश्तकार या बटाईदार के पेशे में ही लगी रही और उनकी जिन्दगी के हालात करीब-करीब वैसे ही जारी रहे जैसे लड़ाई से पहले चले आ रहे थे। वे खेतों की जुताई करते थे और गोरे लोगों के खेतों पर कपास की कटाई भी। वे पुराने किस्म के टूटे-फूटे झोपड़ों में अब भी रहते थे और पहले की तरह ही कार्नमील और कौलार्ड तथा सुअर का नमकीन गोश्त उन्हें खाने को मिलता था। कमीजें अब भी उनकी तारतार फटी होतीं और पतलून नीले रंग के जीन की। यही पहनावा वे हमेशा से पहनते आये थे सो अब भी पहनते थे। 'वोट' देने की उन्होंने कभी भी कोशिश न की और न अपने बच्चों को गोरों के स्कूलों में भेजकर अपनी हैसियत से ऊँचा काम करने की सामाजिक जुर्रत ही कभी की।

युद्धोत्तर काल की इस दाक्षिणात्य पीढ़ी का यह सबसे अधिक आशाजनक विकास था—स्वतन्त्र छोटे किसानों, दूकानदारों, व्यापारियों, पेशेदारों, महाजनों, उद्योगपतियों और व्यवसायियों के एक स्वस्थ मध्यमवर्ग का प्रादुर्भाव। मध्यमवर्ग के ये लोग अब दासता की भावना से छुटकारा पा चुके थे और कुछ समय बाद उनके हृदय से युद्ध में पराजित होने की हीनभावना भी लुप्त हो गयी। वे अब चाँदनी और फूलों से शोभित हरे-भरे दक्षिण को भूल जाने के लिए तत्पर हो गये थे और गटिसबर्ग तथा विल्डरनेस की पराजयों का स्मरण वे अब गर्वपूर्वक करते थे, कसक के साथ नहीं। उन्होंने अब दाक्षिणी अर्थ-व्यवस्था को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का अखण्ड अंग बनाने का प्रयत्न शुरू कर दिया था और अपनी विनष्ट सामाजिक संस्थाओं का पुनर्गठन भी वे करने लगे थे। कालेज फिर खुलना शुरू हो गये और रावर्ट ई. ली ने खुद वर्जीनिया के खस्ता हाल छोटे-से वाशिंगटन-कालेज की अध्यक्षता स्वीकार करके समस्त दक्षिण के

सामने एक उदाहरण पेश कर दिया। दक्षिण के सभी राज्यों ने अपनी शिक्षा-प्रणाली लोकतान्त्रिक आधार पर गढना शुरू कर दी और क्रियात्मक रूप मे न सही कागजी तौर पर ही, प्रारमिक शिक्षा सभी के लिए निःशुल्क घोषित कर दी। गिरजे फिर से स्थापित हुए और हब्शियो की बहुत बडी तादाद शामिल हो जाने के कारण, उनकी सदस्य-सख्या युद्धपूर्व-काल से बहुत ज्यादा बढ़ गयी। सामाजिक कानून निर्माण मे उल्लेखनीय प्रगति हुई और गरीबो तथा अपाहिजो के लिए सुविधाएँ प्रदान की गयीं तथा श्रमिक कानून बनाने की दिशा मे भी कुछ हल्के-फुल्के प्रयास किये गये। इस प्रकार आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक रूप से दक्षिण फिर एक बार राष्ट्रीय तानेबाने मे शामिल हो गया।

उत्तर की क्रान्ति : जब दक्षिण उपर्युक्त कष्ट उठा कर अपनी अर्थ-व्यवस्था का पुनर्गठन कर रहा था और नयी औद्योगिक तथा कृषि-सबन्धी सस्थाओ के प्रति अपने को अनुकूल बना रहा था तब उत्तर सत्वर गति से आगे बढ रहा था। अन्य व्यवसायिक समूहों की अपेक्षा उत्तर के औद्योगिक तथा आर्थिक समूहो ने विजय का आर्थिक लाभ उठाया। अपने जन्म से ही रिपब्लिकन-दल ऊँचे तट-कर लगाने, आन्तरिक विकास करने, रेलमार्गो के लिये भूमि का अनुदान देने और करमुक्त 'फार्म' स्थापित करने की नीति अपनाये हुए था। फोर्ट समनर की लडाई से पहले तक वह इस पुरोगम के अधिकाश भाग को कानूनी रूप न दे सका था, लेकिन दक्षिणी राज्यो की पराजय के बाद कॉग्रेस मे कोई भी प्रभावशाली विरोध मौजूद न था और इसलिए लडाई की आड मे उपर्युक्त पूरे पुरोगम को शीघ्रतापूर्वक कानूनी रूप देने मे काफी सुविधा हुई। सन् १८६१ मे स्वीकृत मौरिल-टैरिफ के कारण तट-करों की चिरकालीन और लगातार गिरावट को तत्काल रोकने मे भी बडी सहायता मिली, जिससे प्रस्थापित दरे स्पष्ट रूप से सुरक्षित हो सकी। इसके बाद कानूनो द्वारा और भी ऊँचे तट-कर लगा दिये गये और युद्ध के अन्त तक औसत कर १८ से लेकर सैतालीस प्रतिशत तक बढाये जा चुके थे। उत्तर के उत्पादनो की स्थिति तब तक करीब-करीब दृढ़ और स्थिर बन चुकी थी, यहाँ तक कि सन् १९१३ तक के किसी भी प्रशासन के लिए इन तट-करो मे किसी तरह की भी कमी करना सभव न हो सका था। इसके अलावा व्यावसायिक अभिरुचि को और भी अधिक प्रोत्साहित करने की दृष्टि से कॉग्रेस ने तुरत ही आयकर रद्द कर दिया और लोहे, कोयला तथा निगमों पर लगाये गये युद्धकालीन कर भी

उठा लिये। रेल-मार्ग-संबन्धी कानूनों के अंतर्गत काग्रेस ने महाद्वीपीय तट मध्यवर्ती रेलमार्गों के निर्माण को आर्थिक सहायता पहुंचायी और उस काम के लिए उसने लगभग ६० लाख डालर से ज्यादा रकम कर्ज में और लगभग १ करोड़ एकड़ सार्वजनिक भूमि निःशुल्क प्रदान की। इसके साथ ही साथ उदारता-पूर्वक अनुदान-सहायता भी उसने दी, जिसे राज्यीय सरकारो और स्थानीय समितियों द्वारा स्वीकृत अनुदानों ने भी काफ़ी बढा-चढ़ा दिया।

इस प्रकार के सरक्षणों की सहायता और युद्धकालीन आवश्यकताओं की कभी न संतुष्ट होने वाली भूख का सवर्धन पाकर और साथ-ही-साथ तेजी से बढ़ रही आबादी के कारण उद्योग और धन्धे अभूतपूर्व रूप से उत्तर मे पनप उठे। इस विषय मे जान शर्मन ने अपने भाई को लिखा था कि :—'सच तो यह है कि, लडाई खत्म हो जाने के बाद भी चूंकि हमारे साधन-स्रोतों को कोई नुकसान नही पहुँचा था, इसलिए उनके बल पर अग्रणी पूँजीपतियों के ख्यालात और उनकी दिमाग़ी उडानें इतनी ऊँची उठी जितनी इससे पहले कभी भी न गयी थी। अब वे लाखों-करोड़ों की बात इस भरोसे और अन्दाज से करने लगे है, जिस अंदाज से वे पहले हजारों तक की ही किया करते थे।' उनके ख्यालात को ऊँची उडान का मौका भले ही न हो; लेकिन उनके विस्तार का तो मौका अब जरूर उन्हे मिला था। औद्योगिक-उत्पादन ने उत्साहपूर्वक सशस्त्र सेनाओं की लाखों जरूरतों को पूरा करना शुरू कर दिया और साथ-ही-साथ युद्धकालीन अर्थ-व्यवस्था की इससे भी बड़ी आवश्यकताएँ उसने पूरी की। दस बरस के भीतर ही बीस हजार मील लंबी रेल की पटरियाँ बिछा दी गयीं जिनमें से ज्यादातर पश्चिमी की ओर बिछायी गयीं। इसके अलावा महाद्वीप के आरपार जाने वाले रेलमार्ग को भी मैदानों और पहाडों के आरपार तेजी से ले जाया गया। तार के खभे भी एक शहर से दूसरे शहर तक तेजी से खड़े कर दिये गये और शीघ्र ही उन्होने महाद्वीप के एक छोर को दूसरे छोर से मिला दिया। समुद्री तार भी अतलान्तक महासागर के आरपार बिछा दिया गया और कुछ वर्षो के भीतर टेलीफोन लग जाने के कारण बिजली के जरिये तुरन्त आपस में बात करने की सुविधा भी हो गयी। फसल काटने की मशीनों की मांग इतनी बढ़ गयी कि, मध्यपश्चिम के प्रेयरी-मैदानों से प्राप्त हुई, इन मशीनो की बढ़ती हुई माँगे पूरी कर सकना चिकागो-स्थित मैककौर्मिक हार्वेस्टर मशीन कारखाने को दूभर हो गया। एक्रोन, ओहियो और कैण्टन के कारखाने लाखों कटाई-मशीनें तैयार करने लगे। मध्यवर्ती सीमा-स्थित कारखानों से, सन १८७५ के लग-

भग अधित्यकावर्ती मैदानों के कृषि-फार्मों के चारों ओर बाड़ लगाने के लिए उपयुक्त कॉटेदार तार भेजे जाने लगे थे। मैक्के-बूट तथा जूता-उद्योग, सिनसिनाटी और चिकागो के बड़े-बड़े पैकिंग प्लाण्ट, मिलवाकी और सेण्ट लुई के शराब के कारखाने, पिट्सबर्ग क्षेत्र की लोहे और फौलाद की मिलें, ओहियो और पेसिलवानिया के तेल-शोधक कारखाने तथा अन्य सैकड़ो फैक्टरियॉ दिन और रात लगातार काम करके भी जनता की उन बढ़ती हुई मॉगों को, जो उनके पास लगातार आती जा रही थीं, पूरा न कर पाती थीं।

लडाई खत्म हो जाने पर भी, यह औद्योगिक व्यस्तता खत्म नही हुई। अपोमेटोक्स की सधि के पॉच वर्ष बाद भी, तब तक का सब औद्योगिक रिकार्ड टूटता जा रहा था। तब पहले से ज्यादा कोयला, कच्चा लोहा, चॉदी और ताबा खानों से खोद निकाला गया था। इतना ज्यादा फौलाद तैयार किया गया, इतना अधिक लम्बा रेलमार्ग बिछाया गया, और इतनी ज्यादा लकड़ी चीरी गयी, इतने ज्यादा मकानात खडे किये गये, इतना ज्यादा कपडा बुना गया, आटा पीसा गया, तथा तेल साफ किया गया जितना इससे पहले के अमरीकी इतिहास के पिछले किन्ही पॉच वर्षो मे नहीं किया गया था। १८६० से १८७० तक के दशक उत्पादक-सस्थानो की सख्या ८० प्रतिशत बढ़ गयी और उत्पादनों का मूल्य १०० प्रतिशत। औद्योगिक क्रान्ति इस युग का एक वास्तविक तथ्य बन चुकी थी।

उद्योगपतियों के साथ साथ बैकरो और पूॅजी लगाने वाले लोगो को भी काफी फायदा पहुँचा। सन् १८६३ और १८६४ के नैशनल-बैकिंग-एक्ट-द्वारा कॉग्रेस ने जैक्सन-पक्ष के डेमोक्रैटों की अत्यन्त प्रिय स्वतन्त्र बैकिंग-प्रणाली का खात्मा कर दिया। नैशनल बैंक के नोटो के प्रचार के लिए, रास्ता साफ करने के उद्देश से स्टेट-बैको के नोटों पर कर लगा दिया गया, जिससे उनका अस्तित्व ही न रहे। इसके अलावा प्राइवेट बैकरों-जैसी नैशनल बैकिंग प्रणाली भी जारी की गयी। लडाई के दिनों में सरकार ने लाखों डालरो के मूल्य की कागजी-मुद्रा प्रचारित की थी उसका मूल्य बडी तेजी से घट रहा था यद्यपि सरकारी साख उसकी पीठ पर थी। कॉग्रेस ने निश्चय किया कि, इस प्रकार की मुद्रा 'ग्रीन-बैक' आगे के लिये छापना बन्द कर दिया जाये, और अधिकाश नोट वापिस कर लिये जायॅ तथा बाकी नोटो का मूल्य छपे मूल्य के बराबर ला दिया जाय। कॉग्रेस के इन निश्चयों के कारण राष्ट्रीय मुद्रा मे वह स्थिति उत्पन्न हो गयी, जिसकी जरूरत बहुत दिनो से अनुभव की जा रही थी;

लेकिन उसकी इस नीति मे अवमूल्यन की आशंका निहित थी और उसके कारण कर्जदार लोगों और खास तौर पर पश्चिमी किसानों के लिये काफी कठिनाइयाँ पैदा हो सकती थी।

सरकारी बाण्डो और ग्रीन-बैक नोटों की सट्टेबाजी करके कई लोगो ने काफी धन कमा लिया। लडाई के बुरे-से-बुरे दिनों मे ये ग्रीन-बैक नोट डालर पीछे ४० सेण्ट-जैसी छोटी रकम मे बिकने लगे थे, लेकिन उनके जरिये कानूनी तौर पर उनके छपे मूल्य पर सरकारी बाण्ड खरीदे जा सकते थे। जब कॉग्रेस ने बाण्डो के बदले मे असल और सूद की अदायगी सोने मे करने का वायदा किया, तो लाजमी तौर पर जानकार लोगों ने—जिन्हें देशभक्त कहना अनुचित न होगा—खतरा उठाकर भी अपना रुपया इन बाण्डों की खरीद मे लगा दिया और फायदा भी उठाया। सोने द्वारा अदायगी करके सरकार स्पष्ट रूप से घोषित अपने वायदे को इमानदारी से पूरा कर रही थी। लेकिन, सरकार की वित्तीय नीति के कारण वर्गविभेद को प्रश्रय ही मिला; क्योंकि जहाँ सिपाहियों को उनकी तनख्वाह वह ग्रीन-बैक नोटों मे अदा करती थी, जिनका दाम उस वक्त ५० से ६० सेण्ट तक था वहाँ बाण्ड खरीदने वालों की अदायगी वह डालरों के जरिये, जिनका दाम पूरे सौ सेण्ट होता था, करती थी। इसका अर्थ यह हुआ कि सारे राष्ट्र पर इस बात की जिम्मेवारी डाली जा रही थी, कि वह ऐसा राष्ट्रीय ऋण अदा करे, जिसका मूल्य अब बढकर असली दाम का दुगना हो गया था।

लेकिन, सबसे ज्यादा रुपया लोगों ने उन व्यवसायो अथवा उद्योगों से कमाया जो या तो लडाई से सम्बद्ध थे अथवा पश्चिम दिशा की बस्तियों के खुलने से। इनमें मुख्य थे—रेलमार्ग बिछाने, खान खोदने, लकडी, मास-पैकिंग, लोहा और फौलाद, तेल आदि के उद्योग और व्यवसाय। शीघ्र ही रेलमार्ग-निर्माता वाण्डरबिल्ट, स्टैफोर्ड और विलार्ड के, पैकिंग करनेवाले आर्मर स्विफ्ट, लकड़ी-व्यापार के बादशाह वेयर हाउसर, लोहे के श्रेष्ठ व्यापारी एण्ड्रू कार्नेगी और अब्राहम एस. ह्यूविट, पेट्रोल के प्रिंस जान डी. राकफेलर आदि के नाम घर-घर मे सुनाई देने लगे और उन्होंने बड़े-बडे राजनीतिज्ञों तथा साहित्यिको की जनप्रतिष्ठा का स्थान ग्रहण कर लिया। लडाई के कारण धन और राष्ट्रीय सम्पत्ति का वितरण इस लापरवाही और बडे पैमाने पर हुआ कि उसके कारण जहाँ हजारों यशस्वी धनिकों का प्रादुर्भाव हुआ वहाँ सैकडो बदमाशों को भो अपार धन की प्राप्ति हुई। सरकारों, राज्यो तथा सघीय

प्रशासन पर धन का प्रभाव पहले से बेहद बढ़ गया। धन के बल पर, लोग सामाजिक अधिकार प्राप्त करने लगे और शीघ्र ही वाण्डरबिल्ट तथा गूल्ड-जैसे धनिक लोगों को समाज ने उसी प्रकार सन्मान देना शुरू कर दिया-जिस प्रकार वह निकर-बाकर परिवारो को देता था। धन के बल पर न्यूयार्क के फिफ्थ-एवेन्यू के दोनों ओर ऊँची भव्य अट्टालिकाएँ उठ खडी हुई तथा चिकागो के मिचिगन-एवेन्यू की आर्थिक सहायता के बल पर अनेक कालेज तथा विश्वविद्यालय चल निकले, अनेक गिरजाघर और मिशन उठ खड हुए और बहुत से आर्केस्ट्रा तथा म्यूजियम उसी के बल पर पनप उठे। सम्पत्ति का सबसे अधिक केन्द्रीकरण औद्योगिक क्षेत्रों मे होना स्वाभाविक ही था। सन् १८६४ मे सब-से-ज्यादा आय-कर यानी कुल राष्ट्रीय आयकर का ६० प्रतिशत, सिर्फ न्यूयार्क, पेंसिलवानिया और मसाचुसेट्स के तीन औद्योगिक राज्य ही अदा करते थे। लेकिन, उत्तर तथा पश्चिम मे सर्वत्र, तथा अधिकाश दक्षिण मे भी जीवन का स्तर काफी ऊँचा उठा।

किसानो अथवा क्षेत्रपतियों को भी लडाई से तथा उसके बाद की आर्थिक 'गति' से कुछ फायदा हुआ यद्यपि वह उनकी आशानुकूल न था। रिपब्लि-कन-दल ने 'खेतों के लिये वोट दो' का नारा बुलन्द करके काफी शक्ति अपने लिये सचित कर ली और कुछ दिन बाद जब इस दल का शासन स्थापित हुआ तो तुरत ही उसने डेमोक्रैटिक-दल के एक राष्ट्राध्यक्ष द्वारा पहले से नापास कर दिये गये 'होमस्टेड-कानून' जैसे-क्षेत्र-सबधी कानून को दुबारा पास करा लिया। इस कानून की रू से कोई भी व्यक्ति पॉच साल तक लगातार खुद जोतने की रजामन्दी देकर १६० एकड तक सार्वजनिक भूमि जोतने के लिए प्राप्त कर सकता था। इस प्रकार के प्रगतिवादी कानून के कारण लाखो किसान पश्चिमी नौतोड़ जमीनो पर खेती करने के लिये वहाँ जाकर बसने मे समर्थ हो सके और इस प्रकार आर्थिक लोकतत्रवाद की काफी प्रगति हुई। लेकिन, इसके साथ-ही-साथ बहुत बडे भूभाग रेलमार्गों तथा अन्य निगमो को भी दे दिये गये अथवा भूमि का व्यापार करनेवाली कंपनियो या सट्टेबाजों के हाथ बेच दिये गये। इस तरह बेची गयी अथवा प्रदत्त भूमि का अधिक भाग भी किसानो के ही हाथ लगा; लेकिन इसके लिए उन्हें दाम खर्चना पडे। इसी समय काग्रेस ने एक और कानून पास किया, जिसके अनुसार लाखो एकड सार्वजनिक भूमि स्थिर-निधि तथा निर्वाह हेतु अनेक औद्योगिक तथा कृषि-सबधी कालेजो को अनुदान रूप मे दे दी गयी।

लेकिन, न तो लडाई से पहले न उसके बाद ही खेती का विकास सरकारी सहायता अथवा प्रोत्साहन पर निर्भर रहा। वह तो सेना की जरूरतों, नगरों की बढ़ती हुई आबादी तथा विदेशों की करोडों जनता की मॉग के बल पर ही पनपता रहा और उनकी इन जरूरतों से देश के गेहूं तथा अनाज-उत्पादकों, पशुपालकों तथा डेरीवालों को आगे बढ़कर काम करने के लिए काफी प्रोत्साहन मिला। मैदानों के आरपार रेलमार्ग बिछ जाने के कारण बेजुती भूमि तक पहुँचने का रास्ता निकल आया। साथ-ही-साथ इसी समय बाजार में ऊँचे फसल काटने के यत्र, उन्नत हल, मोवर तथा ट्वाइनबाइन्डर आदि मशीनों के कारण एक आदमी ही—बल्कि एक लडका ही—उतना काम करने लगा, जितना पहले दो आदमी किया करते थे। लिंकन के चुनाव के बीस वर्ष बाद तक के समय में मक्का, गेहू, ओट्स और जौ की पैदावार दुगुनी हो गयी। इसी तरह पशुओं में भेडों और सुअरों की सख्या भी दुगुनी हो गयी। चूंकि न्यू-इग्लैण्ड तथा दक्षिण प्रदेशों में खेती घट गयी थी, इसलिए यह प्रगति पुराने उत्तर पश्चिम और मिस्सिसिपी पार के पश्चिमी प्रदेशों में हुई। युद्धकाल के दशक में मिसूरी की आबादी पचास प्रतिशत से ज्यादा बढ गयी थी, इसलिये २ लाख व्यक्तियों की आबादीवाला यह राज्य सयुक्त-राष्ट्र का पॉचवा राज्य माना जाने लगा। नेब्रास्का जिसे १८६७ में राज्य पद प्राप्त हुआ था, सन् १५८० तक पचास हजार की आबादी का प्रदेश बन गया था। डकोटा के प्रदेश में जहाँ युद्धकाल में सियोक्सो का अखंड राज्य था, वहाँ १५ वर्ष बाद ५० हजार से ज्यादा किसान आ बसे थे। ऊन का उत्पादन वरमौण्ट से हटकर ओहियो जा पहुँचा था और शीघ्र ही पश्चिम के पहाडी राज्य इस उत्पादन के अग्रणी बन बैठे। आइओवा, कन्साज, नेब्रास्का तथा मिन्नेसोटा राज्य जनगणना के अनुसार गेहू तथा अन्न-उत्पादक अग्रणी राज्यों में गिने जाने लगे। खेती-बारी का साम्राज्य अबाध गति से अब पश्चिम की ओर बढ रहा था।

तो भी, देश की भावी अर्थव्यवस्था के पूर्वाभासस्वरूप किसानों को खेती के उत्तम वर्षों में भी, अन्य वर्ग के लोगों की अपेक्षा कम-ही लाभ हो रहा था। हाँ, मजूरवर्ग को भी अवश्य अधिक लाभ नहीं हो रहा था। इन लोगों पर ही सबसे पहले तगी का असर पडा। अत्यधिक विस्तार के कारण सीमा-रहित उत्पादन भी होने लगा। लम्बे-लम्बे विशाल फार्मों तथा खेती के लिए मॅहगी कृषि-मशीनों की खरीद करने का मतलब था कर्ज के बोझ से इन फार्मों

को लाद देना और यह बोझ तभी उठाया जा सकता था, जब कृषि-उत्पादन के दाम बाजार मे ऊँचे रहे। पूर्व की पुरानी बस्तियो के किसानों पर पश्चिमी नये क्षेत्रों के किसानों को उत्पादन-प्रतिद्वन्द्विता का बुरा प्रभाव पड रहा था। पश्चिमी किसानों को जहाँ अच्छी उपजाऊ जमीने प्राप्त थी, वहाँ वे बाजारो से काफी दूर थे। इसलिए उन्हे रेलमार्गों की दया पर निर्भर रहना था। पुराने युगों के समान अब भी किसानो को अनेक घंटो कडी धूप मे मेहनत करनी पडती थी, सामुदायिक जीवन के सुख से वंचित एकाकी जीवन बिताना पडता था और अन्त मे उनके हाथों इतनी मेहनत के बावजूद भी बहुत कम प्राप्त होता था।

मुख्य वर्गों मे केवल मजदूर ही ऐसे थे, जिन्हे लडाई के कारण कोई फायदा न हुआ था। कोयले की खानों मे, फौलाद की भट्टियों के सामने, करघों पर, जूते बनाने की मशीनों पर, जहाज बनाने के कारखानो मे और रेलमार्ग बिछाते समय १० से लेकर १२ घंटे तक काम कर के, इन लोगो ने उत्तर को विजय प्राप्त कराने मे काफी मदद दी थी और वास्तविक युद्ध मे भाग लेने वाले सैनिकों का बडा तबका भी इसी वर्ग के लोगो मे से आया था। लडाई के प्रभावों से प्रताडित तथा बढ़ते हुए मूल्यों से आतंकित श्रमिक-संगठन १८५७ की विभीषिका के कारण विशृखलित हो गये थे। लेकिन, आगे चलकर वे फिर सघटित हो उठे। फिर भी श्रमिकों के दृढ सघटन की आवश्यकता मौजूद थी। मजूरी-दर जरूर बढ़ गयी थी, लेकिन चीजों के दाम और भी ऊँचे चढ गये थे। कम-से कम मूल्य ऑकने वालों का भी अनुमान था कि १८६८ तक अधिकाश मजदूरो की हालत सन १८६० की अपेक्षा ज्यादा खराब हो गयी थी। लडाई के बाद १ लाख से ज्यादा सैनिक फिर से नागरिक जीवन मे लौट आये और बाहर से आने वाले प्रवासियों की सख्या भी बढ़ने लगी, नौकरियॉ पाने के लिए प्रतिद्वन्द्विता बेहद बढ़ गयी, इसलिए दक्ष कारीगरो ने अपनी सेवा की सुरक्षा करने के उद्देश्य से जल्दी-जल्दी अपने सघटन बनाने शुरू कर दिये। 'नाइट्स आफ सेंट क्रिस्पिन' जूते बनाने वालो की एक सस्था, जो थोडे दिनो ही जीवित रही, इसी प्रकार के सघटन का परिणाम थी। थोडे दिन बाद ही उसका अन्त हो गया, इससे पता चलता है कि मशीनो तथा फ़ैक्टरी व्यवस्था के साथ प्रतिद्वन्द्विता करना कितना निरर्थक हुआ करता है। दो और इससे बडे तथा दीर्घजीवी सघटनों का भी रोचक इतिहास है—वे थे नैशनल-लेबर-यूनियन तथा 'नाइट्स आव लेबर'। दोनो का ही जन्म १८६० के लगभग हुआ था और

दोनों की ही स्थापना श्रमिकों की विविध श्रेणियों, किसानों तथा सुधारवादी टोलियों को संघटित करने के लिए हुई थी।

इन प्रयत्नों के बावजूद, अधिकाश श्रमिक इन संघटनों के बाहर ही बने रहे और उन्हें सदा बदलते रहनेवाले आर्थिक ढॉचे से उत्पन्न सभी कठिनाइयो का सामना करना पडा। साथ-ही-साथ महँगाई तथा अवमूल्यन के खतरो का भी। व्यापारी वर्गो के हितों की रक्षार्थ कानून बनाने के लिए उत्सुक सरकार ने श्रमिक वर्ग के लिए कुछ नही किया। निस्सन्देह १८६० में उसने सार्वजनिक निर्माण-कार्य मे काम का दिन ८ घंटे का निश्चित कर दिया था, लेकिन इस प्रशंसनीय उदाहरण का अनुगमन विस्तृत रूप से नही किया गया। लेकिन, सरकार ने अपने इस प्रशसनीय कार्य के विपरीत सन् १८६४ मे एक कानून भी पास किया, जिसके द्वारा ठेकेदार का बाहर से मजदूर लाना कानूनी करार दे दिया गया। यह कानून शीघ्र ही मसूख कर दिया गया, लेकिन मजदूर लाने का यह तरीका बाद में भी बीस बरसों तक अबाध गति से जारी रहा।

राजनीति : युद्धोत्तर काल की राजनीति की सबसे बडी विशेषता उसकी एकरूप नीरसता ही थी। पीयर्स तथा बुकानन के शासन-काल अन्य प्रशासन-कालों की तरह ही शिथिल अयोग्य तथा भ्रष्ट साबित हुए। लेकिन, ग्राण्ट का शासनकाल विशेष रूप से अधिक अयोग्य तथा भ्रष्ट साबित हुआ। राष्ट्रीय पुनर्निर्माण-कार्य के इस संकटकाल मे शासकीय कुशलता की बेहद जरूरत थी; लेकिन राजनीति के चक्कर में आकर वह दलबन्दी, पदलोलुपता और भ्रष्टाचार की बुरी तरह शिकार हो गयी।

पुनर्निर्माण-काल की राजनीति का मौलिक सिद्धान्त ही था रिपब्लिकन-पार्टी की सत्ता स्थापित करना। स्मरण रहे, यह दल अपेक्षाकृत नया था और पूरी तरह से विभक्त। लड़ाई के दिनों मे इस दल ने खुल कर मनमानी की थी और सत्ता पूरी तरह हथिया ली थी। लेकिन, लड़ाई के बाद जब कुछ दक्षिणी राज्य फिर से गणराज्य मे शामिल हुए और १८७१ तक सभी शामिल हो गये, सभी सरकारी विभागों पर लगातार रिपब्लिकन-दल की ही सत्ता की बनी रहना असंभव-सा हो चला, क्योंकि इस काल में डेमोक्रेटिक-दल की सख्या बराबर बढ़ रही थी और यह दल उत्तर में भी काफी मजबूत था। दक्षिग मे तो युद्ध और उसके बाद के पुनर्गठन-कार्य के कारण उसका ठोस प्रभाव था ही। अगर उत्तर के तथा दक्षिण के डेमोक्रेट मिलकर कहीं

अपने उम्मीदवार चुनाव के लिए खडे करते और नीति-निर्धारण करते तो पूरी संभावना थी कि वे रिपब्लिकनो को अधिकार और पदों से निकाल बाहर कर सकते थे और शासन एक बार फिर उन्हीं का हो जाता।

लेकिन, सिर्फ दल के हाथ सत्ता बनाये रखना ही तो न था; उसके साथ-साथ दल की निर्धारित नीति को भी अक्षुण्ण बनाये रखने का भी सवाल था, यानी दल चाहता था कि तटकर की नयी दीवार बनी रहे, नैशनल-बैंकिंग का प्रचार हो, रेलमार्गों को दी जानेवाली सहायता का कार्यक्रम जारी रहे और विशेषतः मुद्रा-स्थिरता का तथा सरकारी वायदों के सोने द्वारा भुगतान की नीति जारी रहे। ये आर्थिक प्रश्न उन सामाजिक समस्याओ—जैसे हब्शियों या नीग्रो लोगों की स्थिति, तथा उन भावनात्मक समस्याओं—जैसे कि देश-भक्तों को इनाम देना और देशद्रोहियो को सजा देना आदि के साथ मिलकर बड़ी गडबड़ी मे पड़ गये थे।

इन प्रश्नों को सुलझाने के लिए रिपब्लिकन-दल ने जो जो शानदार दॉव-पेच और चालबाजियॉ अख्तियार की वे अब अस्पष्ट हो गयी थी। आर्थिक नीति को बनाये रखने और बढ़ाने के लिए यह जरूरी था कि दल पदारूढ बना रहे और तब तक बना रहे जब तक कि उसकी अर्थनीति इतनी दृढ़तापूर्वक जडे न जमा ले कि उसे आगे चल कर बदला न जा सके। ऐसा करने के लिए प्रारम्भिक कदम पहले ही उठाये जा चुके थे, यानी अधिकाश दक्षिणी सदस्यों को मतदान तथा पद प्राप्ति के अधिकारों से वचित कर दिया गया था, और ज्यादा विरोध करने वाले कुछ दक्षिणी राज्यो के प्रतिनिधियों को कॉग्रेस-भवन मे घुसने की खुलकर इजाजत भी दी गयी। लेकिन, इस तरह की आज्ञाऍ देर तक नहीं चलायी जा सकती थी, यह स्पष्ट था। दक्षिण मे रिपब्लिकन-दल को सघटित करना ही इसका एक अन्तिम हल प्रतीत होता था। लेकिन इस तरह के सघटन के आधार वे गोरे लोग ही हो सकते थे, जिन्होने दक्षिग के शासक वर्ग का चिरन्तन विरोध किया था, यानी वे गरीब और अनपढ लोग, जो अपनी बात सुनाने के लिए आवाज बुलन्द करना चाहते। लेकिन इस तरह के लोगों की सख्या इतनी ज्यादा न थी कि इससे कोई लाभ उठाया जा सकता। बहुमत प्राप्त करने के लिए नीग्रो लोगो को वोट का अधिकार देना जरूरी था, लेकिन उसके साथ यह भी जरूरी था कि वे लोग वोट ठीक तरह से दे। इसलिए मताधिकार का प्रबन्ध पहले पुनर्निर्माण कानूनों द्वारा, फिर वैधानिक सशोधनो द्वारा किया गया।

उपर्युक्त कार्यक्रम बहुत ही स्पष्ट-सा था, लेकिन उसके जरिये सफलतापूर्वक काम न चलाया जा सका। फौजी ढंग के पुनर्निर्माण-कार्य के कारण दक्षिण के लोगों में सरकार के प्रति दुर्भावना और विरोध बढ़ ही चले थे। नीग्रो लोगों को राजनीतिक फायदा पहुँचाने की बात और भी महत्त्वपूर्ण हो उठी; क्योंकि रिपब्लिकन-दल अपनी इस नीति के कारण जातीय एकता के सिद्धान्त का पोषक समझा जाने लगा; पर दक्षिण के अधिकांश लोग इस सिद्धान्त के विरोधी थे। इसलिए, इस किस्म के अदूरदर्शितापूर्ण तथा दुस्साहसपूर्ण उपायों का अवलम्बन करने के कारण रिपब्लिकन-दल की स्थिति दक्षिण में शक्तिशाली होने के बजाय और भी निर्बल हो गयी। जैसे संघीय सैनिक सत्ता इस प्रदेश से हटी, त्योंही रिपब्लिकन-दली सब संगठन ठप हो गये और दक्षिणी डेमोक्रेट-दल ने इस प्रकार की व्यवस्थाएँ कर डालीं कि नीग्रो लोगों को दिया गया मताधिकार उन तक न पहुँच सके। इसके बाद दक्षिणी डेमोक्रेट-दल की मनमानी खूब चली। सन् १८८० से १९२८ तक दक्षिण के किसी राज्य ने रिपब्लिकन-दल के किसी भी व्यक्ति को राष्ट्राध्यक्ष-पद के लिए एक वोट तक न दिया।

यद्यपि रिपब्लिकन-दल के आर्थिक कार्यक्रम को सैनिक पुनर्निर्माण तथा नीग्रो-मताधिकार की वैधानिक आवश्यकताओं के कारण स्थिरता उपलब्ध न हो सकी थी तो भी संविधान में किये गये कुछ नये प्रतिबन्धों के कारण उसे कुछ स्थिरता अवश्य प्राप्त हो गयी। पुनर्निर्माण की प्रारम्भिक अवस्थाओं में जबकि रेडिकल लोग राष्ट्राध्यक्ष जानसन के साथ जूझ रहे थे, कांग्रेस की एक संयुक्त समिति ने नागरिकता की परिभाषा करने, स्वतंत्रता से सम्बद्ध नागरिक अधिकारों की रक्षा करने, कान्फेडरेसी के नेताओं का मताधिकार छीनने तथा फेडरल (संघीय) ऋण को वैध घोषित करने और कान्फेडरेसी (राज्य-समूह) के ऋण को अमान्य करने के उद्देश्य से सर्वसम्मत संशोधन तैयार किया। इस संशोधन का जो चौदहवें संशोधन के नाम से प्रसिद्ध है, पहला अनुच्छेद इस प्रकार है :—

"कोई राज्य ऐसा कोई कानून लागू न कर सकेगा, जिसके द्वारा संयुक्त राष्ट्र अमरीका के नागरिकों की सुविधाएँ कम की जायें अथवा उनकी सुरक्षा में व्यवधान आये। और न किसी राज्य को यह अधिकार होगा कि वह किसी व्यक्ति को बिना कानूनी कार्यवाही के, प्राण, स्वतन्त्रता, तथा सम्पत्ति से वंचित कर सके, न किसी भी व्यक्ति को जो उसके अधिकार-क्षेत्र में रहता हो वह राज्य समान कानूनी संरक्षण देने से इनकार कर सकेगा।"

इन स्मरणीय वाक्यो ने आगे चलकर वह काम कर दिखाया जैसा रिपब्लिकन दल की नीति न कर सकी थी। बडे-बडे व्यापारिक निगमो की सपत्ति तथा व्यावसायिक विधियो को उसने वैधानिक अनुमति प्रदान की; क्योंकि शीघ्र ही इस वैधानिक अनुमति का अर्थ अदालतो ने यह लगाया कि किसी भी राज्य को इस प्रकार के कानून बनाने का अधिकार नहीं है, जिसके द्वारा वह निगमो को उनकी सपत्ति से अथवा इनसे प्राप्तव्य उचित आय से वचित किया जा सके। लेकिन, न्यायालयो का इस प्रकार का अर्थान्वय १८९० के बाद के दशक तक ही—जबकि पापुलिज्म के बढ़ते हुए ज्वार को रोकने की वेहद जरूरत थी—ठीक समय पर पूर्णतया विकसित हो सका।

ग्राण्टकालीन-प्रशासन का एक ही उद्देश्य—प्रधान उद्देश्य—यह था कि इस प्रकार की पुनर्निर्माण नीति का पोषण करते रहना, जिसके द्वारा दक्षिणी राज्य उत्तरी राज्यो के नीचे दवे रहें और डेमोक्रैट-दल के लोगों पर रिपब्लिकनों का प्रभुत्व कायम रहे। ऐसा कर पाने मे वह शासन पर्याप्त सफल भी रहा· क्योंकि उसे युद्ध मे विजय प्राप्त करने का श्रेय भी प्राप्त था तथा ग्राण्ट की प्रतिष्ठा भी उसके साथ थी। इसीलिए इस प्रशासन का कार्यकाल बढ़ता ही चला गया। जनता को दूसरे दलो पर, जिनका सवन्ध दासप्रथा, उत्तर से विलगता आदि से था, विश्वास न था और ग्राण्ट-प्रशासन को उन व्यापारिक हितो का जिनकी रक्षा उसने की थी पूरा समर्थन प्राप्त था। लेकिन, कुछ समय बाद ये सभी तरजीहे खत्म हो गयीं। ग्राण्ट यद्यपि महान सैनिक था, लेकिन प्रधान प्रशासनाधिकारी वह बहुत ही रद्दी किस्म का था तथा वैदेशिक मामलात को छोडकर उसका शासनकाल लगातार असफलताओं का ही काल सावित हुआ। वाशिगटन से ग्राण्ट तक के अमरीकी इतिहास के घटनाक्रम का सिंहावलोकन करते हुए हेनरी एडम्स ने लिखा है कि "ग्राण्ट ने क्राति के घटना-क्रमों को उपहासास्पद बना डाला था।"

उनके पदारूढ़ होने के कुछ दिन वाद ही, उच्च पदस्थ लोगो के भ्रष्टाचार की कहानियाँ प्रचलित हो चली और उनमे से अधिकाश निराधार भी न थीं। यूनियन पैसिफिक-नामक सस्था, जिस पर राष्ट्र को गर्व था, कुछ ऐसे वदमाशो के दल की आर्थिक सहायता पर अवलम्बित थी, जो काग्रेसी सदस्यों को भाडा देकर अपनी मनमानी कराया करते थे। नौसेना विभाग खुले आम ठेकेदारो से ठेको के सौदे किया करता था। आन्तरिक विभाग भी जमींदारो का शिकारगाह बना हुआ था। इडियन-ब्यूरो भी पोस्ट ट्रेडरशिप का नीलाम ऊँची-से-

ऊँची रकम देने वाले के हाथ करता था और अपने अभिभावको के हितों की रत्ती भर परवाह न करता था। कोष-विभाग भी बकाया करों की वसूली ऐसे लोगों के हाथ सौप देता था, जो उससे मनमाना फायदा उठाते थे। न्यूयार्क और आर्लियंस के तटकर दफ्तरों मे जोड़तोड़ का बोलबाला था। सेण्ट लुई के एक 'व्हिस्की-दल' ने सरकार को, आबकारी-टेक्स के मामले मे करोड़ो डालर की चोट पहुँचायी। इस सब के बारे मे रिपब्लिकन-दल के एक सिनेटर ने लिखा था—"ऐसा लगता है, मानों रिपब्लिकन-दल का कोई पुरसाने-हाल ही बाकी नहीं रहा। मेरे ख्याल से तो इससे बढ़कर भ्रष्टाचार और दुराचारपूर्ण राजनीतिक-दल कभी भी दुनिया मे न रहा होगा।"

सहकारी तन्त्रकों पर भ्रष्टाचार का इतना असर, जाहिर तौर पर युद्धकालीन गड़बड़ी तथा अपोमेटोक्स की सधि के बाद की सट्टेबाजी के कारण ही था। इस भ्रष्टाचार के कारण, समय आते ही उत्तर के लोगों का ग्राण्ट पर से भरोसा उठ गया, यद्यपि उनका स्नेह उस पर पूर्ववत ही बना रहा। पदारूढ होते समय ग्राण्ट पर लोगों का जितना भरोसा था, उतना जैक्सन के बाद के किसी भी राष्ट्राध्यक्ष पर न था और न सन् १७८९ से लेकर तब तक किसी भी राजनीतिक दल को पुनर्निर्माण का अवसर ही प्राप्त हुआ था, जैसा रिपब्लिकन दल को मिला था। लेकिन, चार बरस के भीतर ही दल की धज्जियाँ उड़ गयीं और उसका स्थान एक ऐसे उदार रिपब्लिकन दलीय संघटन ने ले लिया, जिसने सुधार तथा समझौते का व्रत ले रखा था। यद्यपि कुछ डेमोक्रेट-दल के लोग भी इस नये दल मे शामिल हो गये; लेकिन इस वक्त तक उनका इतना जोर न था कि वे ग्राण्ट को अपदस्थ कर पाते। पर, दो बरस के बाद डेमोक्रेटों ने ससद के निचले गृह पर कब्जा कर लिया और १८७६ के राष्ट्राध्यक्षीय चुनाव में इस दल के उम्मीदवार को रिपब्लिकन दल के उम्मीदवार की अपेक्षा २५ हजार वोट ज्यादा मिले। आपाधापी की राजनीति का फिर भी अन्त न आ पाया था; लेकिन इसके बाद लगभग आधी शताब्दी तक, राष्ट्र को शासकीय कर्मचारियों तथा कॉंग्रेसियों के भ्रष्टाचार की इतनी शर्मिन्दगी नहीं उठानी पड़ी।

तेरहवॉ परिच्छेद

बृहत् व्यापार का विकास

औद्योगिक साम्राज्य की नींव : जेफर्सन एक ऐसे महान् ग्रामीण लोकतत्र के स्वप्न देखा करता था, जिसमे स्वतन्त्र किसानो का बाहुल्य हो और राष्ट्र बडे शहरों के अत्याचार से पीडित न हो, न उसमे उन फैक्टरियो व कोयले की खानों की-सी भयकर दासता हो जिसके दर्शन उन्होने इग्लैण्ड में किये थे और न वहॉ फ्रास और इटली जैसी गुलामी ही हो। उन्होने लिखा था—"जब मेहनत करके खाने के लिए हमारे पास काफी जमीन पडी हुई है तब हमें अपने नागरिको को कभी भी कारखानों की मेजो पर काम करते या जूट मिलों का हैण्डल घुमाते देखने की इच्छा न करना चाहिए।" उसका विश्वास था कि अमरीका ने एक खेतिहर-लोकतन्त्र की नीव डाल दी है और लुइसियाना-पर्चेज के जरिये उसके विस्तार का भी पूरा प्रबन्ध कर दिया है। वह कहा करते थे कि, अमरीका के पास इतनी जमीन है, जो एक हजार पीढ़ियों तक के लिए भी काफी होगी। जेफर्सन ने हैमिल्टन को चुनाव मे हराया था और उसका ख्याल था कि समकालीन इंग्लैण्ड के अनुरूप सयुक्त-राज्य-अमरीका को बनाने की हैमिल्टन-योजना को उन्होंने विफल बना दिया है। उसके कथनानुसार राष्ट्र को अब पश्चिम की ओर, पहाडो के उस पार और मैदानों के दूसरे छोर बढ़ना होगा, न कि पूर्वीय महासागर की ओर। राष्ट्र को तो अब किसानों का स्वर्ग बनना था; न कि व्यापारियो, महाजनो और उद्योगपतियों का सरक्षित देश। और, ज्योंही जेफर्सन और उसके अनुयायियों का आधिपत्य ह्वाइट-हाउस पर हुआ और कॉग्रेस मे भी उनका बहुमत हुआ त्योंही यह स्वप्न करीब-करीब साक्षात्-सा ही हो गया। जैसे-जैसे राष्ट्र की सीमाऍ पश्चिम प्रशान्त सागर की ओर तथा दक्षिण मे रियो-ग्राण्डे की तरफ बढ़ती गयीं त्यों-त्यों खेती का दौर-दौरा भी औद्योगिक मशीनो की अपेक्षा कहीं ज्यादा तेजी से बढ़ता गया।

लेकिन, आखिर में जीता हैमिल्टन ही; कम-से-कम आर्थिक मामलो मे तो

उसी का बोलबाला रहा। बैंकों के बारे में भी उसी की राय मानी गयी और व्यापार के बारे में भी उसी के सिद्धान्त स्वीकार किये गये। 'उत्पादनों' के बारे मे उसकी रिपोर्ट ही अमरीका की पथदर्शक बनी। वीहाकेन के द्वंद्व-युद्ध मे उसके मारे जाने के एक सौ साल के बाद, सयुक्त-राष्ट्र-अमरीका विश्व का सबसे बडा औद्योगिक राष्ट्र माना जाने लगा। उसने पृथ्वी के सभी राष्ट्रों से ज्यादा कोयला तथा कच्चा लोहा खोद निकाला, फौलाद तैयार किया, पेट्रोल निकालकर साफ किया और रेलमार्ग बिछा डाले तथा फैक्टरियॉ खडी कर लीं। मौटिसिलो के इस दूरदेश व्यक्ति के स्वर्गवास के बाद, खेती के उत्पादनो की अपेक्षा औद्योगिक उत्पादनों का मूल्य पाचगुना हो गया और बड़े बडे महाजन तथा उद्योगपति ही वाशिंग्टन राजधानी की नीति का सूत्र-सचालन करने लगे थे। किसानों की दशा बराबर गिर रही थी और अन्देशा होता था कि कही वह टुटपुँजिया जोता मात्र न रह जाय।

शासकीय नीतियों की सहायता मिलते रहने के बावजूद, अमरीकी अर्थ-व्यवस्था का यह परिवर्तन पूर्णतः स्वाभाविक था। अमरीकीन औद्योगिक विकास के छः मुख्य आधार थे—रूसियों के अलावा शायद ससार के अन्य सभी राष्ट्रों से अधिक विशाल पैमाने पर तथा विविध प्रकार के, कच्चे माल के उपलब्ध स्रोत, इस कच्चे माल को पक्के माल में परिवर्तित करने योग्य आविष्कार और टेकनीके अधिकाधिक विस्तृत होती हुई, अर्थव्यवस्था की सभी आवश्य-कताओ के अनुकूल जलीय तथा रेल-यातायात सुविधाओं की प्रणाली, आबादी की वृद्धि तथा विदेशी बाजारों के विस्तार के अनुपात के साथ तेजी से बढ़ती हुई घरेलू बाजार व्यवस्था; प्रवासियों के कारण सदा बढ़ती हुई और नयी श्रमिकशक्ति, राज्यों तथा विभागो के बीच कराधान-व्यवस्था का अभाव, विदेशी स्पर्धा से सरक्षण और प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष सरकारी सहायता की व्यवस्था। इन मौलिक तत्त्वों के अलावा राष्ट्र का वह साहसिक मनोभाव तथा आशापूर्ण वातावरण भी, जो प्रारभ से ही इस कार्य का प्रधान अंग था, इस विकास का कारण बना।

इस औद्योगिक क्रान्ति के आधार थे—कोयला, पेट्रोल, लोहा और बिजली भी। पेसिलवानिया तथा पश्चिमी वर्जीनिया राज्यों के पर्वतीय प्रदेशों मे, इलिनोइस के घास के मैदानों मे ग्रेट-स्मोकीज के ढालो पर, कैन्साज, कोलोरैडो और टैक्साज के लाखो एकड के क्षेत्रो मे एन्थ्रासाइट और बिटुमिनस कोयले का अक्षय भण्डार भरा पड़ा था, जिसके बल पर सदियो तक अमरीकीन

कारखाने चल सकते थे। सन् १९१० तक राष्ट्र ५० करोड़ टन कोयला प्रति वर्ष खोदने लगा था, जो इस उपलब्ध भंडार के १ प्रतिशत से भी कम भाग से प्राप्त हुआ था। शक्ति के दूसरे मौलिक स्रोत, पेट्रोल के बारे मे भी सयुक्त-राज्य-अमरीका इतना ही सपन्न था। सन् १९०० के बाद किसी भी वर्ष मे पेट्रोल का अमरीकी उत्पादन शेष सारे ससार के कुल उत्पादन से कभी कम नहीं रहा। टैक्साज, आक्लाहोमा, कैन्साज़, इलिनोइस और कैलिफोर्निया मे नये क्षेत्रों के उद्घाटन के कारण शक्ति के इस स्रोत के शीघ्र समाप्त हो जाने की आशंकाएँ भी खत्म हो चुकी। कच्चे लोहे का भी वहाँ बाहुल्य मौजूद था। लेक-सुपीरियर के तटो के चारो ओर, दक्षिण के उस स्थान पर जहा टेनेसी कोल-एण्ड आयरन कपनी का उद्भव हुआ तथा पश्चिम मे जहाँ कोलैरेडो-फ्युयल एण्ड आयरन कंपनी का विकास हुआ, सर्वत्र कच्चे लोहे की बहुतायत पायी जाती है। पिछले ५० वर्ष से लगाये जा रहे, सही हिसाब-किताब और अन्दाजो के बल पर यह स्पष्ट रूप से अब कहा जा सकता है कि, कम-से-कम अगली दो शताब्दियों तक के लिए यह भंडार पर्याप्त होगा। जलशक्ति का भी सबसे बडा भंडार प्रकृति ने सयुक्त राज्य अमरीका को प्रदान किया है जिसके बल पर वह ३० करोड की आबादी की औद्योगिक जरूरते पूरी करने की सामर्थ्य रखता है।

सयुक्त-राष्ट्र-अमरीका के भौतिक साधनो के इतिहास की यह एक विशेषता है कि उनमे से अधिकाश की प्राप्ति सन् १८५० के लगभग ही हुई थी। कच्चे लोहे की खुदाई उपनिवेश-काल से ही शुरू हो चुकी थी· लेकिन सयुक्त राष्ट्र-अमरीका का लोहे और इस्पात विषयक विश्वप्रभुत्व उत्तर मिचिगन तथा लेक सुपीरियर के क्षेत्रों का पता लगने के बाद स्थापित हुआ। सन् १८५९ मे कर्नल ड्रेक ने पश्चिमी पेसिलवानिया मे अकस्मात् पेट्रोल का पता पा लिया। पॉच साल मे ही इस तेल का उत्पादन २ लाख बैरलो से भी ज्यादा होने लगा तथा हजारो बरमे व लाखो डालर इस काम मे लगा दिये गये। इन पेट्रोल-क्षेत्रो की ओर लोगों की भीड उसी तरह उमड पडी जिस तरह १० साल पहले कोलोरैडो की खानो की ओर उमडी थी। मिचिगन मे जब से लोगो ने बसना शुरू किया, तभी से वहॉ तॉबे की खुदाई शुरू हुई थी, लेकिन मोण्टाना तथा आरिजोना की खुदाई १८८० के बाद शुरू हुई। सन् १८८२ मे अनाकोण्डा की खान खुलते ही, पूरा मोण्टान राज्य ही 'ताम्र-शाहों' की परस्पर स्पर्धा की रणस्थली बन गया जहॉ ये लोग न केवल

औद्योगिक एकाधिपत्य के लिए झगड़ते थे बल्कि राजनीतिक प्रभुत्व के लिए भी। सन् १८५९ मे कोलोरैडो की तथा १८६० के बाद नेवाडा और मोण्टाना की चॉदी की खानों का पता लगने के कारण, देश की अर्थव्यवस्था तथा अर्थनीति दोनों ही व्यापक रूप से प्रभावित हुई। मिसूरी की सीसे की खाने और इलिनोइस का गालेना-क्षेत्र दोनों नागरिक युद्ध से पहले ही काफी प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके थे; लेकिन सीसे का उत्पादन सन १८७० के बाद ही इतना अधिक हो पाया कि जिससे नलों और छपाई के काम के लिए उसका विस्तृत उपयोग शुरु किया जा सका। सन १८७० मे ही पोर्टलैण्ड सीमेण्ट-बाज़ार मे आया। एलेक्ट्रोलिटिक-प्रक्रिया के आविष्कार के कारण १८८७ के बाद अल्युमिनियम का भी व्यापारिक उपयोग होने लगा और १९०० तक उसका उत्पादन ७ लाख पौण्ड तक जा पहुॅचा। सन १८९३ में जब हेनरी एडम्स कोलम्बिया की विश्व-प्रदर्शनी देखने गया, उसने वहॉ डायनमो देखा और उसने नतीजा निकाला कि यह आविष्कार आधुनिक इतिहास की सबसे मुख्य घटना थी। एक सदी के बाद तो बड़े-बड़े बॉध बना कर बिजली पैदा की जाने लगी और भाफ का स्थान बिजली ने लेना शुरू कर दिया।

ससार के अन्य लोगों की अपेक्षा शायद अमेरिकनों ने ही विविध प्रकार के तथा अद्भुत् आविष्कारों को सबसे ज्यादा पेटेण्ट कराया। सन् १८६० और १९०० के बीच, सयुक्त राष्ट्रीय अमरीकी पेटेण्ट दफ्तर ने ६७६००० आविष्कारों को पेटेण्ट किया था। उसके बाद से तो इन पेटेण्ट किये गये आविष्कारों की सख्या ज्योतिष की सख्याओं के समान अनगिनत गणना तक जा पहुॅची है। प्रमुख आविष्कार अधिकतर १८-वीं सदी के अन्तिम तथा १९-वी सदी के प्रारंभिक वर्षो मे ही हुए। एलाई हिटने का रूई-पींजक, राबर्ट फुल्टन का भाफ से चलने वाला जहाज, इलियास हाऊ की सिलाई मशीन, चार्ल्स गुडईयर का वल्कनाइज्ड रबर, साइरस मैक कौर्मिक और ओबेद हेस-द्वारा करीब-करीब एक ही समय आविष्कृत हार्वेस्टर मशीन इसी काल की वस्तुऍ थीं। लेकिन, नये यंत्रो का बड़े पैमाने पर उत्पादन तो इस्पात उद्योग के विकास तथा उद्योगों मे बिजली-विनियोग के बाद ही शुरू हो सका।

यहॉ कई नये चमत्कारी आविष्कारों का सक्षिप्त विवरण अनुचित न होगा; क्योंकि उससे नये अमरीका के निर्माण में उनके महत्व का पता चलता है। मेक्सिको युद्ध से पहले एफ़. बी. मोर्स नामक एक व्यक्ति ने, जो शायद अमरीका का लियोनार्दो कहा जा सकता है—क्योंकि वह भी चित्रकला छोड़कर

विज्ञान की·ओर प्रवृत्त हुआ था—विद्युत-सचार-परिवहन के सिद्धान्तो का आविष्कार किया और उसने कॅग्रिस को वाशिंगटन से बाल्टीमोर तक तारो की लाइन लगाने के लिए राजी कर लिया। उसके इस आविष्कार से लाभ उठाने के लिए, सन् १८५६ मे वेस्टर्न यूनियन कम्पनी की स्थापना हुई और इसके बाद तो यह तथा दूसरी और कंपनियॉ देश भर मे खंभे खडे करने तथा तार लगाने के काम में बेतरह जुट गई। अतलान्तक-महासागर के आरपार सागरीय केबुल लगाने का प्रयत्न भी १८५५ के लगभग शुरू हो गये थे; लेकिन सन् १८६६ से पहले वे सफल न हो सके थे। सन् १८६६ मे ही 'ग्रेट ईस्टर्न' कपनी ने न्यू फाउण्डलैण्ड और आयरलैण्ड के बीच सब-से पहले सफलतापूर्वक केबुल की स्थापना की। असोशियेटेड-प्रेस ने छः हजार डालर खर्च करके इस केबुल के जरिये तुरन्त ही प्रशा के शासक विलियम का प्रशियन पार्लियामेट के सामने दिया गया पूरा भाषण इसीलिए अमरीका भेजा, कि जिससे अमरीकी लोग वैज्ञानिक आविष्कारो के विनियोग का महत्व समझ सके। सन् १८७६ मे स्काटलैण्ड से आये हुए एक प्रवासी अलेक्जेण्डर ग्रैहम बेल ने एक टेलिफोन-यंत्र का प्रदर्शन किया और कुछ ही वर्षों मे हर एक व्यावसायिक दफ्तर मे टेलिफोन-बाक्स लगा दिये गये तथा सभी बडे·बड़े शहरों की गलियो मे टेलिफोन के तारों के कारण धुंधलापन छा गया। इसके २५ वर्ष बाद २५ करोड डालर की पूॅजी से अमेरिकन टेलिफोन तथा टेलिग्राफ कपनी सघटित की गयी।

राष्ट्रीय विस्तार के अनुक्रमानुसार परिवहन के साधनों मे भी सुधार होता गया। आटोमेटिक ब्लाक सिगनलों के उपयोग, एयर ब्रेक, कार, कपलर और सन् १९०० के बाद लोहे के बने डिब्बों के कारण रेल-यात्रा अधिक सुरक्षित हो गयी और पुलमैन-स्लीपिंगकारों के प्रचार के बाद तो वह और भी आरामदेह हो गयी। १८८० के बाद के प्रारमिक वर्षों मे अमरीगी लोगो ने बिजली की रेलों के प्रयोग शुरू कर दिये तथा इस के बाद दस बरस के भीतर-ही शायद बीसों शहरों में जिनमें बाल्टीमोर, बोस्टन और रिचमण्ड भी शामिल थे, गलियों मे चलनेवाली रेलों का सचालन ऊर्ध्वयायी ट्रालियों द्वारा होने लगा। पेट्रोल-चालित मोटारकारों का आविष्कार सन १८९० के बाद हुआ। हेनरी फोर्ड—जिनकी इजिनीयरी विषयक कौशल और व्यावसायिक बुद्धि के कारण मोटारकार की दुनिया भर मे आवश्यकता अनुभव की जाने लगी—अपने सस्मरणो मे लिखते हैं :—

"उस समय मोटरकार एक बवाल समझी जाती थी क्योकि उसके कारण वडा हडबोंग मच जाता था और घोडे भड़क उठते थे। रास्ता भी उसकी वजह से वन्द हो जाया करता था, क्योकि अगर मै शहर मे कही भी अपनी मशीन वन्द कर देता तो दुबारा उसे चालू करने से पहले ही उसके चारों तरफ वडी भीड़ जमा हो जाया करती थी और अगर मै उसे अकेला छोड़ देता था तो कोई-न-कोई चचलवृत्ति व्यक्ति सदा उसे चलाने की कोशिश करने लगता था। आखिर मे मुझे मोटर के साथ एक साकल लेकर चलना पडा; जिससे मै अपनी मोटर को किसी लैम्प के खम्भे के साथ साकल से उस हालत मे बॉध सकूं जब कि मुझे उसे छोडकर कही जाना हो।"

इसी दशक मे उडन-यन्त्रों-सबन्धी एस. पी. लैंगले के साहसिक परीक्षण भी शुरू हुए जो इन्हीं लोगो की जिन्दगी मे, जिन्होंने शुरू-शुरू मे उनका मजाक उडाया था, राष्ट्रो के भाग्यों का वारान्यारा करने लगे थे।

आविष्कारो ने व्यापारिक धूम-धडाके को और तेज कर दिया, बहुसख्यक स्त्रियो तथा 'श्वेतकालरधारी बाबुओ' को दफ्तरो मे ला बिठाया और सवाद-साधनों का महत्त्व बढ़ा दिया। टेलिफोन हर एक दफ्तर और स्टोर के लिए अनिवार्य तथा आवश्यक हो गया। मिलवाकी के दो आविष्कर्ताओं, शोल्स और गिडन का संयुक्त-आविष्कार, टाइप-राइटर १८७३ मे बाजार मे बिकने लगा और अगले ही साल मार्क ट्वेन ने टाइपराइटर द्वारा एक पत्र टाइप करते हुए लिखा, "चिट्ठी टाइप करते वक्त आप अपनी कुर्सी पर आराम से बैठे रह सकते हैं। एक ही पृष्ठ मे ढेरों बातें आप भर सकते हैं, मशीन उन सब को थोडी सी जगह मे ही टाइप कर देगी; फिर भी न तो लिखावट घनी दिखाई पडेगी, न कटी-फटी, न स्याही के धब्बे या छपके ही उसमे होंगे।" धीरे-धीरे यह मशीन जनप्रिय हो गयी और सर्वव्यापिनी भी। हर एक व्यापारी दफ्तर उसकी खरीद करने लगा और उस पर टाइप करने के लिए महिला टाइपिस्ट भी रखी जाने लगीं। जोड़ लगाने की मशीनों तथा कैश-रजिस्टरो की वजह से हिसाब-किताब सही रखने मे आसानी हो गयी। एड्रेसोग्राफ (पता छापने की) मशीन के जरिये प्रचार तथा प्रसार हेतु जारी किये गये प्रचार-साहित्य और विज्ञापनो की बाढ को जनता तक पहुँचाना आसान हो गया। कार्डों पर रखी जानेवाली, पुस्तक-सूची-प्रणाली के कारण अमरीका के पुस्तकालय ससार के सर्वश्रेष्ठ तथा सुविधाजनक पुस्तकालय बन गये। इसी प्रकार समाचारपत्र तथा पुस्तक-छपाई के काम मे भी लाइनो-टाइप, कपोजिंग-

मशीन, 'हो' द्वारा निर्मित रोटरी-प्रेस और इलेक्ट्रोटाइप छपाई की विधि के कारण क्रान्तिपूर्ण परिवर्तन हुए।

उद्योग, परिवहन और सवाद-सचार के लिए जरूरी विजली का राष्ट्र के सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पडा। सन् १८७८ मे चार्ल्स वुश नामक ओहियो-राज्य के एक युवक इंजिनीयर ने 'आर्क लैम्प' की रचना की, जिसे तुरन्त ही अनेको साहसिक नगरों ने अपनी गलियो मे प्रयोग करना शुरू कर दिया। सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण था—टामस ए. एडिसन का चिनगारीरहित लैम्प का आविष्कार जिसे उसने गार्फील्ड के राष्ट्राध्यक्ष चुने जाने के अवसर पर उसके घर रोशनी करने के लिए तैयार किया था। बिजली द्वारा प्रकाश पहुँचाने की व्यापारिक सभावनाएँ निस्सीम थी। सन् १८८२ मे एडिसन ने न्यूयार्क मे एक बिजली बनाने तथा वितरण सस्थान का निर्माण किया और कुछ वर्षो के भीतर ही चतुर व्यवसायी खास-खास शहरो की रोशनी के ठेको के लिये प्रयत्न करने लगे। इस प्रकार बिजली-विषयक सघर्ष के पूर्वाभास का सूत्रपात हुआ। सन् १८९० के लगभग एडिसन ने सिनेमा-विषयक मशीन के भी प्रयोग शुरू किये और इसके दस बरस बाद चल-चित्रों का व्यापारिक इतिहास प्रारभ हो गया और इस तरह प्रचार के इस शक्तिशाली साधन का वह विजय-अभियान प्रारभ हो गया, जिसके द्वारा अमरीकी-भाषण-शैली और अमरीकन तौर-तरीके विश्व के कोने कोने मे जा पहुँचे। रेडियो-ध्वनि विस्तारक का भी—जो स्वय सामाजिक जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है—पहले विश्व युद्ध के बाद प्रभावपूर्ण उपयोग किया जाने लगा और बीस बरस बाद हर एक घर मे रेडियो-सेट हो गया। टेलिफोन, बिजली के लैम्प, सिनेमा तथा रेडियो के कारण जीवन के आनंद तथा उसके क्षेत्र मे बेहद विस्तार हुआ। इनके कारण मानव का एकाकीपन अथवा गम-गीनी बहुत-कुछ नष्ट हो गयी—भले ही उसका प्रभाव कही अच्छा हुआ, कहीं बुरा। सामाजिक तरीके भी इसके कारण एक-से हो गये। चूँकि इन चीजो के क्रियात्मक उपयोग के लिए बडे पैमाने पर पूँजी लगाने की जरूरत हुआ करती है और बडे-बड़े सगठन आवश्यक होते हैं; इसलिए उनके पैमाने का व्यापार भी तेजी से आगे बढ़ा।

अमरीका महाद्वीप के आरपार जानेवाली पहली रेलवे-लाइन के निर्माण के ४० वर्ष बाद करीब-करीब सारे सयुक्त-राष्ट्र-अमरीका के रेल-मार्गों का प्रायः अधिकाश भाग तैयार हो चुका था और उस पर साल भर मे अरबों टन माल

ढोया जाने लगा था। व्यापारी जहाज़रानी भी पिछले मन्दी के लम्बे दिनों के प्रभावों से काफी मुक्त हो चुकी थी और अब फिर दुबारा सात समुन्दर पार तक अमरीकी जहाज़ आने-जाने लगे थे। साल्ट सेण्ट मेरी कैनाल मे होकर ५० लाख टन कच्चा लोहा और अनाज तब तक अमरीकी जहाजों के ज़रिए निर्यात होने लगा था। अतलान्तक तथा प्रशान्त-महासागरों को एक करनेवाली पनामा की नहर भी करीब-करीब तैयार हो चुकी थी। यूरोप की कपड़ा मिलों मे अमरीकी कपास की मॉग बेहद बढ़ गयी थी और कल-कारखानों के मजदूर अमरीकी गेहूँ और सुअर के गोश्त के लिए चिल्लपों मचाये रहते थे। अपोमेटोक्स की सधि के ५० वर्ष के भीतर सयुक्त-राष्ट्र-अमरीका को निर्यात तथा आयात-व्यापार द्वारा कुल मिलाकर सवा दो अरब डालर से भी ज्यादा का लाभ होने लगा था और सन् १९१० तक उसका वार्षिक निर्यात ही २ अरब डालर से ज्यादा हो गया था।

श्रमिक शक्ति की पूर्ति उसकी मॉग से ज्यादा थी और यह सतत तथा प्रायः सस्ती भी थी। खेतों और खलिहानों से, गॉवों से, औरतों और बालकों मे से, इटली, आस्ट्रिया, तथा पोलैण्ड के घने बसे नगरों से आने वाले लाखों प्रवासी नागरिकों तथा मज़दूरों के कारण औद्योगिक केन्द्र हमेशा भरे रहते थे। सन् १८७० के बाद ३० वर्षों मे मजदूरी पेशा लोगों की कुलसख्या १२ लाख से बढ़कर २९ लाख हो गयी थी। उत्पादन के बड़े कारखानों मे काम करनेवाले मज़दूरों की संख्या ७ लाख तक ही बढ़ी। सबसे ज्यादा ध्यान देने योग्य बात यह थी कि औद्योगिक महिला-मजदूरों की संख्या का अनुपात $\frac{१}{४}$ से बढ़कर $\frac{१}{३}$ तक जा पहुँची थी तथा उसी अवधि में दस से १५ वर्ष तक की उम्र के बालक-मजदूरों की संख्या भी पोने दो लाख तक हो गयी थी। इनसे भी ज्यादा तादाद दक्षिणी तथा पूर्वी योरोप से आने वाले ऐसे प्रवासी-मजदूरों की थी जो कम दक्ष तथा गरीब तबकों में से भरती किये गये थे। नयी शताब्दी के प्रथम दशक में ही योरोप की दुःखी प्रजा में से २ लाख व्यक्ति अमरीका प्रवास के लिये निकल पड़े थे। इतने ही व्यक्ति इटली से और डेढ़ लाख रूस से भी वहॉ जा बसे थे। इन प्रवासियों में से अधिकाश लोग चाहे जिस वेतन पर काम करने के लिये तैयार थे। व्यापारिक उत्पादन-कार्य की औसत वार्षिक मजदूरी की दर सन् १९०९ में पॉच सौ डालर से कुछ ही ज्यादा थी। उस वक्त अगर गोमॉस का भाव ६ पौण्ड प्रति डालर भी रहा हो, तो भी इतनी मजदूरी बेहद कम ही समझी जानी चाहिए।

इस बढ़ते हुए औद्योगीकरण का एक और अंतिम तत्व भी विचारणीय है, वह है—इस काम मे सरकार का सहयोग। गृह-युद्ध के बाद की एक पीढी की अवधि तक व्यापारिक हितों की देखभाल न केवल सघीय ससद ही करती थी बल्कि राज्यीय ससदें भी उसकी व्यवस्था किया करती थीं। गृह-युद्ध के बाद की एक पूरी पीढ़ी या व्यवसायी निहित स्वार्थ केवल राष्ट्रीय नीति पर ही नही, यहॉ तक कि राज्य धारासभाओं पर भी पूरी तरह हावी थे, जो सरक्षित तटकर युद्ध-काल मे सकट के कारण लगाया गया था उसे अब भी जारी रखा गया, जिससे लोहा, इस्पात, सगमरमर, ऊन-उत्पादन, वस्त्र तथा 'चीनी मिट्टी के बर्तनो के उद्योगों को विशेष सरक्षण प्राप्त हुआ तथा लाभ पहुँचा। रेलमार्गों को कॉग्रेस द्वारा दी गयी रियायतीस हायताओं का अनुगमन राज्यीय ससदों ने भी किया और स्थानीय सस्थाओं ने भी। इससे रेलमार्गों को भूमि, सामग्री, करमुक्ति तथा अन्य सप्रदानों द्वारा तीन-चौथाई अरब डालरों की आय हुई। सरकारी अफसरो ने सार्वजनिक भूमि पर कब्जा कर लेने, लकडी काट ले जाने, मवेशी चलाने आदि बातों पर कडाई न बरती और इस तरह सरकारी जमीनो की नाजायज़ आमदनी से सैकडों लोग अमीर बन बैठे। व्यक्तिगत व्यापार पर नियंत्रण लगाने के लिए कॉग्रेस उत्सुक न थी और उधर अदालते भी राज्यों द्वारा बनाये गये नियत्रणात्मक कानूनों से जनता के अधिकारों की रक्षा करती थीं। इसीलिए उस शताब्दी के अन्त तक अनियन्त्रित व्यक्तिवाद पहले की तरह ही स्वतत्रतापूर्वक खुल खेलता रहा और दूसरी शताब्दी के प्रारभ मे ही उसके लगाम लगायी जा सकी।

लोहा और इस्पात : यहॉ हम इन सब उपर्युक्त तथ्यो का, अमरीका के औद्योगिक विकास के सबसे महत्वपूर्ण अध्याय—लोहे और फौलाद पर कैसा प्रभाव पड़ा—इस विषय पर विचार करेंगे। उपनिवेश-काल के प्रारभ से ही लोहे की खुदाई का सूत्रपात अमरीका मे हो चुका था। सन् १६१९ मे वर्जीनिया के फालिंगक्रीक नामक स्थान पर जान बर्कले ने लोहे की एक भट्टी खडी कर दी थी। इसके सौ साल बाद विलियम बर्ड ने पश्चिम की लोहे की खदानों की प्रगति का बडा ही मनोरजक विवरण लिखा। वे बस्ती में एक साहसी औद्योगिक कंपनी ने, मुक्त जमीन, कर-मुक्ति, तथा लोहे की भट्टी और कारखाना खडे करने का एकाधिकार भी प्राप्त कर लिया। एथन एलन-नामक ग्रीन माउण्टेन बायेज के एक नेता ने कनैक्टिकट के लिचफील्ड-

नामक स्थान पर एक भट्टी खडी कर दी थी। पूर्वी पेंसिलवानिया में तोप के गोले ढालकर वाशिंगटन की संकटग्रस्त महाद्वीपी सेनाओं की सहायता की गयी थी। वेस्ट पोइन्ट के समीपस्थ स्टर्लिंग-फोर्ज नामक कारखाने ने उन महान् श्रृंखलाओं की सृष्टि की थी जिन्हें हडसन-खाडी के मुहाने पर लगाकर ब्रिटिश जहाजी बेडे का प्रवेश रोका गया था। सबसे पहले लोहे कारखाने नोर्थ जर्सी राज्य के रैम्पो क्षेत्र में खुले थे, जहाँ आगे चलकर पीटर कूपर ने एक महान् उद्योग की स्थापना की और जहाँ एब्राहम ह्यूविट ने इस्पात तैयार करने की ओपन-ओवन-प्रक्रिया का सूत्रपात किया। सन् १८०० के बाद अलघेनी पहाडों के पश्चिम और पिट्सबर्ग में ये लोहे के कारखाने चल निकले, जिन्हें कच्चे लोहे, कोयले, चूना-पत्थर, और लकडी के कोयले के लिये पर्याप्त लकडी की सभी सुविधाएँ एक ही जगह प्राप्त थीं। यहाँ कोमोडोर पेरी और जनरल जैक्सन के उपयोग के लिए गोले ढालने की ढलाई भट्टियाँ ऐन मौके पर स्थापित कर ली गयीं।

लेकिन, ये पुराने ढर्रे की लोहा-फुंकाई और ढलाई के कारखाने बहुत छोटे-छोटे थे। सन् १८५० तक फुँके कच्चे लोहे का देशभर का कुल वार्षिक उत्पादन सिर्फ ५० हजार टन था, इस्पात का उत्पादन तो नाममात्र का ही था। उस समय बडे पैमाने पर लोहा तैयार करने की संभावना भी अधिक न थी; क्योंकि खनिज लोहे की पूर्ति काफी न थी और फौलाद या इस्पात बनाने का खर्चा बेहद मँहगा बैठता था। इसके बाद ही औद्योगिक इतिहास की अनेकों विशिष्टतम नाटकीय क्रान्तियों में से एक क्रान्ति का सूत्रपात हुआ। सन् १८४४ में सर्वेक्षक लोगों ने विस्कोन्सिन और अपर मिचिगन की मध्यवर्ती सीमाओं की पडताल करते समय देखा कि, उनके कुतुबनुमों की सुईयाँ पागल की तरह कभी इधर घूमती हैं कभी उधर। उन्होंने बताया कि काले लोहे की तह-की-तहें जमीन की ऊपरी सतह पर ही वहाँ बिछी हुई हैं। पीढी-दर-पीढी उस जगह के आदिवासियों में यह किवदन्ती चली आ रही थी कि वहाँ लोहे का पहाड है। सन् १८४५ में चिपेवा के एक रेड इण्डियन सरदार ने जिसका नाम मडजीगिजिग था, तांबे के एक अन्वेषक का मार्क्वेट पर्वत श्रृंखला तक मार्ग प्रदर्शन किया। यह श्रृंखला सुपीरियर झील के समीप ही थी। कुछ दिन बाद सैकडों लोग भाग्य-परीक्षा की सिर-तोड़ कोशिश करके तांबे और लोहे द्वारा रुपया बनाने के लिए इस जंगली जगह में आने लगे। यहाँ से रेल द्वारा भारी कच्चा लोहा ले जाना कठिन और खर्चीला पडता था। इसके लिये जलमार्ग की आवश्यकता महसूस की गयी। इसलिए मिचिगन-राज्य ने

सुझाव दिया कि सेण्ट मेरीज नदी के ढोको को बचाते हुए एक नहर निकाली जाये और उसके जरिये हुरोन और सुपीरियर को मिला दिया जाय। लेकिन इस सुझाव को अमरीकी सिंचन प्रणाली के जनक खुद हेनरी क्ले ने हँसी मे उडा दिया। उसने कहा, "यह काम सयुक्त-राज्य-अमेरिका जैसी नौ आबादी के तो क्या चन्द्र-लोक के भी बाहर की चीज है।" लेकिन, यह नहर बन कर रही और निजी अध्यवसाय, और हेनरी क्ले की सचालन-क्षमता के द्वारा ही वह बन सकी। सन् १८५५ मे वह जहाजरानी के लिए खोल दी गयी और कुछ ही दिनो मे इतनी चालू हो गयी कि दुनिया की नहरो मे सबसे ज्यादा जहाजरानी इसी नहर के जरिये होने लगी। मार्क्वेट, ऐशलैण्ड तथा एस्कानाबा मे डाक अथवा नौका-घाट बना दिये गये। मिचिगन झील की पश्चिम तटवर्ती मेनोमिनी-पर्वतश्रेणी तथा मिचिगन और विस्कौसिन के बीच की सीमा पर खड़ी बेहद सपन्न गोगेबिक-पर्वतश्रेणी के खुल जाने के बाद तो इस नहर के जरिये 'लाल पेदी' वाले शक्तिशाली जहाजो के बेड़े-के-बेडे इन पहाड़ो से लाखो टन कच्चा खनिज दूरस्थ मिलो तक ढो कर ले जाने लगे।

लेकिन, कुछ दिन बाद ही लेक सुपीरियर की पश्चिम दिशा की खदानो के दोहन ने उत्तरीय अन्तरीप की खनिज-प्राप्ति को मात दे दी। इस झील के चारो तट लोहे से ही मढ़े पाये गये। चारो ओर लोहा ही लोहा था। सन् १८७० मे एक सर्वेक्षक अचानक वर्मिलियन श्रेणी से जा टकराया। पूर्वीय पूँजी से सन् १८८४ मे झीलो तक जाने वाला रेलमार्ग तैयार करके वर्मिलियन से उन्हे सबद्ध कर दिया गया था और २५ वर्ष के भीतर ही वहाँ से ३० लाख टन कच्चा खनिज बाहर भेजा जाने लगा। इसी बीच ड्यूलथ के पाँचो मेरिट भाई लेक सुपीरियर के पश्चिमवर्ती वन प्रान्त का चक्कर लगाते फिर रहे थे और कुछ दिन बाद उन्होने 'अब तक खोदे गये खदानो की नानी' तथा ससार की सबसे अधिक अपरिमित भंडारवाली लौह-पर्वत-शृंखला, मेसाबी, ढूँढ निकाली जो महाद्वीपीय जल-विभाजक पठार पर ड्यूलथ से ७५ मील के फासले पर उत्तर पश्चिम की ओर थी। यह बात सन् १८९० की है। दो बरस बाद ही, यहाँ से छकडियाही रेलगाडियाँ लकड, झाड, झखाड और दलदलो के बीच होती हुई एक लाख टन कच्चा लोहा ढोने लगी। दस बरस में मेसाबी से लगभग ४० लाख टन खनिज लोहा पिट्सबर्ग और चिकागो के दैत्याकार कारखानो में पहुँचा दिया गया।

उत्तरी मिनेसोटा की इन लोहे की खदानो को दुनिया की अन्य खदानो

की अपेक्षा कई अधिक सुविधाएँ प्राप्त थी; इसीलिए अमरीकी लोहे और इस्पात का उत्पादन दुनिया मे सर्वश्रेष्ठ गिना जाने लगा था। एक तो उनका भंडार अक्षय था, दूसरे इनका कच्चा लोहा शैलेय नाड़ियों के अन्तर्गत तथा भूगर्भ निहित न था बल्कि धरातल के तुरन्त नीचे छुट्टा ढेरों के रूप में दबा हुआ था। मेरिट भाइयों के कथनानुसार अगर हम पागल हो कर अपने पॉव तले की उसी भूमि पर जहॉ हम खड़े थे, लातें मारने लगते और ठोकरें लगाते तो ६४ प्रतिशत लोहा वहॉ ही हमारी ठोकरों से ऊपर आ जाता। वहॉ का लोहा विशेष रूप से शुद्ध था। उसे बाष्पचालित फावड़ों द्वारा बडी आसानी से खोद निकाला जा सकता था। बडी झीलों के पर्याप्त निकट होने के कारण यह कच्चा लोहा कम खर्च में ही औद्योगिक तथा कोयला वाले क्षेत्रों को भेजा जा सकता था।

लेकिन, सबसे बडा प्रश्न था इस लाल रग के कच्चे लोहे को सफेद स्टील मे परिवर्तित करने का। गृह-युद्ध से कुछ वर्ष पहले केण्टकी-राज्य के छोटे-से कस्बे एडीविले के रहने वाले विलियम केली नामक एक लुहार के दिमाग़ में हवाई-सा लगनेवाला एक ख्याल आया कि वह लोहे मे हवा मार कर उसे फौलाद बना सकता है। उसने कुछ दिन बाद यह साबित भी कर दिखाया कि उसका ख्याल गलत न था। इसके बाद हेनरी बेसेमर-नामक एक अंग्रेज-इजिनीयर के दिमाग़ में भी यही बात आयी। उसने अपनी बात न केवल सिद्ध ही कर दिखायी; बल्कि उसे सफलतापूर्वक कार्यरत भी कर दिया। बेसेमर की यह प्रक्रिया बहुत ही सरल थी। पिघला हुआ खनिज लोहा नाशपाती की शक्ल के एक बर्तन में उडेलकर उसमे से ठंडी हवा गुजार दी जाती थी। पिघले लोहे में से गुजरते समय, हवा में मौजूद आक्सिजन और कच्चे लोह में मौजूद कार्बन ओर सिलिकन आपस मे मिल जाते थे और किलकारियों और गर्जनाओं सहित उनके बीच एक भयकर गडगडाहट होती थी; परिवर्तक बर्तन के मुँह से तेज अग्नि-ज्वालाएँ पौराणिक दैत्य की जिह्वाओं के समान आकाश में ४० से ५० फुट तक ऊँची उठती थी और उनका रग क्षण-क्षग पर बदलता था। कभी लाल से नीला होता और कभी नारगी से सफेद। यह अद्भुत व्यापार १० मिनट तक चलता रहता और तब पञ्चभूतों का यह सघर्ष समाप्त हो जाता था। लोहे की सब अशुद्धता भस्म हो जाती और पिघला हुआ ज्वलन्त फौलाद सॉचों मे ढाल दिया जाता था। यद्यपि उसके कुछ दिनों बाद "ओपन हार्थ" (खुली भट्टी)

प्रणाली इस काम के लिए आविष्कृत हुई, लेकिन उस शताब्दी के अन्तिम २५ वर्षों तक बेसेमर-प्रणाली ही प्रचलित रही।

खनिज लोहे, कोयले और विज्ञान के कारण फौलाद-उद्योग का जन्म हुआ। अब केवल अध्यवसाय तथा पूँजी ही उसे सफल बनाने के लिए आवश्यक थे। इसी समय स्काटलैण्ड के डनफर्मलाइन कस्बे का एण्ड्रू कार्नेगी नामक एक १२ वर्ष का लडका इधर आ निकला। स्काटलैण्ड मे फैक्टरी-प्रणाली चालू होने के कारण इस लडके के पिता का, जो एक होशियार बुनकर थे, कारबार ठप हो चुका था। पिट्सबर्ग मे इस लडके के कुछ रिश्तेदार रहते थे। उन्ही के पास, अलेघेनी और मोनानगहेला के सगम पर स्थित औद्योगिक तथा उन्नतिशील नगर मे इस लडके का परिवार आ बसा। वहाँ एण्ड्रू को ढरकी फेंकने का काम मिल गया, वह बडा होकर स्टीम बायलर चलाने लगा, फिर टेलिग्राफ दफ्तर मे लगा और बाद मे पेसिलवानिया-रेलमार्ग मे नौकर हो गया। वह एक इमानदार, चतुर और मेहनती युवक था और सतर्क तथा सूझबूझवाला भी। इसके मृदु व्यवहार ने उससे बडे सभी लोगो का मन तथा विश्वास जीत लिया और सभी उसके मित्र बन गये। तीस बरस का होने से पहले ही पेट्रोल और लोहे के व्यापार तथा एक्सप्रेस और स्लीपिंग कार कपनियो मे लगी उसकी पूँजी के कारण उसे ४० हजार से ५० हजार डालर तक आमदनी प्रति वर्ष होने लगी थी। सन् १८६५ मे अन्य सब अभिरुचियो को छोडकर, उसने अपना ध्यान केवल लोहे पर ही केंद्रित करने को निश्चय किया जो उसके साहस और दूरदर्शिता का परिचायक था। कुछ बरस मे ही उसने लोहे के पुल, रेलपटरियाँ और एजिन बनाने वाली कई कपनियाँ सघटित कर ली और कुछ खरीद लीं। तीस बरस का होने पर वह न्यूयार्क मे अपनी कंपनियों के सेल्समैन के तौर पर काम करने लगा। इसके साथ-साथ वह दूसरे रेल-मार्ग तथा लोहा बेचनेवाली कपनियों के दलाल का भी काम करता था। बाद मे उसने बताया भी कि उसने ३० लाख डालर की अमरीकी सिक्यूरिटियाँ लदन के व्यापारियो को बेची थीं।

यद्यपि एण्ड्रू कार्नेगी ने बेसेमर-प्रक्रिया काफी देर बाद अपनायी, लेकिन जब उसने एक बार उसकी परीक्षा कर ली तो वह उसपर पूरी तरह लट्टू हो गया और सन् १८७५ मे मोनानगहेला के तट पर ब्रैडक्स बैटलफील्ड मे अपना जो सयन्त्र खडा किया वह देश का सब से बड़ा कारखाना था। साल भर मे ही यह सयन्त्र इतना फौलाद तैयार करने लगा, जितना अमरीका की सब मिले

मिलकर तैयार करती थीं। हर एक नये सुधार के प्रति वह जागरूक रहता और व्यापार के बुरे दिनों का फायदा उठाकर या तो अपने प्रतिद्वंद्वियों का सब व्यापार खरीद लेता अथवा उन्हे मिटाकर रख देता था। पेसिलवानिया तथा अन्य रेलमार्गों से उसने घनिष्ट सबंध स्थापित कर लिया था। इन सब बातों तथा अपने चतुर सहायक एच. सी. फ्रिक और चार्ल्स श्वैब की सहायता से एण्ड्रू-कार्नेगी ने फौलाद-उद्योग का नेतृत्व प्राप्त करने लायक अपनी स्थिति बना ली थी। प्रतिवर्ष उसका साम्राज्य बढता ही गया। नयी मिले खुली, कोक और कोयले पर उसका प्रभुत्व बढा। सुपीरियर-झील के कच्चे लोहे पर प्रभुत्व मिला और झीलों मे चलनेवाले बड़े जहाज़ी बेड़े का स्वामित्व प्राप्त हुआ। लेक ईरी का तटवर्ती एक बन्दरगाह उसके हाथ आया और फिर उन्हे मिलाने वाला एक रेलमार्ग भी। कार्नेगी का लौह तथा आइस-उद्योग एक दर्जन अन्य उद्योगों के साथ सगत था। रेलमार्गों तथा जहाजी कम्पनियों से वह अपने अनुकूल रियायतें प्राप्त कर सकता था। उसके पास पूँजी भी इतनी काफी थी कि, वह उसे चाहे जितना विस्तृत कर सकता था। अच्छे कार्यकर्ता और कारीगर उसके पास थे और साथ ही चतुर प्रबन्धकर्ता भी। इतना बढिया सघटन अमरीका मे पहले कभी नही हुआ था, यद्यपि रोकफेलर जिस साम्राज्य की स्थापना उस समय कर रहा था वह भी आगे चलकर इतना ही जबर्दस्त बना। सन् १८१८ मे सवा लाख डालर की पूँजी से शुरू किया गया, यह उद्योग शीघ्र ही २ लाख डालर का वार्षिक मुनाफा देने लगा था और उसके बाद ५ लाख डालर भी। १९०० में जब एक बार फिर इस उद्योग का पूँजी-विनियोग किया गया तब २ करोड ३० लाख डालर इसमे लगाये गये थे। उस समय इसका उत्पादन ३ लाख टन प्रति वर्ष था। और, मुनाफा था ४० लाख डालर प्रति वर्ष।

यहाँ इस उद्योग के आवश्यक अंग 'श्रमिकों' के बारे मे कुछ कहना भी जरूरी होगा। इस बारे मे भी लौह-उद्योग और कार्नेगी-कम्पनी का अनुभव खास किस्म का था। लोहे की खानो में काम करने वाले मजदूर शुरू शुरू मे कार्नवाल और वेल्स से भर्ती कर के लाये जाते थे। फिर, स्वीडन और फिनलैण्ड से भी लोग आने लगे। इनके बाद तो स्लाव और मग्यार लोगों के झुंड-के झुंड-आने लगे। भट्ठी झोंकने वालों और फौलाद के पिघले गोलों को साँचों में ढालनेवाले मजदूरों की संख्या मे भी इसी तरह परन्तु बाहरी लोगों के कारण वृद्धि हुई। सन् १९०७ के सर्वेक्षण-विवरण को देखने से पता चलता है कि कार्नेगी-मिल्स के कुल मजदूरों मे से दो-तिहाई से ज्यादा परदेसी थे और

उनमे भी ज्यादातर मजदूर दक्षिणी तथा पूर्वी योरोप के थे। ये लोग कड़े मेहनती होते थे और उन्हे ऐसा होना भी चाहिए था। वे दिन मे १२ घंटे और हफ्ते मे लगातार सात दिन काम करने के आदी थे और तेज-से-तेज गर्मी और शोर शरर के बीच भी मजे मे काम करते रहते थे। चूँकि अदक्ष मजदूर जरूरत से ज्यादा तादाद मे मिल जाते थे, इसलिए किसी तरह की मज-दूर-यूनियनों की उस वक्त कोई तरक्की नही हुई, न प्रचार ही बढा। अगर कोई यूनियन आगे बढता भी था, तो उसे सख्ती से दबा दिया जाता था। श्रम-सघटन के बारे मे कार्नेगी की नीति बहुत घटिया थी।

इस उद्योग की प्रगति मे एक को छोड कर बाकी वे सब आवश्यक तत्व मौजूद थे, जिनके कारण उसे विश्व-नेतृत्व प्राप्त हो सकता था यानी, कच्चे माल का प्रभुत्व, परिवहन, विज्ञान तथा आविष्कारो का लाभ, व्यवस्था-विषयक-दक्षता तथा अध्यवसाय, सस्ते मजदूर, और रेलमार्ग बन जाने तथा भवन-निर्माण के लिए वास्तु फौलाद का चलन प्रारभ होने के बाद सुरक्षित बाजारो की प्राप्ति, आदि सभी साधन उसे प्राप्त थे। आरजी तौर एक अन्य तत्व की उसे जरूरत थी—वह था विदेशी पूजी की स्पर्धा से इस उद्योग का संरक्षण। यह सरक्षण तटकर की उन शर्तों से जो लोहे के उद्योगपतियो के आदेश पर ही लगायी गयी थी, पर्याप्त मात्रा मे उसे प्राप्त हो गया था। स्टील से बनी रेलों पर लगाया गया '२८ डालर प्रति टन का यह तटकर विदेशी आयात के लिए काफी कडा था, यहाँ तक कि खुद कार्नेगी ने ही आगे आकर, ठीक समय पर, उसे कम कराने का प्रयत्न किया।

इन अनुकूल परिस्थितियों मे अमरीकी लोहे और फौलाद उद्योग ने खूब प्रगति की। सन १८९० तक उसका उत्पादन ब्रिटेन के इस उद्योग के उत्पादन से आगे निकल गया। सन १९०९ मे तो, ब्रिटेन तथा जर्मनी के सम्मिलित लौह-उत्पादन से भी ज्यादा लोहा अमरीका तैयार करने लगा था और १९२० मे अमरीकी भट्ठियाँ २७ लाख टन ढला लोहा और ४२ लाख टन फौलाद तैयार करती थी। द्वितीय विश्व-महायुद्ध की माँगों को पूरा करने के कारण पता चला कि इस उद्योग की उत्पादन-क्षमता, आवश्यकता पड़ने पर ८५ लाख टन तक बढायी जा सकती है।

कार्नेगी-कम्पनी के इतिहास से, अमरीका के बड़े उद्योगो के विकास के अन्तिम रूप पर और भी प्रकाश पडता है। यह अध्यवसायी स्काट्समैन—कार्नेगी—बहुत दिनों तक इन उद्योगो पर हावी बना रहा था; लेकिन आगे

चलकर इस्पात-उत्पादन के प्राकृतिक साधन-स्रोतों, परिवहन-साधनों और औद्योगिक आयोजनों पर एकाधिकार बनाये रखना उसके लिए असम्भव हो गया। मेसाबी लौह-खानों में सबसे महत्वपूर्ण खानों का स्वामित्व अब राकफेलर के पास था और बड़ी झीलों में चलनेवाले स्टीम-बोटों का एक जहाजी बेड़ा भी उसके पास था। दक्षिण में टेनेसी कोल एण्ड आयरन कम्पनी का आधिपत्य भी काफी विस्तृत था। फेडरल, पेंसिलवानिया, दि अमेरिकन स्टील एण्ड वायर-जैसी अनेकों कंपनियाँ भी कार्नेगी के प्रभुत्व को चुनौती देने के लिए उठ खड़ी हुई थीं। इसलिए स्पर्धा से उत्तेजित होकर, कार्नेगी ने नयी खानें खरीदने, नया बड़ा जहाजी बेड़ा तैयार करने और ट्यूबें, कांटेदार तार, टीन की चादरें, तथा सैकड़ों और चीजें बना डालने की धमकी दी। इस प्रकार उद्योग में एक विनाशकारी प्रतिस्पर्धा छिड़ने की आशंका हो उठी। तब स्टील व्यापारियों ने परस्पर में संघटित होकर शान्त करने की बात सोची। कार्नेगी ने झगड़ा करने के बजाय, मनमाने दामों पर सामान बेच डालना ज्यादा पसन्द किया। वह अब बूढ़ा हो गया था और बहुत दिनों से उसकी इच्छा कार्यनिवृत्त होकर अपना रुपया दान कर देने की हो रही थी। राष्ट्र के लोहे तथा आयस-सम्बन्धी अधिकांश कारखानों और जायदादों के एक नये संघटन में अपने सब कारबार को शामिल कर देने की सलाह उसे बहुत पसन्द आयी। इसीके परिणामस्वरूप सन् १९०१ में युनायटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन का १ अरब ४० करोड़ डालर की पूँजी के साथ जन्म हुआ। पूँजी की यह रकम इतनी थी जितनी कि एक सदी पहले अमरीका की कुल राष्ट्रीय आय हुआ करती थी। यह उचित ही हुआ कि इस काल में जे. पी. मार्गन बैंकिंग हाउस ने इस नये संघटन का सञ्चालन किया और यह कि मेसाबी को दक्षता से विकसित कर के जान डी. राकफेलर ने काफी बड़ा मुनाफा कमाया।

निधियाँ और एकाधिकार : युनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन के संघटन से उस प्रक्रिया का, जो पिछले तीस बरस से जारी थी, पता चलता है। यह प्रक्रिया आगे भी जारी रहने को थी और आज भी जारी है। यह प्रक्रिया थी—स्वतन्त्र औद्योगिक अध्यवसायों का संघ-रूप में अथवा केन्द्रित साम्राज्यों के रूप में संघटित हो जाना। शक्ति के शिखर पर पहुँच कर भी, कार्नेगी-कंपनी अमरीका की ८०० अन्य लौह और आयस-कम्पनियों में से एक कम्पनी भर थी,

लेकिन युनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन के गठन के बाद, इनमे से बहुत सी कपनियॉ या तो खत्म हो गयीं या कार्पोरेशन मे शामिल हो गयीं और देश के कुल स्टील-उत्पादन का दो-तिहाई भाग इस नये सघटन द्वारा होने लगा। एक पीढी के बाद से दो सौ बडे कार्पोरेशनों के हाथ मे राष्ट्र का आधा निगमित व्यापार आ चुका था। इसके अलावा ३०० छोटे कार्पोरेशन भी बाकी का आधा व्यापार चलाने लगे थे।

लिंकन के समय का संयुक्त-राष्ट्र-अमरीका बहुत छोटे अध्यवसायो का राष्ट्र था। उस जमाने मे एकाधिपत्य-जैसी बात किसी को मालूम तक न थी। सिर्फ पुरानी एस्टर फर कम्पनी और नयी सगटित वेस्टर्न यूनियन ही ऐसी दो कम्पनियॉ थीं, जो एकाधिपत्य के स्वप्न के निकट कुछ हद तक पहुँचती थीं। उत्तरीय क्षेत्र के अनेक समुदाय काफी आत्मनिर्भर से थे। इन समुदायो की जरूरत का फर्नीचर स्थानीय बढ़ई तैयार कर देते थे, जूते पडोस के मोची। गोश्त छोटे-मोटे कसाई दे जाते थे और सवारी गाडियॉ सामुदायिक गाडी–निर्माताओं से मिल जाती थीं। उत्पादन और खनन का प्रचार बहुत थोडा था; पर काफी विस्तृत था। दो हजार से भी ज्यादा कारखानों मे हल, खेती और कटाई के औजार बना करते थे। सिर्फ पेसिलवानिया मे ही, दो सौ पेट्रोल साफ करने वाले काम करते थे। कोमस्टाक की खदानो की मिल्कियत के सौ के लगभग मालिक थे। चालीस बरस बाद यह सब बदल गया। तब अकेली इन्टरनेशनल हार्वेस्टर कम्पनी ही खेती के करीब-करीब सब औजार तैयार करने लगी थी और स्टैण्डर्ड आयल कम्पनी के हाथ मे पेट्रोल-सफाई का एकाकिकार आ चुका था। इसी तरह कोमस्टाक की मिल्कियत और खुदाई दो या तीन ईस्टर्न कार्पोरेशनों के हाथों मे थी।

ये परिवर्तन गृह-युद्ध के जमाने में शुरू हुए थे और १८७० के बाद भी बड़ी तेजी के साथ होते रहे। तीव्र बुद्धि वाले व्यवसायियों की समझ मे आने लगा था कि, अगर वे परस्पर स्पर्धा करनेवाली कई कपनियॉ एक ही सघटन मे शामिल कर लेंगे तो उत्पादन आदि के खर्चे कम हो जायेंगे और इस से भी ज्यादा मार्के की बात यह होगी कि भावों पर उन्हीं का नियंत्रण भी रह सकेगा। इस उद्देश्य की पूर्ति का मौलिक साधन बना, 'कार्पोरेशन' या निगम। इसके बाद उससे बडी इकाई बनी 'पूल' और अन्त में सबसे बडी व्यापारिक इकाई अथवा शीर्षसघ बना, 'ट्रस्ट' या न्यास। कार्पोरेशन अथवा निगम ऐसा काल्पनिक व्यक्तित्व था जो व्यक्ति की हैसियत से प्राप्तव्य सभी कानूनी सुविधाओं

का लाभ उठा सकता था; लेकिन मानव पर आयत्त सभी नैतिक जिम्मेदारियों से वरी रह सकता था। उसका अस्तित्व अमर था अथवा वह खुद अपने निर्णय से अपने को समाप्त कर सकता था, उसे स्टाक अथवा वाड जारी करने के अधिकार थे, कर्ज की वावत उसका दायित्व सीमित या मर्यादित था, तथा वह चार्टर द्वारा प्रतिवद्ध था। उसे देश भर मे कही भी व्यापार करने की स्वतंत्रता थी। ट्रस्ट अथवा निधि वह सस्था कहलाती थी, जो उन अनेको कार्पोरेशनो से मिलकर वनायी जाती थी जिसके स्टाक-होल्डर अपने अपने स्टाक इस ट्रस्ट के ट्रस्टियों के सुपुर्द कर देते थे और उन्हे अपनी ओर से व्यापार करने का अधिकार दे देते थे। कुछ समय वाद ही किसी भी महाव्यापार-सघ को ट्रस्ट कहा जाने लगा। इस प्रकार के निधि-व्यापार के लाभ भी स्पष्ट थे। उनके द्वारा वडे पैमाने पर सयुक्त व्यापार सभव हो जाता था, नियन्त्रण तथा व्यवस्था केन्द्रित हो जाती थी, कम दक्ष इकाइयॉ निरस्त हो जाती थीं, पेटेण्ट एकत्रित हो जाते थे, तथा पूँजी साधनो के पुजीभूत होने के कारण विस्तार की गुंजायश वेहद वढ़ जाती थी। विदेशी कपनियों से होड लेने की क्षमता प्राप्त हो जाती थी, श्रमिकों से कठोरतापूर्वक मामले तै करने की शक्ति प्राप्त हो जाती थी और रेलवे-कंपनियो से सुविधापूर्ण शर्तें प्राप्त करने मे आसानी हो जाती थी तथा राज्यो पर और राष्ट्रीय राजनीति पर अपरिमित प्रभाव डालने की शक्ति भी प्राप्त हो जाती थी।

सप्रयोजन (कौम्बिनेशन) विश्वव्यापी वस्तु थी; लेकिन जर्मनी को छोडकर दुनिया के अन्य देशों की अपेक्षा अमरीका मे उसका सवसे अधिक प्रचार था। ऐसा तो इसलिए भी था कि, यहॉ लाभ उठाने के लिये साधन-स्रोत वेहद विस्तृत थे। लेकिन, इस प्रचार के और भी कारण थे। रेलमार्ग पूरे हो जाने के कारण, तैयार-शुदा माल के लिए विक्री की सुविधाएँ और वाजार देशभर मे निश्चित हो गये थे। उत्पादन की मौलिक तथा महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं पर पेटेण्ट कानूनो की वजह से एकाधिपत्य प्राप्त हो गया था। भूमि के उदार अनुदान कपनियों को मिल जाते थे और भूमि-कानून भी वडे उदार थे, इसलिए वडी-वडी कंपनियों को लकडी, तावा और कोयले से मनमाना लाभ उठाने की छूट प्राप्त थी। सघीय पद्धति के कारण किसी भी कंपनी को किसी भी ऐसे राज्य मे जहॉ कानून उदार था, अपना अड्डा जमा लेने की और व्यापार करने की स्वतन्त्रता थी, वह दूसरे राज्यों मे भी व्यापार कर सकती थी। व्यापार सरक्षण पद्धति के कारण विदेशी स्पर्धा से ये कंपनियॉ सुरक्षित तो रहती ही थीं।

स्टैण्डर्ड-आयल-कंपनी ने इनका नेतृत्व किया। जब पश्चिमी पेसिलवानिया के पेट्रोल-उत्पादन आपस मे गला-काट होड़ लगाये बैठे थे, क्लीवलैण्ड का एक शात सीधा-सादा-सा युवक व्यापारी स्थानीय तेलशोधक कंपनियो को चुपचाप खरीद कर रहा था और उनको मिलाकर अकेली एक कंपनी मे परिवर्तित कर रहा था। उस युवक व्यापारी के लडके ने आगे चलकर लिखा, "शानदार सुन्दर अमरीकी गुलाब तभी तैयार किया जा सकता है जब कि शुरू की उन छोटी-छोटी कलियो का बलिदान पहले चढ़ाया जाये जो उस बडे फूल के चारों तरफ निकल खड़ी होती हैं।' सन् १९७२ मे राकफेलर ने कुछ दिन जीवित रहने वाली साउथ इम्प्रूवमेण्ट कंपनी के सघटन तथा न्यूयार्क सेण्ट्रल और ईरी रेल मार्गो द्वारा प्रदत्त छूट का फायदा उठाकर क्लीवलैण्ड मे होने वाले तेल शोधन के काम पर प्रभुत्व पा लिया। इसके बाद वह न्यूयार्क, फिलाडेल्फिया, और पिट्सबर्ग के तेल-शोधक कारखानो पर कब्जा पाने के लिए कोशिश करने लगा। उसने बेहद दक्ष और कुशल बिक्री व्यवस्था का निर्माण किया। इसके बाद तेल-वाहन-नल-पक्ति पर नियन्त्रण प्राप्त किया गया और दस बरस के भीतर ही पेट्रोल-परिवहन और शोधन-उद्योग पर राकफेलर का करीब-करीब पूरा कब्जा जम गया। सन् १८८२ मे स्टैण्डर्ड-आयल-कपनी पहिली महानिधि के रूप मे प्रकट हुई। लेकिन, ओहिओ राज्य की अदालत द्वारा भग कर दिये जाने पर वह फिर एक होल्डिंग कपनी के रूप मे पुनर्निगमित हो गयी। यह पुनर्गठन न्यूजर्सी राज्य के अधिक उदार कानूनो के कारण सभव हो सका। इसके बाद इसका कार्य अबाध गति से जारी रहा। सन् १९०० से पहले तक राकफेलर ने पेट्रोल-उद्योग मे व्याप्त अव्यवस्था मिटाकर व्यवस्था स्थापित कर दी, अपने बहुत से प्रतिस्पर्धियो का खात्मा कर दिया, अनन्त धनराशि कमा ली और पेट्रोल के दाम भी घटा दिये थे। उसने देश के सबसे बडे एकाधिकार-निधि की स्थापना भी कर दी थी।

इसके बाद तो निधियो और एकाधिकारों की बाढ़-सी देश मे आ गयी। सन् १८८४ मे बिनौला-तेल-उद्योग का ट्रस्ट कायम हुआ, जिसके बाद सन् १८८५ मे अलसी के तेल का। सन् १८८७ मे सीसा, ह्विस्की, और शक्कर उद्योगो के ट्रस्ट बने। दियासलाई उद्योग की निधि १८८९ मे, तम्बाकू की १८९० मे तथा रबड़ की १८९२ मे कायम हुई। महत्वाकाक्षी व्यापारियो ने कार्नेगी तथा राकफेलर के चरण-चिह्नों पर चलकर अपने अपने लिए व्यापारिक राज्य स्थापित करना शुरू कर दिये। पैकिंग का व्यापार करने वाले चार

महान् पैकरों ने जिनमें फिलिप डी. आर्मर और गस्टेक्स एफ. स्विफ, मुख्य थे, अपने लिए 'बीफ़ (गोमांस) ट्रस्ट' कायम कर लिया। गगनहेम-कंपनी ने आरिजोना की ताँबे की खानों पर अपनी व्यापारिक एकाधिकार निधि स्थापित कर ली। इसी तरह बट ने भी मोण्टाना की उस पहाड़ी पर जिसे संसार की सब से ज्यादा ताम्रसम्पन्न पहाड़ी कहा जाता था और जहाँ से ३० बरस में २ अरब डालर का तांबा निकला, अपना अधिकार जमा लिया था। कटाई-यन्त्र व्यापार-क्षेत्र में मैक्कार्मिकों का प्रभुत्व था और आगे चलकर जब इस प्रभुत्व के लिए खतरा पैदा होने लगा तो उन्होंने उस व्यापार को एक संयोजित रूप दे दिया, जिसका नाम था इन्टरनेशनल हार्वेस्टर कंपनी। उसने कटाई-यंत्रों के करीब-करीब सारे व्यापार पर कब्जा कर लिया। ड्यूक-परिवार ने तंबाकू-व्यापार की निधि बना डाली। चाँदी, जस्ता, रबड़, चमड़ा, शीशा, शक्कर, नमक, पटाखे, सिगार, मिश्री, तेल, गैस, बिजली आदि सभी वस्तुओं के व्यापारों में इसी प्रकार की निधियाँ कायम हो गयी थीं। सन् १९०४ के सर्वेक्षण से पता चलता है कि, लगभग ७ अरब डालर पूँजी वाली ३१९ औद्योगिक निधियों ने लगभग ५३०० छोटे-छोटे स्वतंत्र व्यापारियों को आत्मसात् कर लिया था। इसी प्रकार सार्वजनिक सुविधा संबन्धी (जिनमें रेलमार्ग भी शामिल थे) १२७ निधियों ने यही काम करनेवाली २४०० छोटी कंपनियों को उदरस्थ कर लिया था।

व्यापार के तरीकों में इस प्रकार के परिवर्तन से औसत दर्जे के आदमी का—खास तौर पर शहरी आदमी का—जीवन-मार्ग ही बदल गया। उसके भोजन, वस्त्र, उसके घर की आसाइश-पोशिश, उसके उपयोग के औजार, उसकी सवारी, सभी पर इन व्यापारिक निधियों का कब्जा था। नाश्ता करते समय उसके सामने आनेवाला गोमांस 'बीफ़ ट्रस्ट' का उत्पादन होता था। अंडों में डालने का नमक मिचिगन-साल्ट-ट्रस्ट द्वारा बना होता था। काफी में वह जो शक्कर डालता था, वह अमरीकी-शुगर-ट्रस्ट द्वारा बनी होती थी और सिगार जलाते समय उसे डायमण्ड-मैच-कम्पनी की दियासलाई इस्तेमाल करनी होती थी। इसके बाद दफ्तर जाते समय वह बाइसिकिल ट्रस्ट की बनी साइकिल पर चढ़ कर जाता था या किसी ट्रालीकार पर जो किसी एकाधिकार प्राप्त कंपनी के नियन्त्रण में युनाइटेड-स्टेट-स्टील-कार्पोरेशन द्वारा निर्मित रेलों पर चलती थी। लेकिन, इतना जरूर था कि शायद अब उसके भोजन की चीज़ें पहले से बेहतर होती थीं। और, उसकी यात्रा तथा परिवहन का प्रबन्ध एक पीढ़ी पहले के प्रबन्ध से कहीं

ज्यादा अच्छा हो गया था। औसत दर्जे के व्यक्ति को भी दिखाई पड़ने लगा था कि, उसके तबके के लोगों के रोजगार पर ट्रस्टों द्वारा चलनेवाले रोजगार और व्यापार का काफी प्रभाव पड़ा है। स्थानीय धोवी की दूकान खत्म हो गयी थी। छोटे कारखाने बन्द हो गये या बड़े ट्रस्टो मे शामिल हो गये थे तथा पड़ोसी लोग अब निजी धन्धा न कर के दूरस्थ निगमों के नौकर की हैसियत से काम करते थे—एक ऐसी व्यापार-नीति के उतार-चढ़ाव के आधीन थे, जिस पर उनका कोई काबू ही न था।

सयोजित व्यापार की यह प्रणाली केवल उत्पादन और उत्खनन के क्षेत्रों तक ही सीमित न थी। परिवहन तथा परिसवाद के क्षेत्रों मे तो यह और भी बड़े गुल खिला रही थी। इन क्षेत्रों की सबसे पहली निधि वेस्टर्न-यूनियन थी, जिसके बाद वेल-टेलिफोन-सिस्टम नामक निधि खडी हुई और फिर घटनाक्रमानुसार दैत्याकार अमेरिकन-टेलिफोन एण्ड टेलिग्राफ निधियॉ आयीं। कमोडोर वाण्डरबिल्ट ने बहुत पहले ही ताड़ लिया था कि रेलमार्गों के कुशल सचालन के लिए रेलपक्तियों का एकीकरण आवश्यक होगा। इसीलिए उसने १८६० के बाद के वर्षों मे १३ या १४ विभक्त रेलमार्गों को सयुक्त करके, उन्हे वफैलो और न्यूयार्क के बीच चलनेवाली एक ही रेलपंक्ति मे परिवर्तित कर दिया। अगले दस बरसो मे उसने चिकागो और डिट्रोइट जाने वाली रेलपंक्तिया भी स्वायत्त कर ली और इस प्रकार केन्द्रीय रेलमार्ग की नीव पड़ी। अन्य क्षेत्रो मे भी इसी प्रकार की चकबन्दियॉ शुरू हो चुकी थीं और शीघ्र ही राष्ट्र भर के रेलमार्ग ट्रंक लायनो अथवा रेलपद्धतियो के रूप मे सघटित हो गये। इन पर वाण्डरबिल्ट, गूल्ड, हैरिमैन, हिल तथा मार्गन और वेलमाण्ट-जैसे वैंकरो का नियन्त्रण था। ई. एच. हैरिमैन ने इलिनोइस सेण्ट्रल, यूनियन पैसिफिक तथा एक दर्जन अन्य रेलवे-लाइनो को मिला डाला था और राष्ट्रभर की रेल-लाइनों को एकत्र करने के वह सपने देखने लगा था। लेकिन, इस स्वप्न को बडी हद तक साकार करने का श्रेय बैंकर जे. पी. मार्गन के लिए ही सुरक्षित रहा।

मार्गन घराने के उत्कर्ष की कहानी इस सप्रयोजन की प्रक्रिया के सबसे अधिक महत्वपूर्ण विकास ही कहानी है। वह तथाकथित 'मनी-ट्रस्ट' अथवा 'धननिधि' के सप्रयोजन की कथा है। सन् १८६४ मे जूनियस स्पेन्सर मार्गन-नामक व्यक्ति ने—जो कि बहुत वरसो से अमेरिकन सिक्योरिटियॉ अग्रेज पूँजी-विनियोक्ताओं के हाथ वेचा करता था—अपने पुत्र जे. पीयर पोइंट मार्गन को

अपने कारबार की एक अमेरिकन शाखा का कार्याध्यक्ष नियुक्त किया। कुछ वर्षों के बाद युवक मार्गन ने फिलाडेल्फिया के पुराने बैंकर ड्रेक्सेल के साथ भागीदारी कर ली। सन् १८७३ मे ड्रेक्सेल मार्गन कंपनी इतनी शक्तिशालिनी बन गयी कि, राष्ट्रीय ऋण के तीन-चौथाई अरब रुपयो के कर्जे के पुनर्वित्तीकरण के काम मे उसने जे. कुक कंपनी का हाथ बटाया। उसी वर्ष जे. कुक कंपनी की अचानक असलफता के कारण मार्गन कंपनी की स्थिति और भी दृढ़ हो गई। कुछ वषो बाद जब उसने न्यूयार्क सेण्ट्रल के विदेशी स्टाक का बहुत बडा भाग बेच डाला तो उसकी स्थिति और भी दृढ़ हो गयी। न्यूयार्क सेण्ट्रल के साथ उसके इस गठबन्धन के कारण अगले २० वर्ष के लिए मार्गन कंपनी के लिए भारी क्रियाशीलताओ का मार्ग प्रशस्त हो गया।

सन् १८९० तक मार्गन कंपनी लगातार रेल-मार्गों का पुनर्गठन और पुनर्वित्तीकरण करती रही, जिससे उसका प्रभाव इस प्रमुख क्षेत्र मे और भी अधिक बढ़ गया। चूँकि सन् १८९३ की विभीषिका के कारण देश के आधे रेल्वे-मार्ग रिसीवरो के हाथ नीलाम पर चढ़ गये, इसलिए रेलमार्गों के अनेकों व्यवसायी सर्वत्र जुपिटर मार्गन के पास मुसीबतो से छुटकारा पाने के लिए दौड-धूप करने लगे थे। और, चूँकि यह व्यवसाय काफी आयकर भी था इस कारण से और कुछ इस वजह से भी कि जिन सिक्योरिटियो को मार्गन ने विदेशों मे बेचा था उनकी दृढ़ता बनाये रखना भी जरूरी था; इसलिए उसने इन लोगों की सहायता करना आवश्यक समझा। जब विभीषिका के बादल दूर हो गये, तब तक मार्गन कंपनी न्यूयार्क सेण्ट्रल, दि सदर्न, दि चिजापीक एण्ड ओहियो, दि सान्ता फे, दि रौक आइलैण्ड आदि अनेकों, एक दर्जन कंपनियो पर हावी हो चुकी थी।

इसी बीच मार्गन कंपनी का प्रभाव अन्य क्षेत्रों मे भी पहुँच चुका था—यहाँ तक कि शताब्दी के प्रथम दशक मे शायद ही कोई बडा व्यवसाय ऐसा था जिस पर इस कपनी का निश्चयात्मक प्रभाव न था। मार्गन ने फेडरल स्टील कपनी को आर्थिक सहायता दी और इतना गहरा सौदा पटाया जिसका परिणाम युनायटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन के रूप मे सामने आया। कृषि-उपकरणों के झगडो कों निबटाकर उसने इण्टरनेशनल हार्वेस्टर कंपनी के रूप मे उन्हें सघटित कर दिया। उसी ने अमेरिकन जहाजरानी व्यवसाय को सघटित करके दुर्भाग्यमयी इण्टरनेशनल मर्केण्टाइल मैरीन कंपनी की स्थापना की तथा जनरल इलेक्ट्रिक, अमेरिकन टेलीफोन एण्ड टेलिग्राफ, दि न्यूयार्क रैपिड ट्रांसिट

कंपनी तथा अन्य दर्जन भर बडे जनसेवी व्यवसायो को वित्तीय सहायता दी। सन् १९१२ में काग्रेस द्वारा नियुक्त समिति ने बताया कि मार्गन-घराने तथा राकफेलर-घराने द्वारा प्रभावित बैकिग हाउस रेलरोडो, शिपिग-कंपनियो, जनोपयोगी व्यवसायों, बैको, एक्सप्रेस-कपनियो, कोयला, तावा, लोहा, स्टील, इश्योरेन्स आदि की कपनियो मे ३४१ डाइरेक्टरो के पद सभाले हुए थे तथा २२ अरब डालर की उनकी पूॅजी इनमे लगी हुई थी। वुडरो विल्सन ने इसीलिए कहा था—"इस देश मे सबसे बडा एकाधिकार तो पूॅजी का एकाधिकार ही है।"

इस प्रकार की निधियो और सप्रयोजनो की क्या विशिष्टता थी? इस प्रकार के सप्रयोजनो के कारण इतिहास मे तब तक अज्ञात किन्तु दूरगामी-प्रभावपूर्ण एक ऐसी अनुपस्थित-स्वामित्व-पद्धति का जन्म हुआ, जिसकी ओर से न्यूयार्क के निगम कोयला, तावा, लोहा, लक्कड, रेलमार्ग आदि की अपार सपद का निर्देशन किया करते थे। यह निर्देशन कुछ थोडे से लोगों के हाथों मे ही केन्द्रित होता था और उन लोगो का प्रभाव लाखो लोगो का भाग्य निर्णय किया करता था। अनेको वादशाहों को भी ऐसा प्रभाव प्राप्त न था। उसके कारण राष्ट्र का आर्थिक नियन्त्रण उत्तर-पूर्व के एक छोटे-से अनुभाग मे ही केन्द्रित हो गया था और पुराने वर्गवाद की जगह एक नया वर्गवाद उठ खडा हुआ था। इसके कारण स्वामित्व और संपत्ति का इन्तजाम, दोनो एक दूसरे से विलग हो गये थे। स्वामित्व हजारों ऐसे स्टाक-होल्डरों के हाथ पड़ गया था, जिन्हे उत्तरदायित्व का कोई पता न था और जो अपनी कंपनियो की आर्थिक तथा श्रमिक नीतियो से भी नावाकिफ थे। निधि-निर्माण की इस पद्धति के कारण पूजी के ऐसे नये पुज सम्प्रयुक्त हो गये थे जो इतने प्रभावशाली थे कि राष्ट्र-नीति का निर्धारण उनके बिना न होता था। धारासभाएँ भी उनके प्रभाव मे थीं। देश की वैदेशिक तथा गृहनीति पर भी उनका प्रभाव था। निःसन्देह उसके कारण भयंकर पारस्परिक होड बहुत कम हो गयी और कार्यदक्षता बढ़ गयी, आवश्यक सुधारों तथा खोज के लिए रुपया लगाया गया तथा बहुत-सा इकट्ठा सघटित उत्पादन और चीजो के भावो मे कमी भी संभव हो सकी। लेकिन, समाज को इसका वेहद नुकसान उठाना पडा।

शासन द्वारा हस्तक्षेप : एण्ड्रू कार्नेगी इस परिवर्तन को 'शानदार अथवा विजयी लोकशाही' कहता था। दूसरे लोग उसे शानदार अथवा विजयी मानने को तो तैयार थे, लेकिन इसे लोकशाही मानने मे उन्हे पूरा

सशय था। दर असल जब वे देखते थे कि, भौतिक साधन-स्रोतों, उद्योगों, रेलमार्गों तथा अन्य लोकोपयोगी व्यवस्थाओं का नियन्त्रण केवल मुट्ठीभर व्यक्तियों के लाभ के लिए ही होता था न कि समग्र समाज के हित के लिए, तब उन्हें शक होने लगता था कि इस प्रकार की लोकशाही ज्यादा दिन चल भी सकेगी या नहीं। अनापशनाप खर्चा, पक्षपात, भूमि का रेलमार्गों द्वारा बडे पैमाने का उपयोग, प्रतिस्पर्धियों को कुचलने के लिए कार्नेगी तथा राकफेलर द्वारा की गयी भ्रष्ट कार्रवाइयाँ, श्रमिकों को दबाने के लिए बडे-बडे कार्पोरेशनो द्वारा की जाने वाली दमनीय कार्रवाइयाँ, विज्ञान और आविष्कारों द्वारा प्राप्त बचत से निधियों द्वारा अपनी जेबें गर्म करना, कार्पोरेशनों के एजटों द्वारा विधान-सभाओं के कक्ष मे बैठकर अपने फायदे के कानून बनवाना, तथा कार्पोरेशनों के वकीलों द्वारा राज्यीय कर अथवा नियन्त्रण-सबंधी कानूनो म दोष तथा छिद्रान्वेषण ढूंढना इन सभी बातों के कारण सारे देश म एक भय तथा कडुआहट इन निगमों के प्रति उत्पन्न हो गयी थी।

एकाधिकार की बात सार्वजनिक कानूनों के अनुसार बहुत पहले से ही गैर-कानूनी मानी जाती थी। अनेकों राज्यों के विधानों मे ऐसे अनुबन्ध मौजूद थे कि, जिनके द्वारा ऐसे एकाधिकारों का अस्तित्व निषिद्ध था। लेकिन, ये कानूनी प्रतिरोध एकदम बेकार से ही थे। इसीलिए अनेकों राज्यों ने १८८० के बाद के दशक में इस बारे मे कठोर नियंत्रणात्मक कानून बना डाले। कुछ ने तो ऐसी कई निधियाँ ही जिनका भ्रष्ट क्रियाकलाप चला आ रहा था, भंग कर दीं। लेकिन, चूँकि एक राज्य में भग की गयी निधि दूसरे राज्यों में जहाँ का कानून अधिक लचीला तथा ढीला था, फिर सयोजित की जा सकती थी और पूर्ववत् व्यापार फिर शुरू कर सकती थी; इसलिए इनके नियन्त्रण की बात स्पष्ट रूप से राज्यीय कानून के बाहर थी और केवल संघीय कानून ही उसका हल निकाल सकता था।

१८७६ जैसे पहले के जमाने में ही पीटर कूपर नामक लखपती दार्शनिक ने ग्रीनबैक दल के उम्मेदवार की हैसियत से राष्ट्राध्यक्षीय पद के लिए खडे होते समय राष्ट्र को चेतावनी दी थी कि "हमारी स्वतन्त्र संस्थाओं के लिए खतरा विद्रोह के प्रारम्भकाल की अपेक्षा, अब सिर्फ कुछ ही कम हुआ है—इस देश मे धनाधारित वर्ग तेजी से सघटित हो रहा है। इस प्रकार की सत्ता उन सब सत्ताओं से खराब होती है, जिनके कारण किसी भी देश का अभ्युदय खतरे में पड जाया करता है।" लेकिन, इस प्रकार की राज्यशाही के विरुद्ध शुरू

हुआ आन्दोलन, १८७६ के उत्तरवर्ती वर्षों मे अभ्युदय के पुनरावर्तन के कारण समाप्त हो गया। पर, १८८० के बाद के वर्षों मे देश मे फिर से इन निधियों के प्रतिचेतना जाग्रत हुई और सन् १८८४ मे एक एकाधिकार विरोधी दल भी मैदान मे उतर आया। लेकिन, डेमोक्रैट-दल के फिर से सत्ता प्राप्त करने की सभावनाओं के जोश के कारण इस दल को कम वोट मिले। चार बरस के बाद ही, ६ के लगभग बडी-बडी निधियो का सघटन हो जाने के कारण, देश फिर इस खतरे के प्रति सावधान हो उठा। राष्ट्राध्यक्ष क्लीवलैण्ड ने कॉग्रेस को बताया कि "वे निधियॉ अथवा पूल (कारपोरेशन), जिन्हें सावधानीपूर्वक नियन्त्रित तथा कानून और जनहित के अनुसार चलनेवाली सस्थाऍ होनी चाहिए थीं, तेजी से जनता पर प्रभुत्व कायम करते चले जा रहे हैं।" और इस प्रकार कॉग्रेस के दोनो दलों ने सब प्रकार की एकाधिकारी सस्थाओं के प्रति अपना विरोध कॉग्रेस के वृत्तपत्र मे अंकित करा दिया।

इस आन्दोलन का सबसे पहला क्रियात्मक परिणाम रेलमार्गो के अधि-नियन्त्रण के रूप मे प्रकट हुआ। सन् १८७० मे ही क्षेत्रपतियो ने तंग आकर रेल-मार्ग एकाधिकार के विरुद्ध आवाज उठायी और कहा कि इस प्रकार के एकाधिकार उनसे वेहद किराया वसूल किया करते हैं ओर उसके बदले बड़ी रद्दी सेवा देते हैं। वे सट्टेबाजी के लिए लाखों एकड जमीन पर भी बेजा अधिकार जमाये बैठे हैं और उसे बिकने नही देते। ग्रेन्ज, मिड् वेस्टर्न आदि क्षेत्रपति-सटघनो के अनुरोध पर राज्यों ने ऐसे कानून बना दिये, जिससे वेनिर्धारित दर से ही किराया वसूल कर सके। उसी कानून के जरिये छूट देना, अपने पिट्ठू जहाजियो के लिए खास रियायती दरे नियत करना, कम मार्ग के लिए एक ही लाइन पर लम्बे मार्ग की अपेक्षा ज्यादा किराया वसूल करना तथा निःशुल्क माल ले जाने अथवा यात्रा करने के लिए अनुज्ञा-पत्र जारी करना आदि को गैरकानूनी करार दे दिया गया। इस प्रकार के कानून को रेलमार्गो ने इस बिना पर कि वह बगैर कानूनी कार्रवाई के ही उन्हें उनकी जायदाद से वंचित करता है तथा यह कि यह कानून अन्तर्राज्यीय व्यापार पर काग्रेस के नियन्त्रण मे भी व्याघात पहुंचाता है, तुरत चुनौती दी।

सन् १८७६ मे दिये गये अनेकों अदालती फैसलों मे—खास तौर पर मान बनाम इलिनोइस नामक मुकद्दमे के फैसले मे—न्यायालयों ने राज्यीय कानून को इस आधार पर सही करार दिया कि ऐसी किसी भी जायदाद के बारे में, जिसका असर सार्वजनिक हित से सबद्ध हो अथवा जो सार्वजनिक उपयोग की

वस्तु हो, राज्यों को प्रतिबन्धन अथवा नियन्त्रण के अधिकार प्राप्त हैं। लेकिन, संघीय विधि-निर्धारण के क्षेत्र पर राष्ट्रीय विधानसभाओं के अतिक्रमण के विषय में अदालतों के निर्णय स्पष्ट न थे। किन्तु, इसके बाद के फैसलों से यह स्थिति भी साफ हो गयी, यानी यह स्पष्ट कर दिया गया कि जहाँ तक स्थानीय व्यापार का सम्बन्ध था, वहाँ तक राज्यों को उसके बारे में कानून बनाने का अधिकार था लेकिन अगर वह किसी प्रकार भी अन्तर्राज्यीय व्यापार की परिधि में आता था तो वे उसे स्पर्श भी नहीं कर सकते थे। उसके बारे में कानून बनाने का एकमात्र अधिकार राष्ट्रीय शासन को ही था। चूँकि व्यापार का अधिकांश अन्तर्राज्यीय ही था, इसलिए इस बारे में निर्णय करने का भार कॉंग्रेस के जिम्मे ही आ पड़ा।

कॉंग्रेस ने भी इण्टरस्टेट कामर्स एक्ट (अन्तर्राज्यीय व्यापार अधिनियम) सन् १८८७ में स्वीकृत करके अपना दायित्व पूरा किया। यह अधिनियम जहाँ एक ओर रेलमार्गों की दर-प्रतिस्पर्धा तथा छूट के बुरे परिणामों से जनता की रक्षा करता था, वहाँ दूसरी ओर, समूहीकरण, रियायतों और सेवाओं के विषय में तथा दरों के बारे में भी विभेदक व्यवहार का प्रतिनिषेध करता था। उसके द्वारा सभी प्रकार के किरायों के 'न्याय' तथा 'औचित्यपूर्ण' होने की अपेक्षा की गयी थी। इस प्रकार के अस्पष्ट प्रतिनिषेधों से अधिक महत्वपूर्ण बात थी 'एक' इण्टर-स्टेट-कामर्स-कमीशन (अन्तर्राज्यीय व्यापार आयोग) की नियुक्ति, जिसके जरिये इस अधिनियम के परिचालन का निरीक्षण होता रहे। यह आयोग उन अनेकों प्रशासकीय मण्डलों में से जो आगे चल कर इतने महत्वपूर्ण बन गये थे कि वे सरकार के चौथे विभाग के नाम से पुकारे जाने लगे थे—पहला प्रशासकीय आयोग था। यह इण्टर-स्टेट-कामर्स-एक्ट बहुत दिनों तक बेअसर बना रहा। लेकिन, एल्किंस एक्ट (सन् १९०३) तथा १९०६ के हेपबर्न-एक्ट जैसे नये अधिनियमों के आयोग तथा अदालतों द्वारा अधिक कठोरतापूर्वक प्रतिपालन कराये जाने के कारण कुछ समय में ही रेलमार्गों का निकृष्टतम भ्रष्टाचार नष्ट हो गया और दरों तथा सेवाओं पर प्रभावपूर्ण नियन्त्रण भी स्थापित हो गया।

रेलमार्गों को नियन्त्रित करने का काम निधियों के नियन्त्रण की तुलना में कहीं सरल था। नैतिक कठिनाई शायद व्यापार के विस्तार और उलझन के कारण उत्पन्न नहीं हुई थी· बल्कि अमरीकी लोगों की योजना की गड़बड़ी के कारण पैदा हुई थी। यद्यपि अमेरिकन लोग बड़े व्यापार से भय खाते थे· लेकिन वे उसे सराहते भी थे। वे एकाधिकार के खतरे से अपनी रक्षा जरूर

करना चाहते थे; लेकिन साथ-ही-साथ बड़े पैमाने के उत्पादन और खर्चीले व्यवसायो से प्राप्त सुविधाओं का लाभ भी उठाना चाहते थे। वे जहाँ एक ओर यह चाहते थे कि सरकार व्यापार का नियन्त्रण करे, वहाँ दूसरी ओर निजी अव्यवसाय के गुणों को तथा व्यक्तिवाद पर उनकी उतनी ही उत्साहपूर्ण आस्था भी थी। वे सिर्फ इतना ही चाहते थे कि निधियो के दोष दूर कर दिये जाये लेकिन उन्हे समाप्त न किया जाय। जैसा कि राष्ट्राध्यक्ष थियोडोर रूजवेल्ट ने कुछ दिन बाद के अपने एक निधि-सम्बन्धी सन्देश मे कहा था कि :—

"हमारा उद्देश्य निगमो को समाप्त करना नही है, बल्कि ये बडे-बडे सप्रयोजन आधुनिक उद्योगवाद के आवश्यक अंग हैं। हम निगमो पर आक्रमण नही कर रहे हैं; बल्कि उनके दोषो को ही दूर करना चाहते हैं।"

रूजवेल्ट की इस परेशानी से प्रभावित होकर राष्ट्र के व्यग्यकर्त्ता फिनले पीटर डन ने उपर्युक्त कथन को इस प्रकार व्यक्त किया था—"निधियाँ ऐसी डरावनी दैत्याकार वस्तु जरूर हैं, जिन्हे ऐसे लोगो के ज्ञानपूर्ण अव्यवसाय ने, जिन्होने हमारे प्रिय देश की प्रगति मे बहुत अधिक सहायता पहुँचायी है, खडा किया है। एक ओर तो मै उन्हे एडीतले कुचल डालना चाहता हूँ; लेकिन दूसरी तरफ़ मै यह काम इतनी जल्दी नहीं करना चाहता।"

उनका यह कथन वास्तव मे 'इतनी जल्दी नहीं' के राष्ट्रीय दृष्टिकोण का ठीक ही परिचय देता है और कॉग्रेस ने इस मामले मे जल्दी की कार्रवाई की भी नहीं। जैसे-जैसे यह बात साफ होती गयी कि निधि-समस्या का मुकाबला राज्य एकाकी रूप से न कर पायेगे, तैसे-तैसे कॉग्रेस को कार्यवाही करने के लिए मजबूर होना पडा। सन् १८९० के ऐण्टिट्रस्ट एक्ट (निधि विरोधी अधिनियम) के द्वारा वे सब इकरार, सप्रयोजन अथवा समझौते—जो व्यापार स्वातन्त्र्य पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध लगाते थे—और सभी एकाधिकार, गैरकानूनी करार दे दिये गये। आम तौर पर लोगो का ख्याल था कि, इस कानून के जरिये सरकार को इतनी सग्रहीत शक्ति प्राप्त हो जायगी कि वह स्टैण्डर्ड आयल जैसे महानिगमों और ह्विस्की तथा शक्कर सबन्धी महान् सप्रयोजनो और पूलो पर हावी हो सकेगी। लेकिन, जब सरकार ने कुछ नरमी के साथ थोडे से एकाधिकारों को तोडने का प्रयत्न किया, तो अदालतो ने उनकी रक्षा की और वे मजे मे अपना काम चलाते रहे। व्यंग्यकर्त्ता डन ने इस पर टीप जमायी—"साधारण जन जिसे पत्थर की अभेद्य दीवार समझा करते थे, वह वकीलो के लिये विजय-तोरण साबित हुई।" सरकार की यह पराजय ऐसी करारी साबित

हुई कि शर्मन-एक्ट के पास होने के दस बरस के भीतर ही बडे-से-बडे और बेहद बदनाम और भी स्ट्रट कायम हो गये।

युनाइटेडट् स्टेटस स्टील कार्पोरेशन के सघटन के बाद् तो सार्वजनिक असतोष का तूफान ही उठ खडा हुआ। अखबारों और सभाओं में आलोचना की ऑधी सी आ गयी। ईडा टार्वेल की 'स्टैण्डर्ड आयल कंपनी का इतिहास', रसेल की 'दुनिया की सबसे बड़ी निधि (गोमास निधि)' जैसी पुस्तके हजारों की तादाद् मे विक उठीं और महाव्यापार के अत्याचारों के भण्डा-फोड वृत्तान्त मैक क्ल्योरर्स मैगजीन, एव्रीवाडीज मैगजीन तथा कौलियर्स मैगजीन-जैसे नये जनप्रिय पत्रो के पृष्ठों मे प्रकाशित होने लगे और कभी-कभी पुराने प्रतिष्ठित पत्रों मे भी उनकी पहुँच होने लगी। यह आलोचना इतनी व्यापक और तीव्र होती थी कि उस शताब्दी के प्रथम दशक का नाम ही कीचड छींटने का युग (दि एरा आफ माकरकर्स) पड गया।

इस प्रकार निधि-विरोधी कानूनों के प्रभावशाली प्रतिपालन की मॉग इतनी अधिक जोर पकड गयी कि उसे किसी प्रकार भी रोका न जाता सकता था। अतएव थियोडर रूजवेल्ट ने उत्साहपूर्वक इस ओर कदम बढाया। उन्होंने कहा—"जहॉ तक निधि-विरोधी कानूनों का सबन्ध है, उन्हें लागू किया जायेगा। यदि इस विग्रय मे कोई मुकदमा चलाया जायेगा, तो उसमे किसी प्रकार का समझौता, सिवाय उन शतो पर कि सरकार की जीत हो, न किया जायेगा।" वाल-स्ट्रीट के सरकारी क्षेत्रों को यह जानकर कि स्वयं राष्ट्राध्यक्ष ने एटर्नी जनरल को आदेश देकर मार्गन, हैरिमैन और हिल-जैसे रेलमार्ग धनिकों द्वारा चलाये जा रहे ट्रास मिस्सिसिपी रेलरोड सघटन को भंग करने का आदेश दिया है, आश्चर्य हुआ। उन्हे यह देखकर और भी आश्चर्य हुआ, कि एटर्नी जनरल नार्दर्न सिक्योरिटीज कंपनी के मुकदमे सफल भी हुए हैं। तुरन्त बाद ही 'मास लपटने वाली निधि' (मीट पैकर ट्रस्ट), तम्बाकू व्यापार निधि और स्टण्डर्ड आयल कम्पनी के विरुद्ध भी मुकदमे दायर हुए और उन सब मे सरकार की विजय हुई।

लेकिन, ये विजयें केवल सनसनीखेज ही थीं; उनमे सार कुछ भी न था। भंग हो जाने पर भी इन निधियों के अंगभूत तत्वों ने ऐसे दूसरे रास्ते ढूँढ निकाले, जिनके बल पर वे अपने हितों की सामुदायिक रूप से रक्षा कर सकते थे। रूजवेल्ट ने भी सिवाय व्यूरो-आफ-कार्पोरेशन की स्थापना के निधि विरोधी कानूनों को मजबूत बनाने के लिए और कुछ नहीं किया। यह व्यूरो

कार्पोरेशनों के भ्रष्टाचार के विरुद्ध निर्दय प्रचार बड़े प्रभावशाली ढंग से करता रहता था। अदालतों में प्राप्त सफलताओं और बड़े-बड़े धनिक दुष्कर्मियों के कारनामों के भण्डाफोड के बावजूद, ये निधियाँ रूजवेल्ट की पद-निवृत्ति के समय ज्यादा शक्तिशालिनी थी। जाहिर तौर पर राकफेलर का यह कथन कि "ये संप्रयोजन तो अब टूट नहीं सकते। हाँ व्यक्तिवाद जरूर सदा के लिए विदा हो चुका, अब वह लौट नही सकता है," सही ही था।

चौदहवाँ परिच्छेद

श्रम तथा प्रवासी अन्तःप्रवेश

श्रमिक और उसकी मजूरी : देश के सम्पन्न साधन-स्रोतों के दोहन, उद्योगों के यंत्रीकरण तथा निधियों की स्थापना के कारण कुछ भाग्यशाली व्यक्तियों के गुट्ट और बहुसंख्यक काइयाँ पूँजी-विनियोजकों के हाथों में ही धन की अजस्र धारा प्रवाहित हो रही थी। उन बेचारे श्रमिकों को, जिन्हें व्यापार की वास्तविक बेगार का बोझ उठाना तथा हाथ से काम करना पड़ता था, उस धन के प्रवाह से कोई फायदा न मिलता था। इस विशाल व्यापार की उन्नति में श्रमिकों का बहुत बड़ा हाथ था। वे भी उसके महत्वपूर्ण मूलाधारों में से अन्यतम आधार थे। लेकिन, उस व्यापार के मुनाफे के बटवारे के वक्त उन बेचारों को खास तौर पर उससे वंचित कर दिया जाता था। सामाजिक हितों के विषय में भी उनका कोई ध्यान नहीं रखा जाता था। कामगारों को शायद ही कभी औचित्यपूर्ण सुविधा दी जाती थी। उन्हें स्थानीय क्लबों का सदस्य बनने के लिए कभी भी निमंत्रित नहीं किया जाता था। विश्वविद्यालय तथा कालेज, जो धन-पतियों पर सदा सन्मानार्थ डिग्रियों की वर्षा किया करते थे, कभी भी श्रमिकों का इस बारे में नाम तक न लेते थे। द्रव्य के नये साधनों का उद्देश्य जहां द्रव्य का विस्तृत तथा व्यापक विभाजन होना चाहिए था वहां इस प्रकार के विभाजन का कहीं पता भी न था। श्रम में कमी करने वाले यंत्रों के विनियोग का लाभ जहां काम के घंटों में कमी होना चाहिए था वहाँ इस उद्देश्य की पूर्ति में बरसों लग गये। जहां विज्ञान के विनियोग के कारण श्रमिकों की कार्यसम्बन्धी परिस्थितियां अधिक सुरक्षित और सरल बनायी जानी चाहिए थीं वहां उनमें से अधिकांश लोगों को उत्तप्त, शोरगुल और घुटनभरी फैक्टरियों में ही अथवा खतरे से घिरी खानों और खदानों में ही काम करते रहना पड़ रहा था। औद्योगिक दुर्घटनाओं और बीमारियों के कारण होनेवाली मौतों की गणना भी लगातार प्रति वर्ष भयानक रूप में बढ़ रही थी। श्रमिकों को शहरों की गन्दी घनी बस्तियों के दड़बों में रहकर निराशा और बेकारी का और अदक्ष

श्रमिक लोगो की उस फौज की, जो विदेशों से तथा दक्षिण से लगातार आती चली जा रही थी, स्पर्धा का भी सामना करना पडता था। इस प्रकार श्रमिकों का दैनिक जीवन वास्तव मे बडा ही दुःखमय और निराशापूर्ण हो उठा था। अपनी दशा सुधारना भी उन्हें कठिन पड रहा था, क्योंकि संगठित होकर काम करना और हडताल करना सन्देह की दृष्टि से देखा जाता था। साथ ही साथ काग्रेस तथा राज्यीय विधानसभाओं मे श्रमिको के प्रतिनिधि भी उंगलियों पर गिने जा सके, इतने ही थे।

वास्तविकता तो यह है कि औद्योगिक अमरीका की उन्नति मे सबसे अधिक सहायता पहुॅचाने वाले विकास के साधनो मे से कुछ साधन ऐसे भी थे कि जिनसे श्रमिकों का वास्तविक अहित ही हुआ। यहॉ हम उनमे से दो का संक्षिप्त विवरण ही देंगे: वे थे उद्योगों का यंत्रीकरण और निगमो का उद्भव। यंत्रीकरण के कारण श्रमिको के स्तर मे समग्रम रूप;से गिरावट ही आयी। बड़ी मेहनत से प्राप्त की गयी कार्यकुशलता का अब उतना मूल्य न रह गया था जितना पहले हुआ करता था, क्योंकि मशीन द्वारा उससे भी अच्छा और ज्यादा काम हो सकता था जितना एक प्रशिक्षित शिल्पी किया करता था। कलाकार की सृजनवृत्ति भी नष्टप्रायः हो गयी और कामगार उस यान्त्रिक प्रक्रिया का, जो स्वचालित मशीनें दिन के हर मिनट पर नीरस तरीके पर किये जाती थीं, एक पुरजा मात्र रह गया था। जैसा कि अप्टन सिन्क्लेयर ने अपने प्रसिद्ध उपन्यास 'जंगल' मे लिखा था:

"घास काटने की मशीन के सैकडों पुरजों मे से हरेक पुरजा अलहदा-अलहदा बनाया जा रहा था और कोई कोई पुरजा तो सैकडो आदमियों के हाथो से बनाया जा रहा था। जहॉ जर्गिस काम कर रहा था वहॉ एक मशीन ऐसी थी जो फौलाद के खास किस्म के करीब २ वर्ग इंच आकार के टुकडे काटती और उन पर ठप्पे लगाती जाती थी। ये टुकडे लुढ़कते हुए एक तख्ते पर आकर गिर रहे थे। इन्सानी हाथों को सिर्फ इतना ही काम करना पड रहा था कि वे इन टुकडों को सीधी कतारों मे सजाते जायॅ और बीच बीच में तख्ते बदलते जायॅ। यह काम अकेला एक लड़का ही कर रहा था, जिसका ध्यान और ऑखे इसी काम पर केंद्रित थीं। उसकी उंगलियॉ इतनी तेजी से चल रही थीं कि फौलाद के टुकडो के एक दूसरे के साथ टकराने की आवाज़ उस सगीत जैसी लग रही थी जो किसी एक्सप्रेस रेलगाडी के सोने के डब्बे मे रात को यात्रा करते वक्त सुनायी पडता है। . ..इस तरह के तीस हजार टुकडे रोजाना

उसके हाथों से गुजरते थे यानी ९ या १० लाख हर साल, और ज़िन्दगी में ये कितने थे, यह सिर्फ देवता ही बता सकते थे। उसके करीब दूसरे आदमी भी बैठे थे जो तेज़ी से घूमते हुए चक्की के पाटों पर झुके हुए, रीपर के फौलादी चाकुओं पर आखिरी धार रख रहे थे। वे उन्हें दाहिने हाथ से एक डलिया में से उठाते जाते थे और पहले उनके एक पार्श्व को पत्थर पर दबाते और फिर दूसरे को और अन्त में बायें हाथ से दूसरी डलिया में डालते जाते थे। इन आदमियों में से एक ने जर्गिस को बताया कि वह तेरह बरस से लगातार फौलाद के ३ हजार टुकड़ों पर रोजाना इसी तरह धार देता चला आया है।"

औद्योगिक मितव्ययिता की प्रक्रिया में अक्सर देखा गया है कि मशीन कारीगर को अपदस्थ कर दिया करती है। मशीन बृहत्काय पूंजी-विनियोजन की प्रतिनिधि होती है और वह दिन के चौबीसों घंटे और हफ्ते के सातों दिन लगातार काम कर सकती है। साथ ही साथ काम करने की स्थितियों का निर्धारण भी उसी के हाथ रहता है, मसलन इस तरह कि लोहे और फौलाद की फैक्टरियों में पिछले पचास बरसों से २४ घंटे रोज काम चालू रहने की स्थिति इसी वजह से जारी रखी गयी चूंकि भट्टियों को लगातार गर्म रखना जरूरी होता था और आखिरी नतीजा यह भी था कि मशीनों की वजह से ही बेकारी भी काफ़ी तादाद में बरपा हुई। शायद यह किसी हद तक सही है कि मशीनों की वजह से इतने काम निकल आये जितने उनकी वजह से बन्द नहीं हुए। लेकिन ये काम उन लोगों को नहीं मिला करते जिनको उनकी जरूरत होती, बल्कि पुराने कारीगरों को नया काम मिलने से पहले बेहद मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। बड़े पैमाने की बेकारी मशीन युग की ही देन है।

बड़े बड़े निगमों का संगठन, काम दिलाऊ मालिक की हैसियत से, अक्सर श्रमिकों के लिये अलाभकर ही सिद्ध होता था। छोटे पैमाने के उद्योगों में यह अच्छी बात है कि मालिकों का मजदूरों के साथ निकट सम्पर्क बना रहता है और उनके सामूहिक जीवन से भी वे परिचित रहते हैं। मज़दूर लोग दूरस्थ और अवैयक्तिक संगठनवाले मालिक की अपेक्षा स्थानीय मालिकों से अपने फायदे की बातों के लिए अधिक सफलतापूर्वक सौदा कर सकते हैं। थियोडोर रूजवेल्ट ने यही बात बड़ी खूबी से यों कही है:

"...मालिक और कर्मचारी के पुराने गहरे रिश्ते टूटते जा रहे हैं। कुछ पीढ़ियों पहले मालिक अपनी दूकान या कारखाने के हर एक आदमी को

पहचानता था। वह उनको 'विल', 'टाम', 'डिक', 'जान' कहकर पुकारता था और उनकी बीबियों और बच्चों की खैर-खैरोआफियत दर्याफ्त करता रहता था। उनसे हँसी मजाक भी कर लेता, उनके किस्से सुनता, अपने सुनाता और कभी कभी शायद तम्बाकू भी उनसे लेकर खा लिया करता था। उस छोटी सी दूकान मे मालिक और नौकर के दर्म्यान दोस्ताना और इन्सानियत का रिश्ता हुआ करता था।"

लेकिन एन्थ्रासाइट उद्योग चलानेवाले रेलमार्गो के महाप्रभुओं और उन एक लाख पचास हजार मजदूरों के, जो उन की खानो मे काम करते थे या अपने निर्वाह के लिए इन खान-मजदूरों पर निर्भर रहने वाली पचास हजार औरतों और बच्चों के बीच इस तरह का कोई रिश्ता न था।"

न्यू इंग्लैण्ड के एक मिल-मालिक ने भी, सिनेट की एक समिति के सामने बयान देते हुए सक्षेप मे कहा था, "मै मजदूरो से कभी कुछ नहीं कहता। मुझे जो कुछ कहना होता है वह मैं सिर्फ ओवरसियरों से ही कहता हूं।"

सयुक्त राज्य अमरीका के कुछ अन्य विशिष्ट कारकों ने भी श्रमिको की स्थिति का निर्माण किया। इन कारकों मे से सर्व प्रथम था, गृह-युद्ध के बाद की एक या दो पीढ़ियो के भीतर ही अच्छी और सस्ती जमीनो का जनता के हाथ मे पहुच जाना। यह कहना कि पश्चिम की जमीनों ने श्रमिक असन्तोष को कम करने मे सेफ्टी वाल्व अथवा 'सुरक्षक नलिका' का सा काम किया, या बहुत से मजदूरो को उसने शरण दी, कुछ अत्युक्ति मात्र ही होगा। लेकिन इतना तो जाहिर ही है कि दो या तीन पीढ़ियो तक इस खाली जमीन की वजह से देहातों की फालतू आबादी ढुल-ढुलकर उधर पहुचती रही। गावो से, यहा तक कि कुछ शहरों से तथा बाहर से आने वाले प्रवासी लोग भी आकर वहा बस गये। अगर कहीं वे पाच लाख प्रवासी, जो १८५० और १८७० के बीच बाहर से इस देश मे आये, पूर्व के औद्योगिक शहरों मे बस गये होते तो श्रमिकों की हालत उससे कहीं बेहद बुरी हो जाती जितनी वह उस वक्त थी। खेती के खर्चे बढ़ जाने और अच्छी सस्ती जमीनें सब खत्म हो जाने के बाद फालतू आबादी अवश्य औद्योगिक क्षेत्रो में ही रुकी रही, क्योकि तब खेती कारखाने की मजदूरी के लिए कोई क्रियात्मक विकल्प न रहा था और श्रमिक लोगों के पास औद्योगीभूत समाजव्यवस्था की बुराइयों से बचने का कोई अन्य उपाय भी न था। तब तो सिर्फ मजबूती से खड़े होकर उसका सामना करना ही एक मात्र चारा उनके सामने रह गया था।

अन्य औद्योगिक राष्ट्रों से विशिष्ट एक अन्य कारण सयुक्त राष्ट्र अमरीका में यह था कि प्रवासियों का अजस्र तथा अप्रतिबद्ध प्रवाह देश मे प्रविष्ट होता चला आ रहा था। सन् १८७० से १९१० तक बीस लाख से ज्यादा प्रवासी देश में आ बसे थे। स्त्रियों और बच्चों को यदि इस सख्या मे से निकाल दिया जाय—यद्यपि इन में से बहुत सी स्त्रिया और बच्चे भी काम किया करते थे—तो भी यह कहा जा सकता है कि कई हजार प्रवासी प्रति वर्ष श्रमिकों की फौज मे शामिल होते रहते थे और कारखानों तथा खानों में किसी भी दर पर और हर हालत में काम करने के लिए मुस्तैद रहते थे। उत्तर के श्रमिकों को इन प्रवासियों की ही स्पर्धा का सामना नहीं करना पडता था। शताब्दि बदलने के बाद ही दक्षिण मे भी हजारों तगड़े नीग्रो लोग—जो पोल, इटालियन और हंगेरियनों के कन्धों मे कन्धा भिडा कर काम करने के लिये तैयार थे—आने लगे थे। यह बात सही है कि विदेशों से या दक्षिण से आने वाला हर एक नवागन्तुक किसी न किसी श्रमिक की जगह ले रहा था बल्कि 'बूम' अथवा व्यापारिक कार्याधिक्य के काल मे सभी के लिए काफी काम निकल आता था, तथा नवागन्तुकों की वजह से स्थानीय कारीगरों को ऊंची जगहें पाने का मौका भी मिल जाता था, लेकिन ढेर के ढेर मजदूरों के इस आगमन के कारण मजदूरी की दरें कम होने लगीं, काम का स्तर घट चला और श्रमिक सगठनों में फूट पडने लगी।

सयुक्त राज्य अमरीका का एक तीसरा विशिष्ट कारक और भी था—वह था राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और सघीय राजनीतिक प्रणाली का सह-अस्तित्व। श्रमिक समस्याए—चाहे वे कोयला उद्योग की हों या कपड़ा उद्योग की, लोहा उद्योग की या फौलाद कारखानों की, राष्ट्रभर में एक सी ही थीं, लेकिन उनको हल करने का अधिकार—अभी थोड़े से वर्षों पहले तक—केवल राज्यों के ही हाथ में था। यद्यपि आपसी होड़ राष्ट्रव्यापिनी थी, लेकिन काम के घंटे और मजदूरी की दरें निर्धारित करने का अधिकार राज्यवार था। परिणाम यह होता था कि यदि न्यू फाउण्डलैण्ड के वस्त्रोद्योग में या न्यूयार्क की सिले हुए कपड़ों की दूकानों के मामलों में श्रमिक लोग कुछ रियायते पा भी लेते थे तो वे सहूलियतें उन उद्योगों को ऐसे राज्यों में, जहा कानून इतने कडे न थे, हटा कर, खत्म कर दी जाती थीं। नये ज़माने के आगमन के बाद यह सब गडबड़ निस्सन्देह मिट गयी। सघीय शासन ने औद्योगिक सबन्धों के सपूर्ण सगठनों पर राष्ट्रीय नियन्त्रण स्थापित करने के रास्ते ढूंढ़ निकाले।

एक अन्य अन्तिम परिस्थिति का भी यहा जिक्र कर देना उचित होगा। बहुत से अमेरिकन लोग श्रमिक सगठनो को बड़े सन्देह की दृष्टि से देखा करते थे और जिस सहानुभूति से वे उद्योगसबंधीं समस्याओ को देखा करते थे उसी दृष्टिकोण से वे श्रमिक समस्याओ को देखना पसन्द नहीं करते थे। लिलियन वाड ने जो कि न्यूयार्क के एक प्रसिद्ध बन्दोबस्त विभाग की अध्यक्षा थी, अपने संस्मरणो मे लिखा है कि उनके जीवन के शुरू के वर्षो मे पूर्व की ओर की श्रमिक यूनियनो से लोग उसी तरह डरते थे जिस तरह कुछ दिन बाद सोशलिस्टो से और अब कम्यूनिस्टो से डरते हैं।

'शर्मन एण्टि-ट्रस्ट एक्ट' का सबसे पहला और सबसे अधिक प्रभावी प्रयोग श्रमिकों के सम्बन्ध मे ही किया गया और परिस्थितियो को देखते हुए यह प्रयोग था भी अपने ढंग का अनूठा। बहुत से अमरीकनो की, कुछ दिनों पहले यह धारणा थी कि व्यापार के हेतु व्यक्तियो अथवा कंपनियो का पारस्परिक गठबन्धन या संप्रयोजन तो अच्छी बात होती है, लेकिन श्रमिको का सगठन किसी हालत मे उचित नहीं होता। व्यापारियो का राजनीति मे भाग लेना उन्हे स्वाभाविक प्रतीत होता था, लेकिन श्रमिको का ऐसा करना वे राष्ट्र-विरोधी समझते थे। उद्योगो को दी जाने वाली सरकारी सहायता का जहाँ वे समर्थन करते थे वहा श्रमिको को दी गयी सरकारी मदद को समाजवादी कार्य अथवा दलबन्दी के दबाव का परिणाम बताते थे। उनका ख्याल था कि पूंजी लगाने वाले को कुदरतन अपनी पूजी का मुनासिब मुनाफा पाने का हक है जब कि वे पहले से ही मान बैठे थे कि कामगार को अपनी मेहनत का कोई बदला न मिलना चाहिए, सिवाय उतनी मजूरी के जो वह अपने मालिक से झटक सके। उनका ख्याल था कि बेकारी परमात्मा की देन होती है; लेकिन ज्यों-ज्यो लोग आधुनिक औद्योगिक समस्याओं से परिचित होते गये यह विचारधारा बदलती गयी। लेकिन फिर भी उनमे इतनी चेतना आने मे कि वे सगठित श्रमिक शक्ति के रास्ते मे रोडे न अटकायें, काफी समय लगा।

लेकिन हमें यह न समझ लेना चाहिए कि श्रमिकों की दशा औद्योगिक युग मे एकदम खराब थी। सबसे अच्छी बात तो यह थी कि इस ज़माने में काम करने वालों के लिये काफी काम मिल जाता था। मजूरी भी यद्यपि अच्छी नहीं कही जा सकती, फिर भी वह इतनी थी कि परिवार को भोजन, वस्त्र और रहने के लिए छोटा घर उस से जुटाया जा सकता था। अन्य यूरोपीय

देशों की तरह कोई मजदूर-पेशा-वर्ग अमरीका में उस वक्त तक न था, क्योंकि मजदूरी करने वाले लोगों को काम के इतने मौके थे कि वे एक काम छोड़ कर दूसरा पकड़ने और एक आमदनी वाले समुदाय को छोड़कर ज्यादा आमदनी वाले दूसरे समुदाय में शामिल होने के लिए आजाद थे। गृह-युद्ध के तुरन्त बाद ही अमरीका की यात्रा करने वाले एक अंग्रेज ने स्पष्ट शब्दों में लिखा था:

"अमरीकी मजदूर की हालत इंग्लैण्ड के मजदूर से बहुत भिन्न है। अगर उसे दुर्भाग्य हो तो वह जहां चाहे वहां जा सकता है। इसके लिए उसे अपनी जेब में चालचलन का प्रमाणपत्र या सर्टिफिकेट लिये घूमने-फिरने की जरूरत नहीं होती। बल्कि वहां अगर कोई मालिक इस तरह का सर्टिफिकेट मांगे तो शायद मजदूर भी मालिक के चालचलन का सर्टिफिकेट देखने की ख्वाहिश करने लगे। इन मामलों में वह भी उतना ही बड़ा है जितना उसका मालिक। इस देश को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि सामन्ती बेगार से जूझे बिना या जातियों के दमन से प्रताड़ित व उत्पीड़न की चक्की में पिसे बिना ही उसे राष्ट्रीय महानता प्राप्त हो गयी।"

लेकिन ये हालात भी बदल गये और बहुत से मजदूरों को आचारसम्बन्धी प्रमाण-पत्र जेब में रखना आवश्यक हुआ। बदनाम लोगों की सूची हर कारखाने में मौजूद रहने लगी और कई आन्दोलनकारी मजदूर कार्यकर्ताओं के लिये सब जगहों के दरवाजे बन्द कर दिये गये, लेकिन फिर भी बीसवीं सदी का यात्री अगर अमरीका आता तो उसे किसी प्रकार का वर्ग-भेद यहां देखने को नहीं मिल सकता था। निःशुल्क सार्वजनिक शिक्षा की व्यवस्था होने के कारण मजदूरों के बच्चे भी व्यापार तथा अन्य पेशों में जाने के लिए स्वतन्त्र थे। मतदान का प्रबल अस्त्र उनके हाथ में था और उचित रूप से संगठित और सचेत होकर यदि वे चाहते तो अपने अनुकूल कानून बनाने के लिए विधायकों को मजबूर कर सकते थे।

संगठन में ही शक्ति : श्रमिक लोग संगठित व्यापार के परिणामों से प्रभावित हुए बिना न रह सके। वैसे तो प्रजातन्त्र के प्रारम्भिक दिनों से ही किसी न किसी तरह के श्रमिक संगठन चले आ रहे थे, लेकिन ये ज्यादातर कमजोर और स्थानीय संगठन ही थे। सन् १८५० के बाद के दस सालों में संगठित शिल्पिक संगठन उठ खड़े हुए—जिनमें टाइपोग्राफिकल यूनियन, जो अभी तक चल रही है—सब से पुराना और महत्वपूर्ण है। लेकिन इन

संगठनों मे श्रमिकों का बहुत कम भाग ही शामिल हो सका था और इनमें से भी बहुत से लोग उस पुनर्निमाण के जमाने में, जो सन् १८७३ की विभीषिका के बाद देश पर छा गया था, इन संगठनो से अलहदा हो गये।

युद्ध के बाद के वर्षों मे तीन किस्म के श्रमिक सगठन प्रकट हुए। पहला था, औद्योगिक सगठन, जिसका सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि था 'नाइट्स आफ लेबर'। दूसरा था 'शिल्पिक सगठन' यानी कारीगरों का सगठन जो अनेकधा सगठित होकर पहले तो 'फेडरेशन आफ क्राफ्ट यूनियन्स' यानी शिल्पिक सगठनो का संघ नामक संस्था में परिवर्तित हुआ और फिर 'अमेरिकन फेडरेशन आफ लेबर' मे। तीसरी तरह के संगठन थे 'रेडिकल सोशलिस्ट' अथवा 'मौलिक समाजवादी श्रमिक समुदाय' जो साख्यिक दृष्टि से तो महत्वपूर्ण न थे, लेकिन सतत प्रयासी जरूर थे। सन् १९३० से पहले कभी भी इन संगठनों मे से न तो किसी एक की ही, न इन सबकी ही सदस्य सख्या मिल कर कुल अमरीकी मजदूर संख्या का अधिकाश बन सकी थी। श्रमिक आबादी के बडे-बडे भाग—कृषि-श्रमिक, प्रवासशील श्रमिक, घरेलू नौकर, सफेद पोश कामगार—सभी इस सगठन से बाहर थे।

प्रारम्भिक श्रम-सगठनों मे सबसे अधिक महत्वपूर्ण तथा शायद सबसे अधिक मनोरजक सगठन था 'नोबल आर्डर आफ दि नाइट्स आफ लेबर' जो यद्यपि सन १८६९ मे स्थापित हुआ था, लेकिन जिसका असली इतिहास सन् १८७९ से, जब कि टेरेन्स पाउडरले इसका ग्रैण्ड मास्टर बना, शुरू होता है। 'नाइट्स आफ लेबर' सगठन की प्रमुख विशेषताएँ थी—उसका लोकतान्त्रिक सगठन तथा उसका विशाल सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण। सभी किस्म के श्रमिक उसके सदस्य बन सकते थे—भले ही वे कुशल शिल्पी हों या अकुशल, खेतिहर, मिल मजदूर, खदान कामगार या कारीगर। सिर्फ जुआड़ी सैलून वाले, महाजन, वकील, स्टाक दलाल ही उसकी सदस्यता से वंचित किये गये थे। उसका उद्देश्य था 'श्रमिकों' के लिए उस सम्पदा मे, जिसका सृजन वे किया करते हैं, उचित हिस्सा सुरक्षित कराना, उनके लिए उचित आराम के घटों की व्यवस्था करना, अधिक सामाजिक सुविधाएँ प्राप्त करना, ऐसे वे सब अधिकार और सुविधाएँ उनके लिए सुरक्षित कराना, जो उन्हे सुशासन का लाभ उठाने, उसे समझ सकने, उसकी रक्षा करने और उसे स्थिर रखने योग्य बना सके। "ये शानदार उद्देश्य हड़तालो अथवा जोर-जबर्दस्ती के जरिये नहीं, बल्कि राजनीतिक आन्दोलन, शिक्षा तथा

श्रमिक सहकारों द्वारा ही प्राप्त करना इस संगठन की नीति थी। इस संगठन का पुरोगम यद्यपि मौलिक था, लेकिन था बडा अस्पष्ट। उसमें आठ घंटों के काम का दिन नियत कराना, बच्चों की मजूरी बद कराना, सार्वजनिक उपयोग की सेवाओं पर सार्वजनिक अधिकार स्थापित कराना, आय तथा दाय-करों को मिटाना, भूमि सुधार कराना आदि सभी बातें शामिल थीं। मौलिक आर्थिक परिवर्तनो के लिए कोरा आदर्शवाद तथा शरीफाना बहस-मुबाहिसा और समझाना-बुझाना कभी भी प्रभावी उपाय नहीं थे। लेकिन जब १८८५ के बाद नाइट्स ने हडताल का अस्त्र अपनाया तब उनका उद्देश्य किसी हद तक सफल हुआ। उस दल की सदस्यता दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ती गयी और साल भर के भीतर ही वह सात लाख तक जा पहुँची। इस सफलता से वे फूल कर ऐसे कुप्पा बन बैठे कि उन्होंने एक दुष्कल्पित सार्वजनिक हड़ताल की हिमायत आठ घटे काम का दिन मुकर्रर कराने के लिये की। चिकागो में इस हड़ताल का परिणाम था 'हे मार्केट स्क्वेयर में' हुई एक विशाल सभा, जहा किसी अज्ञात अराजकतावादी व्यक्ति ने बम फेका, जिससे कई पुलिसवाले मर गये। यद्यपि इस दुराचार के लिए नाइट्स जिम्मेदार न थे, लेकिन लोगबागों ने उन्हें ही इस काम के लिए बदनाम कर दिया। इस वजह से तथा उनके द्वारा संगठित अन्य हडतालों की असफलता और संगठन की अन्दरूनी कमजोरियों के कारण इस संगठन की अवनति होने लगी, लेकिन जब ये लोग सन् १८९२ मे पोपुलिस्ट दल से सबद्ध हो गये तब यह अवनति इस संगठन के अवसान में परिणत हो गयी।

इसी बीच एक अन्य संगठन का उदय होने लगा था। उसका नाम था 'दि अमेरिकन फेडरेशन आफ लेबर'। सन् १८६३ में हालैण्ड के एक यहूदी, सोलोमन गोम्पर्स ने अपनी लन्दन की सिगार बनाने की दूकान बढाकर अम-रीका मे भाग्य-परीक्षा करने की ठानी। अपने साथ वह अपने १३ साल के लड़के सैम्युअल को भी लाया था। यह लड़का अमरीका आते ही सिगार बनाने के काम मे जुट गया। अगले साल यह लड़का सिगार मेकर्स यूनियन का सदस्य हो गया और उसी वक्त से सैम्युअल गोम्पर्स की जिन्दगी यूनियनवादी श्रमिकों के साथ सबद्ध हो गयी तथा अमेरिकन श्रमिक संगठनों का इतिहास सैम्युअल गोम्पर्स के जीवन से आरभ होता है। यद्यपि उसे कोई बाकायदा तालीम नही मिली थी, लेकिन सिगार बनाने की दूकान से उसे श्रमिक इतिहास तथा अर्थशास्त्र की पर्याप्त शिक्षा मिल गयी थी। आगे चलकर अपने संस्मरणों का वर्णन करते हुए उसने बताया :

"हमारा काम ही ऐसा था कि उससे दुकान के सब लोगो मे सहकारिता की ऐसी भावना उत्पन्न हो जाती थी कि जिसका आनन्द बहुत कम श्रमिको को मिलता है। उस दूकान की एक अपनी दुनिया थी—एक विश्वबन्धुत्व की दुनिया। दूकान मे काम करने वाले लोग सभी देशो से आये हुए लोग थे। कुछ लोग तो वाकई सब जगह घूमे हुए थे। दूकान मे पढ़ाई भी होती थी। सिगार बनाने वाले लोगों ने थोड़ा थोडा रुपया देकर अखबार, पत्र-पत्रिकाये तथा किताबे मंगाने के लिए एक फण्ड इकट्ठा कर लिया था, जब लोग काम कर रहे होते थे तो हममे से कोई एक आदमी पढ़ता रहता था और हम सुनते रहते थे। यह पढ़ाई करीब घंटे भर तक चलती थी। पढने वाले को पैसे का नुकसान न हो, इसलिए हममे से हर एक उसे कुछ निश्चित सिगार देता था।"

इस तरह गोम्पर्स ने ब्रिटिश सुधारवादियो तथा जर्मन और रूसी समाजवादियो के लेखों से अपने आपको परिचित कर लिया। इसके अलावा, उसने क्रियात्मक शिक्षा भी प्राप्त कर ली। चूंकि उसे हडतालों, मुसीबात के दिनो और मौजूदा यूनियनो के दोषों का काफी कडवा तजुर्बा हो चुका था, इसलिए गोम्पर्स को एक कार्यशील कठोरता पर आधारित दृढ़ श्रमिक नीति की जरूरत महसूस होने लगी। उसने यह अच्छी तरह समझ लिया कि इस काम मे अनुशासन, ऐसी बड़ी सुरक्षित निधि है, जिससे हडतालो और मौसमी कठिनाइयो के वक्त आर्थिक सहायता जुटायी जा सकती है तथा रैडिकल्स और अन्य राजनीतिज्ञो के साथ सैद्धान्तिक विवाद बरकाने की बेहद जरूरत है। सन् १८८१ मे उसने सभी ट्रेड यूनियनो के प्रतिनिधियों को इकट्ठा करके फेडरेशन आफ् आर्गनाइज्ड ट्रेड एण्ड लेबर यूनियन्स आफ युनाइटेड स्टेट्स की स्थापना कर डाली। पाच साल बाद इसी सस्था का नाम 'अमेरिकन फेडरेशन आफ लेबर' हो गया।

अमेरिकन फेडरेशन आफ लेबर की रूपरेखा बहुत कुछ उसी जमाने के ब्रिटिश श्रमिक सगठनो से ज्यादा मिलती-जुलती थी, बनिस्बत अमेरिकन नाइट्स आफ लेबर के। नाइट्स से वह यों भिन्न था कि उसके सदस्य सिर्फ कुछ खास ऐसे शिल्पी ही हो सकते थे जो उच्च कोटि के श्रमिक होते थे। इसके अलावा वह स्वय-शासित ट्रेड यूनियनो की ऐसी शृंखला द्वारा निर्मित था जो युनाइटेड स्टेट्स फेडरेशन मे शामिल राज्यो की शृखला के समान थी। इसके अलावा, नाइट्स के विपरीत वह अधिक क्रियात्मक और अवसरवादी नीति का अनुयायी था। उसके एक प्रवक्ता का कहना था, "हमारे कोई खास उद्देश्य नहीं हैं, बल्कि हम तो रोज कुआँ खोदते

और रोज पानी पीते हैं। तात्कालिक मुद्दों पर ही हमारी लड़ाई चला करती है।" ये मुद्दे ज्यादातर, ज्यादा मजदूरी, काम के कम घटे, आदि ही थे, यद्यपि बालश्रम की समाप्ति, स्वास्थ्य तथा सफाई कानूनों का बनाना, ठीके पर श्रमिक भरती करना तथा कैदियों को भी श्रमिकों मे शामिल करना व चीनी प्रवासियों का आगमन बन्द करना आदि को भी नजरअन्दाज नहीं किया गया था। अपने लम्बे तथा सफल ऐतिहासिक अस्तित्व के जमाने में ए. एफ्. आफ् एल्. रूढिवादी, अवसरप्रिय तथा किसी हद तक वैशिष्ट्यवादी ही रहा। राजनीति से अलग रह कर वह यथा आवश्यक पूंजीवाद की सहायता करता रहा। ऊंचे चन्दे जमा करके इकट्ठी की गयी सुरक्षा निधि के ज़रिये वह हड़तालों मे माली मदद भी करता था और कठोर अनुशासन भी बनाये रखता था। अपनी गभीर नीति के कारण उसने जनता का विश्वास भी प्राप्त कर लिया था। उसने विरोध, मुसीबतों और प्रतिद्वन्द्वियों का सफलता से सामना किया। सन् १९२४ मे जब आखिरी मर्तबा गोम्पर्स ने उसकी अध्यक्षता स्वीकार की तब इस फेडरेशन की सदस्य-संख्या तीन लाख के लगभग थी।

तीसरे प्रकार का श्रमिक संगठन विशेष रूप से कमजोर ही बना रहा। यद्यपि अमरीकी इतिहास मे समाजवाद तथा साम्यवाद की पृष्ठभूमि बहुत पुरानी है, लेकिन शुरू शुरू मे उसका विकास ब्रुक फार्म जैसे शेखचिल्ली प्रयोगों द्वारा ही हुआ था। समाजवादी व्यवस्था की निकटतम वस्तु जो अमरीका मे प्रकट हुई, वह थी मोर्मोन कामनवेल्थ आफ उटाह, लेकिन उसके निर्माण मे श्रमिको का हाथ बहुत कम था। सन् १८७० में मौलीमेगायर नामक एक छायात्मक गुप्त सगठन ने पेंसिलवानिया के एन्थ्रासाइट क्षेत्रों को आतंकित करना शुरू किया, क्योंकि वहा श्रमिकों की दशा भयानक थी। अन्त मे कुछ ही वर्षों मे उसे कठोरतापूर्वक दबा दिया गया। कुछ जर्मन बुद्धिवादियों ने, जो अमेरिकन श्रमिकों की अपेक्षा कार्ल मार्क्स तथा फर्डिनाण्ड लासेल की शिक्षाओं से ज्यादा परिचित थे, अमेरिकन समाजवाद की स्थापना करने की असफल कोशिश की। सन् १८८२ में जोहान पोस्ट के अगमन के कारण श्रमिकों के इस वामपक्षीय अनुभाग मे कुछ क्रान्तिकारी झुकाव पैदा हुआ। पोस्ट को जर्मनी तथा इग्लैण्ड से निकाल बाहर किया गया था। इसके बाद वह अमरीका आया और अमरीकी कामगारों को हिंसात्मक नीति की ओर झुकाने का प्रयत्न करने लगा।

लेकिन समय रहते ही अमरीका के रेडिकल श्रमिक समुदायों ने वैदेशिक प्रभाव से अपने आप को मुक्त कर लिया। सन् १९०५ मे संगठित 'दि इण्ड-

स्टि्यल वर्कर्स आफ दि वर्ल्ड' नामक संस्था एकदम अमरीकी सस्था थी, यद्यपि उसने कुछ बाते फौरेल के सिद्धान्तो से ग्रहण की थी। पश्चिम के लकड़ी तथा खदान मजदूरो मे तथा पूर्व के कुछ कपड़ा-केन्द्रो मे प्राप्त थोड़ी-सी सफलता को छोडकर इस सस्था को कोई वास्तविक सफलता अपनी सदस्य-सख्या बढ़ाने मे नही प्राप्त हुई। सन् १९१७-१८ मे प्रथम विश्वयुद्ध का विरोध करने के कारण तो इसका सब कारोबार ही ठप हो गया। केवल उत्तर-पश्चिम के लकड़ी-मजदूर तथा यायावर खेतिहर मज़दूर ही उसके अनुयायी बने रहे।

श्रमिक संघर्ष : अमरीकी श्रमिको का इतिहास हडतालों और बल-प्रयोग से भरा पडा है। शुरू से ही अपने हितो के लिए श्रमिकों को सघर्ष करना पडा है। सगठित होने के अधिकार के लिए, हडताल करने के हक के लिए धरना देने, काम के घटे कम कराने, मजदूरी की दर बढ़वाने, काम करने की सुरक्षापूर्ण परिस्थितिया प्राप्त करने, दुर्घटनाग्रस्त मजदूरो के लिए मुआवजा प्राप्त करने, बालश्रम को खत्म कराने, प्रतिसघात्मक आज्ञाएं प्राप्त करने, 'यलो डाग कट्राक्ट्स' रुकवाने, 'स्ट्रैच आउट सिस्टम' बन्द कराने, कंपनी-स्टोर व्यवस्था तोडने, प्रवासी-आगमन पर रोक लगवाने और दूकानबन्दी आदि के लिए उसे सदा ही सघर्ष करना पडता था। ज्यादातर यह सघर्ष औद्योगिक क्षेत्रो मे ही चलता था, लेकिन कभी-कभी राजनीतिक क्षेत्रो मे भी वह प्रतिध्वनित होता था। अपने इस लम्बे युद्ध मे श्रमिको को किसी का भी सहारा नही मिला, जबकि व्यवसायियो-व्यापारियों को सदा जन-सम्मति, पुलिस तथा अदालतों का जबर्दस्त सहारा मिलता रहा। इस तरह के अजेय प्रतिरोध के मुकाबले मे श्रमिकों को ज्यादातर अपनी हडतालो मे हार माननी पडी या समझौता करना पडा। उनकी जीत बहुत कम हुई, लेकिन जीत इतनी पर्याप्त जरूर थी कि उसके आधार पर हड़ताल का एक शस्त्र के रूप मे उपयोग जारी रखा जा सका। लेकिन यह भूल न जाना चाहिए कि औद्योगिक सम्बधों मे बल का प्रयोग इस बात का द्योतक होता है कि विवेक की पराजय हुई, ठीक उसी तरह जैसे वह अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों मे हुआ करता है।

सन १८८१ से सन् १९०५ तक लगभग ३८ हजार हडताले हुई। इनमे से कुछ तो थोडे समय की और स्थानीय थी और कुछ लबी तथा राष्ट्रव्यापी। इस काल की सब से अधिक महत्वपूर्ण हडताल रेल-मजदूरों की सन् १८८७ की हडताल थी, जिसमे अमरीकी लोगो को पहलेपहल बड़े

पैमाने की औद्यौगिक हिंसा का परिचय मिला। अन्य प्रमुख हड़तालें थीं—सन् १८८६ की 'मैक कौर्मिक हार्वेस्टर वर्कर्स' की हड़ताल, जिसका दुःखद परिणाम हेमार्केट की दुर्घटना थी, सन् १८९२ की होमस्टेड हडताल, जिसके कारण मोनोनगहेला के तटपर जमकर युद्ध हुआ, राष्ट्र के आधे रेलमार्गों पर काम करनेवाले मजदूरों को सगठित कर देनेवाली १८९४ की महान् पुलमैन हडताल, कोलोरेडो, कोलफील्डस की हड़ताल, जिसके कारण क्रिपल क्राक का सघर्ष हुआ, सन् १९०३ की एन्थ्रसाइट कोल हडताल, जिसके कारण देश के कुल उद्योगों के बन्द हो जाने का खतरा पैदा हो गया था तथा जिसमें केवल राष्ट्राध्यक्ष थियोडोर रुजवेल्ट की मध्यस्थता के कारण ही अन्तिम रूप से समझौता हो सका। इन सब हड़तालों के इतिहास की तफसील यहा देना न तो लाभदायक ही होगा, न सभव ही। लेकिन इन सब हड़तालों मे से १८९४ की पुलमैन हड़ताल को इसके लिए चुन सकते हैं, क्योंकि बहुत सी बातों में दूसरी हड़तालों की एक न एक विशेषता इसमें मौजूद थी।

यह हडताल इलिनोइस राज्य के आदर्श नगर पुलमैन में शुरू हुई थी। कामगार लोग इस शहर मे कम्पनी के आरामदेह घरों मे रहा करते थे (जिनका किराया इसी किस्म के दूसरे शहरी घरों के किराये से सवाया था)। वे कम्पनी से ही गैस तथा पानी खरीदते थे और कम्पनी के स्टोरों से ही जरूरत की चीजें भी लेते थे। इस सब धन्धों से जार्ज पुलमैन तथा उसके स्टाक-होल्डरों को काफी मुनाफा होता था। १८९० के बाद के प्रारंभिक वर्षों की मन्दी की वजह से मजदूरी की दरें इसलिए कम कर दी गयी थीं कि विभाज्य लाभाश (डिविडेण्ट) काफी अच्छा बाँटा जा सके। जब श्रमिकों ने पुलमैन से निवेदन किया कि वह मध्यस्थ बनकर मजदूरी के प्रश्न को सुलझा दे तो उनकी यह प्रार्थना तुरन्त ठुकरा दी गयी। इस पर मजदूरों ने अपने औजार रख दिये और काम बन्द कर दिया। यूजिनी वी डेब्स के नेतृत्व में हाल ही मे सगठित अमेरिकन रेल्वे यूनियन ने इन मज़दूरों के हित को अपना लिया और अपने सदस्यों को निर्देश दिया कि वे पुलमैन-रेलकारो पर कोई काम न करें। इस कार्रवाई के बाद मजदूरों और रेलवे कंपनियों के बीच झगड़ा शुरू हो गया, जिसका प्रभाव आधे राष्ट्र पर पड़ा। कुछ ही सप्ताहों में उत्तर तथा पश्चिम के बीच अधिकाश परिवहन तथा सचार ठप हो गया। राजधानी से प्रकाशित होनेवाले एक दैनिक पत्र ने, हडताल खत्म करने के तरीकों का पूर्वानुमान लगाते हुए लिखा था कि वह सरकार तथा समाज के

खिलाफ एक युद्ध था। हडताल की सफलता से भयभीत होकर तथा सद्योजात रेल्वे यूनियन को इससे पहले ही कि वह और कुछ परेशानिया खड़ी कर सके—कुचल देने के लिए मालिकों के एक सघ जनरल मैनेजर्स असोसिएशन ने माग की कि अप्रतिहत रेलमार्ग सेवा बनाये रखने के लिये सघ सरकार इस मामले मे हस्तक्षेप करे।

असोसिएशन की यह अपील कारगर हुई। राष्ट्राध्यक्ष क्लीवलैण्ड का एटर्नी जनरल इस समय, भूतपूर्व रेल्वे एटर्नी रिचर्ड ओलने था। उसकी रेल्वे कम्पनियो के प्रति पूरी सहानुभूति थी। इसलिए उसने उनकी माग का पूरा समर्थन किया और राय दी कि सभी हडताली कार्रवाइयो के खिलाफ हुक्म इम्तनाई (प्रतिषेधाज्ञा) जारी किया जाय। परिणामतः सभी जगह तुरन्त गड़बडी फैल गयी। यह गड़बडी हडतालियो ने मचायी, या उकसाने वाले प्रतिनिधियों ने या बदमाशो ने, यह बात आज तक ठीक से निश्चित नहीं हो पायी। इलिनोइस राज्य के गवर्नर आल्टगेल्ड, राज्य की सेना की सहायता से उपद्रव दबाने के लिये तत्पर थे; लेकिन उन्हें इसका मौका दिये बगैर ही राष्ट्राध्यक्ष क्लीवलैण्ड ने सघीय सेनाओ को चिकागो जाने की आज्ञा दी। निषेधाज्ञा के कारण हडताल टूट गयी और सैनिकों ने श्रमिक आन्दोलन को करीब-करीब कुचल डाला। डेब्स ने प्रतिषेधाज्ञा को मानने से इनकार कर दिया और न्यायालय की मानहानि के अपराध मे उसे जेल भेज दिया गया। उधर गवर्नर आल्टगेल्ड ने सघीय सेनाओं को इस प्रकार से राज्य मे भेजे जाने का यह कहकर विरोध किया कि उससे सविधान की धाराओं का उल्लंघन हुआ है। लेकिन राष्ट्राध्यक्ष क्लीवलैण्ड ने उन्हें इस पर झाड दिया और न्यायालयों ने उसकी निन्दा की। इस तरह सब ओर से रेलमार्गीय कंपनियों की विजय ही विजय दिखाई पड़ने लगी।

लेकिन बाद मे काग्रेस द्वारा नियुक्त समितियों तथा अनुसंधान से पता चला कि हडतालियो तथा आल्टगेल्ड का ही कथन सर्वथा ठीक था। इस अनुसधान में पुलमैन नगर के औद्योगिक सामन्तवाद की बेहद भर्त्सना की गयी और हडतालियों को गडबड़ी के आरोप से बहुत कुछ मुक्ति मिली। जनरल मैनेजर्स असोसिएशन को दर्पपूर्ण तथा कानून की अवज्ञा करने वाला कहा गया, ओलने की नीति अनुचित ठहराई गयी तथा प्रतिषेधाज्ञा प्रचारित करना कानूनन सदिग्ध ठहराया गया। सघीय सेनाओं का प्रयोग भी अनावश्यक और अनुचित बताया गया। इस दुःखद घटना से उन सभी शक्तियों पर, जिनके

द्वारा इन वर्षों में श्रमिक आन्दोलन को बल मिला था, लोगो का ध्यान केंद्रित हो गया। एक बडे कार्पोरेशन की बदतमीज़ी, सहानुभूतिपूर्ण हड़ताल की भूमिका, श्रमिकों को दबाने के लिए 'एण्टि-ट्रस्ट' एक्ट तथा प्रतिषेधाज्ञा का औचित्य, न्यायालयों का विरोध, तथा सरकारी अधिकारियों का श्रमिको के बजाय पूंजीपतियों के प्रति पक्षपात आदि सभी बातें स्पष्ट हो गयीं।

सन् १९०० तक श्रमिकों ने अपने अनेक मौलिक अधिकार प्राप्त कर लिये थे। संगठित होने, हड़ताल करने, सामूहिक रूप से बात तय करने के सभी अधिकार उन्हे प्राप्त हो गये थे। कार्य करने और रहने की अच्छी स्थितियॉ प्राप्त करने के मामलों में भी कुछ प्रगति उन्होंने कर ली थी। लेकिन इतना तो स्पष्ट ही था कि इन अधिकारों की प्राप्ति का लाभ श्रमिक जनसंख्या के कुछ थोडे से अनुभागों को ही मिल रहा था। उसका जरा-सा भी प्रभाव श्रमिकों की सुरक्षा तथा समग्र समाज के कल्याण पर नहीं पडा था। धीरे-धीरे यह भी स्पष्ट हो गया कि श्रमिक समस्या अन्य सामाजिक तथा आर्थिक प्रश्नों से अलहदा कोई वस्तु नहीं है तथा यह भी कि श्रमिकों का कल्याण तथा' सुरक्षा करना समाज का कानूनी कर्त्तव्य है। जहॉ उद्योग उन्हे उचित मजदूरी न दे वहा समाज को उसकी पूर्ति करना जरूरी है। जहॉ उद्योग उन्हें रोजगार न दे सके वहा समाज को यह भी उनके लिये जुटाना चाहिए। यदि काम करते वक्त उनका अंगभग हो जाय था वे समय से पहले ही कमजोर हो जायें तो उनकी गुजर-बसर का प्रबन्ध भी समाज को ही करना होगा। औरतो और बच्चों की मजदूरी का सवाल मालिकों और मजदूरो के मध्य का ही सवाल न था, क्योंकि उसके साथ कौम का भविष्य भी जुड़ा हुआ था। साथ ही साथ यह सवाल भी था कि यह औद्योगिक युद्ध कब तक जारी रखा जाय, क्योंकि जीते चाहे जो कोई, लेकिन नुकसान तो समाज का ही हमेशा होता है।

समाज-सुधार की लडाई मे श्रमिकों की हिमायत बहुत से शक्तिशाली समाज सुधारक किया करते थे। उनका साथ प्रोटेस्टैण्ट पादरी, विद्वान् तथा बहुत से बुद्धिजीवी भी दे रहे थे। औद्योगिक क्षेत्र तथा श्रमिक क्षेत्र की इस कशमकश के इतिहास में जेकब राइस, चिकागो के हल हाउस की विशेष पत्र-प्रतिनिधि जेन एडम्स, वाशिंगटन ग्लैडन, विन्स्कौसिन विश्वविद्यालय के अध्यापक तथा यूनिटेरियन पादरी जान आर. कौमन्स, आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। ये लोग, बाल-श्रमिकों के कारण होने वाली राष्ट्रीय क्षति, तथा चालू प्रथा के खतरो के बारे में लगातार लेख लिखकर जनता को जाग्रत करते

रहते थे। विधायको को जगाकर वे उन्हे इस बारे मे कार्रवाई करने के लिए उकसाते रहते थे। कुछ राज्यो में तो ये सुधारवादी लोग अपने उद्देश्य मे काफी सफल भी हुए थे। मसाचुसेट्स, न्यूयार्क, विन्स्कौन्सिन तथा ओरेगोन मे उन्हे विशेष सफलता प्राप्त हुई थी। लेकिन फिर भी समस्या काफी जटिल बनी हुई थी, क्योंकि जहाँ एक ओर अग्रगामी राज्य ऊचे आदर्शो की स्थापना करते थे, वहा दूसरी ओर पिछडे हुए राज्य उद्योगो को अपनी ओर आकर्षित करने लगते थे, क्योकि वहाँ उद्योगपतियो पर कोई प्रतिबन्ध न होते थे।

इन सब के बावजूद वास्तविक प्रगति श्रमिको के मामलो मे ज़रूर हुई। प्रथम विश्व युद्ध के अन्त तक, अधिकाश राज्यों ने—सैद्धान्तिक रूप से ही सही—छोटे बच्चो से मजदूरी कराना निषिद्ध कर दिया। कई राज्यो ने औरतो से मजूरी कराने के लिए आठ घटे की अवधि निर्धारित कर दी। आकस्मिक दुर्घटनाओ के लिए मुआवज़ा देने की पद्धति निर्धारित की गयी, कारखानो और खानो के सावधानीपूर्वक निरीक्षण की व्यवस्था भी हुई, 'यलोडाग कन्ट्राक्ट' बन्द कर दिये गये, औद्योगिक सघर्षो मे प्राइवेट जासूसो अथवा प्राइवेट पुलिस का प्रयोग रोक दिया गया तथा अन्य अनेक रूपो मे इस समस्या के प्रति सामाजिक जागरूकता प्रदर्शित की गयी। इस बारे मे बने कानूनो की प्रगति का ब्यौरेवार वर्णन नही किया जा सकता, लेकिन बाल-श्रमिक कानूनो के इतिहास से उसका आभास ज़रूर मिल सकता है।

१९०० तक बच्चों से मजदूरी कराने की समस्या आम चर्चा का विषय बन चुकी थी। उस वक्त १० से लेकर १५ वर्ष तक की उम्र के पौने दो लाख बच्चे मजूरी कर रहे थे। इनमे से बहुत से तो कारखानो और खदानो मे काम करते थे। कुछ बालक डिब्बो मे समान बन्द करने का या चुकन्दर के खेतो मे कैनबरी बौग्ज का काम करते थे। एक अन्वेषक को १५५६ बच्चे जिनकी उम्र १२ साल से कम थी, आठ कपास मिलो मे काम करते हुए मिले। दूसरे अन्वेषक ने छः या सात बरस की उम्र के बच्चो को बडे तडके यानी दो बजे, डिब्बों मे तरकारिया पैक करते पाया। जान स्पार्गो, जिसकी पुस्तक 'दि बिटर क्राइ आफ चिल्ड्रेन' ने राष्ट्र का दिल थर्रा दिया था, उन सब नजारो का, जो उसने पेसिलवानिया तथा पश्चिम वर्जिनिया की कोयले की खदानों मे उस शताब्दि के प्रारभिक दिनों मे देखे थे, नीचे लिखा वर्णन करता है :

"खानों के मुँह पर बच्चे सिकुडे-सिकुडाये घटो बैठे रहते हैं और नीचे से ऊपर आने वाली कोयले की टोकरियो मे से स्लेट तथा अन्य गन्दगी के

टुकड़े बीना करते हैं। उन्हें जिस सिकुड़ी हालत में बैठना पड़ता है उससे ज्यादातर उनका शरीर बेढंगा और बुड्ढों की तरह कुबड़ा हो जाता है। चूँकि कोयला सख्त होता है, इसलिए अक्सर उन के हाथ कटने, टूटने, उंगलियां कुचल जाने की दुर्घटनाएँ होती रहती हैं। कभी तो दुर्घटना इससे भी खराब हो जाती है। जोर की एक चीख के साथ कोई-कोई बच्चा मशीन में पिस जाता है या उसके टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं और वह गड्ढे में गिरकर गायब हो जाता है और बाद में उस की एकदम लत्ते-उड़ी लाश ही वापस मिलती है। कोयला-कुटाई के कारखाने में धूल के बादल छाये रहते हैं, जो सांस के साथ बच्चों के फेफड़ों में जाकर दमा तथा खदान-मजदूरों में प्रचलित क्षय की नींव डालते हैं। मैंने एक कोयला तोड़ने वाले कारखाने में आध घंटा खड़ा रह कर वह काम, जो एक लड़का रोजाना किया करता था, करने की कोशिश की। शायद वह काम करके मैं जिन्दा नहीं रह सकता था। लेकिन वही काम दस से बारह साल की उम्र के लड़के ५० या ६० सेण्ट प्रतिदिन पर कर रहे थे। इन में से कुछ ने तो कभी भी किसी स्कूल के भीतर कदम तक न रखा था और बहुत थोड़े से लड़के ही बच्चों का प्राइमर पढ़ पाते थे।"

यद्यपि इस प्रकार की बुराइयों के खिलाफ राज्यों द्वारा बनाये गये कानून पहले से मौजूद थे, लेकिन वे ज्यादातर अपर्याप्त ही से थे और उनकी अवहेलना आसानी से की जा सकती थी। उदाहरण के तौर पर, दक्षिणी करोलिना राज्य ने कानून बना रखा था कि १२ साल से कम उम्र के लड़कों को फैक्टरी मजदूर की जगह भरती न किया जाय, लेकिन कानून में यह भी विकल्प था कि अगर परिवार का हाथ तंग हो तो १२ साल से नीची उम्र का लड़का भी मजूरी कर सकता था। मेरीलैण्ड राज्य ने जब काम करने के इच्छुक १६ वर्ष से कम अवस्था वाले लड़कों को पर्मिट की दरख्वास्तें पेश करने के लिए आज्ञा प्रचारित की तो पिछली जन-गणना में १६ वर्ष से कम उम्र के व्यक्तियों की लिखित संख्या से दुगने लड़कों की दरख्वास्तें पेश पायी गयीं। जितने कानून बनते थे, उनका प्रभाव फैक्टरी में काम करने वाले मजदूरों को छोड़कर अन्य लोगों पर शायद ही कभी पड़ता था। संदेशवाहक, बूट पालिश करनेवाले, बेरी के खेतों में काम करने वाले अथवा टीनबन्दी कारखानों में नियुक्त लाखों बच्चों पर उनका कोई असर नहीं होता था, क्योंकि ये संस्थाएँ फैक्टरी की सीमा में नहीं आती थीं। सन् १९०९ तक डेलावेर राज्य के सिवाय किसी भी दूसरे अमरीकी राज्य ने यह प्रतिबन्ध नहीं लगाया था कि "चौदह बरस से

कम उम्र का कोई बच्चा किसी भी कमाऊ धंधे मे न तो नियुक्त किया जायग और न नियुक्त होने दिया जायगा।"

कानूनो की इस अपर्याप्तता के कारण ही कॉंग्रेस द्वारा इस बारे मे कार्यवाही करने की माग शुरू हुई। सन् १९१६ मे कॉंग्रेस ने इस माग के फलस्वरूप एक कानून पास करके बच्चो द्वारा बनायी गयी चीज़ो का अन्तर्राज्यीय व्यापार रोक दिया। इस कानून से समस्या का समाधान होता सा प्रतीत होने लगा था कि अदालतो ने खुले आम निर्णय दे दिया कि इस तरह का कानून बनाना कॉंग्रेस के अधिकार क्षेत्र की बात नहीं है, इसलिए कानून अवैध बन गया। तीन बरस बाद कॉंग्रेस ने फिर एक बार कोशिश की और इस बार बच्चो की बनायी चीजो पर इतना कर लगा दिया कि उनकी हस्ती ही खत्म हो जाय। इस पर फिर अदालतो ने उसे अवैध ठहराया और कहा कि जिस कानून को कॉंग्रेस प्रत्यक्ष रूप से नही पास कर सकती, अप्रत्यक्ष रूप से भी वह उसे पास नही कर सकती। इसमे शक नही कि २० बरस बाद सुप्रीम कोर्ट ने स्वीकार किया कि इस तरह के फैसले देना एक गलती थी, लेकिन उपर्युक्त फैसलों के कारण जो नुकसान होना था सो तो हो ही चुका था। समृद्धिशाली विशतीय वर्षों मे लगातार बच्चो से मजूरी करायी जाती रही और १९३० की जनगणना से पता चला कि १८ साल से कम उम्र के दो लाख से ज्यादा किशोर और किशोरिया मजूरी कर रहे थे। इसके बाद 'नये जमाने' ने वैधानिकता के बन्धन काट फेके और इस बदनाम प्रथा का अन्त कर दिया। सामूहिक सौदेबाजी और सरकारी नियम-उपनियम दोनो ही तरकीबे लगाकर श्रमिको ने अपनी स्थिति काफी सुधार ली। व्यापारी लोग भी श्रमिक समस्या पर ज्यादा तथा उदारतापूर्वक ध्यान देने लगे और अपने कारखानो की स्थिति सुधारना उचित समझने लगे। जे गूल्ड जैसे रेलमार्गीय व्यापारी की तरह अन्य व्यापारी तब यह नही कहते थे कि "मजदूर एक ऐसी चीज है, जिसका कुल दारोमदार 'माग और पूर्ति के नियम' पर आधारित है।" 'माग और पूर्ति का नियम' जो पहले उत्पादको, महाजनो और क्षेत्रपतियो की जरूरतो के मुताबिक बदला करता था, अब श्रमिको की ओर से बदला जाने लगा।

सम्मिश्रण : बहुत से अमरीकी अमरीकी इतिहास मे प्रवासी लोगो की भूमिका का महत्व अभी तक नही समझ पाये हैं। वे उसे एक ऐसी समस्या ही समझते हैं, जो पिछले पचास वर्षो मे या उसके लगभग ही उग्ररूप से सामने

आयी है। प्रवासियो के नाम से उनके सामने पीले भूरे से रगवाले इटालियनों, दाढ़ी वाले यहूदियों, अथवा एलिस द्वीप के बन्दरगाह पर जहाजो से उतरती हुई, भडकीले शाल ओढे, पौलैण्ड की किसान औरतों के चित्र ही प्रस्तुत हो जाते है। उस समय उन्हे 'यात्री पूर्वजो' फ्रान्सीसी ह्यूजिनाट्स तथा स्काच और आयरिश प्रवासियों का ख्याल नही आता, न उन गरीब काले हब्शियो की ही बात, जिन्होंने मध्यकाल का नारकीय व्यापार देखा था, उनके दिमाग मे आती है।

लेकिन वास्तव मे देखा जाय तो रेड इंडियनो को छोडकर सभी अमरीकी प्रवासियों के ही वशज हैं। कोलोनियल डेम्स, आर्डर आफ सिनसिनाटी के सदस्य, गेरी के स्टील कामगार, सब पोलिश लोग तथा हार्लेमके सब नीग्रो प्रवासी वशज ही हैं। निस्सन्देह तब प्रवासी विभिन्न समयों पर विभिन्न परिस्थितियों मे तथा ससार के विभिन्न स्थानों से आये थे। लेकिन सभी को अपनी जन्मभूमि से विलग होने का दुःख हुआ था और नयी भूमि मे कदम जमाने पड़े थे। इनमे से सभी, यहा तक कि अज्ञ लोग भी, अपनी ताकत, अपनी सस्कृति और अपनी निष्ठाएं अपने साथ लेते आये थे और इन सबका सम्मिश्रण ही अमरीकी सस्कृति और राष्ट्रीयता में पाया जाता है।

ऊपर हमने उन विविध धाराओं का नाम निर्देश कर दिया है जिससे मिलकर औपनिवेशिक अमरीका की आबादी बनी है। अमरीकी प्रजातन्त्र के प्रारम्भिक वर्षों मे पुरानी दुनिया के लोग नयी दुनिया मे स्वेच्छा से आकर लगातार बसते गये। सन् १८२० से, जब से इस बारे मे आकडे रखना शुरू हुआ, गृह-युद्ध के प्रारभ तक लगभग पाच लाख व्यक्ति इंग्लैड, आयर्लैण्ड तथा जर्मनी से आकर अमरीकीयों के सहगामी बने। युद्ध के कारण भी प्रवासियों की यह धारा कुण्ठित नही हुई और अपोमैटोक्स की सधि के बाद तो उसने एक प्रवाह का रूप धारण कर लिया था। इसलिए सन् १८७० मे अमरीका-निवासी अनेक जातियों का एक मिश्रण बन गये थे। उस साल एक हजार अमरीकीयों का जातीय विश्लेषण किया गया तो उनमे से ४३५ लोग अमरीका निवासी गोरों से अमरीका मे ही पैदा हुए वशज निकले, २९२ व्यक्ति अमरीका मे पैदा हुए लेकिन विदेशी अथवा मिश्रित माता पिताओं की सन्तान थे, १४२ विदेशोत्पन्न गोरे तथा १२७ हब्शी थे और एक रेड इण्डियन तथा १ चीनी। सन् १८७० और १९२० के मध्य लगभग २० लाख अन्य प्रवासी भी अमरीका मे बाहर से आकर बस गये, लेकिन विदेशोत्पन्न तथा अमरीका में पैदा हुए व्यक्तिओं का अनुपात वही रहा। परिलक्ष्य परिवर्तन सिर्फ इतना ही हुआ

० १%
१ ५%
५ १०%
१० १५%
१५ २०%
२० २९%
विदेशों मे जन्मे
निवासियों का प्रतिशत
१९२० में
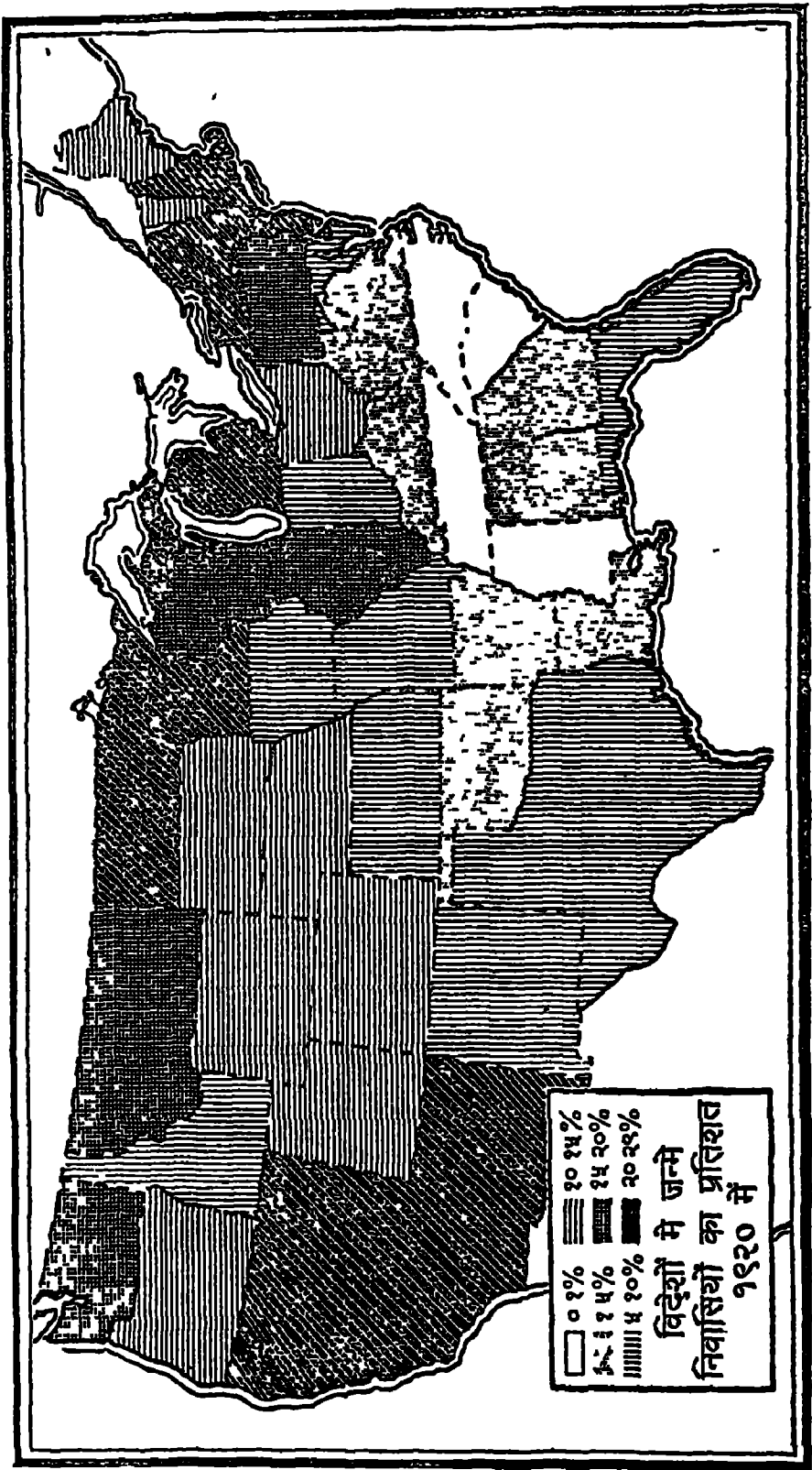
कि काले लोगों की अपेक्षित संख्या कम हो गयी और मेक्सिकोवासियों की ज्यादा। लेकिन इस परिवर्तनशील अमरीकी आबादी की एक महत्वपूर्ण बात ने सभी का ध्यान आकर्षित किया। वह थी उन प्रवासियों की सख्या की वृद्धि जिनको अथवा जिनके पितरों का घर दक्षिणी तथा पूर्वी योरप के देशों में था। सन् १८७० से १८९० तक के वर्षो में ज्यादातर प्रवासी उन्हीं देशों से आते रहे जहा से अमेरीकानिवासियों के पुरखे शुरू शुरू में आये थे, यानी ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी तथा स्कैण्डिनेवियन देशों से। लेकिन इन वर्षों में कुछ लोग नये देशों से भी आते रहे। अध्यवसायी स्टीमशिप कम्पनियों ने नेपल्स, डैजिग, मेमेल, फायूम तथा एथेन्स से सीधा सम्बन्ध जोड़ कर इटली, पोलैण्ड तथा दुहरे राज्य-शासन, आदि देशों मे अपने हजारों एजेण्ट मुकर्रर कर रखे थे, जो यात्रियों को बटोरते रहते थे। अनेक अध्यवसायी निगमों ने यह भी प्रबन्ध कर रखा था कि वे प्रवासियों का एलिस आइलैण्ड पर स्वागत करे और उन्हें उतार कर खदानों के क्षेत्रों अथवा कारखानों वाले शहरों तक पहुंचा दें। जब ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी तथा स्कैण्डिनेविया में आबादी का दबाव कुछ कम हुआ तो नई दुनिया के यात्रियों की सख्या भी कम हो चली। लेकिन नये देशों के प्रवासियों की संख्या दिन-दूनी रात-चौगुनी बढ़ने लगी। मसलन् शताब्दि के पहले दशक मे जहा सिर्फ़ ३,४०,००० प्रवासी आयर्लैण्ड से तथा ३,४०,००० जर्मनी से आये वहा २ लाख से ज्यादा इटली से तथा इतने ही आस्ट्रिया हगरी के राज्यों से आये। अन्तिम रूप से रोक लगायी जाने से पहले साढ़े चार लाख इटालियन मर्द और औरते अमरीका में आ बसे थे। चार लाख व्यक्ति आस्ट्रिया हंगरी से तथा ७५ हजार व्यक्ति रूस और पोलैण्ड से आये थे।

उन सब लोगों के लिए, जिन्होंने धार्मिक अत्याचारों के शिकार होकर उपासना-स्वातन्त्र्य की खोज में अपना देश छोड़ा, जो बाध्य सैनिक सेवा और युद्धों से उत्तेजित होकर प्रवासी बने, जो अधिक लोकतान्त्रिक परिस्थितियों की खोज मे बाहर निकले तथा उन लोगों के लिये भी जो भयानक गरीबी से भागकर नयी दुनिया के समृद्ध सपनीले देशों के ऐश्वर्य में भागीदार बनाना चाहते थे, अमरीका 'आशापूर्ति का देश' बना हुआ था। प्रवास के चाहे जो भी कारण रहे हों—सभी ने इस नये साहसिक काम मे भाग लिया, सभी एक नयी जिन्दगी के सपने देख रहे थे। इन मे से बहुतेरों ने अपने तथा अपने वंशजों के लिये भी—एक नयी जिन्दगी का निर्माण करने में हिस्सा भी लिया।

'पुराने' प्रवासी उत्तर तथा पश्चिम मे करीब बराबर-बराबर ही तादाद मे जा बसे थे और खेती तथा-उद्योगों में लग गये थे, लेकिन चूंकि फार्म का काम शुरू करने के लिए रुपयों की ज़रूरत पडती थी और अच्छी जमीन सब पहले ही बिक चुकी थी, साथ ही साथ उनके साथी संगाती शहरो के निकट बस्तियाँ बना कर रहते थे तथा प्रार्थना के स्थान कैथोलिक गिर्जाघर भी शहरों के ही आसपास थे और शहरो में मजदूरी का काम भी मिल जाता था, इसलिए ये प्रवासी लोग ज्यादातर पूर्व तथा मध्य पश्चिम के औद्योगिक केन्द्रों में ही केन्द्रित हो गये। सन् १९०० तक, दो तिहाई विदेशोत्पन्न प्रवासी कस्बो और नगरों में जा बसे थे। सन् १९२० तक इन लोगों की शहरी आबादी का अनुपात तीन चौथाई तक जा पहुंचा था। न्यूयार्क शहर में लाखो इटालियन, पोल्स, रूसी और यहूदी बस गये थे। इटालियन तथा फ्रेंच कैनाडियन लोग गमीर प्रकृति के बौस्टन शहर मे बस गये थे। क्वेकर धर्मानुयायी रूसी प्रवासी फिलाडेल्फिया मे ज्यादा थे। क्लीवलैण्ड मे रूसी तथा पोलों की बस्ती थी। स्कैण्डिनेवियन लोग सेण्टपाल तथा मिन्नियापोलिस मे बस गये थे। चिकागो की आबादी में जातीय वैभिन्य संसार के अन्य बड़े नगरों के समान पर्याप्त रूप से प्रचुर था। छोटे छोटे औद्योगिक कस्बो जैसे फालरिवर, स्क्रैण्टन तथा हैम ट्रैमेक में विदेशोत्पन्न प्रवासियों का प्रतिशत अनुपात बडे शहरों की अपेक्षा और भी ऊंचा था। मतलब यह कि दक्षिणी तथा पूर्वीय योरोप के नवागन्तुकों को खानों, मिलो तथा फैक्टरियों मे काम काफी मिल जाता था। उदाहरण के लिए, १९१० मे ही पेसिलवानिया के खान-मजदूरों का तीन-चौथाई भाग विदेशोत्पन्न था और इनमे भी इटालियनों, पोलों तथा स्लोवकों का प्राधान्य था। सन् १९२० मे विदेशोत्पन्न लोग कुल आबादी का आठवा भाग थे; लेकिन फैक्टरियो मे काम करने वाले मजदूरों मे उनका अनुपात १:३ का था और खान-मजदूरो मे आधा।

प्रवासियो ने राष्ट्र को क्या दिया? बहुतो ने तो सिर्फ़ अपने-आप को, अपनी ताक़त, अपने काम और अपनी निष्ठा सहित राष्ट्र के लिये समर्पित कर दिया। उनके नये देश ने उन्हे बहुत कुछ दिया था, लेकिन उनसे भी राष्ट्र को बहुत कुछ मिला। राष्ट्र के साधन-स्रोतो का तीव्र, सत्वर तथा सस्ते दामों मे विकास करने मे उन्होने सिरतोड़ तथा कठोर परिश्रम किया। उन्होने प्रेयरी मैदानो को नौतोड़ किया, महाद्वीप के आरपार जाने वाले रेलमार्ग बिछाये। उन्होंने कच्चा लोहा, ताबा तथा कोयला खोदा और उत्तर पश्चिम के जंगलों से काट-

काट कर लक्कड़ों का ढेर लगा दिया, लेकिन उन्होंने सिर्फ अदक्ष मजदूरों का ही काम नहीं किया, बल्कि अमरीका का राष्ट्रीय जीवन उनके कारण सम्पन्न और रंगीला बना तथा उसका सास्कृतिक दाय भी कई मामलों मे उनसे काफ़ी सुप्रभावित हुआ। संगीत तथा कला के क्षेत्रों में सृजनात्मक भावना ज्यादातर उन्हीं के जरिये पैदा हुई। सन् १९३० में एक भी ऐसा आर्केस्ट्रा देश भर में न था, जिसका नेता एग्लो सैक्सन न हो।

लेकिन प्रवासियों के कारण कुछ खास समस्याएँ भी पैदा हुई। उनकी वजह से श्रमिकों में काम पाने के लिए स्पर्धा पैदा हो गयी। जैसा एक श्रमिक नेता ने कहा था, "हमारे श्रम का अन्दाजा प्रवासियों के श्रम के आधार पर लगाया जाता है। हमारी मजदूरी भी प्रवासियों पर आधारित है और हमारे परिवारो की स्थिति का अन्दाज भी उन्हीं पर निर्भर रहने लगा है।" म्युनिसिपल प्रशासनों के सामने आवास, सफ़ाई और सुरक्षा की समस्याएँ उठ खडी हुई। स्कूल पद्धति को उनकी निरक्षरता तथा सामाजिक ब्योंत बैठाने की समस्याओं ने आ घेरा; इन सब कठिनाइयों के बावजूद विदेशोत्पन्न प्रवासियों का उरीकरण कुछ ज्यादा कठिन नही हुआ यद्यपि देशजवंशीय लोगोंको आशका थी कि हमारे देश की परिस्थितियों के लिए इन परदेसियों का आना बड़ा खतरनाक साबित होगा। लेकिन औसत दर्जे का हर प्रवासी अमरीकी बन जाने के लिए बुरी तरह लालायित होता था। मेरी ऐण्टिन द्वारा अपनी पुस्तक "प्रोमिज्ड लैण्ड" मे वर्णित अनुभव प्रायः सभी प्रवासियों का अनुभव था:—

"मेरे नागरिक गर्व तथा वैयक्तिक सन्तोष की पराकाष्ठा तब हुई जब सितम्बर की एक चमकती सुबह मै एक पब्लिक स्कूल मे भर्ती कर ली गयी। वह दिन शायद मुझे तब तक याद रहेगा जब तक मैं इतनी बूढी न हो जाऊं कि मुझे खुद अपना नाम ही याद न रहे। बहुत से लोगो के लिए वह दिन जब वे पहले पहल स्कूल में दाखिल हुए थे एक स्मरणीय दिन हुआ करता है। लेकिन मेरे लिए तो वह सौगुना स्मरणीय इसलिए था कि मुझे वहा तक पहुंचने के लिए कितने ही साल इन्तजार करना पडा था, अनेक रास्ते तै करने पड़े थे और मै अनेक दिली आकाक्षाएँ लेकर उसमे भरती हुई थी...पिताजी खुद हमें स्कूल पहुचाने गये थे। ये काम वे अपने बजाय संयुक्त राज्य अमरीका के राष्ट्राध्यक्ष को भी सुपूर्द करने को तैयार न थे। वे भी मेरी ही तरह इस दिन की अधीरता से प्रतीक्षा करते रहे थे और मेरे भविष्य सम्बन्धी उनके स्वप्न मेरे स्वप्नों से भी बहुत बढ़ेचढ़े थे। आखिर मे हम

चारों ही शिक्षिका की मेज के चारों तरफ खडे किये गये और हमारे पिताजी ने बड़ी ही उटपटाग अंग्रेजी बोलते हुए हमे अध्यापिकाजी के सुपुर्द किया। टूटे-फूटे शब्दों मे ही पिताजी ने हमारे भविष्य के लिए आशाएं प्रकट की। उनका हृदय बेतरह भर आया था।"

अपने मे मिलाने तथा सन्तुलन वैठाने की समस्याएँ स्वयं प्रवासियो के सम्बन्ध मे उतनी जटिल न थी जितनी कि उनके बच्चो के बारे मे। इनमे से बहुतों की जडे उखड चुकी थीं और वे काफी उत्साहीन से हो चुके थे। घर के बाहर वे एक दूसरी ही दुनिया मे रहते थे और घर पर एक अन्य ससार मे। माता-पिताओं के कारण अब भी पुरानी दुनिया से उनका रिश्ता जुडा हुआ था और कभी गिरजो की वजह से भी। लेकिन यह रिश्ता अस्थायी और अवास्तविक था। शक्ल व सूरत भिन्न होने और उच्चारण भी भिन्न प्रकार का होने के कारण उनके अमरीकी साथी उन्हे अपनाते न थे। अक्सर उन्हे अपने प्राचीन दाय से विद्रोह करके ही नया दाय अंगीकार करना पडता था। इस समस्या को हल करने के लिए पब्लिक स्कूल काफी सहायक हुआ करता था। लेकिन कभी कभी तो स्कूल की वजह से आपसी विभेद घटने के बजाय काफी बढ भी जाया करता था। दूसरी पीढ़ी के अमरीकियों के कारण सामाजिक कतरब्यौत तथा हिसा और अपराध की समस्याएँ पहली पीढ़ी वालो की समस्याओं की अपेक्षा कहीं ज्यादा तादाद मे उठ खड़ी हुई थीं।

१९०० के आसपास एक व्यापक विचारधारा उठ खडी हुई कि प्रवासियों के अप्रतिबद्ध आगमन पर अब रोक लगनी चाहिए। प्रवासियो के कारण उत्पन्न होनेवाली स्पर्धा श्रमिको को पसन्द न थी। 'पुरानी खेप' के अमरीकी डरते थे कि स्लैव तथा भूमध्यसागर के देशो से आनेवाले प्रवासियो के कारण कौमी गुणों को काफी नुकसान पहुंचेगा। जनसाधारण का ख्याल था कि सयुक्त राज्य अमरीका के अपने लोग और अपनी समस्याएँ ही इतनी काफी हैं कि बाहरी लोगों को यहा आकर बसने का निमत्रण देकर उन्हे और क्यो बढाया जाय। चीनी प्रवासियों का अन्तर्प्रवेश बहुत पहले ही, सन् १८८२ मे, काग्रेस ने बन्द कर दिया था। उनके अलावा उसी साल 'अवाञ्छित' लोगो का अन्तर्प्रवेश भी बन्द कर दिया गया—बीमार, खराब दिमागवाले, अनैतिकाचारी, अराजकतावादी तथा अन्य लोग 'अवाछनीय' की परिभाषा के अन्तर्गत रखे गये थे। इस प्रतिबन्ध का गुणात्मक प्रभाव अवश्य हुआ,

लेकिन आनेवाले प्रवासियों की संख्या पर कोई विशेष असर नहीं पड़ा। जरूरत तो एक ऐसे पर्दे की थी जो गुणात्मक तथा संख्यात्मक, दोनों ही प्रकार का प्रतिषेध उनके आगमन पर लगा सके। इसके लिए साक्षरता-परीक्षा का गुर प्रस्तावित किया गया। चूंकि ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी तथा स्कैण्डिनेविया में निरक्षरता थी ही नहीं और इटली, पोलैण्ड और रूस तथा दक्षिणी और पूर्वी योरोप के देशों में वह बेहद मौजूद थी, इसलिए इस प्रतिबन्ध का परिणाम यह हुआ कि नये किस्म के प्रवासियों का अन्तर्प्रवेश बहुत कुछ रुक गया जबकि पुराने किस्म के प्रवासियों के आगमन पर ज्यादा असर नहीं पड़ा।

संयुक्त राज्य अमरीका के तीन राष्ट्राध्यक्षों—क्लीवलैण्ड, टैफ्ट तथा विल्सन-ने साक्षरता के प्रतिबन्ध को इस कारण स्वीकृति नहीं प्रदान की कि वह परीक्षा योग्यता-सम्बन्धी न थी, बल्कि अवसर-सम्बन्धी थी, लेकिन सन् १९१७ में काँग्रेस की ही बात मान ली गयी। प्रथम महायुद्ध के खत्म होने के बाद जब यूरोप के नष्टभ्रष्ट राष्ट्रों के लोग बड़े पैमाने पर प्रवास में आने लगे तब अमरीकी प्रवासियों की समस्या प्रतिबन्ध लगाने लायक ही न रही, बल्कि बहिष्कार योग्य बन गयी। सन् १९२१, १९२४ और १९२९ में पास किये गये कानूनों की एक शृंखला के ज़रिये काँग्रेस ने बाहर से आने वाले लोगों के लिए एक संख्यात्मक सीमा—जो घटनाक्रम से एक लाख पचास हजार नियत हुई—निर्धारित कर दी। यह प्रतिबन्ध उन लोगों पर, जो कनाडा, मेक्सिको अथवा दक्षिणी अमरीका के राज्यों से आते थे, लागू न था; लेकिन इस कानून के प्रतिबन्धों के दृढ़ अर्थान्वय के अनुसार उन सब लोगों का, जिनके भरणपोषण का भार जनता पर आये, अन्तर्प्रवेश एकदम निषिद्ध कर दिया गया था। इसीलिए इन देशों से आनेवाले प्रवासियों की संख्या भी काफी कम हो गयी।

इस प्रकार १९३० तक अमरीकी इतिहास का एक पुराना घटनाक्रम समाप्त हो गया। इस वक्त भी संयुक्त राज्य अमरीका जातियों और संस्कृतियों के सम्मिश्रण का देश बना हुआ था। लेकिन उससे बहुत से क्षेत्र अब ठसाठस भर चुके थे और अब वह दूसरे राष्ट्रों के गरीब तथा पीड़ित लोगों के लिए आशाओं का देश अथवा अपनी तकदीर आजमाइश का मुल्क न रहा था।

पंद्रहवाँ परिच्छेद

पश्चिम में विवेक की जागृति

पश्चिम के अन्तिम भाग का खुलना : जब दक्षिण युद्ध की यातना से सुधार और पुनर्निर्माण की उथल-पुथल की ओर अग्रसर हो रहा था, और उत्तर अपने आर्थिक जीवन को कारखानों और मशीनो से पूर्ण करने मे लगा था, मिसूरी के पार पश्चिम मे और भी अधिक चमत्कारपूर्ण परिवर्तन हो रहे थे। १८६० में यह क्षेत्र, जो अमरीका मे कुल क्षेत्रफल का लगभग आधा था, अधिकाश एक निर्जन प्रदेश था। करोलिना के नये राज्य को, निश्चित रूप से, ४० लाख की जनसख्या का प्रदेश होने का गौरव प्राप्त था। विलियमेट घाटी मे ओरेगोन के लगभग ५० हजार साहसी प्रवासी थे। मारमन राष्ट्रमडल ग्रेट साल्ट लेक के इर्द-गिर्द था और इसकी जनसख्या भी ४० हजार के लगभग थी। ऊपरी रियो ग्रान्डे के किनारे पर ९० हजार प्यूब्लो रेड इंडियनों, मेक्सिकनों और श्वेत साहसिक व्यक्तियों का घुमक्कड़ समुदाय रहता था। इस विस्तार का शेष भाग रेड इंडियनो की भूमि थी। इनमे उत्तरी मैदानों के युद्धप्रिय सिमोक्स, ब्लैकफूट और क्रो, मध्य क्षेत्र के उटे, चेन्ने और क्योवा, उत्तर दक्षिण के क्रूर कोमेन्श और एपेश आदि असख्य जातिया सम्मिलित थीं। इनके नाम अमरीकी लोकगीतो मे गाये गये हैं। शीघ्रगामी खच्चरों पर सवार, भैसों के विशाल झुण्डों के साथ, जिनसे उन्हे भोजन से लेकर इंधन तक प्राप्त होता था, ये लोग मदानो, पर्वतो और रेगिस्तानों मे बेखटके घूमते रहते। यदि इनके सामने कोई बाधा थी तो वह एक दूसरे से अथवा पर्वतीय शेरों से ही थी।

तीस वर्ष पश्चात् सर्वांगीण परिवर्तन हो गया। रेड इंडियनो को पराजित कर दिया गया था और उन्हे सभ्यता की सदिग्ध प्रणाली के अन्तर्गत आने को मज़बूर कर दिया गया। जोर-जोर से रमनेवाली भैंसो के झुड नष्ट कर दिये गये। खानों मे काम करनेवाले समस्त पर्वतीय क्षेत्रो पर छा गये थे। उन लोगों ने स्वच्छ जलवाले सभी प्रपातों से नमक बनाने का प्रयत्न किया।

इन प्रपातों के नाम भी कवितामय थे : 'दि सान जोक्युन', 'दि बीवरहेड', 'दि वेली फोर्श', 'दि बिटर रूट', 'दि स्वीट वाटर'। भूमि में सुरगे बनायी गयीं और नेवाडा, मोनटाना, कोलोरेडो और यहा तक कि डाकोटा के ब्लेक हिल्स मे भी उत्साहप्रद छोटे छोटे समुदाय बसा दिये गये। रेल मार्ग विस्तृत घास के मैदानों में से होकर गुजर चुके थे, ऊचे राकीज में सुरगे बन चुकी थीं और इनके द्वारा अटलान्टिक महासागर प्रशान्त महासागर से जुड़ गया। चरवाहों ने मुफ्त मिलनेवाली घास, रेल-मार्ग और नये बाजारों की सुविधा पाकर टैक्सास के पेनहैन्डल से लेकर ऊपरी मिसूरी के विस्तृत घास-साम्राज्य पर अपने अधिकार का दावा कर दिया था। गडरिये घाटियों और पर्वतों के ढालों पर उनके प्रतियोगी बन गये। अब कृषक भी पीछे न रहे। वे भी मैदानों और पर्वतीय घाटियों में छा गये और पूर्व तथा पश्चिम के बीच की दरार को उन्होंने पूर्ण कर दिया। १८९० तक 'सीमा' लुप्तप्राय हो चुकी थी और महाप्रदेश के आरपार ठोस राज्य फैल चुके थे। ५०-६० लाख पुरुष और महिलाएं ऐसे स्थान पर खेती करने लगीं, जहा पहले वन्य हिरण और घास के मैदानो में रहनेवाले कुत्ते विचरण किया करते थे।

इस विस्तृत प्रदेश की विजय मे इतना विलम्ब क्यों हुआ; और जब विजय होने लगी तो इतनी तीव्रता से क्यो हुई ? दो सदियों से अमरीकी अटलान्टिक तट से धीरे-धीरे पश्चिम की ओर बढ़ रहे थे—और वे अप्पेलेशियन की श्रेणियों को पार कर, ओहियो से होते हुए मिस्सीसिपी घाटी में प्रवेश कर साम्राज्यवादी दिनों के 'प्राचीन पश्चिम मे' पहुँच चुके थे। १८५० तक सीमा-प्रदेश की आबादी लगभग ९५ वीं मध्यान्ह रेखा तक पहुँच गयी थी और वहाँ पर हमारे इतिहास मे सर्वप्रथम उसने अपना प्रगतिशील अभियान रोक दिया। नियमित रूप से आगे बढ़ने के स्थान पर, वह मैदानों और राकीज की शृखलाओं को लाघती प्रशान्त के तट पर जा बसी। इसका कारण भौगोलिक होने के साथ-साथ जलवायु से भी सम्बन्धित था। यूरोपीय लोग वनों और सरिताओं के प्रदेश से आये हुए थे, और नये विश्व के वन, सरिताएँ और प्रचुर जल उन्हें फसलों के लिए उपयोगी लगे, किन्तु 'ग्रेट प्लेन्स' ने उनके दो सदियों के अनुभव के बावजूद प्रथम बार उनके सामने एक नयी समस्या उपस्थित कर दी। इस भूमि मे जल का अभाव था। वर्षा बहुत कम होती थी और सूखे का समय ही अधिक रहता था। नाले छिछले थे और उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता था। मकानों अथवा बाड़ों के निर्माणहेतु

भी लकडी बहुत कम उपलब्ध थी। इसलिए इसमे आश्चर्य की कोई बात नहीं कि प्रारम्भ के साहसी अन्वेषकों ने इन्हें पार कर लिया और प्रशान्त के तट पर जा पहुॅचे जहा जल और लकड़ी प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध थी।

जब तक कि कृषक को नये वातावरण के योग्य बनने के लिए कृषि-यत्र नहीं उपलब्ध हो जाते, वह 'ग्रेट प्लेन्स' का विकास नहीं कर सकता था; किन्तु उचित समय पर ही परिस्थितिया उसके अनुकूल हो गयीं। रेलमार्ग ने यातायात की सुविधाएँ उपस्थित कर दीं, बाडो के लिए कंटीले तार उपलब्ध कर दिये, गहरे कुओ और पवनचक्कियो से जल मिलने लगा, फलस्वरूप विभिन्न प्रकार की खेती के लिए जल के अभाव की समस्या का सूखी खेती और सिंचाई ने हल कर दिया। इन नये कृषि-औजारों की सहायता से साहसी अन्वेषक जीवन-निर्वाह कर सकते थे, फसलें उगा सकते थे और मैदानों मे स्थायी रूप से लोगो को बसा सकते थे। इस अनुभव से न केवल कृषि के नये तरीके, बल्कि ज़िन्दगी बिताने के नये तरीके भी प्रकाश मे आये और नयी सामाजिक, आर्थिक और सास्कृतिक सस्थाओं का भी जन्म हुआ।

विस्तृत मिसूरी के परे का पश्चिमी प्रदेश हालॉकि अज्ञात नहीं था, फिर भी वहॉ की आबादी कम थी। लुई और क्लर्क और जान सी. फ्रेमान्ट जैसे निडर मार्ग ढूढनेवालो ने उसका पता लगा लिया था। वृक्षो से रस इकट्ठा करने वालों और फर के व्यापारियों ने नार्थ वेस्ट अथवा एस्टोर फर कम्पनी के लिए कार्य करते हुए अथवा स्वेच्छा से ही, इस मार्ग को जान लिया था।, सान्टा फे ट्रेल मार्ग से जानेवाले व्यापारियो ने स्पेनिश दक्षिण-पश्चिम के लिए जाने का रास्ता बना लिया था। धर्मोपदेशक प्रॉटेस्टन्टो और कैथलिको ने समानरूप से रेड इडियनो के साथ परिश्रम किया था। ओरेगोन मार्ग से जानेवाले साहसी अन्वेषकों, मारमन मार्ग से गुजरनेवाले सन्तों, कैलिफोर्निया मार्ग पर चलनेवाले भाग्य आजमाने वालों ने उसके आरपार मार्ग के चिन्ह बना दिये थे। सेना ने बसे हुए लोगो और व्यापारियों के रक्षण के लिए किले बना दिये थे। सर्वे करने वालों ने रेलवे लाइनों के लिए प्रदेश का नक्शा तैयार कर दिया था और जब नये युग का प्रारम्भ हो रहा था, तभी राष्ट्राध्यक्ष लिंकन एक ऐसे विधेयक पर हस्ताक्षर कर रहे थे, जिसके अन्तर्गत प्रथम महाद्वीप पार की रेलवे लाइन के निर्माण की व्यवस्था थी।

हालाकि १८४० के प्रारम्भ से ही दूरदर्शी लोग प्रायद्वीप के आरपार एक रेलमार्ग के निर्माण का स्वप्न देख रहे थे, किन्तु जब तक लोगो का भारी सख्या

मे कैलिफोर्निया को कूच प्रारम्भ नहीं हो गया, तबतक यह समस्या आवश्यक नहीं बनी। उसके पश्चात् निश्चित मार्ग के बारे मे तीव्र वादविवाद प्रारम्भ हो गया। दक्षिणवाले एक ऐसे मार्ग का निर्माण चाहते थे जो निचले कैलिफोर्निया और टेक्सास को न्यू आरलियन्स या मेम्फिस से जोड़ सके; उत्तरवासी स्पष्ट रूप से ऐसे मार्ग का निर्माण चाहते थे जो उत्तर-पश्चिम को सेंट लुई अथवा चिकागो से जोड सके। भूमि का सर्वेक्षण भी पूरा कर लिया गया, किन्तु इस विवाद का तब तक अन्त नहीं हुआ जब तक कि दक्षिणी राज्यो के पृथक हो जाने के कारण उत्तर के समर्थकों को पूर्ण स्वतन्त्रता न मिल गयी। १८६२ के पैसिफिक रेलवे बिल (प्रशान्त रेलवे विधेयक) ने दो रेल लाइनो को सस्थापित किया—यूनियन पैसफिक और सेंट्रल पैसिफिक। यूनियन पैसिफिक का निर्माण काउन्सिल ब्लाफ्स, आइओवा से पश्चिम की ओर और सेंट्रल पैसिफिक को कैलिफोर्निया से पूर्व की ओर तब तक निर्मित करना था जबतक कि दोनो मिल नहीं जातीं। ऐसी दो विशाल योजनाओं को सम्भव बनाने के लिए सघ की सरकार ने लगभग २४० लाख एकड सार्वजनिक भूमि प्रदान की थी। इनके लिए जो ऋण प्रदान किया गया, उसकी रकम लगभग ६५० लाख डालर तक पहुच गयी।

इनसे तथा राज्यों के विधानमण्डलों द्वारा दी गयी सहायता से उत्साहित होकर डाइरेक्टरों ने अपनी योजनाओं को आगे बढाया। उनके सामने एक अत्यधिक कठिन कार्य था। १७०० मील लम्बी पटरियों को घास के वनों, पर्वतो और रेगिस्तान मे बिछाना था, जिनके निवासी केवल शत्रुतापूर्ण रुखवाले रेड इंडियन ही थे। सेन्ट्रल पैसिफिक की इंजीनियरिंग-सम्बन्धी समस्या विशेष रूप से कठिन थी। काम करने के लिए मजदूर भी उपलब्ध नहीं थे और अन्त मे दस हजार मजदूरो को चीन जैसे दूर देश से लाना पडा। लोहे की पटरी का प्रत्येक पौण्ड, प्रत्येक डिब्बा, प्रत्येक इंजिन और मशीन के प्रत्येक पुर्जे को केपहार्न अथवा पनामा के स्थल डमरूमध्य से जहाज पर लादना पडता था। एक समय तो ऐसा भी आया कि इस कार्य के लिए ५० जहाजों को भाड़े पर लेना पडा। सिरास के ऊपर कोई भी सड़क न होने से सामान के हजारो टन, जिनमे भीमकाय इंजिन भी थे, बडी बडी बर्फ की स्लेजो से पर्वत-शृंखलाओं पर खींचे गये। भोजन, गोलाबारूद और सभी प्रकार की रसद उसी कठिन-मार्ग से ले जायी गयी। चट्टानो को बारूद से उडाकर पटरियों को बिछाने के लिए जगह बना दी गयी, संकीर्ण घाटियो पर पुलों का निर्माण

किया गया और साठ मील की दूरी में सिरास-पर्वतो में १५ सुरंगे खोदी गयीं। जब अत्यधिक बर्फ के कारण निर्माण-कार्य अवरुद्ध होने का खतरा उत्पन्न हो गया तो निपुण इजीनियरो ने ३७ मील लम्बी बर्फ की शेड बनायी, और इसके अन्दर ही कार्य जारी रहा।

यूनियन पैसिफिक के निर्माण का इजीनियरिंग-कार्य कुछ भागो मे कम कठिन था। इसका कारण शायद यह था कि उसका निर्माण उस समय के सबसे महान इजीनियर जनरल ग्रेनविल डाज के मार्गदर्शन मे हो रहा था। उनके मजदूरो में आयरलैण्ड के निवासी और संघ तथा कान्फिडेरेट सेनाओ के कुशल लोग थे, जो रेड इंडियनो को देखते ही फावडे छोडकर राइफले सम्हाल लेते थे। उनके प्रेरणादायक नेतृत्व मे रेल-मार्ग दिन भर मे दो मील, तीन मील और यहा तक कि चार मील तक भी तैयार हो जाता था। एक दल गट्टियॉ बिछाता, दूसरा पटरियों को यथास्थान रखकर उन्हे जोडता जाता था।

१० अप्रैल, १८६९ को दोनो मार्ग प्रोमान्टोरी प्वाइंट, उटाह मे जा मिले। सोने और चादी की सलाखो को मिला कर एक समारोह आयोजित किया गया और समस्त राष्ट्र ने इस समारोह मे भाग लिया था। यह एक महान इजीनियरिंग कार्य था; परिश्रम, कौशल और साहस की यह एक काव्यपूर्ण कथा थी। राबर्ट लुई स्टीवेन्सन ने लिखा :

"जब मै सोचता हूं कि किस प्रकार यह रेलमार्ग इस निर्जन वन और जगली जातियो के बीच से होकर ले जाया गया है. किस प्रकार प्रत्येक चरण पर, व्यस्त किन्तु बिना पूर्वयोजनाके नगर खड़े हो जाते थे—जो स्वर्ण, स्वार्थ और मृत्यु से पूर्ण थे—और पुनः अदृश्य हो जाते थे, किस प्रकार इन अजीब जगहो मे अजीब शक्लवाले चीनी समुद्री डाकू, सीमान्त के बदमाशों के साथ मिलजुल कर कार्य करते थे और यूरोप के निराश लोग एक दूसरे से मिली-जुली भाषा मे बातचीत करते, शपथ लेते, जुआ खेलते, शराब पीते, झगडते और भेडियों की भाति हत्या करते थे.. और जब मै यह स्मरण करता हू कि ये ऐतिहासिक संघर्ष ऐसे सुसज्जित भद्र लोगो द्वारा किये जाते थे, जिनका उद्देश्य धन अर्जित करने और उसके पश्चात् पेरिस की यात्रा करने से अधिक कुछ भी नहीं था, तो मुझे लगता है कि रेलमार्ग इस युग की, जिसमे हम रहते हैं, विशिष्ट देन है. .यदि रोमास की बात हो, यदि मित्रता की बात हो, यदि शौर्य की बात हो, जिनकी हमे आवश्यकता हो, तो ट्राय नगर इसकी तुलना मे क्या था?"

निश्चय ही इसके निर्माण के दौरान में रोमांस और शौर्य देखने मे आया, किन्तु भाग्य और उल्लास भी-वहा मौजूद था। वास्तव मे जहा सफलता के कारण गर्व की भावना का उदय हुआ, वहाँ लज्जा की भावना भी पीछे न रही। यूनियन पेसिफिक के डाइरेक्टर सरकारी देन मात्र से सन्तुष्ट न थे। उन्होंने एक कृत्रिम कम्पनी की स्थापना की और उस कम्पनी को झूठे ठेके प्रदान किये। इससे उन्हे कई लाख डालरों का मुनाफा हुआ। सेन्ट्रल पैसिफिक के चार बड़ों—हैरिंग्टन, स्टानफोर्ड, क्रोकर और हापकिन्स—ने अपनी स्वय की निर्माण कम्पनी की स्थापना की और ६०० लाख डालर से भी अधिक रकम पर हाथ मारा। इनमे से प्रत्येक ने अपनी मृत्यु पर ४०० लाख डालर की रकम छोडी। डाइरेक्टरों के दोनों दलों ने पूर्णरूपेण भ्रष्टाचार किया, दोनों दलों ने अपने-अपने मार्गों के निर्माण मे इतना ऋण लिया कि सरकार को भी अपने द्वारा दिये गये ऋण की रकम को पाने के लिए कठिन प्रयत्न करना पड़ा। इन मार्गों का लाभ उठाने वाले लोगों को भी एक पीढी बाद तक अत्यधिक ऊचे किराये देने पडे।

इस बीच प्रायद्वीप के आरपार जानेवाली लाइनों की चार अन्य योजनाएं भी पूरी हो चुकी थीं। कांग्रेस द्वारा ४०० लाख एकड़ सार्वजनिक भूमि की स्वीकृति पाकर जे. कुक ने नदर्न पैसिफिक का उद्घाटन किया जब कि फ्रेडरिक विलिंग्स और हेनरी विलार्ड ने इसका निर्माण-कार्य पूरा किया। इन मार्गों को १८८३ मे सुपीरियर झील के पगेट साउन्ड के साथ जोड दिया गया। इस प्रकार की दो अन्य लाइनें भी भूमिसम्बन्धी स्वीकृति पाने मे कुछ कम भाग्यशाली न रहीं—सान्टा फे जो पुराने मार्ग से होकर कान्सास से न्यू मैक्सिको तक गयी थी और वहा से रेगिस्तान होती हुई निचले कैलिफोर्निया तक गयी थी। सदर्न पैसिफिक की दूसरी भाग्यशाली लाइन न्यू आरलियन्स से लास एजेल्स और सान फ्रासिस्को तक गयी थी। इन मार्गों को तथा अन्य मार्गों को भी, जिन्होंने पश्चिम का रास्ता खोल दिया, न केवल संघीय सरकार से ही सहायता मिली बल्कि राज्यों और सूबों से भी। केवल एक प्रायद्वीपीय रेलमार्ग बिना किसी सरकारी सहायता के निर्मित किया गया—दि ग्रेट नदर्न। यह मार्ग कनाडा मे जन्मे जे. जे. हिल का निर्माण–कार्य था। यह मार्ग सेन्ट पाल से सीटल तक नदर्न पैसिफिक के समानान्तर चलाया गया। वित्तीय दृष्टि से यह सबकी अपेक्षा दृढ था और उसकी आर्थिक तथा सामाजिक नीतियाँ सबसे अधिक लाभकारी थी।

खानों और पशुओं के राज्य : सुदूर पश्चिम मे प्रथम चौकिया स्थापित करने का श्रेय खानों में काम करनेवालो को ही था। कैलिफोर्निया मे सोने की खोज ने इस राष्ट्रमण्डल को न्यू स्पेन की ग्राम्य-चौकी से परिवर्तित करके एक समृद्धशाली अमरीकी राज्य का रूप दे दिया था। इस क्षेत्र- मे विभिन्न आर्थिक कार्यवाहिया—कृषि, जहाजरानी, रेलमार्ग बिछाने और वस्तुए निर्माण करने का कार्य प्रारम्भ हो गया था। इस अनुभव को इस खानों वाले राज्य के इतिहास में बार-बार दुहराया गया—१८५९ मे पाइक्सपीक के लिए, एल्डर गल्श और मोन्टना मे लास्ट चान्स और वायोमिंग मे स्वीट वाटर के तट पर १८६० के मध्य मे और १८७० मे डाकोरा प्रदेश के ब्लैक हिल्स के लिए। प्रत्येक स्थान पर खानो मे काम करनेवालो ने प्रदेश को खोल दिया, राजनीतिक समाज की स्थापना की और अधिक स्थायी बस्तियो की नीव डाली। ज्यों-ज्यों सोने और चादी की समाप्ति होती गयी अथवा उनका स्वामित्व पूर्वी निगमों के हाथों मे चला गया और खानो सम्बन्धी ज्वर भी शात होता गया, प्रवासीगण कृषि और पशुपालन सम्बन्धी सम्भावनाओं पर विचार करने लगे अथवा पूर्व और पश्चिम मे प्रगति कर रहे रेलमार्गों के काम मे लग गये। कुछ समुदाय केवल खानों के काम मे ही लगे रहे, किन्तु मोनटाना और कोलोरेडो वायओमिंग और इडाहो तथा कैलिफोर्निया का भी वास्तविक धन इन प्रदेशों मे उगी हुई घास और यहा की भूमि ही थी। खनिज पदार्थों मे भी प्रवासी साहसिको के लिए बहुमूल्य धातुओं का आकर्षण प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध ताबा, कोयला और तेल की ओर अधिक होता गया।

खनन साम्राज्य का ह्रास उसी तीव्रता से हुआ जिस तीव्रता से उसका विकास हुआ था, किन्तु इसने अमरीकी मस्तिष्क पर एक अमिट प्रभाव छोडा। खान-शिविर विस्मयजनक रूप से रगीन थे। एक नयी खान के खोदते ही हजारों भाग्य की आजमाइश करनेवाले लोग निर्जन स्थानो पर आ पहुचते। कुछ ही दिनो में सैकडो शिविर और घासफूस की झोपडिया किसी नाले के किनारे खड़ी हो जाती अथवा उस पर्वतीय ढाल पर खडी हो जाती जहा वे पदार्थ छिपे होते। प्रत्येक मकान के सैलून अथवा नृत्य-हाल होने की सभावना थी, जहा पर बुरी शराब ५० सेन्ट मे पीने को मिलती थी, जहा हर्डीगर्डीनुमा (सारगी की आकृतिवाला बाजा) लडकिया, खानो मे गलमुच्छेवाले काम करनेवालों का आमोद-प्रमोद करती पायी जाती थी। इन स्थानो पर कानून ऐसा अस्तित्वहीन नही था, जितना कि रोमाटिक लेखको ने वर्णित किया

हैं· किन्तु वहाँ पर सभ्यता की कुछ ही सुविधाएं उपलब्ध थीं। शिविर का जीवन भी बर्बरतापूर्ण ही था। फिर भी यहां मकानों, स्कूलों, चर्च और कानून के आते ही, खानों में काम करनेवाला समाज भी समय आने पर पर्याप्त रूप से व्यवस्थित हो उठा।

इस खान-साम्राज्य ने पश्चिम के कृषि-वैभव को विज्ञापित करने के अतिरिक्त भी बहुत कुछ किया। इसके प्रवासियों को आकर्षित किया, और भविष्य के उपन्यास-लेखकों और फिल्म-उत्पादकों के लिए विषय-सामग्री प्रदान की। इसने रेड इण्डियनों की समस्या को सामने ला खड़ा किया, रेलमार्गों का निर्माण किया और पूर्व के पूंजी लगानेवालों की तिजोरी को भर दिया, राष्ट्रीय सम्पत्ति में २० खरब डालर की लागत की बहुमूल्य धातुओं की वृद्धि हुई। इस प्रकार हरेभरे प्रदेशों को मुद्रा के रूप में परिवर्तित किया जा सका और 'धन का प्रश्न' अमरीकी राजनीति में प्रवेश पा सका।

जबकि खानों में काम करनेवाले नेवाडा और मोनटाना की पहाड़ियों में कार्यरत थे, पश्चिम के इतिहास में एक नया और अधिक महत्वपूर्ण अध्याय लिखा जा रहा था। वह था पशु-राज्य का उदय। इस साम्राज्य का प्राकृतिक आधार पश्चिम के घास के मैदान थे, जो रियो ग्राडे से उत्तरी सीमान्त तक कान्सास और नेब्रास्का से राकी पहाड़ की घाटियों तक बिना कहीं टूटे हुए फैले हुए थे। यहां पर लाखों वन्य-भैंसे स्वेच्छा से घूमा करते थे, किन्तु दो दशाब्दियों में इन्हें लुप्तप्राय हो जाना था और इनके स्थान पर संख्या में इनसे भी अधिक टेक्सास के लम्बे सींगवाले और वाय्योमिंग और मोनटाना बारहसिंगे विचरण करनेवाले थे।

एक शताब्दी तक स्पेन के डानों और धर्मप्रचारकों ने उत्तरी मेक्सिको में रियो ग्राडे के किनारे-किनारे और दक्षिणी कैलिफोर्निया की घाटियों में पशु-पालन का कार्य किया था· किन्तु ये केवल स्थानीय उपयोग और चर्बी तथा चमड़े के लिए ही मूल्यवान थे। रेलमार्गों के आगमन के साथ सेन्ट लुईस, कान्सास सिटी, ओमाहा और चिकागो में पैकिंग वाले मकानों की स्थापना और रेफ्रीजेरेटर गाड़ियों के आविष्कार के साथ, नस्लों में सुधार करना और पशुओं को उत्तर की ओर बजारों में ले जाना लाभप्रद बन गया। गृह-युद्ध के पश्चात् प्रारम्भ होकर उस लम्बे सफर ने एक वार्षिक संस्था का रूप धारण कर लिया। हज़ारों पशुओं के पदचिन्हों से मार्ग बनते गये—चिसहोम, पेकोस, गुडनाइट, वोजेमन—और एबीलिन तथा चेमेन्स जैसे समृद्धशाली

नगर नये रेलमार्गो के किनारो पर बस गये। इस बीच पशुपालकों ने यह पाया कि वे पशुओ को जाड़े की ऋतु मे उत्तर की उपजाऊ घास मे रख सकते हैं, और यह साम्राज्य कोलोरेडो, वाययोमिंग और मोनटाना मे फैल गया। टेक्सास मे अधिकाश पशु थे, किन्तु वाययोमिंग सबसे विशिष्ट ग्वालो का राष्ट्रमण्डल था। यहाँ वर्षो तक पशु-सम्पत्ति से प्रतिस्पर्धा करनेवाला कोई न था और वाययोमिंग स्टाक ग्रोवर्स असोसिएशन बिना चुनौती के शासन करता रहा।

प्रारम्भ मे लगभग प्रत्येक व्यक्ति अपनी कुछ गायो तथा बछडो को सार्वजनिक भूमि मे चरा कर पशुपालन कर सकता था, किन्तु कुछ ही अवधि मे बडे पशुपालकों और पशु-कम्पनियो ने, जिनमे से कई पूर्व अथवा ब्रिटेन मे सगठित की गयी थी, उद्योग पर नियन्त्रण कर लिया। उन्होने सार्वजनिक घास के मैदानो से सहायता पाकर और रेड इण्डियनो की भूमि को पट्टे पर लेकर उसके भीतर के जलक्षेत्र को कटीले तारो से घेर लिया। एक पशु-कम्पनी ने कोलोरेडो मे दस लाख एकड सार्वजनिक भूमि को कटीले तारो से घेर रखा था, दूसरी कम्पनी ने टेक्सास मे जान्स काउन्टी को पूरी तरह घेर रखा था। चेयेना लोगो ने अपनी ४० लाख एकड भूमि पशु-कम्पनियो के एक दल को पट्टे पर दे रखी थी। इण्डियन प्रदेश की सभ्य जातियो ने ६० लाख एकड भूमि केवल एक कम्पनी को समर्पित कर रखी थी। पशु-स्वामियो ने छोटे प्रतियोगियो पर निर्दय तरीके से रोक लगा दी और गडरियो के साथ, जिनकी भेडे चारे के समीप तक की घासे इस प्रकार खा जाती कि वह नष्ट हो जाता, निर्दयतापूर्ण लडाई जारी रखी।

पशु-राज्य मे खानोवाले राज्य के समान ही रोमाटिक पक्ष था और इसकी समृद्धि अमरीकी चेतना मे बनी हुई है। मैदान का एकाकी जीवन, गूढाक्षरो से पूर्ण चित्रित किये हुए लेख, लम्बा सफर, भगदड, पशुओ को हाकने वालो के साथ युद्ध, अद्भुत घुडसवारी, उपयोग के लिए चित्रित रगीन वेशभूषा, गायो से पूर्ण एबीलेन और चेयेन्न का वन्य जीवन—इन सबने अमरीकी लोकगीतों मे स्थान पाया है। अब बच्चे ग्वालो की पोशाक की नकल करके अपने को सजाते हैं, फिल्म निर्माण करनेवाली कम्पनियों के छायाकार चरवाहों की दोषरहित छवि उतारते हैं और सडको पर घूमनेवाले बच्चे टेक्सास की लोरिया गाते हैं।

कृषकों का आगमन : 'हाई प्लेन्स' मे पशुओ और भेडो का पालना

प्रमुख रेल-मार्ग १९१० मे
हैरिमेन
हिल
गोउल्ड
वाडेरबिल्ट
मोरगन
साता फे
पेंसिलवानिया
सीटल
स्पोकाने
टकोमा
पोर्टलैंड
सेन डिएगो
डेनवेर
कांसास सिटी
सेंट लुइस
एल पासो
डुलुथ
शिकागो
बोस्टन
न्यूयार्क
फिलाडेल्फिया
वाशिंगटन
सिनसिनाटी
नोरफोल्क
अटलांटा
मोबाइल
जेक्सनविले
न्यू आर्लियंस
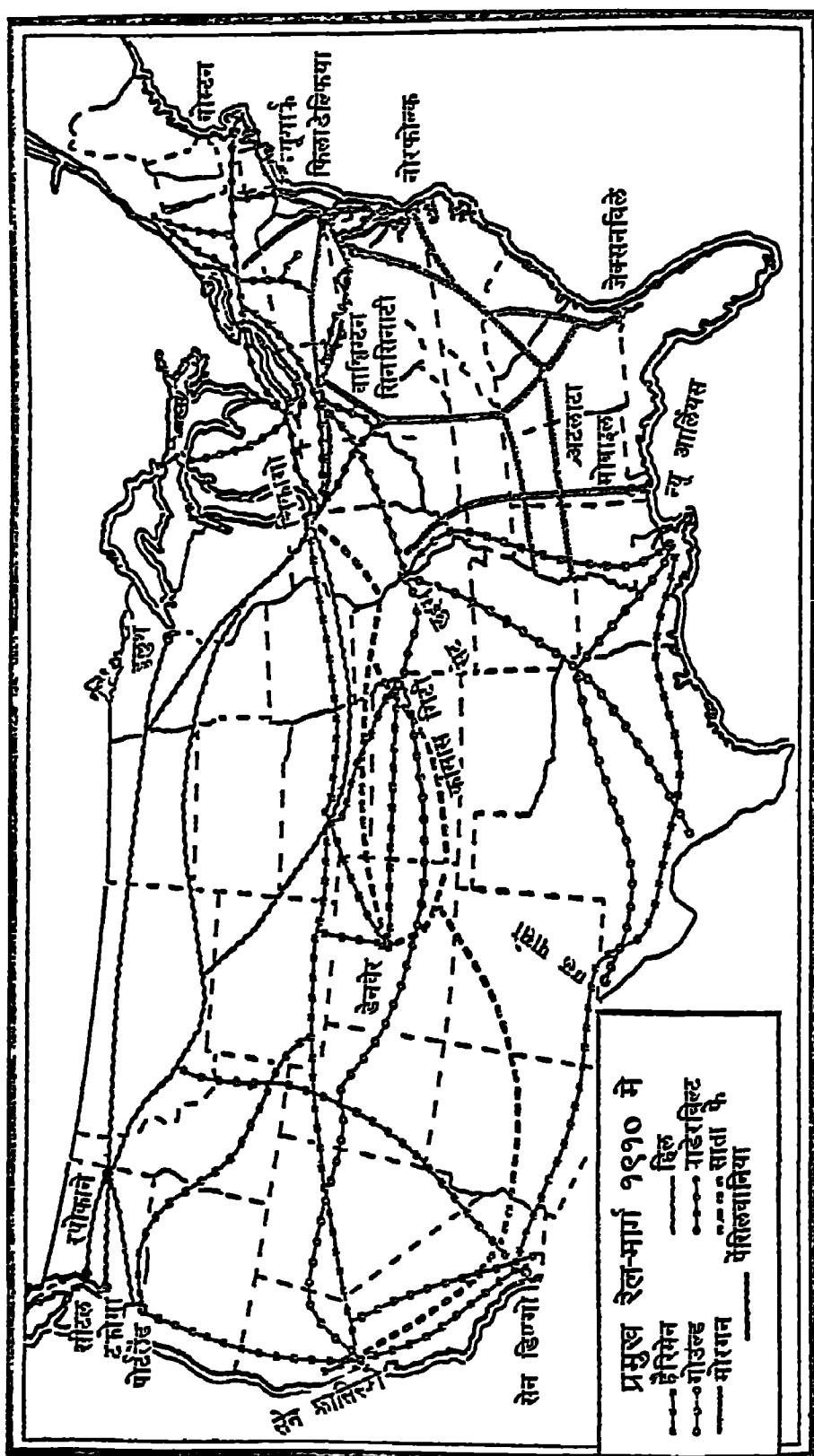
स्वाभाविक ही था और कई पशु-स्वामियो का विश्वास था कि इस प्रदेश मे कृषको द्वारा बसने का प्रयत्न करना एक भूल होगी। शताब्दि के प्रारम्भ मे जेबुलन पाइक ने रिपोर्ट दी थी कि कान्सास, अरकान्सास से नदियो और उनकी विभिन्न शाखाओं के किनारे सीमित लोगो को बसा सकना ही सम्भव दिखलाई पडता है। . यहा वसे हुए लोगो के लिए लाभकर यही होगा कि वे पशुओं, घोड़ो, भेडो और बकरियो की सख्या मे ही वृद्धि करते रहे और एक अर्धशताब्दि पश्चात् एक अमरीकी सिनेटर ने सघ मे कान्सास के प्रवेश का विरोध करते हुए घोषित किया, "मिसूरी नदी को पार करने के बाद, कुछ प्रवाहो को छोड कर अन्य कोई भी क्षेत्र रहने योग्य अथवा बसने योग्य नहीं है।" ये सामान्य धारणाए गलत सिद्ध हुईं, फिर भी बाद की घटनाओ ने प्रमाणित कर दिया कि शुष्क पश्चिम के अधिकाश क्षेत्रो मे कृषि करना अलाभकर है। पशु-स्वामियो को किसी भी हालत मे निश्चय था कि पश्चिम के सभी घास-मैदानों पर उनको प्रकृति से ही कानूनी अधिकार मिल गया है। अच्छे और बुरे सभी साधनों से उन्होने भूमि कानूनो का उल्लघन किया, विस्तृत क्षेत्रो को कटीले तारो से घेर दिया, पानी की धाराओ पर एकाधिपत्य स्थापित कर लिया और कृषकों के आगे बढ़ने पर रोक लगा दी।

किन्तु यह एक हारा जानेवाला युद्ध था। पशुसम्बन्धी इक्के-दुक्के प्रवेश पानेवालो को भले ही डरा धमका लेते, किन्तु वे हमेशा के लिए सघीय सरकार के आदेशों का उल्लघन नहीं कर सकते थे। जब राष्ट्राध्यक्ष आर्थर और क्लीवलैण्ड ने कटीले तार के घेरों को काट कर घास-मैदानो को गृह-निर्माण के इच्छुक लोगों के लिए खोल देने का आदेश दे दिया तो सारा खेल खत्म हो गया। १८७०—८० की अवधि मे रेलमार्गों ने समूचे मैदानी क्षेत्रों को पहुँच के भीतर कर दिया और विस्तृत पैमाने पर भूमि पर बसने की कार्यवाहिया प्रारम्भ हो चुकी थी। नदर्न पैसिफिक ने ४०० लाख एकड भूमि की बिक्री के लिए यूरोप भर मे विज्ञापनबाजी की। इन विज्ञापनों मे पश्चिमी धरती की अयनवृत्तीय समृद्धि का ही करीब-करीब वर्णन किया गया था (इसीलिए जे. कुक का 'बनाना वेल्ट') और कुक के उत्तराधिकारी विलार्ड ने तो एक समय विदेशों मे ८०० एजेण्ट भेजे थे जो भूमि-बिक्री के लिए डौडिया पीटा करते थे। सान्टा फे मे हजारो रूसी मेओनिट आये, दक्षिणी पैसीफिक ने जर्मनो और स्कैण्डिनेविया के निवासियो को आकर्षित किया। हिल ने धनहीन किसानों को कर्ज देकर, वैज्ञानिक कृषि को सहायता प्रदान कर और चर्चा तथा

स्कूलों को बना कर अपने साम्राज्य का निर्माण कर लिया। रेड इण्डियनों का प्रतिरोध समाप्त कर दिया गया और पराजित जातियो के शेष लोग उस प्रदेश से निकाल बाहर किये गये अथवा सुरक्षित स्थानों पर एकत्रित कर दिये गये। मैदानी क्षेत्र मे कारखाने छा गये और लाखो मील के कटीले तारो, हजारों पवनचक्कियों और ड्रिलों का निर्माण किया गया जिनके कारण शुष्कभूमि मे भी कृषि सम्भव बन सकी। ८० लाख प्रवासी इस प्रदेश मे आ पहुचे, जनसख्या २२० लाख से बढ़ गयी; उन स्थानों पर जहा लोग पहले से जा बसे थे, दबाव बढ़ गया जबकि कृषि-उत्पादनों का घरेलू बाजार भी विस्तृत हो गया।

ऐसी सुरक्षित स्थिति में सत्तरहवी शताब्दी में मैदानी प्रदेश के लिए यथार्थ भगदड़ मच गयी। हैमलिन गार्लैण्ड को तब याद आया कि जब वे एक दावे के बारे मे डाकोटा गये :

"ससार के प्रत्येक देश के प्रवासियो से भरी हुई गाडिया मैदानी भूमि मे रुक कर धीमी गति से बढ़ रही थी। नार्वेजियन, स्वेड, डेन, स्काच, अंग्रेज, और रूसी भूमि-खोजकर्ताओ के प्रवाह मे बढते जा रहे थे जहा भले अंकल सॉम ने प्रत्येक की समृद्धि के लिए उपजाऊ घाटी सुरक्षित रख छोडी थी। सडके प्रवासियों से भरी पड़ी थी। सभी बाते अपने-अपने भाग और भूमि के बारे में थी। ज्यो-ज्यों घण्टा बीतता जाता और सूर्य अस्ताचल की ओर बढ़ता, भविष्यशोधक स्वामित्वहीन प्रदेश का दौरा करके भूखे और थके किन्तु प्रफुल्लचित्त लौट आते।"

इसी प्रकारके दृश्य समूचे मैदान भर मे देखे जा सकते थे। दो दशाब्दियो में मिन्नेसोटा ने अपनी जनसंख्या को तिगुना कर लिया, कान्सास ने चौगुना और नेब्रास्का ने आठ गुना कर लिया। डाकोटा १४ हजार की जनसख्या से बढ़ कर ५० लाख की जनसंख्या पर पहुच गया। २२ लाख की जनसख्या वाला भव्य टेक्सास प्राचीन मसाचुसेट्स की जनसख्या की सूची मे छठवें स्थान पर पहुँच रहा था। इस वर्ष की अवधि मे सब कुछ मिला कर प्रमुख रूप से कृषिराज्यों—मिन्नेसोटा, कान्सास, नेब्रास्का, डाकोटा, कोलोरेडो और मोनटाना की जनसख्या १० लाख से बढकर लगभग ५० लाख तक जा पहुची—यह प्रतिशत वृद्धि समूचे देश की वृद्धि की ८ गुनी थी। जैसा कि फ्रेंच पर्यटक डी. टोकवील ने एक अर्ध-शताब्दि पूर्व कहा था, यूरोपीय जातियों का राकी पर्वतो की ओर यह मंद, किंतु निरतर प्रयाण ईश्वरीय चमत्कार सी गभीरता लिए हुए है। यह

मानो मानवसागर की लहर है जो निरतर वढती रहती है और दिनोदिन ईश्वरीय आदेश से आगे वढ रही है।

१८ वी दशाब्दी के समाप्त होते ही मैदानो की दिशा मे देशान्तर वास की धारा की लहर अपनी शक्ति खर्च कर चुकी थी और कुछ स्थानो मे उसका ज्वार घटने लगा था। कठिन समय और सूखे के कारण कई उत्साही कृषक पश्चिमी कान्सास, नेब्रास्का और डाकोटा से निकल कर वापस पूर्व को जा चुके थे। जनसख्या की प्रतिशत दर मे वृद्धि स्पष्ट रूप से कम होती जा रही थी। उदाहरणार्थ १८९० के आसपास नेब्रास्का मे केवल चार हजार, कान्सास मे केवल चालीस हजार निवासी ही वढे—जवकि अन्यत्र यह वृद्धि कठिनाई से उसकी अपेक्षा अधिक थी जिसे उपजाऊ जनसख्या की स्वाभाविक वृद्धि का कारण वतलाया जा सकता था।

फिर भी पश्चिम के खोले जाने के इतिहास के सबसे चमत्कारिक अपवाद का लिखा जाना अभी शेष था। एक अर्ध-शताब्दि तक प्रवासी साहसियो ने टेक्सास और कान्सास के वीच की उपजाऊ भूमि को भूखी दृष्टि से देखा था जो कि पाच सभ्य इण्डियन आदिजातियो के लिए स्थायी रूप से सुरक्षित कर दी गयी थी। १८७५ तक आरकान्सास, कैनेडियन, रेड, वीलटा की उपजाऊ निचली भूमि और हलके वीच के घास के मैदानो के लिए दवाव इतना वढ गया कि सरकार अव और अधिक समय तक उसका प्रतिरोध नही कर सकी। इण्डियन अधिकारो की विक्री कर ली गयी और अप्रैल, १८८९ मे यह प्रदेश वसने के लिए खोल दिया गया। इस नये प्रदेश के लिए उन्मादपूर्ण भगदड मच गयी। इसके कुछ वर्ष वाद एक इसी प्रकार की भगदड तव मची जव कि उत्तरी ओक्लाहोमा की चिरोकी पट्टी को वसने के इच्छुक लोगो के लिए खोल दिया गया था। १९०० तक इस नये प्रदेश की जनसख्या ८० लाख तक जा पहुंची थी।

खान राज्य और पशुराज्य अदृश्य हो गये थे। अव 'सीमा' भी लुप्त हो गयी थी। पश्चिम मे खाने अव भी थीं, किन्तु वे सुनियन्त्रित व्यवसाय के रूप मे थी। इनका स्वामित्व और सचालन पूर्वी निगमो के हाथो मे था। लाखों पशुओ की पंक्तियॉ अव भी घासभूमि मे टेक्सास और न्यू मेक्सिको से मोनटाना और डाकोटाज तक देखी जा सकती थीं, किन्तु अव वह पहले जैसा स्पष्ट लक्ष्य-स्थान न रह कर, कई आर्थिक स्वाथो मे से एक ही रह गया था। पश्चिम मे भूमि अव भी शेप थी, किन्तु अधिकाश भाग पर्वतो अथवा ऐसे

शुष्क प्रदेश मे था, जहाँ सिचाई के बाद ही कृषि लाभकारी बन सकती थी। अपने आर्थिक ढाचे मे पश्चिम अधिकाधिक रूप से शेष देश के साथ मिल गया।

राजनीतिक दृष्टि से भी यह सम्मिश्रण शीघ्रता से आगे बढ रहा था। नेवाडा को १८६४ से ही राज्य का पद प्राप्त हो गया था—मुख्यतया इसलिए कि लिंकन ने सोचा कि उन्हे उसके चुनावमतो की आवश्यकता पड सकती है। नेब्रास्का को राज्य-पद १८६७ मे प्राप्त हुआ और कोलोरेडो १८७६ मे सेन्टेनियल राज्य बन गया। इसके पश्चात् काफी विलम्ब होने लगा जबकि पश्चिम के शेष भाग भर गये और राजनीतिक दल नये प्रदेशो के नियन्त्रण के लिए प्रतिस्पर्धा करने लगे। अन्त मे १८८९-१८९० मे प्रतिबध दूर कर दिये गये और आम्नीबस (वह धारा जो कई प्रकार के विविध मामलो पर लागू होती है) विधेयक ने ६ पश्चिमी राज्यों—दोनों डाकोटाओं, वायोमिंग, मोनटाना, इडाहो, और वाशिंगटन को प्रवेश दे दिया। उटाह जो जन सख्या की दृष्टि से कब का राज्य-पद के योग्य था, किन्तु मारगनो के नियन्त्रण के कारण सन्देह की दृष्टि से देखा जाता था, कुछ वर्षों के पश्चात् ही वह यह पद प्राप्त कर सका। ओक्लाहामा को राज्यत्व का पद १९०७ मे और एरीजोना तथा न्यूमेक्सिको के दक्षिणी राज्यो को यह पद १९१२ मे मिला। इस प्रकार राष्ट्र की राजनीतिक सीमाएँ स्थायी ढाचे के रूप मे खिच गयीं और वह कार्यप्रणाली, जिसका शुभारम्भ उत्तर-पश्चिम-अध्यादेश से हुआ था, समाप्ति पर लायी गयी।

अपने राजनीतिक सगठन की दृष्टि से पश्चिमी राष्ट्रमण्डल पूर्वी राष्ट्रमण्डल से मिलते थे। सर्वज्ञात सरकारों का वह रूप, जिसके अन्तर्गत सत्ता का त्रिदलीय विभक्तीकरण होता है—दो सदनोंवाली विधानसभा, शहरी और कस्बोंवाली स्वायत्त शासन-प्रणाली प्रत्येक स्थान पर अपनायी गयी। कुछ मामलो मे, फिर भी, नये राज्यों के विधान पुराने राज्यों के विधान से भिन्न थे। वे बहुत अधिक सावधानी से बनाये गये थे। सब कुछ मिला कर वे उदार भी थे। उनमे से अधिकाश मे महिलाओं को किसी न किसी रूप मे मतदान के अधिकार देने की व्यवस्था थी, ट्रस्टों और एकाधिकारों पर प्रतिबध लगाया गया था, रेलवे पर नियन्त्रण किया गया था और प्रगतिशील श्रम-स्तरों की व्यवस्था की गयी थी। फिर भी न तो उनको प्रोत्साहन प्रदान करनेवाला दर्शन, न चेतना प्रदान करनेवाली स्फूर्ति ही मूलभूत रूप से अमरीका मे व्याप्त स्तर से भिन्न ही थी।

आखिरी सीमान्त का जीवन : सीमा प्रदेश के जीवन ने हमेशा कठिनाई और खतरे को उत्तेजित किया था और आखिरी सीमान्त भी इसका अपवाद न था। उन पुरुषों और महिलाओं के लिए, जिन्होंने पूर्व के नगरों और फार्मों का परित्याग किया, जीवन हमेशा कठिनाइयों से पूर्ण तो था ही, अधिकाश मे तीव्र रूप से निराशाजनक भी था। ओहियो और मिस्सिसिपी घाटियों की अपेक्षा यहा का कार्य कठिन था और फल बहुत कम। कुछ लोगो के लिए अनन्त घास के मैदान, जो सुदूर क्षितिज तक फैले हुए थे, घुमडते हुए बादल, भव्य सूर्यास्त अपनी अलग ही सुन्दरता लिये हुये थे, किन्तु अधिकाश को मैदान अरोचक और ऊबा देनेवाले लगते थे। ग्रीष्मऋतु मे प्रखर सूर्य हल चलानेवालों और कटाई करनेवालों पर निर्दयता से प्रहार करता और दक्षिण की ओर से आनेवाली शुष्क और गर्म हवा के झोके भी रात्रि को असह्य बना देते। शरद् ऋतु का आगमन अति शीघ्रतापूर्वक असह्य ठड के साथ होता, तापमान ६ से ३० डिग्री नीचे तक गिर जाता। अन्धा बना देनेवाले बर्फ के तूफान कई बार लगातार कई दिनो तक चलते रहते। फलस्वरूप हजारों पशुओं के शव समूचे मैदान मे फैल जाते, उनमे फसे हुए पुरुष अथवा स्त्रिया मर जातीं अथवा अपग हो जाती। कभी-कभी तो अपने घर से खलिहान तक जानेवाले व्यक्ति भी रास्ता भटक जाते।

पुरुषों को तो कार्य करना था और उनकी अपनी अभिलाषाए थीं, किन्तु स्त्रियो को नीरस और एकाकी जीवन सह्य न हो पाता। उनमे से बहुतों ने, जो पूर्व की सुख-सुविधा मे पली थी, अपने घर गड्ढो और घास की कुटियो मे बनाये, जिनमे अन्धेरा रहता था और हवा नही पहुंच पाती थी। ऐसे ढाचों के दरवाजे और खिडकिया कम्बल अथवा चमडे की पतो से ढकी होतीं और हर बार वर्षा आने से फर्श कीचड़ से सन उठता। इन पुराने ढाचो के स्थान पर, जो तथाकथित मकान बने, वे अधिक सुविधाजनक होने पर भी कम भद्दे न थे। वृक्षहीन मैदान मे बने ये मकान छोटे थे और जल्दी मे बनाये गये थे। ग्रीष्म मे ये गर्म, शरद् मे ठडे और सभी ऋतुओं मे सुख-विहीन थे। वृक्ष, पौधे और फूल, जो पूर्व के निर्धन घरो के भी अंग थे, यहाँ लुप्तप्राय थे, यद्यपि कुछ को रोपा गया था, और जब जल प्राप्त होता, उनकी देखरेख भी की जाती थी। फिर भी बगीचो के लिए यहाँ बहुत कम जल उपलब्ध किया जा सकता था, जबकि मकानों को साफ करने और धोने के लिए भी वह बहुत कम मात्रा मे ही उपलब्ध था। सूखे के समय जब अन्न सूख जाते, अंगूर की बेले मुरझा

जातीं, कुएँ पट जाते और दक्षिणी हवा की धूल उड़ कर मकान के हर कोने में छा जाती और दिन रात तापमान ऊपर ही बना रहता, तब बड़े-बड़े धैर्यवान लोगों के छक्के छूट जाते।

इस गर्मी, गन्दगी और शुष्कता की अपेक्षा भी जो वस्तु बुरी थी, वह थी एकाकीपन और पृथक्ता। सामाजिक समागम, चर्च की सान्त्वनाओं से अलग हो जाने और डाक्टरों की सहायता न उपलब्ध होने से सीमाप्रदेश की अनेक गृहपत्नियों की हालत असन्तुलित हो उठी। बच्चे बिना किसी प्रकार की सहायता के उत्पन्न होते, ऐसे में जो थोड़ी-बहुत सहायता मिलती भी वह दयावान पड़ोसी से ही। बच्चों की अकाल मृत्यु, जिसका हृदयविदारक कब्रिस्तान सबूत था, की संख्या बहुत ऊंची थी। रुग्णावस्था से लोगों को बड़ा भय लगता क्योंकि उपचार कठिनाई से उपलब्ध था, जो था भी वह बहुत मूल्यवान। दलदल और गन्दे तालाबों में पैदा होनेवाले मच्छरों ने कम्प ज्वर का व्यापक प्रसार किया। दूषित जल के कारण टाइफाइड होने लगा। हैजा, निमोनिया, और चेचक हो जाना साधारण बात थी। दुर्घटनाएं होने से असंख्य लोग काल के गाल में जा समाते। परेशान देहाती डाक्टरों ने बेहोशी पैदा करनेवाली औषधि के बिना ही अपूर्ण औजारीय यंत्रों की सहायता से शौर्यपूर्ण आपरेशन किये। एवेकेट डेक ने एक युवा डाक्टर के बारे में बतलाया है, जिसने अपना पहला आपरेशन बेहोशी पैदा करनेवाली औषधि के बिना ही मिट्टी के तेल के दीपक की रोशनी में सम्पन्न किया। जब दीपक टूट गया तब भी धुंए के प्रकाश में आपरेशन जारी रहा।

नगरों का जीवन अधिक मित्रता और सामाजिक मेल-जोल लिये हुए था। इस काल के मैदानों के विशिष्ट नगर छोटे और अस्थायी थे। उनके निवासी सम्पन्नतापूर्ण भविष्य का स्वप्न देख रहे थे—किन्तु एक क्षण पूर्व में अनुरोध मात्र से बिस्तर गोल कर अधिक अच्छे स्थान पर जाने को उद्यत रहते थे। एक बदरंग कीचड़भरी सड़क की तस्वीर खींचिये, जिसकी लकड़ी की पगडंडिया मैदान के किनारे आते ही समाप्त हो जाती हैं। सड़क के दोनों ओर हिलते-डुलते ढांचों के मकान खड़े हैं, जिनके बाहर लगा चूना रंग सूर्य की किरणों से खुरदरा बन कर भद्दा लग रहा है। अधिक प्रमुख ढांचे सैलूनों, जनरल स्टोर, घुड़साल, होटल और रेल्वे स्टेशन के हैं, जहां प्रतिदिन नगर के लोग ट्रेन आने की राह देखते हैं। इन ट्रेनों से समाचारपत्र, पत्रिकाएं, मेल आर्डर, सूचीपत्र, मित्रों और पूर्व में छूटे हुए परिवार के सदस्यों से पत्र,

डौडी पीटनेवाला, ऋण देनेवाला, सेन्ट अथवा अन्न का विक्रय करनेवाला आता है। सडक के नुक्कड पर एक चर्च है—मेथाडिस्ट, बैप्टिस्ट अथवा पेस्वीटेरियन—जहा महीने मे एक बार निर्धन और अल्पवेतनभोगी धर्मोपदेशक उपदेश की बौछार करता है। उसके पहली ओर एक गन्दे कोने मे ग्रामर स्कूल है, जिसमे दो भद्दे कमरे है। इसमे लकडी की बैंचो पर छात्र-छात्राए बैठे हैं, जबकि अध्यापक के लिए कुर्सी और मेज की व्यवस्था है। यह अध्यापक-अध्यापिका या तो नार्मल स्कूल से लौटा हुआ कोई तरुण है अथवा काम की तलाश मे कोई कुमारी या विधवा। नगरवासियो मे अधिक प्रगतिशीलो ने वृक्ष लगाये हैं, और जहॉ-तहॉ फूलो के पौधे लगाये हैं जहा गृहलक्ष्मियो ने सौन्दर्यनिर्माण करने का शौर्यपूर्ण प्रयत्न किया है। मोटे सूती छपे हुए कपडो मे बच्चे पीछे की ओर खेल रहे हैं अथवा लुहार के काम को आश्चर्य तथा प्रशसा के भाव से निहार रहे हैं। गलमुच्छेवाले लोग गदे वस्त्र पहने हुए जनरल स्टोर अथवा घुडसाल के बरामदे मे, फसलो अथवा मकई के मूल्य के बारे मे या राजनीति के विषय मे रस लेले कर बाते कर रहे है।

अपराध और दुर्गुण कम है, किन्तु शराब का पीना बहुत अधिक और जब सप्ताह भर श्रम करके फार्मों पर श्रम करनेवाले युवक वापस लौटते है तो झगडे भी खूब होते हैं। समय-समय पर चार जुलाई अथवा ग्रेन्ज पिकनिक के समय बडा मेला लगता है, दूर-दूर के नगरनिवासी और कृषक अपने घोडो और गाडियो पर सवार होकर समीपस्थ नदी के तट पर समारोह मनाने के लिए एकत्र होते हैं। एवरेट डिक ब्ल्यू स्प्रिग्स नेब्रास्का मे चार जुलाई के ऐसे ही एक समारोह का वर्णन करते है :

"मछली पकड़ने के लिए एक समिति की नियुक्ति की गयी.. चार तारीख तक इन लोगो ने १ हजार पौण्ड से अधिक बडी मछलियों को करीब की खाडी के मुहाने पर बटोर लिया तीन व्यक्तियो की अन्य समिति ने एक चढोवा बनाया और एक लकडी चीरने की मिल से एक ४० फुट लम्बा टेबल और नृत्य-मच हस्तगत कर लिया। ईंधन जलाने के लिए लकडी मे से लम्बे लट्ठे एकत्रित कर लिये गये। आयोजको ने ४० मील दूर ब्राउन्सविले से २५० पौण्ड वजन का सुअर मगा लिया, जिसमे से मछली तलने के लिए पर्याप्त मात्रा मे साफ की हुई चर्बी उपलब्ध हुई। लोहे की चद्दरो का उपयोग अन्न पीसने के लिए किया गया। उससे अच्छी रोटिया तैयार हो गयीं, यद्यपि

भोजन बहुत अच्छा अथवा अच्छी सामग्री का नहीं कहा जा सकता था। मछली और मकई की रोटी का अत्युत्तम भोजन किया गया। साथ में गेहूं की कुछ रोटियां भी थीं, जिन्हें कुछ लोग भोजन के अन्त में विशिष्ट वस्तु के रूप में लाये थे। तीसरी तारीख के मध्यान्ह से लोगों का आगमन प्रारम्भ हो गया। अगले दिन तक डेढ़ सौ लोग एकत्रित हो गये। कुछ पैदल आये, कुछ बैलगाड़ियों में और कुछ लोग जैसे बन पड़ा, चले आये। महिलाएं सादी पोशाकों में थीं। समूचे दल में केवल एक रेशमी पोशाक थी, कुछ लोग जूतों के बगैर थे। एक ७० फुट ऊंचे बांस के सिरे पर ध्वज लहराया गया; स्वतंत्रता की घोषणा को पढ़ा गया, और विशिष्ट भोजन परोस दिया जाने पर ८० मील के विस्तृत क्षेत्र से लायी गयी बीनें बजायी जाने लगीं और नृत्य प्रारम्भ हो गया।"

इनमें से कुछ नगर समृद्धशाली बन गये। सड़कें और फुटपाथें पक्की बन गयीं। लकड़ी के मकान का स्थान ईंट और पत्थर के मकान ने ले लिया। एक नया होटल, एक आपेरा हाऊस, बैंक और स्टोर्स, एक हाईस्कूल—ये सब समृद्धि और नागरिक गौरव के प्रमाण थे। अन्य ह्रासोन्मुख होकर विनष्ट हो गये अकेले कान्सास में ही दो हजार भौगोलिक नाम नक्शे से लुप्त हो गये। सीमान्त नगर की सफलता अथवा असफलता बहुत कुछ अंशों में रेलमार्ग और राजनीति पर निर्भर थी। मैदानी प्रदेश के सूबे के प्रतिनिधित्व के लिए लड़े जाने वाले द्वंद्व कुख्यात थे।

यह अन्तिम सीमाप्रदेश की भांति पूर्णरूप से प्रजातान्त्रिक था। अधिकांश नये समुदायों ने किसी न किसी रूप से महिलाओं के मतदान की योग्यता को स्वीकार कर लिया था—वायोमिंग ने १८६८ में ही इस दिशा में नेतृत्व किया था। कुछ नये संविधानों में पहल लेने की व्यवस्था की गयी थी। जन-समस्याओं पर जनमत लिया जाता था; अधिकांश अधिकारी, यहां तक कि न्यायाधीश भी लोकप्रिय मतों द्वारा निर्वाचित किये जाते थे। फिर भी प्रजातन्त्र की प्रणाली राजनीतिक सम्बन्धों से अधिक सामाजिक सम्बन्धों में स्पष्ट दिखलाई पड़ती थी। जो भी अपने पड़ोसियों की अपेक्षा अधिक अच्छी पोशाक पहनता, जो दम्भ की बातें करता, जो घरेलू सहायता की उपेक्षा करता—वह सन्देह की दृष्टि से देखा जाता। बैंकर, स्टोरकीपर, वकील, किसान और घुड़साल में काम करनेवाला—सभी आस्तीनें चढ़ाये हुए नगर के चौक में बैठे हैं और चर्च में भी एक ही बैंच पर बैठे हुए हैं। सभी बच्चे सार्वजनिक स्कूलों में

जाते है। अधिक महत्त्वाकाक्षी डिनामिनेशन कालेज अथवा नार्मल स्कूलो अथवा राज्य की युनिवर्सिटियों मे जाते हैं, जिनकी प्रत्येक की पश्चिमी राष्ट्र-मण्डलद्वारा प्रारम्भ मे ही व्यवस्था की गयी थी। इस सीमाप्रदेश के समुदाय मे कई वर्ण के लोग घुल-मिल गये—ब्रिटिश, जर्मन, नार्वेजियन, बोहेमियन और मुट्ठीभर यहूदी, जो देशी अमरीकनो के साथ पडोस के राज्यों से आये थे। इन सबमे वर्ण, भाषा तथा धार्मिक मित्रता के लिए सहिष्णुता पायी गयी। कई अर्थों मे यह अन्तिम सीमाप्रदेश सभी सीमाप्रदेशो से अधिक प्रजातान्त्रिक और अमरीकी था।

सोलहवॉ परिच्छेद

कृषक और उसकी समस्याएँ

कृषिसम्बन्धी क्रांति : औद्योगिक क्राति बहुत अर्से से आधुनिक इतिहास की मूलभूत वास्तविकता मानी गयी है; किन्तु कृषि के क्षेत्र मे होनेवाली क्राति भी उतनी ही महत्वपूर्ण थी। लोहे का निर्माण करनेवालो, रेलमार्ग का निर्माण करनेवालों, इजीनियरों, उद्योगपतियों और वित्तस्वामियों की सफलताओं ने अमरीका की डेढ पीढियो की कल्पना को उत्तेजित किया है, किन्तु कृषको और भूख से युद्ध करनेवालों की सफलता कम आश्चर्यजनक होते हुए भी, कम महत्वपूर्ण नही रही है। निश्चय ही, दोनो क्रातियॉ—औद्योगिक और कृषिसम्बन्धी—एक दूसरे पर निर्भर थी। मशीनो और रेलमार्गो के अभाव में कृषिसम्बन्धी क्राति नही हो सकती थी। बड़े नगरो के गोदामो मे जब तक खाद्यान्न का प्रवाह जारी नही रहता, औद्योगिक क्राति सम्भव नही बन सकती थी। सदियों तक लोगों ने जीवित रहने के लिए पर्याप्त खाद्यान्न उगाने के हेतु सघर्ष किया था। जनसख्या मे वृद्धि भी खाद्यान्न की उपलब्ध मात्रा से ही नियन्त्रित थी। सदियों तक अकाल का पिशाच सर्वज्ञात था, और अकाल ने स्वयं भी लाखों व्यक्तियों के प्राण ले लिये थे; वह पौराणिक एकोलिप्स की तरह चार यमदूतो की भाति था और शायद सबसे अधिक भयाकुल बनानेवाला। उन्नीसवी. शताब्दी ने अधिकाश मानवता को अपर्याप्त भोजन के भय से मुक्त कर दिया था और इस मुक्ति के लिए अमरीकी फार्म ही मुख्यतया उत्तरदायी थे।

१८६० से लेकर १९०० तक की ४० वर्ष की अवधि मे अमरीका मे कृषि योग्य भूमि दुगुनी हो गयी और वह क्षेत्र जिसमे कृषि वास्तव मे की जाती थी, तिगुनी हो गयी। दूसरे शब्दों मे, इस एक पीढी मे ही, हमारे इतिहास के पूर्व के २०० वर्षो के बराबर भूमि पर कृषि की जाने लगी। उत्पादन कृषि योग्य भूमि से एक कदम आगे ही चल रहा था। १८६० के बीस लाख फार्मों ने २०००' लाख बुशेल गेहू का उत्पादन किया, दस

खरब से कुछ कम मकई और लगभग ४० लाख गाठे कपास उत्पादन की। १९०० मे ६० लाख फार्मो मे ६५५० लाख से अधिक बुशेल गेहू, २५ लाख से कुछ अधिक बुशेल मकई और लगभग १०० लाख कपास की गाठो का उत्पादन किया गया। इस अवधि मे ही राष्ट्र की जनसख्या दुगुने से भी अधिक हो गयी—और इस वृद्धि का अधिकाश भाग नगरो को चला गया, किन्तु अमरीकी कृषक ने पर्याप्त खाद्यान्न और कपास उगाया, पर्याप्त मास उपलब्ध किया और पर्याप्त ऊन काटा—न केवल श्रमिको के लिए, बल्कि बचत की वस्तुओ का यूरोपनिवासियो के भोजन और वस्त्र के लिए निर्यात भी किया।

इस असाधारण सफलता को दो मूलभूत तथ्यो द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। प्रथम था कृपि-क्षेत्र का पश्चिम मे विस्तार; द्वितीय, कृषि की कार्यप्रणाली मे मशीनो और वैज्ञानिक तरीको का उपयोग। प्रथम तथ्य से हम कुछ-कुछ अवगत है। मैदानो और पर्वतीय घाटियो का नया पश्चिम अधिकाशतया एक कृषि क्षेत्र था। थोडे से ही आश्चर्यजनक काल मे उसने समूचे देश के कृषि-उत्पादन को नेतृत्व प्रदान किया। गेहू का क्षेत्र राज्यो से पश्चिम की ओर बढ गया, ओहियो नदी के किनारे-किनारे मिसूरी घाटी तक। १८६० मे इलिनोइस, इण्डियाना, विस्कोन्सिन, ओहियो, वर्जीनिया और पेसिलवानिया प्रमुख गेहू उत्पादक राज्य थे। १९०० मे केवल ओहियो ही इन सब प्रमुख राज्यो मे पिछड गया था और एक दशाब्दी पश्चात् वह भी इस सूची से अदृश्य हो चुका था। मकई उत्पादन मे कोई विशेप परिवर्तन नही हुआ था, किन्तु यहाँ भी गति ओहियो से मिस्सिसिपी की ओर थी। कपास की कहानी भी बहुत कुछ ऐसी ही है; शताब्दी के मोड पर टेक्सास सभी राज्यो से बहुत आगे था और लगभग कुल कपास-उत्पादन का अर्धांश मिस्सिसिपी से पश्चिम की ओर उगाया जा रहा था और इन्ही वर्षो मे पशुओ और भेडो का झुण्ड भी मैदानो और पर्वतो के चरागाहो की ओर खिंचता चला गया।

पश्चिम की दिशा मे कृषि के इस अभियान ने पूर्व और सागरतट के कृषकों के लिए निश्चित रूप से कठिनाइयाँ उत्पन्न की थी। पश्चिम की नयी उपजाऊ धरती से वे प्रतिस्पर्धा नही कर सकते थे, ऊपर से वह उच्च करो और खर्चों के भार से दवे हुए थे। परिणामस्वरूप ये प्रदेश ह्रासोन्मुख हो गये जिससे अब तक भी वे पूर्णतया सुधर न सके। वर्जीनिया के अधिकाश भाग मे दलदलवाली घास उगने दी गयी और वह बजर भूमि बन गयी जिसका विवरण एलेन ग्लासगो ने अपने उपन्यास मे किया है। पेसिलवानिया और

न्यूयार्क के बड़े क्षेत्र निर्जन बन गये या छुट्टी मनानेवालों के लिए क्रीड़ा भूमि बन गये। न्यू इंग्लैण्ड की लाखों एकड़ भूमि झाड़ियों और वन के लिए छोड़ दी गई। गृहयुद्ध के अर्ध-शताब्दी पश्चात् इस भाग में कृषि की जानेवाली योग्य भूमि ५० प्रतिशत से कम हो गयी। न्यू इंग्लैण्ड से होकर यात्रा करनेवाले एक यात्री ने लिखा :

"विलियमस्टाउन (मसाचुसेट्स) और ब्रेटलबेरो (वरमान्ट) के बीचोंबीच रास्ते में मैंने सन्ध्याकालीन आकाश की पृष्ठभूमि में एक पहाड़ी की चोटी पर बड़े कैथेड्रल जैसी इमारत देखी। उस ओर पहुंच कर मैंने एक प्राचीन समय का दो मंजिला चर्च देखा, एक बड़ा स्कूल और लगभग १५० फुट चौड़ी सड़कवाला एक गांव देखा। करीब पहुंचने पर मैंने देखा कि चर्च को त्याग दिया गया है, स्कूल नष्ट कर दिया गया है और गांव निर्जन है। वह कृषक जो गांव के उत्तर की ओर के खेतों का मालिक था, चौड़ी सड़क की एक ओर, और दक्षिण की ओर के खेतों का मालिक सड़क की दूसरी ओर रहता था और ये दोनों ही वहां के एकमात्र निवासी थे। दूसरे सब वहां से चले गये थे— औद्योगिक गांवों को, बड़े नगरों को और पश्चिम को, जहाँ पर उद्योग, शिक्षा, धर्म, सुविधा और सन्तोष सभी थे, किन्तु अब केवल परित्यक्त मकान निर्जनता में खड़े थे।"

प्रदेशीय विस्तार मात्र ही कृषि-उत्पादन में तीव्र वृद्धि का कारण नहीं था, जो कृषि की जानेवाली भूमि में वृद्धि अथवा कृषि में लगे लोगों के अनुपात में नहीं थी। इसका स्पष्टीकरण कृषि की बढ़ी हुई कार्यक्षमता को ही दिया जा सकता है। यह एक अजीब तथ्य था कि कृषि का यन्त्रीकरण उद्योग के यन्त्रीकरण की अपेक्षा बहुत पिछड़ा हुआ था। १८०० के श्रमिक और खनिज ऐसे यन्त्रों को उपयोग में ला रहे थे, जिनसे उनके पिता और पितामह अनभिज्ञ थे, किन्तु कृषक भूमि को उसी प्रकार जोत रहा था जैसे कि उसके पुरखों ने एक हजार वर्ष पूर्व जोता था। वह अकेले घोड़े अथवा बैल द्वारा खींचा जानेवाला बेढंगी लकड़ी अथवा लोहे का औजार था। कृषक गेहूं बोता और मकई तथा आलू हाथ से उगाता। वह कुदाली से निराई करता, हंसिये से अन्न काटता, अपने खलिहान के फर्श पर उन्हें पीटता और हाथ से ही उस पर की भूसी अलग करता। आठ या दस एकड़ भूमि के परिवार भर को दस एकड़ भूमि में मेहनत करनी पड़ती, जबकि सहायता के लिए महिलाएँ और बच्चे भी आ जाते।

प्रथम अमरीकी आविष्कार—एली ह्विटनी के कपास में से बिनौला

निकालने के यत्र ने कृषि को यथेष्ट रूप से प्रभावित किया और दक्षिण की समूची अर्थव्यवस्था मे क्राति का काम कर दिया। फिर भी इस यत्र का सम्बन्ध कपास उगाने की अपेक्षा उसको साफ करने की प्रणाली से था। वास्तव मे जोतने, बोने और फूल को तोडने से छोड़कर अपेक्षाकृत रूप से कपास मशीन से होती रही है। अन्य फसले अधिक भाग्यवान थीं; किन्तु उनमे से अधिकाश मे मशीन का लगाया जाना काफी विलम्ब से हुआ। फिर भी प्रयोग बराबर जारी रहे। हल की कहानी विशिष्टता लिये हुए है। हल के लिए प्रथम पेटेन्ट १७९७ मे किया गया था और तब से लगभग १२ हजार प्रकार के हल बनाये जा चुके हैं। प्रारम्भिक समस्या भी ऐसे हल की खोज करने की थी, जो मिट्टी के लोहो से चिपके बिना अथवा जडो या पत्थरो से टकरा कर टूटे बिना मिट्टी को ठीक से काट कर उसे साफ तरीके से उभाड सकता हो। जेफरसन ने प्रयोग किया और उसके डिजाइन को, जो कडी वस्तुओ को हटा देता था, पेरिस की रायल एग्रीकल्चरल सोसाइटी द्वारा पुरस्कृत किया गया। १८३७ मे जान डी रे ने इलिनोइस के घास के मैदान मे अपने लकडी के हलो के सिरे मे इस्पात लगाया, जो कडी धरती को भी तोडने के लिए काफी मजबूत था। शीघ्र ही उसकी वस्तुओं की दूर-दूर से माग बढ गयी। मजबूत ओलिवर हल मे, जो ६० वर्षों मे बाजार मे आया, चिकने इस्पात की आकृति थी जबकि उसका आधार कड़े लोहे का था और लगा कि यह इस मैदान के सभी कृषको की आवश्यकताओं की पूर्ति कर देगा। उसके पश्चात् की सुधारो की कथा प्रशंसनीय है।

तैयार फसल काटने के औजार की कथा इससे भी अधिक महत्व की है। १८०७ का कृषक, एक हॅसिये का प्रयोग करके, दिन भर मे आधी एकड गेहू की फसल ही काट सकने की आशा कर सकता था और वह भी जबकि वह कठिन परिश्रम करता था। तीस वर्ष पश्चात् वह क्रैडल की सहायता से दो एकड काट सकता था, किन्तु ऐसे आदि औजारों को उपयोग मे लाकर वह विस्तृत क्षेत्र मे अन्न नहीं उगा सकता था और न पश्चिम के मैदानो मे आगे की ओर बढ सकता था। १८३० मे दो कृषक ओबेड हसी और सायूरस मैक्कार्मिक एक ऐसे ही यात्रिक औजार के बारे मे प्रयोग कर रहे थे। १८४० तक दोनो अपने नये औजार के प्रयोग द्वारा दिन भर मे ५–६ एकड फसल काट लेने का चमत्कार कर रहे थे। अपने औजार के विक्रय के हेतु हसी बाल्टीमोर चला गया। मेक्कार्मिक ने, जो अधिक दूरदर्शी था, मैदान के

नये नगर चिकागो को प्रस्थान किया। यहाँ १८४७ मे उसने कारखाने की स्थापना की और औजारों का उत्पादन करने लगा। गृहयुद्ध तक मेक्कार्मिक के कारखाने ने ८ लाख औजार बेच दिये थे और एक ऐसा यंत्र तैयार करके जो लोगों को सेना के लिए मुक्त कर देता, उसने संघ की विजय के लिए उतना ही प्रयत्न किया जितना कि कोई सेनापति करता।

हर वर्ष कटाई करने के औजार में कुछ सुधार होता चला गया। अन्त मे इकट्ठा करने और उसे बोझों में बाधने का कमरतोड़ काम एक घूमते हुए मच के कारण जाता रहा। इस मंच पर कटी हुई फसल लोगो के हाथो मे रख दी जाती थी जो एक फुटबोर्ड पर खडे हुए होते थे और वे इसे बाध देते थे। फिर १८७२ में बाधनेवाला एक स्वचालित तार आया और कुछ वर्ष पश्चात् आया स्पेलरी ट्वीन बाइन्डर। इस बीच अन्न पीटनेवाला औजार भी बना लिया गया था। और १८६० और १८७० के वर्षो में ये विशाल दैत्य जिनमे से हर एक मे पीटनेवाला दल लगा था, मिडल बोर्डर में एक फार्म से दूसरे फार्म मे जाने लगा।

आइओवा के एक फार्म का वर्णन हर्बर्ट क्विक ने इस प्रकार किया है :

"फसलो की पिटाई के समय सभी नियमो को स्थगित कर दिया जाता है। जिस दिन सुबह मैकान्कीज यह कार्य आरम्भ करनेवाला था, घर के सभी लोग ३ बजे सुबह उठकर तैयार हो गये। ये सब लोग इस मशीन के आगमन से अत्यधिक उत्साहित थे। इस मशीन ने पडोसी के यहा बडी रात तक कार्य किया था और सुबह होते होते उसे खोल दिया गया था। यह बड़ी लाल मशीन छत्ते के आकार की कटी फसल के ढेर के बीच खड़ी थी। लकड़ी के पाच लम्बे जओं से १० घोडे जुते हुए खड़े थे। ड्रायवर अपने हाथ मे एक लम्बी चाबुक लिए बीच के पाटिये पर खडा था। फसल के ढेर के ऊपर अनाज के गट्ठो को मशीन मे डालनेवाले लोग चढ गये। उनके हाथ में बेलचे थे, जिनकी मुठिया उनके सख्त हाथों की पकड़ के कारण चिकनी हो गयी थी। उन्होंने बेलचे की तीन नोको को फसल के ऊपरी तह में घुसा दिया और—मशीन के भर्राटे की आवाज हवा मे गूँजने लगी और जैसे-जैसे सिलेण्डर ने गति पकडी, यकायक भर्राटे की आवाज के स्थान पर समान रूप से ध्वनि निकलने लगी जो प्रेरीज के निस्तब्ध वातावरण मे ४ वर्गमील तक सुनाई देती थी। मशीन मे फसल डालनेवाले व्यक्ति ने फसल के गट्ठरो को उठानेवालो की ओर देखा। गट्ठर मशीन मे डाल दिये। फ्रेंक ने अपने गॅडासे से गट्ठरो की काटछाट की

और फिर उसने मशीन के खुले मुँह से दो पूनियों को हटा कर किनारे से बाहर निकाला। मशीन का यह सचालन जारी रहा।"

फिर ८० के वर्षो मे फसल को काटने और फटकनेवाला क्रातिकारी यत्र आया। एक ऐसा भी यंत्र बना जो कटाई, फटकने और अन्न की सफाई करने, बोरो मे भर देने के मिले-जुले कार्य को क्रम से करता था, यह २० अथवा ४० घोड़ों द्वारा खीचा जाता था—यद्यपि बाद मे भाप या गैसोलिन के ट्रेक्टर से खीचा जाने लगा—और एक दिन मे ७० या ८० एकड़ क्षेत्र की कटाई कर सकता था।

कृषि के प्रत्येक विभाग मे, कपास निकालने के स्मरणीय अपवाद को छोड़कर, कृषक की सहायता के लिए मशीने काम मे आने लगीं। यान्त्रिक अन्न बोनेवाले, अन्न छाँटनेवाले, कूटनेवाले और साफ करने वाले, डी लावाल क्रीम मिल जाने वाले, खाद् फैलाने वाले, आलू बोने वाले, घास सुखाने वाले, अडा सेने वाले, खाद् बनाने वाले आदि ऐसे सैकड़ो अन्य अनुसधानो ने 'कुदाली वाले व्यक्ति' के श्रम को बहुत कुछ हल्का कर दिया और उसकी कार्यक्षमता मे वृद्धि कर दी। मिल-जुल कर चार व्यक्ति उतना काम करने लगे जितना पहले तीन सौ व्यक्ति मिल कर करते थे, और वह भी अच्छे तरीके से। अन्न कूटने वाले यंत्र ने ८ व्यक्तियो के स्थान पर एक से ही काम चलाना शुरू किया और अन्न का छिलका निकालने वाले यत्र ने पचास एक टन घास को काटने का समय ४।५ से भी कम हो गया। और बीसवीं सदी मे कृषि मे भाप गैसोलियन और बिजली के प्रयोग ने लाखो एकड घास उगाये जाने वाले मैदान को मुक्त कर दिया और मानव श्रम को पहले की अपेक्षा भी कम कर दिया। कृषिसम्बन्धी कार्यक्षमता मे भी वृद्धि हो गयी।

मध्य पश्चिम और सुदूर पूर्व ने ही अधिकाश नये कटाई-पिटाई के यत्रो और हल ट्रैक्टरों का उतनी शीघ्रता से उपयोग किया जितनी शीघ्रता से उनका निर्माण हुआ। पूर्व मे, खेत इतने अधिक छोटे और कृषि इतनी विविध थी कि कीमती मशीनो का वहा उपयोग न्यायोचित नहीं माना जा सकता था। दक्षिण मे कपास और तम्बाकू की खेती मे यत्र लगाने से कोई लाभ न था, श्रम सस्ता था। कृषि-यंत्रो की लागत जो १८६० मे २॥ खरब डालर थी, बढ़कर १९२० मे ३५ खरब डालर तक जा पहुँची, किन्तु यह वृद्धि अधिकाशतया मिस्सिसिपी के पश्चिम मे हुई थी। अकेले आइओवा के किसानो ने ही १९२० मे समूचे न्यू इग्लैंड और मिडल एटलाटिक राज्यो की

मिली-जुली पूंजी से भी अधिक पूंजी यंत्रों में लगा रखी थी। लेकिन इलीनाय के फार्म में लगे यंत्रों का औसत मूल्य १५०० डालर था जबकि, कपास की पट्टी के फार्मों में उसका मूल्य २९५ डालर था।

कृषि के यंत्रीकरण के कारण कस्बों के लिए नगरनिवासियों की बढ़ती हुई संख्या को भोजन उपलब्ध कराना सम्भव बन सका और अतिरिक्त खाद्य के निर्यात से औद्योगिक और रेलमार्ग के विस्तार के लिए धन लगाना भी हो सका। कृषकों के लिए भी यह पूर्णतया वरदान सिद्ध नहीं हुआ। उनमें से अनेकों को ऐसे भारी खर्च करने पड़े जो उनकी सामर्थ्य के बाहर थे और लगी हुई पूंजी का पूर्ण लाभ पाने के लिए उन्हें विस्तार करने को मजबूर होना पड़ा। इससे बड़े कृषकों को छोटे कृषकों की प्रतियोगिता में निश्चित लाभ हुआ और फलस्वरूप अविलम्ब 'बोनान्जा' कृषि और व्यापार का विकास हुआ। १८५० के वर्षों के आत्मनिर्भर फार्म ने गेहूं, मक्का, जई और साग, सब्जी, मुर्गीघर और सुअरबाड़े तथा मैदान में चरनेवाली ८-१० गायों के स्थान पर बीसवीं शताब्दी के बड़े गेहूं के खेत अथवा कपास की फसल को स्थान दे दिया, भोजन की मद के लिए भी उसे खाद्य-स्टोर पर निर्भर रहना पड़ा।

यंत्र से शायद ही कम महत्त्व था विज्ञान का। आरम्भ से ही अमरीकी कृषि गहरी होने की अपेक्षा विस्तृत थी, क्योंकि पुरानी भूमि को सुरक्षित रखने की अपेक्षा नयी भूमि पर अधिकार कर लेना अधिक सरल कार्य था। फिर भी अटलांटिकवाली दक्षिण की भूमि का शीघ्रता से ह्रास होते देख भी सोचनेवाले डर गये। वाशिंगटन और जेफरसन उन प्रमुख दक्षिणवासियों में से थे, जिन्होंने इस संकट का सामना करने के लिए नये पौधे रोपने शुरू किये। वे फसलों की अदला-बदली और अपने पशुओं की संख्या में सुधार करने लगे। जेफरसन ने लिखा : "किसी भी देश की सबसे अधिक सेवा इसकी संस्कृति में एक उपयोगी पौधा रोपकर की जा सकती है।" किन्तु ये प्रारम्भिक सुधार व्यर्थ सिद्ध हुए; क्योंकि विस्तृत अप्पेलेशियन के आर-पार की भूमि खुल जाने और जंगल साफ करने की [illegible] के अन्वेषण के कारण किसानों के लिए उपजाऊ भूमि की ओर बढ़ जाना पुरानी भूमि को यत्न करके उपजाऊ बनाए रखने की अपेक्षा लाभदायक रहा। इस प्रकार नयी भूमि पर कृषि करने की क्रिया, जो शायद सीमान्त अर्थव्यवस्था का निश्चित अंग थी, बारम्बार दुहराई जानेवाली थी।

सघीय सरकार ने पहली बार कृषि के लिए खर्च की व्यवस्था १८३९ मे की, किन्तु इस दिशा मे सरकार की वास्तविक रुचि १८६२ मे मोरिल लैंड ग्रान्ट कालेज ऐक्ट (भूमि मजूरी कालेज कानून) के स्वीकार करने से प्रारम्भ हुई। इसमे इस बात की व्यवस्था थी कि कृषि और औद्योगिक कालेजो के लिए सार्वजनिक भूमि मे से जगह दी जा सकती थी। वाशिगटन भेजे गये प्रत्येक काग्रेसमैन के लिए राज्य को ३० हजार एकड भूमि का अधिकार प्राप्त था। इस कानून के अन्तर्गत एक राज्य के पश्चात् दूसरे राज्य ने कृषि कालेज की स्वतत्र रूप से अथवा राज्य विश्वविद्यालय से सम्बद्ध करके स्थापना की और अन्त मे ये वैज्ञानिक कृषि-अनुसधान की दिशा मे अग्रसर हुए। इतना ही महत्वपूर्ण था १८९७ का हैच-कानून, जिसने सघ भर मे कृषि सम्बन्धी प्रयोगस्थलो के निर्माण हेतु उदार कोष की व्यवस्था की। इसी समय कृषि विभाग की सीधी अनुसधानात्मक कार्यवाहियो के लिए अलग की गयी रकम लाखो डालरो तक जा पहुँची। १९३० तक सात या आठ हजार वैज्ञानिक इन विभिन्न सरकारी शाखाओ मे अद्भुत वैभिन्य लिये हुए अनुसधान-योजनाओं पर कार्य कर रहे थे। इनके अनुसधान-कार्यो और प्रयोगशालाओं से अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान मिल रहा था। 'भूख से युद्ध करनेवाले' इन लोगो मे से एक थे मार्क आल्फ्रेड कार्लेटन, जो कुवान्का और खारकोव के सर्वोत्तम किस्म के गेहूँ को पश्चिमी अमरीका मे लाये। कासास मे खेती तथा अध्यापन करते हुए कार्लेटन ने देखा कि किस प्रकार सूखे और रोग ने मैदानो मे कृषको द्वारा उगाये जा सकनेवाली गेहूँ की फसल को छोडकर शेष सभी को प्रतिवर्ष विनष्ट कर दिया था। किन्तु उन्होने यह भी देखा कि किस प्रकार रूसी मेनाइट, जिन्हे साटा का रेलमार्ग इस मैदान मे बसाने ले आया था, गेहू के मामले मे भाग्यशाली निकले। उन्होने पाया कि रूसियो ने गेहूँ की फसल अपने साथ इतनी दूर से लाये गेहूँ के बीज से उगायी थी। आखिर सभी गेहूँ तो आयात किया हुआ ही था। कार्लेटन को विश्वास हो गया कि यह कडा और सूखा तथा रोग प्रतिशोधक अन्य यूक्रेन के किसी भाग या यूरेशिया के मैदानो मे उगता होगा।

१८९८ मे कृषि-विभाग से आशीर्वाद पा उन्होने अपने सुनहरे गतव्य स्थान के लिए प्रस्थान किया। अन्त मे तुरगाई मैदान मे, यूराल नदी के ठीक सामने—जहाँ का जलवायु और नक्शे द्वारा किया गया वर्णन पश्चिमी कान्सास से बिल्कुल मिलता-जुलता था—उन्हे अपने लक्ष्य की

प्राप्ति हुई : वह था कुलान्का का गेहूँ। मैदानों मे प्रतिएकड़ पीछे उसका अधिक बुशेल उत्पन्न होता था–फिफे और ब्ल्यू स्टेम की अपेक्षा–और वह आश्चर्यजनक रूप से कीटाणु आक्रमण से मुक्त था। किन्तु उस प्रदेश मे, जो उत्तर मिन्नेसोटा से सेरके चतैन तक फैला था, कुन्नाका ने अपनी सब से बडी विजय प्राप्त की। आश्चर्य की बात है कि वह दक्षिणी मैदानो मे नही उगा। अतएव एक बार पुनः कार्लेटन ने रूस की यात्रा की और यूक्रेन मे खारकोव के निकट, जहाँ ४० वर्ष के अनन्तर जर्मनो और रूसियो को एक दूसरे की हजारों की सख्या मे हत्या करनी थी, उन्होने खारकोव गेहूँ खोज निकाला। १९१४ तक देश के शरदकालीन गेहूँ का आधा कुन्नान्का और खारकोव किस्मो का था।

भूख से युद्ध करनेवाले अन्य लोगो ने कम महत्वपूर्ण योगदान नही किये। मेरियन डारसेट ने भयानक हैजे पर विजय प्राप्त की और जार्ज मोह्लर ने रहस्यमय खुरो और मुँह की बीमारी को जीत लिया। इस रोग ने पशुओं का भयकर रूप से नाश किया था। उत्तरी अफ्रीका से जे. एच. वाटकिन्स काफिर भुट्टा ले आये थे और तुर्कीस्तान से नीएल्स हैन्सेन ने पीले फूलो वाली घास का आयात किया था।

अपनी कैलिफोर्निया की प्रयोगशालाओ मे लूथर बारबंक ने दर्जनो नये फल और तरकारिया उत्पन्न की। डेविड आर. कोकर ने अपने दक्षिण करोलिना अनुसधान फार्म पर यह प्रमाणित कर दिया कि लम्बे रेशेवाली कपास ऊपरी प्रदेश मे उगायी जा सकती है। विस्कोन्सिन युनिवर्सिटी मे स्टीफेन बैवकाक ने दूध मे मक्खन और चर्बी का अंश जानने के लिए दूध-परीक्षण का आविष्कार किया। नीग्रो वैज्ञानिक जार्ज वाशिग्टन कारबेर ने टस्केगी इस्टीटयूट में कार्य करते हुए शकरकन्द और सोयाबीन जैसे सर्वसात उत्पादनो के सैकडो नये उपयोग ढूढ निकाले। सीमन नाप ने चावल उद्योग का पूर्व प्रदेशों से नयी किस्मो का आयात कर युद्धोतर ह्रास से रक्षण किया। उन्होने प्रदर्शन-फार्मों की प्रणाली का भी उद्‌घाटन किया, जिससे समूचे दक्षिण में सुधरे हुए कृषि के तरीको के लिए मार्ग खुल गया।

फार्म के बुरे दिन : प्रत्येक वर्ष अमरीकी कृषक भूमि को अधिक कुशलता के साथ जोतता और अधिक फसले उगाता। उद्योगी और बुद्धिमान होने के कारण तथा उपजाऊ भूमि, अच्छे यत्रो और तैयार बाजारो का वरदान पाकर उसे समृद्ध और सुखी होना चाहिए था; किन्तु उसका जीवन कठिन था

और कठिनतर होता गया। समूचे इतिहास मे कृषि की दृष्टि से सबसे अधिक आश्चर्यजनक विस्तार की शताब्दी के अन्त मे कृषक, 'ईश्वर के चुने हुए लोग' होने की अपेक्षा जैसा कि जेफरसन ने कहा था—'एक प्रमुख आर्थिक समस्या बन गये थे।' इस विरोधाभास का कारण क्या है?

फार्म की समस्या उलझनपूर्ण है। वह दक्षिणी प्लान्टर, अन्न उपजानेवाले, मकई उगानेवाले और सुअर पालनेवाले कृषक, चरवाहे, दूधवाले और अंगूर की बेले लगानेवाले, सबके लिए विभिन्न रूपो मे प्रस्तुत होती है। एक समय वह रेलमार्ग की समस्या के रूप मे उपस्थित हुई, दूसरे अवसर पर धन की समस्या के रूप मे और एक अन्य अवसर पर भूमि-नीति के प्रश्न के रूप मे। उससे क्षेत्रीय स्वार्थ, दलगत कार्यक्रम और अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध भी जुडे हुए थे। फिर भी फार्म-समस्या के प्रत्येक अंग के मूल रूप मे कुछ निश्चित अपरिवर्तनीय बाते थी। उनमे से मुख्य थी मिट्टी का ह्रास, वर्षा की अनिश्चितता, रेशेवाली फसलो का आवश्यकता से अधिक उत्पादन, आत्मनिर्भरता मे कमी और पर्याप्त कानूनी संरक्षण और सहायता का अभाव।

दक्षिण की मिट्टी का बहुत समय से तम्बाकू तथा कपास की खेती और फार्म-श्रम के उपयोग द्वारा ह्रास किया जाता रहा। उस क्षेत्र के पुराने भागों की लाखो एकड भूमि मे फिर से झाडिया उगने लगी, जबकि नालियो द्वारा जो रोकी नही गयी थीं, प्रति वर्ष लाखो टन उपजाऊ मिट्टी बहा ली जायी जाती थी। दक्षिणी धरती के लगातार ह्रास होते जाने का अनुमान इसी तथ्य से लग जाता है कि इस देश मे बिक्री की गयी खाद का २० प्रतिशत उपयोग दक्षिण मे ही होता है और दक्षिण करोलिना के कृषकों का खाद पर किया गया खर्च उनके कपास के मूल्य का एक चौथाई होता है। पश्चिम मे भी कटाव और हवा के तूफानो ने भूमि को बंजर बना दिया। हाई प्लेन्स का अधिकाश भाग खेती के योग्य न था और जिस प्रकार की चराई का वहॉ प्रचलन था, वह भी नही हो सकती थी। जहॉ चराई अधिक हो गयी थी, धूल का क्षेत्र वहॉ भी बढ गया था।

बार बार आनेवाले सूखो ने भी मैदान के किसानो का सर्वनाश कर दिया, १८५९-१८६० तक १६ महीनो-मे एक भी वर्षा की झडी से कान्सास और नेब्रास्का के किसानो को राहत न मिली। दुर्भाग्यग्रस्त साहसी अन्वेपक जो ऊॅची ऊॅची आशाऍ लेकर वहॉ आये थे, उनका उद्धार पूर्व आर्थिक सहायता से किया गया। यह प्राकृतिक कोप यद्यपि इतने तीव्र रूप मे नही, किन्तु मैदानो मे

आम तौर पर पाया जाता था और कई बार कई वर्षों तक बना रहता।

टिड्डों के आक्रमण और पौधों के रोग भी परेशानी पैदा करने वाले थे। कीडों मे बाल वीविल निःसन्देह सबसे बुरा था। यह रोग १८९२ में मेक्सिको से रियो ग्राडे तक फैल गया, और उसके पश्चात् प्रति वर्ष ५० मील की गति से बढता गया जब तक कि वह समूचे कपास-ससार मे न फैल गया। अलाबामा के उद्यमशील कृषकों को फसलों मे परिवर्तन लाने के लिए इस रोग ने जो बाध्य किया उसकी सफलता पर एक स्मारक खडा किया गया; किन्तु प्रकोप के बुरे वर्षों में उसने विस्तृत क्षेत्रो मे कपास उत्पादन ५० प्रतिशत से कम कर दिया। वीविल को नष्ट करने के सभी प्रयत्न व्यर्थ गये। केवल समय से पहले फसल बोकर और भारी मात्रा मे विष के प्रयोग द्वारा ही कपास उगाने वाले कृषक उसे आगे बढने से रोक सकते हैं।

मैदानों में कीटाणुओ और टिड्डों के असख्य दल थे, किन्तु सबसे अधिक भयानक निस्सन्देह ग्रासहापर थे। १९०४ में सर्वप्रथम मैदानों के किसानों ने ग्रासहापर प्लेग का पहला अनुभव किया। यह एक ऐसा अनुभव था, जो बार-बार दुहराया जाता था। स्टुअर्ट हेनरी ने वर्णन किया है कि किस प्रकार राकी पर्वतों से मिसूरी नदी के पार तक इन कीटाणुओं ने प्रत्येक हरी चीज के टुकड़े को निगल लिया था। मुझे याद है कि एक दिन मध्यान्ह मे भोजन के लिए घर लौटते समय मैंने पीछे मुड़ने पर आश्चर्यचकित रूप से घर को उन टिड्डों से घिरा हुआ देखा, जो राकी पर्वत टिड्डों के नाम से जाने गये थे। कई टिड्डे घर मे प्रवेश कर पर्दों को भी काट चुके थे। उनके बादल के बादल समूचे प्रदेश मे सभी स्थानो पर बिना रुकावट के शीघ्रता से छा गये। लोगों ने शीघ्रतापूर्वक उनको मारना प्रारम्भ किया ताकि बगीचो का रक्षण किया जा सके, किन्तु शीघ्र ही यह हास्यास्पद बात लगने लगी। घोडो द्वारा खीची जानेवाली विशेष रूप से अधिकृत मशीनों ने खेतों मे हापर-कीटाणुओ को कुचल कर उन्हें जला देने का प्रयत्न किया; किन्तु यह भी असफल सिद्ध हुआ। एक सप्ताह की अवधि मे ही अन्न के खेत, बगीचे, पौधे, अंगूर लताए, जडो तक अथवा तने तक खा डाले गये थे। कुछ भी नहीं किया जा सका। लोग बैठे बैठे सर्वनाश को देखते रह जाते। चिन्च बग (विशेष प्रकार का खटमल), कार्न बोटर (अन्न मे छेद करनेवाला कीटाणु) और अलफाल्फा वीविल (कपास —कीटाणु) भी लगभग उतने ही नुकसानदेह थे।

अमरीकी कृषक, संसार के बाजारो में अपने माल की बिक्री कर रहा था—

रूस, अर्जेण्टाइना, कनाडा और आस्ट्रेलिया के किसानो की प्रतिस्पर्धा मे—और खरीद वह एक रक्षित बाजार में कर रहा था। गेहूँ, कपास या मास की कीमतों का निर्णय लिवरपुल मे होता था। उसके द्वारा हारवेस्टर (कटाई यत्र) उर्वरक, कॅटीले तारो, जूतो और वस्त्रो, लकड़ी और फर्नीचर के लिए दिये गये मूल्य का निर्णय तटकर सरक्षण के पीछे कार्यरत ट्रस्टो द्वारा किया जाता था। उसका खर्च भारी रूप मे बढ रहा था—उस वस्तु का खर्च जिसका वह फार्म पर उपयोग करता था, बोझा ढोने मे खर्च, कर्ज लिये जानेवाले धन का व्याज, सरकार का ऋण: नयी भूमि और मशीनो के कारण वह प्रति वर्ष अधिक उत्पादन कर पाता था, किन्तु उसकी आय पर्याप्त रूप से नहीं बढ़ पा रही थी। कृषि के अधिकतम विस्तार के वर्षों १८९०-१९०० मे, अमरीकी फार्म उत्पादनो के मूल्य मे केवल ५ खरब डालरो की ही वृद्धि हुई, जब कि इसी अवधि मे निर्मित वस्तुओ की कीमत ६० खरब बढ़ गयी। अधिकाश फार्म उत्पादनों का मूल्य अनिश्चित रूप से घटने लगा। १८७० के समूचे वर्ष मे एक बुशेल गेहूं के पीछे एक डालर मिल जाता था, किन्तु १८९५ मे उसकी कीमत घट कर ५० सेण्ट ही रह गयी। १८७३ मे प्रति पौण्ड कपास की कीमत सत्रह सेण्ट थी, २० वर्ष पश्चात वह ९ सेण्ट ही रह गयी और उसके बाद ६ सेण्ट तक घट गयी। बहुत कुछ अंशो मे मकई, जई, तम्बाकू और अन्य फार्म-उत्पादनों के लिए भी यही कहानी कही जा सकती थी। शताब्दी के प्रारम्भ मे दस प्रमुख फसलो की औसत एकड़ पीछे कीमत चौदह डालर थी, जब कि १८९० के प्रारम्भ मे वह नौ डालर तक घट गयी।

शायद सभी आर्थिक बाधाओ मे से सर्वाधिक गम्भीर बाधा, जिसके अन्तर्गत किसान श्रम करता था, धन का बढ़ता हुआ खर्च था। जब वह ऋण लेने के लिए स्थानीय बैंकर या गिरवी रखनेवाले एजेण्ट के पास जाता तो वह पाता कि अपने कर्ज पर उससे ८ से लेकर २० प्रतिशत तक व्याज देने की आशा की जाती है। गिरते हुए मूल्यों के साथ-साथ यह परिस्थिति उसको और भी नुकसान पहुचानेवाली बन गयी। यदि हम फार्म-उत्पादनो के खर्च के रूप मे न लेकर डालर खर्च के रूप सोचें, तब हम इसे अधिक सरलता से समझ सकेगे। १८७० मे एक बुशेल गेहूँ, दो बुशेल मकई और १० पौण्ड कपास से किसान एक डालर खरीद सकता था। १८९० तक एक डालर पाने के लिए उसे दो बुशेल गेहूँ, चार बुशेल मकई और पन्द्रह बुशेल कपास देनी पडती थी। १८७० मे एक हजार डालर का ऋण लेनेवाला किसान

उसे एक हजार बुशेल देकर ही चुका पा सकता था, यदि १८९० तक वह रेहन रहने देता तो उसे उससे छुटकारा पाने के लिए २ हजार बुशेल गेहू देने पडते।

इन प्रतिकूल परिस्थितियो मे यह आश्चर्य की बात नही कि अमरीकी किसान का रेहन सम्बन्धी ऋण शीघ्रता से बढ गया। १८९० तक इलिनोइस मे ९० हजार से ऊपर, नेब्रास्का मे एक लाख और कान्सास मे इससे भी अधिक किसानो की जायदाद रेहन रखी हुई थी। इनमे से अधिकाश के रेहन पूर्व में रखे गये थे। अकेले न्यू हेमिस्फियर के निवासियो के पास ही पश्चिम की ७५० लाख डालर की जायदाद गिरवी रखी हुई थी। काश्त की संख्या मे भी वृद्धि हो रही थी। समूचे देश के लिए उसका प्रतिशत २८ था, किन्तु दक्षिण और पश्चिम मे यह अनुपात पर्याप्त रूप से अधिक था।

फार्म-समस्या के ये सब प्रमुख तत्व थे। अपने हित को सुरक्षित रखने के लिए सरकारी साधन के उपयोग की विफलता उसकी विपत्तियो का कारण थी। यद्यपि राष्ट्र की जनसख्या का आधा भाग कृषकवर्ग था, फिर भी उन्होने शायद ही कभी अपना कोई प्रतिनिधि कॉंग्रेस अथवा राज्य विधान-सभा मे भेजा हो। और जब १८९० के प्रारम्भ मे सिनेटर पेफर और कॉंग्रसमेन सिम्पसन जैसे किसान वाशिंग्टन पहुँचे भी तो उनको विचित्र प्राणी समझा गया। वे व्यक्ति, जो राष्ट्रीय कानून बनाते थे, उद्योगपतियो, बैंकरो और रेलमार्ग के व्यवसायिको के हितों की रक्षा करने के लिए अधिक तत्पर थे अपेक्षा किसानो के हितो के और उनका यह उत्साह विधानों मे भी स्पष्ट लक्षित होता था। तटकर-सरक्षणो ने व्यवसाय को भले ही सहायता प्रदान की हो, किन्तु उसके कारण किसान को प्रायः प्रत्येक वस्तु के लिए अधिक मूल्य देना पड रहा था। बैंकिंग और मुद्रा सम्बन्धी विधान-'स्थिर नियम' बन जाने से बैंकरो और पूजी लगानेवालो के लिए वरदान, किन्तु किसानो के लिए भयकर बोझ सिद्ध हुए। ट्रस्टो और रेलमार्गों को नियत्रण मे रखने के ध्येय से बनाये गये कानून इस प्रकार लिखे गये अथवा समझाये गये कि उन्होंने निहित स्वार्थों को बहुत कम असुविधा पहुँचायी और जब कृषिप्रधान राज्यो ने कड़े कानून स्वीकार करने के प्रयत्न किये तो न्यायालयो ने उन्हे रद्द कर दिया। किसान को सहायता प्रदान करने के लिए प्रत्यक्ष रूप से बनाये जानेवाले कानून भी उदाहरणार्थ 'होमस्टेड ऐक्ट,' निराशाजनक सिद्ध हुए। १८९० तक सीधे रेलमार्गो अथवा सट्टेबाजो के द्वारा होमस्टेड ऐक्ट के कारण प्राप्त अधिक भूमि भी बेची जा चुकी थी।

अपोमैटौक्स से तीस वर्ष पश्चात तक अमरीकी किसान ने समूचे महाद्वीप पर अपना विस्तार कर रखा था। नवीनतम यत्रो और विज्ञान की सहायता से उसने अपना उत्पादन उस विन्दु तक फैला रखा था कि जहाँ वह पश्चिमी ससार को भोजन देने के लिए तैयार था और वह यान्त्रिक कृषि के मार्ग पर आगे वढ रहा था।

कृषक संगठित हुए : व्यापार, वैकिंग, यहाँ तक कि श्रम भी सगठित हो रहा था, कृषक को भी काफी पहले ही उनका अनुसरण कर लेना चाहिए था। फिर भी इससे दूसरा कोई कठिन कार्य न था। कृषि की इकाई मे लाखो इकाइयो का समावेश था। प्रत्येक पृथक रूप से कार्य कर रही थी, प्रत्येक एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा कर रही थी। कृषक का स्वभावतः एक अलग व्यक्तित्व था, इसलिए वह वाहरी नियत्रण को पसन्द नही करता था। न तो मिट्टी और न मौसम ही प्रभावशाली ढंग से नियन्त्रित किया जा सकता था। अन्त मे, कार्य-उत्पादन का नियत्रण भी सम्भव नही वन सका जव तक कि सघीय सरकार ने उसे अपने हाथों मे नही ले लिया।

इस वीच यदि किसान रेलमार्गों, ट्रस्टो, गिरवी रखनेवाली कम्पनियो और दलालो से अपना छुटकारा पाना चाहता तो उसे स्वय कदम उठाने की आवश्यकता थी।

प्रथम राष्ट्रव्यापी कृषक सगठन था ग्रेन्ज अथवा 'पैटर्न्स आफ हसवैन्ड्री' (कृषि अभिभावक सस्था)। १८६६ मे एक सरकारी क्लर्क ओलिवर केली ने युद्धध्वस्त दक्षिण से होकर एक लम्बी यात्रा की और उसने जो कुछ देखा उससे वह यह सोचने को वाध्य हुआ कि निर्धनता, पिछडापन और कृषक का पृथकतावाद मिली जुली कार्यवाही से ही दूर किया जा सकता है। कुछ मित्रो की सहायता से उसने पेटर्न्स आफ हसवैन्ड्री—कृपि-अभिभावक—नामक एक सामाजिक और शैक्षणिक दल का सगठन किया, जिसका ध्येय था "कृषक मर्द-औरतो मे उच्चतम और श्रेष्ठतम गुणो का विकास करना, अपने घरो की सुविधाओं और आकर्षणो को वढाना और अपने उद्यम के प्रति अपनी लगन को दृढ वनाना—अपने कायो को आत्मनिर्भर वनाना।" न्यूयार्क और पेसिलवानिया मे कुछ ग्रैन्जों की स्थानीय शाखाएँ स्थापित की गयीं, किन्तु जव तक यह सस्था पूर्व मे रही, वहुत कम प्रगति कर पायी। १८६९ मे उसका प्रधान कार्यालय मिडिल वेस्ट मे स्थानान्तरित कर दिया गया और १८७० के

प्रारम्भिक दिनों में संस्था दावाग्नि की तरह फैल गयी। १८७३ तक लगभग प्रत्येक राज्य में ग्रैन्जों की स्थापना हो गयी थी और उनकी सदस्यता '७॥ लाख तक पहुँच गयी थी। उसकी सबसे अधिक शक्ति मिडिल वेस्ट में थी, किन्तु दक्षिण में और प्रशान्त तट पर भी उसका विकास हो रहा था।

केली का यह सुझाव था कि ग्रैन्ज को मुख्यतया सामाजिक संगठन ही माना जाय। इसमें महिलाओं तथा पुरुषों, दोनों को प्रवेश प्राप्त हो सकता था। इसके लिए एक व्यापक नियम यह बनाया गया जो मेसोनिक की नकल सी थी। शिक्षा, देशभक्तिपूर्ण समारोहों और उत्सवों के लिए प्रति मास सभा करने की व्यवस्था थी। इसका प्रमुख ध्येय था कृषक के सामाजिक पृथकतावाद को भंग करके, उसके जीवन में रंगीनी और मनोरंजन का प्रवेश कराना, परस्पर विचार-विनिमय का अवसर प्रदान करना और पारस्परिक हितों को सुदृढ़ करना। इन सबमें ग्रेन्ज को महान सफलता प्राप्त हुई। ग्रेन्ज पत्रों की व्यापक बिक्री होने लगी, ग्रेन्ज पुस्तकालयों ने कृषि सम्बन्धी साहित्य का वितरण किया, ग्रेन्ज लेक्चररों ने देहाती स्कूलों में भाषण किये और ग्रेन्ज पिकनिक एक सुस्थापित संस्था बन गयी। हैमलिन गार्लेण्ड ऐसी पिकनिकों के बारे में लिखते हैं :—

"वह दृश्य हमें भव्य लगता था, उत्साहजनक लगता था—जब पगडंडी से घूमकर गाड़ियों की लम्बी कतारें चौराहे पर एक दूसरे में मिल जातीं। जब तक कि प्रदेश के उत्तरी कोने से सभी ग्रेन्ज एक पंक्ति में मिलकर पिकनिक-स्थल की ओर अग्रसर न होते, जहाँ पर वक्तागण हमारा धैर्य, प्रतिष्ठा और उच्च विचार के साथ इन्तजार करते होते। इससे अधिक रंगीन, अधिक उल्लासपूर्ण, अधिक सहायक वस्तु अमरीकी ग्रामीण जीवन में कभी भी उत्पन्न नहीं हुई।"

किन्तु यह निश्चित था कि जब कृषक एकत्रित होते, भले ही आमोद-प्रमोद के लिए ही, तब वे व्यवसाय और राजनीति की बातें करते। बातचीत के बाद कदम उठाने की बारी आयी और शीघ्र ही कई राज्य के ग्रेन्जों ने सहकारी विक्रय संगठनों, स्टोरों, ऋण एजेन्सियों और यहाँ तक कि फैक्टरियों की स्थापना की। ये हमेशा ठीक-ठीक संचालित नहीं हुईं और प्रारम्भ से ही उन्हें सुस्थापित व्यवसाय के भयानक विरोध का सामना करना पड़ा। फिर भी उन्होंने अपने सदस्यों का काफी धन बचाया। आइओवा ग्रेन्ज ने, उदाहरणार्थ ५० लाख बुशेल अन्न चिकागो को जहाज द्वारा भेजा जिसमें १० से ४० प्रतिशत तक बचत हुई। सहकारी क्रय द्वारा उसने प्रत्येक कटाई के खरीदे गये यंत्र पर

अपने सदस्यो को १०० डालरों की बचत की। इस प्रकार की प्रतिस्पर्धा का सामना करने और ग्रेन्जो की आवश्यकताओ की सीधी पूर्ति करने के लिए, मान्ट-गोमरी वार्ड मे मेल हाउस की स्थापना हुई।

हॉ, ग्रेन्जर राजनीति मे भी प्रविष्ट हुए, इस बात की परवाह न करते हुए कि उनके विधान मे राजनीतिक विवाद अथवा कार्यवाही के विरुद्ध प्रतिबंध लगा हुआ था। कई मध्यपश्चिमी राज्यो मे उन्होंने अपने सदस्यो को विधानसभा के लिए निर्वाचित किया और यथाशीघ्र 'ग्रेन्जर कानून' के नाम से पुकारे जानेवाले कानून को स्वीकार किया जिसके अन्तर्गत सडकों और गोदामों को नियत्रित करने की व्यवस्था थी, किन्तु ग्रेन्जरो ने कहीं भी राजनीतिक सस्था के रूप मे कोई सघठन नहीं बनाया। न उन्होंने बाद मे काग्रेस 'फार्म ब्लाक' से मिलती-जुलती सस्था का ही निर्माण किया।

कई व्यावसायिक उद्योगो की असफलता और विधान से निराश हो, और १८७० के अन्त मे अपेक्षाकृत समृद्धि आ जाने के कारण, ग्रेन्ज समाप्तप्राय हो गया। बाद मे उसका पुनरुत्थान किया गया, किन्तु विशुद्ध सामाजिक और शैक्षणिक सगठन के रूप मे। इस बीच कई असतुष्ट किसान ग्रीनबैक पार्टी की ओर खिंच कर चले गये। यह कृषकों, श्रमिकों और सिद्धातवादी सुधारको का मिला-जुला दल था, जिसने १८८० मे राष्ट्राध्यक्ष-पद के लिए अपने उम्मीदवार के रूप में पुराने ग्रेन्जर नेता, आइओवा के जेम्स वीवर को निर्वाचित किया।

किन्तु ग्रेन्ज के वास्तविक उत्तराधिकारी 'फार्मर्स एलाएन्सेज' अथवा कृषको की मेल-मिलाप सस्थाएँ थी, जिन्हें अमरीकी इतिहास के कार्य-सगठनो की सर्वाधिक मनोरजक वस्तु माना जा सकता है। इन मेल-मिलाप सस्थाओं का प्रादुर्भाव १८८० के अन्त और १८९० के प्रारम्भ की मंदी की लहर के कारण हुआ। समय पहले से भी बुरा था। पहले से ही सकटग्रस्त मैदानो मे सूखा पड़ गया और प्रति वर्ष आता रहा। फसल की भागीदारी और फसल-कर उगाहने की प्रणालियो ने दक्षिण को कष्ट मे डाल दिया। गेहूँ का दाम घटघर प्रति बुशेल ५० सेन्ट ही रह गया, कपास प्रति पौण्ड छः सेन्ट की हो गयी। ईंधन के रूप में अन्न को जलाना उसको बिक्री के लिए बाजार भेजने की अपेक्षा सस्ता पडने लगा और वाशिंगटन मे चोघर कॉग्रेसमैनो ने, जो केवल बडे व्यवसायियों के हितो की ओर ही तुरन्त ध्यान देते थे, १८९० मे देश पर मैककिवली-टटकर लाद दिया जो अब तक के ऐसे करों मे सबसे ऊँचा

था। उन्होंने एक क्रूर, सकुचित बैंकिंग और ऋण-प्रणाली की व्यवस्था की और लाखों-करोडो डालर की रकम पेन्टानों और अलाभकर विधानो के लिए स्वीकार की। सरकारी अन्याय से उत्तेजित होकर एलाएन्स आन्दोलन आग की भाति फैल गया और १८९० तक विभिन्न मेल-मिलाप सस्थाओं के सदस्यों की सख्या २० लाख के लगभग पहुँच गयी थी।

उत्तर-पश्चिमी और दक्षिणी मेल-मिलाप संस्थाएँ कई बातों में पहले के ग्रेन्ज के अनुसार थीं। इन्होंने विस्तृत शैक्षणिक कार्यक्रम बनाये, हेनरी वर्क की 'प्रोग्रेस एण्ड प्रास्पेरिटी' (प्रगति और समृद्धि) और एडवर्ड बेलेमी की 'लुकिंग बैकवर्ड' (भूतकाल पर दृष्टिपात) जैसी पुस्तको को वितरित किया, एलाएन्स समाचारपत्र प्रकाशित किये—अकेले कान्सास मे ही १०० से अधिक किसानों को नवीनतम वैज्ञानिक कृषि के बारे में नवीनतम तरीको से अवगत कराने और सुधारसम्बन्धी कानून के लिए आन्दोलन के हेतु साहित्य व प्रचारक भेजे और क्लब स्थापित किये। महत्वपूर्ण आर्थिक कार्यक्रमो की दिशा मे भी उन्होंने उद्योग किया। टेक्सास एलाएन्स ने सहकारी क्रय मार्केटिंग और गोदामो को भी प्रारम्भ किया। डाकोटा में एलाएन्स ने फसलों के बीजों के वितरण का उत्तरादायित्व लिया। इलिनोइस मे उसने कृषकों के एक्सचेज (विनिमय) की सीरिज सगठित की। इनमें से कुछ प्रयत्न सफल रहे और इससे किसानो की लाखों डालर की रकम लाभ के रूप मे और दलालों के कमीशन के रूप में बच सकी। अन्य बैंकों और रेलमार्गों को शान्त न किये जा सकनेवाले विरोध का सामना करके विफल रहे।

और बिना विलम्ब हुए मेल-मिलापो ने आन्दोलनकारी राजनीतिक दल को जन्म दिया। प्रारम्भ से ही उन लोगो ने राजनीतिक सुधार का कार्यक्रम बनाया था : वह था रेलमार्गो का सरकार द्वारा स्वामित्व ग्रहण, सस्ती दरों पर ऋण, राष्ट्रीय बैंको का उन्मूलन, विदेशी भूस्वामित्व पर प्रतिबध, तटकर मे कमी और किसानो के लिए सरल ऋण-व्यवस्था के हेतु एक उपकोप का निर्माण। इनमे से आखिरी विशेप मनोरजक था। उसने सघीय सरकार से प्रत्येक कृषि-तहसील मे गोदामों के निर्माण किये जाने का अनुरोध किया जहाँ कृषक अपने उत्पादन को सचित कर सके और बदले मे उत्पादन के बाजार-मूल्य का ८० प्रतिशत प्रमाणपत्र के रूप मे प्राप्त कर सके। इस योजना से कृषक को बहुत कम ब्याज-दर पर ऋण मिल जाता, वह मूल्य लाभकारी हो जाने तक अपनी फसल को अपने ही अधिकार मे बनाये रहने

देता और मुद्रा-स्थिति मे सहायक होता। इस प्रकार फसल के मूल्य मे वृद्धि हो जाती। जब इसे सर्वप्रथम आगे बढाया गया तो इसका मजाक उडाया गया और इसकी निन्दा की गयी। एक पीढ़ी के बाद इसे सभी अनिवार्यताओ के साथ सघ-सरकार द्वारा स्वीकार कर लिया गया।

१८९० और १८९२ के मध्य इस एलायन्स का रूपातर पापुलिस्ट पार्टी के नाम से हुआ। यह पार्टी अमरीका के सभी राजनीतिक दलो की अपेक्षा अधिक सजीव थी। इस पार्टी के सभी अधिकारियो की भर्ती दक्षिण और पश्चिम के कृषको मे से हुई थी, किन्तु इसमे कई अल्पसख्यक दलो का भी समावेश था—जैसे नाइट्स आफ लेबर, ग्रीनबैक और यूनियन लेबर दलो के शेष लोग—महिलाओ के लिए मतदान का अधिकार मॉगनेवाले लोग समाजवादी, एक ही टैक्स के समर्थक, सिल्वराइट्स—चादी की मुद्रा बनाने के समर्थक—और पेशेवर सुधारक। इनमे से प्रमुख थे मिन्नेसोटा आइरिशमैन, इग्नेटिअस डान्नेली, कृषक, वक्ता, आन्दोलनकर्ता, एटलान्टिस प्रायद्वीप के खोजकर्ता, बेकोनियन सिद्धात के समर्थक, 'सीजर्स कालम' नामक लोकप्रिय उपन्यास के लेखक, जिन्होने २० वर्षों तक अमरीकी राजनीति मे कठिनाई उत्पन्न कर दी थी। कान्सास से, जो पापुलिज्म के प्रचार का गढ था, विलियम पिफेर सिनेटर चुन कर आये, जिनकी लम्बी झूलती दाढ़ी देखकर दर्शकों को एक हिब्रू मसीहा की याद आ जाती थी, जिसे युवक थियोडोर रूजवेल्ट ने 'सद्भावनापूर्ण किन्तु मद बुद्धिवाला और अराजकता का प्रचार करनेवाला' बतलाया। और कान्सास की लोकप्रिय महिला पुनरुद्धारवादियो मे से एक एलेन लीज थीं, जिन्होंने कृषकों से स्पष्ट रूप से अनुरोध किया कि 'वे कम अन्न उगायें और अधिक नर्क।' नीचे जार्जिया मे पीतवर्ण के भूरे बाल वाले टाय वेटसन 'हिकोरी हिल के सन्त' और थामस जेफरसन के मतावलावी ने काश्तकारो और मिल-मजदूरो को पापुलिस्ट स्तर तक एकत्रित किया और सभी दक्षिणी सामन्तो का दिल ही दहल उठा।

अमरीका की राजनीति के इतिहास मे पापुलिस्ट विद्रोह जैसी कोई चीज पहले कभी अस्तित्व मे नही आयी थी। १८९७ के प्रारम्भ मे वह मैदानो और कपास-भूमि पर छा गया। वह एक आर्थिक पुनर्जागरण, एक आन्दोलन और राजनीति का भव्य उत्सव था जिसमे प्रत्येक व्यक्ति आग उगलने वाला था और प्रत्येक अपनी-अपनी अन्त करण की प्रकार सुनाते थे। एक प्रत्यक्षदर्शी ने लिखा:—"वह धार्मिक आन्दोलनो के समान था, दिन भर खेत मे परिश्रम करने

के पश्चात् कृषक लपक कर अपनी-अपनी बग्घियो को निकालते और अपनी पत्नियों तथा बच्चों के साथ उत्तेजितावस्था में ग्रेन्ज अथवा स्कूल की इमारत में जा पहुँचते और अपने साथी नेताओं के जोशीले भाषण पर हर्षध्वनि करते।"

वालस्ट्रीट ही अब देश की सर्वेसर्वा थी। मेरी लीज ने अपने भाषण मे कहा, 'यह सरकार अब जनता की, जनता द्वारा और जनता के लिए नही रही' किन्तु वाल स्ट्रीट द्वारा और वाल स्ट्रीट के लिए है। हमारे कानून एक ऐसी प्रणाली की देन हैं, जो बदमाशों को भव्य वस्त्रों में अलकृत करती है और ईमानदारो को चिथड़ों मे।' और कुछ किसानों ने स्वतन्त्रता की नयी घोषणा के लिए मतदान किया। 'अमरीका का इतिहास' उनमे से एक ने पढ़कर सुनाया : विगत २८ वर्षों मे यह बारम्बार उत्पीड़न, अत्याचार और अपहरण का इतिहास रहा है, जिसकी तुलना संसार के इतिहास में किसी से नही की जा सकती। यहाँ के सभी कानूनों का केवल एक ही सीधा ध्येय है, वह है अब तक के स्वतत्र अमरीका के खंडहरों पर धनवालों का राज्य स्थापित करना।'

१८९० के चुनावों ने नये दल को दक्षिण और पश्चिम के आधे दर्जन राज्यों में विजयी करके सत्तारूढ़ कर दिया और एक दर्जन सिनेटरों और प्रतिनिधियों को कॉंग्रेस के भव्य एव गमीर सभागृह को आश्चर्यचकित कर देने के लिए भेजा। इस सफलता से उत्साहित होकर दल ने इससे भी बड़ी जीतों की योजना बनायी। १८९२ के स्वतंत्रता-दिवस पर लगभग एक हजार उत्साही और पसीने से तर प्रतिनिधि ओमाहा में राष्ट्राध्यक्षपद के लिए अपना उम्मीदवार निर्वाचित करने और इग्नेशियस डानेली की कठोर भूमिका को निर्भीक प्रगतिशील मच के लिए स्वीकार करने के हेतु मिले।

"हम एक ऐसे राष्ट्र मे मिल रहे हैं जो नैतिक, राजनीतिक और भौतिक विनाश के करीब पहुँचाया जा चुका है—लाखों के परिश्रम का फल दिनदहाडे हड़पा जाकर कुछ के लिए विशाल भाग्य का निर्माण किया जा रहा है—और इनको प्राप्त करनेवाले गणतत्र की अवहेलना करते हैं और स्वतन्त्रता के लिए खतरा उत्पन्न करते हैं। उसी सरकारी अन्याय के गर्भ से हमे दो महान वर्गों की प्राप्ति हुई है—दर-दर भटकनेवाले और लक्षाधीश।"

पापुलिस्टों को दस लाख से अधिक मत प्राप्त हुए, किन्तु व्हाइट हाउस मे प्रवेश मिला ग्रोवर क्लीवलैण्ड को, न कि जेम्स वी० वीवर को, जिन्होंने अनेक असफल मोर्चों का नेतृत्व किया था। धूप से धधकते दक्षिण के कपास के खेतों और पश्चिम के गर्म और धूलधूसरित मैदानों से विद्रोह के झोके आने

लगे, किन्तु पुराने दल अपने पूर्व परिचित मार्ग पर ही चलते रहे। भूकम्प से कम शायद ही कोई वस्तु उन्हे अपने मे लीन तन्द्रा और उदासीनता से झकझोर सकता थी। भूकम्प आने मे अब देरी नहीं थी।

१८९६ : १८९६ मे स्थिति बुरी थी और क्रमशः वह बदतर होती गयी। ग्रोवर क्लीवलैण्ड ने दुबारा राष्ट्राध्यक्ष पद की शपथ ली ही थी कि देश मे एक बडा उपद्रव उठ खडा हुआ। व्यावसायिक कम्पनियो का दिवाला पिट गया, बैंको ने अपने दरवाजे बन्द कर दिये, रेलमार्ग न्यायालयो द्वारा विमुक्त व्यक्तियो के हाथो मे सौप दिये गये। कारखाने बन्द हो गये, व्यापार ठप्प हो गया, लेनदारो ने अपने द्वारा गिरवी रखी वस्तुओं को छुडाने पर प्रतिबंध लगा दिया। नगरों मे वेकार मुफ्त भोजन देनेवाले कार्यालयो के सामने पक्तिबद्ध हो गये, और ग्रामीण क्षेत्र मे भटकनेवालो मे हजारो रगरूट शामिल हो गये। यह १८७३ की भगदड से भी बुरा समय था, यह अधिक व्यापक और अधिक विनाशकारी था।

इस आपत्ति का सामना सरकार ने आर्थिक अशाति मे हस्तक्षेप करने की परम्परागत नीति के अनुसार ही किया। क्लीवलैण्ड सुयोग्य नेता, ईमानदार, साहसी और सद्भावनापूर्ण व्यक्ति थे। भ्रष्टाचार और विशेषाधिकारो के लिए युद्ध करनेवाली मैनचेस्टर-प्रणाली की उदारतावादिता के एक सफल व्याख्याता थे। अपनी प्रथम अवधि—१८८५-१८८९—मे उन्होने प्रशसायोग्य रिकार्ड स्थापित किया था, किन्तु वे तब के प्रचलित दार्शनिक विचार, हस्तक्षेप न करने की नीति से सम्बद्ध थे और उसे यथावत् जारी रहने देना चाहते थे। अब भी उनका कार्यक्रम तटकरों मे कमी करने और प्रशासनिक सुधार करने का था, और उन्होंने आर्थिक सुधार सम्बन्धी कानूनो को अस्वीकार कर दिया। उनका विश्वास था कि तूफान समाप्त होकर रहेगा और मदी को स्वाभाविक तरीकों से ही सर्वोत्तम तरीके से दूर किया जा सकता है। दो वर्ष तक स्थिति धीरे-धीरे बदतर होती गयी। १८९४ मे महान पुलमैन हडताल हुई, कास्की के वेकार लोगों की भीड ने वाशिंगटन पर कूच किया और कृषि-उत्पादनो के मूल्य मे और भी गिरावट हुई। कपास, मकई और गेहूँ के खेतो की भूमि मे असतोष फूल रहा था। डेमोक्रेटों की दक्षिणी और पश्चिमी शाखाओं ने पुराने दल का द्वार बन्द करने का भय उत्पन्न कर दिया। १८९४ मे जब क्लीवलैण्ड ने मुद्रास्फीति के तरीके के मार्ग को अवरुद्ध कर दिया तो

मिसूरी के पुराने युद्धप्रिय रिचार्ड ब्लैण्ड ने घोषणा की, "हम ऐसी स्थिति में पहुँच गये है कि हमे अपने मार्ग अलग-अलग करने होंगे।" उसी पतझड मे डेमोक्रेटों के एक असतुष्ट दल ने पापुलिस्टों के साथ समझौता कर लिया, जिसने १५ लाख मत प्राप्त किये।

कई लोगों को १८५४-१८५६ की विपत्ति की पुनरावृत्ति दिखाई देने लगी जब कि जर्जर ह्विग सस्था छिन्नमिन्न हो गयी थी और उसका स्थान उत्साहपूर्ण रिपब्लिकन दल ने ले लिया था। किन्तु पश्चिमी डेमोक्रेटों के दक्ष नेता अभी समर्पण करने को तैयार नही थे जब कि दक्षिण मे डेमोक्रेट श्वेताग प्रभुता के साथ इस प्रकार पूर्ण रूप से एक हो गये थे कि किसी भी तीसरे दल की कोई सम्भावना न थी। पापुलिस्टो से समझौता करने की अपेक्षा दक्षिणी और पश्चिमी डेमोक्रेटों के क्रातिकारी नेताओं ने दल के सगठन पर अधिकार करने के लिए कदम उठाये। "तब," जैसा कि ब्रायन ने बाद मे वर्णित किया, "सघर्ष का प्रारम्भ हो गया, उसी उत्साह से जिसने आर्थिक आन्दोलनकारियों को भी उत्साह प्रदान किया था। डेमोक्रेट एक के पश्चात दूसरी विजय प्राप्त करते गये।"

कृषि से सम्बन्धित धन के प्रश्न पर डेमोक्रेटों ने सघर्ष करने के लिए चुनाव लडा। यह बहुधा एक गलती मानी जाती रही है, फिर भी यह सन्देहपूर्ण है कि इससे बडा कोई दूसरा प्रश्न इतने मतदाताओं को आकर्षित करता अथवा अपने आपको इस तत्परता से नाटकीय बनने देता। तत्कालीन धन-सम्बन्धी प्रश्न पेचीदा था, किन्तु यह सुझाव बिना अधिक गलतफहमी के दिया जा सकता है कि वह अन्त मे मुद्रास्फीति बनाम मुद्रासकोच का प्रश्न ही रह गया था। वर्षो तक, जब तक राष्ट्र की जनसख्या और व्यवसाय मे वृद्धि होती रही, सरकार मुद्रा-सकोचन की नीति अपनाती रही थी। १८७३ के वर्ष मे, पश्चिम मे चादी की खानों के उत्पादन से मुद्रा के मूल्य मे ह्रास होने का भय उत्पन्न हो गया, कॉग्रेस ने सहज एक विशुद्ध नियमित उपाय द्वारा चादी का विशुद्धीकरण कर दिया अर्थात् उसको और अधिक खरीदने या उसका सिक्का बनाने से इन्कार कर दिया। फिर १८७८ और १८९७ मे सरकार को इस प्रकार चादी का बड़े पैमाने मे क्रय करने को बाध्य हो जाना पडा कि अमरीका का मुद्रा-आधार 'स्वर्ण' बनाये रखने मे गम्भीर खतरा उत्पन्न हो गया। एक के बाद दूसरे राष्ट्राध्यक्ष ने, राष्ट्र के सभी अनुदार तत्वों का समर्थन पाकर इस आधार को बनाये रखने का निश्चय किया। विशेष रूप से क्लीवलैण्ड ने इसके

लिए अति कठोर और सफल सघर्ष किया। यही वह धन सम्बन्धी नीति थी जैसा कि कई कृषको को विश्वास था, जो दामों की गिरावट के लिए उत्तरदायी थी। चादी को पुनः प्रमाण बनाने, सभी उपलब्ध धातु के सिक्के बनाने, टकसालों को ससार की सभी मूल्यवान धातुओ के लिए खोल देने से धन का मूल्य साधारण स्तर तक गिर जायगा, मूल्य ऊपर चढ जायेंगे और समृद्धि वापस लौट आयेगी—चॉदी के समर्थको का यह तर्क था।

मुद्रास्फीति पर अंकुशसमर्थक व्यक्तियो का विश्वास था कि ऐसी नीति वित्तीय रूप से विपत्ति खडी कर देगी। मुद्रास्फीति एक बार प्रारम्भ होने पर रोकी नही जा सकेगी और स्वय सरकार दिवाला निकाल देने को मजबूर हो जायगी। केवल स्वर्ण-आधार ही स्थिरता प्रदान करता है। वे आपसी बातो मे यह विश्वास करने लग गये कि स्वर्ण प्रमाप न केवल ठोस वित्त है, बल्कि सैद्धातिक रूप से भी ठोस है। चादी डालर की उन्होंने अत्यधिक अन्यायपूर्वक 'बेईमान' डालर ठहरा कर निन्दा की। यह एक पुराना विवाद था—यह सस्ते धन का विवाद था और साथ ही साथ नवीन भी था।

राजनीति की दृष्टि से मुक्त चादी के प्रश्न पर सघर्ष करने के अनुकूल कई बाते थीं। चादी की खान के मालिक दिवाले का सामना होने पर, सघर्ष को चालू रखने मे वित्त की दृष्टि से सहायक हो सकते थे। पश्चिम मे कम जनसख्यावाले आधे दर्जन राज्यो मे, जो साधारण तौर पर रिपब्लिकन थे और मतदान-कालेज मे जिनको अनुपात रहित मतो पर अधिकार प्राप्त था, उनका चादी का निहित स्वार्थ बहुत शक्तिशाली था। यदि इन्हे डेमोक्रेटिक दल की पृष्ठभूमि की ओर झुकाया जाता तो ये चुनाव को बदल सकते थे। खयाल था कि सस्ता धन देशभर के कर्जदारो की बड़ी सख्या और कुछ श्रमिकों तथा कृषको का समर्थन भी पायगा। अन्तिम रूप से चादी मे एक भावात्मक गुण निहित था, जिसका सहज ही लाभ उठाया जा सकता था। स्वर्ण रईस लोगों का धन था; चादी निर्धन व्यक्ति का मित्र। स्वर्ण वाल स्ट्रीट और लोम्बार्ड स्ट्रीट का धन था, चादी मैदानों का और छोटे नगरो का।

किन्तु कोई समस्याभर खडी कर देना ही पर्याप्त नहीं था। चादी के समर्थकों को उम्मीदवार तो खडा करना ही था। "सभी चादी समर्थको को आवश्यकता है तो जनमत की!" 'न्यूयार्क वर्ल्ड ने' लिखा, "उनके पास सिद्धात है, चित्त की स्थिरता है। उनके पास जोर-शोर से प्रदर्शन करने की सभी सामग्रियॉ हैं, उनके पास मत हैं और तथाकथित नेता हैं। किन्तु यह सब

होते हुए भी वे भटकी हुई आत्माओं के समान जगल मे भटक रहे हैं, क्योकि साहस, धृष्टता, आकर्षण और वास्तविक नेता बनने जैसी शक्ति उनके बुद्धिमान व्यक्ति मे अभी तक नहीं दिखलाई पड रही है।"

नेब्रास्का के विलियम जीनिग्स ब्रायन मे उन्होने अपना मसीहा पा लिया। वे १८९६ के शिकागो के कोलाहलपूर्ण अधिवेशन के प्रतिनिधि थे। उन्हे धन की समस्या पर बोलने को कहा गया और जब ८ जून की गर्म रात्रि मे वे मच पर चढ रहे थे तो वास्तव मे राष्ट्रीय प्रसिद्धि की दिशा मे आगे कदम बढ़ा रहे थे :

"हम आक्रमणकारी बन कर नही आये हैं। हमारा युद्ध सैनिक विजय का युद्ध नहीं है। हम अपने घरो, परिवारों और अपनी सन्तति के लिए लड़ रहे हैं। हमने प्रार्थनापत्र दिये और हमारे प्रार्थनापत्रों का तिरस्कार कर दिया गया; हमनें अनुनय की और हमारे अनुनय की अप्रतिष्ठा कर दी गयी। हमने भिक्षा मागी और जब हम पर विपत्ति आयी तो हमारा मजाक उडाया गया। अब न तो हम भिक्षा मागते हैं न अनुनय करते हैं, न प्रार्थनापत्र प्रस्तुत करते हैं। हम इनकी उपेक्षा करते हैं।"

इस प्रकार कई वक्ता बोले और उनके हर एक वाक्य का उन्मादपूर्ण ढग से स्वागत किया गया और जब उन्होंने भाषण का प्रसिद्ध उपसहार कहा, तो सभागृह मे ऐसी हर्षध्वनि हुई जैसी कि किसी अमरीकी सभा मे नहीं सुनी गयी थी :

"यदि वे खुलेआम स्वर्ण-प्रमाप को अच्छी वस्तु बता कर उसका रक्षण करने आते हैं तो हम अन्त तक उनसे सघर्ष करेंगे। अपने पीछे राष्ट्र और ससार की उत्पादन करनेवाली जनता को खड़ा कर, सर्वत्र व्यावसायिक श्रम और मेहनत मे लगे लोगों का समर्थन पा, हम उनकी स्वर्ण-प्रमाप की माग का उत्तर यों देगे : आप श्रमिक के ललाट पर कॉटों का यह ताज जबर्दस्ती नही पहना पायेंगे; आप स्वर्ण निर्मित सूली पर मानव जाति को नहीं चढा पायेंगे।"

इस भाषण के बगैर भी ब्रायन को उम्मीदवार निर्वाचित किया जा सकता था, क्योंकि उन्होने अधिवेशन के पूर्व ही सावधानी से प्रचार कर रखा था और कई अर्थों मे वे सफल उम्मीदवार थे। इस भाषण के पश्चात् उनकी उम्मीदवारी एक निश्चित बात बन गयी। डेमोक्रेटों की रजत शाखा की विजय पूर्ण हो गयी। उन्होंने मंच पर अधिकार कर लिया। उम्मीदवारों का निर्वाचन किया और पापुलिस्टों को अपने साथ सहयोग करने को उन्होंने मजबूर कर दिया।

इस अभियान के साथ ब्रायन की रोचक मूर्ति राष्ट्रीय क्षेत्र मे प्रवेश तीरक है और दो दशाब्दियो तक किसी न किसी तरह वे आकर्षण-केन्द्र बने रहे। कई अर्थों मे हेनरी क्ले के पश्चात् वे सबसे अधिक महत्वपूर्ण राजनीतिक नेता थे। दिखने मे भव्य, बिलकुल काले केशो, चमकीले नेत्रो और मृदु आवाजवाले, विनोदप्रिय, बुद्धिमान, निर्भीक वे मैदानो के लाखो व्यक्तियो की कल्पना मे आराध्य देव बन गये। वे फार्म पर बडे हुए थे, उन्होने एक ग्रामीग कालेज मे शिक्षा प्राप्त की थी। मैदानी प्रदेश मे स्थानान्तरण किया था और वहाँ पर कानून और राजनीति की पहल की थी और वे एक निष्ठावान प्रेस्बीटेरियन थे और उनके राजनीतिक भाषग धर्मपुस्तक के योग्य उद्धरणो से भरे होते। ब्रायन एक सरल प्रजातत्रवादी थे, सफलता जिन्हे बिगाड नहीं पायी थी। वे सार्वजनिक हित मे अपनी समझ के अनुसार, हृदय से विश्वास करते थे। उनका यह विश्वास था कि जनता की आवाज ईश्वर की आवाज है। यद्यपि उनमे कई कमियाँ भी थी, क्योंकि उन्होने बहुत अधिक या गहरा अध्ययन नहीं किया था और वे गम्भीर विचारक किसी हालत मे नहीं कहे जा सकते थे—फिर भी वे अमरीका के उच्च प्रतिनिधि माने जा सकते थे।

१८९६ का चुनाव जेक्सन के दिनो के बाद सबसे अधिक कटुता से लडा गया। पहले तो ब्रायन का कार्य असम्भव सा लगता था। उनके दल मे खुले आम मतभेद था। उसके नाममात्र के प्रमुख क्लीवलैण्ड के विरोध मे थे और उसके अधिकाश पूर्वी नेता रिपब्लिकन शिविर मे घूम रहे थे। डेमोक्रेटो को भी अन्यायपूण ढंग से त्रिवर्षीय मदी के लिए दोषी ठहराया गया। ब्रायन के विरुद्ध सभी प्रतिष्ठित तत्व खडे थे : व्यवसाय, युनिवर्सिटी, प्रेस और धन की शक्ति। रिपब्लिकन दल के प्रमुख मार्क हान्न ने चुनाव-कोष के लिए लगभग ३० से ७० लाख डालरों की राशि के लिए एक अभियान प्रारम्भ किया। इसके विरुद्ध डेमोक्रेटों का लक्ष्य लगभग १५ लाख डालर से भी कम था। केवल एक बात मे ही डेमोक्रेटो को स्पष्ट लाभ था—स्वय ब्रायन मे ही। उन्होंने समूचे देश का दौरा किया—न्यू इग्लैण्ड से पश्चिम तक, गर्म धूल-धूसरित मैदानो मे बग्घियों मे बैठकर, दिनभर मे आठ से दस बार भाषण देकर, श्रमिकों और कृषकों से—उदारवादियो और प्रगतिशाली लोगो से प्रार्थना करते हुए उन्होने अमरीकी इतिहास का सर्वाधिक विलक्षण चुनाव प्रचार किया।

वह शानदार प्रचार था, किन्तु पर्याप्त न था। अन्त मे विलियम मेकक्न्लि

५० लाख से भी अधिक मतों से विजयी हुए। पश्चिम और दक्षिण का मेल, जिसने जेफरसन को स्पष्टतया सत्तारूढ किया था और जेक्सन तथा डगलस का जिसने समर्थन किया था, इस बार असफल रहा। इस मामले मे, मेककिन्ले और रिपब्लिकनो ने मध्यवर्ती पश्चिमी राज्यो—जैसे इलीनोइस, आइओवा और विस्कोन्सिन और कैलिफोर्निया—और ओरेगोन जैसे सुदूर पश्चिमी राज्यो का समर्थन प्राप्त कर लिया था। किन्तु ब्रायन का प्रचार काव्यात्मक बन गया था और अन्त मे पोपुलिस्टो और कृषि से सम्बन्धित डेमोक्रेटो के विचारो को, विना किसी महत्त्वपूर्ण अपवाद के, कानून के रूप में लिखा गया था। वे अमरीकी इतिहास की धारा को मोडनेवाले सिद्ध हुए।

सतरहवॉं परिच्छेद

सुधार का युग

लोकतन्त्र को चुनौती : ब्रायन ने १८६६ के अभियान का इतिहास लिखते समय उसे 'फर्स्ट बैटल' की सज्ञा दी थी। यह शीर्षक वास्तव मे बडी सूझबूझ का था, क्योंकि इस सघर्ष मे यद्यपि कर्षक-लोकतत्री लोगों की हार हुई, लेकिन उसके कारण प्रगतिमूलक अभियान की नीव भी पड गयी। युद्ध समाप्त होने से पहले ही किसानो और कामगारों की भीड़ हर एक राज्य पर हावी हो गयी और एक के बाद दूसरे राज्य मे उनका जोर बढता गया। सभी प्रगति-बाधक कठिनाइयो पर उन्होने विजय पायी और अत मे उन्होने ह्वाइट हाउस पर भी अपनी सफलता का झडा फहरा दिया। राष्ट्रीय सरकार का रुख ही उन्होंने बदल दिया तथा उसे फिर से एक बार पूर्वपरम्परागत लोकतान्त्रिक भावना का अनुयायी बना दिया।

ब्रायन द्वारा वर्णित 'प्रथम युद्ध' तथा वुडरो विल्सन द्वारा विजित दूसरे लोकसत्तात्मक युद्ध के बीच की ये दो दशाब्दियॉं वास्तव मे 'प्रगति-युग' कहलाने योग्य है। इन दोनो दशको की विशेषता इसी बात मे है कि इन वर्षो मे ही अमरीकी जनजीवन की प्रत्येक दिशा मे विद्रोह और सुधार का सूत्रपात हुआ। पुराने राजनीतिक नेताओ को खदेड़ दिया गया और दूसरे नेताओं ने उनकी जगह ले ली। राजनीतिक तत्र मे भी सुधार हुए और उसे आधुनिक युग के अनुकूल बनाया गया। राजनीतिक क्रियाकलाप की बारीकी से जाच की गयी और उनमे जितनी भी बाते लोकशाही के आदर्शो के खिलाफ पायी गयीं, उन्हे निकाल बाहर किया गया। आर्थिक सस्थाओ तथा सिद्धान्तों की तर्क की कसौटी पर परीक्षा की गयी। निजी सपत्ति, नियमों की स्थापना, निधियों का अस्तित्व, बडे बडे मुनाफे, आदि की भी लोकतत्र की दृष्टि से जॉच की गयी और देखा गया कि कहॉं तक वे इस आदर्श के अनुकूल बैठते थे। जो बाते इन आदर्शों के अनुकूल नहीं पायी गयीं, उनमे परिवर्तन किया गया। सामाजिक सबंधों पर भी पुन. विचार किया गया।

शहरियत का असर, प्रवास-समस्या, सपत्ति की विषमता, वर्गों का उद्भव, सभी की सावधानी से आलोचना की गयी। इस काल के प्रत्येक प्रसिद्ध व्यक्ति का नाम अंशतः इसलिए प्रसिद्ध हुआ कि उसकी राजनीति, दर्शन, अध्ययन अथवा साहित्य, क्षेत्रीय सुधार-आन्दोलनों मे से किसी न किसी आन्दोलन के साथ जड़ा हुआ था। वीवर ब्रायन, ला फौले, रूजवेल्ट और विल्सन राजनीतिक क्षेत्र के कारण प्रसिद्ध हुए, विलियम जेम्स, जोसिया रायस और जान डेवी दार्शनिक क्षेत्र मे, थोर्स्टीन वेबलेन, रिचर्ड एली, फ्रेडरिक जे टर्नर अध्ययन के क्षेत्र मे, विलियम जे. डीन हावेल्स, फ्रैंक नौरिस, हैमलिन गार्लैण्ड और थियोडोर ड्रेजर साहित्यिक क्षेत्र मे प्रसिद्ध हुए। उस काल के जनप्रिय नेता सभी सुधारक थे। बड़े धैर्य तथा साहसपूर्वक उन्होने लोकतन्त्र की रक्षा की और नयी दिशाओं मे सुधार करने का प्रयत्न भी किया। १८४० के बाद बौद्धिक जगत मे इस प्रकार का एक भी तूफान न आया था और न सुधारवादिता ने ही इतनी दृढतापूर्वक जनजीवन पर आधिपत्य जमाया था।

लेकिन सुधारवादिता का यह सुरुचिपूर्ण तूफान था किस बाबत ? क्या बात थी, जिसने अमरीका के जनजीवन को इतना मथ डाला ? पिछले अध्यायों मे किसानों और मजदूरों की समस्याओं का थोड़ा-बहुत दिग्दर्शन कर चुके हैं। लेकिन ये समस्याएँ तो बीमारी का लक्षणमात्र थीं, उसका निदान भर थी। समस्याएँ केवल आर्थिक ही न थीं, और न कृषि और श्रम के क्षेत्रों तक ही वे सीमित थीं। अमरीकी समाज का हर पहलू उन से प्रभावित था।

असलियत तो यह थी कि अमरीकी जनजीवन की आशाएँ पूरी न हो पा रही थीं, जब कि इस नयी दुनिया मे एक ऐसे समाज की स्थापना की कल्पना की गयी थी, जिसमे सबको स्वतन्त्रता तथा समानता के अधिकार प्राप्त होंगे और स्वाधीनता को सर्वत्र सरक्षण प्राप्त होगा। शुरू-शुरू मे यह एक स्वप्न मात्र था, लेकिन यह कोई ऐसा स्वप्न न था जो चुरट पीते समय किसी के दिमाग मे से उपजा हो। न अमरीकी प्रजातन्त्र की कल्पना करने वाले लोग ही ऐसे हवाई किले बाधनेवाले थे जिन्होंने अफीम की पिनक मे झूठी उम्मीदों के किले खडे किये हों। इससे पहले मानव-इतिहास के किसी भी काल मे प्रकृति ने मानव-जाति को इतना बडा मौका अन्यत्र न सौपा था, न इससे पहले 'बागेअदन' का निर्माण करने की कल्पना तैयार कर सकने के लिए उस मौके से बढ़कर अच्छे वजूहात ही इन्सान के सामने मौजूद हुए थे। शुरू-शुरू मे तो टर्गट के शब्दों मे "अमरीकी लोगों पर मानव-जाति मात्र की आशाएँ केन्द्रित हो गयी थी।"

लेकिन ये आशाएँ पूरी नही हुई। यद्यपि अमरीकी लोगों की हालत समुद्रपार के अपने समकालीन लोगो की अपेक्षा कहीं ज्यादा अच्छी थी, लेकिन तब भी निर्धारित आदर्श से वे बहुत नीचे थे। भौतिक रूप से राष्ट्र की सफलता काफी प्रभावशाली थी, लेकिन उसकी सामाजिक तथा सास्कृतिक सफलता निराशाजनक ही थी। जैसा राष्ट्राध्यक्ष विल्सन ने अपने पहले उद्घाटन-भाषण मे कहा था :

"भलाई के साथ काफी बुराइयाँ भी हमारे यहाँ आ घुसी है तथा बहुत से 'खरे सोने' को उन्होंने खुरच डाला है। ऐश्वर्य के साथ ही देश मे अपार बरबादी भी आयी है। जिस वस्तु का हम-भली भाति उपयोग कर सकते थे उसमे से बहुत कुछ हमने फिजूलखर्ची मे उडा दिया है। प्रकृति की अक्षय देन को सुरक्षित बनाये रखने का हमने विचार तक नहीं किया, बल्कि सावधानी के प्रति हमने नाक भौं ही सिकोडी। निर्लज्ज उडाऊपन तथा श्लाघा-हेतुक कौशल्य हमारा स्वभाव बन गया है। अपनी औद्योगिक सफलताओं पर हम गर्व तो रहा, लेकिन अब तक कभी हमने यह सोचने की तकलीफ गवारा नहीं की कि इस सफलता तक पहुचने मे हमे कितने इन्सानों की जान से हाथ धोना पडा है, कितने लोगो की शक्ति से सीमातीत काम लेना पडा है और पुरुषों, नारियो तथा बच्चो के शारीरिक तथा आत्मिक परिश्रम का कितना बलिदान देना पडा है। वर्षानुवर्ष इस सबका भयानक भार उन्ही के कन्धों पर पडता रहा है। . . सरकार के साथ ही ऐसे शतशः रहस्य अस्त होते चले गये, जिनमे गहराई से बेखौफो-खतर और खुले दिल से पैठने की हमने सालों परवाह ही न की। देश के प्रिय महान् प्रशासन का उपयोग प्रायः अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिये ही लोगो ने किया और ऐसा करते समय इन्होंने जनता का ख्याल नहीं किया।"

ऐसी बात नहीं कि ये स्थिति दुष्ट पुरुषो के बुरे कामो के कारण उत्पन्न हुई हो। न शक्तिशाली व्यक्तियो द्वारा लोकशाही को अस्वीकार करने के कारण ही ये स्थिति उत्पन्न हुई। वे कभी उसके विनाश पर तुले भी नहीं। न स्वेच्छाचारिता अथवा अत्याचार द्वारा स्वतन्त्रता का स्थान ग्रहण करने से ही ये हालत पैदा हुई। इसके कारण तो इन सबसे कही अधिक गहरे थे। मौलिक कठिनाई तो सम्पूर्ण पाश्चात्य जगत मे समान रूप से व्याप्त थी। वैज्ञानिक तत्र समाज, विज्ञान और राजतन्त्र से बहुत आगे निकल गया था। काम करने के वे तौर-तरीके और उसूल, जो अठारहवी सदी के ग्राम लोकतन्त्र से राष्ट्र को विरासत

में मिले थे, अब बीसवीं सदी के शहरी शासनतन्त्र की आवश्यकताओं के उपयुक्त न रह गये थे। राजनीतिक क्षेत्र में यह बात तब तक सही रही जब तक सरकार उन ताकतों को, जो मशीनों की वजह से समाज पर हावी होना चाहती थीं, अपने नियन्त्रण में न रख सकी। नैतिक क्षेत्र में भी, जहां वैयक्तिक जिम्मेवारी के पुराने ख्यालात को अवैयक्तिक नियमों के जन्म ने अप्रामाणिक बना डाला था—यह बात सही थी। सामाजिक क्षेत्र में भी जहां नीरस सामाजिक जीवन बदल कर बहुरंगी हो गया था और जिसकी ग्रामीण जीवन के उपयुक्त आदतें अब शहरी रहन-सहन के अनुकूल न बैठती थीं—यही बात सही बैठती थी।

देश की प्रगति के कारण भी अनेक समस्याएं उठ खड़ी हुई थीं। खेती का क्षेत्र प्रकृति-निर्धारित सीमाओं के बाहर निकल गया था। प्रवासी इतनी तेजी और तादाद में आते जा रहे थे कि उन्हें देश हजम न कर पा रहा था। शहर इतनी तेजी से बढ़ रहे थे कि न तो वे अपनी लाखों की आबादी के लिए मकानों का ही बन्दोबस्त कर पाते थे न शहर का ठीक प्रशासन ही। फैक्टरियों का उत्पादन भी जन-उपभोग की सीमाओं से बाहर होने लगा था, व्यापार इस बड़े पैमाने पर चलने लगा था कि न तो कोई उसे पूरी तरह समझ ही पाता था, न उसका प्रबन्ध ही कर पाता था। कुछ थोड़े से व्यक्ति इतने अमीर हो गये थे कि उन्हें समझ में ही न आता था कि वे अपने रुपये का अब क्या करें। न तब तक समाज ने ही वे तरकीबें सीख पायी थीं, जिनके जरिये वह उन अमीरों को उस रुपये के बोझ से छुटकारा दिला सके।

ऐसी थीं वे मौलिक कठिनाइयां जो उस समय देश के सामने थीं लेकिन बहुत थोड़े से लोग ही इतने दूरदर्शी थे जो उन कठिनाइयों की कद्र कर पाते। सुधारवादियों को तो गरीबी, अन्याय और भ्रष्टाचार ही दिखाई पड़ता था। उनकी नजरों के सामने था केवल जमीन का प्रश्न, श्रमिकों की समस्या, स्त्रियों का मसला और रेल का सवाल। इसीलिए उन्होंने श्रमिक बस्तियों की गन्दगी मिटाने पर कमर कस ली। राजनीतिक क्षेत्र की उन्होंने सफाई कर डाली, निधियों का पेट फोड़ दिया और कुछ बड़े धनिकों से डटकर मोर्चा लिया। उन्होंने नशे के दानव के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी, बाल-श्रम को बन्द कराने के प्रयत्न किये, कड़े श्रम के खिलाफ जिहाद बोला और रेड इंडियनों तथा नीग्रो लोगों का पक्ष लेकर इस नवद्वीपीय साम्राज्य के अपने अत्यन्त काले भाइयों के लिए लड़ना मंजूर किया। देश के शासन के लिए उन्होंने नये ही प्रशासनतन्त्र का निर्माण किया, जिसमें समारम्भ, निर्णयार्थ

जनमत-सग्रह, स्त्री-स्वातन्त्र्य, मौलिक चुनाव, भ्रष्टाचार-निरोधी अधिनियमो तथा योग्यता-प्रणाली आदि प्रतिबन्धो की उन्होंने व्यवस्था की। उन्होंने जल तथा वनो जैसे साधनस्रोतों की सुरक्षा का प्रबन्ध किया और शहरो को खूबसूरत बनाया। कल्याणकारी काम करने के लिए सैकडो समितिया स्थापित हो गयीं और फली-फूली। वर्तमान अव्यवस्था का भण्डाफोड करनेवाली तथा भावी व्यवस्था की बाबत नये सुझावो से भरी अनेको पुस्तकों की छपाई मे छापखाने बेहद व्यस्त हो गये। पत्र-पत्रिकाओ के सपादको ने भी हर तरह और हर जगह की बुराई का पर्दा फाश करने वाले लेख प्रकाशित करना शुरू कर दिया। उपन्यासकारों ने स्थानीय प्रभाव तथा प्रेम-दृश्यो से पूर्ण उपन्यास लिखना छोड कर समस्या-मूलक उपन्यास तथा नैतिक उपदेशों से भरे ग्रन्थ लिखे। कवियो ने काल्पनिक कविताएँ लिखना बन्द करके 'हसिया हाथ-लिये किसान' के गीत गाने का व्रत लिया। विद्वान लोग हवाई उडाने छोडकर ससारी समाज की समस्याओं से जूझ उठे, पादरियो ने बाइबिल मे समाजवादी बातें ढूढ निकालीं और अपने सम्मानित अनुयायियों को इसका भावार्थ समझाना शुरू कर दिया।

ये सब एकदम अमरीकी परपरा के अनुसार ही हुआ। अमरीका के प्रथम प्रवासी 'पिलग्रिम्स' तथा प्यूरिटन्स' पुराने इग्लैण्ड के तत्कालीन हालात के विरोध के कारण ही उस देश को छोडकर यहॉ आ बसे थे। उसके बाद औपनिवेशिक नेता रोजर विलियॅम्स, नैथैनियल बेकन, जेकब लीस्लर ने भी यहा आबाद हो जाने के बाद यहॉ के अत्याचारो तथा असहिष्णुता के खिलाफ आवाज उठायी थी। इस राष्ट्र का जन्म ही क्रान्ति से हुआ और इसके राष्ट्रीय वीर जेफर्सन, फ्रैंकलिन, साम एडम्स, टामस पेन ने न केवल अपनी जन्म-भूमि के खिलाफ ही, बल्कि घरेलू शासकवर्ग के खिलाफ भी बगावत की थी। न्यू इग्लैण्ड के महान लेखको तथा पादरियो तथा दार्शनिको ने, जिनमे एमर्सन और व्हिटियर, गैरिसन और पार्कर भी शामिल थे, १८४० से १८६० तक समानता तथा स्वतत्रता के लिए युद्ध जारी रखा। जिज्ञासा करना, तर्क के लिए ललकारना, विरोध करना, हरएक बात को तर्क से सिद्ध करना, और जो कुछ अच्छा साबित हो, उस पर दृढ़ रहना, यह अमरीकी लोगो का जन्मजात स्वभाव ही बन गया था।

प्रगति के इस नये आन्दोलन का न तो दर्शन, न काम करने के तरीके ही पहले के सुधारवादी आन्दोलनों से भिन्न थे। इनके दर्शन मे भी लोकतन्त्र पर पूरी निष्ठा व्यक्त की गयी थी। समाज को दु:ख पहुँचाने वाली सब बुराइयों

की जड लोकशाही की कमी ही बतायी जाती थी और उन सबका इलाज लोकतन्त्रवाद ही बताया जाता था। इसी कारण जनता का विश्वास स्त्री-स्वातन्त्र्य, समारम, निर्णयार्थ जनमत तथा सिनेटरों के सार्वजनिक चुनाव जैसे उपायो पर इतना ज्यादा जम गया था। काम करने के तरीके ज्यादातर राज-नीतिकों जैसे ही थे और उनका क्रियाकलाप सस्थापित पुराने दलो के द्वारा ही सचालित होता था। नये दलो की स्थापना पर लोगों को विश्वास न था, लेकिन बडे दलो की अकर्मण्यता तथा रूढिवादिता के कारण उन पर जनता की यह आस्था प्रगति के मार्ग मे निश्चय रूप से बाधक ही सिद्ध हुई।

सुधारवाद की दोनो प्रधान धाराए इन वर्षों मे एक दूसरे मे घुलमिल गयीं। इनमें से एक का जन्म खेतिहर पश्चिम मे हुआ था और उसका प्रमुख कार्य आर्थिक प्रश्नों का हल करना था। इस धारा मे कभी-कभी असली मौलिकता भी दिखाई पड जाया करती थी। इस पश्चिमी धारा के दार्शनिक थे 'प्रोग्रेस एण्ड पावर्टी' के लेखक हेनरी जार्ज तथा 'लुकिंग बैकवर्ड' के लेखक एडवर्ड वेलामी, जिन्होंने उक्त पुस्तक मे एक स्वप्निल अर्थव्यवस्था की कल्पना की थी। इस आन्दोलन के राजनीतिक प्रवक्ता थे आल्ट वेल्ड डानेली, ब्रायन तथा ला फौले। दूसरी धारा थी पूर्वीय और कुछ हद तक उसका स्रोत इग्लैण्ड भी था। इस धारा के कार्य-विषय थे, तटकर-सुधार, योग्यता-प्रणाली और साम्राज्यवाद-विरोध। उसके बौद्धिक प्रवक्ता थे शक्तिशाली पत्र 'नेशन' के सपादक ई. एल. गोडकिन, तथा जार्ज विलियम कर्टिस, और हार्वर्ड युनि-वर्सिटी के प्रेसिडेण्ड चार्ल्स डब्ल्यू ईलियट। उसके राजनीतिक प्रतिनिधि थे कार्ल शर्ज, एब्राम एस हयूविट, ग्रोवर क्लीवलैण्ड तथा वुडरो विल्सन।

सामाजिक न्याय के लिए अभियान : सन् १८९० मे 'न्यूयार्क सन्' नामक पत्र के एक रिपोर्टर तथा डेन्मार्क से आकर बसे हुए जेकब राइस ने अपनी पुस्तक 'हाउ दि अदर हाफ लिव' प्रकाशित की। इसमे न्यूयार्क की गन्दी बस्तियो का सही-सही हाल लिखा गया था तथा वहा का भीड-भडक्का, गन्दगी, बीमारी, अपराध, दुर्व्यसनो और दुखदारिद्य का, जिनका शिकार, लोकशाही के अभियान मे पिछड गये 'दूसरे अर्धांग' को होना पडता था—चित्र खीचा गया था। इसके तुरन्त बाद ही दूसरे शहरों के पत्रकार भी अपने-अपने यहा के हालातो की बाबत इसी किस्म के विवरण प्रकाशित करने लगे और राष्ट्र को पता चला कि शहरी समस्याओं की चुनौती, किसी तरह भी, खेतिहर समस्याओं की चुनौती से कम नही है।

जैसा कि लार्ड ब्राइस ने अपनी पुस्तक 'अमेरिकन कामनवेल्थ' मे लिखा है, "शहरो के मामलात मे अमरीकी लोकतन्त्र विशेष रूप से असफल रहा। उसके शहरो मे धन और निर्धनता की पराकाष्ठाओ का असामजस्य वेतरह स्पष्ट दिखाई पडता था। वहा धनिको के सगमर्मर के महलो के साथ-साथ गन्दी बस्तियो की भी बहुतायत थी और वैभवशाली विश्रामगृहो के दरवाजो पर भिखारियो की भीड लगी रहती थी। भ्रष्टाचार वहाँ वेशर्मी की हद तक पहुच चुका था। अनेकों 'रिंग' और 'हाल' सार्वजनिक कोष पर पलते थे, वोट वहा बिकते थे और अपराधो और व्यसनो से नाजायज फायदा भी उन्ही के जरिये उठाया जाता था। वहा जुए और दुराचार के अड्डो को राजनीतिज्ञों का सरक्षण और प्रोत्साहन प्राप्त था। मलबेरी वेण्ड का 'व्हायो' दल, 'न्यूयार्क दल,' क्लीवलैण्ड का 'लेक शोर पुश' दल, आदि अपराधियो के सम्प्रदाय मौज से अपना अनैतिक व्यापार चलाते रहते थे और पुलिस भी उनके मामले मे दस्तन्दाजी न कर पाती थी। मजदूरो के कडे परिश्रम से पलनेवाली दुकाने वहा औरतो, अखबार बेचनेवाले और बूट पालिश करने वाले लडको का खून चूसा करती थी और इस बात का सबूत थीं कि बच्चो की हिफाजत करने वाले कानून वहा असफल हो चुके थे। इन शहरो मे सार्वजनिक स्वास्थ्य, आवास, शिक्षा और प्रशासन की समस्याएं भी भयावह हो उठी थीं।

आवास की समस्या ने सुधारको का ध्यान इसलिए सबसे पहले आकर्षित किया, चूकि उसका सम्बन्ध सिर्फ गरीबों की गन्दी बस्तियो से ही न था, बल्कि शहरों के सभी निवासियो से था। नागरिक युद्ध के बाद के दशको मे शहरो की आबादी आवासो की सुविधाओ की अपेक्षा ज्यादा तादाद मे बढ गयी। ये चाल छ:-छ: मजिल के, लकडी के बने टूटे-फूटे मकानात होते थे। न उनमे हवा का इन्तजाम होता था, न रोशनी का। गन्दगी और बीमारी के वे घर होते थे और दुर्व्यसन वहाँ पनपते थे। सन् १८९० मे अकेले न्यूयार्क शहर मे ही लगभग ५० हजार व्यक्ति इन गन्दी बस्तियो मे रहा करते थे। वहाँ का मृत्यु-अक शहर के अन्य सौभाग्यशाली भागो की अपेक्षा चौगुना था। 'लोअर ईस्ट साइड' नामक एक खास किस्म की ऐसी ही चाल मे २७८१ व्यक्ति रहते थे, लेकिन इतने आदमियो के बीच एक भी नहाने का टब न था। इस चाल के १५८८ कमरो मे से एक तिहाई कमरो मे रोशनी और हवा का कोई प्रबन्ध न था, बाकी एक तिहाई मे सुबह थोडी-सी रोशनी और हवा आ पाती थी।

राइस द्वारा लिखित मैनेहैटन की एक एक चाल का वर्णन नीचे लिखा जाता है—

"मान लीजिए इन में से एक चाल मे हम झाक रहे है यानी न. की चेरी स्ट्रीट की चाल मे। जरा होशियारी से चलिये, हाल मे अंधेरा हैं, कहीं आप बच्चों से टकराकर गिर न पडे, वे वहाँ ठिप्पे का खेल खेल रहे होंगे। आपके टकराने से उन्हे चोट नही पहुचेगी, क्योंकि ठोकरे और मुक्के तो उनकी रोज की खुराक ही है। इसके अलाव उन बेचारों को मिलता ही क्या है? जहाँ यह हालवाला कमरा मुडता है और गहरे अंधेरे मे विलीन-सा होता दिखाई पड़ता है, जीने की सीढिया हैं। फिर दनादन जीने ही जीने हैं। इन पर आप छू-छू कर ही चढ पायेगे क्योंकि सूझता कुछ भी नही। क्या आपका दम घुट रहा है? हा। लेकिन आप इससे ज्यादा की उम्मीद कर भी कैसे सकते हैं? इन सीढ़ियों तक जो कुछ हवा पहुचती भी है, वह हाल के दरवाजे से ही आती है और वह हमेशा खुलता और बन्द होता रहता है। कुछ हवा अन्धेरे बिस्तर-खानो की खिड़कियों से भी आती है। इन कमरो मे हवा-रोशनी का प्रवेश सिर्फ जीने से ही होता है। अभी-अभी आप जिस चीज से भिड गये हैं, वह एक औरत थी जो नल पर बाल्टी मे पानी भर रही थी, हाल के रास्ते मे ही नालिया हैं, जिससे सभी किरायेदार उनका इस्तेमाल आसानी से कर सके और गरमी मे उन नालियों की गन्दगी का सभी पर एक सा जहरीला असर हो। पम्प की चिल्लपों आप सुन रहे हैं। यही इस चाल के बच्चों को सुलाने के लिए लोरी का काम देती है।"

इन गन्दी बस्तियों का अन्त करने का प्रयत्न बहुत दिनो तक चलता रहा। कई मोर्चो पर उसके लिए लड़ाइयाँ लडी गयीं। इनमे अक्सर छूत की बीमारियों, आग और महामारी के भयकर परिणामों का हवाला देते हुए रिचर्ड वाट्सन गिल्डर ने सबसे रद्दी चालो को गैर-कानूनी घोषित करने और दूसरी चालों मे हवा और सफाई का बन्दोबस्त बाध्य करा देने के लिए कुछ अनिच्छुक विधायको को राजी कर लिया था। जेन एडम्स तथा लिलियन वार्ड जैसे अप्रतिहत सामाजिक कार्यकर्ताओं ने, इग्लैण्ड के टायनबी हाल के उदाहरण से प्रभावित होकर, बड़े-बडे शहरों की गन्दी बस्तियों के बीच 'सेटलमेण्ट हाउसों' की स्थापना कर डाली, जिनमे से चिकागो का हलहाउस तथा न्यूयार्क का हेनरी स्ट्रीट सेटलमेण्ट, जगप्रसिद्ध हो गये। दशक की समाप्ति से पहले ही इस तरह के १०० के लगभग सेटलमेण्ट हाउस स्थापित हो गये और उन्होंने

राहत, शिक्षा तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य के विस्तृत तथा वैविध्यपूर्ण कार्यक्रम अपने हाथ मे ले लिये। बच्चो को गलियो मे खेलने, आवारा घूमने तथा बदमाशो के चगुल से बचाकर उनके लिए स्वास्थ्य तथा सुरुचि और शालीनता के बेहतर मौके प्रस्तुत करने की गरज से शहर की घनी आबादियो मे भी खेल के मैदान तैयार किये गये। 'स्वच्छ-वायु-कोषो' के जरिये उनके लिए देहातों मे छुट्टिया बिताने का इन्तजाम किया गया। जो लोग दूध खरीदने मे असमर्थ थे, उनके लिए दूध-केद्र खोलकर मुफ्त दूध सप्लाई करने का प्रबन्ध किया गया। दिन मे काम करने वाले दाई-घरो ने कारखानो मे करने वाली माताओ के बच्चो की देखरख रखने की उनकी परेशानी अपने पर ले ली। दाइयों के यायावर असोसियेशन की ओर से उन्हे डाक्टरी तथा दाईगिरी की मुफ्त सहायता दी जाने लगी और यगमेन्स क्रिश्चियन असोसियेशन तथा ब्वाय स्काउट्स द्वारा किशोरों के लिए अपनी प्रतिभा व्यक्त करने के स्वस्थ तथा आम साधन प्रस्तुत कर दिये गये।

सुधारको का ध्यान जिस समस्या ने सर्वाधिक आकर्षित किया, वह थी अपराध की समस्या। बच्चो मे अनैतिकता बेहद बढ रही थी। सन १८८० के बाद के दशक मे जेलो मे अपराधियो की सख्या ५० प्रतिशत बढ गयी थी। इनमे बालक अपराधियो की तादाद इस सख्या का पॉचवा भाग थी। सयुक्त राज्य अमरीका बहुत दिनों पहले से ही दण्ड तथा जेल-सुधारो पर ध्यान देता चला आ रहा था, लेकिन एडवर्ड लिविंगस्टन, डोरोथिया डिक्स तथा फ्रेडरिक वाइन्स जैसे विद्वान् समालोचकों के प्रयत्नो के बावजूद भी बहुत से राज्यो का दण्ड-विधान जगली देशो जैसा ही चला आ रहा था और कुछ राज्यो के जेलखाने तो कलकत्ता की कालकोठरी की याद दिलाते थे। अपराधी का सुधार करने के बजाय उसे सजा देने की पुरानी मनोवृत्ति बडी मुश्किल से ही दूर हो रही थी। इसी तरह पुलिस की नृशसता, उसके निम्न दर्जे के तौर-तरीके, तथा अमीरो के लिए एक तरह का और गरीबो के लिए दूसरी तरह का कानून बरतने की आदत भी बडी मुश्किल से दूर हो रही थी। इलिनोइस के आल्ट गेल्ड ने, जिसने हे मार्केट के अराजकतावादियो को क्षमादान दिया था, यह तर्क पेश किया कि अपराधो के लिए व्यक्ति की अपेक्षा समाज ज्यादा जिम्मेदार हुआ करता है। इसीलिए उसने अपने राज्य की दडसहिता मे सुधार करने का साहसी प्रयत्न लगातार किया। उसके एक शिष्य जोन्स ने भी, जो टोलेडो का निवासी था, यही रूख अख्तियार किया और उस पर एक नाटक भी लिखा।

"वह हमेशा शहर के जेलखानो मे या परिश्रमालयों मे जाया करता था," ब्राण्ड व्हिटलाक लिखता है, "और वहा के गरीब इन्सानों से वह उसी तरह बात करता था, मानों वह उनमे से ही एक हो। वह सदा उन्हें जेल से छुडाने का प्रयत्न करता रहता था। अन्त मे उसका और मेरा यह समझौता-सा हो गया कि वह उनके मुकद्दमो का खर्चा जुटायेगा और मै पैरवी किया करूगा। . . उदाहरणतः यदि कोई गरीब लडकी पकडी जाय और उसके वास्ते जूरी द्वारा सुनवाई की मॉग की जाय और उसके मुकद्दमे पर, उतना ही ध्यान और धारणा व्यक्त की जाय जितनी किसी अमीर आदमी के मुकद्दमे पर, तो निश्चय ही पुलिस जब देखेगी कि वह उसे सजा न दिला पायेगी तो वह जरूर ही वैयक्तिक स्वतत्रता के अधिकार के प्रति अधिक जागरूक हो उठेगी। उसके इन प्रयत्नों के फलस्वरूप वास्तव मे पुलिस मानवीय अधिकारो तथा मानव जीवन का अधिक आदर करने लगी थी।"

लेकिन इस प्रकार के उपाय तकलीफ को थोडा घटा भर देनेवाले साबित होते थे, असली सुधार उनसे न हो पाता था। इनसे ज्यादा महत्वपूर्ण उपाय साबित हुए—'अनिश्चित आज्ञा' और 'प्रोबेशनरी सिस्टम' यानी 'परीक्षण के लिए मुक्ति की' प्रथा। टामस मौट ओरबोर्न के उदाहरण से प्रभावित होकर कुछ जेलों ने सफाई करनी शुरू की और बेडी से जकडे अपराधी गुटो तथा कैदियों को किराये पर चलाने की प्रथा के खिलाफ एक निर्धारित अभियान प्रारभ किया गया। ये प्रथाएँ दक्षिण मे बेहद प्रचलित थी। बाल-अपराधियों के लिए खास अदालतों की व्यवस्था की गयी। जज बेन लिण्डसे—जिन्होने कोलेरेडो राज्य के डेनवेर नगर के बाल अपराधी, न्यायालय की अध्यक्षता २५ वर्ष से भी ज्यादा समय तक की थी—की ओर राष्ट्र का ध्यान इसलिए आकर्षित हुआ कि उन्होंने बाल अपराधो की सख्या मे बेहद कमी करा दी।

अपराधो तथा गरीबी का एक स्पष्ट कारण—लोगों के ख्याल मे—सैलून ही था। इसलिए इन वर्षो मे मदिरा के दैत्य पर लगातार आक्रमण होते रहे जिसका परिणाम यह हुआ कि देश भर मे शराबबन्दी लागू कर दी गयी। नशाबन्दी आन्दोलन की शुरूआत तो प्रजातत्र की स्थापना के प्रारभिक वर्षो मे ही हो चुकी थी तथा गृह-युद्ध से बरसों पहले ही हजारों लोगो ने नशा छोडने के प्रतिज्ञा-पत्रो पर दस्तखत किये थे। न्यू इग्लैण्ड के कई राज्यों ने कानून द्वारा नशाबन्दी करने के कुछ प्रयोग भी किये थे। लेकिन युद्ध के बाद के वर्षों मे बीयर तथा तेज किस्म की शराबों का उपयोग शहरों तथा सैलूनो मे बेहद बढ

गया। सन् १९०० तक न्यूयार्क, बफैलो तथा सानफ्रांसिस्को जैसे शहरों में प्रति दो सौ निवासियो के पीछे एक सैलून खुला पाया गया। इनमे से कुछ तो 'गरीबो के क्लब' मात्र थे, बाकी सैलूनो मे बेलगाम नशा जो अश्लीलता की सीमा को भी पार कर जाता था, चला करता था। इतवार को बन्द रखने के नियम का अनवरत उल्लंघन होता था। लाइसेन्सो पर लगायी गयी लम्बी फ़ीस को पचा जाने का प्रयत्न चलता रहता था, यहा तक कि शराब बेचनेवालो ने सर्वत्र राजनीतिक क्षेत्र के निकृष्टतम तत्वो के साथ मिलकर गुट भी बना लिये और इस तरह राजनीतिक प्रभाव प्राप्त करना शुरू कर दिया।

इन परिस्थितिओ का मुकाबला करने के लिए सन् १८६९ मे ही एक मद्य-निषेध दल सगठित किया गया, लेकिन उसका कुछ नतीजा न निकला। उससे ज्यादा प्रभावशाली सगठन तो थे 'विमेन्स क्रिश्चियन टेम्पेरेन्स यूनियन', 'एण्टि सैलून लीग' तथा 'एवेन्जेलिकल गिरजाघर'। ये सस्थाएँ राजनीतिक आन्दोलन से सन्तुष्ट न थी और अखबारो के जरिये सतत प्रचार करती रहती थी। गिरजाघरो, 'लेक्चर हालों' तथा स्कूलो मे भी उनका प्रचार-कार्य चलता रहता था। इन नशाबन्दी सेनाओ का नेतृत्व अनेक वर्षो तक फ्रान्सिस विलार्ड ने किया। वह नशाबन्दी का काम करने वाली महिलाओ को सैलून मे ले जाकर वहा उनसे धार्मिक गान तथा दो जानू होकर प्रार्थनाएँ करवा कर खुद दुश्मन के भीतर तक धावे मारा करता था।

शताब्दि समाप्त होते होते तक इन तरकीबो की वजह से सात राज्यो मे नशाबन्दी लागू हो गयी। ये सातो राज्य ग्रामप्रधान राज्य थे। इनके अलावा, बहुतेरे अन्य राज्यो मे 'स्थानीय विकल्प' की प्रथा भी चल पडी। नयी शताब्दि के प्रारभिक वर्षो मे नशाबन्दी आन्दोलन ने काफी सफलता प्राप्त कर ली और पहले विश्वयुद्ध के शुरू होने से पहले अमरीका की दो तिहाई आबादी नशाबन्दी के क्षेत्र मे आ गयी। सिर्फ शहरो मे ही हिचकिचाहट मौजूद थी और वे इस कानून की अवहेलना कर रहे थे। इसमे शक है कि नशाबन्दी-आन्दोलन सामान्य परिस्थितियो मे इतनी सफलता प्राप्त कर सकता। लेकिन विश्वयुद्ध ने उसे काम करने और सफल होने का मौका दिया। लडाई के प्रारभ मे काग्रेस ने बचत के ख्याल से तथा दक्षता और सदाचार बनाये रखने के ख्याल से भी मादक द्रव्यों का उत्पादन और विक्रय बन्द कर दिया और इससे पहले कि काग्रेस के इस कानून की अवधि समाप्त होती, सघीय

विधान मे नशाबन्दी को मान्यता मिल गयी। सविधान में यह कानून दस बरस तक लिखा रहा, लेकिन यह श्रेष्ठ प्रयोग आगे जाकर असफल हो गया और सन् १९३३ मे उसे मंसूख कर देना पडा तथा यह समस्या राज्यो के सामने फिर से उठ खडी हुई।

राज्यों द्वारा पथ-निर्देश : इन सब सुधार-आन्दोलनो के इतिहास से एक ही स्पष्ट शिक्षा प्राप्त होती है—वह यह कि स्वयं व्यक्तियो द्वारा तथा वैयक्तिक संगठनों द्वारा सुधार कर सकना बडा मुश्किल है, उसके लिए कानून का सहारा लेना जरूरी होता है। न्यूयार्क चैरिटी आर्गेनाइजेशन सोसाइटी की संस्थापिका तथा अन्य सुधार-कामों में लगी श्रीमती जोसेफाइन शा लावेल ने वैयक्तिक दान-पद्धति के अनुभवों से निरुत्साहित होकर सभी सार्वजनिक कार्यों से हाथ खींच लेने का निश्चय कर लिया था। उन्होने बताया, "मेरे ख्याल से श्रमिकों के लिए और भी ज्यादा महत्व का काम करने को अभी पडा है।" इस शहर में ५ लाख श्रमिक हैं जिनमे २ लाख औरते हैं। इनमे से ७५००० भयानक परिस्थितियों मे तथा बहुत कम मजदूरी पर काम करती हैं। अगर श्रमिको को वह सब मिल सकता जो उन्हें मिलना चाहिए तो फिर कगालों और अपराधियों का कही पता भी न रहता। इससे पहले कि वे पतन के गड्ढे में जा पडे, उनकी रक्षा करना जरूरी होता है, क्योंकि अधःपतित हो जाने पर उनकी देखभाल करने से उतना लाभ नही होता।"

निःशुल्क कार्य तथा दानादि से लोगों की तकलीफ ही कुछ कम की जा सकती थी, बुराइयों का नाश उससे नहीं होता था। इसीलिए वे मानवता-वादी लोग भी, जिनका राजनीतिक कार्यवाही पर विश्वास न था, अन्त मे धारा-सभाओं के कक्षों में हाथो मे हैट पकडे, सहायता की पुकार मचाते पाये जाते थे। गंदी बस्तियों का नाश, जेलों का सुधार, बालकों की मुक्ति, नशाबन्दी आदि सभी सुधारों के लिए धारासभाओं द्वारा कार्यवाही किया जाना आवश्यक पाया गया था। अगर अन्य कुछ मौलिक आवश्यकताएँ भी प्राप्त करनी होती थीं तो वे भी राज्य के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती थी।

सुधार आन्दोलन के प्रथम महान् सघर्ष राज्यों मे ही लडे गये और बहुत से प्रश्नो को राष्ट्रीय स्तर मिल जाने पर भी राज्य ही सुधार-आन्दोलन के मुख्य रणागण बने रहे। बार-बार दुहराने की जरूरत नहीं कि अमरीका के राष्ट्रीय विधान के अन्तर्गत समाज सम्बन्धी सभी मामलों में कार्यवाही करने का

क्षेत्राधिकार राज्यों को ही है। श्रमिकों की मजदूरी और काम के घण्टों, फैक्टरी मे कार्य के हालात, नारी तथा बाल कल्याण, शिक्षा, मताधिकारी, जेल, सुधारक स्कूल, दातव्य सस्थाएँ, म्युनिसिपल प्रशासन आदि सभी बातें राज्याधिकार के अन्तर्गत मानी गयी थीं। उनका सघीय अधिकारक्षेत्र से सबन्ध न था। नये आन्दोलन ने ये सब बदल डाले। लेकिन ऐसा करने के लिए और इस परिवर्तन का औचित्य साबित करने के लिए एक राष्ट्रव्यापी विधान की, और उसे कार्यरूप मे परिणत करने के लिए साहसी प्रशासन की जरूरत थी। अन्त में सुप्रीम कोर्ट के विरोध का प्रतिरोध करने के बाद ही यह सब काम पूरा किया जा सका।

उस समय राज्य सुधार आन्दोलनों की प्रयोगशालाएँ बने हुए थे क्योंकि राज्यों मे ही पहले उन सब सुधारों की परीक्षा की गयी थी जो बाद मे राष्ट्रीय सुधारो के रूप मे ग्रहण किये गये। राज्यों मे ही उनकी सैद्धान्तिक उपादेयता अथवा क्रियात्मक अपर्याप्तता सिद्ध हुई थी। उन सुधारकों का प्रशिक्षण भी, जो बाद मे राष्ट्रीय स्तर के सुधारक माने गये पहले राज्यों मे ही हुआ था। थियोडोर रूजवेल्ट पहले न्यूयार्क शहर मे पढता था और वाशिंगटन जाने से पहले कुछ समय तक अल्बानी मे भी उसने शिक्षा ग्रहण की थी। ला फोले ने भी रेलवे-सबन्धी अर्थशास्त्र तथा विधि-नियत्रण कानून की शिक्षा पहले विस्कोन्सिन मे ही ली थी, तब कही उसने अपने इस ज्ञान का उपयोग राष्ट्रीय सुधार मार्ग मे किया। विल्सन ने भी पहले न्यू जर्सी राज्य के गवर्नर की हैसियत से उदारदलीय नेताओं मे नाम कमाने के बाद राष्ट्राध्यक्ष के रूप मे उसे और अधिक उज्ज्वल किया। एल्बर्ट बी कम्मिन्स, जार्ज नौरिस, फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट आदि सभी नेताओं ने पहले अपने अपने राज्यों मे ही नेतागिरी की उम्मीदवारी की थी।

लेकिन इन राज्यो ने क्या क्या सुधार किये? बहुतो का पहला काम तो था राजतन्त्र को लोकशाही के अनुकूल बनाना। समारम्भ, निर्णयार्थ जनमत, गुप्त मतदान, प्रत्यक्ष प्राथमिक चुनाव तथा सिनेटरो का प्रत्यक्ष चुनाव, भ्रष्टाचार-निरोधी कानून, नागरिक स्वराज्य, और नारी-स्वातन्त्र्य आदि की समस्याओं को उन्होंने सुलझाया। अन्य प्रयत्न आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किये गये। रेल-मार्गों तथा निधियों का नियन्त्रण, सार्वजनिक उपयोगिता आयोग, कर सुधार, श्रमिकों के काम के घंटों और हालात का नियमन, कामगारों के लिए मुआवजे की व्यवस्था, तथा बालकों से मजदूरी कराने पर प्रतिबन्ध लगवाना आदि काम

इस दिशा में किये गये। कुछ राज्यों ने सामाजिक सुधारों के विशाल पहलुओं —शैक्षणिक सुधार, सार्वजनिक स्वास्थ्य पुरोगम, तथा प्राकृतिक साधनों के सरक्षण आदि को भी अपने हाथ में लिया।

तात्कालिक समस्या थी प्रशासनों को काबू करने की और उसमें भी टेढ़ा सवाल यह था कि राज्य-सरकारें ज्यादा भ्रष्ट हैं या नागरिक प्रशासन। सभी तरह भ्रष्टाचार का क्षेत्र इतना व्यापक और इतना आकर्षक था कि जिसकी हद नहीं और फिर कमाई करने की भी वहाँ हद न थी। राज्य की धारासभाएँ तथा सिटी काउन्सिलों के हाथ में बहुत से बहुमूल्य अधिकार देने की शक्ति थी। वे सार्वजनिक उपयोग की वस्तुओं के विनियोग, रेलमार्गों तथा सेवाओं के दर-निर्धारण, कराधान तथा कर-सग्रह, जन-मार्ग निर्माण के ठेके देने, सैलूनों का मूलोच्छेदन करने जैसे अधिकारों से सज्जित थीं। इसमें करोड़ों डालरों के वारे-न्यारे हो सकते थे और व्यापारी लोग अपनी हिमायत, मुक्ति तथा सरक्षण आदि के लिए अच्छे दाम खर्चने को तैयार रहते थे। इन राशियों की अदायगी, ज्यादातर खुले आम दी जाने वाली रिश्वत की शक्ल में नहीं हुआ करती थी। कभी कभी वह राजनीतिक अभियानों में पैसे की सहायता, अथवा किसी राजनीतिक उन्नति अथवा वकीलों की वकालत की तरक्की का रूप धारण कर लेती थी। शक्ल वह चाहे जैसी अख्तियार करे, लेकिन उसका असर जरूर होता था। उस प्रभाव को देखकर स्वयं सुधारकों को ही बाद में काफी आश्चर्य होता था।

शताब्दि की समाप्ति पर मिसूरी राज्य के हालात का अनुसधान करने के लिए नियुक्त समिति जिस परिणाम पर पहुँची थी वह यों है: "पिछले १२ साल से भ्रष्टाचार राज्य की विधान-सभाओं में आम और स्वीकृत शक्ल में चलता रहा है और उसमें न तो कभी बाधा ही डाली गयी, न कभी उसे किसी ने रोकने का ही प्रयत्न किया।" जूरी का यह फैसला, सघराज्य के हर एक राज्य के बारे में किसी न किसी वक्त और किसी न किसी शक्ल में सच्चा बना रहा है। न्यू हैम्पशायर से कैलिफोर्निया तक, न्यू मैक्सिको से मोण्टाना तक विधायक लोगों का नीलाम बोला जाता था। हर जगह बड़े बड़े कार्पोरेशनों के इन सदनों में हिमायती मौजूद रहते थे जो रिश्वत का निर्लज्ज रूप से व्यवहार करते थे। जहा रिश्वत से काम न निकलता वहा वे धमकी द्वारा काम कराया करते थे। हैम्पशायर राज्य में, जैसा कि विन्स्टन चर्चिल ने अपने उपन्यासों —'कोनिस्टन' और 'मिस्टर क्रयूज केरीयर' में लिखा है, रेलमार्ग-कम्पनियाँ

सब पर एकाधिपत्य जमाये हुए थी। फ्रैंक नौरिस ने भी 'कैलिफोर्निया' नामक उपन्यास सदर्न पैसिफिक राज्य के बारे मे लिखा। ताम्बे के बडे व्यापारियों के कारण मोण्टाना राज्य भ्रष्ट हो रहा था। रेलमार्गों और इश्योरेन्स स्वामियो ने न्यूयार्क राज्य की धारासभा को खरीद रखा था। न्यू मैक्सिको जैसे सीमान्त के एक नये राज्य मे भी दो या तीन रेल कपनियां, कोयला तथा खनिज कम्पनियो, लकडी और भूमि-सट्टे के व्यापारियो तथा बडे खेड मालिकों के एक गुट ने सारे राज्य पर धाक जमा रखी थी। कोयला कम्पनियां ने राज्य की खनिजभरी मूल्यवान जमीन के हजारो एकडो पर कब्जा जमा रखा था। लकडी के व्यापारियो ने जगलो मे लूट मचा रखी थी। खेडवाले लोग हजारो जानवर और भेड़े सार्वजनिक भूमि पर चराया करते थे। रेल तथा खान व्यापारी श्रमिक कानूनो का उल्लघन करते रहते थे और कर न देते थे।

विभिन्न राज्यो द्वारा किये गये भ्रष्टाचार-निरोध तथा राजनीतिक प्रयत्नो का विवरण फिर से यहा देना ठीक न होगा। एक ही राज्य का एतद्विषयक इतिहास यहा देकर उस प्रवृत्ति का, जो उस समय पूरे यूनियन मे जारी थी, दिग्दर्शन कराया जा सकता है। सन् १८८० मे विस्कौन्सिन एक फलता-फूलता और चैतन्य राज्य था, लेकिन उसका शासन तीन व्यापाराधिपतियों के 'त्रिगुट' के हाथ मे था। वे तीन व्यापारी थे—लखपती लकडी व्यापारी वैस केयीज, फिलीटस सायर तथा रेल कपनियो का वकील जान स्पूनर। इन लोगों ने गुटबाजी के जरिये राज्य के सभी राजनीतिक मामलो पर अधिकार कर रखा था। फ्रेडरिक सी हो के लेखानुसार समूचा राज्य ही "रेलवे, लकडी और कर मुक्त व्यापारियो का भाट सा बन गया था। ये लोग सघीय पदाधिकारियों के साथ मिलकर गवर्नरो की नियुक्ति कराया करते और सघीय सिनेटरो तथा कॉग्रेसमैनो का नाम निर्देशन तथा चुनाव कराते थे जो इस अनुग्रह के बदले मे अपनी शक्ति का उपयोग करके अपने जन्मदाताओं को अमीर बनने मे सहायता पहुचाते थे। सघ तथा राज्य का सभी अनुग्रह उन पर इसी कारण बरसाया जाता था। धारासभा के अर्धवार्षिक अधिवेशन कुछ थोडे से लोगों को फायदा पहुचाने के तमाशे के लिए हुआ करते थे। राजनीति कुछ थोडे से लोगो का विशेष रोजगार बन गयी थी जिसमे वे महत्वाकाक्षी युवक ही प्रवेश पा सकते थे, जिन्हे राज्यीय तत्र का समर्थन प्राप्त था। ऐसे लोग कम ही थे जो इस व्यवस्था के अतिरिक्त दूसरी कल्पना भी कर पाते थे। इस गुट के शासन का मुकाबला करने की किसी को हिम्मत न होती थी और न

वह चुनाव द्वारा तथा नियुक्ति द्वारा प्राप्त होनेवाले सभी पदों का वितरण अपनी राजनीतिक तथा औद्योगिक शक्ति को कायम रखने के लिये किया करता था। इस गुट का कही भी संगठित विरोध नही किया जाता था। पत्रकार जगत या तो लापरवाही बरत रहा था या फिर उस पर भी इन लोगो का नियन्त्रण था।"

सन् १८८० के लगभग पैयरी मैदानो के राज्यों मे प्रवाहित सुधारो की लहर से प्रभावित होकर राज्यीय विश्वविद्यालय से हाल ही मे बाहर आये राबर्ट एम्. ला फोले ने निश्चय किया कि वह इस गुट का विरोध करेगा। इस गुट के समर्थन के बिना ही वह कांग्रेस का सदस्य बन गया और कांग्रेस के चार अधिवेशनो के लिए उसके लगातार चुने जाने से उस पर जनता का विश्वास कितना था, यह स्पष्ट हो गया। सन् १८९० मे जब डेमोक्रेटो का बृहद् बहिष्कार हुआ तब वह भी चुनाव मे असफल हुआ और तब उसने राज्यीय मामलात की ओर ध्यान देना शुरू किया। जनता उसके साथ थी, लेकिन गुटवाले लोग उससे कोई सरोकार न रखना चाहते थे। इसलिए लगातार तीन अवसरों पर दलपति-अधिकृत कन्वेन्शन (बासरिडन कन्वेन्शन्स) ने उसे ठुकरा कर अपने अनुयायी उम्मीद्वारो का पक्ष लिया। इस अनुभव ने ला फोले को इस गुट का नाश करने की जरूरत महसूस करा दी। उसे यह भी महसूस हुआ कि चुनाव कान्वेन्शनो के जरिये नही, अपितु मौलिक तथा प्रत्यक्ष पद्धति से ही होने चाहिए।

अन्त मे सन् १९०० मे यह 'फाइटिंग बाब' (लड़ाकू बाब) अनिच्छुक कान्वेशन को मजबूर करके नामजद् हो ही गया और उसके बाद वह बडी शान के साथ गवर्नर भी नियुक्त हुआ। अगले २५ साल तक--सिर्फ लडाई के थोडे से दिनो को छोडकर--वह और उसके साथी राज्य पर हावी बने रहे और उन्होंने उसे सबसे अधिक लोकतान्त्रिक, सबसे अधिक उन्नतिशील और सबसे अधिक सुप्रशासित राज्य बना डाला। ला फोले और उसके साथियो द्वारा इस शती के शुरू के दस-बारह वर्षों मे, कार्यरूप मे परिणत किया गया 'विस्कौन्सिन तरीका' हवाई सिद्धान्त मात्र न था बल्कि एक क्रियात्मक और श्रृखलाबद्ध कार्यक्रम था। प्रत्यक्ष तथा मौलिक चुनाव, समारभ, निर्णयार्थ जनमत-सग्रह तथा जजो के अतिरिक्त सभी पदाधिकारियों के प्रत्यावर्तन, मतदान की भ्रष्टाचारी प्रथाओं के निपेध, मतदानार्थ प्रचार और व्यय के सीमाबन्धन, नागरिक स्वशासन, सार्वजनिक सेवा-सुधार, तथा प्रशासन समस्याओ के विषय मे सलाह

देने के लिए विशेषज्ञो की समितियो की नियुक्ति आदि की व्यवस्था करके उसने लोकशाही का क्षेत्र प्रशस्त किया। कार्पोरेशनो द्वारा की जाने वाली लूट-खसोट से राज्य के नागरिको की रक्षा करने के लिए ला फोले ने कमीशनों की स्थापना करके रेलवे तथा अन्य सार्वजनिक सेवाओं का नियन्त्रण करवाया। उसने रेलमार्गों तथा बडी लकडी व्यापारी कपनियो को अपने हिस्से का कर देने के लिए मजबूर किया और पिछले दिनो के हज़्म किये गये करो को भी फिर से उगलवाया। राज्यीय आयकर की तथा सेविंग्स बैंक डिपाजिट पर स्टेट इंश्योरेन्स की भी व्यवस्था उसने करायी। श्रमिको की रक्षा हेतु कामगार मुआवजा कानून भी बनाये गये तथा साथ ही साथ बच्चो से मजदूरी कराना निषिद्ध कर दिया गया और औरतो के लिए काम के घटे सीमित कर दिये गये। रेलो का भाडा कम करके खेती को प्रोत्साहित किया गया। इसके अलावा खेती की उन्नति के लिए जलविद्युत् कार्यक्रम बनाया गया, परीक्षणार्थ स्टेशन खोले गये और राज्यीय विश्वविद्यालय से सम्बद्ध खुले फार्म भी चलाये गये।

किस प्रकार ला फोले ने विश्वविद्यालय को राज्य का स्नायुकेंद्र बना दिया, यह देखकर बडा आश्चर्य होता था। अध्यक्ष वान हिस ने, जो स्वयं एक बहुत बडा विज्ञानवेत्ता था, राज्य के मेण्डोटा झील-तटस्थित विज्ञान-विद्यालय मे बडे बडे विज्ञानवेत्ताओ का जमघट लगा दिया, जिससे उसे बडी प्रसिद्धि प्राप्त हुई। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात उसने यह की कि विश्वविद्यालय के लोगो के मन मे यह धारणा दृढमूल कर दी कि राज्य के लोगो की सेवा करना ही विश्वविद्यालय का धर्म है। विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्री रेलवे तथा टैक्स कमीशनो के सदस्य बनाये गये। उसके राजनीतिवेत्ताओं से धारासभाओ मे पेश होने वाले बिलो का मस्विदा तैयार कराया जाने लगा। उसके इतिहासशास्त्रियो से स्थानीय इतिहास का सशोधन कराया गया। विश्वविद्यालय के इजीनियरो से सडक-निर्माण के कार्यक्रम तैयार कराये गये और यूनिवर्सिटी के कृषि-कालेज मे किसानो को क्रियात्मक पशुपालन की शिक्षा देने की व्यवस्था की गयी। वहा इस प्रकार के अनुसधान भी किये गये जिनसे न केवल राज्य के ही, बल्कि पूरे राष्ट्र के किसानो को लाखो डालरो की बचत हुई, यहॉ तक कि विस्कौन्सिन नयी दुनिया का डेन्मार्क कहलाने लगा।

क्रियात्मक प्रगतिवाद का एक उदाहरण विस्कौसिन ने पेश कर दिया और उसकी ओर राष्ट्र भर की आखे लग गयी। ला फोले ने सिद्ध कर दिखाया कि सुधार करने के लिए पहले सिद्धान्त बनाने की जरूरत नहीं हुआ करती और

विद्वान और वैज्ञानिक भी क्रियात्मक राजनीति मे सहायक हो सकते है। उसने यह भी दिखा दिया कि बगैर समाजवादी कहलाये भी राज्य सार्वजनिक उपयोग के साधनो का नियन्त्रण कर सकता है तथा इस प्रकार का नियन्त्रण स्वय इन साधनो तथा आम जनता, दोनो के लिए लाभदायक होता है। उसने साबित कर दिया कि राजनीतिक परीक्षणो के लिए राज्य एक प्रयोगशाला साबित हो सकता है। उसकी इस सफलता ने न केवल अन्य राज्यो का ही, बल्कि समस्त राष्ट्र का भी मार्गदर्शन इस विषय मे किया।

थियोडोर रूजवेल्ट तथा न्याय्य-व्यवहार : विस्कौन्सिन की सफलता का उदाहरण भले ही कितना भी प्रशसनीय रहा हो, लेकिन यह बात साफ जाहिर हो गयी कि सुधारक लोग जिन समस्याओं को हल करना चाहते थे, उनमे से अधिकाश समस्याएँ विभिन्न विभागों मे ही हल नही हो सकती थीं। सुधार जब तक राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत न किये जायेगे तब तक वे कभी प्रभावशाली न होंगे तथा यह भी कि केवल राष्ट्रीय सरकार ही उन सुधारो को सफल बना सकती है। काग्रेस ने पहले ही कुछ प्रखर प्रगतिशाली कानून बनाये थे—१८८३ का पेण्डलेटन सिविल सर्विस एक्ट सन् १८८७ का इन्टरस्टेट कामर्स एक्ट, १८९० का एण्टि-ट्रस्ट एक्ट, रेलमार्गों मे काम करने वाले श्रमिकों के झगडों मे समझौता कराने के लिए सन् १८९८ मे बनाया गया ईडमैन-एक्ट, इसके उदाहरण थे। लेकिन ये कानून तथा इसी तरह के अन्य अधिनियम भी दो कारणो से बहुत कम प्रभावशाली साबित हुए थे—पहला तो यह कि उनका काफी सख्ती से प्रतिपालन नहीं कराया जाता था, दूसरे वे अपने उद्देश्य की गहराई तक न पहुचते थे। दरअसल वे सार्वजनिक माग को पूरा करने के लिए अनुत्सुक काग्रेस द्वारा दिखायी गयी शान भर थे।

एक पीढी तक लगातार सघीय शासन ज्यादातर रिपब्लिकन नेताओ के हाथों मे रहा था। वे लोग 'जियो और जीने दो' के तात्कालिक सिद्धान्त पर आस्था रखते थे। इसलिए उन्हे नयी किस्म की सामाजिक तथा आर्थिक मागो मे कोई दिलचस्पी न थी। अविकल्प रूप से वे बडे व्यापारियो के मित्र थे और गृह युद्ध के पुराने लोगों को बडी उदार पेशनें देने के लिए कानून बनाने की कोशिशे करते रहते थे। उनके शासन मे, दबाव डालकर मतलब गाठने वाले गुटो तथा निहित स्वार्थों की ही चलती थी। इन गुटों का यह प्रभाव उस काल मे प्रायः अक्षुण्ण ही बना रहा। रिपब्लिक दलीय राष्ट्राध्यक्ष

ग्राण्ट, हेयीज, गार्फील्ड, आर्थर, हैरिसन, मैक्किन्ले आदि लोग यद्यपि बडे योग्य तथा मान्य व्यक्ति थे, लेकिन सामूहिक रूप से उनमे दूरन्देशी की कमी थी। सर्जिका वृत्ति भी उनमे न थी। लेकिन डेमोक्रैट दल के एक राष्ट्राध्यक्ष क्लीवलैण्ड मे चारित्रिक दृढता, अदम्य साहस हद दर्जे का था और सार्वजनिक हितपूर्ण सुधारो की योजना उसके पास मौजूद थी। उसने सघीय प्रशासन के सभी अनुभागों को सुधारा, सार्वजनिक भूमि के विशाल क्षेत्र उसने कार्पोरेशनो के चगुल से निकाले, पेशनो की आपाधापी तथा इसी तरह के अन्य विशेष कानूनो का मुकाबला किया, सिविल सर्विस को शक्ति प्रदान की तथा काग्रेस पर जोर डालकर तटकर मे कमी कराने का कानून भी पास कराया जिसके साथ आयकर भी नत्थी था, लेकिन इस कानून को सुप्रीम कोर्ट ने तुरन्त रद्द कर दिया। क्लीवलैण्ड का कार्य-काल अनेक बार भंग हुआ और उस बीच बहुत सी मुसीबतें भी आयीं। बडे औद्योगिक राज्यों मे तथा किसी हद तक वाशिगटन मे भी शासन की बागडोर न्यूयार्क के प्लैट, पेसिलवानिया के क्वे और ओहियो के हन्ना जैसे लोगों के हाथो मे थी। ये लोग अच्छे प्रशासक नहीं थे। अपने कार्पोरेशनी मालिकों का मतलब बनाने और अपने दल के पिट्ठुओं को इनाम बाटने के अलावा, उनमे और कोई काम करने की लियाकत भी न थी। अधिकाश काग्रेसी सदस्य ज्यादातर ऐसे पार्टीबाज लोग होते थे, जिनका काम सिर्फ अपनी व्याख्यानबाजी से 'कॉग्रेस नेशनल रेकार्ड' के पृष्ठ भरना मात्र होता था। फ्राक कोट और ऊची टोपिया लगा-लगाकर वे हर प्लैटफार्म पर सुशोभित हो जाते थे, लेकिन इन लोगों ने एक भी कानून ऐसा नही बनाया जिससे अमरीकी इतिहास रत्तीभर भी परिवर्तित हुआ हो।

पहले वीवर के तथा उसके बाद ब्रायन के नेतृत्व मे काम करने वाली किसान जनता ने दोनो के पुराने खुर्राटो के दिल दरअसल दहला दिये। अनेको राज्यो मे जमीनो की बाबत उठ खडे होने वाले विद्रोहो ने स्पष्ट कर दिया कि सुधारो मे अब ज्यादा देर नही की जा सकती। इसके बाद स्पेन की लडाई शुरू होगयी, सुधारो की बात उस वक्त दब गयी और सन् १९०० का अभियान साम्राज्यवाद के बनावटी प्रश्न को लेकर शुरू किया गया था और मैक्किन्ले, जिसने इस प्रश्न के दोनो पहलू देखे थे—फिर दुबारा चुन लिया गया, जबकि ब्रायन फिर दुबारा असफल हुआ। इस दल की सफलता इस समय चरमसीमा तक पहुच चुकी थी और ऐसा लगता था मानो राष्ट्र फिर

एक बार मौजूदा व्यवस्था को ही लम्बे अरसे तक चलने देना चाहता हो।

लेकिन ६ सितम्बर, १९११ को किसी अराजकतावादी ने मैक्किन्ले को गोली मार दी और एक सप्ताह बाद हुई उसकी मौत के साथ ही साथ अमरीकी राजनीति का पासा ही पलट गया। नौजवान थियोडोर रूजवेल्ट मे जो इस नाटकीय घटना के बाद राष्ट्राध्यक्ष-पद पर जा पहुंचा था, राष्ट्र ने मार्के के प्रोत्साहक तथा शक्तिशाली नेता के दर्शन किये तथा प्रगति-आन्दोलन को एक राष्ट्र-नायक मिला। रूजवेल्ट अमीर घराने मे पैदा हुआ था और पैसेवाले लोगों मे उसका लालन-पालन हुआ था। शिक्षा उसने हार्वर्ड मे पायी थी। इस पर भी वह पूरी तरह लोकतन्त्र-परायण था और सुधार-कार्यों मे उसकी गहरी अभिरुचि थी। इसके साथ-साथ वह वास्तविकतावादी राजनीतिज्ञ था और था उत्साही राष्ट्रवादी तथा निष्ठावान रिपब्लिकन। जेफर्सन को छोड कर वह अन्य सभी अमरीकी राष्ट्राध्यक्षों मे सर्वाधिक बहुमुखी प्रतिभावाला राष्ट्राध्यक्ष था। उसमे जेफर्सन जैसी बौद्धिक गहराई न थी और न वैसी सूक्ष्मदार्शीता। जेफर्सन का दार्शनिकतापूर्ण आदर्शवाद और वैसी दृष्टि भी रूजवेल्ट मे न थी। वह पशुओं के रैंचों पर भी काम कर चुका था, बडे शिकार भी उसने किये थे, कई किताबे लिखी थी, न्यूयार्क की सिटी पुलिस का शासन प्रबन्ध किया था, सघीय सिविल सर्विस के प्रबन्ध मे सहायता पहुंचायी थी, नौसेना का निर्देशन किया था, क्यूबा में युद्ध किया था और न्यूयार्क मे अपने को प्रथम श्रेणी का गवर्नर भी सिद्ध किया था। उसे अध्ययन का बेतरह शौक था और सभी विषयों की पुस्तके वह पढ़ता था, सभी कामों मे वह रुचि लेता था और सभी विषयों पर उसने अपना मत बना लिया था। उसके उत्साह, अध्यवसाय और वैचित्र्य ने उसे नागरिक औचित्य का अप्रतिम और प्रभावी उपदेशक बना दिया था। एण्ड्रू जैक्सन के समान वह सीधे-सादे आदमियों का विश्वास आसानी से जीत लेता था और अपने सघर्ष में नाटकीयता भी उसी की तरह पिरो देता था। जैक्सन के समान रूजवेल्ट का भी विश्वास था कि काग्रेस की अपेक्षा राष्ट्राध्यक्ष जनता का अधिक निकटतम व्यक्ति होता है तथा यह भी कि काम कराने के लिए अफसरों का नेतृत्व ज्यादा कारगर हुआ करता है, लेकिन जैक्सन की तरह वह सिविल सर्विस के विशेषज्ञों को सन्देह की दृष्टि से न देखता था।

सालभर के भीतर ही रूजवेल्ट ने दिखा दिया कि वह अमरीका पर छाये हुए महान् परिवर्तनो के प्रवाहों का अभिप्राय अच्छी तरह समझता है और एक अच्छे शासक के समान वह उनका उपयोग करना भी चाहता है। वह रेडिकल

दृष्टिकोण का व्यक्ति न था, बल्कि स्पष्ट विचारों का रूढिवादी ही था। वह मौजूदा आर्थिक व्यवस्था मे क्रान्तिकारी परिवर्तन नही करना चाहता था, बल्कि उसकी बुराइया दूर करके उसकी रक्षा करना चाहता था। उसने यह सिद्ध करने का निश्चय कर लिया था कि व्यापारियो से सरकार का दर्जा बडा है और वह व्यापार का भाट या लट्टू नही रह सकता। वह जन-साधारण के साथ न्याय्य-व्यवहार किये जाने की हिमायत करना चाहता था।

अपने इन उद्देश्यो को पूरा करने मे रूजवेल्ट ने पापुलिस्ट आन्दोलन, राज्यो तथा शहरो मे फैली हुई प्रगति की लहरो, तथा 'मकरेकरो' के कारण उत्पन्न हुई सार्वजनिक विचारधारा का उपयोग किया। 'मकरेकरो' की लिखी हुई पुस्तके और लेख रिश्वत और भ्रष्टाचार, व्यापारिक चालो, सामाजिक बुराइयो, फिर के वाराना अल्पसख्यकों से दुराव, तथा अमरीका के जनजीवन की अन्य खराबियो के विरोध मे भी थे। ये लोग न केवल स्वय ही सुधारवाद के साधन बने हुए थे, बल्कि उनकी जनप्रियता ने यह सिद्ध कर दिया था कि जनता उन के सदेश पर अमल करने के लिए तैयार हो चुकी थी।

रूजवेल्ट ने एक बार कहा था कि "उद्योगवाद के महान् विकास का अर्थ है व्यापार-व्यवसाय की सरकारी निगरानी में वृद्धि करना।" तुरत ही एण्टि-ट्रस्ट अधिनियम लागू करके रूजवेल्ट ने सरकारी निगरानी को और भी गहरा करने का एक उदाहरण पेश कर दिया। उत्तर के सिक्योरिटी कौम्बिनेशन्स, तथा पेट्रोल और तम्बाकू-निधियों पर लिये गये पूर्व वर्णित प्रहारो के कारण तथा ब्यूरो आफ कार्पोरेशन्स जैसी जागरूक तथा पुलिस कार्रवाई करने वाली सस्था की स्थापना से, बडे व्यापारियों को सरकार के प्रति स्वस्थ आदर भावना बनाये रखने का सबक मिल गया।

लेकिन ट्रस्ट ही एक मात्र ऐसे निहित स्वार्थ न थे, जिन्हे उसकी लाठी का मजा चखना पडा। रेलमार्गों पर सरकारी निरीक्षण का विस्तार रूजवेल्ट प्रशासन की एतद्विषयक सफलताओ का प्रमाण था। स्वय रूजवेल्ट ने ही रेलमार्ग-नियन्त्रण को महत्वपूर्ण प्रश्न की सज्ञा दी थी तथा लगातार जोर डालकर दो नियन्त्रक बिल पास कराने मे वह समर्थ हुआ था। सन् १९०३ के एल्किन्स-एक्ट के जरिये, छपी हुई किराये की दरे ही कानूनी प्रमाणित दरे मानी गयी थीं तथा रेल कपनियो की तरह जहाजी कपनियो को भी छूट देने के लिए दण्डनीय ठहराया गया था। इसी कानून की धाराओ के अनुसार सरकार ने चिकागो की बडी-बडी पैकिंग कम्पनियो तथा स्टेण्डर्ड आयरन कपनी पर

फौजदारी मामले चलाये और उनमें सफलता पायी। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण था सन् १९०६ का हेपबर्न एक्ट, जिसके जरिये इण्टरस्टेट कामर्स कमीशन को दरें नियन्त्रित करने की बाबत वास्तविक अधिकार दिये गये थे। इस एक्ट की वजह से कमीशन का अधिकार-क्षेत्र भाण्डारीकरण तथा प्रान्तर सुविधाओं, स्लीपिंग कारों, एक्सप्रेस कम्पनियों, पाइप लाइनों आदि पर भी स्थापित हो गया। साथ ही साथ इस कानून ने रेल-कम्पनियों को जहाजी कम्पनियों तथा कोयला कम्पनियों में निहित उनके परस्पर संबद्ध स्वार्थों का परित्याग करने के के लिए भी मजबूर कर दिया था। रूजवेल्ट-शासन की समाप्ति तक रियायत करीब-करीब खत्म हो चुकी थी और रेलों के भाड़ों की समस्या भी शेष न रह गयी थी।

श्रमिकों के मामले में इस कड़े रुख की उपर्युक्त नीति का प्रभाव और भी नाटकीय हुआ तथा उसका नैतिक प्रभाव बड़ा महत्वपूर्ण! राष्ट्राध्यक्ष के बारबार टोकने के कारण कांग्रेस ने वर्क्समेन्स कंपन्सेशन एक्ट, सरकारी कर्मचारियों के लिए भी बनाया तथा कोलंबिया जिले के लिए बालश्रम कानून तथा रेलमार्गों के लिए सेफ्टी अप्लायन्सेज कानून भी। स्वयं राष्ट्राध्यक्ष ने इस बात पर ध्यान दिया कि सरकारी दफ्तरों में आठ घंटे काम का कानून ठीक तरह लागू होता है या नहीं; क्योंकि अब तक उसकी काफी अवहेलना ही होती थी। इससे भी ज्यादा दर्शनीय था, सन १९०२ की एन्थ्रासाइट कोयला मजदूरों की हड़ताल में रूजवेल्ट का बीच-बचाव! बड़े प्रयत्नों के बाद नवयुवक जान मिचेली के नेतृत्व में खान मज़दूरों की संस्था युनाइटेड माइन वर्कर्स ने कुछ महत्वपूर्ण सहूलियतें जीती थीं लेकिन खान-मालिकों ने जब उन्हें रद्द कर दिया तो मज़दूरों ने हड़ताल कर दी। खान-मालिकों का नेता था एक बहुत ही बड़ा दकियानूसी व्यक्ति जिस के विचार शायद प्रस्तर-युग से भी पहले के लोगों जैसे थे। उस का नाम था—जार्ज बेयर। उसने घोषणा कर रखी थी कि "श्रमिकों के अधिकारों और हितों की रक्षा तथा खबरदारी श्रमिक आन्दोलन चलानेवाले लोगों द्वारा नहीं बल्कि उन ईसाई लोगों द्वारा दी जायगी जिन्हें भगवान् ने अनन्त विचार के बाद इस देश के सांपत्तिक हितों का नियन्त्रण सौंपा है।" जब मालिकों ने पंच मुकर्रर करने से इनकार कर दिया तो ऐसा लगने लगा कि देश को उस साल जाड़े का मौसम बिना ईंधन के ही गुजारना पड़ेगा। इस मौके पर रूज़वेल्ट ने बीच-बचाव किया और धमकी दी कि अगर खान-मालिकों ने समझौता न किया तो वह खानों पर कब्जा कर लेगा और सैनिकों द्वारा उनका

इन्तजाम करायेगा। इस धमकी का तुरन्त असर हुआ तथा मजदूरो को ज्यादा मजदूरी और काम के कम घण्टो की सहूलियतें मिल गयी।

औसत दर्जे के अमरीकी लोगो के हित की बात हुई सन १९०६ में जब शुद्ध भोजन-सम्बन्धी कानून पास हो गया। बरसो से मास पैक करने वाले तथा भोजन व औषधि तथा पेटेन्ट दवा-निर्माता लोग मिलावटी वस्तुए बेचते आ रहे थे। कृषि-विभाग मे काम करने वाले चीफ केमिस्ट डाक्टर हावी वाइली द्वारा किये गये अनेको भडाफोडो तथा अप्टन सिन्कलेयर द्वारा अपने उपन्यास 'जगल मे' वर्णित चिकागो स्टाकयार्ड सम्बन्धी दिल हिला देने वाले विवरणो के कारण जनता का विरोध इस बारे में उमड पडा था। इस परिस्थिति को ठीक करने के लिए काग्रेस ने मीट इंस्पेक्शन एक्ट तथा फूड एण्ड ड्रग्स एक्ट पास किये जिनसे बहुत-सी बडी-बड़ी खराबिया काफी हद तक दूर हो गयी।

प्राकृतिक साधन-स्रोतों के सरक्षण के सम्बन्ध मे रूजवेल्ट के प्रयत्नो की सफलता आन्तरिक सुधार-सम्बन्धी बडी महत्वपूर्ण सफलता थी। बहुत दिनो से लोग जनता को भुलावा देते आ रहे थे कि देश के जगलो का भडार अक्षय है तथा उसकी भूमि असीम उत्पादिका। लेकिन, शताब्दी के अन्त तक लोगो की आखे खुली, जब उन्हें पता चला कि देश के लगभग तीन-चौथाई जगल खत्म हो चुके हैं, अधिकाश खनिज सपत्ति बरबाद हो चुकी है, जल शक्ति का दुरुपयोग किया जा रहा है तथा अधिकाश उपजाऊ धरातल को या तो सैलाब बहाये ले जा रहे हैं या धूल भरे तूफान उन्हे उडाये डाल रहे है। रूजवेल्ट ने अपने प्रकृति प्रेम के कारण तथा पश्चिम के प्रति अपने स्नेह के कारण भी उसके सरक्षण की व्यवस्था की। काग्रेस को भेजे गये अपने प्रथम सदेश मे उसने घोषणा की कि "सभवत. वन तथा जल-सम्बन्धी समस्याएँ सयुक्त-राष्ट्र-अमरीका की सबसे अधिक महत्वपूर्ण समस्याएँ है।" और उसने उनके सरक्षण तथा पुनः प्राप्ति के एक दूरगामी कार्यक्रम की सिफारिश की। सन् १८९१ के एक फौरेस्ट-एक्ट का सहारा लेकर रूजवेल्ट ने १५० लाख एकड वनभूमि को सरक्षित वन घोषित कर दिया तथा अलास्का और उत्तर पश्चिम की ८५ लाख एकड बनभूमि मे तब तक सार्वजनिक प्रवेश निषिद्ध कर दिया, जब तक वहाँ की वन-सपदा तथा खनिज-उपादानों का पूरा अध्ययन न कर लिया जाय। इसके साथ ही साथ वन-सरक्षण का काम उसने प्रगतिशील विचारों वाले शक्तिशाली पुरुष, गिफर्ड पिन्काट के सुपुर्द किया। सन् १९०२ के रिक्लेमेशन-एक्ट मे सघीय प्रशासन के खर्चे पर तथा उसीकी देखरेख मे

बड़े पैमाने की सिंचाई-योजनाओं की व्यवस्था मौजूद थी। इसलिए इस एक्ट की धाराओं के अनुसार एरिजोना के महान् रूजवेल्ट बाँध, इडाहो के एरोरौक बाँध, तथा रियोग्राण्डे नदी पर एलीफैण्ट बट बाँध के काम शुरू कर दिये गये। यह सब तो काम की शुरूआत भर थी, लेकिन इससे जनता की जो अभिरुचि इस विषय में जाग्रत हुई तथा उदाहरण पेश हुआ उसने आगे के प्रशासनों के लिए विशिष्ट भावी कार्यक्रम निर्धारित करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

सन् १९०८ तक रूजवेल्ट मैक्किन्ले के उत्तराधिकारी की हैसियत से एक सत्र तक और स्वयं अपने पदाधिकार से दूसरे सत्र तक काम कर चुका था। इस समय वह अपनी जनप्रियता के शिखर पर था और अगर चाहता तो एक सत्र के लिए फिर भी चुना जा सकता था। लेकिन तीसरी बार खड़े न होने की परम्परा का विरोध करने में उसे हिचक मालूम हुई। इसलिए फिर खड़े होने की बजाय उसने अपनी नीति का अनुसरण करने वाले अपने उत्तराधिकारी की खोज करके उसे चुनाव में खड़ा करने का निश्चय किया। उसने विद्वान तथा योग्य, विलियम होवार्ड टैफ्ट को खोज निकाला। इस चुनाव का रिपब्लिक-दल के नाम निर्देशक कान्वेशन ने भी समर्थन किया और फिर ब्रायन के साथ हुए थोड़े से संघर्ष के बाद, जनता ने भी उसे ही चुन लिया।

टैफ्ट सर्किट-कोर्ट का जज रह चुका था और फिलिपाइन्स का गवर्नर तथा युद्ध मंत्री भी। इन सभी प्रशासकीय पदों पर उसने अपना काम बड़ी योग्यता-पूर्वक निबाहा था। लेकिन, उसकी राजनयिक प्रतिभा उन कामों में कभी भी उजागर न हुई थी न उसकी आक्रामक उदारवादिता ही उनमें दिखायी पड़ी थी। वह रूजवेल्ट की नीति तथा कार्य को आगे बढ़ाने के लिए वास्तव में उत्सुक था तथा उसके गुण तथा शिक्षा इस काम के लिए कम न थे। उसने निधियों पर मुकदमा चलाने के काम को आगे बढ़ाया, इन्टर-स्टेट कामर्स-कारपोरेशन को और भी दृढ़ बनाया, पोस्टल सेविंग बैंक तथा पार्सल पोस्ट की पद्धतियाँ स्थापित कीं, सिविल सर्विस में योग्यता के आधार पर पदोन्नति की पद्धति का विस्तार किया, तथा सङ्घीय विधान में सिनेटरों के प्रत्यक्ष चुनाव करने और आयकर व्यवस्था स्थापित करने सम्बन्धी दो संशोधन कानून बनाये जाने के काम को आगे बढ़ाया। इन प्रगतिपूर्ण कार्यों के विरुद्ध उसने कुछ रूढ़िवादी काम भी किये। उनमें सबसे मुख्य था उस टटकर को स्वीकृति प्रदान करना, जिसकी संरक्षणात्मक अनुसूचियों का उदारवादी लोगों

ने बेहद विरोध किया। उसने वन विभागीय सेवाओं की अध्यक्षता से पिन्काट को अलग कर दिया, तथा एरिजोना राज्य के सघ प्रवेश का यह कह कर विरोध किया कि उसके विधान मे जनता की मॉग पर जजो के भी प्रत्यावर्तन की व्यवस्था मौजूद थी। इसके अतिरिक्त वह अपने दल के रूढिग्रस्त सदस्यों पर अधिकाधिक भरोसा करने लगा था।

सन् १९१० तक, टैफ्ट ने अपने दल के खुले आम दो भाग कर डाले। इसी समय एक राजनीतिक भूकम्प ने डेमोक्रैट दल को फिर से काग्रेस पर हावी बना दिया। अपने उत्तराधिकारी को काम करने की पूर्ण स्वतन्त्रता देने के लिए उत्सुक रूजवेल्ट शेरो का शिकार करने के लिए अफ्रीका चला गया था। इस मौके पर उसके अनुयायियो की भावी आशाओ को निम्नलिखित पक्तियॉ अच्छी तरह व्यक्त करती हैं—

टेड्डी घर आओ और अपना शख बजाओ
चरागाह मे भेड घुसी, गाय खेत मे, उन्हे भगाओ।
चरवाहा जो छोड गये तुम, सोता है, उसे जगाओ।

योरोप की शानदार यात्रा करके रूजवेल्ट घर आया और लाफोले, पिन्काट आदि उदारवादी रिपब्लिकन ने अपने दिल की भडास उसके कानों मे उतार दी। लेकिन, उस समय कार्रवाई करने को रूजवेल्ट तैयार नही हुआ जब कि लाफोले तैयार था। सन् १९११ मे उसने रिपब्लिकन-दल की ओर से अपना नाम-निर्देश कराने के लिये अभियान प्रारभ कर दिया। उसके इस अभियान को इस कदर व्यापक सार्वजनिक समर्थन प्राप्त हुआ कि, रूजवेल्ट ने उससे लाभ उठा लेने का निश्चय किया और सन् १९१२ मे उसने घोषणा कर दी कि वह भी मैदान मे उतर आया है। तब टैफ्ट और रूजवेल्ट के बीच बडा गर्मागर्म सघर्ष शुरू हुआ जिसमे रूजवेल्ट को समग्र सार्वजनिक समर्थन प्राप्त हुआ और टैफ्ट को डेलिगेटों का। चिकागो-कान्वेन्शन मे रूजवेल्ट के समर्थकों पर दलीय नेताओ ने जोर डालकर ठडा कर दिया और टैफ्ट को ही नामजद कर दिया। रूजवेल्ट ने इस कार्यवाही की निन्दा की और उसे खुली 'चोरी' बताया तथा स्वतत्र उम्मीदवार के रूप मे चुनाव लडने का उसने वायदा किया। कुछ सप्ताह बाद उसके उत्साही अनुयायियो ने चिकागो मे सभा की और प्रोग्रेसिव-पार्टी नामक दल का सगठन किया तथा अपने प्रिय नेता को ही उसकी तरफ से उम्मीदवार घोषित किया।

इस अनियन्त्रित प्रदर्शन को डेमोक्रैट लोग बडे गौर से देख रहे थे। कई

जब तक वे राजनीति के जंगल में ब्रायन के पीछे-पीछे चक्कर लगाते रहे थे अब उन्हें आशामय भविष्य दिखायी पड़ने लगा था। राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव के लिए नामनिर्देशन की बेतरह होड़ लगी हुई थी। रूढ़िगामी कन्ज़र्वेटिव लोगों ने पुराने नागरिक योद्धा मिसूरी निवासी शाम्प क्लार्क के, जो कांग्रेस धारा सभा का अध्यक्ष भी था, नेतृत्व में अपने को संगठित किया। लिबरलों ने नवागन्तुक वुडरो विल्सन का जो न्यूजर्सी का गवर्नर भी था जोर-शोर से पक्ष लिया। अन्त में इन सब में से किसी एक का चुनाव करने का काम बेचारे ब्रायन पर, जो स्वयं कभी भी राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव न जीत सका था, आ पड़ा और उसने अपने कार्यकाल के अत्यन्त नाटकीय अवसर पर, वुडरो विल्सन को संयुक्त राष्ट्र के भावी राष्ट्राध्यक्ष पद के लिए, नामजद कर दिया।

अठारहवाँ परिच्छेद

अमरीका का विश्वशक्ति के रूप में अभ्युदय

नयी शक्तियाँ और क्षितिज : गृहयुद्ध के बाद की पीढ़ी के अमरीकी इतिहास पर दृष्टिपात करने से निम्नलिखित नाटकीय घटनाओं का ताँता बँधा हुआ नजर आता है : पुनर्निर्माण, ग्रेन्जर-आन्दोलन, भ्रष्टाचार का ह्रास, तटकर युद्ध, पापुलिस्ट-विद्रोह, प्रगतिवाद का उदय। जब हम औद्योगिक इतिहास का सिंहावलोकन करते है तब भी हम ऐसे ही व्यस्त युग की झाँकी देखते हैं : राष्ट्रीय रेलमार्गो का निर्माण, ट्रस्टो का विकास, नये बडे उद्योगो का जन्म, राकफेलर, कारनेगी, मोरगन और हिल-जैसे प्रमुख उद्योगपतियो के साहसिक कार्य। इनकी तुलना मे वैदेशिक सम्बन्धो का इतिहास कम महत्व का है। अमरीकी दबाव के कारण १८६७ मे फ्रान्सीसियो द्वारा मेक्सिको खाली करने और १८९८ मे हवाना से परे 'मैन' के डूबने के बीच के वर्षो मे केवल दो-तीन ही महत्वपूर्ण घटनाए हुई हैं। इस काल के एक सकीर्ण विचारक कॉंग्रेस सदस्य ने कहा था : "हमें समुद्र पार से क्या लेना-देना है।"

फिर भी, इस क्षेत्र की जितनी भी झलक दिखलायी पडती थी, उसकी अपेक्षा यह कही अधिक महत्वपूर्ण था क्योंकि अब कुछ निश्चित कठोर तथ्य सामने आ रहे थे, जिनका सम्बन्ध प्रत्येक अमरीकी से था। अमरीका सचमुच ही परस्पर एक दूसरे पर निर्भर राष्ट्रो के समुदाय की शाति, व्यवस्था और समृद्धि मे रुचि लेनेवाला एक वास्तविक विश्वशक्ति बन रहा था। वह ग्रेट-ब्रिटेन के साथ एक विशेष ढग के सम्बन्ध स्थापित करने की आवश्यकता की ओर जागरूक हो रहा था। मुनरो-सिद्धात, व्यवसायिक विस्तार और १८९९ के पश्चात् ससार मे खुले द्वार की नीति के कारण स्वातन्त्र्यप्रेमी राष्ट्रो द्वारा सागर पर प्रभुत्व स्थापित करने की आवश्यकता का अनुभव हुआ। अपने सर्वोत्तम ग्राहको के साथ सहज व्यावसायिक सम्पर्को और प्रजातत्र के विकास मे दोनो की रुचि होने के कारण, अमरीका ब्रिटिश-साम्राज्य के साथ घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित करने की दिशा मे अग्रसर हुआ। साथ ही अमरीका ने लेटिन

अमरीका के संरक्षण के प्रति अधिक कठोर रुख अपना लिया। निर्मित वस्तुओं और कच्चे माल के लिए बाजार की खोज में, उसने समुद्र पार के बाजारों के विकास पर अधिक ध्यान दिया। आंशिक रूप में व्यावसायिक और रणनीति के कारण, आदर्शवादी लक्ष्यों के कारण और शक्ति के गर्व के कारण, वह समुद्र पार के विस्तार की दिशा में पूर्ण रूप से अग्रसर हुआ।

स्पेन-अमरीकी युद्ध से बहुत पूर्व अमरीका वास्तविक विश्व-शक्ति के रूप में अपनी जागरूकता दिखलाने लगा था। राष्ट्राध्यक्ष आर्थर और क्लीवलैण्ड के अन्तर्गत वह शक्तिशाली आधुनिक जहाजी बेड़े का निर्माण करने लगा। १८९० तक "श्वेत जहाजी बेड़ा" महत्वपूर्ण राष्ट्रीय गर्व की वस्तु बन गया। १८८० तक अमरीका का कुल निर्यात ८३ करोड़ ५० लाख डालर की लागत से भी अधिक बढ़ गया और बीस वर्ष के पश्चात् लगभग १४ अरब डालर तक जा पहुँचा। कोई भी राष्ट्र वैदेशिक मामलों में उत्साहपूर्ण रुचि लिये बिना इतनी वस्तुओं का निर्यात नहीं कर सकता था। गृहयुद्ध के पश्चात विस्तार की पुरानी आकांक्षा लगभग समाप्त हो गयी थी। १८६७ में अलास्का के क्रय के पश्चात, अधिकांश नागरिक अनुभव करने लगे थे कि अमरीकी ध्वज पर्याप्त क्षेत्र पर उड़ चुका है और ग्राण्ट द्वारा सण्ट डोमिंगो को हथियाने का प्रयत्न सिनेट में भारी मत से पराजित किया गया। किन्तु धीरे-धीरे विस्तारवादी भावना का फिर उदय हुआ। जर्मनी ने सेमोआ पर लालचभरी निगाहें डालने का प्रयत्न किया तो अमरीका ने ग्रेट-ब्रिटेन के साथ मिलकर दृढ़ता से प्रतिकार करके बलपूर्वक उस पर अपना अधिकार घोषित किया। एक त्रिशक्तीय संरक्षक राज्य की नियुक्ति की गयी और शताब्दी के अन्त में हुए विभाजन में अमरीका ने दो बड़े टापुओं को छोड़कर शेष सारी भूमि पर अधिकार कर लिया। बहुत दिनों से मनोवांछित पागो पागो बन्दरगाह भी उसे प्राप्त हो गया। हवाई में—जहाँ अमरीकियों ने चीनी उत्पादक उद्योग पर नियन्त्रण पा लिया था—अमरीका ने १८८७ में बहुमूल्य हार्बर को नौसैनिक अड्डे के रूप में उपयोग में लाने का विशेषाधिकार पा लिया। छः वर्ष बाद, हवाई द्वीपों पर अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न सफलता प्राप्त करने के करीब था कि क्लीवलैण्ड द्वारा पुनः सत्तारूढ़ होने के कारण वह रुक गया। उन्होंने ठीक ही सोचा था कि इसके लिए अपनाया जानेवाला तरीका अनुचित है। किन्तु उसके पश्चात् हवाई द्वीपों का नियंत्रण वहाँ के निवासी अमरीकियों के हाथों में रहा जब तक कि १८९८ में वे निश्चित रूप से अमरीकी ध्वज के नीचे नहीं आ गये। इस

वीच १८८९ मे अमरीका के लगभग एक दर्जन दक्षिणी गणतंत्रों के प्रतिनिधियों की वाशिंग्टन मे एक वृहत्तर अमरीका कान्फ्रेन्स आमन्त्रित की गयी। अमरीकी प्रभाव मुख्यभूमि से भी से दूर-दूर तक फैल रहा था।

गृहयुद्ध के तीस वर्ष पश्चात् अमरीका के अन्तर्राष्ट्रीय विवाद पश्चिमी गोलार्द्ध मे केवल ग्रेट-ब्रिटेन के साथ ही थे। उनमे से कुछ गम्भीर थे। किन्तु महत्वपूर्ण तथ्य यह था कि वे सब मध्यस्थता अथवा पचनिर्णय द्वारा हल किये जा चुके थे और इस प्रकार आग्ल-अमरीकी सम्बन्धो मे सुधार होता गया।

मित्रतापूर्ण समझौते का समस्त विवरण प्रभावशाली है। गृहयुद्ध के वीच उत्तर मे ब्रिटेन-विरोधी तीव्र भावना घर कर गयी थी। उसमे से अधिकाश निराधार थी। ब्रिटेन द्वारा युद्ध करनेवाले दक्षिणी राज्यो को मान्यता प्रदान करना उचित ही था। ब्रिटिश नौवेडे ने एक ऐसी नीति अपनायी जो कुछ अंशो मे उत्तर के अनुकूल थी। लकाशायर की सूती मिलो की धनिक जनता भी—जो इससे बुरी तरह प्रभावित हुई थी—लिंकन के साथ थी। किन्तु, अनुदारो की अमैत्री और दक्षिणी ध्वज के अतर्गत ब्रिटिश निर्मित शस्त्रों से लैस क्रूजरो द्वारा की गयी विध्वंस लीला को क्रोधपूर्वक याद किया गया। कुछ समय तक जब चार्ल्स समर जैसे कट्टर पथी नेताओं ने क्षयपूर्ति के लिए अति-शयोक्तिपूर्ण मागे की, तो सघर्ष की सम्भावना उत्पन्न हो गयी। भाग्यवश उस समय अमरीका के वैदेशिक सबन्ध विदेश सचिवो मे सबसे अधिक साधु स्वभाव के हैमिल्टन फिश के हाथो मे थे। उनके नेतृत्व मे ब्रिटिश विध्वसकों द्वारा किये गये नुकसान के लिए अमरीकी क्षतिपूर्ति की योजना को पच-निर्णय के सिपुर्द करने की व्यवस्था की गयी। आधुनिक समय का सबसे बडा प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय जिनेवा मे मिला। उसने इस सारे विवाद को अमरीका को १ करोड ५५ लाख डालर की रकम क्षतिपूर्ति के रूप दिये जाने का निर्णय देकर समाप्त कर दिया। और, ब्रिटेन ने यह सामान्य रकम चुकता करने मे तत्परता दिखलायी। इसी समय अमरीका और कनाडा के मध्य एक छोटे सीमा-विवाद का भी, जिसका सम्बन्ध उत्तर पश्चिम तट के कुछ टापुओं से था, पचनिर्णय दिया गया। कुछ वर्षो पश्चात् उत्तर एटलान्टिक मे मछली पकडने के अधिकार सम्बन्धी एक विवाद का हल एक सयुक्त आयोग द्वारा किया गया। १८८० मे एक नया विवाद उठ खडा हुआ कि कनाडावासियो को वेरिंग सागर मे अलास्का मे फर एकत्र करने मे हिस्सेदार बनने का अधिकार है या नहीं? विदेश विभाग ने कडे रूप से बलपूर्वक कहा कि यह सागर

पूर्णरूपेण अमरीकी अधिकार-क्षेत्र में है और दूसरों के लिए बन्द है। एक बार पुनः यह विवाद अन्तर्राष्ट्रीय पंचों के बोर्ड को सौंपा गया, जिन्होंने ब्रिटेन के अनुकूल निर्णय दिया।

इससे अधिक महत्त्व का मित्रतापूर्ण समझौता वेनिजुएला का सीमा-विवाद था, जो १८९६ के अन्तिम दिनों में एक नाटकीय और खतरनाक तरीके से उठ खड़ा हुआ। यह विवाद आश्चर्यजनक और अकस्मात् सामने आया। १६ दिसम्बर १८९५ को अमरीका और ब्रिटेन में कुछ व्यक्ति ही इन दो राष्ट्रों के बीच किसी गम्भीर सघर्ष की कल्पना करते थे। १७ दिसम्बर को दोनों देशों की जनता यह समाचार सुनकर स्तंभित रह गयी कि क्लीवलैण्ड ने काँग्रेस को एक सन्देश भेजा है, जिसमें ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध की धमकी-सी प्रतीत होती थी। ऐसा सन्देश कैसे सम्भव बन सका?

ब्रिटिश गायना और वेनिजुएला के बीच लंबे समय से एक सीमा-सम्बन्धी विवाद चला आ रहा था। अमरीका ने बारबार इस विवाद को निपटाने के लिए अपनी सद्भावनाएँ अर्पित कीं। किन्तु वेनिजुएला के षड्यंत्र को व्यर्थ ही बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया, और ब्रिटेन ने तथाकथित शोमबर्क पंक्ति के पश्चिम की ओर अतिरिक्त प्रदेशों के दावों पर पंचनिर्णय अस्वीकार कर दिया। इस पंक्ति का पर्यवेक्षण अवैधतापूर्ण किया गया था। कई अमरीकियों को सन्देह था कि एक दुर्बल राष्ट्र को पंगु बनाकर ब्रिटेन भूमि हड़पने की मंशा रखता है। अन्त में, १८९५ में ग्रीष्म में विदेश विभाग ने क्लीवलैण्ड द्वारा एक 'धमकीभरा पत्र' लन्दन भेजा। इस पत्र ने ब्रिटेन पर मुनरो-सिद्धांत को भंग करने का आरोप लगाया और पंच-निर्णय के प्रश्न पर स्पष्ट उत्तर माँगा। इस पत्र में दृढ़ता से कहा गया कि 'आज व्यावहारिक रूप से अमरीका का ही इस महाद्वीप पर प्रभुत्व है।' जब लम्बी अवधि के पश्चात् ब्रिटेन का उत्तर आया तो उसमें यह अस्वीकार किया गया था कि सीमाविवाद का मुनरो-सिद्धांत से जरा-सा भी सम्बन्ध है। उल्टे अमरीकी पत्र में कुछ निश्चित ऐतिहासिक त्रुटियों को दर्शाया और एक बार पुनः पंच-निर्णय को मान्यता प्रदान करने से अस्वीकार कर दिया गया। क्लीवलैण्ड बिलकुल बौखला उठे। उन्होंने अविलम्ब काँग्रेस को एक सन्देश भेजा कि एक जाँच पड़ताल आयोग शीघ्रतापूर्वक वेनिजुएला को भेजा जाय ताकि वह वास्तविक सीमा-पंक्ति का निश्चय कर सके और जब इसका कार्य पूरा हो जाये तो अमरीका वेनिजुएला को प्राप्त भूमि का ब्रिटेन के अपहरण के विरुद्ध 'अपनी शक्ति भर साधनों से प्रतिकार करे।

कुछ समय तक के लिए सबने बुरी से बुरी आशकाएँ की। युद्ध-गान करनेवाले सफल रहे किन्तु इस घटना के अन्तिम परिणाम सुखकर प्रमाणित हुए। ब्रिटिश जनता और सरकार ने आश्चर्यजनक धैर्य दिखलाया। इन्हीं दिनो कैसर का तार बोअर नेता क्रूगर को १८९६ के प्रारम्भिक दिनो मे मिला ताकि उनका ध्यान अन्यत्र बँट जाय। शक्तिशाली अमरीकी समाचारपत्रो ने 'न्यूयार्क वर्ल्ड' के नेतृत्व मे क्लीवलैण्ड के विवेकहीन कार्य की निन्दा की। व्यापारिक और धार्मिक सस्थाओ ने भी विरोध खडा कर दिया। श्रमिको को भी क्षोभ हुआ। एटलान्टिक के दोनो ओर असख्य लोगो ने घोषित किया कि युद्ध कल्पना से परे है। मित्रता और विश्वास के सन्देश एक-दूसरे को भेजे गये। लगभग १३०० ब्रिटिश लेखको ने अमरीकी मित्रता के लिए अनुरोध किया पार्लियामेन्ट के ३५० से अधिक सदस्यो ने सभी विवादो पर पच-निर्णय की माग की। अन्त मे ब्रिटेन और वेनिज़ुला ने अमरीका की सद्भावना को स्वीकार करके सभी विवादो पर पच-निर्णय स्वीकार किया, केवल उन क्षेत्रो को छोडकर जो प्रत्येक राष्ट्र के पास ५० वर्ष से अधिक समय से थे। समूचे मामले ने इग्लैण्ड और अमरीका के मध्य के सन्देह को दूर कर दिया, पारस्परिक प्रतिष्ठा मे वृद्धि कर दी और यह दिखा दिया कि राजनीति स्तर के अतराल मे दोनो देशो के पारस्परिक सम्बन्ध कितने शक्तिशाली थे।

सौभाग्य से यह ठीक ही हुआ। अमरीका की विदेश नीति अधिकाधिक स्पष्ट रूप से शक्तिशाली नये तत्त्वो के पक्ष मे थी। भविष्य मे गणतत्र को इस से भी बड़े मच पर अभिनय करना था और एंग्लो-अमरीकी शत्रुभाव को दूर करके एग्लो-अमरीकी मित्रता स्थापित करनी थी।

स्पेन-अमरीका युद्ध : उन्नीसवी सदी की अन्तिम दशाब्दी मे अधिकाश बडे राष्ट्रो मे यूरोपीय साम्राज्यवादी भावना प्रचलित थी। अफ्रीका का विभाजन पूर्ण हो रहा था, यूरोपीय शक्तियो के स्वार्थों के लिए चीन के टुकडे-टुकडे किये जा रहे लगते थे। साम्राज्यवाद की अधिकाश जडे आर्थिक थी, क्योकि बढती हुई जनसख्या और विस्तार पा रही औद्योगिक प्रणालियों को नये बाजारो की आवश्यकता थी। कतिपय राजनीतिक कारण भी थे क्योकि प्रतिस्पर्धी राष्ट्र समुद्र-पार के उपनिवेशो द्वारा शक्ति प्राप्त करते थे। नौसैनिक अड्डो से सम्बन्धित थे अल्फ्रेड टी. माहेन की पुस्तको मे समुद्री अड्डो का महत्वपूर्ण मूल्याकन किया गया है। कुछ आर्थिक और धार्मिक थे, क्योकि ईसाई धर्म-प्रचारको ने अन्धकारपूर्ण

स्थानों मे प्रकाश फैलाना ईसाई होने के नाते अपना कर्तव्य माना, जब कि सुधारकों ने पिछड़े हुए लोगों को ऊपर उठाना श्वेतागों का जीवन-ध्येय बतलाया। फिर भी कई बाते विशुद्ध रूप से भावनात्मक थी, सनसनीखेज समाचारपत्रो ने वैदेशिक क्षेत्र में साहसपूर्ण कार्य करने की रुचि को बढावा दिया। अमरीका मे १८९३ की भगदड और साम्राज्यविरोधी क्लीवलैण्ड के निर्वाचन ने कुछ अंशो मे युद्धलिप्सा और विस्तारवाद की भावना को नियत्रण में रखा। १८९७ तक मदी दूर होने और क्लीवलैण्ड के तिरस्कृत हो जाने के कारण यह भावना पुनर्जाग्रत हो गयी। उसे तब अवसर मिला जब कि क्यूबा रक्तरजित विद्रोह ने महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त कर ली।

क्यूबा की स्पेनी सरकार बहुत समय से भ्रष्टाचारी, अत्याचारी और निरकुश दमनकारी होती जा रही थी। प्रति वर्ष वह इस द्वीप को उसकी वार्षिक आय के ४० प्रतिशत से वंचित कर देती थी। इस प्रकार यहाँ की उत्पादनशक्ति का ह्रास होता जा रहा था और लोग गरीब होते जा रहे थे। सरकार पर स्पेनवासियों का एकाधिपत्य था। वे अपने को लम्बे-चौड़े वेतन देते और लगातार चोरी की प्रणाली भी उन्होंने स्थापित कर रखी थी। उद्योग और व्यापार पर बर्दाश्त से बाहर करारोपण था। कृषि और खनिज उद्योग पर भारी चुंगीकरों का बोझ था जब कि तटकर ने स्पेनवासी निर्माताओं और व्यापारियों को एकाधिपत्य प्रदान कर रखा था, जिससे कि वे इन वस्तुओं पर मनचाहा ऊँचे से ऊँचा दाम प्राप्त कर लाभ उठा सके। जीवन और सम्पत्ति असुरक्षित थी। कोई भी क्यूबावासी बिना अभियोग के गिरफ्तार किया जा सकता था और भागने के प्रयत्न मे गोली का शिकार बनाया जा सकता था। न्यायालय स्पेनी शासकों के साधन थे और मुकद्दमे का दूसरा नाम डाकेजनी था। प्रेस पर प्रतिबध लगा था। गिरजाघर जो स्पेन के धनी प्रचारकों के हाथों मे था भ्रष्ट, अकुशल लोगों के प्रति कोई सहानुभूति रखनेवाला न था। उसके प्रतिगामी धर्माध्यापकों का शिक्षा पर इतना कडा प्रभुत्व था कि अज्ञानता सामान्य बात थी। लोगों को एक सदा विशाल तैयार सेना का खर्च भी ढोना पडता था। विद्रोह हर समय अंदर ही अंदर फूटता रहता था और जब अमरीका द्वारा चीनी पर तटकर लगाये जाने से इस राष्ट्र के लोगों पर करभार और भी बढ गया, तब पीड़ित जनता पर अधिक समय तक प्रतिबध नहीं लगाया जा सका। देशभक्त जोसमार्टी ने १८९५ मे विद्रोह का झंडा ऊँचा कर दिया और शीघ्र ही समूचा देश क्राति की लपटों से प्रज्ज्वलित हो उठा।

यद्यपि क्लीवलैण्ड और मैक्किन्ली प्रशासन—दोनों ने ही तटस्थ रहने का भरसक प्रयत्न किया; किन्तु यह स्पष्ट हो गया कि यदि युद्ध लम्बा खिंचा तो अमरीका को हस्तक्षेप करना ही पडेगा। अमरीका पर इसका आर्थिक प्रभाव गम्भीर रूप से पडा। लगभग ५ करोड डालर की अमरीकी पूँजी क्यूबा मे लगी हुई थी जब कि युद्ध के पूर्व क्यूबा के साथ हुए व्यापार की कुल लागत प्रति वर्ष १० करोड डालर थी। स्पेन के साथ कूटनीतिक सम्बन्ध बिगडने लगे। जब क्यूबा के क्रातिकारियों ने अमरीका का सैनिक अड्डे के रूप मे प्रयोग किया तो स्पेन ने शिकायत की। किन्तु, परिस्थिति को सम्हालना कठिन था, और स्पेन की नाकेबन्दी का कोई प्रभाव न पडना, एक महत्वपूर्ण तथ्य था। क्यूबा के अमरीकी नागरिको को सम्पत्ति, स्वाधीनता और जिन्दगी तक से हाथ धोना पडा और वाशिंग्टन मे उनके साथ जो दुर्व्यवहार किये गये उनका कडा प्रतिवाद किया। सबसे बडी बात तो यह थी कि दोनों पक्षों की ओर हो रहे इस नृशस युद्ध और स्पेन की नीति के कारण अमरीका की भावना बहुत गहराई तक उद्वेलित हो उठी थी। जब योग्य किन्तु क्रूर वेले-रिआनो वीलर को विद्रोह कुचलने के लिए भेजा गया तो सघर्ष इतिहास के सबसे अधिक बर्बर युद्धो मे से एक बन गया। दोनो पक्षो ने देश का विध्वस कर दिया और अपने बन्दियों की हत्या कर डाली। युद्ध न करनेवाले असहाय लोगों पर अपरिमित अत्याचार किये गए। १८९६ के पतझड़ मे वीलर ने कुछ निश्चित नगरो को बन्दी शिविरो के रूप मे परिणित कर दिया। महिलाओं, बच्चो और वृद्ध व्यक्तियो को उनके घरो से बाहर निकाल दिया गया और वे मक्खियों की तरह मर गये। १८९७ के अन्त तक इन्ना प्रात के १०१ हजार लोगों मे से आधे से अधिक, जो बन्दी-क्षेत्रों मे रखे गये थे, मर गये। अमरीकी राजदूत ने रिपोर्ट भेजी कि समूचे द्वीप मे कुल मिलाकर ४ लाख निर्दोष महिलाओं और बच्चो को भिखमगा बना दिया गया और उन्हें पशुओं की तरह छोड दिया गया। नित्य सैकडो व्यक्ति भूख और ज्वर से मर गये।

स्पेन-सरकार क्यूबा मे सैन्यदल भेजती ही जा रही थी यहॉ तक कि १८९८ के प्रारम्भ मे उसके २ लाख सैनिक वहॉ थे। उसके वैदेशिक दफ्तर ने यूरोपीय शक्तियो का एक गठबधन आयोजित करने का प्रयत्न किया, ताकि अमरीका को हस्तक्षेप करने से रोका जा सके। रूस ने उसे कोई बढावा नही दिया, जब कि ब्रिटेन ने उसका पूर्ण रूप से विरोध किया। उसे जर्मनी, आस्ट्रिया-हगरी और फ्रास से ही कुछ समर्थन प्राप्त हो सका। किन्तु, १८९८ तक

कॉंग्रेस निश्चयात्मक कार्यवाही के लिए बेचैन हो उठी थी। कुछ तो भयावह स्थिति की वास्तविकता के कारण, कुछ विलियम रेन्डाल्फ हार्स्ट के न्यूयार्क जर्नल के नेतृत्व में सनसनीखेज समाचारों के कोलाहल के कारण, जनता की मनोभावना भी युद्ध के लिए तत्पर थी। राष्ट्राध्यक्ष मैक्किन्ले और प्रमुख व्यावसायिक सिनेटर, जो उनके निकटतम परामर्शदाता थे, सघर्ष को टालने की इच्छा रखते थे। किन्तु, राजनीतिक कारणों और लोकप्रिय जनमत को हाथ से न खोने के लिए मैक्किन्ले द्वारा उस दबाव का प्रतिरोध करने की एक सीमा आ पहुँची। वाशिंगटन स्थित स्पेन के मूर्ख राजदूत डिपोय डी लोमे ने भी मामले को सम्हालने में मदद नहीं दी। फरवरी मे हियरेस्ट प्रेस के हाथों लोमे का एक पत्र पड गया जिसमें उसने मैक्किन्ले को "भावी राजनीतिज्ञ, भीड से सराहना पाने के लिए बेशर्मी तक के लिए उतारू एसा और ऐसा व्यक्ति जो स्पेन के साथ विश्वासघात करता है," लिखा था। एक सप्ताह पश्चात् युद्धपोत मैन को हवानाह बन्दरगाह मे डुबा दिया गया, जिसमे २६० व्यक्ति मारे गये। यह विध्वंसात्मक कार्य स्पेनवासियों का था जो क्यूबावासियों के उत्तेजित करने के कारण घटा, इसके कारण युद्ध अवश्यम्भावी बन गया। स्पेन-सरकार ने अतिम क्षण मे शीघ्रतापूर्वक कुछ रियायतें दीं। यदि उनको ठीक तरीके से स्वीकार कर लिया होता तो क्यूबा का शातिपूर्ण उद्धार हो जाता। किन्तु मैक्किन्ले को विश्वास हो गया था कि अब अधिक विलम्ब करना अनुचित होगा और ११ अप्रैल को उन्होने काग्रेस को युद्ध का सन्देश भेजा। निःसन्देह यह एक लोकप्रिय कदम था।

किसी दूसरे सघर्ष मे इतनी शीघ्र और विशेष विजय नहीं पायी जा सकी जितनी कि स्पेन-अमरीकी युद्ध मे। १ मई १८९८ को लडाई प्रारम्भ हो गयी और दस सप्ताह मे ही बन्द भी हो गयी। इसमें एक भी उल्लेखनीय पराजय नहीं हुई। मई दिवस पर डीवी प्रातः होते ही सुरगोंरहित मनीला की खाडी मे पहुँचे और स्पेन के बेडे पर उन्होने गोले बरसाये—यहाँ तक कि जब वे स्पेनी बेडे के निकट पहुंचे तो उन्होने कहा, "ग्रिडले, तैयार हो जाने पर तुम भी गोले बरसा सकते हो।" और अपना एक भी आदमी खोये बिना उन्होंने दुश्मन को पगु बना दिया। इस घटना को कान्सास के एक कवि ने ठीक ही उत्सव योग्य बताया, जब कि उसने लिखा :—

पहली मई के दिन,
डीवी ही प्रातःकाल थे,

और डीवी ही एडमिरल थे,
नीचे मनीला की खाड़ी मे—
और डीवी ही स्पेनवासियो के नेत्र थे
और डीवी ही आखो के तारे थे और
क्या हम निरुत्साहत हुए हैं ?
नही, मैं ऐसा नही समझता।

एक सैन्य टुकडी के बराबर की सेना जो सानटियागो, क्यूबा मे उतारी गयी, शीघ्रतापूर्वक लगातार कई लडाइयॉ जीतती गयी और बन्दरगाह पर उसने गोलाबारी प्रारम्भ कर दी। एडमिरल केरवेरा के बेडे के चार शस्त्रसज्जित विध्वसकपोत सेन्टियागो खाडी से बाहर निकल भागे और कुछ घटो पश्चात् तट पर इन ध्वस्त जहाजो के ढाचे ही दिखलायी पड रहे थे जब कि केवल इस मुठभेड मे एक अमरीकी नौसैनिक ही मारा गया। जनरल माइल्स की सेना प्यूर्टोरिको पर उतरी और उसने इस तरह आगे कूच किया, मानो छुट्टी के दिन की परेड कर रही हो। इस द्वीप की विजय के बारे मे मि. डूली ने लिखा . " प्यूर्टोरिको मे जनरल माइल्स द्वारा शानदार पिकनिक और चादनी रात मे सैर।"

अमरीकावासियो ने युद्ध को गम्भीरता से नही लिया, देशभक्ति के कारण उनकी उसमे रुचि अवश्य थी। सभी बैड राष्ट्रगीत 'स्टार्स ऐण्ड स्ट्रिप्स फार एवर' की धुन बजाते और प्रत्येक पियानो से एक ही ध्वनि झकृत होती 'देयर विल वी हाट टाइम इन दि होम टु नाइट'। दलगत राजनीति भुला दी गयी और ब्रायन ने नेब्रास्का रेजिमेन्ट मे कर्नल का पद सम्हाल लिया। राष्ट्रीय भावना की लपट मे उत्तर और दक्षिण के बीच की क्षेत्रीय शत्रुता के रहे-सहे ध्वंसावशेष भी ढह गये। प्रसिद्ध काफेडरेट अश्वरोही नेता जो व्हीलर ने, सान्टियागो के सामने लडते हुए जोशपूर्वक कहा कि सघीय ध्वज के लिए एक लडाई १५ वर्ष के जीवन के समकक्ष है। यह समाचार मिलते ही कि सान्टियागो का पतन हो गया है, बोस्टन से लेकर सान फ्रासिस्को तक जुलाई की कडी गर्मी के दिनो मे भी सीटियॉ बज उठी और झंडे फहरा उठे। समाचार-पत्रो ने अपने सम्वाददाताओ को तमाशा देखने के लिए तुरन्त क्यूबा और फिलिपाइन्स भेज दिया और इन लोगो ने एक दर्जन नये राष्ट्रीय नायकों की ख्याति-दुन्दुभी बजायी। इनमे थे : आइओवा के 'फाइटिंगबाब' ईवान्स जिन्होने केरवेरा को उसकी पराजय के पश्चात बन्दी बना लिया। टैक्सास के कैप्टन फिलिप जिन्होने एक स्पेनिश जहाज के डूबते समय कहा था

"दोस्तों खुशी से चिल्लाओ नहीं, बेचारे डूब रहे हैं।" लैफ्टिनेन्ट विक्टर ब्ल्यू जो स्पेन की शक्ति के बारे में सूचना करने के लिए क्यूबा के जंगल में घुस पडे और केप्टन आर. जी. हाब्सन जिन्होंने सान्टियागो खाडी के मुँह को बन्द करने के हेतु कोलियर मेरीमैक को डुबाने का विफल प्रयास किया। सबसे अधिक सम्मान पाया अन्य नेताओं ने जिनमे से जार्ज डीवी को राष्ट्र ने वाशिंग्टन मे आवास प्रदान किया; रफ राइडर्स के नेता थियोडोर रूजवेल्ट जिनके युद्ध-रिकार्ड ने उन्हें अधिक विख्यात वाशिंग्टन-हाउस उपलब्ध कराया। यह एक आदर्श युद्ध रहा। उसके घायलों की सूची छोटी थी, इसके कारण अधिक कर्ज नहीं लेना पड़ा। इससे समुद्रपार के देशों मे अमरीका की प्रतिष्ठा मे वृद्धि हो गयी और राष्ट्र को आर्थिक लाभ भी कम नहीं हुआ।

किन्तु ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने पर इसका लाभ पक्ष कम ही दिखलायी पडा। इसकी कीर्ति मानो किसी असहाय शत्रु को जीतने के समान थी; क्योंकि शत्रु बहुत कम प्रतिरोध कर पाया। स्पेन का जहाज़ी बेड़ा इतना साधनहीन और अधकचरा था कि अमरीकी निशानेबाजी सीधी मारदार थी· फिर भी स्पेन का बेडा अमरीकी जहाजो पर खरोंच भी न कर सका। क्यूबा मे दो लाख सैनिक बुरे नेतृत्व और यातायात की कठिनाई के कारण इस प्रकार फँसे पडे थे कि अमरीकी सेना द्वारा सान्टियागो पहुँचने पर केवल १८ हजार सैनिकों को ही सान्टियागो पहुचाया जा सका। हमारी विजय की श्रेय का कुछ अंश वीरता और साहस को था· किन्तु उससे भी अधिक अंशो मे स्पेन की निर्बलता उसका कारण थी और इन जीतों की पृष्ठभूमि नौकरशाही, भ्रष्टाचार, अक्षमता और गोलमाल थी, जो विचारशील नागरिको को अत्यधिक अप्रतिष्ठाजनक लगने लगी थी। युद्ध-विभाग की व्यवस्था इतनी बुरी थी कि शीघ्र ही उसके प्रमुख को मैक्किन्ले प्रशासन से निष्कासित कर दिया गया और उसके स्थान पर एलिहू रूट की नियुक्ति की गयी, जिन्होंने युद्धविभाग और सेना को कार्यक्षमता के उच्च स्तर तक पहुंचा दिया। अधिकाश सैनिकों की संक्रामक रोगों से मृत्यु न केवल चिकित्सा-विभाग पर ही, बल्कि अमरीकी स्वच्छता और स्वास्थ्य पर भी सामान्य रूप से आरोप के समान थी। नौसेना की तोपो की मार व निशानेबाजी की ओर शीघ्र ध्यान दिया गया। वाशिगटन मे युद्ध-सेवा पर पंगु बना देनेवाली राजनीति की पकड एक बार फिर झलक गयी। सब कुछ मिलाकर थियोडोर रूजवेल्ट द्वारा इस सघर्ष को अमरीका का अतत्पर युद्ध कहना ठीक ही जँचा। सेना की शक्ति को शीघ्र ही बढा कर एक

लागू कर दिया गया, एक स्थायी जनरल स्टाफ का निर्माण किया गया, नौवेड़े का शीघ्र विस्तार किया गया और दोनो शाखाओ में लडाकू सैनिक टुकडियो को शक्तिशाली बना दिया गया। युद्ध की शिक्षा को हृदयगम करने के पश्चात्, अमरीका को १९११-१९१८ की भयकर अग्निपरीक्षा के लिए पर्याप्त रूप से तैयार रहने मे सहायता मिली।

पेरिस मे हुई आयुक्तों की सभा मे स्पेन के साथ शाति की शीघ्र व्यवस्था की गयी। विवाद की केवल दो बाते ही सामने आयी। स्पेन के प्रतिनिधि ने बलपूर्वक यह कहने का प्रयत्न किया कि क्यूबा को उन ऋणो के लिए उत्तरदायित्व ग्रहण करना चाहिए, जिन्हे स्पेन ने द्वीप पर आय के लिए वहन करने का समझौता किया था। उन लोगो ने दूसरी यह मॉग की कि फिलिपाइन्स का एक भाग स्पेन के पास रहने दिया जाय। किन्तु दोनो मॉगो पर अमरीकी प्रतिनिधि-मण्डल टस-से-मस न हुआ। क्यूबा का पुनर्जन्म स्पेनी ऋण से मुक्त गणतत्र के रूप मे हुआ। समूचा फिलिपाइन्स जलडमरूमध्य अमरीका के अधिकार मे आ गया और उसके साथ ही प्यूर्टोरिको भी। इस प्रकार समुद्रपार के प्रदेशो पर अधिकार करने के साथ, जिनके निवासी भाषा, सस्कृति और राजनीतिक परम्परा की दृष्टि से गैर लोग थे, ऐसा प्रतीत हुआ अमरीका एक नये मार्ग मे प्रवेश कर रहा है। साम्राज्यवाद-विरोधी लोगो ने ब्रायन, कार्ल शुर्ज, ई. एल. गोडकिन, मार्क ट्वेन और सिनेटर जार्ज फ्रिस्बी होर के नेतृत्व मे प्रबल रूप से इसका विरोध किया। किन्तु इस सन्धि को सामान्य स्वीकृति मिल गयी थी, जैसा कि १९०० के चुनावो मे मेक्किन्ले-प्रशासन को पहले की अपेक्षा भारी बहुमत से पुनर्निर्वाचित करने से स्पष्ट हो गया। समय पर इस बात का प्रमाण भी मिल गया कि वे समुद्रपारीय उत्तरदायित्व जिन्हे अमरीका ने ग्रहण किया, आशिक रूप से अस्थायी ही थे और हृदय से यह राष्ट्र साम्राज्यवादी कभी नहीं था। ज्यो-ज्यों वर्ष बीतते गये, उसने समुद्रपारीय उपनिवेशों को मुक्ति देने का निश्चय किया, न कि साम्राज्यविस्तार की चेष्टा की।

फिर भी स्पेन-अमरीका युद्ध ने अमरीकी इतिहास मे एक महत्त्वपूर्ण मोड ला दिया। अन्त मे, राष्ट्र ने अपने को एक विश्वशक्ति के रूप मे पहचान लिया, जितना ही पृथकता या अपने मे ही डूबे रहने का भूत कम होता गया अमरीका व्यापक अतर्राष्ट्रीय व्यवस्थाओ मे अधिक प्रमुख भाग लेने लगा। बौद्धिक चेतना मे वह अपने को पिछडे लोगो का शिक्षक मानने लगा। जनरल लिओनार्ड वुड जैसे प्रदूतों के अन्तर्गत फिलिपाइन्स, क्यूबा,

प्यूर्टोरिको और कुछ समय पश्चात् पनामा मे पुनर्गठन सुधार और विकास-सम्बन्धी कार्य हाथ मे लिये गये। हुगोरोट और मोरोस जैसी सस्कृति को अमरीका ने प्रशिक्षित करना शुरू किया जिसे किपलिंग ने नये पकडे हुए, चिडचिडे लोग, अर्धराक्षस और अर्धबालक कह कर पुकारा है। प्रयोगो द्वारा क्यूबा मे पीतज्वर पर डा. वाल्टर रीड तथा सेना के चिकित्सा-विभाग तथा अन्य लोगों द्वारा प्राप्त विजय ही अपने आप मे युद्ध की सम्पूर्ण कमी पूरी करने योग्य थी। सदियो से पीतज्वर ने समूचे समशीतोष्ण क्षेत्र मे जीवन का सर्वनाश कर दिया था और दक्षिणी बन्दरगाहो के लिए तो हर समय इसका खतरा बना हुआ था। स्पेन के साथ सघर्ष होने से पहले भी अमरीका ब्रिटिश नौबेडे पर मुनरो-सिद्धात के प्रबन्ध के लिए निर्भर था। इसके पश्चात् उसने बिना सहायता पाये ही योग्य, नौबेडे की आवश्यकता पर मुनरो-सिद्धात को कायम रखने के लिए बल दिया। युद्ध और विशेष करके ओरेगोन-युद्धपोत द्वारा प्रशान्त महासागर से हार्न के चारों और परिक्रमा कर क्यूबा की खाडी तक पहुँचने मे ६८ दिन लगने के कारण, सभी लोगों को स्थलडमरूमध्य नहर की आवश्यकता महसूस हुई। अन्तिम रूप से इस सघर्ष ने एग्लो-अमरीकी मित्रता को बढाने और जर्मन-अमरीकी सम्बंधों को बिगाडने की दिशा मे बहुत कुछ भूमिका अदा की। ब्रिटेन ने अमरीकी नीति को अपनी ही जीत मान कर उत्सव मनाया जब कि एक जर्मन दल, जिसकी ऑख मनीला पर लगी हुई थी, डीवी के लिए चिन्ता और चिढ़ का कारण बन गया था।

मुक्त द्वार—रूज़वेल्ट की कूटनीति : विश्व के मामलों मे नये रुख के प्रथम युद्धोत्तर प्रतीक के रूप मे 'मुक्तद्वार' सिद्धात का प्रतिपादन किया गया। १८९४--१८९५ मे जापान द्वारा पराजित चीन यूरोपीय शक्तियों का शिकार बन गया था। वे उस पर आर्थिक सुविधाएं और प्रदेशीय रियायतो के लिए चढ धाये। रूस ने व्यवहार रूप मे उत्तरी मंचूरिया पर अधिकार कर लिया; जर्मनी ने शियाचाऊ बन्दरगाह को गिरवी रख लिया ताकि शान्दुन्ग प्रान्त पर नियन्त्रण रखा जा सके। फ्रास ने भी विचित्र सुविधाए प्राप्त कर ली। अमरीका और ग्रेट ब्रिटेन दोनो इस लूटमार को चिन्ता से देख रहे थे। वे चीनी व्यापार को मूल्यवान समझते थे और उच्च व्यापारिक प्रतिस्पृद्धी दीवारे खडी करने से डरते थे। स्पेन-अमरीकी युद्ध प्रारम्भ होने से कुछ ही समय पूर्व

ब्रिटेन ने चीन में स्वतंत्र व्यापारिक अवसरों को बनाये रखने के लिए संयुक्त एंग्लो-अमरीकी कार्यवाही का सुझाव दिया था, किन्तु विदेश विभाग ने कोई उत्साह नहीं दिखलाया। १८९९ में वाशिंगटन ने एक भिन्न रुख अपनाया। वस्तुओं का निर्माण करनेवाले तथा व्यापारिक हितो ने पूर्व में दृढ़तर नीति के लिए दबाव डाला और इस पर जोर दिया कि वैदेशिक वाणिज्य-व्यूरो ने चीन को ससार मे अमरीकी बाजार के रूप मे 'सबसे अधिक आशाप्रद' स्थल बतलाया है। धर्म-प्रचारको ने भी अपनी आवाज बुलन्द की। लार्ड चार्ल्स बेरेसफोर्ड द्वारा एक सामायिक पुस्तक 'दि ब्रेक अप आफ चाइना'—चीन का विभाजन—ने भावनाओ को बहुत उभाडा। बहुत से व्यक्ति पृष्ठभूमि मे कार्यरत थे और अन्त मे सितम्बर मे विदेश सचिव जान हे ने चीन मे प्रभाव-क्षेत्र रखनेवाले राष्ट्रों से मॉग की कि वे इन क्षेत्रो मे विशेष तटकर, बन्दरगाह की अदायगी रकम या रेलखर्च न लगाने का वचन दे। यद्यपि अधिकाश उत्तर सशर्त थे; किन्तु १९०० के प्रारम्भ मे हे ने महाशक्तियो द्वारा इस पर निर्णायक एव निश्चित स्वीकृति की घोषणा की।

१९०१ मे थियोडोर रूजवेल्ट द्वारा राष्ट्राध्यक्षपद तथा हे और रूट के विदेश-सचिव-पद सम्हालने पर अमरीका की विदेश नीति दो विभागो मे बॅट गयी। उसका एक भाग द्वीप के नये क्षेत्रो और पनामा-जलमार्ग के चारो ओर केंद्रित था और प्राथमिक रूप से स्पेन-अमरीकी युद्ध का परिणाम था और इसके परिणाम-स्वरूप अमरीका एक ऐसी स्थिति प्राप्त कर चुका था, जहॉ वह एटलान्टिक और प्रशान्त सागर दोनो मे आक्रमण के खतरे का अनुभव करने लगा। दूसरा भाग विश्व-कूटनीति मे रूजवेल्ट के कुछ विशिष्ट व्यक्तिगत साह-सिक कार्यों का प्रतिनिधित्व करता था और अमरीका द्वारा विश्वशक्ति का पद प्राप्त करने का सूचक था। ये साहसिक कार्य जिनमे रूजवेल्ट द्वारा १९०५ मे रूस-जापान युद्ध को समाप्त करने के प्रयत्न और १९०६ मे उनके द्वारा एलजेरिरस कान्फ्रेन्स मे सम्मिलित होना प्रमुख थे, दोनो ही आश्चर्यजनक काम थे और रूजवेल्ट के दृष्टिकोण से दोनो सफल भी रहे। वास्तविक रूप से दोनो मे से एक भी आवश्यक न था; रूस और जापान पोर्ट्समाउथ, न्यू हेमिसफियर के अतिरिक्त अन्य कही अपना विवाद तय कर लेते और हेनरी व्हाइट को उत्तरी अफ्रीका के बन्दरगाहो और सुविधाओं के लिए जर्मनी के साथ ऐति-हासिक द्वन्द्व करने मे फ्रास का समर्थन करने के लिए भेजने की आवश्यकता नही थी। रूज़वेल्ट की वे विदेश नीतियॉ ही सच्चे अर्था मे अमरीकावासियो के

लिए महत्त्वपूर्ण थीं, जिनका प्रभाव फिलिपाइन्स, कैरीबियन द्वीपो और पनामा पर पडता था।

और, हम यह भी बता दे कि उनकी नीतियॉ एग्लो-अमरीकी सम्बन्धो की कद्र करती थीं। यद्यपि लोगों को इसमें सन्देह नहीं था, दो नृशंस युद्धों मे प्रजातन्त्र ही नहीं सभ्यता की सामान्य भावनाएँ भी शीघ्र ही इन दो महान आग्ल-भाषा-भाषी शक्तियों की एकता मे निहित होनी थीं। अमरीका विश्व मामलो के नीरस क्षेत्र मे हिचकिचाहट के साथ प्रवेश करनेवाला नवागन्तुक था; उसने स्पष्ट रूप से देखा कि ब्रिटिश नौवेडे का समर्थन अत्यावश्यक है। ग्रेट-ब्रिटेन को जहॉ तक उसकी अपनी सुरक्षा का सम्बन्ध था, चारो ओर जर्मनी की बढती हुई शक्ति के कारण खतरे का सामना करना पड रहा था। अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य मे जर्मन-प्रतिद्वन्द्विता; अफ्रीका के एक भूभाग के लिए जर्मनी की मॉग; एशिया मे 'खुला व्यापार नीति' के प्रति जर्मनी का विरोध; यूरोप मे जर्मनी की त्रिद्लीय मित्रता और जर्मनी के नौवेड़े की महत्वाकाक्षा इनमे प्रमुख रूप से ब्रिटिश हितों के लिये खतरे के समान थीं। यह निश्चित रूप से नही कहा जा सकता कि जर्मनी वेस्ट इंडीज अथवा लेटिन अमरीका में प्रदेशीय महत्त्वाकाक्षा नहीं रखता था—उसके कई राज्याधिकारी वहॉ पर नौवेडे का अड्डा स्थापित करने के इच्छुक हो सकते थे। ऐसे कतिपय स्पष्ट कारणो से अमरीका और ग्रेट-ब्रिटेन सुदूर पूर्व, कैरीबियन द्वीप समूह और अटलाटिक और प्रशान्त महासागरो पर एक दूसरे की नीति से सहमत थे, जहॉ उन्होंने बाद मे तथाकथित 'एटलाटिक' प्रणाली को कायम रखा।

जब यह जाहिर हो गया कि, अमरीका स्थलडमरूमध्य नहर बनाने का निश्चय कर चुका है तब ब्रिटिश सरकार ने मार्ग साफ करने लिए उदारतापूर्ण सुविधाएं प्रदान कीं। पुरानी क्लेटन-बुलवर-सन्धि १८५० मे यह व्यवस्था थी कि किसी भी ऐसी नहर मे दोनों राष्ट्र समान सुविधाए प्राप्त करेंगे और कोई भी उसे अपने लिए रक्षित नहीं रखेगा। सचिव हे और वाशिंग्टन-स्थित ब्रिटिश राजदूत के बीच वार्तालाप के परिणामस्वरूप 'हे-पौसेफोटे संधि' पर १८७१ मे विधिवत हस्ताक्षर हुए। इसमे यह व्यवस्था थी कि अमरीका नहर का निर्माण, प्रबंध अथवा नियंत्रण—यद्यपि प्रवेश दरों मे कोई भेदभाव नहीं किया जा सकेगा—कर सकता था; तथापि इसके द्वारा ब्रिटेन ने पहले की सधि के परम्परागत अधिकारों का परित्याग कर दिया। बदले की कोई भावना उत्पन्न नहीं हुई और अमरीका ने इस नीति के लिए ब्रिटेन की हृदय से प्रशंसा भी की।

कुछ समय पश्चात् ही, ग्रेट-ब्रिटेन ने वेनेजुएल-कर्जा के सवाल को उठाया जिससे अमरीकी क्षेत्रो मे इस पर पुनः प्रसन्नता प्रकट की गयी। तीन शक्तियों ब्रिटेन, इटली और जर्मनी के—वेनेजुएल राष्ट्राध्यक्ष कास्ट्रो की दिवालिया सरकार के विरुद्ध आर्थिक दावे थे। १८०२ के पतझड मे सीधे भुगतान के बजाय दूसरे तरीके से रकम वापस पाने के लिए इन तीनो ने सघटित दबाव डालने के तरीके पर समझौता किया। जर्मनी, ब्रिटेन और इटली ने वेनेजुला के तट की नाकेबन्दी कर दी, कई युद्धनावो को जब्त कर लिया और दो किलो पर गोले बरसाये। अमरीका केवल इतना ही चाहता था कि वेनजुला को अच्छा सबक सिखाया जाये, इससे अधिक वह कुछ नहीं करना चाहता था। जब ब्रिटेन ने देखा कि उसके द्वारा उठाये गये कदमों से अमरीकी जनमत क्षुब्ध हो रहा है तो उसने अपने इन कदमों को वापस ले लिए। हाउस आफ कामन्स मे जर्मनी के साथ सयुक्त कार्यवाही की निन्दा करने के लिए एक बैठक आयोजित की गयी और मत्रिमडल ने घोषित किया कि वह बलयोग को टालने का इच्छुक है। अमरीकी जनता ने ब्रिटेन के सद्-व्यवहार और जर्मनी की कूटनीति मे निहित इस भेद को अच्छी तरह समझा और बाद मे रूजवेल्ट ने यह नाटकीय कथा—जो अवास्तविक किन्तु शायद पूर्णतया बेबुनियाद नहीं है—की सृष्टिकी कि किस प्रकार उन्होंने डीवी और नौसैनिक वेडे को तत्पर रहने के लिए आदेश दिये थे ताकि कैसर को पीछे हटने के लिए बाध्य किया जा सके।

शताब्दी के प्रारम्भ मे ही ब्रिटिश सरकार ने पुनः कनाडा-अलास्का सीमा सम्बन्धी विवाद का हल करने मे सहायता पहुँचायी, जिससे अमरीकी प्रसन्न हुए, परन्तु कनाडावासी क्षुब्ध हो उठे। १८२५ की पुरानी एग्लो-रूसी सधि के अनुसार अलास्का के तट के समानान्तर पर्वतों की चोटियो को इस प्रकार लिया जाना चाहिए था कि रूस के लिए ३० मील विस्तृत तटीय भू-पट्टी सुरक्षित रहे। अमरीका को यह भूभाग उत्तराधिकार मे मिला। प्रश्न यह था कि यह भूभाग तट की गहरी धाराओं के ऊपर से टेढे-मेंढे होकर जाये अथवा उनके ऊपर से एक सीधी रेखा मे। कनाडा को आशा थी कि इन सिरों पर उसे भी कुछ बन्दरगाह प्राप्त हो जायेंगे। गहरे वाद-विवाद के पश्चात् इस प्रश्न को कानून विशेषज्ञो के एक मडल को पचनिर्णय के लिए सिपुर्द किया गया जिसमे ब्रिटेन, कनाडा और अमरीका के प्रतिनिधि थे। रूजवेल्ट इस भूभाग को पाने के लिए कटिबद्ध थे, अतएव उन्होंने धमकी से

काम लिया किन्तु इसकी आवश्यकता ही नही थी, न्याय ने भी अमरीका का साथ दिया था और ब्रिटिश कानून विशेषज्ञ लार्ड एल्वरस्टन ने बारबार अमरीका के पक्ष मे मतदान किया। अन्त मे १९६० मे ब्रिटिश नौबेड़े को तीन मुख्य रूप से वितरित किया गया--भूमध्यसागरीय डमरूमध्यी और पूर्वीय अटलान्टिकी। वेस्ट इंडीज के सरक्षण के लिए नियुक्त बरमूडा स्थित जहाज़ी बेडा वापस बुला लिया गया। जर्मनी की चेतावनी के कारण ही यह कदम उठाया गया था। किन्तु, शक्तिशाली नौसेना होने से अब अमरीका कैरीबियनमे पूर्ण अधिकार चाहता था।

उसके ऐसा करने का एक कारण तो यह था कि पनामा नहर का निर्माण-कार्य चल रहा था। रूजवेल्ट ने १९१२ मे पश्चिमी प्रदेशों से कहा—"मैने पनामा पा लिया।" नहर का निर्माण करने का वही एकमात्र मार्ग था। इस वाक्य का प्रथमाश शाब्दिक रूप से सत्य है। १९१२ मे स्वीकार किये गये एक कानून द्वारा कॉग्रेस ने राष्ट्राध्यक्ष को यह अधिकार प्रदान कर दिया था कि पनामा मे नहर खोदनेवाली पुरानी फ्रासिसी कम्पनी के अधिकारो को खरीद ले, कोलम्बिया से उस राज्य की भूमि की एक पट्टी पर जो एटलान्टिक तट से प्रशान्त तट तक जाती है, स्थायी रूप से नियत्रण प्राप्त कर ले और विशाल नहर की खुदाई प्रारम्भ कर दे। कोलम्बिया के साथ समझौते की बात शुरू की गयी। किन्तु, वह गणतन्त्र यह जानते हुए भी कि वह भूभाग उसकी महानतम सम्पत्तियों मे से है, केवल तनिक आर्थिक लाभ मात्र के लिए उसका परित्याग नहीं कर सकता था। अमरीकी राजधानी मे सन्धि के लिए तैयार किये गये प्रस्ताव को जिसमे अमरीका द्वारा ६ मील लंबे जमीन के टुकडे पर नियंत्रण की व्यवस्था थी, बोगोटा सिनेट द्वारा अस्वीकार कर दिया गया। अमरीका मे भी इस तरह के प्रस्तावो को अस्वीकार किया जाना, एक सामान्य बात थी क्योंकि अमरीकी सिनेट ने अन्य कई ठोस प्रस्तावो की भी धज्जी-धज्जी उडा दी थी। किन्तु, रूजवेल्ट ने 'निरकुशता' कहकर इस कदम की निन्दा की और कोलम्बिया की राजनीति को को लोभी और भ्रष्ट बतलाया। वे दिसम्बर मे काग्रेस की बैठक होने से पूर्व ही आयोजित नहर के लिए भूभाग पा लेने का निश्चय कर चुके थे, क्योकि उन्हे भय था कि यदि उन्होंने ऐसा नही किया तो तत्सबंधी योजनाएं नष्ट हो जायेंगी। दो अन्य शक्तिशाली तत्व भी अविलम्ब कार्यवाही करना चाहते थे। एक तो वह फ्रेंच कम्पनी थी, जिसने पहले की एक खरीद में ४०० लाख पौड की बाजी लगा दी थी। दूसरे थे पनामा के

लोग, जिन्हे डर था कि यदि अमरीका ने शीघ्र ही नहर का खुदाई-कार्य प्रारम्भ नहीं किया तो उसके बजाय नहर निकारगुआ मे बनेगी। परिणाम यह निकला कि पनामा मे राज्यक्राति का विचार एक साथ ही कई व्यक्तियों के मस्तिष्क मे आया। 'रिव्यू आफ रिव्यूज' पत्रिका ने—जिसके सम्पादक रूजवेल्ट के एक घनिष्ट मित्र थे—एक लेख को प्रकाशित कर ही दिया, "यदि पनामा विद्रोह कर दे तो?" वाशिंगटन मे विद्रोह फूट पडने की चर्चा फैल गयी और पनामा के तट पर विध्वंसक युद्धपात भेज दिये गये। भूडमरूमध्य मे फ्रास के जासूस कार्यरत हो गये। ३ नवम्बर १९०३ से कोलोन मे युद्ध-पोत नैशविले के पहुंचने के साथ ही विदेश विभाग ने घटना स्थल पर मौजूद अमरीकी प्रदूत को समुद्री तार भेजा :

"भूडमरूमध्य मे विद्रोह की खबर है। विभाग को पूरी तौर पर और तत्परता के साथ सूचना भेजो।"

पनामा स्थित प्रदूत ने जो इस मामले कोई मूर्ख थोडे था, तार द्वारा उत्तर भेजा :

"अभी तक तो कोई विद्रोह नही हुआ है। रात मे होने की आशंका है। परिस्थिति सकटपूर्ण है।"

एक या दो घटे बाद उसने फिर सूचना भेजी :

"आज रात को ७ बजे विद्रोह हुआ, कोई खून-खराबी नहीं हुई। सेना और नौवेड़े के अधिकारी बन्दी बना लिये गये हैं। नयी सरकार आज रात को ही सघटित हो जायेगी।"

अमरीकी नौसैनिक तट पर उतारे गये और उन्होने कोलम्बिया की सेना को विद्रोहियो का सामना करने से रोक दिया। पनामा के एक मत्री से वाशिंगटन मे तत्परता के साथ बातचीत की गयी और नये गणतत्र ने एक सधि पर हस्ताक्षर कर दिये, जिसके अन्तर्गत यह मूल्यवान भूप्रदेश अमरीका को १ करोड डालर मे एक उचित ठेके की दर पर दे दिया गया। रूजवेल्ट ने बाद मे कहा, "यदि मैने परम्परागत रूढिचुस्त तरीको का आश्रय लिया होता तो मुझे काग्रेस को दो सौ पृष्ठो का एक मोटा वक्तव्य प्रस्तुत करना पडता और वाद-विवाद अब तक चल रहा होता। किन्तु नहर-क्षेत्र मैने ले लिया और काग्रेस को वाद-विवाद करने दिया, और जहॉ वाद-विवाद चल रहा है, तो उसके साथ साथ नहर का खुदाई-कार्य भी चल रहा है।" यह पूर्णतया सत्य है। एक दशाब्दी मे ही कर्नल जार्ज डब्ल्यू. गोएथाल्स की विलक्षण इंजी-

निर्धारित प्रणाली और विलियम सी. गोर्गास के स्वास्थ्य-रक्षा सम्बन्धी सतर्कतामूलक उपायों के कारण नहर चालू हो गयी। किन्तु, रूजवेल्ट की कूटनीतिक स्वार्थपरा चाल ने समूचे लैटिन अमरीका के जनमत को चौंका दिया।

थियोडोर रूजवेल्ट लैटिन गणतंत्रों के साथ अच्छा सम्बन्ध रखने की हार्दिक अभिलाषा से ही कार्य कर रहे थे; किन्तु उनकी नीति और इसके उग्र परिणाम दोनों मिले-जुले थे। जब रियोजेनिरियो में तृतीय वृहत्तर अमरीकी सम्मेलन की व्यवस्था की गयी तो उन्होंने सचिव रूट को दक्षिण अमरीका की सद्भावना यात्रा के लिए भेजा। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि वे लैटिन अमरीका से मित्रता स्थापित करना चाहते हैं। उन्होंने मुनरो-सिद्धान्त को दक्षिणी गणतंत्रों के लिए महत्वपूर्ण संरक्षण सिद्धान्त माना। किन्तु, उन्होंने इसमें एक और बात भी जोड़ दी जिससे कई गणतंत्र संत्रस्त हो गये। यह बतलाते हुए कि अमरीका यूरोपीय शक्तियों द्वारा अनुशासनहीन छोटे राष्ट्रों के प्रति जो अपना कर्ज नहीं दे सके तथा विदेशी सम्पत्ति पर जिन्होंने अधिकार कर लिया अथवा विदेशियों के साथ दुर्व्यवहार किया, अभद्र व्यवहार नहीं करने देगा। उन्होंने घोषित किया कि इससे अमरीका के कन्धों पर न टाला जा सके ऐसा उत्तरदायित्व आ पड़ा है। अमरीका को स्वयं देखना पड़ेगा कि ऐसे राष्ट्र उचित व्यवहार करें। उन्होंने अपने इस सिद्धांत को सान्टो डोमिंगो के प्रति किये गये व्यवहार में दर्शाया। जब १९०४ में राष्ट्र को हस्तक्षेप की धमकी दी गयी तो अमरीका ने उसे सुझाया कि वह उसे अपना वित्तीय 'रिसीवर' व्यवस्थापक स्वीकार करले। इस उदाहरण ने कैरीबियन सागर में कई कथित स्वतंत्र छोटे राज्यों के निर्माण में एक पहल कायम कर दी। यह नीति शांति और व्यवस्था को दृष्टि में रखकर अपनायी गयी थी, किन्तु इसने लैटिन अमरीका में यह आशंका उत्पन्न कर दी कि अमरीका घूंसामारवाले तरीके अपना रहा है। प्रशान्त सागरी मामलों में इन दिनों में भी रूजवेल्ट ने ऐसे तरीके अपनाये जिनके परिणाम अस्पष्ट थे। जापान-अमरीका के सम्बन्ध चिन्ता के कारण बनते जा रहे थे। जापान और सान फ्रांसिस्को के मध्य एक विवाद में, जहाँ स्कूलों में जापानियों के साथ भेदभाव का व्यवहार किया जाता था, राष्ट्राध्यक्ष ने हस्तक्षेप किया। अपनी आदर्श नीति से उन्होंने जापानियों की पीड़ित भावनाओं का उचित हल निकाल दिया और जापानी मजदूरों को देश में लाने से रोकने के लिए एक 'सभ्य समझौता' किया। सान-फ्रांसिस्को के अधिकारियों को अधिक बुद्धिमत्तापूर्ण तरीका अपनाने को भी उन्होंने बाध्य किया। किन्तु

जबकि उनका विचार था कि चेतावनी देना उचित है, उन्होंने अमरीकी वेड़े को ससार भ्रमण के लिए भेजा। यह वेड़ा जापानी बन्दरगाहो पर रुका और वहाँ उसका भद्रतापूर्ण स्वागत किया गया। यह उनकी एक अत्यधिक उद्धरण की जानेवाली कहावतो के भावनानुसार ही था · "विनम्रतापूर्वक बोलो, लेकिन एक बडा सोटा भी साथ मे रखो।"

ज्यों-ज्यो वर्ष बीतते गये यह अधिकाधिक स्पष्ट होता गया कि अमरीका न केवल विश्वशक्ति ही है, बल्कि ससार की तीन या चार बडी शक्तियो मे से एक है। उसने विश्वशाति की स्थापना के हेतु हेग की दोनो सभाओं मे प्रमुख रूप से भाग लिया। उसने समस्त भूमंडल पर प्रजातान्त्रिक सिद्धातो और परस्पर व्यवसाय करने की स्वतत्रता का नैतिक रूप से समर्थन किया। समय-समय पर रूजवेल्ट के नीतिहीन व्यवहार और टैफ्ट की 'डालर कूट-नीति' के बावजूद उसने लेटिन अमरीका का विश्वास प्राप्त करने की दिशा मे प्रगति की। समय-समय पर छोटे-छोटे विवादो के बावजूद वह धीरे-धीरे ब्रिटेन और समुद्रपारीय ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल के देशो के अधिक सम्पर्क मे आता गया। जब प्रथम विश्वयुद्ध आरम्भ हुआ तो कुछ हद तक अमरीका अब भी यूरोप से पृथक ही था; किन्तु अब वह उतना अधिक पृथक नहीं रह सकता था; क्योंकि शीघ्र ही उसे एक भयकर भंवर मे फँस जाना पडा।

उन्नीसवाँ परिच्छेद

वुडरो विल्सन और विश्वयुद्ध

वुडरो विल्सन : वुडरो विल्सन कई बातों मे जेफरसन के बाद अमरीकी राजनीति में सबसे अधिक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। विद्वान, बुद्धिमान, सार्वजनिक जीवन की तडक-भडक से दूर होते हुए भी, वे चतुर, दृढ़ और साधन-सम्पन्न थे। एक भविष्यद्द्रष्टा और आदर्शवादी होने के बावजूद वे लिंकन के बाद मे पहले वास्तविक और निपुण राजनीतिक नेता थे। राजनीति और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में वे सिद्धातवादी थे और उनमें मानों कनेनेन्टर-पूर्वजो की आत्मा का पुनर्जन्म हुआ था। प्राचीन तरीके की मृदुभाषिता के साथ उनमे क्रोधी योद्धा का मिश्रण था। सिद्धातों के प्रति उनमे बडी निष्ठा थी और उनको बनाये रखने के लिए वे दृढतापूर्वक उग्र हो उठते थे। उनके भाषणों मे ब्रायन-जैसे मित्रतापूर्ण या रूजवेल्ट जैसे स्पष्ट स्फूर्तिदायक गुण नही थे। किन्तु, उनमे भाषण-कला की खूबी और काव्यमय सौदर्य था, जो लिकन के बाद किसी के भाषणों मे नही पाया गया था। वे राजनीति के विद्यार्थी थे। सरकार पर उन्होंने कई लेख लिखे थे और राष्ट्राध्यक्ष-पद, दलगत-प्रणाली के तौर-तरीकों, विश्व के राष्ट्रों मे अमरीका के स्थान के बारे मे उनके अपने परिपक्व विचार थे और वे उन्हे कार्य रूप मे परिणत करने के लिए तत्पर थे। स्पष्ट, स्वस्थ दृढ, उच्च व शात विचारवाले जैसा कि सचिव लेन ने कहा, "वे बुद्धिमान होते हुए दम्भी, समझौतावाद से दूर और विरोध किये जाने पर चिड़ाचिडा उठते थे।" अपने आपसी सम्बन्धों में वे लोगों को अंत तक अपनी ओर निगूढ़ सिद्धात की भाति आकर्षित करते थे। उन्होने व्यक्तिगत प्रेम को अपनी नीतियों में कभी बाधा न डालने दिया, न किसी ऐसे मित्र को क्षमा ही किया जो उनके उक्त स्तर तक नहीं पहुँच पाया।

विल्सन का अधिकाश जीवन राजनीति के प्रोफेसर और प्रिंस्टन-युनिवर्सिटी के अध्यक्ष के रूप में शास्त्रीय अध्ययन-अध्यापन मे बीता था। १९१७ मे न्यू जर्सी के डेमोक्रेटिक दल के सचालकों ने उन्हें शासन को सवारने लिए आगे

बढ़ाया किन्तु उन्होंने समूचे शासन पर ही अधिकार कर लिया। दो वर्ष के भीतर उन्होंने राजनीति के दिग्गजों को वहाँ से खदेड दिया। न्यू जर्सी को अमरीकी राजनीति के सडे-गले कस्बे से बदल करके उसे एक आदर्श राष्ट्रमंडल का रूप दे दिया। और, इस प्रक्रिया मे उन्होंने कई कार्य-प्रणालियों को जिन्हे बाद मे वे अलक्षण प्रतिमा के साथ उपयोग लाये थे, पूर्णता प्रदान की—साहसिक निर्भीकता, निरुत्तर कर देनेवाली निष्कटता, अपने को ही दल का नेता स्वीकार किये जाने पर बल देना, राजनीतिज्ञों के स्तर से भी ऊँचे उठकर स्वयं जनता से अपील करना, और तीव्र तथा कडे प्रहार करने का वाक्-कौशल उनमे कूट-कूट कर भरा था। वह न्यू जर्सी मे विल्सन की ही यह आश्चर्यजनक सफलता ही थी, जिसने उन्हे राष्ट्रीय स्तर पर कीर्ति प्रदान की थी, जिससे ब्रायन जैसे लोगों का समर्थन उन्हे मिला और उन्हे राष्ट्राध्यक्ष-पद के लिए उम्मीदवारी मिली। वह उनकी निष्कपट सच्चाई और अद्वितीय चुनाव भाषण ही था, जिससे वे रूजवेल्ट पर विजयी हुए।

विल्सन का उद्घाटन भाषण एक साथ ही चुनौती और प्रतिज्ञा भी था। 'अब किसी को भ्रम न होगा,' उन्होंने कहा, "कि राष्ट्र किस ध्येय के लिए डेमोक्रेटिक दल का उपयोग करना चाहता है। वह उसका उपयोग अपनी खुद की योजना और दृष्टिकोण मे परिवर्तन के लिए करना चाहता है।" तब पुनर्निर्माणसम्बन्धी सुधार का कार्यक्रम सामने आया, जिसका ध्येय था नयी स्वतत्रता सहित एक ऐसी योजना जो एक साथ ही निर्भीक और विशद भी हो। "हमने ऐसी चीजो की सूची बना ली है जिन्हे परिवर्तित करना है," विल्सन ने कहा। उन्होंने आगे बताया कि 'ऐसा तट-कर जो सरकार को व्यक्तिगत स्वार्थो के हाथो मे सुगम साधन बना देता है।' बैंकिंग और मुद्रा प्रणाली जो पूर्णरूप से 'नकद धन को कम कर सकने और उधार पर प्रतिबंध लगाने मे लचीली बन सके,' एक ऐसी औद्योगिक प्रणाली जो 'श्रम की स्वतत्रता को सीमित करती है और उसको कम अवसर प्रदान करती है,' ऐसी कृषि अर्थ-व्यवस्था जो अकुशल और उपेक्षित है, और प्राकृतिक साधनो का व्यक्तिगत लाभ के लिए विकास। ऐसा काम जो सरकार को हाथ मे लेना था, वह था, 'मानवता की सेवा करना'—महिलाओं और बच्चों तथा साधनहीन लोगों का कल्याण करना।

इन सुधारों को समझ-बूझकर और कुशलता के साथ प्राप्त करना था। फिर भी सुधार की कार्य-प्रणाली 'केवल विज्ञान के समान सरल प्रणाली न थी।

क्योंकि राष्ट्र अब काफी जागरूक हो चुका है। एक पवित्र महत्वाकांक्षा, अन्याय के ज्ञान, आदर्शों के लुप्त हो जाने, सरकार के प्रायः भ्रष्ट हो जाने, और दुराचार को एक साधन बन जाने के कारण राष्ट्र की जनता विक्षुब्ध हो उठी थी। इसलिए अवसर और अधिकारों के इस युग का सामना करने के लिए हमारे अन्तस्थल मे जिस भावना का आविर्भाव हुआ था उसमें एक दैवी आभास था जिसमे न्याय और दया का समन्वय था तथा न्यायाधीश और जनता मे सद्भावना थी। इसलिए हमारा कर्तव्य अब केवल राजनिति के क्षेत्र से सम्बधित न रह कर सर्वागीण विकास का हो गया था।'

नयी स्वतंत्रता कार्यरत : ये आदर्श उच्च थे, इनकी भाषा प्रभावशाली थी, क्या यह कालेज प्रोफेसर जिसे राष्ट्राध्यक्षपद प्राप्त हुआ था, आश्चर्य-जनक रूप से उन्हे कानून मे परिवर्तित कर सकता था। उन्होंने शीघ्र ही दिखला दिया कि वे इनके बारे मे सच्चाई से काम लेना चाहते थे। काग्रेस का विशेष अधिवेशन बुलाया गया और जब उसकी बैठक हुई तो विल्सन ने एक भूली-बिसरी प्रथा को फिर से प्रचलित करते हुए, सदन के समक्ष खुद भाषण दिया। "तटकर मे परिवर्तन करना होगा" उन्होंने कहा, "हमे ऐसी सभी रियायतों को रद्द कर देना होगा, जो किसी को सुविधाएं प्रदान करनेवाली लगती हैं।" यह एक खतरनाक समस्या थी। गृहयुद्ध के पश्चात् सरक्षण की प्रणाली मे वास्तविक रूप से कोई फर्क नहीं आया था। क्लीवलैण्ड ने छोटी-मोटी रियायते ही प्राप्त की थी और नीतिकुशल रूजवेल्ट ने इस समस्या को टाल ही दिया था। अलाबामा के अंडरवुड और टेनेसी के हल ने अपने विधेयक तैयार कर रखे थे और औपचारिक कार्यवाहियों द्वारा आगे लाये जाने के कारण सदन ने उसे तत्परता से स्वीकार कर लिया। किन्तु जब उस पर सिनेट ने विचार करना आरम्भ किया तो समान कक्ष के लोग दैत्यो की भाति राजधानी मे आ धमके और पर्यवेक्षकों ने १८९४ मे गड़बड़ की भविष्यवाणी की। तब एक खुले पत्र में विल्सन ने सभाकक्ष के लोगों पर तीव्र प्रहार किया। "यह गम्भीर रूप से देश के हित मे है," उन्होंने कहा, "आप लोग कक्ष से कोई सम्बन्ध न रखे .जब कि चतुर लोगो की जमात एक राय पैदा करने का प्रयत्न करती है ताकि जनता के हित के स्थान पर उनका अपना व्यक्तिगत हित सम्पन्न हो सके।" यह फटकार प्रभावशाली सिद्ध हुई और छः महीने तक पद सम्हाले रहने के पश्चात् जब विल्सन ने तटकर विधेयक पर हस्ताक्षर किये

तो उन्हें सतोष हुआ कि राजनीतिक मंच पर दिये गये वचन और चुनाव-प्रचार मे की गयी प्रतिज्ञा को पचास वर्षों मे पहली बार नीचे की ओर सशोधन करने के उनके कार्य ने अन्तिम रूप से पूरा किया।

देश ने देखा कि वह एक ऐसा कार्यवाहक था जो अपने वचन मे विश्वास रखता था और वही करता था जिसका वह वचन देता था। विल्सन ने अपने दल को सोच-विचार का समय नही दिया। जब कॉग्रेस तटकर-सूची पर वाद-विवाद कर रही थी, तब उन्होने उसे अपने उद्घाटन-भाषण का स्मरण कराया, जिसमे उन्होने वचन दिया था कि वे ऐसी बेकिंग और मुद्रा-प्रणाली मे सुधार करेंगे, जो सरकार द्वारा अपने बॉड्स बेचने की आवश्यकता पर आधारित रहेगी और जो नकद मुद्रा को कम करने और ऋण सीमित करने वाली होगी। यह समस्या भी तटकर समस्या की भॉति राजनीतिक विस्फोट से भरी थी। राष्ट्र लबे समय तक सीमित ऋण और मुद्राप्रणाली के कारण नुकसान उठा चुका था; लगभग दोनों ही प्रथाए दोषपूर्ण थी; किन्तु कुछ ही लोग उसके सुधार के बारे मे एकमत थे। रूजवेल्ट-प्रशासन के समय का यह कामचलाऊ नियम बना लिया गया था, जिसके अन्तर्गत राष्ट्रीय बैकों को सकटकाल मे मुद्रा जारी करने के लिए अनुमति की व्यवस्था थी। एक वित्तीय आयोग ने अन्य राष्ट्रों की बैंकिंग-प्रणाली पर विस्तृत रिपोर्ट तैयार की थी। किन्तु, बैंकिंग-प्रणाली को पूर्णरूपेण परिवर्तित करने की आवश्यकता का अनुभव लम्बे समय से हो रहा था। बैक व्यवसायी एक कानून बनाने के लिए एकत्रित हुए जो उनका नियत्रण बनाये रखे। ब्रायन, काफी अर्से तक यह करते रहे कि वित्त का प्रश्न सबसे बड़ा प्रश्न है, वे इस बात के लिए दृढ़प्रतिज्ञ थे कि सरकार ऋण पर नियंत्रण रखे। विलसन ने बैंकिग के टेक्निकल-पहलुओ के बारे में बहुत कम जानते थे, किन्तु जिन्होंने अमरीका के प्रथम और द्वितीय बैको के इतिहास और बाद की स्वतंत्र-कोष प्रणाली सम्बन्धी प्रयोग का सफल अध्ययन किया था, ब्रायन का साथ दिया। उन्होंने कहा, "नियंत्रण सार्वजनिक होना चाहिए, न कि व्यक्तिगत और सरकार में ही निहित होना चाहिए जिससे कि बैंक साधन हों, न कि उद्योग, व्यापार और व्यक्तिगत उद्यम और पहले के स्वामी।" फेडेरल रिजर्व–एक्ट से—सघीय सुरक्षित कोष कानून जो लम्बे वाद-विवाद के बाद ही अस्तित्व में आ पाया, इन आवश्यकताओं की पूर्ति हुई। इसके जरिये बैकिग प्रणाली का विकेन्द्रीकरण किया गया और इस प्रकार उपेक्षित दक्षिण और पश्चिम को पहले से अच्छी बैंकिग की सुविधा उपलब्ध हुई। उसने सघीय सुरक्षित नोटों द्वारा

सरकार के नियंत्रण मे एक सरल मुद्रा की व्यवस्था की। सघीय सुरक्षित प्रणाली ठीक समय पर ही अस्तित्व मे आयी। उसके बिना सरकार विश्वयुद्ध से उत्पन्न सकट को कठिनाई से ही सफलतापूर्वक सीमित कर सकती थी।

नये प्रशासन की एक तीसरी प्रमुख वैधानिक सफलत ट्रस्टो (न्यासों) के नियंत्रण की थी। शरमन एक्ट श्रम के विरुद्ध बड़े औद्योगिक सयुक्तीकरण की अपेक्ष अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुआ। हाल की जाच-पड़ताल से पता चलता था कि उद्योग, यातायात और बैंकिंग मे केन्द्रीय नियन्त्रण का आन्दोलन उत्तरोत्तर आगे बढ़ रहा था। टटकर और बैंकिंग व्यवधानो के मार्ग से हटते ही विल्सन ने अपने चुनाव के वादों की पूर्ति की दिशा मे कदम उठाया। १९१४ ने क्लेटन एण्टी-ट्रस्ट-एक्ट ने सतर्कतापूर्वक अनेक भ्रष्टाचारों का उन्मूलन किया। चीज़ों के दामों पर एकाधिपत्य करने वाली प्रवृत्ति पर प्रतिबन्ध लगा दिया। बड़े कारपोरेशनो को एक दूसरे से सम्बन्ध होने पर रोक लगा दी और कारपोरेशन डाइरेक्टरों को एण्टी-ट्रस्ट कानूनो के उल्लंघन पर व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी बना दिया। इसी समय फेडरल ट्रेड कमीशन—सघीय वाणिज्य आयोग —की स्थापना की गयी ताकि व्यापारिक कार्यवाहियों की जॉच-पड़ताल की जा सके, अनुचित तरीकों-सबंधी शिकायतें सुनी जा सके और अवाछनीय कार्यवाइयों को रोकने सम्बंधी आदेश जारी किये जा सके।

कृषक और श्रमिक समाज को भी नहीं भुलाया गया। फेडरल फार्म लोन ऐक्ट (सघीय कृषि-ऋण-कानून) द्वारा किसानो को कम ब्याज पर ऋण पाने की व्यवस्था कर दी गयी। वेयरहाउस ऐक्ट (गोदाम-कानून) द्वारा प्रमुख खड़ी फसलों पर ही जमानती ऋण देने की व्यवस्था की गयी। इससे पौपुलिस्टो की पुरानी उपकोष-योजना को बहुत कुछ अशो मे कार्यान्वित कर दिया गया। क्लेटन-एण्टी-ट्रस्ट-ऐक्ट की एक धारा ने विशेप रूप से श्रम को प्रतिबन्धों से मुक्त कर दिया था और श्रम-विवादो मे न्यायालयो द्वारा रोक लगाने पर प्रतिबंध लगा दिया—यह एक ऐसा प्रतिवन्ध था, जिसे न्यायालय की स्वीकृति नहीं प्राप्त हो सकी। बाल-श्रम को समाप्त करने की दृष्टि से बनाये गये दो कानून कॉग्रेस द्वारा स्वीकार कर लिये गये· किन्तु न्यायालयो ने उन्हे रद्द कर दिया। १९१५ मे ला फालेट सीमेन्स (नाविक ऐक्ट) ने नाविको को इस अत्याचार से मुक्त कर दिया, जिससे वह बहुत अर्से से पीड़ित थे। उसके अगले वर्ष एडेमसन-ऐक्ट ने रेलमार्ग के श्रमिकों के लिए दिन मे ८ घंटे के काम की व्यवस्था की।

इस प्रकार तीन वर्षो मे विल्सन ने लिंकन के बाद किसी भी राष्ट्राध्यक्ष की अपेक्षा अधिक कानून बनवाये। उन्होने कॉंग्रेस के कार्यवाहक नेतृत्व मे और पार्टी के अध्यक्षीय नेतृत्व मे व्यापक तथा दृढ विकासशील सम्भावनाओ को दर्शाया था। उन्होने प्रमाणित कर दिया था कि, सकटकाल मे भी प्रजातंत्र तेजी के साथ और प्रभावशाली ढंग से कार्य कर सकता है।

प्रजातंत्रीय वैदेशिक नीति : विल्सन की वैदेशिक नीति उनकी घरेलू नीति के समान ही उनके पूर्वाधिकारियो की नीतियो से भिन्न थी। रूजवेल्ट ने वैदेशिक मामलो मे धमकी की नीति को खुशी खुशी अपनाया था। टैफ्ट ने 'डालर-कूटनीति' कही जानेवाली नीति को प्रोत्साहन दिया था। इन नीतियो से अमरीका विश्व-मामलो मे अधिक प्रभावशाली बन गया था: किन्तु यह सब लेटिन अमेरिका के राष्ट्रो को क्रुद्ध करके और आकस्मिक कूटनीतिक और व्यापारिक दुस्साहसो मे डाल कर ही, जिनमे जनता की वास्तविक रुचि न थी और इस प्रकार उन्होने जन-कल्याण को खतरे मे डाल कर किया गया था। विल्सन के प्रथम अधिकृत कार्यो मे से एक था, बैंकरो द्वारा चीन को दिये जानेवाले प्रस्ताविक ऋण पर से अधिकृत स्वीकृति हटा लेना क्योंकि वे 'ऋण की शर्तो अथवा उत्तरदायित्व को स्वीकार नहीं कर रहे थे।' उसी तरह उन्होने लेटिन अमरीकी गणतत्रो के साथ मित्रता स्थापित करने और उनका विश्वास प्राप्त करने की अपनी इच्छा की घोषणा की। इसके कुछ समय पश्चात् अपने मोबाइल के भाषण मे, उन्होंने डालर-कूटनीति को विशेष रूप से रद्द करने की इच्छा प्रदर्शित करके, यह वचन दिया कि, अमरीका फिर कभी विजय द्वारा कोई क्षेत्र नही प्राप्त करेगा। परिस्थियॉ ऐसी थीं कि अमरीका को कैरीबियन और मध्य अमरीकी गणतन्त्रो के मामलो मे उलझना पडा, किन्तु अपने प्रशासन की अवधि मे, विल्सन ने शोषण के निमित्त हस्तक्षेप करना दृढतापूर्वक अस्वीकार कर दिया।

विल्सन की नीति की कठिनाइयॉ मेक्सिको के साथ अमरीकी सम्बन्धो में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती थी। पैतीस वर्ष से वह देश पोरफिरो डिमाज के अत्याचारी शासन के नीचे कराह रही थी। उसने अपने लोगो को दासो की स्थिति दे रखी थी और अपने देश की खानो और व्यवसाय को विदेशियो को बेच रखा था। १९११ मे, मध्यमवर्ग और नौकरीपेशा लोगों ने विद्रोह कर दिया, डिमाज को निष्कासित कर दिया गया और एक उदारवादी फ्रासिस्को

माडेरो को राष्ट्राध्यक्ष नियुक्त किया गया। यह एक नये मेक्सिको का उदय था; किन्तु दो वर्षों के भीतर विक्टोरियागो ह्यूरेटा के नेतृत्व में प्रतिक्रांतिकारी आन्दोलन ने माडेरो को पराजित करके उसकी हत्या कर डाली। तेल, रेलमार्ग, खनिज और भू-स्वामित्व में रुचि लेनेवाले विदेशी लोगों ने डिमाज के दिनों को लौटता देखकर, खुशी मनायी और अधिकाश बडी शक्तियों ने नये राष्ट्राध्यक्ष को मान्यता प्रदान करने की दिशा में तत्परता दिखलायी। किन्तु; विल्सन ने ऐसा नहीं किया। उन्होंने अनुभव किया कि ह्यूरेटा को मान्यता देने का अर्थ होगा, हत्या पर ध्यान न देना और वे अमरीकी व्यापारियों के लिए अवसर की कमी से प्रभावित नहीं हुए; क्योंकि व्यापारी अपने लाभ मे ही रुचि रखते थे। बाद में संघर्ष होने पर, उन्हें जो कदम उठाना था उसको ध्यान मे रखते हुए उन्होंने कहा—"हमारा विश्वास है कि, न्यायपूर्ण सरकार सदैव शासित वर्ग की स्वीकृति पर ही निर्भर करती है और स्वतन्त्रता तब तक नहीं आ सकती जब तक कि व्यवस्था और कानून जनचेतना तथा स्वीकृति पर आधारित न हो।" नैतिकता पर आधारित इस नीति की तब और बाद में यह कह कर आलोचना की गयी कि, यह उचित व्यवहार और औचित्य की दृष्टि से दूर है। जैसा कि जर्मन सम्राट ने कहा, "नैतिकता तो ठीक है, किन्तु हितों के बारे मे क्या होगा?" किन्तु विल्सन ने जान लिया था, जैसा कि फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट ने एक पीढ़ी पश्चात् जाना था कि अव्यवस्था को प्रसन्नतापूर्वक स्वीकृति प्रदान करने अथवा हिंसा के फल को मान्यता देने का परिणाम घातक हो सकता है।

विल्सन ने न केवल ह्यूरेटा रंजित हाथों को मान्य करने से अस्वीकार कर दिया, वरन् उन्होने ब्रिटेन को भी अपनी नीति का समर्थन करने को राजी कर लिया। यह समर्थन उन्हे पनामा-नहर पर कर के बारे मे उचित समय पर रियायत देने के कारण प्राप्त हुआ था। किन्तु मेक्सिको से सम्बन्ध खराब होते चले गये और जब ह्यूरेटा ने टैम्पिको मे कुछ अमरीकी नौ-सैनिकों को गिरफ्तार कर लिया तो विल्सन ने बेराक्रुज मे नौ सैनिक उतार दिये। युद्ध अवश्यम्भावी लगा, किन्तु विल्सन की इच्छा नहीं थी कि परिस्थिति हाथ से निकल जाये और मेक्सिकोवासियों—जिनकी वे मित्रता के इच्छुक थे—और मैक्सिको-सरकार—जिसको वे नष्ट कर देने के इच्छुक थे—इन दोनों के बीच का अन्तर स्पष्ट कर उन्होंने युद्ध करने की माँग को नियंत्रण मे रखा और ह्यूरेटा को विकट स्थिति में उलझा दिया। उन्होंने मेक्सिको के इस सकट से लाभ अवश्य उठाया। लेटिन अमरीकी देशों को समानता का दर्जा देने की अपनी

नीति को नाटकीय ढग से प्रस्तुत किया। उन्होंने विवाद का समाधान करने के लिए अर्जेंटाइना, ब्राजील और चीली का आह्वान किया। जब इन राष्ट्रों ने अमरीका का साथ दिया तो ह्यूरेटा को देश छोडकर भागना पडा और कास्टीटयूसन्लिस्टस (वैधानिकों) के नेता कारान्जा सत्तारूढ हुए। इसके पश्चात भी कठिनाइया जारी ही रहीं और जब मैक्सिको के दस्यु सरदार पाचोविला ने दोलयास पर आक्रमण किया तो विल्सन ने जनरल पेसरींग के नेतृत्व मे एक अभियान-सेना उसे सजा देने के लिए भेजी। कारोन्जा ने इस आक्रमण का विरोध किया और अमरीकी युद्धप्रिय लोगों ने युद्ध के लिए कोलाहल मचाया, किन्तु शाति बनायी रखी गयी और मेक्सिको को अपनी मुक्ति के लिए स्वय कार्य करने दिया गया। 'सतर्कतापूर्ण प्रतीक्षा' करने की नीति को कायरता कह कर उसकी निन्दा की गयी, किन्तु वह अपने दोनो लक्ष्यो मे सफल हो गयी थी—एक तो मेक्सिको की सहायता करने मे, दूसरे लेटिन अमरीकी गणतंत्रो का विश्वास प्राप्त करने मे।

दो अन्य क्षेत्रो मे भी विल्सन-प्रशासन ने शाति बनाये रखने और सधि-समझौतो की पवित्रता बनाये रखने मे अपनी रुचि दिखलायी। ब्रायन का, जो अब विदेश-विभाग के प्रमुख थे, एक लबे समय से यह मत था कि सभी अंतरराष्ट्रीय विवादों को पंचनिर्णय के सिपुर्द किया जाना चाहिए। विल्सन-के समर्थन से, उन्होंने विदेशीय राष्ट्रो के साथ सधि करने की योजना बनायी और उस पर बातचीत प्रारम्भ की। उनके इस नये रूप मे, सभी समस्याओं पर पंचनिर्णय प्राप्त करने अथवा समझौता करने की व्यवस्था थी। इसमे राष्ट्रीय सम्मान और एक वर्ष के लिए युद्ध की सभी तैयारियो को रोकने जैसे मुद्दो को भी शामिल किया गया था। ऐसी ३० सधियों के बारे मे बातचीत की गयी, २२ के बारे मे समझौता हुआ, जर्मनी ने विशेष रूप से एक को स्वीकार करने से इनकार कर दिया और १९१५ मे जब जापान ने, जो अत्याचार की नीति के कारण बदनाम हो गया था और जिससे अमरीका के साथ युद्ध करने का खतरा उत्पन्न हो गया था, अपनी कुप्रसिद्ध 'इक्कीस माँगो' को चीन को प्रस्तुत किया, तो विदेश-विभाग ने उसका यह कह कर प्रतिवाद किया कि, यह मुक्त द्वार और अन्तर्राष्ट्रीय कानूनो का स्पष्ट रूप से उल्लंघन है।

विश्व-युद्ध और तटस्थता : किन्तु, वह यूरोप ही था, जिसने अमरीकी शाति के लिए सबसे गम्भीर खतरा उत्पन्न किया। २८ जून को, सर्विया के

एक देशभक्त ने पहली गोली चलायी, जिसकी प्रतिध्वनि सारे ससार मे उठी। पॉच सप्ताह के भीतर ही यूरोप आधुनिक युग के सबसे बडे युद्ध मे लिप्त हो गया। अमरीका पर इसकी प्रतिक्रिया अविश्वास और विस्मय के रूप मे हुई। जब राष्ट्राध्यक्ष विल्सन ने अधिकृत रूप से तटस्थता की घोषणा की, तो वे एक ऐसे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, जो इसके बारे मे एकमत था।

फिर भी अमरीकी लोग १९३९ के सघर्ष के समान ही, १९१४ के सघर्ष की उपेक्षा न कर सके। अब और अधिक तटस्थता, चाहे बौद्धिक हो चाहे सरकारी नीति की, अन्त में असम्भव प्रमाणित हुई। अमरीकी जनता का प्रारम्भ से उग्र समर्थन प्राप्त कर लिया गया था। बहुसख्य लोगो को आशा थी कि, ब्रिटेन, फ्रास और बेलजियम विजयी होगे। सस्कृति, परम्परा, समान सस्थाएं और दृष्टिकोण के सैकडों सम्बन्ध ब्रिटिश-जनता के साथ अस्तित्व मे थे। क्राति मे फ्रास की सहायता का स्मरण और फ्रेन्च तथा बेलजियन लोगो के शौर्यपूर्ण प्रतिकार की प्रशंसा इन सम्बंधो की तुलना मे इतनी प्रभावशाली नहीं सिद्ध हुई। तुलनात्मक रूप से थोडे लोगों ने ही, मुख्यतया जर्मन-अमरीकियों ने, जिन्होंने रक्त के आह्वान की पुकार सुनी, और आइरिश अमरीकियों ने जिनमे परम्परा से ब्रिटेन के प्रति घृणा चली आयी थी, धुरी शक्तियों के प्रति सहानुभूति प्रकट की। युद्ध के बहुत पूर्व ही, प्रशात चीन और कैरीबियन मे जर्मनी की नीति, जर्मन सैन्य अधिकारियों के नृशंस कार्यों और जर्मन युद्धप्रिय लोगों और राजनीतिज्ञो के दम्भ ने अमरीकावासी को उनके विरुद्ध कर दिया था। और, अकारण ही बेलजियम पर उनके आक्रमण ने उनके प्रति बुरे सन्देह को सही प्रमाणित कर दिया। यह भी स्पष्ट हो गया कि, जर्मन-सरकार और समाज निरकुशता के पक्ष मे थे, और यदि उन्होंने यूरोप पर प्रभुत्व कायम कर लिया, तो देर-सबेर उन्हे प्रजातंत्रवादी अमरीका के साथ सघर्ष करना ही-पड़ेगा।

ये दो बाते—मित्र राष्ट्रो के प्रति सहानुभूति और जर्मन-विजय के परिणाम से उत्पन्न भय—अन्त में अमरीकी नीति को नियंत्रित करने की दिशा मे निश्चित फल लायीं। आर्थिक कारणों और राजनीतिक कारणों से भी, इस भावना को बल मिला। अमरीकावासियों ने ब्रिटेन और फ्रास को लम्बी राशि ऋण के तौर पर दे रखी थी। अमरीकी उद्योग ने शीघ्रतापूर्वक ऐंग्लो-फ्रेन्च-युद्ध की आवश्यकताओं के लिए अपने आपको सज्जित कर लिया। उन्होने भारी मात्रा में बंदूके, गोला-बारूद और अन्य सामग्रियो की पूर्ति करके, लाभ अर्जित

किया। अमरीकी बैंक मित्र-राष्ट्रों के लिए खरीदी करनेवाले एजेन्टों के रूप मे कार्य करने लगे। उन्होंने मित्र राष्ट्रों के कर्ज को जारी किया और अमरीका मे मित्र राष्ट्रों के लिए कर्ज की व्यवस्था की। अमरीकी कृषि, युद्ध के पूर्व जिसमे मदी आ गयी थी, पनप उठी और इसे कपास, गेहू और मास के लिए इग्लैण्ड और फ्रास मे लाभदायक बाजार मिल गये। इस बीच धुरी शक्तियों के साथ वाणिज्य नगण्य था और ब्रिटिश नाकेबन्दी के कारण तटस्थ देशो के साथ व्यापार पर भी प्रभावशाली नियंत्रण बना हुआ था। किन्तु, ये आर्थिक कारण, वे कारण नहीं थे, जिन्होंने विल्सन और अमरीकी जनता को युद्ध की आवश्यकता के बारे मे मजबूर किया। कारण था, जर्मनी की 'भयभीत बना देनेवाली' नीति। पनडुब्बियो का उपयोग व्यापारिक जहाजो को डुबाने मे किया गया और इनसे नाविको और यात्रियो को भी नहीं बचाया जा सका। जब १९१५ मे ब्रिटिश जहाज लुसिटानिया को ११०० से अधिक व्यक्तियो समेत जिनमे से १२८ अमरीकी थे, डुबा दिया गया, तो भय और क्रोध की एक लहर समूचे देश मे व्याप्त हो गयी। जर्मनी ने अपने व्यवहार को सुधार का वचन दिया और विल्सन ने देश मे शाति बनाये रखी। किन्तु, वे लोग जो अमरीका को युद्ध के लिए तैयार करना चाहते थे, उनकी सख्या मे वृद्धि और निश्चय मे दृढता आती जा रही थी। इस बीच विल्सन ने भी देख लिया कि, अमरीका को युद्ध से अलग रखने का एक ही मार्ग यह है कि, युद्ध को ही समाप्त कर दिया जाये। १९१६ की पूरी अवधि मे वे युद्ध करनेवाले देशों को युद्ध के लक्ष्य घोषित करने, युद्धोत्तर ससार के लिए सगठन का मार्ग प्रशस्त करने के लिए साहसपूर्वक मजबूर करते रहे।

१९१६ के राष्ट्राध्यक्षपद के चुनाव मे, विल्सन मुख्य रूप से इसलिए सफल रहे कि, उन्होंने अमरीका को युद्ध से बाहर रखा था। फिर भी, वे भविष्य के लिए वचनबद्ध नहीं थे, शाति को किसी भी मूल्य पर खरीदने का उन्होंने वचन नही दिया था। यही नहीं, १९१६ के जनवरी मास मे ही, उन्होंने अमरीकी जनता को ऐसे शब्दो मे चेतावनी दी थी, जिस पर जर्मनी के युद्ध-प्रभुओ को ध्यान देना चाहिए था।

"मुझे मालूम है कि, इस राष्ट्र को युद्ध से दूर रखने के लिए, आप मुझ पर निर्भर हैं। अब तक मैने ऐसा ही किया और मै आपको वचन देता हूँ कि भगवान् की सहायता से मै ऐसा ही आगे भी करूंगा—यदि यह सभव हुआ तो। किन्तु, आपने मुझ पर एक और कर्तव्य लाद दिया है। आपने मुझे यह

कार्य सौंप दिया है कि मैं देखूँ कि, कोई भी बात अमरीका के सम्मान को धब्बा नहीं लगाने पाये—क्षीण नहीं करने पाये। और, यह एक ऐसा मामला है जो मेरे नियन्त्रण में नहीं है। वह इस बात पर निर्भर करता है कि, दूसरे क्या करते हैं न कि अमरीका की सरकार क्या करती है।"

१९११ के प्रारम्भ में, जर्मनों को यह विश्वास था कि, वे इंगलैण्ड को ६ महीनों में भूखों मार सकते हैं और अमरीकी सहायता इस बीच में प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो सकेगी· अतएव उन्होंने घोषित किया कि वे असीमित पनडुब्बी-युद्ध की शुरुआत करेंगे। एक सप्ताह के भीतर ही, ८ अमरीकी जहाज डुबा दिये गये, और एक ऐसे षड्यन्त्र के रहस्योद्घाटन ने, जिसके द्वारा अमरीका को मेक्सिको और जापान से युद्ध करना पडता, राष्ट्र को क्रुद्ध कर दिया। सम्मान और शांति दोनों को सुरक्षित रखना 'असम्भव और परस्पर-विरोधी बात हो गयी थी' और २ अप्रेल को विल्सन ने काँग्रेस के सम्मुख उपस्थित होकर युद्ध की स्थिति की घोषणा करने की अनुमति मागी·

"इस महान् शांतिपूर्ण जनता को युद्ध की ओर—जो अधिक भयानक और विध्वंसकारी है—ले जाना भयावनी बात है· सभ्यता स्वयं भी संकट के पलड़े में झूल रही है। किन्तु, न्याय शांति की अपेक्षा अधिक मूल्यवान है और हम ऐसी वस्तुओं के लिए लड़ेंगे, जो हमें अत्यधिक प्रिय रही हैं—प्रजातंत्र के लिए, ऐसे लोगों के अधिकारों के लिए, जो शासन को मान्य करते हैं ताकि अपनी सरकार में उनकी सुनवायी हो, छोटे राष्ट्रों के अधिकारों और स्वतंत्रता के लिए, स्वतंत्र लोगों के ऐसे संगठनों द्वारा जो सभी राष्ट्रों को शांति और सुरक्षा लायें और अन्त में समूचे विश्व को स्वतंत्र बना सकें। ऐसे ही कार्य को हमें अपना जीवन और भविष्य, हमें अपने-आपको और अपने सर्वस्व को समर्पित करना होगा—उन लोगों के गौरव सहित जो यह जानते हैं कि वह दिन आ गया है, जब कि अमरीका को अपना रक्त और अपनी शक्ति अपने उन सिद्धान्तों की खातिर, जिन्होंने उसे जन्म और सुख दिया है, उस शांति के लिए जिसे उसने सुरक्षित रखा है, खर्च करने का श्रेय है। ईश्वर की कृपा रहे वहाँ इससे दूसरी चीज़ नहीं मिलेगी।

गुड फ्रायडे के दिन, ६ अप्रैल १९१७ को अमरीका ने युद्ध का प्रारम्भ कर दिया।

युद्ध : 'शक्ति, अधिकाधिक शक्ति, शक्ति बिना किसी रुकावट अथाह शक्ति।' राष्ट्राध्यक्ष विल्सन ने वचन दिया था और राष्ट्र इस वचन की

पूर्ति के लिए अविलम्ब कार्यरत हो गया। इससे पूर्व सरकार ने युद्ध मे इससे अधिक बुद्धिमानी और कार्यक्षमता नहीं दिखलायी थी। इससे पूर्व अमरीका-वासियो ने वह स्फूर्ति, साधन-सपन्नता, और आविष्कारयुक्त बुद्धि का प्रभावशाली प्रदर्शन नहीं किया था, जिसके लिए वह प्रसिद्ध था। विल्सन युद्ध काल के महानतम राष्ट्राध्यक्षों मे से प्रमाणित हुए। उन्होने युद्ध-प्रयत्नों के प्रत्येक पहलू पर नियत्रण रखा, घर और बाहर नैतिकता बनाये रखी और उन अन्तिम लक्ष्यों को ऑखो से कभी ओझल नहीं होने दिया, जिनके लिए राष्ट्र लड रहा था। उनको युद्ध सचिव न्यूटन डी. बेकर, वित्त-सचिव मैकाडू और युद्ध-उद्योग-बोर्ड के अध्यक्ष बर्नार्ड बाबुच की योग्य सहायता प्राप्त हुई। सरकार को बहुत तीव्र कदम उठाने पडे, जब कि उसने पहले किसी युद्ध के बारे मे, शायद ही कल्पना की हो और उसने यह काम शीघ्रता और स्फूर्ति के साथ किया। वह उद्योग, श्रम और कृषि-उत्पादन मे जुट गयी। उसने रेलमार्गों और तार की लाइनो को अपने हाथों मे ले लिया। भोजन की आवश्यकता थी और फार्म उत्पादन २५ प्रतिशत बढा दिया गया। इंधन की आवश्यकता थी, अतएव कोयले के उत्पादन मे ४० प्रतिशत वृद्धि कर दी गयी। ऋणो और करो के द्वारा सरकार ने ३६० खरब डालर की रकम एकत्र की, जिसमे १०० खरब की रकम मित्रराष्ट्रो को कर्ज के तौर पर दी गयी और शेष अपने ही युद्ध-प्रयत्न पर खर्च किया गया। सबसे बडी बात यह थी कि, सरकार ने एटलान्टिक युद्ध जीतने की ओर ध्यान केन्द्रित किया, जो १९१७ की वसन्त और ग्रीष्म मे लगभग हारा जा चुका था। घिरे हुए जर्मन-जहाजों पर अधिकार करके, तटस्थ राष्ट्रो के जहाजों का निर्देशन करके, व्यक्तिगत जहाजरानी पर अधिकार करके और विशाल जहाज-निर्माण-कार्यक्रम का प्रारम्भ करके, एक ही वर्ष मे ३० लाख टन जहाजों का निर्माण करके युद्ध को जीत लिया गया।

इससे पूर्व युद्ध के लिए अनिवार्य भर्ती का कानून स्वीकार किया जा चुका था और युद्ध की समाप्ति से पूर्व २५० लाख लोगों के नाम सैनिक सूची के रूप मे पजीबद्ध किया जाना, जनशक्ति के मामले मे इस पश्चिमी प्रजातत्र की प्रचुर-साधन-सम्पन्नता का द्योतक था। किन्तु, क्या अमरीका अपनी सेना को प्रशिक्षित और शस्त्रों से लैस करके समय पर फ्रास भेज सकता था, ताकि वह आगे बढती जर्मन-सेना की कूच को रोक सके ? यह १९१७ और १९१८ का निर्णायक प्रश्न था।

अमरीकी सेना का पहला दस्ता फ्रास मे जून १९१७ में उतरा—वह सैन्य

सहायता से अधिक नैतिक रूप से बल प्रदान करने के लिए, जल्दी मे भेजा गया था। ४ जुलाई को, इस छोटी सेना ने कैम्पेस एलीसेस से होकर राष्ट्रध्वज को फहराते हुए परेड किया। ब्राड हिटलाक ने इस दृश्य का वर्णन यो किया है :

"मैने वैण्ड सुना· वह 'मार्चिंग थ्रू जार्जिया' (जार्जिया से होकर गुजरने) की धुन बजा रहा था। मै उसे सुनकर आपे मे न रह सका। अतएव नगे सिरे नीचे दौडकर र्‍यू डी रिवोली मे जा पहुँचा। विशाल जनसमुदाय ट्यूलेरीज के लोहे के तारो के पीछे सडक पर कदम–कदम पर मस्त होकर हिलोरे ले रहा था। पुरुष, महिलाएं और बच्चे क्रुद्ध और उत्तेजितावस्था मे हमारे खाकी वर्दीपहने जवानों के साथ, जो तेजी से कूच कर रहे थे, चलने की कोशिश कर रहे थे। फ्रेंच सैनिक दल भी नीली वर्दी मे बगल मे उनके साथ जितना करीब होकर चलना सम्भव था, आगे बढ़ रहा था। लोग उनकी ओर आश्चर्य और बाल-सुलभ उत्सुकता से देख रहे थे, जैसे बच्चे सर्कस-परेड के इर्दगिर्द चक्कर लगाते हैं। हमारे सैनिक फूलों से लदे हुए थे और जब-तब भीड की हर्षध्वनि सुनायी देती और अमेरिका-जिन्दाबाद का नारा। किन्तु, यह तो दल एक प्रतीक मात्र ही था वास्तविक अमरीकी सेना तो अभी अमरीका के ही शिविरों मे प्रशिक्षण प्राप्त कर रही थी।"

इस सेना की सख्त आवश्यकता थी, क्योंकि १९११ मे युद्ध की भयानक स्थिति बिगड गयी थी। अक्टूबर मे इटली की सेना कापोरेटों मे चकनाचूर कर दी गयी थी और मित्रराष्ट्रों को आस्ट्रिया की ओर आगे कूच कर रही सेना को कुमुक पहुचाने की शीघ्रता करनी थी। एक माह के पश्चात् क्राति द्वारा विभक्त रूसियों ने थककर शाति के लिए बातचीत चलायी। रूसी और बाल्कन मोर्चे पर से ४० नये जर्मन-दस्ते पश्चिम की ओर शीघ्रतापूर्वक भेजे गये। १९१८ के वसत तक, पश्चिम मे जर्मनों की सख्या स्पष्टतः अधिक ही थी और उन्होंने ब्रिटेन और फ्रास की सेना पर जो सख्या मे बहुत थोडी और थकी हुई थी, अंतिम प्रहार करने के हेतु घेरेबन्दी कर दी। मार्च १९१८ मे, खास हमला शुरू हुआ और जर्मनो ने ब्रिटेन की घेरेबन्दी की धज्जियाँ उडा दीं और ९० हजार व्यक्तियो को बन्दी बनाने के साथ-साथ गोला-बारूद की प्रचुर सामग्री पर भी अधिकार कर लिया। अप्रैल मे, दूसरा बड़ा अभियान हुआ और जनरल हेग ने अपनी स्मरणीय अपील जारी की : 'दीवार की ओर पीठ करके और अपने लक्ष्य के न्याय मे विश्वास रखते हुए, हममे से

प्रत्येक को अन्त तक लडना चाहिए।' जून मे एक तृतीय आक्रमण शुरू हुआ और जर्मनो के मोर्चे के दाहिने तट पर पहुँच जाने पर, मित्र राष्ट्रो ने मार्शल फोश को सर्वोच्च सेनापति नियुक्त किया और राष्ट्राध्यक्ष विल्सन को सुझाव दिया कि, 'युद्ध हार जाने का महान खतरा उपस्थित हो गया है, जब तक कि यथासम्भव शीघ्रतापूर्वक अमरीकी दस्तो को भेज कर मित्र राष्ट्रो की कम सख्या वाली सेना को ठीक नहीं किया जाता।'

युद्ध जीतने के लिए आखिरी बाजी लगा दी गयी। अमरीका की सरकार इस महान प्रयत्न के लिए कटिबद्ध हो गयी। जहाजरानी को प्राथमिकता दी गयी, और एक के बाद दूसरा जहाज खाकी वर्दी मे लैस जवानो और युद्ध-सामग्री से लदा हुआ अमरीकी बन्दरगाहो से प्रस्थान करने लगा। मार्च मे ८० हजार, अप्रैल मे ११८,०००, मई मे लगभग २,५०,००० सैनिको को समुद्रपार भेजा गया। अक्टूबर तक फ्रास-स्थित अमरीकी सैनिको की सख्या १५ लाख तक जा पहुँची थी।

वे वहाँ ठीक अवसर पर ही पहुँचे थे। पहले माडीडिएर और कार्टाग्नी और फिर वेल्यू वुड मे उन्होने अपना शौर्य दिखला दिया। जर्मन कमान ने, जिसने अमरीकी सहायता को अधिक महत्व नहीं प्रदान किया था, मजबूर होकर स्वीकार किया कि "अमरीकी सैनिक अपने को वीर, दृढ और प्रतिभाशाली प्रमाणित करता है। घायल होने पर वह विचलित नहीं होता।" किन्तु, महान सघर्ष तो अभी दूर था। १४ जुलाई की आधी रात मे जर्मनो ने मार्ने पर अपना भीषण आक्रमण आरम्भ किया। जिसकी काफी पहले से ही आशंका थी। इस आक्रमण का ध्येय मित्र राष्ट्रो की अन्तिम पक्ति मे दरार डाल कर, केवल ६० मील दूर पेरिस का मार्ग साफ कर देना था। वे मार्ने के आरपार सफलता से निकल गये; किन्तु उन स्थानो पर नये अमरीकी दस्तों का सामना करना पडा। जर्मनों को सफलता नहीं मिली। यहाँ पर मार्न मे जर्मन-स्थल-सेनापति वाल्थर रेनहार्ड्ट ने लिखा: "हम अपने विशेष दस्तो के लिए निर्धारित लक्ष्य की पूर्ति के निकट पहुँचे। विशेष तौर पर सातवीं सेना के सभी दस्तो ने प्रारम्भ मे अपूर्व सफलता प्राप्त की; केवल हमारे दाहिने बाजू के दस्ते को छोडकर। इसे अमरीकी दस्तो का सामना पडा। यही पर ही सातवीं सेना को गम्भीर कठिनाई का सामना करना पडा। उसे आशा के प्रतिकूल नये अमरीकी दस्तों के दृढ प्रतिरोध का सामना करना पडा, जब कि शेष डिवीजनों ने शत्रु को हराते हुए आगे बढने और युद्ध की

सामग्री पर अधिकार पाने में सफलता प्राप्त की। हमारे लिए अपनी पंक्ति में दाहिने छोर से मार्ने के दक्षिण की ओर आगे बढ़ना, जहाँ से हरावल की लड़ाई अच्छी तरह की जा सकती थी, असम्भव बन गया। यह अवरोध हमारे दसवें डिवीजन की पदाति सेना और अमरीकी दस्तों के बीच आश्चर्य-जनक लड़ाई का परिणाम था।" और, उसने खेद के ढंग से आगे कहा, "अमरीकी सैनिकों में थकावट-जैसी चीज नहीं है।" १८-वीं तारीख तक जर्मन-आक्रमण का दौर पूरा हो गया था और फोश ने अमरीकियों को प्रत्या-क्रमण करने का आदेश दिया। उन्होंने ऐसा ही किया और आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की। जनरल पेरशिंग ने लिखा, "युद्ध की धारा निश्चित रूप से मित्रराष्ट्रों के अनुकूल हो गयी।"

सितम्बर में सेन्ट-मिहीएल अग्रिम पंक्ति पर प्रमुख आक्रमण हुआ। "जिस तीव्रता के साथ हमारे डिवीजन आगे बढ़े, उसने शत्रु को मजबूरी में डाल दिया," जनरल पेरशिंग ने लिखा। हताहतों की संख्या सात हजार तक पहुँच गयी; किन्तु अमरीकियों ने अग्रिम पंक्ति पर अधिकार कर लिया और १६ हजार बन्दी बना लिये। आगामी मास १० लाख सैनिकों से भी अधिक संख्या में अमरीकी सैनिकों ने विशाल म्यूसेएरोगोन-आक्रमण में प्रमुख भाग लिया, जिसने अन्त में थोथी डरावनी हिंडेनबर्ग-पंक्ति को भेद दिया और जर्मन नैतिकता के पर्दे को छिन्न-भिन्न कर दिया।

इस बीच विल्सन प्रजातंत्रों के युद्ध-लक्ष्यों के स्पष्ट विश्लेषण द्वारा ससज्ज सेनाओं के समान ही विजय को निश्चित बनाने की दिशा में प्रगति कर रहे थे। प्रारम्भ से ही, वे जर्मनी में फूट के बीज बो रहे थे। बलपूर्वक यह कह कर कि हमारी लड़ाई जर्मन जनता से नहीं, बल्कि उनकी अत्याचारी और स्वेच्छाचारी सरकार से है, उन्होंने इस पर भी बल दिया था कि शर्तों में अनिच्छुक लोगों को शामिल न किया जाये और दण्ड-स्वरूप धन की वसूली न की जाये और जनवरी १८१८ की काँग्रेस को दिये गये एक सन्देश में उन्होंने प्रसिद्ध १४ सूत्र रखे, जिनके आधार पर न्यायपूर्ण शांति हो सकती थी।

खुले इकारनामें, जिन्हें स्वतंत्र तौर पर किया गया था, युद्ध और शांति में सागरों की स्वतंत्रता, राष्ट्रों के बीच आर्थिक प्रतिबंध समाप्त करना, शस्त्रीकरण में कमी, उपनिवेशवादी दावों पर न्यायपूर्ण समझौता, रूस के साथ उसकी मान्य संस्थाओं के तद्वत् राष्ट्रीय नीति की स्थापना में सहयोग, यूरोप की सीमाओं का वहाँ लोगों के आत्मनिर्णय के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए फिर से खींचा

जाना और 'राष्ट्रो की सामान्य सस्था' की स्थापना जो- 'राजनीतिक स्वतत्रता और प्रदेशीय अविभाज्यता का परस्पर वचन दे सके।'

अपनी सेनाओ के पीछे खदेड दिये जाने और अपने साथी राष्ट्रो के पतन को करीब देखकर और सीमा पर अधिकाधिक सख्या मे अमरीकी दस्तो को आते देखकर, जर्मन-सरकार ने देख लिया कि तात्कालिक शाति द्वारा ही जर्मन-भूमि पर आक्रमण रोका जा सकता है। अतएव, उसने विल्सन से अपील की कि १४ सूत्रो के आधार पर वे सधिवार्ता प्रारम्भ करे। कूटनीतिक वार्ता अभी प्रारम्भ होनी ही थी कि घरेलू विद्रोह और क्राति ने जर्मन प्रतिरोध को असम्भव बना दिया। कैसर ने पदत्याग कर दिया और देश से भाग निकला और ११ नवम्बर को युद्ध की समाप्ति हो गयी।

लीग और पृथकवाद : अब तक विल्सन एक विलक्षण प्रतिभासम्पन्न नेता प्रमाणित हुए थे। किन्तु, जैसे ही युद्ध समाप्त हुआ, वे एक के बाद दूसरे गलत कदम उठाते चले गये। उन्होंने लोगो से अपील की कि वे डेमोक्रेटिक-काग्रेस का निर्वाचन करे, और इस एकपक्षीय कार्यवाही के विरोधस्वरूप लोगो ने रिपब्लिकन काग्रेस का दोनो भवनों मे बहुमत से निर्वाचन किया। उन्होंने शाति-बैठक मे व्यक्तिगत रूप से जाने का निर्णय किया और इस प्रकार कई ऐसे अमरीकावासियो को भडका दिया, जिनका विश्वास था कि राष्ट्राध्यक्ष को राष्ट्रीय भूमि का कभी भी परित्याग नहीं करना चाहिए और ऐसा करने मे उन्होंने अत मे यूरोप मे अपनी प्रतिष्ठा को गिरा दिया। उन्होने किसी भी प्रमुख रिपब्लिकन अथवा उच्च स्तर के व्यक्ति को अपने शाति-आयोग पर नियुक्त नही किया और जब वे सैद्धान्तिक त्रुटियॉ कर रहे थे, युद्ध से थकावट, यूरोप के प्रति पुनसंशय, भ्रम की भावना और दलगत कटुता देश मे घर करने लगी थी। जब वे फ्रास के लिए प्रस्थान कर रहे थे, तो भूतपूर्व राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट ने, जो कटुता और तिरस्कार से भरे थे 'अमरीका के मित्रो और अमरीका के शत्रुओ' को चेतावनी दी कि, "इस अवसर पर अमरीकी जनता की ओर से बोलने का भी विल्सन को कोई अधिकार नही है।"

शाति वार्ता करनेवाले—विल्सन, लायड जार्ज, क्लीमेन्स्यू, आरलेन्डो और छोटे-मोटे राजनीतिज्ञो का एक दल पेरिस में घृणा लालच और भय के वातावरण मे मिला—शत्रु के प्रति घृणा उपनिवेशो और क्षतिपूर्ति का लालच और बोलशेविज्म का भय। जो शाति की गयी वह लादी हुई शाति थी, न कि

समझौता-वार्ता की शांति। वार्सेलिज की संधि ने युद्ध का दोष जर्मनी के सिर मढ़ा, उसने उसके सभी उपनिवेश छीन लिये, उसकी सभी सीमाओं पर प्रादेशिक पुनर्व्यवस्था की और उस पर हर्जाने की भारी रकमें लगायीं। अन्य संधियों ने विल्सन के आत्मनिर्णय के सिद्धान्तानुसार नये राज्यों का निर्माण किया अथवा मान्यता प्रदान की—चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड, फिनलैण्ड तथा अन्य। इन शर्तों को स्वीकार करने में विल्सन को अपने चौदह सूत्रों में से कुछ पर समझौता करना पड़ा। वे ऐसा करने के इच्छुक इसलिए थे कि, उनका यह मत था कि सभी त्रुटियों को लीग आफ नेशन्स के द्वारा दुरुस्त किया जा सकेगा।

विल्सन को, अत्यंत कड़े विरोध के बावजूद, लीग आफ नेशन्स की सृष्टि की व्यवस्था देने में सफलता प्राप्त हुई थी। राष्ट्रों के संघ का विचार नया नहीं था और कई देशों में कई लोगों ने इस विचार को स्पष्ट करने में योगदान दिया था। किन्तु, लीग आफ नेशन्स जो अन्तिम रूप में स्थापित किया गया था विल्सन का ही कार्य था। लीग का कार्य था 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की प्राप्ति।' सदस्यता सभी राष्ट्रों के लिए खुली थी। नियंत्रण एक ऐसी परिषद के हाथों में था, जिसमें बड़ी शक्तियों की एकता थी और एक ऐसी सभा में जिसमें सभी सदस्यों का प्रतिनिधित्व था। लीग के सदस्यों ने प्रतिज्ञा की थी कि वे 'बाहरी आक्रमण से सदस्य राष्ट्रों की प्रादेशिक एकता और वर्तमान राजनीतिक स्वतंत्रता की प्रतिष्ठा करेंगे और उसे सुरक्षित रखेंगे, प्रसिद्ध दसवीं धारा के अन्तर्गत सभी विवादों को पंच-निर्णय के सिपुर्द करेंगे और ऐसे राष्ट्रों के प्रति जो लीग की अवहेलना करके युद्ध करते हैं, सैनिक और आर्थिक प्रतिबंध लगायेंगे। इसके अतिरिक्त निःशस्त्रीकरण, अधिकृत उपनिवेशों के लिए सरकार, अन्तर्राष्ट्रीय न्याय के लिए स्थायी न्यायालय और अन्तर्राष्ट्रीय-श्रम-ब्यूरो की स्थापना के लिए भी व्यवस्था की गयी।

जब विल्सन वार्सेलिज-सन्धि और लीग के साथ अमरीका लौटे तो उन्होंने वहाँ विरोध व्यापक और उग्र पाया। कई रिपब्लिकन नेताओं ने, जिनमें कटु और एकपक्षीय भावना से पूर्ण सिनेटर लाज थे, इस प्रश्न पर डेमोक्रेटों को हराने और विल्सन को नीचा दिखाने का अवसर देखा। राष्ट्राध्यक्ष को व्यक्तिगत रूप से नापसन्द करनेवालों की संख्या बढ़ गयी। जर्मन-अमरीकी, इटालियन-अमरीकी, आयरिश-अमरीकी सभी को सन्धि की निन्दा करने के कारण मिल गये। कई प्रतिशोध के इच्छुक लोगों को जर्मनी के साथ की

गयी सधि की शर्तें बहुत नर्म लगीं, जब कि बहुतो को बडी सख्त। अनुदार अमरीकियो को यूरोपीय विवादो मे उलझ जाने की आशंका हुई और उन्होने स्मरण कराया कि, एक शताब्दी से अधिक समय तक राष्ट्र पुराने विश्व के मामलों से दूर रहा था।

फिर भी इस बात का प्रमाण है कि लोगो के बहुमत ने, अवश्य ही सर्वोत्तम शिक्षाप्राप्त लोगो के बहुमत ने, लीग को स्वीकृति प्रदान की और किसी भी समय सन्धि के विरुद्ध बहुमत की कमी नहीं आयी। यहॉ तक कि स्वीकृति के लिए दो-तिहाई मत भी प्राप्त हो सकते थे; यदि विल्सन दसवी धारा पर समझौता करने को तैयार हो जाते। किन्तु, वे ऐसा करने के अनिच्छुक थे। उन्होने सिनेट की एक कमेटी को बतलाया, "दसवी धारा मुझे समूची सन्धि की रीढ मालूम होती है। उसके बिना लीग केवल एक प्रभावशाली वाद्-विवाद सोसाइटी से अधिक कुछ भी नही होगी। किन्तु, विरोधी रिपब्लिकन पक्ष ने इसे स्वीकार नहीं किया और विल्सन इस प्रश्न को जनता के सामने ले गये। जब वे पश्चिम मे प्रचार मे लगे थे, उनका स्वास्थ्य विगड गया और सितम्बर २५ को उन पर लकवे का प्रहार हुआ जिससे वे सम्हल न सके। वह महान ध्येय जिससे उन्होने परिणय किया था, अदृश्य हो गया। मार्च १९२० मे सिनेट ने अन्तिम मतदान द्वारा सधि और लीग की बैठक को अस्वीकार कर दिया और वर्षों तक अमरीका को वन्ध्यत्व और शौर्यहीन पृथकवाद मे डाल दिया।

१९२० के चुनावों ने, रिपब्लिकनों को अपूर्व बहुमत से पुनः सत्तारूढ कर दिया और उन्होने तत्परता से पृथकवाद् को दल का सिद्धात बना लिया। बिगडे हुए स्वास्थ्य किन्तु भावनाओ की दृष्टि से दुरुस्त, विल्सन ने विश्राम ग्रहण करके अपने द्वारा अपनायी गयी सामूहिक सुरक्षा की नीति को गम्भीर निराशा के साथ भग होते देखा। उन्होने जेम्स पेटीगू के समान ही जीवन व्यतीत किया, जिनकी कब्र पर जुडे अक्षरो की वे प्रशंसा किया करते थे :

'जनमत की परवाह न करते हुए, आपत्ति से विचलित न होते हुए, खुशामद से प्रभावित न होते उन्होंने जीवन का विलक्षण साहस से और मृत्यु का ईसाई की जैसी आशा से सामना किया।'

दूसरा विश्वयुद्ध प्रारम्भ होने तक जो पहले से भी बडा था, जिसने आकाश तक की नींव को हिला दिया, लोगो ने उनके सिद्धातों के न्याय को, जिसके लिए उन्होने वीरतापूर्ण लड़ाई लड़ी, स्वीकार किया।

बीसवाँ परिच्छेद

दो महायुद्धों के बीच का काल

सामान्य स्थिति और पृथकतावाद : विल्सन की पराजय और नव-स्वतत्रता तथा अंतर्राष्ट्रीयवाद की अमान्यता ने राजनीति में पृथकतावाद और (लेजा फेयर) 'यथेच्छा कार्यता' के आगमन की भूमिका तैयार कर दी। आगामी एक दशक तक इन दो सिद्धान्तों ने अमरीकी राजनीति को संचालित किया। निश्चय ही रिपब्लिकन-दल ने 'लीग आफ नेशन्स' के बारे मे स्पष्ट दृष्टिकोण नही अपनाया था; परन्तु उसने इस मुद्दे को बडे ही भ्रामक ढग से टालने की नीति मे ही अपना छुटकारा समझ लिया था। परन्तु, १९२० में इस दल को जो निर्णायक बहुमत प्राप्त हुआ, उसने निश्चय ही अधिकाश नेताओं और निश्चय ही ढुलमुल विचारोंवाले राष्ट्रपति हार्डिंग को यह सोचने को बाध्य कर दिया कि, जनता पृथकतावाद के पक्ष मे है और इससे सिनेट-सदस्य जान्सन, बोराह और लोज-जैसे व्यक्तियों को महत्वपूर्ण राजनयिक पदों का नियन्त्रण मिल गया तथा अंतर्राष्ट्रवाद मे विश्वास रखने वाले रिपब्लिकी ह्यूजेस, रूट, टाफ्ट और बटलर की ख्याति क्षीण हो चली। एक बार सत्तारूढ़ होते ही रिपब्लिकी लोगों ने पृथकतावाद पर सरकारी मुहर लगाने मे शीघ्रता की।

यह बात नयी थी—रिपब्लिक-दल के लिए और अमरीकी राष्ट्र के लिए भी। इसके पहले कभी भी सयुक्त-राष्ट्र-अमरीका ने मानवसमाज की आशाओं पर इस तरह खुले रूप से तुषारपात नहीं किया था, जबकि परम्परागत अमरीकी नीति विश्व-नेतृत्व के लिए आवश्यक वचनों की पूर्ति करने की रहती आयी थी। न इसके पूर्व कभी भी रिपब्लिकी दल ने पृथकतावाद के साथ अपना गठबंधन ही जोड़ा था। ग्राण्ट और सेवार्ड ने केरेबियन-द्वीपों में अमरीकी विस्तार के लिए सदा जोर दिया था। बेने ने दक्षिणी अमरीकी वाद को आगे बढ़ाया था। क्यूबा के पक्ष मे मैक्किन्ले ने राष्ट्र को युद्ध मे उतारा था और प्रशान्त-महासागर मे नये उपनिवेश प्राप्त किये थे, थियोडोर रूजवेल्ट ने राष्ट्र

को विश्व-राजनीति मे प्रमुख स्थान दिलवाया था। रिपब्लिकी परम्परा साम्राज्यवादी और अतर्राष्ट्रीयवाद की रहती आयी थी।

परन्तु, अब इस दल ने सकीर्ण राष्ट्रवाद को अगीकार कर लिया था और उस जिम्मेदारी से बचना चाहता था, जो बहुत कुछ उन्नीसवीं सदी के मध्य मे ब्रिटेन के समक्ष उपस्थित जिम्मेदारी-जैसी ही थी। फिर भी, वास्तविक पृथकतावाद असभव था और अमरीका विश्व के अन्य स्थानो पर गुजारने वाली घटनाओं से अछूता नहीं रह सकता था। वास्तव मे, रिपब्लिकी शासन के इन वर्षों मे सरकार ने कतिपय प्रमुख जटिल अतर्राष्ट्रीय समस्याओ को सुलझाने मे सक्रिय भाग लिया। राष्ट्राध्यक्ष हार्डिग ने नौकायन-निश्शस्त्रीकरण सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमे उन्हे काफी सफलता भी मिली। उनके उत्तराधिकारी कूलिज ने अंतर्राष्ट्रीय मामलो के सुलझाने के लिए, युद्ध छेडने की नीति को अस्वीकार करने सम्बन्धी 'पेरिस की सुलह' प्राप्त करने मे ६२ राष्ट्रो का सहयोग पाने मे सफल रहे। युद्ध का मुआवजा निर्धारण करने सबधी यंग-योजना और डावेस-योजना का जन्म अमरीका मे ही हुआ और राष्ट्राध्यक्ष हूवर ने ऋणग्रस्त विजेता राष्ट्रो को युद्ध का कर्ज चुकाने की अवधि बढाने के मामले मे प्रमुख भाग लिया था। सभी रिपब्लिकी राष्ट्राध्यक्षो ने विश्व-न्यायालय के लिए अमरीकी सदस्यता के लिए जोर दिया—परन्तु यह निरर्थक ही रहा और इन सभी ने लीग आफ नेशन्स के कतिपय क्रियाकलापो मे सहयोग देने मे हार्दिक अभिरुचि व लालसा भी व्यक्त की।

परन्तु निश्शस्त्रीकरण और शान्ति की दिशा मे, इन सद्प्रयत्नो का सतुलन अमरीका द्वारा लीग के कार्यों से अलग रहने तथा तेजी से पनपते हुए आर्थिक राष्ट्रीयवाद की तुलना मे अधिक नही बना रह सका। वास्तव मे आर्थिक क्षेत्र मे ही पृथकतावाद के कारण भारी दुष्परिणाम सामने आये। विदेशी प्रतियोगिता से भयभीत, विदेशी बाजारों को पाने के लिए लालायित साथ ही आर्थिक उच्छृखलता की भावना से अभिभूत अमरीकी राष्ट्र ने निर्यात व्यापार पक्षी ऐसी नीति अपनायी, जो खतरो से खाली नहीं थी। यह नीति केवल अमरीका के लिए ही नहीं, वरन् सारे विश्व के लिए खतरनाक थी।

यहाँ तक कि १९२० मे ही रिपब्लिकी 'कांग्रेस' ने सकटकालीन तटकर-विधेयक जल्दी ही प्रस्तुत कर दिया, जिसका उद्देश्य अमरीका मे विदेशी माल के प्रवेश पर कडी रोक लगाना था। इस मामले मे निषेधाधिकार का प्रयोग करते हुए राष्ट्राध्यक्ष विल्सन ने सदस्यो से सामान्य सूझबूझ व अक्ल से काम

लेने के लिए कहा था। आपने कहा, "यदि कभी कदाच ऐसा समय रहा भी हो जब कि अमरीका में विदेशी माल के प्रवेश से खतरा रहा हो, तो वह समय गुजर चुका है। यदि हम यह चाहते हैं कि यूरोप अपना कर्ज—सरकारी या व्यावसायिक—अदा कर सके तो हमें युरोपीय सामान खरीदने को तैयार रहना चाहिए। स्पष्ट है कि, यह समय व्यापार प्रतिबंधित दीवारे खड़ी करने का समय नहीं है।" परन्तु, रिपब्लिकी लोगों ने इस भली सलाह को अनसुना करने का ही फैसला कर लिया और ज्योंही उनके हाथों शासन-सत्ता आयी, उन्होने फोर्डने-मैकम्बर तटकर-कानून लागू कर दिया, जिसके अनुसार विदेशी माल पर बहुत अधिक चुगी लगा दी गयी—इतनी अधिक कि अब तक के अमरीकी इतिहास में उसका कोई उदाहरण ही नही मिलता है, इस तरह यूरोपीय राष्ट्रो को अमरीका में माल बेचने से सफलतापूर्वक रोक लिया गया। इसके आठ साल बाद, रिपब्लिकी बहुमत ने स्मट-हावले-तटकर-कानून पारित करके विदेशी माल पर चुगी और अधिक बढा दी, अब तक अमरीका में विदेशी माल पर इतनी अधिक चुगी कभी नही थी। देश के प्रत्येक प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री के विरोध के बावजूद हूवर ने इस विधेयक पर हस्ताक्षर कर इसे कानून का रूप दे दिया। इन तटकरों से केवल अमरीकी बाजार ही यूरोपीय माल के लिए बद नहीं हो गये, वरन् बदले में अमरीकी माल के लिए भी यूरोप के दरवाजे बद हो गये।

परन्तु, यह तो आर्थिक प्रश्न का एक ही पहलु है। युद्ध तथा युद्ध के बाद के वर्षों में अमरीका ऋणग्रस्त राष्ट्र के रूप से छुटकारा पाकर, ऋणदाता के रूप में सामने आया। युद्ध के दिनों तथा युद्ध के बाद के पुनर्निर्माण के दिनों मे अमरीकी सरकार ने साथी राष्ट्रों तथा दूसरे सहयोगी राष्ट्रों को दस अरब डालरो के लगभग कर्ज दिया था और १९२० से १९३० के बीच के वर्षों मे निजी व्यवसायियों ने यूरोपीय बाजारों मे दस या बारह अरब डालरो की पूँजी लगायी थी। यदि अमरीका इन राष्ट्रों को अपना माल अमरीका में नहीं बेचने दे तो फिर कैसे यह ऋण चुकाया जाता और कैसे यह विशाल रकम वसूल हो सकती थी ! इस ज्वलन्त प्रश्न का रिपब्लिकी नेताओं के पास उस समय कोई उत्तर नही था। इन दस वर्षों मे रिपब्लिकी-नीति इन दो विरोधाभासी परिस्थितियों पर आधारित रही। विदेशी ऋण के चुकारे के बारे में, प्रशासन ने कड़ा रुख अपनाये रखा। निश्चय ही ब्याज के बारे में अधिक उदारता दिखायी गयी; परन्तु मूल रकम के बारे मे सरकार दृढ़ ही रही। जैसाकि राष्ट्राध्यक्ष कूलिज

की उक्ति थी, "उन्होंने रकम किराये पर ली थी, क्या यह सत्य नहीं है?" परन्तु जब तक कड़े अमरीकी तटकर की प्रतिरोधात्मक दीवारे खडी थीं, इस रकम का भुगतान असभव था। वास्तव में जर्मनी ने जिस तरह अपना ऋण चुकाना जारी रखा तथा दूसरे राष्ट्रों ने अमरीकी माल खरीदा वह अधिकाशतः अमरीका से और अधिक ऋण लेकर ही किया जा सका।

घरेलू मामलो मे हार्डिंग-प्रशासन ने कथित 'सामान्य परिस्थिति' के काल को जन्म दिया। हार्डिंग का दृष्टिकोण मार्क हन्ना और मैक्किन्ले के समृद्धि काल को पुनः लाने का था। वास्तव मे यह सही माने मे 'लेजा फेयर (हस्तक्षेपरहित व्यापार) की नीति नहीं थी, जैसा कि कुछ लोग मान बैठे थे। परन्तु, इसमे अजीबो-गरीब दो तरह की नीतियो का सम्मिश्रण था। एक थी निजी उद्योगो को सरकारी नियंत्रण से छूट और दूसरी नीति थी—इन उद्योगो को उदार सरकारी आर्थिक सहायता। सरकार व्यवसायी क्षेत्र से हट गयी, परन्तु व्यवसायी जगत ने सरकारी क्षेत्र मे प्रवेश किया और बहुत सी सरकारी नीतियो को अपने अनुकूल रूप दिया।

व्यावहारिक तौर पर इस नीति का व्यापक असर पडा। १९२२ और १९३० के तटकर कानूनो ने विदेशी प्रतिद्वद्विता का भय ही समाप्त कर दिया। हर्बर्ट हूवर के तत्वावधान मे वाणिज्य-विभाग ने विदेशो मे अमरीकी माल के लिए नये बाजार खोलने मे सक्रिय कदम उठाये और यह दावा भी किया गया कि "यह विभाग विदेशी व्यापार की विजयश्री प्राप्त करने मे सबसे अधिक शक्तिशाली कार्यवाही तत्र रहा।" घरेलू व्यावसायिक क्षेत्र मे यह विभाग दो सौ के लगभग वाणिज्य या व्यावसायिक सगठन सगठित करने मे सफल रहा। ये ठीक उसी तरह के थे, जो बाद मे 'राष्ट्रीय पुनर्निर्माण प्रशासन' काल के अन्तर्गत बनाये गये थे। हूवर ने आडम्बरयुत शब्दो मे कहा भी, "हम एक व्यक्ति के निजी व्यक्तिगत कार्य-क्षेत्र से ऊपर उठकर सम्मिलित सक्रियता की ओर बढ़ रहे हैं।" जहाजरानी और उड्डयन-कपनियो को जो अमरीकी माल लाया करती थीं, उदार दिल से आर्थिक सहायता के रूप मे भारी रकमे दी गयीं। एन्ड्रू मेल्लन के तत्वावधान मे वित्तविभाग ने अतिरिक्त लाभ कर मे सशोधन किया, अतिरिक्त करो व आयकर मे भारी कमी की और सपत्ति-कर की दरे घटा दी। सिद्धान्त यह था कि इससे वाणिज्य को प्रोत्साहन मिलेगा· परन्तु इससे भी केवल सटोरियों व ऐसी ही प्रवृत्तियो को बल मिला।

इसके साथ साथ 'सरकारी-नियन्त्रणहीन-व्यापार' के सिद्धान्तो का भी

ईमानदारी से पालन किया गया। युद्ध के दिनों में सरकार ने जिन रेलमार्गो का सफलतापूर्वक सचालन किया, उन्हे फिर से निजी उद्योगपतियो को सौप दिया गया और वह भी उदार शर्तो पर। युद्ध के दिनो मे बने जहाजो को बहुत ही कम दामो पर निजी कपनियों को वेच दिया गया। शर्मन और क्ले के न्यासविरोधी-कानूनों को व्यावहारिक रूप से स्थगित कर दिया गया। न्यायालयो तथा प्रशासन ने यही दृष्टिकोण अपनाया कि इनका उद्देश्य 'आर्थिक नियमो' को सशोधित करना नही है। 'अनियंत्रित व्यापार' का उल्लेखनीय दृष्टिकोण सरकार द्वारा जलविद्युत्घरो के निर्माण व सचालन के क्षेत्र मे सामने आया। १९१६ मे राष्ट्राध्यक्ष विल्सन ने टेनेसी नदी पर मशल शोल्स पर बॉध बॉधने तथा बिजली पैदा करके खाद्-उद्योगो को विकसित करने के लिए अधिकृत कदम उठाये थे। युद्ध के बाद, इन बॉधों और संयत्रों को वेचने के बारे में तीव्र विवाद उठ खडा हुआ। अनुदारवादियो ने इस पर बल दिया कि, इन्हे फिर से निजी उद्योगपतियो को दे दिया जाये; परन्तु प्रगतिशीलो ने नेब्रास्का के साहसी सीनेट-सदस्य नोरिश के नेतृत्व में इस बात पर दृढतापूर्वक कहा कि, ये सरकार के कब्जे मे ही रहे और उनका सचालन सरकार ही करे। १९२८ में काग्रेस द्वारा इस आशय से पारित विधेयक को राष्ट्राध्यक्ष कूलिज ने निपेधाधिकार का प्रयोग कर निरर्थक कर दिया। १९३१ मे पारित ऐसे ही विधेयक को राष्ट्राध्यक्ष हूवर ने असफल कर दिया। इस पर निपेधाधिकार-प्रयोग-सदेश मे उनके द्वारा प्रदर्शित दृष्टिकोण 'नग्न व्यक्तिवाद' का द्योतक है, जिसमे उनका और उनके दल का विश्वास था।

"मै इस बात का दृढ विरोधी हूँ कि सरकार ऐसे किसी भी व्यवसाय मे हिस्सा बॅटाये, जिसका प्रमुख उद्देश्य अपने नागरिको से जानबूझकर प्रतिद्वन्द्विता करना है ....। जनता को प्रदत्त समान व अवसरों का इससे हनन होता है। यह उन सिद्धान्तों को नकारात्मक कर देता है, जिनके आधार पर हमारी सभ्यता टिकी हुई है .. । मै अपने देश व दूसरी राजनीतिक संस्थाओं के भविष्य के बारे मे विचार करते हुए भी हिचकिचाता हूँ, जब कि हमारे सरकारी अधिकारियों का काम न्याय करना और नागरिकों को समान अवसर प्रदान करना न रहकर बाजारो मे सौदेबाजी करना रह जायेगा। यह उदारवाद नहीं है, यह तो पतन है।"

अवसर की समानता के बारे मे व्यक्त की गयी, यह गभीर चिंता भी कुछ अर्थ रखती, यदि हूवर और कूलरिज-प्रशासन ने इतनी ही ईमानदारी और

अभिरुचि मजदूरो व किसानों के कल्याण-कार्यों के बारे मे दर्शायी होती। परन्तु, ये प्रशासन केवल 'व्यवसायियो' मे ही अनुरक्त थे और व्यवसाय के बारे मे इनका दृष्टिकोण सकीर्ण था। न तो किसानों को और न मजदूरों को ही इस समृद्धि मे ही कुछ हिस्सा मिला। १९२१ मे, कुछ ही समय के लिए परन्तु तेजी से कृषिजन्य वस्तुओ के मूल्यों मे भारी गिरावट हुई और १९२५ से ही धीरे-धीरे मदी बढती रही, जो 'नयी नीति' सुधारो के क्रियान्वत तक बनी रही। १९२० और १९३२ के बीच मे कृषिजन्य आय साढे पन्द्रह अरब डालर से घटकर साढ़े पॉच अरब डालर तक रह गयी। १९२० मे आठ अरब बुशल गेहूँ के डेढ अरब डालर ही मिल सके। १९३२ मे फसल मे कमी के कारण केवल तीन अरब डालर से भी कम हुई। एक करोड तीस लाख रुई की गाठे १९२० मे केवल एक अरब डालर से कुछ ही अधिक राशि मे बेच दी गयी। बारह वर्ष बाद इतनी ही रुई ५० करोड डालर से भी कम दामों मे बेची गयी। दूसरी फसलो के बारे में भी यही कहानी दुहरायी जा सकती है। इसका दुष्परिणाम खेतो पर चढे लगान व बन्धक बेचान के रूप मे देखा जा सकता है। १९३० तक ४२ प्रतिशत खेतो को किसान जोतते थे और बधक ऋण की कुल राशि ९ अरब डालर से भी अधिक हो चली थी, जबकि १९२७ और १९३२ के पॉच वर्षों मे राष्ट्र की खेतिहर-सपत्ति के दशमाश से भी अधिक सपत्ति ऋण भुगतान के लिए नीलाम पर चढ़ा दी गयी थी।

फिर भी ऐसी स्थिति होते हुए भी हार्डिंग और कूलिज-प्रशासन ने जो सरकार को व्यवसाय-जगत के हाथों सौपने को आतुर थे, कृषिजन्य हितो के प्रति बेरुखी अख्तियार कर रखी थी। रिपब्लिकी दृष्टिकोण से इसका हल उन्होने कृषिजन्य वस्तुओ पर तटकर लगा कर किया, परन्तु अमरीका कृषि-सामग्री का आयात न करके निर्यात ही किया करता था, अतएव यह असगत ही रहा। इसके बारे मे जो भी कहा जाये थोडा है। ठोस प्रस्ताव जिसमे सरकारी सहायता व फसलो पर नियन्त्रण प्रमुख थे और कृषि-सगठनो का भी समर्थन प्राप्त था, राष्ट्राध्यक्ष के निषेधाधिकारो द्वारा निरर्थक कर दिये गये। समय रहते ही राष्ट्राध्यक्ष हूवर ने अधिकारयुक्त कृषि-मडल स्थापित किया, फसलों के व्यवस्थित विक्रय के लिए रकम भी स्वीकार की, परन्तु इससे थोडासा ही लाभ हो सका और ये कदम भी अपर्याप्त ही रहे।

राजनैतिक रूप से 'सामान्य परिस्थिति' वाला यह युग निष्क्रियता और बेवकूफीभरा काल ही रहा। केवल कभी-कदाच हार्डिंग की सौदेबाजी और

हूवर-प्रशासन में दल के लोगों की पदों के लिए छीनाझपटी के दृश्य महत्व-पूर्ण कहे जा सकते हैं। इसके पहले कभी भी, अमरीकी सरकार इतने निर्लज्ज रूप से निहित स्वार्थवाले वर्गों के हाथों कठपुतली नहीं रही। पहले कभी शायद ही राजनीतिज्ञता ऐसी थोथी राजनीति के सामने झुकी होगी। समझौताप्रिय परन्तु कमजोर व्यक्तित्व वाले ओहियो के सीनेट-सदस्य वारेन जी. हार्डिंग राष्ट्राध्यक्ष पद के लिए नामजद किया गया; क्योंकि इस व्यक्ति के विरुद्ध ऐसी कोई शिकायत नहीं थी, जो लोगों की जानकारी में हो और राष्ट्र भी विल्सन के इस आदर्शवाद से तंग आ चुका था। अपने अढ़ाई वर्ष कार्यकाल में वह निष्क्रियता के साथ यह देखता रहा कि, कैसे बड़े पूँजीपति सरकार को अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए शोषण करते हैं और कैसे प्रशासन में व्यापक भ्रष्टाचार पनप उठा है। फल यह हुआ कि, लोगों की आदर्शवाद के प्रति स्वाभाविक ही अरुचि हो गयी और वे उसका अंत लाना चाहते थे। हार्डिंग का उत्तराधिकारी राष्ट्राध्यक्ष काल्विन कूलिज संकीर्ण राजनीतिज्ञ था। उसमें न उसकी अपनी ही सूझ थी और न उसमें विशाल कार्यक्षमता ही थी। वह शब्दों और विचारों को भी प्रकट करने में मक्खीचूस था; वह वैसी ही स्थिति बनाये रखने के पक्ष में था और उदारवाद के किसी भी स्वरूप के प्रति बुरी तरह शक्की था। १९२९ में हर्बर्ट हूवर ने राष्ट्राध्यक्ष-पद सम्हाला। यह व्यक्ति कुशल व सुयोग्य था तथा दक्ष प्रशासक के रूप में ख्यातिप्राप्त था तथा अंतर्राष्ट्रीयवादी राजनीतिज्ञ था जिसकी मानवीय गुणों में गहरी आस्था थी। वह अधिक लाभ पहुँचा सकता था; परन्तु अपने चार वर्ष के कार्यकाल में उसने उचित निर्णय लेने में इतनी भयंकर भूलें की, जितनी ग्राण्ट के बाद शायद ही किसी राष्ट्राध्यक्ष ने की हो।

युद्धोत्तरकाल का अमरीकी समाजः—ये तीनों राष्ट्राध्यक्ष जो एक दूसरे से व्यक्तित्व और चरित्र में जरा-भी मेल नहीं रखते थे, तत्कालीन युद्धो-त्तर अमरीकी समाज के शक्तिशाली वर्गों के प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं। विल्सन-युग का आदर्शवाद गये गुजरे जमाने की बात हो चुका था। मानवीय भावनाओं-युक्त रूजवेल्ट-काल का सुधार आनेवाले कल के गर्भ में था। १९२० और १९३० के बीच का यह दशक निकम्मा, पूँजीपतियो का पोषक तथा निर्दयी था। राष्ट्राध्यक्ष कूलिज ने कहा था, "अमरीका का व्यापार ही व्यापार है।" भले ही यह उक्ति सही नहीं कही जा सकती है; फिर भी समयानुकूल अवश्य थी। आदर्शवाद से ऊब कर तथा युद्ध और उसके बाद की घटनाओं

का सच्चा स्वरूप सामने आ जाने के बाद, अमरीकी निर्लज्ज होकर उत्साह के साथ पैसा कमाने और खर्च करने मे ही लीन हो गये। पहले कभी भी, यहाँ तक कि मैक्किन्ले-युग मे भी अमरीकी समाज इतना भौतिकवादी नही हुआ था और न पहले ही कभी हाट-बाजार के आदर्शों या मशीनयुग का इतना नियन्त्रण हुआ था। यह काल बडी-बडी बातो व कार्यकुशलता का था, और जनता इसी ओर लट्टू हो रही थी। इजीनियर, सट्टेबाज, बिक्रीवाले, विज्ञापन करने वाले और सिनेमा के तारक तारिकाये जनप्रिय शूरमाओ मे शुमार थे। राष्ट्र की जनसख्या सत्रह करोड तक पहुँच गयी थी और अपार सपत्ति का भी अर्जन हुआ था। भले ही सपत्ति का विभाजन असमान था; फिरभी बाजारो मे मुद्रा का वितरण धडल्ले से था और लोग-बाग इस 'नये युग' की चर्चा करते हुए कहते थे कि हरेक के यहाँ हँडियाँ चढ़ी होगी और हर गेरेज मे दो मोटरे होगी। शहर बडे थे, इमारते ऊँची-ऊँची, सडके लबी, लोगो के पास प्रचुर सपत्ति, तेज मोटरे, बडे कालेज, तडकभड़क वाले रात्रिक्लब, अधिक अपराधवृत्ति, अधिक शक्तिशाली सस्थान, जो अमरीकी इतिहास मे पहले कभी नहीं देखे गये थे और सपत्ति के बढ़ते हुए आकड़ों से अमरीकियों मे भले ही सुरक्षा की भावना नहीं पैदा हो रही थी, फिर भी उन्हें इसमे सतोष मिल रहा था।

यह सामञ्जस्य तथा आसमञ्जस्य के साथ, असहनशीलता का युग था और अधिकाश अमरीकियो के लिए साहित्यक प्रतिनिधि जार्ज बाबीट्ट था, जिसका सुनी-सुनायी और पुस्तको से पढ़ी सभी बातो मे विश्वास था। यह एक आश्चर्य-जनक सत्य है कि हार्डिग-प्रशासन द्वारा गोलमाल किये जाने पर भी, जनता की तीव्र प्रतिक्रिया नहीं हुई और न वे उन्हे दंड देने के बारे मे ही सोच सके। इसके विपरीत उन लोगों के विरुद्ध व्यापक प्रतिक्रिया हुई, उन्होने इस गोलमाल का भंडा फोड दिया था। इस तरह के अमरीकी जीवन की कडी आलोचना की। असहनशीलता के बीज युद्ध के दिनो मे ही बोये जा चुके थे। युद्ध के बाद वे बीभत्स व भयकर रूप मे प्रकट हुए। राष्ट्रीयता के नाम पर उच्छृखलता थी, पृथकतावाद, नैतिक और बौद्धिक तथा राजनीतिक क्षेत्रो मे हावी हो चुका था। विदेशियो और विदेशी विचारों के प्रति व्यापक घृणा थी। बीसियो की सख्या मे सदेहशील उग्रवादी विदेशी पकड कर निष्कासित कर दिये जाते थे। धारासभाओ मे समाजवादियों को घुसने नही दिया जाता था, जो थे वे हटा दिये गये और राज्यो ने राजनीतिक

व आर्थिक संस्थाओं के प्रति आस्था बनाये रखने के लिए कानून बनाये। कु क्लुक्स क्लान-जैसी संस्थाने, जिसके लाखो सदस्य थे, आर्यों की श्रेष्ठता-जैसी भावनाओ को पनपा रखा था, ठीक ऐसी ही भावना यूरोप के निरकुश ताना-शाहों ने एक दशक बाद भयकर रूप प्रदान किया। सिरस्त्राण से ढके इस सस्था के सदस्यों ने कैथोलिको, हब्शियो और यहूदियों को अपमानित किया। अमरीकी व्यावसायिक जगत के विरुद्ध आलोचना करने वालों पर, आक्रमण किये गये, बिना किसी भेदभाव के मजदूर नेताओं, उदार अर्थशास्त्रियों, समाजवादियों, शातिसमर्थकों, या किसी भी पक्ष के आदोलनकारियो जो व्यवसायजगत का नैतिकता में शका उठाते थे, उन्हे कडे हाथो लिया जाने लगा। दो मामलों मे—केलिफोर्निया में मूनी और बीर्ल्लिग तथा मसाचुसेट्स में साको और वान्जेट्टी के मामलों मे—ऐसा लगता है कि न्याय को भी भ्रष्ट किया गया। दोनों मामलों मे इन निरपराध लोगों को इनके अपराध के लिए दडित नही किया जाकर इनकी उग्र विचारधाराओ के कारण इन्हें दडित किया गया।

फिर भी इस असहनशीलता की गहराइयो और इसकी वीभत्सताओं को अतिरजित करना सरल काम है। यह याद रखना चाहिए कि इसको उत्तेजना प्रजातन्त्र के प्रति भ्रामक उत्साह के कारण मिली, न कि यह भावना प्रजातत्र के विरोध के कारण पैदा हुई। इस सम्पूर्ण काल में विरोध और मतभेद की धारा गहरी और शक्तिशाली होती गयी। किसी भी तरह की असहनशीलता बिना आलोचना के नही रही। जिस व्यक्ति के प्रति अन्याय हुआ, वह इतना गया गुजरा भी नहीं था कि, उसके मामले को लेकर लोग आगे नही आयें। कदाचित् मूनी-बीर्ल्लिग्स और साको-वान्जेही मामलो मे सबसे दिलचस्प बात यही है कि, इनके कारण सारगर्भित विशद व साहसिक प्रतिवाद को उत्तेजना मिली, जो एक मामले में सफल रही तो दूसरे मे असफल रही। उदार दृष्टि-कोण की मासिक पत्रिकाओं 'नेशन' और 'रिपब्लिक' की प्रतियाँ अच्छी खपती थी और उनका व्यापक प्रभाव भी था। वे कवि और उपन्यासकार जो विद्रोह का शख फूका करते थे, उन्हे व्यापक ख्याति प्राप्त थी। कालेज और विश्व-विद्यालय विचार स्वतत्रता और शोध के केन्द्र थे। इन सारे वर्षो मे न्यायालय भी व्यक्तिगत स्वाधीनता की सुरक्षा में दृढता से बने रहे और माननीय अधिकारों का सरक्षण करते रहे। यह ब्रान्डेयस काडोजो और होम्स का युग था।

इस पीढी में सामाजिक विकास की परिस्थिति पैदा करनेवाले प्रमुख तत्व शहरों का विकास व मशीन-तंत्र मे परिवर्तन थे। १९३० तक राष्ट्र की अधिक

जनसंख्या शहरो मे रहती थी और इनका भी अधिकाश भाग राजधानी व बडे औद्योगिक शहरो मे बसा हुआ था। शहर उद्योग-व्यवसाय व सरकार, मनोरजन, शिक्षा, साहित्य और कला के केन्द्र थे। देहातो मे शहरी जीवन व शहरी विचारधारा का प्रभाव फैल रहा था। सिनेमा, रेडियो, मोटरे, समाचारपत्र राष्ट्रीय स्तर पर विज्ञापन प्रचार और दूसरे कई अन्य प्रभावो के कारण भी प्रान्तीयता की सीमाए टूट कर एक राष्ट्रीय भावना का अभ्युदय हो रहा था। यहॉ तक कि व्यग व मजाक मे भी सीमाप्रदेश की लबी कहानियो का स्थान लच्छेदार हल्के-फुल्के चुटकलो व कार्टूनों ने ले लिया था, जैसा कि 'द न्यूयार्कर' से परिलक्षित होता है।

इस तरह एक-सा स्तर लाने मे महत्वपूर्ण परन्तु आसानी से प्राप्त साधन, मोटरे, चलचित्र व रेडियो थे। इस दशक के सामाजिक जीवन मे वे वास्तव मे अत्यंत महत्वपूर्ण तथ्य थे। इन तीनो मे मोटर पुराने समय से थी और कुछ मानो मे महत्वपूर्ण भी। हेनरी फोर्ड ने उन्नीसवी सदी के अर्द्धांश मे मिट्टी के तेल से चलने वाली बग्गी बना ली थी। परन्तु, नयी सदी के दूसरे दशक के पहले सैकडो व हजारो की सख्या मे उसकी सस्ती कारे व मोडल-टी सडको पर नही आयी थी। १९२० मे नब्बे लाख के लगभग मोटरे चल रही थी। दस वर्ष बाद ही इस सख्या में तिगुनी वृद्धि हो गयी। मोटरो ने पृथकता समाप्त कर दी, वे जीवन मे फुर्ती लायी, मनोरजन व मौज-शौक के नये मार्ग खोल दिये, युवको को नयी स्वतत्रता प्रदान की, इससे बडे पैमाने पर नये उद्योग खुले। क्या अमरीकियो ने रेडियो को सरकारी नियत्रण से स्वतत्र रखने मे अधिक मूल्य चुकाया, यह एक ऐसा विषय है जिस पर लोगो की राय अलग-अलग है।

भयंकर मन्दी : हर्बर्ट हूवर ने ऐसे शुभ अवसर पर व ऐसे शुभ लक्षणो मे प्रशासन की बागडोर सम्हाली, जिनके बारे मे यह कहा जा सकता है कि राष्ट्राध्यक्ष टाफ्ट के अलावा इतनी अच्छी परिस्थिति व ऐसे अवसर दूसरे राष्ट्राध्यक्षो को प्राप्त नहीं थे। सभी माने मे राष्ट्र इतना अधिक समृद्ध या समाज इतना अधिक स्वस्थ पहले कभी नहीं था। शेयरो के भाव आकाश छू रहे थे और हर वर्ष नये नये पूॅजी लगाने वालों द्वारा करोडो डालर सिक्यूरिटिज मे जमा होने लगा, जो इस नये खेल मे बिना हल्दी-फिटकरी के ही रग लाना चाहते थे। जनता की मॉग इतनी बढ गयी थी कि, कारखाने मॉग के

अनुसार मोटरें, रेडियो, रेफ्रिजरेटर, आदि माल इतनी भारी तादाद में तैयार नहीं कर पा रहे थे। रेलों में अपार भीड़ रहती थी, सामान का लदान व भारी बोझों से वे दब रही थीं। नये शहरों या पश्चिम व दक्षिण के औद्योगिक केन्द्रों के आसपास विभिन्न कला-शैलियों के सैकड़ों भवनों का निर्माण होने लगा। कालेजों और सिनेमाघर ठसाठस भरे रहते। पुरुषो के खेल-कूद का सामान व महिलाओं को साज-सज्जा व प्रसाधन सामग्री प्रदान करना एक महत्व-पूर्ण व्यवसाय बना चला; जब कि विज्ञापन व प्रचार एक सामान्य व्यावसायिक स्तर से ऊपर उठकर विज्ञान व कला की श्रेणी मे पहुँच गया। रोजाना ही आश्चर्यजनक यान्त्रिक आविष्कार व वैज्ञानिक चमत्कारो से यह विश्वास होने लगा कि, आने वाला भविष्य इससे भी शानदार होगा। यह नवयुग था और यदि किसानों व साधारण मजदूरों को इससे लाभ नही मिला तो उन्हें भी भविष्य मे लाभ मिलने की संभावना हो चली थी। और, यह भी उपयुक्त ही था कि, इस नवयुग को ऐसे व्यक्ति ने विकसित किया, जो स्वयं एक इन्जीनियर के तौर पर प्रसिद्ध था, अपने आपको महान मानवतावादी सिद्ध कर चुका था और व्यापार-सचिव के तौर पर युवावस्था में सफलतापूर्वक काम करके इस व्यवसाय-जगत की बारीकियों को समझ चुका था। हूवर ने दावा किया था, "हम अमरीकावासी अन्तिम रूप से गरीबी पर विजय पाने के इतने निकट पहुँच चुके हैं, जितना अब तक के इतिहास में दुनिया का शायद ही कोई राष्ट्र पहुँचा हो।" और, लगभग सभी लोगों की यह आकाक्षा व संभावना थी कि हूवर स्वयं यह "अंतिम विजयश्री" प्राप्त कर लेगा। परन्तु, क्रूर भाग्य को कुछ और ही मंजूर था।

क्योंकि, अचानक ही भयंकर चोट की तरह अक्टूबर १९२९ मे पासा पलट गया। २४ अक्टूबर को एक करोड बीस लाख के शेयर बिक गये, मानो लोगों पर बेचने का पागलपन ही सवार हो गया, और २८ अक्टूबर को तो सत्यानाश का दिन ही आ पहुँचा। 'अमरीकन टेलीफोन–टेलीग्राफ', 'जनरल इलेक्ट्रिक' और 'जनरल मोटर्स'–जैसे प्रतिष्ठित शाख वाले शेयरों में भी एक सप्ताह मे ही सौ से दोसौ अंको तक गिरावट हो गयी। महीने के अंत तक, स्टाक-होल्डरो को १५ अरब डालरों का नुकसान हुआ। वर्ष के अंत तक, सिक्यूरिटियों की राशि घटते-घटते केवल चालीस अरब डालर ही रह गयी। लाखो पूंजी लगाने वालों की जिन्दगी भर संचित कमाई जाती रही। परन्तु, मन्दी का यह पिशाच यही नहीं रूका। व्यवसायिक प्रतिष्ठानों पर ताला पड़ गया।

कारखाने वद हो गये। बैंको का दिवाला निकल गया और लाखो वेकार लोग सडको पर काम की तलाश मे निरर्थक चक्कर काटने लगे। हजारो-लाखो परिवारों के घर उजड गये। करो की उगाही इतनी गिर गयी कि स्कूल के अध्यापको को वेतन चुकाने के लिए शहरो व कस्बो के पास पैसा नही रहा। निर्माणकार्य ठप्प हो गया। विदेशी व्यापार की, जो पहले ही बुरी हालत मे था, स्थिति दयनीय हो गयी।

इस सकट तथा बाद मे, इससे उत्पन्न मंदी के क्या कारण थे? यह कहना कि मन्दी व्यावसायिक प्रक्रिया के लिए सामान्य बात है, न तो सतोषजनक और अधिक लुभावनी ही वात है। यह वात वास्तव मे उस हालत मे अक्षरशः सत्य है, जहाँ सरकार निजी उद्योगों की इन अतिरेकों को नियत्रित करने के लिए हस्तक्षेप न करती हो। १९२९ की इस गडबडी मे निर्विवाद ही ऐसे कुछ विशिष्ट तत्व थे, जिन्होने बटाढार कर दिया। पहली वात तो यह थी कि, लोगो की खपत करने की क्षमता से अधिक उत्पादन हुआ। यह इसलिए हुआ कि राष्ट्रीय आय का एक बहुत बडा भाग जनसंख्या के थोडे से लोगो के हाथो मे ही रहा, जो इस लाभ को तत्काल बचत या उद्योगों मे व्यय कर देते। इसके कारण श्रमिकों, किसानों, मध्यमवर्गी लोगो को पूरी आय नहीं हो पायी और इन्ही की क्षमता पर अधिकतर सारे व्यवसाय-जगत का माल खरीदने की क्षमता निर्भर करती है। दूसरी वात यह थी कि तटकर और सरकार की युद्ध-ऋण नीतिओं ने अमरीकी माल के विदेशी वाजारो को बहुत ही सकुचित कर दिया था और १९३० की प्रारम्भिक विश्व-मन्दी मे अमरीकी व्यापार भी चौपट हो गया। तीसरी वात यह है कि, साख पर आसानी से पूँजी मिलने के कारण किश्तों मे खरीददारी बडे पैमाने पर बढ़ गयी और सट्टेबाजी को अपार प्रोत्साहन मिला। सरकारी व निजी ऋण कुल सौ तथा डेढ़ सौ अरब डालर था। सट्टेबाजी के कारण शेयरो और सपत्ति के दाम उनके वास्तविक मूल्य से भी अधिक बढ़ गये थे। अंत मे लगातार कृषि मे गिरावट, निरन्तर औद्योगिक वेकारी और बडे-बडे एकाधिकारो मे पूँजी और शक्ति को सचय करने की प्रवृत्ति के कारण राष्ट्रीय अर्थनीति पर बुनियादी तौर पर दुष्प्रभाव डाला।

इस बारे मे चाहे जो तर्क क्यो न हो, यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि राष्ट्र एक ऐतिहासिक आर्थिक सकट मे बुरी तरह से जकड गया है। १८३७ का आर्थिक सकट तीन या चार साल ही रहा था; १८७३ का सकट पॉच वर्ष तक

खींचता रहा, १८९३ का भयंकर आर्थिक सकट १८९७ की वसन्त मे समाप्त हो गया, जबकि १९०४, १९०७ और १९२१ की आर्थिक मन्दी कुछ ही समय के लिए बनी रही। परन्तु १९२९ का यह महान सकट पूरे दस वर्षों तक बना रहा। जितने लबे समय तक यह बना रहा और इससे समाज मे जितना कष्ट और गरीबी पैदा हुई, उसका उदाहरण अन्यत्र कही भी देखने को नही मिलता है। और, कई मामलों मे यह पुराने सकटों की अपेक्षा दूसरे ही ढंग का था, स्पष्टतः यह अधिक उत्पादन के फलस्वरूप पैदा हुआ, सपत्ति और वस्तुओं की वितरण-व्यवस्था के लडखड़ा जाने का यह एक अनूठा प्रतीक था।

चूंकि यह सकट स्वाभाविक कारणों से पैदा न हो कर बनावटी तौर पर लादा गया था, अतएव इसको मिटाने के लिए सरकार को तत्काल कडे कदम उठाने चाहिए थे। परन्तु, कहीं से भी ऐसे लक्षण नजर नही आ रहे थे। राष्ट्राध्यक्ष हूवर ने भी (लाखों दूसरे लोगो की तरह ही) इस पर विश्वास कर लिया कि परिस्थिति स्वतः सुधर जायगी। तथापि उसने इस बात का खंडन नही किया कि हस्तक्षेप करना सरकार का फर्ज है; फिर भी उसकी यह मान्यता थी कि, सहायता पहुँचाने का काम निजी दानकोषों और स्थानीय सरकारों का है। उसने कहा, "राष्ट्र के तौर पर हमे अपने उन राष्ट्रवासियो को भूख और सर्दी से बचाना है, जो वास्तव मे सकटग्रस्त हैं।" परन्तु, वह कट्टरता के साथ बेरोज-गार लोगों व भूख से पीडितों को सहायता पहुँचाने के कार्यक्रमो को ठुकराता रहा। वह आरभ से ही इस सकट की भीषणता को हल्का करने की नीति अपनाता रहा और जब इसमे सफल नहीं हो सका तो इस सिद्धान्त को अपना लिया कि "समृद्धि बस दरवाजा खटखट ही रही है।" हूवर-प्रशासन ने फिर भी थोडे बहुत कदम इस दिशा मे अवश्य उठाये। सडक, सार्वजनिक भवन व हवाई मार्ग-संबधी लाखों लोगों को रोजी मिली, राष्ट्रीय स्तर पर सडक-निर्माण कार्यक्रम निश्चित किया गया और रेलमार्गों के साथ कडी प्रतिद्वद्विता पैदा की तथा हर वर्ष इनसे दब कर इतने लोग मरते या अंगभंग होते जितने कि सारे गृहयुद्ध में हुए थे।

चलचित्र और रेडियो यद्यपि नये थे, परन्तु कम महत्वपूर्ण नहीं थे। चलचित्र इस शताब्दी के आरभिक वर्षों से ही बनने लगे थे। परन्तु प्रथम महायुद्ध तक वे विशाल उद्योग के रूप में नहीं पनप सके थे, अथवा १९२७ मे जब तक बोलते-सिनेमा का आविष्कार नही हो गया था। इस दशक के अंत तक आठ करोड़ से लेकर दस करोड़ लोगों ने प्रति सप्ताह चलचित्र देखे

और इनमे सबसे बडी सख्या बच्चो की थी। इन्ही चलचित्रो से उठती हुई पीढी को अधिकतर जीवन के बारे मे दृष्टिकोण, जो आम तौर पर रोमान्टिक परन्तु अधिक भ्रामक था, प्राप्त हुआ। बहुतो को इन चलचित्रो मे वास्तविक जीवन की उलझाहट से बचने के लिए, रोमान्सभरी अनहोनी दुनिया मिल गयी—जहाँ बुराई को सदा ही दडित किया जाता, और भलाई की सदा ही विजय होती; जहाँ सभी महिलाए अनुपम सुन्दरियाँ होती और पुरुष खूबसूरत नौजवानव हृष्टपुष्ट होते; जहाँ सपत्ति से सुख और गरीबी मे सतोष झलका करता और जहाँ सभी कहानियो का सुखद अंत हुआ करता था। सीधे और परोक्ष रूप से इन चलचित्रो ने अतुलनीय व्यापक प्रभाव डाला। इन्होने पोशाक, सलीके, फर्नीचर तथा घरो की आतरिक सज्जा का आदर्श प्रस्तुत किया। इन्होने लोगो को तौर-तरीके सिखाये, जनप्रिय सगीतो को जन्म दिया, नैतिकता का स्तर स्थापित किया और जनप्रिय नायक-नायिकाओ को आगे लाये। इनका प्रभाव सारे विश्व पर पडा और कदाचित अमरीकी साम्राज्यवाद का चलचित्र शक्तिशाली शस्त्र प्रमाणित हुआ। ब्रिटेन, रूस, मलाया या अर्जेंटाइना के दर्शकों के लिए इन चलचित्रो ने अमरीकी जीवन की तस्वीर—या एक ढाचा प्रस्तुत किया।

रेडियो ने भी मनोरजन, शिक्षा और एक स्तर कायम करने मे इतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। प्रथम महायुद्ध के दिनो मे रेडियो का तेजी से विकास हुआ और प्रथम व्यवसायिक रेडियो स्टेशन ने १९२० मे कार्य आरभ किया। एक ही दशक मे राष्ट्र के सभी परिवारो के पास रेडियो हो गया जो इनसे समाचार और मनोरजक सगीत सुन सकते थे। चलचित्रो की तरह रेडियो भी एक व्यवसाय सिद्ध हुआ। शीघ्र जनता मे खपत होने के कारण इस बडे पैमाने पर तैयार किया जाने लगा और जनरुचि के अनुसार प्रसारण कार्यक्रम बनाने पडे। कदाचित रेडियो-कार्यक्रम का अध्ययन अन्य अध्ययनो की अपेक्षा जनरुचि पर अधिक प्रकाश डाल सकता है। इसने शिथिलता से ही, परन्तु शैक्षणिक कार्यक्रमों को आरभ किया; परन्तु इसने समाचारो व राजनीतिक गतिविधियो का प्रसारण अधिक किया। यह वास्तव मे दिलचस्प बात है कि, कुछ अपवादों को छोड़ कर रेडियो निजी व्यवसाय के अन्तर्गत रहा, जिसका आधार कर न होकर विज्ञापन होते थे। कार्यक्रम व कृषि-ऋण के लिए तीस करोड डालर की राशि स्वीकृत की गयी। ग्लास-स्टेगल कानून के द्वारा साख पर ऋण देने की दिशा मे और भी रियायते दी गयीं। इसके अलावा सघीय

सुरक्षित (पूंजी) व्यवस्था की सहायता के लिए, पुनर्निर्माण-वित्त-निगम स्थापित किया गया, जिसके अतर्गत दो अरब डालर ऋण बैंकों, रेल, बीमा-निगमों और औद्योगिक प्रतिष्ठानो को देने की व्यवस्था की गयी।

सरकार के ये अपर्याप्त कदम किसी को खुश नहीं कर सके और परिस्थिति बद से बदतर होती चली गयी। १९३२ तक बेकार लोगों की सख्या एक करोड बीस लाख तक पहुँच गयी। पॉच हजार से भी अधिक बैंक बन्द हो गये। ३२ हजार व्यवसायिक प्रतिष्ठान ठप्प हो गये। कृषिजन्य चीजों के दाम इतनी बुरी तरह गिर गये, जितने पहले कभी नहीं गिरे थे। मध्यमवर्ग का अस्तित्व ही मिट जाये, ऐसा खतरा पैदा हो गया था। १९२९ में राष्ट्रीय आय में आधी गिरावट हो चुकी थी। सारे राष्ट्र का सम्पूर्ण आर्थिक तंत्र मानो ढह रहा था और लोगों का असंतोष दिनों-दिन भद्दा होता जा रहा था।

अमरीकी लोग क्रान्ति या हिंसक उथल-पुथल को अधिक पसन्द नहीं करते हैं और इस सकटकाल में उन्होंने अपनी आशाएं दूसरे दल के नेतृत्व पर केंद्रित कीं। रिपब्लिकी दल के एक प्रगतिशील गुट ने, जिसका नेतृत्व सिनेट-सदस्य नोरिस, ला फोल्लेटे, कोस्टीगन और कटिंग कर रहे थे, हूवार-प्रशासन की कई नीतियों के औचित्य को चुनौती दी। परन्तु, वे लोग इतने शक्तिशाली नहीं थे कि दल के इन पुराने नेताओं से शक्ति छीन सके। अतएव राष्ट्र ने जरूरत को देखते हुए, इस सकट से मुक्ति का मार्ग पाने के लिए अपना ध्यान डेमोक्रेटिक-दल की ओर दिया। १९३० में डेमोक्रेटों ने भारी बहुमत से कांग्रेस के चुनाव में विजय प्राप्त की और १९३२ में उन्होंने राष्ट्राध्यक्षपद हस्तगत करने की तैयारी कर ली। रिपब्लिकी दल की पुरानी नेताशाही ने इस सकट से कोई सबक नहीं सीखा और उन्होंने राष्ट्राध्यक्ष-पद के लिए हूवर को उम्मीदवार मनोनीत किया, जिसने पुनः राष्ट्र से सकट का छुटकारा पाने के लिए "सारहीन व्यक्तिवाद" को अपनाने की अपील की। इसके मुकाबले में डेमोक्रेट-दल ने सुयोग्य और आकर्षक व्यक्तित्व वाले फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट को राष्ट्राध्यक्ष पद के लिए उम्मीदवार मनोनीत किया था। रूजवेल्ट एम्पायरस्टेट (न्यूयार्क) के गवर्नर के रूप में चतुर राजनीतिज्ञ, कुशल साहसिक व सुयोग्य दयालु प्रशासक सिद्ध हो चुके थे और इन्होंने राष्ट्र को 'नया कार्यक्रम' प्रदान करने की घोषणा की। नवम्बर माह में ७० लाख के बहुमत से विजयी होकर, उन्होंने व्हाइट-हाउस में राष्ट्राध्यक्ष के रूप में प्रवेश किया।

फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट और नया कार्यक्रम : अमरीकी प्रजातन्त्र मे एक शानदार बात यह पायी जाती है कि, सकट के दिनों मे उसे सदा ही सुयोग्य नेतृत्व मिल पाया है। कभी-कभी इस तरह का चुनाव स्पष्ट उद्देश व लक्ष्य के अनुसार होता है, जैसे वाशिंगटन के मामले मे हुआ। परन्तु, कई बार जैसे लिंकन, रूजवेल्ट और विल्सन के मामले मे अधिकाशतः यह चुनाव सौभाग्य से ही हुआ। यह नहीं कहा जा सकता है कि, फ्रेंकलिन रूजवेल्ट जब पहली बार राष्ट्राध्यक्ष चुने गये तो लोगो को उनके बारे मे किसी तरह की जानकारी नही थी। जिन लोगो ने उन्हे चुना उनमे से अधिकाश ऐसे थे, जिनका यह विश्वास था कि रुजवेल्ट एक ऐसा नेता है जो राष्ट्रीयता और प्रजातन्त्र के प्रवक्ता के तौर पर लिंकन तथा और विश्वशान्ति के रूप मे विल्सन का अनुयायी है।

रूजवेल्ट ने एक सुयोग्य प्रशासक और सामाजिक मिलनसार व्यक्ति के रूप मे न्यूयार्क के गवर्नर-काल मे प्रसिद्धि पायी थी, परन्तु उनकी इस प्रसिद्धि के पीछे एक लबा राजनीतिक प्रशिक्षण-काल जुडा हुआ था। वे एक प्रतिष्ठित व समृद्ध परिवार के थे तथा ग्रोटोन और हार्वार्ड के स्नातक थे। इन्होंने ह्वाइट-हाउस मे चुने गये अपने दूसरे परिजनो की तरह ही आरभिक दिनो मे ही यह निश्चय कर लिया कि उन्हे भी राजनीति मे सक्रिय भाग लेना है। इनकी आरभिक क्रियाकलापो मे दो तरह की विशेषताए थीं, जिनसे वे बाद मे भी प्रसिद्धि पा सके। ये विशेषताएं थी—प्रगतिशील सिद्धान्तो के प्रति गहन लगाव तथा सभी वर्गों के लोगो का विश्वास प्राप्त कर, उनका नेतृत्व करने की शक्ति। वे न्यूयार्क राज्य धारासभा मे सदस्य रह चुके थे। विल्सन के नेतृत्व मे नौसेना के सहायक-सचिव पद पर काम कर चुके थे। तब उनके शरीर पर पक्षाघात हुआ। धीरे-धीरे उन्होंने पुनः स्वास्थ्य लाभ किया और सक्रिय अमरीकी राजनीति से अवकाश के इन दिनो मे उन्होंने अमरीकी राजनीतिक इतिहास का अध्ययन किया और पत्रव्यवहार द्वारा विशाल जन-सम्पर्क तथा अपने अनुयायियो का एक दल तैयार कर लिया। १९२८ मे वे विशाल बहुमत से न्यूयार्क के गवर्नर चुने गये और दो वर्ष बाद और भी अधिक मतों से पुनः इस पद के लिए चुने गये। १९३२ मे देश मे इस पृष्ठभूमि और अनुभव के साथ रूजवेल्ट ही कदाचित एकमात्र मौजूदा स्थिति मे जानकार डेमोक्रेट-नेता था।

परन्तु, नये राष्ट्राध्यक्ष मे अनुभव और जानकारी के अतिरिक्त और

भी कई विशेषताएँ थीं। उनका सामान्य जनता में गहरा विश्वास था, ठीक उतना ही अगाध जितना ब्रायन का था और प्रजातंत्र में उनका हार्दिक विश्वास विल्सन की भाँति अटल था। उनमें राजनीतिक चातुरी थी, तथा वे नेतृत्व की कला में दक्ष थे, भले ही उनमें महान समस्याओं के बारे में अधिक गंभीर बौद्धिक ज्ञान भी रहा हो, फिर भी उन्हें हल करने की दिशा में सहज चेतना प्राप्त थी। साधनस्रोतों का सदा उन्होंने समय पर लाभ उठा कर, अवसरवादिता का परिचय भी दिया; परन्तु वे अपने लक्ष्य की पूर्ति के बारे में सदा सचेष्ट व सतर्क बने रहे, सदा ही उन्होंने अनावश्यक मामलों में समझौताप्रिय दृष्टिकोण रखा व रियायतें भी दीं; परन्तु आवश्यक मसलों पर वे तिल भर भी नहीं डिगाये जा सके। यह जानते हुए कि राजनीति-कला के साथ-साथ विज्ञान भी है, वे इस भ्रम में नहीं पड़े कि केवल कुछ सैद्धान्तिक बातों व आदर्शों की बातों से ही समाज का पुनर्निर्माण या विकास हो सकता है या राज्यतंत्र वैज्ञानिक ढंग की व्यवस्था या कुछ बड़ी इंजीनियरी-योजनाओं से ही व्यवस्थित हो सकता है। उन्हें अमरीकी अतीत की अच्छी जानकारी थी। जिस तरह की दुनिया में वे रह रहे थे, उसको अच्छी तरह समझते थे और भावी विश्व-संगठन के बारे में भी वे अपने विचारों को स्थिर कर चुके थे। उन्होंने राजनीतिक नेताओं का विश्वास अवश्य किया; परन्तु विशेषज्ञों पर भी कभी अविश्वास नहीं किया। जनमत के प्रति सदा ही सचेतन रहे; परन्तु उन्होंने कभी भी उसे सही रूप देने में हिचकिचाहट या उसे चुनौती देने में साहसहीनता का परिचय नहीं दिया। कई बार उन्होंने बड़े-बड़े मुद्दों पर सरसरी तौर पर ही दृष्टिपात किया; परन्तु उन्होंने सदा ही विशाल हितों में अभिरुचि रखी, तथा अथक क्रिया-शीलता व शक्ति से काम लिया तथा अपने आसपास के लोगों व सारी जनता को अपनी सौम्यता व व्यवहार से प्रभावित किया। इतनी विशिष्टताओं ने उनमें जो कमियाँ थीं—जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नों को केवल सरसरी तौर पर हल करना, एक बड़प्पन की भावना, अनापशनाप खर्च तथा अपने विरोधियों के प्रति हल्के स्तर पर प्रतिशोध की भावनाओं को ढँक लिया।

रूजवेल्ट का राष्ट्राध्यक्ष के रूप में दिया गया भाषण आने वाले कल के बारे में विश्वास व आशाओं से भरा था, अत्यन्त महत्वपूर्ण होने पर भी उसमें विल्सन के प्रथम अभिभाषण-जैसा भाषा-सौष्ठव व निखरता नहीं थी। उन्होंने विश्वास दिलाया, "राष्ट्र की स्थिति बुनियादी तौर पर बहुत अच्छी है, अपार समृद्धि हमारे दरवाज़े पर खड़ी है, फिर भी हम उदारतापूर्वक इसको

उपयोग कर सके इस बारे मे निरुत्साह हैं।" इसका सारा दोष अपने "स्वार्थों को ही पूरा करने वालो" तथा "सट्टेबाजो" पर है। इन लोगो को व्यवसाय-क्षेत्र से हटा दिया गया है। अब केवल इन स्थानो की पूर्ति का प्रश्न है। और, इसी की पूर्ति के लिए राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट जुट गये। गरीबी और कमी की पूर्ति के लिए सहायता, कार्य, बैंक-व्यवसाय की देखरेख, कृषि व उद्योगो के बीच सतुलन, अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सबंधो की पुनर्स्थापना, 'अच्छे पडौसी' की नीति का सूत्रपात और एक महाशक्ति के अनुकूल अतर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियों को वहन करना उनका प्रमुख कार्य था। उन्होने दृढ़ता से घोषणा की, "मै इसके लिए तैयार हूँ कि सकटग्रस्त दुनिया मे एक सकटग्रस्त राष्ट्र को क्या कदम उठाने चाहिए। ये कदम . जिनकी शीघ्र पूर्ति के लिए मै अपने को प्राप्त सवैधानिक अधिकारो का पूरा पूरा उपयोग करूँगा, और यदि काग्रेस इनके समर्थन के लिए असफल रहेगी तो मै इस सकट को टालने के लिए अंतिम अस्त्र सकटकालीन अधिकारो की मॉग करूँगा—विशाल कार्यकारी अधिकार जो मुझे वास्तव मे उस स्थिति मे प्रदान किये जाते, जबकि राष्ट्र पर किसी विदेशी शक्ति ने आक्रमण किया हो।" अंत मे उन्होने कहा,

"हमारे सामने जो दुर्दिन हैं उनका हम लोग राष्ट्रीय एकता व सजग साहस से मुकाबला करे। साथ ही हम स्पष्ट रूप से चेतनापूर्वक प्राचीन और महत्वपूर्ण नैतिक मूल्यो को प्राप्त करे। इस दिशा मे आबाल-वृद्ध दृढ़तापूर्वक अपने कर्तव्यो को पालन करे, जिससे पूरा-पूरा सतोष मिल सकेगा। स्थायी तथा सर्वांगीण विकसित राष्ट्रीय जीवन हमारा लक्ष्य रहे। हममे महत्वपूर्ण जनतान्त्रिक भविष्य के बारे मे अविश्वास नहीं रहे।"

इस उद्घाटन भाषण ने राष्ट्र को एक औपचारिक सूचना दे दी कि, नया कार्यक्रम लागू होगा। इस नये कार्यक्रम की एक लबे समय से प्रतीक्षा थी। लगभग एक दशक से राजनीतिक नेता नकली पासों से फरेब की बाजी खेल रहे थे और सभी पाशों मे व्यावसायिक वर्ग के निहित स्वार्थो मे रगे हुए थे। रूजवेल्ट ने इस राजनीतिक शतरज को प्रजातान्त्रिक व न्यायभूत नियमो पर खेलने का प्रस्ताव रखा। बहुत से समकालीनो के अनुसार नया कार्यक्रम मानों एक क्रान्ति की तरह था। वास्तव मे तो यह एक अनुदारशील कार्यक्रम था—यह केवल इतना ही अनुदार था, जितना जेफर्सन व विल्सन के प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तों को अनुदार कहा जा सकता है। इसका उद्देश्य वामपक्ष या दक्षिणपक्ष की ओर से प्रयुक्त होनेवाली हिसा से सरक्षण प्राप्त करना था। जो

अमरीकी प्रजातन्त्र के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था—इसका उद्देश्य था संविधान के अंतर्गत सभी हितों का संतुलन तथा संपत्ति, मानव-समाज और स्वाधीनताओं को सुरक्षित रखना। 'नया कार्यक्रम' का दर्शनशास्त्र प्रजातान्त्रिक था, और इसका व्यवहारिक रूप विकासवादी था; क्योंकि पन्द्रह वर्ष से सुधारो के प्रस्ताव व विधेयक पडे हुए थे और वे अब एक साथ प्रसारित किये गये मानो देश मे एक लहर-सी आ गयी। जब यह तूफान शान्त हुआ तो पता चला कि ये सभी उचित क्षेत्रों में प्रवाहित हुए थे। नये कार्यक्रम के अनुसार वनों को नियमित करने की नीति अपनायी गयी, अट्ठारहवी सदी की मुस्तैदी से ही रेलमार्गों का निर्माण और न्यासों का नियमन किया गया, बैंक तथा मुद्रा-संबंधी सुधार थोडे बहुत विल्सन के प्रशासन-काल में ही किये जा चुके थे, पोपुलिस्टों के कार्यक्रम के अनुरूप ही कृषि-सहायता-कार्यक्रम अपनाया गया, विस्कोन्सिन और ओरेगोन राज्यों में प्रचलित कानूनों की तरह ही श्रम-नियमन-कानून बनाये गये। यहाँ तक कि जिन न्यायसुधारों ने इतनी हलचल पैदा कर दी, वे भी लिंकन और थियोडोर रूजवेल्ट पहले से प्रस्तावित कर चुके थे। अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भी स्पष्ट रूप से परम्परागत नीतियो—राष्ट्रीय सुरक्षा का विकास, सागरों की स्वतत्रता, कानून और शाति का समर्थन तथा पश्चिमी देशों मे प्रजातंत्र का नेतृत्व—को ही जारी रखा गया। शीघ्र ही सार्वजनिक कार्यों का विशाल कार्यक्रम आरंभ हुआ, जिसमें मकान, रेल-मार्ग, सड़को, पुलो और स्थानीय विकासकार्यों के लिए ऋण दिये गये, जिससे व्यवसाय पनप सके और लोगों को रोजी मिल सके। बेकारी-निवारण के लिए एक विशाल सहायता-कार्यक्रम अपनाया गया और १९४० तक ६० अरब डालर सीधे सहायता-कार्यों पर तथा अतिरिक्त १६० डालर विभिन्न सार्वजनिक निर्माण कार्यों पर खर्च किया गया। इस कार्यक्रम ने विशाल पैमाने पर राष्ट्रीय भौतिक साधन-स्रोतों के दीर्घकालीन दोहन की नीति को जन्म दिया तथा तीस लाख युवकों को इसके अंतर्गत काम पर लगाया गया। इसके अंतर्गत रेल-मार्गों की सहायता की गयी, कारखानो को स्थिर किया गया और कई दिनों से बकाया विकास कार्यों की पूर्ति के लिए वित्तीय सहायता दी गयी। लेखको व कलाकारो, नाटककारो व संगीतकारों के सहायता-कार्यक्रम के अंतर्गत आर्थिक-विपन्नता के शिकार लेखकों, कलाकारों, संगीतज्ञों को सहायता दी गयी और इस तरह राष्ट्र के कलात्मक जीवन को विकसित व समृद्ध किया गया। कृषि और उद्योग में दीर्घकालीन सुधार कार्यक्रम सहायता कार्य के अंतर्गत आरभ किया गया।

भूलें होना स्वाभाविक ही था, इनमें से कतिपय गंभीर भूलें भी थीं। राष्ट्रीय-पुनस्संस्थापन-प्रशासन सर्वोच्च न्यायालय द्वारा भंग किये जाने के पहले ही असफल सिद्ध हुआ। डालर का अवमूल्यन जो दामों को स्थिर करने के उद्देश्य से किया गया था, अधिक कारगर नहीं हुआ। प्रशासन के अंतर्गत भी कई आपसी झगड़े-टंटे हुए; फिर भी कामयाबी का स्तर शानदार रहा।

स्थायी सुधारों पर दृष्टिपात किया जाये, तो वे अधिकांशतः बैंक, उद्योग जल-विद्युत शक्ति, कृषि, श्रम, सामाजिक सुरक्षा और राजनीतिक कानूनों के क्षेत्र में किया गया। नये कार्यक्रम के अंतर्गत बैंकें बंद कर दी गयीं और उन्हें सरकार की कड़ी देखरेख व जमा पूंजी के भुगतान की सरकारी गारण्टी के अंतर्गत फिर चालू किया गया। सोने के स्तर को रखने की नीति छोड़ दी गयी और मुद्राह्रास को हल्का-सा नियंत्रण करने तथा जिन्सों के दामों को स्थिर करने के लिए डालर का अवमूल्यन किया गया। शेयरों, हुण्डियों, और दूसरी सिक्यूरिटियों के बेचान पर सतर्कतापूर्वक नियंत्रण रखा गया और उन बड़ी शेयर-होल्डर कंपनियों को भंग कर दिया गया, जो देहातों को बिजली की रोशनी-सप्लाई करने के एक बहुत बड़े उद्योग को नियन्त्रित किये हुई थीं। इन कंपनियों में अधिकतर आंतरिक लोगों के लाभ के लिए ही गड़बड़ियाँ की जाती थीं। स्वस्थ व्यवसाय के लिए नियम बनाये गये, जिससे निरर्थक प्रतिद्वन्द्विता समाप्त हो सके। धनियों की आय व कारपोरेशनों पर कर बढ़ाया गया, कर-संबंधी कानूनों की खामियाँ दूर की गयीं और राज्य-सरकारों व संघीय सरकार की कर नीतियों में भ्रम पैदा करने वाली तथा दूसरी शिकायतें दूर की गयीं और उन्हें एक-सा स्वरूप दिया गया। देश के आंतरिक भाग में विशाल कछार के प्रदेश के विकास के लिए टेनेसी-घाटी-प्रशासन कायम किया गया तथा सरकारी बिजलीघरों व बाँध-निर्माण कार्य द्वारा आर्थिक व कृषि-पुनस्संस्थापन कार्यक्रम आरंभ किया गया।

नया कार्यक्रम व्यवहार में : जब ४ मार्च १९३३ को राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट ने प्रशासन सम्हाला, तब आर्थिक संकट गहराई तक पहुँच गया था और देश का आर्थिक तंत्र पूर्णतया सर्वनाश के कगारे तक पहुँच चुका था। रूजवेल्ट ने इस संकट का सामना साहस और दृढ़ता से किया और जबकि उनका पहला प्रशासन-काल समाप्त होने आया उसके पहले ही उन्होंने विभिन्न तथा इतने महत्वपूर्ण कानून लागू कर लिये, जितने उनके पूर्व के राष्ट्राध्यक्षों में शायद ही किसी ने किये हों। उनके प्रशासन-काल में नये कार्यक्रम के अंतर्गत

जो कदम उठाये गये, उनमें से अधिकाश स्थिति को पुनः यथावत करने तथा सहायता-कार्यो से सम्बंधित थे। बहुत-से कदमो मे दोनों ही बाते थी। यह कहना कठिन है कि, पुनः यथावत करने सबधी कदमो का कहॉ अंत हुआ और कहॉ से सहायता-कार्य आरभ हुआ। सहायता-कार्य के क्षेत्र में सरकार ने व्यवसाय-जगत जिस पर सबसे अधिक सकट पैदा हुआ था, अरबो डालर के संघीय ऋण के रूप मे सहायता पहुँचायी इतना सफल हुआ कि इसी आधार पर इससे थोड़े छोटे पैमाने पर सुदूर दक्षिण में ऐसा ही कार्यक्रम आरभ किया गया।

नये कार्यक्रम के अंतर्गत चार सुधार-क्षेत्रो का उल्लेख किया ही जाना चाहिए। विशेष रूप से कृषि, श्रम, सामाजिक-सुरक्षा और प्रशासन की ओर ध्यान दिया गया। कृषि-क्षेत्र में उद्देश्य यह था कि कृषिजन्य चीजो के दाम युद्ध के पूर्व स्तर पर आ जायें तथा उत्पादन को उस सीमा तक कम कर दिया जाये, जिससे निरर्थक अतिरिक्त उपज न बचे, भूमि को उपजाऊ बनाने की नीति को प्रोत्साहन दिया जाये, कृषको को आसानी से ऋण मिल सके, दूसरों की भूमि व संकुचित भूमि पर खेती करनेवाले किसानो को संरक्षण मिले और कृषिजन्य पदार्थों के लिए देश-विदेश मे नये बाजार खोले जायें। सरकारी सहायता मिलने पर कृषक कपास की उपज मे स्वतः कमी करे, इस उद्देश्य से १९३३ में कृषि-व्यवस्था कानून पारित किया गया। तीन वर्ष बाद, सर्वोच्च न्यायालय ने इस कानून को अवैध करार दे दिया। इस पर कॉग्रेस ने एक दूसरा पहले से अच्छा कृषि सहायता कानून पारित किया। इसके अनुसार सरकार उन किसानो को आर्थिक सहायता देती, जो अपनी कुछ भूमि मे भूमि के उपजाऊपन को बनाये रखने वाली फसले बोते। १९४० तक लगभग ६० लाख किसानों ने यह कार्यक्रम अपना लिया और इन्हे सरकारी सहायता मिल रही थी जो औसतन प्रति किसान सौ से अधिक डालरों के लगभग थी। नये कानून के अंतर्गत अतिरिक्त फसल पर सरकारी ऋण, खाद्यान्न भडार बनाये रखने के लिए उन्हे गोदामों मे भरने की व्यवस्था तथा गेहूँ की फसल पर बीमे की व्यवस्था थी। रुई की उपज मे गिरावट तथा नये बाजारो की स्थापना ने कृषि-उपज के दामों की वृद्धि में सफलता मिली। १९३९ मे कृषि-आय १९३२ में जितनी थी उससे दुगुनी हो गयी। कृषि ऋण-प्रशासन ने नाम मात्र के ब्याज पर कृषकों के लिए ऋण सुलभ कर दिया। कृषि-सुरक्षा-प्रशासन ने खेतिहर-किसानों व संकुचित भूमि पर काम करनेवाले किसानों को बसाने व

उनके स्वामित्व के अधिकारो को सुरक्षित करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की।

श्रमक्षेत्र मे नये कार्यक्रम के अंतर्गत उल्लेखनीय ऐतिहासिक कानून पारित किये गये। १९३३ के राष्ट्रीय-पुनस्सस्थापन-कानून के अंतर्गत काम का विस्तार किया गया, काम के घण्टे कम किये गये, वेतन बढाया गया और बालश्रम का अंत लाया गया, मालिकों व श्रमिको के मिले-जुले लाभ की नीति को प्रोत्साहन दिया गया और निम्नतम असहनीय ठेको पर काम लिये जाने की प्रथा को गैर कानूनी कर दिया। १९३५ मे सर्वोच्च न्यायालय ने इसे अवैध ठहरा दिया; परन्तु इसकी धाराओ के अनुरूप ही दो महत्वपूर्ण कानून पारित किये गये। १९३५ का वेजनर-कानून और १९३८ का उचित श्रम-निर्धारण कानून। वेजनर-कानून के अंतर्गत श्रमिको को अपनी पसन्द के श्रमिक सगठन-बनाने तथा उनके द्वारा सौदेबाजी को मान्यता दी गयी, मालिको को श्रमिक-सगठनो के किसी भी सदस्य के विरुद्ध भेदभाव को व्यवहार करने से रोक दिया गया। इस कानून के अंतर्गत श्रमसबधी मामलों को निपटाने के लिए श्रम-सम्पर्क-मडलों की स्थापना की व्यवस्था की गयी। इसके तत्वावधान मे पुराना सगठन अमरीकी श्रमिक सगठन को पुनः शक्तिशाली किया गया और एक नया व अधिक शक्तिशाली श्रमिक-सगठन औद्योगिक-सगठनक-काग्रेस (C I O) ने जन्म लिया। इस सगठन ने पुराने श्रमिक सगठनो को पुनः जाग्रत किया और इस्पात, सूती, मोटर और उद्योगो मे श्रमिको को सगठित किया जो इसके बाद सदा ही सगठन मे विश्वास प्रकट करते रहे। उचित श्रम स्तर कानून "काम के घण्टों व वेतन के निर्धारण" के उद्देश्य से किया गया था। इसके अनुसार सामान्य परिस्थिति मे एक सप्ताह मे चालीस घण्टे काम तथा कम से कम एक घण्टे के चालीस सेट वेतन निर्धारित किया गया। इस कानून ने औद्योगिक सयत्रों मे बालश्रम को गैरकानूनी करार कर दिया।

ठीक इतना ही बुनियादी रूप से महत्वपूर्ण कदम वेकारो, वृद्धों और अपगो को सरक्षण देने का था। अब तक ये मामले राज्य-सरकारो को सौपे हुए थे। कुछ राज्यो ने कारगर वेकारी वीमा तथा वृद्धावस्था मे पेशन-योजनाएँ लागू कर रखी थीं, परन्तु यह स्पष्ट था कि राज्य अकेले इन मामलो का सचालन करने मे असमर्थ थे क्योकि वास्तव मे यह समस्या राष्ट्रीय स्तर की थी। राष्ट्राध्यक्ष के जोर देने पर-काग्रेस ने १९३५ में सामाजिक सुरक्षा-सबंधी कई कानून पारित किये, जिनमे वृद्धों को पेशन, वेकारी का वीमा, अन्धे, गर्भवती

मॉ और अपंग बच्चो को लाभाश तथा सार्वजनिक स्वास्थ्य कर्मचारियो को आर्थिक सहायता देने की व्यवस्था थी। इन कार्यक्रमों का कुछ व्यय-भार मालिक उठाते और कुछ व्यय-भार श्रमिको को उठाना पडता था, उन्हें राज्य-सरकार लागू करती थी और देखरेख संघीय सरकार की रहती थी। आरभ में इसका जो व्यापक विरोध हुआ, उसकी चर्चा छोड दी जाये, तो पता चलेगा कि शीघ्र ही इस कार्यक्रम को सभी ओर से व्यापक समर्थन मिला और आगामी वर्षों मे इसकी धाराए और भी उदार बना दी गयीं तथा इसके क्षेत्र को भी व्यापक बना दिया गया।

अंत में रूजवेल्ट-प्रशासन ने प्रशासन में महत्वपूर्ण और दूरगामी सुधारो को जन्म दिया। सरकार का कार्यवाही प्रशासनिक-विभाग जो पहले से ही ऊबड़-खाबड़ ढग का, अकुशल व अधिक खर्चीला था, उसे थोडा बहुत पुनः संगठित किया गया—तथापि इस दिशा मे बहुत-कुछ करना शेप रह गया। हेच-कानून के अंतर्गत—जो १८८३ के मूल कानून के बाद प्रशासनिक सेवाओं के सुधार के बारे मे अत्यधिक महत्वपूर्ण कानून था—सरकारी कर्मचारियों की "हानिकारक राजनैतिक गतिविधियों" पर रोक लगा दी और राज-नीतिक दलो के भ्रष्टाचार और फिजूलखर्ची पर कडी चोट की। १९३७ मे नये कार्यक्रम के अंतर्गत जारी किये गये अधिकाश कानूनो को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा निरर्थक कर देने पर न्यायालयों के 'सुधार' की योजना गढी गयी। इतने कानून शायद ही पहले कभी अवैध किये गये होंगे। तरीका यह था कि, वृद्ध न्यायाधीशों को अवकाश ग्रहण करने दिया जाये और न्यायालयो मे नये रक्त का संचार किया जाय। इसका उद्देश्य यह था कि, न्यायालय को मार्शल, स्टोरी और होम्स की महान परम्परा पर लौटने को बाध्य किया जाये —इस परम्परा के अनुसार सविधान का अर्थ उदारतापूर्वक लिया जाता था न कि उसे पत्थर की लकीर मान कर सरकार के विरुद्ध कडी दीवार के रूप मे खड़ा करना था। इस बारे मे रूजवेल्ट के विशिष्ट प्रस्ताव की कड़ी आलोचना की गयी और अंत मे इसे गिरा भी दिया गया। इसी दौरान मे, जो भी हो, न्यायालय के न्यायाधीश बदलने लगे और जल्दी ही सरकार की उनके समकक्ष तथा उतनी ही स्वतत्र शाखाओ द्वारा लागू किये गये कानूनों पर उदार दृष्टिकोण अपनाने लग गये। रूजवेल्ट ने इस महान विवाद को जन्म देकर, जो बहुत कुछ भ्रमपूर्ण तथा अधिक अपयश भरा था—सभवतया अंत में राष्ट्र को यह शिक्षा अवश्य दी कि अमरीकी संवैधानिक

प्रणाली क्या है और साथ ही न्यायालयो को भी बाध्य किया कि अमरीकी प्रजातन्त्र के अनुकूल अपने को ढालें।

युद्ध की छाया : विल्सन की तरह ही रूजवेल्ट के आतरिक मामलो मे विदेशी मामलो की हडबंग ने व्यवधान पैदा कर दिया और जब कि उनका दूसरा राष्ट्राध्यक्ष-काल आरभ ही हुआ था कि यह स्पष्ट हो गया था कि घरेलू मामलों की अपेक्षा अंतर-राष्ट्रीय मामले प्रमुख स्थान ले लेगे। १९२० से आरभ होकर १९३० के दशक मे भी सॉस लेती हुई, विल्सन द्वारा प्रभूत आशाप्रद सामूहिक सुरक्षा प्रणाली धीरे-धीरे नष्ट हो चली थी। इस विघटन के लिए, सयुक्त राष्ट्र अमरीका भी थोडा-बहुत जिम्मेदार है। अमरीका की कट्टर पृथकता की नीति ने लीग आफ नेशन्स को विश्व के एक महान तथा स्वतत्र राष्ट्र के नैतिक व व्यावहारिक सहयोग से वचित रखा। तटकर-नीतियो ने विश्वव्यापी आर्थिक तंत्र को नष्ट करने मे योग दिया, सुदूरपूर्व से अमरीका के हट जाने से जापान को आक्रमण जारी रखने का मानो निमन्त्रण मिल गया और निश्शस्त्रीकरण आदोलन ने प्रजातन्त्रो मे नौसैनिक तथा अन्य सैनिक तैयारियो को निश्चेष्ट व निरुत्साहित कर दिया।

द्वितीय महायुद्ध के बीज १९२० के दशक मे ही गहरे जम चुके थे। जापान ने महसूस किया कि, उसके आगे बढने के दरवाजे लीग आफ नेशन्स ने कसकर बद कर दिये हैं, और वह पूर्व मे ब्रिटेन व अमरीका की शक्ति से कुढने लगा। मित्रराष्ट्रों के साथ रह कर लडने से इटली को जो फल मिला, उससे वह असतुष्ट हो गया और उनका नया बकवासी नेता बेनिटो मुसेलिनी को प्रसिद्धि व महत्त्वाकाक्षा बुरी तरह सताने लगी। जर्मनी अपनी पराजय से असतुष्ट था और वर्सलीज-सन्धि द्वारा लागू किये गये प्रतिबन्धो से बेचैन था। आर्थिक मदी, बढती हुई जनसख्या का दबाव, सामाजिक अस्थिरता और नैतिकता के ह्रास ने उन नये नेताओ के लिए मार्ग प्रशस्त किया, जो शातिपूर्ण पुनस्सस्थापन की धीमी गति से बेचैन हो उठे थे तथा उन नये सिद्धान्तो को जन्म दिया, जिन्होंने पुराने सिद्धान्तो व आदर्शों को चुनौती दी। इटली में फासिज्म का बोलबाला हो गया। जर्मनी ने दस वर्षों की अव्यवस्था के बाद, प्रथम महायुद्ध के एक आस्ट्रियावासी सैनिक तथा युद्धोन्मत्त एडोल्फ हिटलर को क्रान्तिकारी राष्ट्रीय समाजवादी दल सगठित करने दिया और सरकार की बागडोर सम्हालने दिया—१९३० के दशक के प्रारभिक वर्षों

मे इन तीनों देशों ने निरंकुश सैनिक शासनप्रणाली संगठित कर ली और ये तीनों राष्ट्र केवल वार्सलीज व बाद की दूसरी संधियों को भग करने को उतारू नही हुए वरन् सम्पूर्ण अंतरराष्ट्रीय कानून व व्यवस्था भंग करने पर आमदा हो गये।

इसके बाद की घटनाएं इतनी तेजी से घटीं कि उन्हें एक सॉस में गिनाया नहीं जा सकता है। प्रत्येक निरकुश तानाशाह ने आक्रमक रूप ले लिया। हरेक ने अपने सैनिक तत्र को सुसज्जित करना आरम कर दिया, अपने पड़ौसी राष्ट्रों को भयभीत करने लगे और साम्राज्यवादी मार्ग पर चल पड़े। इनमें से अधिकाश साम्राज्यवादी योजनाए उन्होंने सुव्यवस्थित व उचित आधारों पर रखी तथा इस ढग से उन्हे क्रियान्वित किया कि प्रजातान्त्रिक शक्तियों के विरोधो पर कडी जॉच नही आने दी। १९३१ में जापान ने मचूरिया पर आक्रमण किया तथा कठपुतली-सरकार मार्चुको स्थापित की। इस सैनिक महत्वपूर्ण स्थान से उन्होंने उत्तर में रूसी साइबेरिया तथा दक्षिण मे चीन की ओर अपना कदम बढ़ाया। इटली—जिसने डोडाकनीज-सागर में अपनी स्थिति सुदृढ कर ली थी—फियूम को ले लिया और लिबिया मे अपनी सीमाओं का विस्तार कर लिया। उसने इथोपिया के साथ युद्ध छेड़ कर पुराने रोम-साम्राज्य को नया जन्म दिया तथा १९३५-३६ मे इथोपिया-जैसे पिछड़े परन्तु महत्वपूर्ण देश को अपने कब्जे मे ले लिया। जर्मनी ने वार्सलीज-सन्धि को ठुकरा दिया, राइनलैड पर पुनः अधिकार कर लिया और साहस के साथ बडे पैमाने पर शस्त्रीकरण फिर से आरंभ किया। लीग ने विरोध किया, कूटनीतिज्ञों ने इसकी अवमानना की और प्रजातान्त्रिक नेताओं ने इन दावों को अनुचित ठहराया; परन्तु एक भी राष्ट्र या कुछ राष्ट्रों ने संगठित होकर इन तानाशाही महत्वाकाक्षाओं के कड़े प्रतिरोध के लिए हस्तक्षेप नही किया।

अधिकाश अमरीकी बिना किसी अभिरुचि के इन घटनाओ को देखते रहे—इस अलगाव के साथ-साथ निश्चय ही अस्वीकृति की भावना भी थी। उन्हें विश्वास हो गया कि, प्रतिद्वन्द्वी साम्राज्यवादी शक्तियो के पुराने इतिहास मे यह भी मानों एक नया अध्याय है। अधिकाश अंग्रेजों की अपेक्षा वे यह नही समझ पाये कि दुनिया मे कितनी खतरनाक क्रान्तिकारी शक्तियॉ निर्बाध हो चुकी हैं। वे यह नहीं महसूस कर सके की, उनका पाला एक ऐसी शक्ति से पडा है, जो-विश्व इतिहास की अब तक की खतरनाक विध्वसक शक्तियों से कहीं अधिक खतरनाक व विध्वसक शक्ति है। उन्होंने

अपने आपको इसके लिए बचाया कि वे इस सब झमेले से दूर हैं और सुरक्षित हैं, क्योंकि दोनो ओर विशाल महासागर उनकी रक्षा करता है तथा वे आत्मभरित हैं, धनी हैं और शक्तिशाली हैं।

वास्तव मे जिस तरह के संकट की तलवार उन पर और सारे ससार पर झूल रही थी, उसकी सही वास्तविकता को समझना उनके लिए बहुत कठिन था। यह केवल सैनिक धमकी ही नहीं थी। अमरीका पहले भी सैनिक धमकियों से शानदार तरीको से निपट चुका था। यह एक नयी चीज थी, नयी और पूर्णतया अजनबी। अमरीकी सदा ही सौभाग्यशाली व्यक्ति रहे हैं। उन्होने कभी भी पराजय या पतन की शक्ल भी नहीं देखी है। जैसा कि, सान्तायना का कहना है कि अमरीकी मस्तिष्क मे पराजय, पतन, शैतानियत की भावनाओ का कहीं स्थान नहीं है। वे इस पर विश्वास नहीं कर सके कि नये सिद्धान्तों का जन्म हो चुका है, जो उनकी जीवन-प्रगाली तथा उनके नैतिक आदर्शों को ठुकराने व नष्ट करने के लिए युद्ध को आमादा है।

अमरीकी और अंग्रेजी प्रशासन-सिद्धान्तो का सर्वमान्य आधार व्यक्ति है। व्यक्ति से सरकार का जन्म होता है। समाज मे उसे अधिकार व स्वाधीनताए प्राप्त होती हैं, उसे अपनी इच्छानुसार पूजा करने, लिखने, विचार व्यक्त करने, अपना व्यवसाय चलाने, अपना धंधा चुनने, इच्छानुसार विवाह करने, अपने अनुसार परिवार बनाने का अधिकार है और इसमे राज्य कहीं हस्तक्षेप नहीं करता है। इन दिनो चाहे हमारी विचारधारा, हमारा व्यवसाय कितना ही सामाजिक क्यो न हो गया हो, यह अभी भी सत्य है कि हमारी सरकार और हमारे अर्थतंत्र का अतिम लक्ष्य स्वतंत्र मानव का विकास व उसकी सुरक्षा है।

इस सिद्धान्त और इटली, जर्मनी व जापान द्वारा प्रयुक्त निरकुश तानाशाही के बीच जमीन आसमान का अंतर है। तानाशाही सिद्धान्तों ने व्यक्ति को राज्य या जाति का गुलाम बना दिया। फासिस्त और नात्सी प्रणालियो के अनुसार व्यक्ति राज्य व जाति की तुलना मे अधिक महत्वपूर्ण नहीं है, उसकी स्वाधीनताएं, उसके अधिकार, उसकी सपत्ति, आकाक्षाए और आशाए उसके सामाजिक और पारवारिक सबध महत्वहीन हैं।

जैसे ही तानाशाही का वास्तविक रूप प्रकट हुआ, अमरीकी उससे अधिक चौकन्ने होने लगे और जैसे ही जर्मनी, इटली और जापान ने अपने आक्रमणों को तेज किया तथा एक राष्ट्र को धाराशायी करना आरभ किया कि, उनका यह भय क्रोध व रोष मे बदल गया। १९३६-३८ मे स्पेन को शहीद होना पडा

जहाँ हिटलर और मुसोलिनी के बमवर्षक व सेनाए रिपब्लिकी सरकार को उलटने मे नेशनेलिस्टों को सहायता दे रही थीं, तब प्रजातत्री देश मुँह बाये खडे थे और वह भी अनिर्णय की लकवे मारे की सी स्थिति मे। जबकि ये विदेशी सेनाए मेड्रिड के द्वार पर गोलाबारी कर रही थीं, जापान ने 'चीनी काड' का सूत्रपात किया, जो कई वर्षो तक जारी रहा और अंत मे जिसने विश्व-युद्ध का रूप ले लिया।

१९३८ में हिटलर ने हिंसात्मक रूप से आस्ट्रिया को 'रीख' (जर्मनी) मे मिला लिया और महान जर्मनी की रचना आरंभ कर दी। इसके बाद चेको-स्लावाकिया का नबर था, और आस्ट्रिया के मिटने के आघात से प्रजातत्र सम्हल नही पाये थे कि हिटलर ने छोटे-से प्रजातंत्र—(चेकोस्लावाकिया) जिसे जन्म लेने मे ब्रिटेन और अमरीका ने सहायता दी थी—के सुडेटन-भूभाग की माँग की। चौकन्ने होकर फ्रास और ब्रिटेन के नेताओ ने इस मामले में मध्यस्थता की अपील की। परन्तु, जब मध्यस्थता का प्रस्ताव ठुकरा दिया गया; ब्रिटेन के तत्कालीन मत्री श्री चेम्बरलेन हवाई-जहाज से म्यूनिख पहुँचे और वहाँ उन्होंने जर्मनी के सैनिक शहन्शाहो को चेकोस्लावाकिया भेट कर दिया। उन्होने वापिस लौट कर कहा, "अब हमारे समय मे शाति रहेगी।" परतु विन्स्टन चर्चिल ने कहा, "ब्रिटेन और फ्रांस को युद्ध और बेइज्जती मे से एक चीज चुननी है। उन्होंने बेइज्जती पसन्द की है। उन्हें युद्ध भी करना पडेगा।"

इन सब बातों पर, अमरीकी प्रतिक्रिया इतनी शानदार नही है कि उसे भावी पीढी गौरवास्पद ठहरा सके। पिछले महायुद्ध के परिणामो से, उनका भ्रम मिट चुका था, और वे नये युद्ध मे अपने को उलझाने में डर रहे थे। उन्हे इस बात का भरोसा था कि, युद्ध अथवा शाति मे से किसी का भी निर्णय करना उनके अपने हाथ की बात है। अतएव, उन्होने किसी भी मूल्य पर शाति को बनाये रखने की नीति अपनायी। उन्होंने शीघ्रता से अपने उन अधिकाश अधिकारों को छोड़ दिया, जिनके रक्षण के लिए उनके पिता व पितामहो ने दो बार युद्ध का सामना किया और दुनिया के सामने यह घोषणा की कि, कैसी भी परिस्थिति क्यों न हो, किसी भी युद्धरत राष्ट्र को—चाहे वह आक्रामक हो अथवा जिस पर आक्रमण किया गया हो—सहायता के लिए अमरीका का मुँह नहीं ताकना चाहिए। यह सारी बाते १९३५-३७ के तटस्थता-कानून मे निहित थीं; जिसके द्वारा किसी भी युद्धरत राष्ट्र के साथ व्यापार या उधार देने पर प्रतिबध लगा दिया गया था।

राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट ने—जो विदेश सचिव कोर्डेल हल की तरह इस विधेयक को नापसन्द करते थे—इस पर हस्ताक्षर करके भूल की। बाद में, जैसे-जैसे अंतरराष्ट्रीय स्थिति बिगड़ती गयी, वह स्वयं इसके लिए जुट गये कि बाहरी विश्व में जो घटनाएं घट रही हैं, उनकी वास्तविकता से अमरीकी जनता को सतर्क किया जाये, अमरीका को नैतिक व सैनिक दृष्टि से सज्जित किया जाये, इन विरोधी शक्तियों का मुकाबला करके इन्हें पराजित किया जाये। १९३७ में चिकागो में भाषण देते हुए, उन्होंने आक्रामक राष्ट्रों के विरुद्ध नैतिक घेरेबन्दी का सुझाव दिया, जिसकी प्रतिक्रिया यह हुई कि, उन पर यह आरोप लगाया गया कि वह राजनीतिक चालें चल रहे हैं। उन्होंने चीन में जापानी आक्रमण की भर्त्सना की, दक्षिण अमरीकी देशों और कनाडा के साथ मैत्री संबंध दृढ़ किये और कांग्रेस को जोर देकर कहा कि राष्ट्र की सुरक्षा के लिए शस्त्रास्त्रों पर अधिक व्यय की स्वीकृति दी जाये। उन्होंने इन तानाशाहों को चुनौती दी कि "भय-जनक शांति भी तलवार से प्राप्त शांति से अधिक श्रेष्ठ नहीं होती है", और उन्होंने भय के सामने झुक जाने तथा शक्ति के सामने घुटने टेकना अस्वीकार कर दिया। जैसे-जैसे तानाशाही नीति अधिक आक्रमक होने लगी, अमरीकी भावना भी उसके विरुद्ध अधिक कठोर होने लगी।

युद्ध : ब्रिटेन भी म्यूनिख में अपमानित होकर तथा बाद में चेकोस्लावाकिया को रौंद दिये जाने से क्षुब्ध होकर बुरी तरह से अपने आपको शस्त्र-सज्जित करने में जुट गया, क्योंकि अंत में यह स्पष्ट हो चला कि खुशामद की नीति दीवालियापन है। परन्तु, हिटलर ने तब तक रुकना पसन्द नहीं किया जब तक कि ब्रिटेन और अमरीका सैनिक शक्ति में उसके बराबर हो जाते। १९३९ के वसन्त और ग्रीष्म ऋतु में, वह पोलैंड के विरुद्ध आग उगलता रहा, और डेंजिंग और पोलैंड के सीमाप्रदेश की पट्टी की माँग करता रहा। उसकी शक्ति बहुत-ही अधिक सुदृढ़ हो चली, जबकि उसने गर्मियों में यूरोप के सबसे शक्तिशाली राष्ट्र रूस से गठबंधन कर लिया। तब यद्यपि पोलैंड के साथ समझौता-वार्ता जारी थी, हिटलर ने आक्रमण कर दिया। एक सितंबर को उसकी सेनाएं सीमा पर पहुँच गयीं और उसके बमवर्षक पोलैंड के शहरों पर सर्वनाश और मौत ढाने लगे। दो दिन बाद ही, ब्रिटेन और फ्रांस ने अपने वादों के प्रति इमानदारी दर्शाते हुए, जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

दो सप्ताह में जर्मनी ने पोलैंड को रौंद डाला। रूस भी पूर्व से इस असहाय

देश को पूर्णतया पराजित करने आगे बढ़ आया। इसके बाद, कई दिनों तक शांति रही, जिसे बहुत से अमरीकियों ने मूर्खतावश 'शाब्दिक लड़ाई' की संज्ञा दी। बसन्त तक हिटलर अपने दूसरे आक्रमण के लिए तैयार हो गया। बिना किसी चेतावनी के, उसकी सेनाएं डेनमार्क और नार्वे में घुस आयीं। नार्वेवासियों को ब्रिटेन द्वारा शीघ्र ही सैनिक सहायता भेजने के प्रयत्न असफल रहे और एक माह तथा कुछ ही दिनों में स्केन्डिनेविया-प्रदेशों के सारे साधन-स्रोत जर्मनों के हाथ लग गये। दस मई को जर्मनी ने पश्चिम की ओर रुख किया और तटस्थ राष्ट्र हॉलैंड तथा बेल्जियम व फ्रांस पर आक्रमण कर दिया। युद्ध और मारकाट एक माह में कुछ ही अधिक दिनों तक जारी रही और जब वह समाप्त हुई तब तक हॉलैंड जीता जा चुका था, बेल्जियम की सेनाओं ने आत्म-समर्पण कर दिया था और फ्रांस का पतन हो चुका था। फ्रांस की सहायता के लिए भेजी गयी ब्रिटिश सेना कार्यशीलता व वीरता के कारण सौभाग्य से अछूती बच निकली।

ब्रिटेन अकेला डटा रहा। परन्तु, अब ब्रिटेन म्यूनिख-समझौते वाला ब्रिटेन या नार्वे पर आक्रमण के समय का अवश ब्रिटेन न था। यह वह ब्रिटेन था, जिसने पुनः इस बात की गांठ बांध ली थी कि, एक हजार वर्षों से उसकी धरती पर किसी आक्रामक को पैर नहीं रखने दिया गया था। शेक्सपियर ने गर्वोक्ति से कहा था, "तीनों कोनों से विश्व शस्त्रसज्जित होकर हम पर आक्रमण करें तो भी हम उन्हें हिला देंगे।" इसी गर्वोक्ति को महान नेता विन्सटन चर्चिलने—जिनके हाथों राष्ट्र और स्वतन्त्रता की बागडोर सौंप दी गयी थी—प्रतिध्वनित किया।

"हम एक बार फिर यह सिद्ध कर देंगे कि हम अपनी मातृभूमि की रक्षा करने में समर्थ हैं, हम युद्ध के तूफानों पर काबू पाने तथा निरंकुशता के खतरे को मिटाने में समर्थ हैं। यदि आवश्यक हुआ तो वर्षों तक और अकेले ही लड़ना पड़ा तो भी लड़ेंगे .... भले ही यूरोप का बड़ा भूभाग और कई पुराने तथा प्रसिद्ध राज्यों का पतन चुका है या वे नाजी चंगुल व उनके भयावह दमनीय शासन के शिकंजे में पड़ सकते हैं परन्तु हम कतरायेंगे नहीं और न असफल ही होएंगे। हम अंत तक लड़ेंगे। हम फ्रांस में लड़ेंगे, हम सागरों व महासागरों में लड़ेंगे। हम विश्वास तथा वायुसेना की बढ़ती हुई शक्ति के साथ लड़ेंगे, हम अपने देश की रक्षा करेंगे, चाहे इसका कितना ही भारी मूल्य क्यों न चुकाना पड़े; हम समुद्र-तटों पर लड़ेंगे, हम हवाई-अड्डों

पर लडेगे। हम खेतो मे लडेगे, गलियो मे लडेगे, पहाडो मे लडेगे। हम कभी आत्म-समर्पण नही करेंगे और यदि ऐसा भी हुआ—यद्यपि इस पर मै एक पल के लिए भी विश्वास नहीं करता हूँ—यह द्वीप या इसका एक विशाल भाग शत्रु के हाथो चला जाये या अकाल की सी स्थिति पैदा हो जाये तो भी हम अपनी सागर-पार ब्रिटिश नौसेना द्वारा शस्त्रसज्जित व सुरक्षित साम्राज्य मे सघर्ष जारी रखेंगे, यह उस शुभ दिन तक जारी रहेगा जब कि नयी दुनिया अपनी सारी शक्ति और पुरुषार्थ के साथ पुरानी दुनिया की मुक्ति और छुटकारे के लिए आगे कदम नहीं बढा ले।"

"ऐसा शुभ दिन"—परन्तु, वह कब तक आने वाला था? पोलेड पर आक्रमण ने एक महत्वपूर्ण विवाद को जन्म दिया। इतना महत्वपूर्ण विवाद जो दास प्रथा-सबधी विवाद के बाद शायद पहला ही विवाद था। यह विवाद केवल काग्रेस-भवन तक ही सीमित नहीं रहा, परन्तु सभी समाचारपत्रो मे, सभी सार्वजनिक स्थानो पर और राष्ट्र भर मे सभी घरो मे इस प्रश्न पर चर्चा छिड़ गयी। रूजवेल्ट ने तत्काल सक्रिय कदम उठाया और काग्रेस से तटस्थता-कानून मे सशोधन की माँग की। एक लबी बहस के बाद वह जिद्दी काग्रेस से 'नगद देकर सामान खरीदने' सबधी कानून पारित करवा सके। इसके फलस्वरूप युद्धरत प्रजातत्रो को थोडे-बहुत अमरीकी साधन स्रोतो का लाभ मिल सका। फ्रास के पतन ने अधिकाश अमरीकियो की आँखे खोल दी कि जर्मन सैनिक तत्र कितना शक्तिशाली है, और गर्मी और पतझड मे ब्रिटेन पर किये गये हवाई आक्रमणो ने उन्हे यह सोचने को बाध्य कर दिया कि, यदि ब्रिटेन का पतन होगया तो अमरीका को एक विशाल शक्तिशाली सैनिक गुट्ट से अकेले ही जझना पडेगा।

इस तरह की सभावना के फलस्वरूप अमरीकी काग्रेस ने पुनश्शस्त्रीकरण के लिए अरबो डालरो की स्वीकृति प्रदान की, दक्षिणी अमरीकी राष्ट्रो के साथ अमरीकी गोलार्द्ध के प्रजातत्रो की सामूहिक सुरक्षा के बारे मे समझौता किया गया, अमरीका और कनाडा ने सयुक्त प्रतिरक्षा मंडल का गठन किया और शातिकाल मे भी लगभग दस लाख लोगो को सेना मे भर्ती कर उनके सैनिक प्रशिक्षण की व्यवस्था आरभ की गयी। इन कदमो से भी अधिक महत्वपूर्ण कदम यह रहा कि, रूजवेल्ट और चर्चिल के बीच नाटकीय ढग से एक समझौता हो गया, जिसके अनुसार पचास पुराने विध्वसक युद्धपोतों के बदले ब्रिटेन ने अमरीका को न्यू-फाउण्डलैड से लेकर ब्रिटिश न्यू गायना के

मध्यवर्ती भाग के कई सैनिक अड्डे उपयोग के लिए ठेके पर प्रदान कर दिये। रूजवेल्ट ने कहा कि लुईसियाना-क्रय के बाद हमारी राष्ट्रीय प्रतिरक्षा की दिशा मे यह सबसे महत्त्वपूर्ण कदम है और चर्चिल ने भी कहा, "अंग्रेज भाषाभाषी इन दोनो प्रजातान्त्रिक सगठनों को उनके आपसी हितो व सामान्य लाभ के लिए एक दूसरे के साथ थोड़ा-बहुत घुलमिल जाना होगा।" वास्तव मे यह भविष्यवाणी के से उद्‌गार थे।

रूजवेल्ट ने उस दिशा का निर्देशन कर लिया था, जिस मार्ग पर अब राष्ट्र को चलना होगा; परन्तु क्या वे उसे उस मार्ग पर ले चलने मे समर्थ हो सकेंगे? १९४० की ग्रीष्म ऋतु में अमरीकी जनता का आवाहन किया गया कि वे ऐसे राष्ट्राध्यक्ष का चुनाव करे, जो आनेवाले खतरनाक वर्षों मे राष्ट्र का सही निर्देशन कर सके। डेमोक्रैट-दल ने तीसरी बार उसी राष्ट्र्व्यक्ष के चुनाव न करने की प्रथा को भंग करते हुए रूजवेल्ट को पुनः इस पद के लिए उम्मीदवार नामजद किया। रिपब्लिकी दल ने अधिकतर हड़बडी मे ही अपनी बैठक की और राजनीति मे नवागन्तुक इडियाना और न्यूयार्क के वेन्डेल विल्की को इस पद के लिए अपना उम्मीदवार नामजद किया। डेमोक्रेटिक दल और उसके नेता दृढ़ता के साथ ब्रिटेन को सहायता देने की नीति स्वीकार कर चुके थे। क्या रिपब्लिकी दल और उसके नये अनुभवहीन नेता इस नीति का विरोध करेंगे? विल्की ने 'नये कार्यक्रम' को लेकर उसकी घरेलू क्षेत्रों मे जो कमियाँ रहीं उन पर चोट की; परन्तु ब्रिटेन को सहायता देने के प्रश्न पर उन्होंने भी दृढतापूर्वक राष्ट्र के साथ चालबाजी करना अस्वीकार कर दिया, अर्थात् उन्होंने भी इसे उतने ही दृढ़ रूप मे स्वीकार किया, जितना डेमोक्रेटों ने किया था। वास्तव मे इस जीवन-मरण के प्रश्न पर, उन्होंने भी राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट की नीति का समर्थन किया, उन्होने सैनिक भर्ती का समर्थन किया और विध्वंसक समझौते को सराहा और यह वचन दिया कि यदि वे राष्ट्रपति चुन लिये गये, तो राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट और कांग्रेस ने इस दिशा मे जो मार्ग निर्दिष्ट किया है, उसके विपरीत गमन नही करेंगे। यह एक महान और राजनीतिक दूरदर्शितापूर्ण निर्णय था और इसने स्पष्ट कर दिया कि, रिपब्लिकी दल ने अंत में वेन्डेल विल्की के रूप में एक साहसी, बुद्धिमान और दूरदर्शी नेता को प्राप्त कर लिया।

नवम्बर के चुनावों मे रूजवेल्ट पुनः राष्ट्राध्यक्ष चुन लिये गये और जनमत के समर्थन से पूर्ण विश्वस्त होकर, उन्होंने तेजी व शक्ति के साथ अपनी नीतियों को कार्यरूप देना आरंभ कर दिया। जब जनवरी मे कांग्रेस की बैठक आरंभ

हुई तो उन्होंने तटस्थता-कानून के रहे-सहे प्रतिबंधो को शिथिल करने के उद्देश्य से एक प्रस्ताव रखा—यह था, उधार-पट्टे पर सामग्री देने-सबंधी विधेयक (Lend-lease bill)। इस कानून के अनुसार सयुक्त राष्ट्र अमरीका किसी भी राष्ट्र को, जिसकी प्रतिरक्षा अमरीकी सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है—उधार अथवा पट्टे पर युद्ध-सामग्री या सहूलियते दे सकता है। एक लबे वादविवाद के बाद यह विधेयक पारित हो गया और इसकी दूरदर्शितापूर्ण धाराओं के अनुसार शीघ्र ही ब्रिटेन और उसके सहयोगी राष्ट्रो के लिए सागर-पार विमानो, टैंको, कच्चा माल, खाद्य-सामग्री की अजस्र धारा प्रवाहित हो चली। वास्तव मे, यह कदम तटस्थता-विरोधी था परन्तु सयुक्त राष्ट्र अमरीका ने अब जर्मनी को हराने की ठान ली थी, अब उसे अतर्राष्ट्रीय कानून की अच्छाइयो के नाम पर रोके नहीं रखा जा सकता था। इसके साथ-साथ तटस्थता-विरोधी और भी कई कदम उठाये गये। धुरी राष्ट्रो (जर्मन-इटली-जापान) के जहाज जब्त कर लिये गये। उनके कोष का भुगतान बद कर दिया गया, तेलवाही जहाज ब्रिटेन को लौटा दिये गये, ग्रीनलैड और बाद मे आइसलैड पर कब्जा कर लिया गया और नये साथी राष्ट्र रूस को भी उधार-पट्टे-कानून के अतर्गत सामग्री भेजी जाने लगी—अत मे कई जर्मन पनडुब्बियो द्वारा अमरीकी जहाजो के डुबाने पर रूजवेल्ट ने राष्ट्राध्यक्ष के तौर पर शत्रु की पनडुब्बियो को देखते ही गोली मारने के आदेश दिये।

इन भौतिक सहायता सबधी कदमो की तरह ही "प्रजातात्रिक युद्ध के उद्देश्यो की घोषणा" करके जो कदम उठाया गया, वह भी इतना ही महत्वपूर्ण था। चौदह अगस्त को चर्चिल और रूजवेल्ट अटलाटिक महासागर के बीच जहाजो पर मिले और अटलाटिक घोषणापत्र तैयार किया गया। इसमें कितने ही निश्चित सिद्धान्त थे, जिन पर "विश्व के सुखद व अच्छे भविष्य की उनकी आशाए आधारित थी"। ये सिद्धान्त थे: किसी भी सीमा या प्रदेश का अपहरण न होगा, किसी भी प्रदेश की इच्छा के विरुद्ध सीमाओं मे परिवर्तन न किया जायेगा, सभी लोगो को अपनी मर्जी के अनुसार सरकार बनाने का हक होगा, सभी राज्यो को व्यापार व कच्चे माल की उपलब्धि, राष्ट्रों के मध्य आर्थिक सगठन बनाने तथा सागरो मे निर्बाध जहाजरानी के अधिकार रहेंगे और अतर्राष्ट्रीय विवादो को हल करने के लिए युद्ध-रूपी अस्त्र का सहारा नहीं लिया जायेगा। यहाँ विल्सन के चौदह सिद्धान्त सरल व नये स्वरूप मे प्रकट होते हैं।

द्वितीय विश्व-युद्ध में
'उधार-पट्टा' केन्द्र, सैनिक चौकियाँ और
• महत्त्व के स्थान
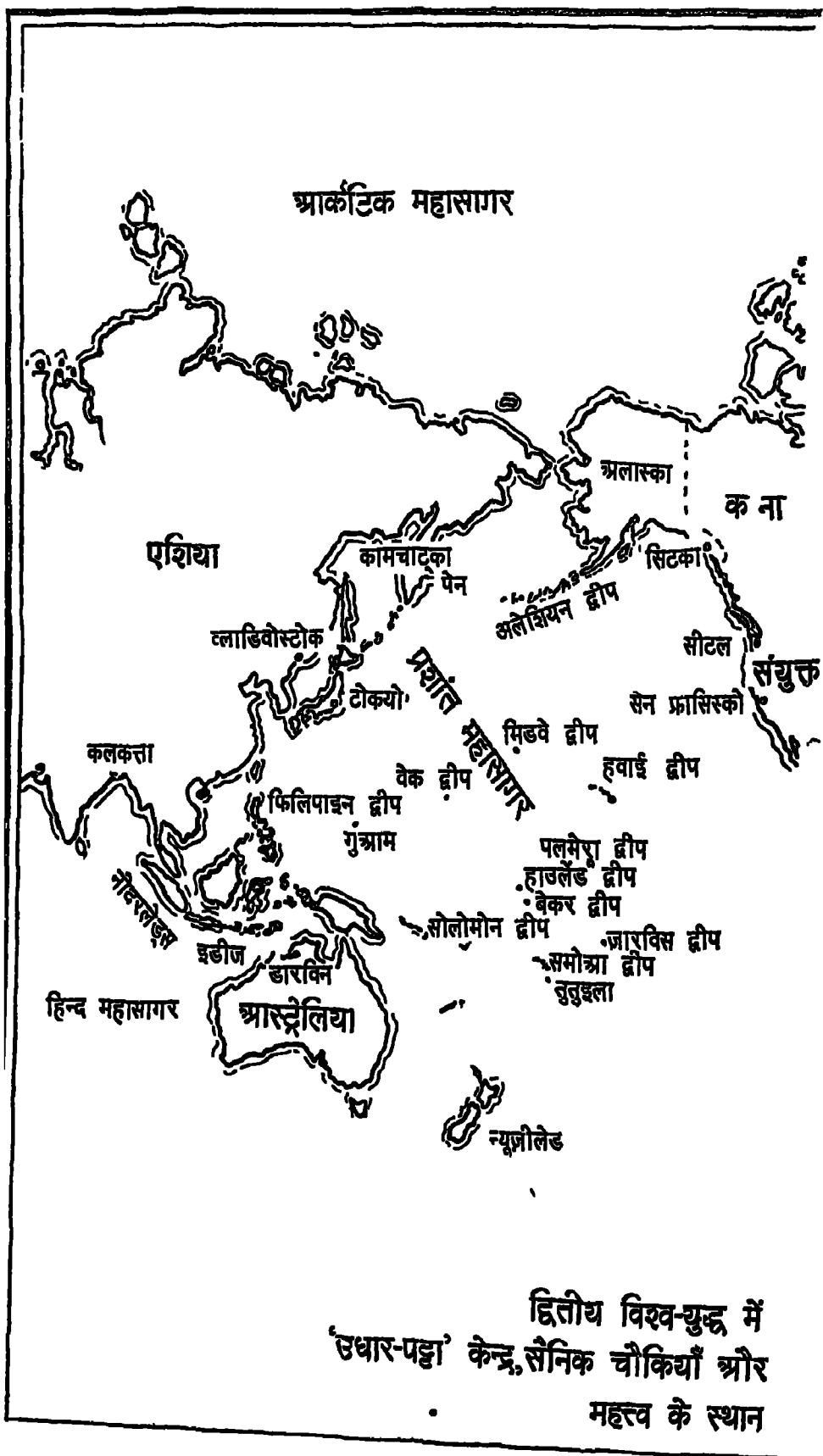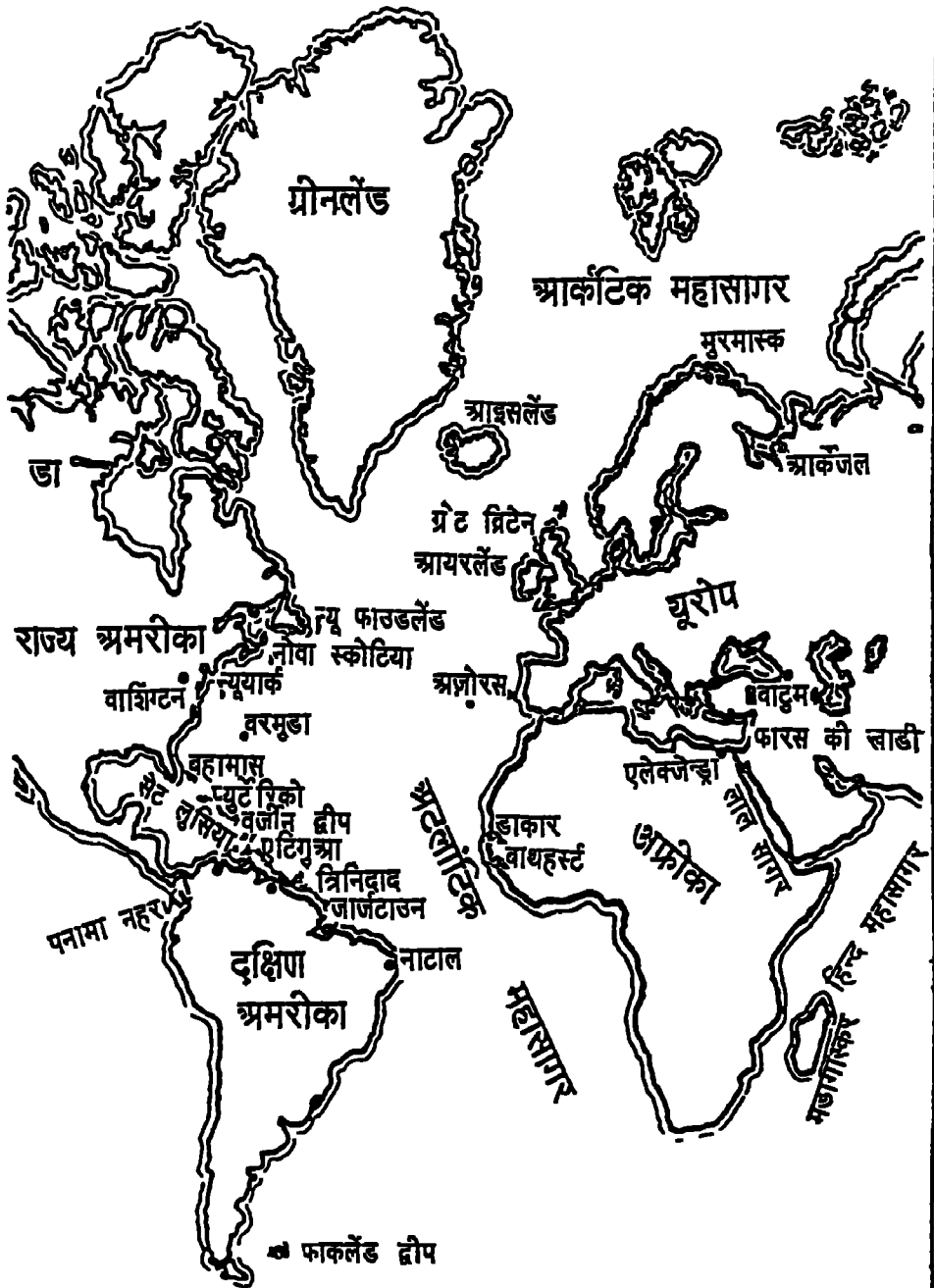
संयुक्त राज्य अमरीका
विश्व भर मे रसद-मार्गों पर सामरिक
यहाँ दिखाये गये है

शुरू में ही ऐसा लगा कि संयुक्त राष्ट्र अमरीका को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में उतरना ही पड़ेगा; परन्तु साथ-साथ यह भी स्पष्ट होने लगा कि वह समय अभी दूर है। अमरीका ने अपना निर्णय अवश्य कर लिया था, परन्तु अभी उसमे उतना साहस नही हो पाया था कि, वह इसे युद्ध की ज्वाला में निखारने को आगे बढ़े। इसी दौरान मे मध्यपूर्व में तनाव काफी अधिक बढ़ गया था। जापान औपचारिक तौर पर धुरी राष्ट्रों मे सम्मिलित हो गया था और अब ब्रिटेन और अमरीका के यूरोपीय युद्ध मे उलझे रहने के इस मौके का लाभ उठाते हुए अपनी 'नयी व्यवस्था'—ऐसी व्यवस्था जिसके अंतर्गत जापान का सारे पूर्वी गोलार्द्ध और प्रशान्त महासागर पर एकछत्र अधिकार होता—को साहस के साथ आगे बढ़ा रहा था। सतुष्ट करने की नीति निरर्थक सिद्ध होने के कारण, ब्रिटेन और अमरीका ने जापान के प्रति और भी दृढ़ रुख अख्तियार किया। परन्तु, यह भी इतना ही निरर्थक सिद्ध हुआ। जापान पर सैनिक ताना-शाहों का नियंत्रण हो चला था, उन्हे विजय का चस्का लग चुका था, और उन्हें आगे भी इससे भी बडी विजय पाने का विश्वास हो चला था। नवम्बर १९४१ में जब रूसी मास्को और लेनिनग्राड के सामने बहादुरी से लड़ रहे थे, ब्रिटेन और अमरीका दोनो ही अटलांटिक-युद्ध मे जूझ रहे थे, तब जापान ने फ्रासिसी हिन्द चीन मे सेनाएं उतार दी और थाइलेंड की सीमा पर हवाई अड्डों का निर्माण कर लिया। स्थिति इतनी गंभीर हो चली थी कि राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट ने जापान के सम्राट से व्यक्तिगत अपील की कि मिलजुलकर ऐसा मार्ग अपनाया जाय जिससे शांति बनी रह सके।

यह शायद असभव ही था कि जापान के सम्राट तक यह संदेश कभी पहुँचा होगा; क्योंकि जापान अब विश्व-इतिहास की राजनीति मे एक खतरनाक पासा फेंकने वाला था। रविवार ७ दिसम्बर को उसने भीषण तबाही के साथ अमरीकी सैनिक चौकियों हवाई गुवाम, मिडवे, वेक और फिलीपाइन पर आक्रमण कर दिया था। युद्ध अब आ पहुंचा था।

इक्कीसवाँ परिच्छेद

द्वितीय महायुद्ध

भयानक स्थिति : विश्वशक्ति-सन्तुलन मे जनतान्त्रिक सस्थाओ के पतन के साथ जब पर्ल-हार्बर पर आक्रमण हुआ, तब इतिहास का अत्यधिक भीषण युद्ध आरम्भ हो चुका था और विन्स्टन चर्चिल के शब्दो मे यह सघर्ष का एक चरम बिंदु था। जापान ने पर्ल-हार्बर और फिलिपाइन पर विजय प्राप्त कर ली थी यह बात स्पष्ट थी, साथ-साथ यह बात भी स्पष्ट थी कि अमरीकी क्षेत्र पर आक्रमण कर उन्होंने युद्ध के एक सिद्धान्त का भी उल्लघन किया था, यदि आप किसी सम्राट पर आक्रमण करते है, तो उसका उद्देश होता है उसको जान से मारना। हालॉकि पर्ल-हार्बर के आक्रमण ने सयुक्त राज्य अमरीका के प्रशान्त महासागरीय जहाजी बेडे को ध्वस्त कर दिया था, लेकिन सयुक्त राज्य अमरीका को नहीं; बल्कि इसके विपरीत इस आक्रमण ने देश को अद्वितीय ढग से सगठित किया, उसके सभी स्रोतो और शक्तियो को युद्ध मे लगा दिया, उसकी विशाल उत्पादनक्षमता का सम्पूर्ण रूप से उपयोग किया गया और उसकी जनता मे विजय प्राप्त होने तक सघर्ष करने के लिए दृढ सकल्प की स्फूर्ति भर दी। पर्ल-हार्बर के आक्रमण के बाद, छः महीने के अन्दर ही, सयुक्त राज्य अमरीका के नौसैसिक और हवाई बेडे ने सयुक्त रूप से मिडवे मे जापानियों को पहिली नौसैनिक पराजय दी; और एक साल के भीतर ही अमरीकी राष्ट्र ने, जो पहिले पराजित किया जानेवाला था, अटलाटिक-क्षेत्र मे सोलोमन द्वीपों तथा उत्तरी अफ्रीका के समुद्री किनारों पर सफल आक्रमण किये।

फिर भी दिसम्बर १९४१ मे स्थिति खतरनाक थी और भविष्य निराशाजनक था। सभी स्थानो पर मित्र-राष्ट्रो की सेनाएँ बचाव का युद्ध कर रही थी और धुरी राष्ट्रो की विजय हो रही थी। इबीरियन-प्रायद्वीप को छोड कर, समस्त पश्चिमी यूरोप पर हिटलर का आधिपत्य था और उसकी शक्तिशाली फौजें सैकडों मील रूस मे घुस गयी थीं। रूस की हालत बड़ी गम्भीर हो चुकी थी।

इटली का आतंक भूमध्य-सागर में फैला हुआ था और उसकी फौजें उत्तरी अफ्रीका मे केन्द्रित हो रही थी तथा मिश्र और स्वेज नहर को हडपने की धमकी दे रही थी। जापानियो ने चीन के अधिकाश भाग पर कब्जा कर लिया था; और अब वे मलाया तथा डच ईस्ट इण्डीज को कब्जे मे करने, फिलिपाईन को जीतने, पूर्व मे भारत को, दक्षिण में आस्ट्रेलिया को और उत्तर मे एल्यूशियन तथा अलास्का के लिए खतरा बन रही थी।

पुरानी दुनिया मे केवल ब्रिटेन और रूस अब भी धुरी राष्ट्रो के विरुद्ध थे: ब्रिटेन अपने जख्मों से आहत और रक्तरजित था, उस पर लगातार हवाई मार पड रही थी और आबादी को भोजनादि के अभाव की आशका थी; रूस को घुटने टिकाने की कोशिश की जा ही थी, उसके क्षेत्र ध्वस्त किये जा चुके थे, उसके शहरों ओर कारखानो को विनष्ट किया जा चुका था, और उसकी फौजों का भीषण सहार किया जा रहा था। दिसम्बर १९४१ मे न केवल यह समव हो गया था कि जर्मनी पूर्व मे काकेशस या उत्तरी अफ्रीका पर आक्रमण करेगा, बल्कि यह भी प्रतीत होता था कि जापान पश्चिम मे चीन और बर्मा को रौंध डालेगा और ससार के तीन चौथाई समुद्री बेडे की शक्तिवाले इन दोनों धुरी राष्ट्रो का सगम भारत मे होगा।

फिर भी, भविष्य अधिक दिनों तक इतना निराशाजनक ही न बना रहा। मित्र-राष्ट्रों मे लगभग ४० देश थे और इनमे से ससार के अत्यधिक शक्तिशाली और भारी जनसख्यावाले देश जैसे अमरीका, ब्रिटेन, रूस, चीन, भारत और ब्रिटिश-उपनिवेश शामिल थे। मित्र-राष्ट्रों को न केवल जनशक्ति का ही लाभ था, बल्कि उत्पादनक्षमता और वैज्ञानिक तथा अनुसन्धान-क्षेत्रो की कुशलता भी प्राप्त थी। अन्तिम विजय प्राप्त करने के लिए उनको आवश्यकता थी, केवल समय की। धुरी-राष्ट्रो ने लगभग दस वर्ष पहिले से ही इस युद्ध की तैयारी कर ली थी और चीन, स्पेन तथा अफ्रीका मे युद्ध को विगत ५ वर्षो से जारी रखे हुए थे। सभी स्थानों पर उन्होंने दॉव लगा रखा था। इसलिए मित्र-राष्ट्रों को कुछ समय मिलने की ही आवश्यकता थी, ताकि वे अपने साधनों का भरपूर उपयोग कर शत्रु पर आक्रमण कर सके। लेकिन, उस समय यह प्रश्न था कि क्या उनको इतना समय मिल भी सकेगा?

मित्र-राष्ट्रों को धुरी-राष्ट्रो की अपेक्षा दो विशेष उल्लेखनीय लाभ थे। पहिले तो वे वास्तविक एव सैद्धान्तिक रूप से सयुक्त थे। उन्होने न केवल अपने साधनों और फौजी वैज्ञानिक पद्धतियो को परस्पर बॉटा था, बल्कि उन्हे वास्तव

मे सम्मिलित ही कर दिया था। इसके विपरीत धुरी-राष्ट्रो मे कोई वास्तविक एकता न थी। जर्मनी, इटली और जापान ने अलग-अलग और स्वतत्र लडाइयॉ लर्डी, उनका कोई विशाल मोर्चा न था, फौजो का सयुक्त प्रमुख न था, न हथियारों का और यहॉ तक कि सूचनादि का कोई प्रभाविक प्रत्यावर्नन नहीं था। मित्र-राष्ट्रो को दूसरा लाभ था, नेतृत्व का। इस महान ऐतिहासिक सकट काल मे ब्रिटेन और अमरीका मे अपने दायित्वो तथा उद्देश्यो को निभाने के योग्य नेता उपलब्ध थे। यगर पिट के समय से, विन्स्टन चर्चिल इग्लैण्ड के एक महानतम युद्धकालीन नेता प्रमाणित हुए इसी प्रकार युद्ध-कालीन राष्ट्राध्यक्षों मे फ्रेकलिन डी. रुजवेल्ट अत्यधिक योग्य प्रमाणित हुए। इन दोनो नेताओ को न केवल अपने देशो मे बल्कि विश्व के समस्त सभ्य प्रदेशो मे समर्थन और सम्मान प्राप्त था।

इसके अलावा एक तीसरा लाभ भी था, जिसका महत्व कुछ वर्षो के समाप्त होने के साथ ही स्पष्ट हो गया। धुरी-राष्ट्रो ने निर्दयता, दमन और गुलाम बनाने की भावना से युद्ध लडा था: उनके अनुसार न चलनेवाले व्यक्तियो को बुरी तरह दण्डित किया गया, आलोचनाओ को बन्द कर दिया गया, स्वाधीनता और मौलिकता को कुण्ठित कर दिया गया और विरोधियो को या तो मौत के घाट उतार दिया गया या उनको जेलो मे ठूँस दिया गया। लेकिन, सभी आग्ल-भाषाभाषी देशो मे शाति की तरह युद्ध-काल मे भी स्वाधीनना जारी रही, जनतान्त्रिक प्रक्रियाए अनवरत रूप से जारी रही, आलोचनाओ को प्रोत्साहन दिया गया और मौलिकता तथा स्वतत्रता को श्रेष्ठ माना गया। इस प्रकार से धुरी-राष्ट्रो ने विजित जनता से घृणा अर्जित की और वे अपनी अनिवार्य गलतियो से अपनी रक्षा न कर सके। मित्र-राष्ट्रो को अपनी उस जनता का समर्थन प्राप्त था, जिनको उन्होंने स्वाधीन करने का प्रयत्न किया था। उनको नीतियो और सामरिक पहलुओं पर खुली बहस से लाभ पहुँचा। सभी वर्गों की जनता ने उनका समर्थन किया और अपने मौलिक और स्वतत्र विचारो से सहायता की।

युद्ध के आरम्भ होते ही और वास्तव मे पर्ल-हार्बर के आक्रमण के पहिले ही मित्र-राष्ट्रो ने दो मूलभूत निर्णय लिये। पहिला था, जर्मनी को हराने की दिशा मे प्राथमिकता। इस निर्णय का तर्क बहुत सरल था, जापान को बाद मे देखा जा सकता था, लेकिन जर्मनी को नहीं। यदि अमरीका जापान को हराने की दिशा मे ध्यान केन्द्रित करता तो उस बीच जर्मनी रूस और ब्रिटेन को

समाप्त कर सकता था और फिर अमरीका को तीन-चौथाई हिस्से का सामना करना पडता। लेकिन, यदि जर्मनी को हराकर रूस और ब्रिटेन को बचा लिया जाता है तो फिर विजयी मित्र-राष्ट्रों की संयुक्त शक्ति के सामने जापान का पतन सुनिश्चित है। यह योजना स्वीकार की गयी और अन्त में वह सफल भी हुई।

दूसरा निर्णय था युद्ध का एक संयुक्त मोर्चा बनाना . सभी बड़ी फौजी, राजनीतिक, कूटनीतिज्ञ और आर्थिक नीतियों का नियोजन संयुक्त रूप से करना, फौजों और नौसेनाओं को एक ही कमान में रखना। इन सभी बातों की रूपरेखा 'डिस्ट्रोयर-बेसिस डील' और 'लेण्ड-लीज' के समझौतों में तय हो चुकी थी। हालाँकि इन समझौतों को, रूस के बिना सहयोग के ही संयुक्त फौजी प्रमुख के जरिये युद्ध के दौरान में लागू किया गया था, फिर भी अणु बम्ब के सहकारी उत्पादन में इससे अत्यन्त सफलता प्राप्त हुई।

इस प्रकार मित्र-राष्ट्रों ने न केवल अपनी अतुलनीय शक्ति के आधार पर बल्कि इस तथ्य के साथ, जैसा कि रूजवेल्ट ने कहा कि "मानव-जाति का अधिकांश हमारे पक्ष में है और वे एक न्यायपूर्ण उद्देश्य के लिए संघर्ष कर रहे हैं", युद्ध को किसी तरह की निराशा और हतोत्साह के बजाय दृढ़ साहस और विश्वास के साथ लडा।

फौजी और औद्योगिक तैयारियां : युद्ध का अन्तिम निर्णय दो बातों पर निर्भर था: शस्त्रास्त्र तथा उनका संचालन करनेवाले व्यक्ति, क्योंकि जैसा शताब्दियों पहिले फ्रान्सिस बेकन ने कहा था, "प्राचीरयुक्त शहर, भरे हुए शस्त्रागार और भण्डार, श्रेष्ठ नस्ल के घोड़े, युद्ध के रथ, हथियार बनाने के केन्द्र, गोलाबारूद और इसी तरह की वस्तुएं ये सब शेर की खाल में भेड की तरह हैं और वास्तविक वस्तु तो है निष्ठावान एवं बलवान व्यक्ति।" सौभाग्य से स्वतंत्रता के लिए ब्रिटिश और अमरीकी लोगों की निष्ठा सुदृढ थी। और, सौभाग्य से, हालाकि उनके शस्त्रागार और भण्डार, हथियार बनाने के केन्द्र, गोलाबारूद और इसी तरह की वस्तुओं से पहिले से अच्छी तरह सज्जित नहीं थे, फिर भी वे लोग उन सब चीजों के निर्माण के लिए, जिनको आधुनिक युद्ध के लिए विपुल मात्रा में उपलब्ध होना चाहिए, तैयार थे।

इस समय संयुक्त राष्ट्र अमरीका अपने विगत युद्धों की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठतर तरीके से सज्जित था। दो महासागरीय नौसेना निर्माण की तैयारियाँ १९३० के वर्षों से ही आरम्भ हो चुकी थी, और योरोप में युद्ध आरम्भ

होने के बाद विदेशों तथा वाशिंगटन से सामानों के लगातार आर्डर आने के फलस्वरूप अमरीकी उद्योग का काफी हिस्सा युद्ध-सामग्री के उत्पादन में लग चुका था। डेस्ट्रोयर-वेसिस-डील और ग्रीनलैण्ड तथा आइसलैण्ड पर आधिपत्य होने के फलस्वरूप अमरीका को अटलांटिक के बीच में हवाई और नौसैनिक अड्डे स्थापित करने का अवसर प्राप्त हो गया था, लेण्ड-लीज के जरिये मित्र-राष्ट्रों को न केवल अत्यावश्यक भोजन और युद्ध की सामग्री की पूर्ति की गयी, बल्कि अमरीकी फैक्टरियों को युद्ध-सामग्री के उत्पादन में व्यस्त कर दिया गया। शांतिकालीन भर्ती ने, जिसे १९४० में लागू किया गया था और जिसे अगले वर्ष फिर से लागू किया गया था, अधिकारियों और फौजी सिपाहियों की लगभग १५ लाख सेना तैयार कर दी। इसके अलावा अमरीका और ब्रिटेन ने वैज्ञानिक गुप्त जानकारियों और प्राविधिक ज्ञान का प्रत्यावर्तन कर लिया था और अणुअस्त्र तथा रडार जैसे युद्ध के लिए उपयोगी आविष्कारों में सहयोग प्रदान कर रहे थे।

इस दृष्टि से अमरीका पर वास्तविक युद्ध का प्रभाव अचानक नहीं पड़ा, और न उसने अमरीकी अर्थ-व्यवस्था में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन किया, जैसा कि १८६१ और १९१७ में हुआ था। युद्ध के फलस्वरूप उसके चालू कार्यक्रम में एक तीव्रता जरूर आ गयी थी। पहिला कार्य था, युद्ध-कालीन आवश्यकतानुसार सशस्त्र-सेवाओं का निर्माण और उनको अत्यन्त आधुनिक युद्ध के हथियारों से सज्जित करना। इस कार्य को बड़ी शीघ्रता और कार्यक्षमता के साथ किया गया। १८ से ४५ वर्ष के सभी व्यक्तियों की भर्ती करने के लिए आदेश लागू किया गया और युद्ध के दौरान में लगभग तीन करोड़ दस लाख लोगों ने अपने नाम दर्ज कराये, एक करोड़ सत्तर लाख व्यक्तियों की परीक्षा की गयी और लगभग एक करोड़ व्यक्तियों को सैनिक सेवा में लिया गया। ऐच्छिक रूप से भर्ती हुए लोगों की गणना के अनुसार लगभग १५,१४५,११५ सशस्त्र स्त्री-पुरुषों ने पर्ल-हार्बर और विजयदिवस के मध्य के दिनों में कार्य किया, लगभग १ करोड़ १४ लाख लोगों ने सैनिक फौज में, लगभग ३९ लाख ने नौसेना में और ६ लाख लोगों ने समुद्र तथा १ लाख ५० हजार लोगों ने तटरक्षकों के रूप में सेवा की। इस विस्तृत फौज के आवास, भोजन, प्रशिक्षण, साधन-सामग्री, परिवहन और घर से हजारों मील की दूरी पर उनकी शक्ति, स्वास्थ्य, कार्यक्षमता और निष्ठा को उच्च कोटि का बनाये रखना अमरीका के लिए एक अभूतपूर्व कार्य था।

प्रथम महायुद्ध मे अमरीका ने लगभग २० लाख सैनिको को फ्रास भेजा था; लेकिन वे अपने हथियारों और साधन-सामग्री के लिए अधिकाश रूप से ब्रिटेन और फ्रान्स पर निर्भर थे। द्वितीय महायुद्ध मे अमरीका को उससे दुगुनी सख्या मे विश्व के विभिन्न युद्ध-मोर्चों पर, जिनमे अनेक शत्रुओ के हाथ में थे, अपने सैनिकों को भेजना पडा और उसको न केवल इन फौजों की देखरेख और सब साधनों से सज्जित रखना पडा, बल्कि ब्रिटेन, रूस, चीन, स्वतत्र फ्रास तथा अन्य देशों की फौजों और वायुसेनाओ तथा नागरिक अर्थव्यवस्था मे सहायता भी करनी पडी। इन सब कार्यों के लिए न केवल जनशक्ति और हथियारों की आवश्यकता थी; बल्कि सुदूर देशों को पूर्तिक्रम जारी रखने के लिए एक विशाल व्यापारी जहाजी बेडे, शिविर, सडके, बदरगाह, हवाई अड्डे और पाईप-लाइनें बनाने के लिए इंजीनियरिंग-सम्बन्धी सुविधाओ, सैनिकों तथा नाविकों को नये नये रोगों से बचाने तथा सक्रामक रोगों के निरोध के लिए एक चिकित्सा-दल और अन्त मे सात समुद्रों पर नियन्त्रण करनेवाले सुदृढ नौसैनिक बेडे तथा शत्रु का सामना करने के लिए कारगर हवाई-बेडे की आवश्यकता थी।

सौभाग्य से अमरीका की उत्पादन-क्षमता सभी शत्रु-राष्ट्रो की सयुक्त उत्पादन-क्षमता से अधिक थी और उसने अपने दायित्व को भली भॉति निभाया। राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट ने अमरीका को 'जनतत्र का आगार' बताया और राष्ट्र ने तदनुसार कार्य भी किया। समस्त जनता की अगाध शक्ति तत्काल युद्ध-उत्पादन मे लग गयी और उसकी सभी प्रवृत्तियॉ जैसे उत्पादन, खेती, खनन, परिवहन, सचार, वित्त और यहॉ तक कि विज्ञान और शिक्षा को भी कुछ हद तक नये और विस्तृत सरकारी नियन्त्रण मे लाया गया। मैंगनीज और मिश्रित रबड के उत्पादन-जैसे विशाल नये उद्योगों की तत्काल स्थापना की गयी और हवाई जहाजों तथा जलयानों के निर्माण-उद्योगों मे काफी विस्तार किया गया। प्रशान्त-महासागर के युद्ध की सभावना से सुदूर पश्चिम ने औद्योगिक दिशा और आबादी की वृद्धि मे अभूतपूर्व प्रगति की। औद्योगिक प्रयोजनों से मशीनों के निर्माण एवं उनको विकसित करने की दिशा मे सरकार ने काफी रकम व्यय की और राष्ट्रीय सरकार अनेक छोटे-छोटे प्रतिष्ठानों के साथ सकटकालीन जहाजी-यार्ड और रबड तथा एल्यूमीनियम के उत्पादनो की मालिक बन गयी। विश्वविद्यालयों तथा औद्योगिक अनुसन्धान प्रयोगशालाओं को नयी पद्धतियों की खोज

करने और रडार, सोलार और अणुबम की खोज और शोध का आदेश दिया गया।

रोजगार की दिशा मे लगभग ३० लाख अतिरिक्त महिलाओं ने कार्य करना आरम्भ कर दिया। कामगारों ने हडतालों को छोड कर, अधिक समय कार्य करना शुरू किया और कामगारो, व्यवस्थापको, पूँजीपतियो तथा सरकार के सहयोग से इस गति और उत्साह के साथ कार्य किया गया कि उद्योग ने मित्रो और शत्रुओ की आशाओ से अधिक सभी उत्पादन-रिकाडों को तोड दिया।

जुलाई १९४० से अगस्त १९४५ मे जापान की पराजय होने तक के पाच वर्षो के दौरान मे अमरीकी फैक्टरियो और जहाज-याडो ने लगभग तीन लाख फौजी हवाई जहाज, ८६ हजार टैंक, २० लाख मशीनगनें, सभी प्रकार के ७१ हजार नौसैनिक जहाज, ५५० लाख टन व्यापारी जहाज, तेल की अधिक नालियॉ और फौलाद और एल्यूमीनियम का अधिक टनो मे अभूतपूर्व उत्पादन किया। न केवल अपनी युद्ध-आवश्यकता की पूर्ति के लिए, बल्कि ब्रिटेन और कुछ हद तक रूस की पूर्ति के लिए भी उन्होंने हवाई-जहाजो, टैंको, जीपो, ट्रको, फौजी टेलीफोनो, रबड के टायरो, रडार-सेटो, एल्यूमीनियम की पट्टियो और हजारो अन्य वस्तुओं का निर्माण किया। इस प्रकार से ब्रिटेन को हजारो हवाई जहाज, १ लाख से भी अधिक ट्रक और जीपे, ६० लाख टन इस्पात और लगभग अरबों डालर का फौजी सामान और रूस को ४ लाख ट्रक, ५० हजार जीपे, ७ हजार टैंक और ४ लाख २० हजार टन एल्यूमीनियम भेजा गया। युद्ध की समाप्ति तक लैण्ड-लीज हिसाब के अनुसार अमरीका ने अरबों डालर मूल्य की खाद्यान्न और युद्धसामग्री की पूर्ति की, लैण्ड लीज के विपरीत खातो मे प्रमुख रूप से सेवाओं और सुविधाओ के रूप मे लगभग अरब डालर निर्दिष्ट किये गये थे।

सबसे उल्लेखनीय सफलता वास्तव मे हवाई जहाजो और समुद्री जहाजों के निर्माण मे हुई। जर्मन वायुसेनापति हरमन गोअरिंग ने कहा था, "अमरीकी हवाई जहाजो का निर्माण नहीं कर सकते हैं, वे केवल बिजली के बर्फ के डिब्बे और रेजर ब्लेड ही बना सकते हैं।' लेकिन, उनकी अनेक भविष्यवाणियो के साथ यह भी असत्य प्रमाणित हुई। हालॉकि हवाई जहाजो के उत्पादन की क्रिया मन्द गति से आरम्भ हुई, लेकिन एक बार उसके आरम्भ हो जाने पर उसने सभी अपेक्षाओ को मात दे दी। पर्ल-हार्बर पर आक्रमण के पहिले के १८ महीनो मे पुर्जे एकत्रित करने वाले केन्द्रो से केवल २३,००० सैनिक हवाई

जहाज बन कर बाहर आये थे, लेकिन १९४२ मे इनका उत्पादन ४८ हजार, १९४३ मे ८६ हजार और १९४४ मे ९६ हजार से भी अधिक हो गया। विलोरन या बाल्टीमोर के बाहर ग्लिन मार्टीन कारखाने मे या दक्षिणी करोलिना मे डगलस-कारखाने मे तैयार होनेवाले विमानो की वार्षिक सख्या मे तीव्र गति से वृद्धि हुई। उनकी रूपरेखा मे काफी परिवर्तन किये गये। उनमे से अत्यन्त महत्वपूर्ण विशाल बमबाज फ्लाईंग-फोर्ट्रेस (बी-१७) लिबरेटर (बी-२४), और सुपर-फोर्ट्रेस (बी-२९), गोताखोर बमबाज और परिवहन के सी-४७ हवाई जहाज विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। अमरीकी और ब्रिटिश उत्पादन के फलस्वरूप १९४४ तक योरोप और प्रशान्त-महासागर के लिए मित्रराष्ट्रों की हवाई शक्ति अत्यन्त सुदृढ़ हो चुकी थी। उस वर्ष के अन्त मे हवाई जहाजों के निर्माण-उद्योग मे २५ लाख कर्मचारियो से भी अधिक लोग कार्य कर रहे थे और लगभग २० अरब डालर के विमान तैयार करने मे लगे थे। देश के एक विशालतम उद्योगों मे इसकी गणना की जाती थी। किटी हॉक के राईट-ब्रदर्स के समय का अमरीका अब इस प्रगति प्रतिमान तक आ पहुँचा था।

जहाज-निर्माण की दिशा मे भी इतनी ही उल्लेखनीय सफलता रही। वास्तव मे इसी उद्योग पर काफी हद तक युद्ध का परिणाम भी निर्भर था। १९४१ और १९४२ की अवधि मे पनडुब्बी जहाजों ने अटलान्टिक महासागरीय जहाजों को भारी क्षति पहुंचायी और कुछ समय तक तो यह मालूम होता था कि ब्रिटेन को पृथक करने तथा अमरीका को युरोप के किसी भी हिस्से में न पहुँचने देने की हिटलर की योजना सफल हो जायेगी। १९४२ तक मित्र-राष्ट्र अपनी हानि की पूर्ति नही कर पाये थे। बड़े आकारों मे जहाजों को बना कर, विजली के जरिये वेल्डिग कर तथा अन्य सुधारों के जरिये १४ हजार टन का फ्रेटर बनाने मे जहाँ महीनो लगते थे, वह अब हफ्तो का काम बन गया था। इस प्रकार का प्रथम लिबर्टी जहाज, जिसका नाम पेट्रिक हेनरी था, सितम्बर १९४१ मे उतारा गया। पर्ल-हार्बर पर आक्रमण के पश्चात् अमरीकी शिपयार्डो ने सभी प्रकार के व्यापारिक जहाजों जैसे लिबर्टी, विक्टरी, टैंकर और अन्य प्रकार के जहाजों का निर्माण किया, जिनका कुल वजन २७० लाख टन था। इनके साथ ब्रिटिश तथा मित्र-राष्ट्रों के शिपयार्डों की काफी सहायता के फलस्वरूप अटलाटिक के युद्ध मे मित्र राष्ट्रों की समुद्री विजय का आश्वासन मिल गया था। ब्रिटेन को जीवित रखना तथा अन्त मे योरोप पर आक्रमण करना भी संभव हो गया था।

युद्ध को जीतने मे श्रम तथा पूँजी ने अपना भरपूर योग दिया। पर्ल-हार्बर पर आक्रमण के तत्काल बाद राष्ट्राध्यक्ष ने कामगारो तथा व्यवस्थापको की एक बैठक आमन्त्रित की, जिसमे युद्ध की समाप्ति तक हडतालें तथा तालेबन्दी न करने की शपथें ली गयी; कामगारों के दो विशाल सगठन एसोसिएटेड फेडरेशन आफ लेबर और सी. आय. ओ. ने इस आधार पर स्वीकार किया कि जीवनोपयोगी चीजो के दामो को भी नीचे ही रखा जायगा। फिर भी तेजी से बढती हुई कीमतो ने हाल ही मे स्थापित युद्ध कामगार मण्डल (वार लेबर बोर्ड) को लिटिल स्टील फार्मूला लागू करने को बाध्य किया, जिसके फलस्वरूप बढ़ती हुई कीमतो का सामना करने के लिए वेतन मे लगभग १५ प्रतिशत वृद्धि प्रस्तावित की गयी थी। कामगारो ने कुछ न्याय के साथ शिकायत भी की कि इतनी वृद्धि पर्याप्त नही है और व्यापारी वर्ग तथा किसानो को युद्ध से काफी लाभ हो रहा है। हालॉकि कामगारो की अपेक्षानुसार वेतनो मे वृद्धि नही हुई, फिर भी सम्पूर्ण रोजगार और अधिक समय कार्य के उदार भत्तो के फलस्वरूप कामगारो की आमदनी पूर्वापेक्षा काफी अधिक रही और कामगारों के सगठनों की स्थिति भी पहिले की अपेक्षा काफी मजबूत रही। बडे-बडे सघो ने बडी वफादारी के साथ हडताल न करने की शपथ का पालन किया, केवल कोयले की खानो मे ही कामगारो को गम्भीर कठिनाइयॉ उत्पन्न हुई, जहा पर कि जान एल. लुइ ने अपने युनाइटेड माइन कामगारो से चार बार हडताल करवायी; लेकिन इन अवरोधो के बावजूद भी कोयले का उत्पादन काफी अधिक रहा।

युद्ध के समय मे किसानो ने भी उत्पादन मे कमाल दिखाया तथा उनके मवेशियो, सुअरों तथा मुर्गियो का भी उत्पादन काफी रहा। कामगारो के अभाव और खेती की मशीनो की अपर्याप्त पूर्ति होने के बावजूद किसानो ने अपने कृषि उत्पादनों के सभी रिकार्डो को तोड दिया। १९३९ और १९४४ के बीच अमरीकी खेतों की उत्पादन क्षमता मे एक चौथाई की वृद्धि हुई और १९४४ मे किसानो ने १९३६ की अपेक्षा ४७०० लाख बुशल अधिक मक्का, ३२४० लाख बुशल अधिक गेहूँ, ५,००० लाख पौण्ड अधिक चावल पैदा किये। मवेशियो, सुअरो तथा दूध-उत्पादन की वृद्धि भी अधिक आश्चर्यकारक रही।

युद्ध-सामग्री के उत्पादन की ओर ध्यान केद्रित करने के फलस्वरूप नागरिक अर्थव्यवस्था अस्तव्यस्त हो गयी; फिर भी युद्ध मे भाग लेनेवाले अन्य बडे राष्ट्रों की अपेक्षा अमरीका को कम परेशानी का सामना करना पड़ा।

ब्रिटेन और रूस की तरह यहॉ सम्पूर्ण स्त्री-पुरुषो की जनशक्ति का उपयोग नही किया गया था, और न राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था मे भारी नियन्त्रण लागू किये और न आवश्यक वस्तुओं का ही भारी अभाव हुआ था। सरकार ने खाद्य-पदार्थों की और उपभोक्ता सामानो की महत्वपूर्ण श्रेणियो का राशन कर दिया था; फिर भी अमरीका के लोगों ने सामान्य रूप से पहिले की अपेक्षा अच्छा भोजन किया था और आवासो के अभाव से उत्पन्न होनेवाली परेशानी के सिवाय अच्छी तरह रहते भी थे। अभूतपूर्व पैमाने पर, आय कर और निगम कर मे वृद्धि हुई, लेकिन लाभ पर कोई सीमा निर्धारित नही की गयी थी; और १९४० और १९४५ के बीच कराधान के बाद बची हुई राष्ट्रीय आय दुगुनी हो गयी। क्लर्कों तथा नौकरीपेशा लोगो को छोड कर अमरीकी समाज के प्रत्येक समुदाय—कामगार, किसान, व्यापारी तथा पूँजी लगानेवाले वर्ग—को अभूतपूर्व समृद्धि हुई। राष्ट्रीय कर्ज २५० लाख डालर तक पहुँच चुका था; लेकिन सभी वर्गों में लोकप्रिय वर्तमान आर्थिक सिद्धान्तानुसार कर्ज की अदायगी का दायित्व बाद की पीढ़ियो को सौप दिया गया। राष्ट्रीय कर्ज अमरीकी इतिहास मे सबसे अधिक था।

प्रशान्त महासागर की सुरक्षा : पर्ल-हार्बर तथा फिलिपाइन के अधिकाश हवाई अड्डों का ध्वस्त होना और ब्रिटिश 'युद्धपोत' रिपल्स और प्रिंस आफ वेल्स का डूबना निस्सन्देह भारी क्षति थी। लेकिन, इससे भी भयानक क्षति आगे हुई। दो महीने के अन्दर ही जापान ने हिंद चीन, थाईलैण्ड, मलाया प्रायद्वीप को रौंध कर सिंगापुर पर कब्जा कर लिया। मलाया के आसपास सुमात्रा, जावा, बोर्नियो, सेलीबीज और -टिमोर की पंक्तियों को भेद कर न्यू गायना के पूर्व रात्राउल पर कब्जा कर लिया था, और सोलोमन-द्वीप में घुस कर आस्ट्रेलिया को धमकी दी थी। जापान की दूसरी फौजों ने बर्मा को चीर कर, चीन से अलग कर दिया और भारत की सीमा पर आ डटी थी। पर्ल हार्बर के आक्रमण के तीन दिन पश्चात् जापानियो ने फिलिपाइन के लुजोन स्थान पर धावा बोला और जनवरी तक उन्होंने मनीला पर आधिपत्य कर लिया और चार महीने बाद उन्होंने बाटान पर अमरीकी और फिलिपीनों को परास्त कर दिया; कोरोगिडोर के द्वीप दुर्ग पर आक्रमण कर सारे फिलिपाइन पर कब्जा कर लिया। १९४२ की वसन्त तक जापानी रूस के एक बडे भाग के मालिक बन गये थे; पश्चिमी प्रशान्त महासागर मे उनका आतक था और हिन्देशिया के तेल, रबड़ और टीन की विपुल

सम्पत्ति तथा अपार जनशक्ति पर उनका अधिकार था। इतिहास मे किसी भी विजेता ने इतनी महान विजयो को इतनी कम लागत पर प्राप्त नही किया था।

फिर भी, प्रशान्त-महासागर मे अमरीकी, ब्रिटिश और आस्ट्रेलिया की फौजो का जमाव शीघ्र होने लगा। हालॉकि प्रशान्त-महासागर की लडाकू नौसेना ध्वस्त हो चुकी थी, लेकिन अन्त मे दो युद्धपोतो को छोड कर अन्य सभी जहाजो की रक्षा कर ली गयी और उन्होने बाद के युद्ध मे भाग लिया। लेकिन, बेडे के अधिकाश विध्वस और तीन बडे युद्धवाहक जहाज बिलकुल दुरुस्त थे। इनके साथ नौसैनिक शक्ति तीव्रता के साथ बढ़ी और हवाई, आस्ट्रेलिया तथा आसपास के द्वीपो के हवाई-अड्डे अब मित्र राष्ट्रो के कब्जे मे थे। जापानियो के आक्रमण को लका की ओर ढकेल कर और बर्मा की सीमा पर मोर्चाबन्दी कर, अग्रेजो ने भारत के अपने केन्द्रीय मोर्चे को बचा लिया। जनरल मेकआर्थर ने, अपना सदर मुकाम आस्ट्रेलिया मे स्थापित किया और प्रत्याक्रमण के लिए सैनिको और भूमि और हवाई सेना की तैयारी करने लगे।

अमरीकी युद्ध पैंतरे के अनुसार तब तक आक्रमण करना बुद्धिमत्तापूर्ण न था जब तक कि उनके पास उत्तरी गायना के उत्तरी किनारे से हालमेहरा और दक्षिणी फिलीपाईन तक, और सोलोमन द्वीपो के उत्तरी क्षेत्रो, गिलबर्ट्स और मार्शल्स मरियानास से, नौसैनिक आक्रमण करने तथा बोनिन द्वीपो से जापान पर बम गिराने की सुविधाजनक दूरी तक आक्रमण करने की सर्वांगीण पर्याप्त शक्ति एकत्रित नहीं हो जाती। लेकिन, इस प्रकार के आक्रमण करने के लिए अमरीका को सैनिक, नौसैनिक और वायुसैनिक शक्ति को पर्याप्त रूप से एकत्र करने मे लगभग एक वर्ष की देर लगी।

इसी बीच जापानियो ने प्रशान्त-महासागर मे मित्र-राष्ट्रो की बची हुई शक्ति को समाप्त करने का निश्चय किया। जापानियो के एक नौसेनापति के कथनानुसार अब जापान को 'विजय का उन्माद' हो गया था। मई १९४२ मे, उन्होने आस्ट्रेलिया के उत्तर मे कोरल सागर के युद्ध मे अमरीकी नौसैनिक बेडे पर आक्रमण कर दिया। यह सघर्ष अपनी रूपरेखा मे बडा अद्वितीय था: एडमिरल किग के अनुसार "नौसैनिक इतिहास मे यह पहिला नौसैनिक युद्ध था, जिसमे सतह के जहाजो ने एक भी तोप नहीं दागी थी, और उसने भविष्य के लिए परम्परा निर्धारित कर दी। सारी लडाई वायुयान-वाहक पोत के हवाई जहाजो ने की।" जापानियो ने 'लेक्सिगटन' नाम के वायुयान-वाहक (केरियर), एक डिस्ट्रायर और एक टेकर को डुबो दिया। अमरीकी हवाई जहाजो ने जापानियो

के दो केरियरों को हानि पहुँचायी, शोहो केरियर तथा अनेक अन्य जहाजों को डुबो दिया। कुछ हफ्ते बाद मिडवे का (जून ४-६) निर्णायक युद्ध हुआ। ४ जून को अमरीकी हवाई जहाजों ने देखा कि, लगभग ५० परिवहन और ३० युद्धपोतो का, जिनमे ४ केरियर शामिल थे, जापानियों का एक नौसैनिक बेडा मिडवे-स्थित अमरीकी हवाई और नौसैनिक बेडे की ओर बढ़ रहा है। मिडवे हवाई द्वीप से लगभग १५०० मील पश्चिम मे स्थित एक छोटा द्वीप है। जैसे ही जापानियों के हवाई जहाजों ने मिडवे पर बम बरसाना आरम्भ किया, अमरीका के केरियर-स्थित हवाई जहाजों ने जापानियो के बेडे पर प्रत्याक्रमण कर उसके चारों केरियर, दो भारी क्रूजर और तीन डिस्ट्रायरों को डुबा दिया और तीन युद्धपोतों को ध्वस्त कर दिया। दूसरे दिन जापानी बेडा भाग खडा हुआ; लेकिन गोताखोर बमबाजों ने उनका पीछा किया और उस ध्वस्त बेडे को और भी हानि पहुँचायी। जापानियों की यह पहिली बडी नौसैनिक हार थी और अब उनको अपने भविष्य का आभास मिल चुका था। प्रशान्त-महासागरीय युद्ध का भी अब पासा पलट गया। हालाँकि अमरीका अब भी आक्रमण करने के लिए तैयार नही था; लेकिन जापानियो की आक्रमण करने की प्रवृत्ति पर अब निश्चय रूप से अंकुश लग गया था।

फिर भी जापानी यह बात मानने को तैयार नही थे कि उन पर अंकुश लग चुका है। न्यू गायना की पूर्वी पट्टी स्थित मित्र-राष्ट्रो की छोटी टुकडियो पर आक्रमण करने के उद्देश्य से वे सोलोमन् के नीचे क्षेत्रो मे गये और वहाँ टुलागी तथा ग्वाडल-केनाल मे हवाई अड्डे बनाने लगे। ७ अगस्त को अमरीकी सुरगधारी जहाजों की छोटी फौज ग्वाडल-केनाल पर उतरी और उसने वहाँ के हवाई अड्डे पर कब्जा कर लिया और उसका नाम हैण्डरसन-फील्ड रख दिया। इस पर जापानियों की प्रतिक्रिया बहुत तीव्र हुई। दो दिन बाद जापानियों के एक क्रूजर ने अचानक आक्रमण कर दिया और फौजें उतारने की सुरक्षा मे खडी अमरीकी और आस्ट्रेलिया के जहाजी बेडे को नष्ट कर दिया। सावो द्वीप की लडाई से ग्वाडल केनाल के लिए ६ महीने तक युद्ध जारी रहा। अमरीका के युद्ध इतिहास मे यह एक बडा भयानक और स्मरणीय युद्ध था। इस अभियान मे अनेक बडी नौसेनाओ का युद्ध हुआ, लगभग एक दर्जन स्थल युद्ध हुए और लगभग रोजाना वायुयानों की भिड़न्त होती थी। नवम्बर १९४२ के मध्य में निर्णायक कदम उठाये गये। ग्वाडल केनाल के नौसैनिक युद्ध में शत्रु के दो युद्ध-पोत, एक क्रूजर, दो विध्वसक और १० परिवहन-जहाज नष्ट

कर दिये गये। अभी दो महीने का भयानक युद्ध शेप था· लेकिन फरवरी १९४३ तक जापानियो ने केनाल को खाली कर दिया था और इसके बाद दक्षिण प्रशान्त महासागर मे आक्रमण करने का दॉव अमरीकियो के हाथ मे आ गया।

वाशिंगटन के प्रशासन की दूरदर्शिता के फलस्वरूप १९३८-४१ में ऐसे अनेक नये कदम उठाये गये थे, जिनके अन्तर्गत जहाज-निर्माण और उनकी मरम्मत की दिशा मे भारी सफलता मिली और १९४३ तक प्रशान्त महासागर मे अमरीकी नौसैनिक वेडे की धाक जम गयी। इस नयी स्थिति का एक नमूना यह है कि, कोहरे से ढके एल्यूशियन मे किये गये आक्रमण के फलस्वरूप जापानियो को मई मे अट्टू से और आगामी अगस्त मे किसका से भगा दिया गया। इन विजयो के फलस्वरूप अलास्का के मार्ग से आक्रमण होने की सभी समावनाए समाप्त हो गयीं। दूसरा विस्मार्क सागर (२ मार्च १९४३) का युद्ध था, जिसमे जापानियो के एक योग्यतम फौजी नेता एडमिरल यमामोटो तथा एक सपूर्ण सुरक्षा फौज का सफाया हो गया। तीसरा उदाहरण था, केन्द्रीय सोलोमंस मे एक सफल आक्रमण तथा रावाउल मे जापानियो के अड्डे पर लगातार ध्वसात्मक हमले, जिनका उद्देश्य था उस क्षेत्र मे कार्यरत मैकआर्थर की फौजो के मार्ग मे किसी भी प्रकार का अवरोध न उत्पन्न होने देना। इन सब घटनाओ ने मित्र राष्ट्रो के एक नये व विशाल आक्रमण के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया और जिसकी पराकाष्ठा थी फिलिपाइंस की पुनर्विजय तथा आयवो जिमा और ओकीनावा पर कब्जा।

अटलांटिक की लड़ाई : इस प्रकार अमरीकियो के भारी प्रयत्नो तथा ब्रिटिश उपनिवेशो और डचो की सहायता से प्रशान्त महासागरीय पराजय से बचा जा सका और विजय का मार्ग प्रशस्त कर दिया गया। इसी बीच योरोपीय मोर्चे पर भी युद्ध मित्र-राष्ट्रो के पक्ष मे चल रहा था। जैसाकि हमने पहिले देखा कि युद्ध-सम्बन्धी बुनियादी निर्णय यह था कि जापान को तब तक न छेडा जाये, जब तक कि जर्मनी को समाप्त न कर दिया जाये। लेकिन, नाज़ियों या उनके इटली के मित्रो पर अमरीका या ब्रिटेन का नियन्त्रण होने के पहिले उनको दूरी तक मार करने की भारी समस्या का समाधान करना जरूरी था; क्योंकि जर्मनी पर अमरीका से तो आक्रमण किया नहीं जा सकता था। ब्रिटेन से भी तब तक आक्रमण सभव नहीं था, जबतक कि अमरीका ब्रिटेन को रसद, जहाज, हवाई जहाज, और युद्ध-सम्बन्धी अन्य सामग्री की लगातार पूर्ति न

करता रहे और इस प्रकार से उसे युद्ध मोर्चे का अपना एक अड्डा न बना ले। इसलिए, पहली समस्या थी—अटलांटिक पर नियंत्रण करना।

अटलांटिक की लड़ाई, जिस पर विजय और पराजय अवलंबित थी, वास्तव में पर्ल-हार्बर के आक्रमण के पहिले से ही अच्छी तरह आरम्भ हो चुकी थी। यहाँ के अड्डों में परिवर्तन करना शायद एक दूरदर्शी निर्णय था। अटलांटिक और केरिबियन के अड्डों में पुराने विध्वंसकों के स्थान पर नये विध्वंसक तैनात किये गये और ग्रीनलैण्ड तथा आइसलैण्ड के अड्डों पर भी कब्जा कर लिया गया। यहां तक कि वास्तविक युद्ध आरम्भ होने के तीन महीने पहिले ही लड़ाई की गर्मी शुरू हो गयी थी; जबकि राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट ने, जब यू. एस. एस. ग्रीर पर जर्मन पनडुब्बी ने आक्रमण किया, तब अमरीकी नौसेना को देखते ही गोली चलाने का आदेश दिया था। इस तरह जर्मनों की पनडुब्बियों, सतह आक्रमणों और सुरंग बिछानेवाले जहाजों तथा ब्रिटिश और अमरीकी नौसेना और वायुसेना में युद्ध आरम्भ हो चुका था, जो युद्ध के अन्त तक जारी रहा। हालाँकि अन्तिम विजय मित्र-राष्ट्रों की ही रही, लेकिन उसका अन्तर काफी कम रहा। इस संघर्ष के प्राथमिक मोर्चे, जो १९४१ से १९४३ तक लड़े गये, इतिहास के निर्णायक संघर्षों में गिने जायेंगे।

उत्तरी और दक्षिणी अटलांटिक, अटलांटिक के किनारों के क्षेत्रों से और यहाँ तक कि केरीबियन सागर से सामूहिक रूप से आनेवाली जर्मन पनडुब्बियों को डुबाना बड़ा कठिन कार्य था। अंग्रेज़ों ने उनको फ्रांस, जर्मनी और नार्वे के किनारों पर ही डुबा देने के प्रयत्न किये या उनके समूहों पर सेंट नज़ारे, ब्रेस्ट, ब्रिमेरहेविन और अन्य बन्दरगाहों पर ही बम गिराये; लेकिन इससे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। १९४१ और १९४२ में पनडुब्बियों और इंग्लैण्ड के निकट आनेवाली शत्रुओं की सुरंग बिछानेवाली जहाजों की काफी हानि हुई। १९४० के अन्त में, लगभग ५० लाख टन के जहाज डूब गये थे; १९४१ में पनडुब्बियों और सुरंगों ने और भी ४० लाख टन के जहाज डुबा दिये थे। हालाँकि अमरीका का युद्ध में पदार्पण करने के फलस्वरूप पन-डुब्बियों का खतरा बढ़ गया था, लेकिन जर्मनों की हानि होना भी सुनिश्चित हो गया था। १९४२ के प्रथम चार महीनों में केवल उत्तर अटलांटिक में शत्रु-पनडुब्बियों ने ८२ जहाज डुबा दिये, जिनका वजन ५ लाख टन था; इसके बाद उन्होंने अपना आक्रमण गल्फ स्ट्रीम और केरीबियन की ओर किया और वहाँ लगभग साढ़े सात लाख टन के १४२ जहाज डुबा दिये। इस ६ महीने

की अवधि मे मित्र-राष्ट्रों ने केवल २० पनडुब्बियॉ डुबायीं, जिनका निर्माण एक महीने से भी कम अवधि मे किया जा सकता था।

पनडुब्बियो की लडाई का विवरण द्वितीय महायुद्ध मे अमरीकी नौसेना के इतिहासकार एस. ई मोरिसन ने निम्न प्रकार लिखा है :

सयुक्त राज्य अमरीका के किनारे के रक्षक कटर 'स्पेन्सर' और 'केम्पवेल,' कनाडा और ब्रिटेन के पॉच कारवेट तथा पोलेण्ड के एक विध्वसक के साथ फरवरी माह मे पश्चिम की ओर एक रक्षक वेडे को (कान्वाय) लेकर आगे बढे। इस वेडे के कमाण्डर, सयुक्त नौसेना के केप्टन हेनमन थे। वेडे की गति को तीव्र वायु ने ४ नाट कम कर दिया था, फिर भी जहाज के टेकरो से रक्षक जहाजो की तेल की आवश्यकता को तूफानी समुद्र मे ही पूर्ति की। २१ फरवरी को इग्लैण्ड से उड कर आनेवाले दो 'कटरो' और एक लिबरेटर ने एक पनडुब्बी को डुबा दिया। आगामी तीन दिनो के दौरान मे जब यह वेडा हवाई सरक्षण के दायरे से बाहर था, उस पर पनडुब्बियो के एक विशाल झुण्ड ने ६ बार आक्रमण किया और पॉच जहाजो को डुबा दिया। पोलैण्ड के विध्वसक बर्जा ने एक पनडुब्बी पर डेप्थचार्ज मारा जो १३० फैदम पानी के अन्दर थी, इसके बाद उसके कमाण्डर ने सभी टैंको को उडा दिया, एक तिरछे कोण से जैसे ही पनडुब्बी पानी के ऊपर आयी केम्पवेल ने तोप से एक गोला दाग कर उसे डुबा दिया। शेष पनडुब्बियो का झुण्ड और दो दिनो तक वेडे पर आक्रमण करता रहा, लेकिन सुरक्षा वेडे की शक्ति और कुशलता से जहाज आगे बढते गये और केवल एक ही जहाज की क्षति हुई। न्यू फाउण्डलैण्ड के सुरक्षा-घटक को कनाडा की नौसेना ने विश्राम दिया। लेकिन, यह वेडा अर्जेन्टिना के सदिग्ध बन्दरगाह मे रुका ही था कि इसको पूर्व की ओर जानेवाली ५६ जहाजो का एक दूसरा वेडा ले जाने का आदेश मिला। भयंकर बर्फीली पछुआ हवाओं का ९ दिनो तक इस वेडे को सामना करना पडा। हालॉकि सुरक्षा वेडा अब काफी कुशल बन गया था और व्यापारी वेडे ने भी बडे साहस और अनुशासन का परिचय दिया, फिर भी भयकर समुद्र मे ६ जहाज इस प्रकार नष्ट हो गये कि उनके एक भी व्यक्ति को बचाया नहीं जा सका। (मोरीसन और कोमेगर द्वारा लिखित ग्रोथ आफ दि अमेरिकन रिपब्लिक, खण्ड २, पृष्ठ ७१४, ओक्सफोर्ड-युनिवर्सिटी-प्रेस)

जर्मनो के आक्रमण के कारण ही रूस ने ब्रिटेन, और अमरीका से सहायता मॉगनी आरम्भ की थी और उन्होंने पश्चिमी मित्र राष्ट्रों के नाते उन मॉगो को

यथासाध्य पूरा किया। १९४३ मे फारस की खाडी का मार्ग खुलने तक रूस को समस्त युद्ध का सामान आर्कटिक को पार कर मुरमेन्स्क और आर्केजिल बन्दरगाहों को जाता था। जर्मन हवाई जहाजो, तथा नोर्वे के समुद्र स्थित पनडुब्बियो और क्रूजरों के आक्रमणों से भयास्पद रसद पूर्ति का यह एक अत्यधिक खतरनाक मार्ग था; १९४२ मे इस मार्ग से जानेवाले एक चौथाई जहाजो को नष्ट किया जा चुका था। फिर भी, उस वर्ष रसद-पूर्ति के तेरह वेडे बर्फ, कोहरे और नाजियों के आक्रमण का सामना करते हुए रूस के उत्तरी बन्दरगाहो पर पहुँच चुके थे।

धीरे-धीरे धरातल और पानी के नीचे जहाजों के इस युद्ध और सदिग्ध युद्ध मे मित्र-राष्ट्रो का प्रभाव बढता गया। उन्होने खतरनाक सागर को पार करने की दृष्टि से अपने व्यापारी और फौजी जहाजो की सुरक्षा के लिए सुरक्षा वेडों की स्थापना की और क्रूजरो, विध्वसको, कोरवेटो तथा अन्य युद्ध-पोतो से सुरक्षित हजारों जहाजो को पार ले जाया गया। इनमे से लगभग एक दर्जन जहाज ही डूबे थे। इसके अलावा मित्र-राष्ट्रो ने न्यू फाउण्डलैण्ड, आइसलैण्ड, ब्राजील, बरमुडा, एशेन्शन द्वीप और अजोर्स मे हवाई गस्तो की व्यवस्था की थी। पनडुब्बियों का पता लगाने के लिए, उन्होंने सोनोर का तथा उनको डुबाने के लिए डेथ-चार्ज का उपयोग किया, उन्होने लगभग एक हजार जहाजो को सुरगों को साफ करने के कार्य मे लगाया और अपने जहाजों को 'डिगोसिग' लोहे से सज्जित किया, जिससे कि सुरगो या पनडुब्बियों की सूचना मिल सके। इस तरह के कई तरीको से क्षति काफी कम हो गयी और १९४३ की ग्रीष्म तक मित्र राष्ट्र औसतन प्रतिदिन १ पनडुब्बी डुबाने लगे।

लेकिन, अभी और भी सकट शेष था। हालाँकि जर्मनों के औद्योगिक केन्द्रों पर लगातार बम वर्षा की जाती थी; फिर भी उनकी पनडुब्बियों का उत्पादन क्रमशः बढता ही जाता था और १९४४ मे वह सब से अधिक पहुँच गया और ३८७ पनडुब्बियो को पानी मे उतारा गया। हिटलर के वैज्ञानिक एक २५० फीट लबी बिजली से सचालित 'स्नोरकेल' पनडुब्बी के निर्माण में बड़े जोरों से लगे हुए थे, जो एक घण्टे मे १७ नाट जा सके तथा असीमित समय तक पानी मे रह सके। सौभाग्य से इनका सपूर्ण उत्पादन युद्ध की ठीक समाप्ति के समय तक न हो सका और उनको उपयोग मे लाने के लिए काफी देर हो गयी थी। ग्रीष्म के मध्य तक मित्र राष्ट्रों ने एटलाटिक के युद्ध को निश्चय रूप से जीत लिया था और अब वे योरोप पर एक व्यापक आक्रमण करने मे समर्थ थे।

उत्तरी अफ्रीका और इटली : जून १९४२ में जब प्रशान्त महासागर का जहाजी बेड़ा मिडवे में जापानियो को पीछे ढकेल रहा था और मित्र-राष्ट्रो के जहाज सकटग्रस्त एटलाटिक मे अपना मार्ग प्रशस्त कर रहे थे, रूजवेल्ट और चर्चिल ने फौजो के प्रमुखो के साथ हिटलर के पतन की योजना तैयार करने के लिए एक मंत्रणा की। अमरीकी चाहते थे कि १९४२ या १९४३ मे योरोप मे एक 'दूसरा मोर्चा' खोला जाये; लेकिन अंग्रेज लोग जिनके द्वीप को आक्रमण का बडा ही खतरा था और जो 'फेसटंग योरोपा' पर एक अपरिपक्व आक्रमण के खतरों के प्रति अत्यन्त जागरूक थे, चाहते थे कि दूसरा मोर्चा तब तक आरम्भ नही किया जाना चाहिए, जब तक कि मित्र-राष्ट्रो के पास काफी सुरक्षित फौजें या रसद न हो और वायु-सेना मे उनका पूर्ण प्रभुत्व न हो जाये। इसलिए उत्तरी अफ्रीका के किनारो पर आक्रमण करने का निर्णय इन दोनो दृष्टिकोणो का एक समझौता-निर्णय था।

फिर भी यह एक बडा साहसपूर्ण निर्णय था। इस विशाल आक्रमण को आयोजित और कार्यान्वित करने के लिए, केवल चार महीने शेष थे—सर्वांगीण युद्ध के लिए सैनिको को प्रशिक्षित करना, रसद जमा करना, सैकडो व्यापारी तथा परिवहन जहाजो, और युद्ध-पोतो की व्यवस्था करना और उनको पनडुब्बियों से सुरक्षित रखना, स्वतत्र फ्रास, विदेशी फ्रास और फ्रंको के स्पेन से गभीर मत्रणा करना आदि, कार्य को इन्ही चार महीनो के अन्दर पूरा करना था। इसके अलावा अमरीका और ब्रिटिश द्वीपो के बन्दरगाहो से आक्रमणकारी जहाजों तथा जनरल एलेक्जेण्डर की आठवी फौज का अत्यधिक सावधानी के साथ समन्वय करना था ताकि वे एक साथ हजारो मील दूर मिस्र के निर्दिष्ट बन्दरगाहों पर पहुँच जाये।

हालॉकि इस आयोजन मे कई खतरे थे, लेकिन उसके अपेक्षित परिणाम बडे आकर्षक थे। यदि आक्रमण का सचालन सफलता के साथ किया गया तो धुरी राष्ट्रो की ओर से स्पेन द्वारा युद्ध छेडने का खतरा खत्म हो जाता, फ्रास और अफ्रीका मे स्वतत्र फ्रास की फौजे तैयार हो जाती और प्रत्येक स्थान पर विद्रोही फौजो को प्रोत्साहन मिलता और फिर भूमध्य सागर पर नियत्रण सुनिश्चित हो जाता और निकट पूर्व की शक्ति को कम कर उत्तरी अफ्रीका से धुरी राष्ट्रों की फौजो को हटाया जा सकता था और फिर इटली पर आक्रमण करने का मार्ग प्रशस्त कर योरोप मे घुसना सम्भव था।

इस कार्य-सचालन की मशाल को जनरल ड्वाईट डी. आयजनहावर को

सौंपा गया जो उस समय योरोपीय मञ्च में अमरीकी फौजों के कमाण्डर थे। उक्त योजना का एक बार श्रीगणेश होने के बाद, केवल फ्रांस के सहयोग को छोड़ कर, समस्त जटिल कार्यक्रम घड़ी की सुइयों के समान आरम्भ हो गया। ७ नवम्बर की अर्द्धरात्रि को मित्र-राष्ट्रों के तीन विशाल समुद्री बेड़े केसाब्लेंका, उरान और एल्जियर्स के बन्दरगाहों के बाहर जा डटे और दूसरे दिन सुबह जब हवाई जहाजों ने सुरक्षात्मक तैयारी कर ली तो फौजें किनारे पर जा उतरीं। यहाँ उनको एक खुले युद्ध की अपेक्षा थी; लेकिन उन पर वहाँ गोले बरसने लगे। एल्जियर्स पर उतरना कुछ आसान था; लेकिन उरान में काफी भीषण युद्ध हुआ। इसी प्रकार केसाब्लेंका पर तब तक उतरना सम्भव नहीं था, जब तक कि एडमिरल हेविट ने बन्दरगाह की सुरक्षा करनेवाले फ्रांसीसी बेड़े के अधिकांश जहाजों को न डुबा दिया। एक शीर्षस्थ विशी अधिकारी, एडमिरल डार्लन ने जो उस समय उत्तरी अफ्रीका में थे, सौभाग्य से ११ नवम्बर को युद्ध-बन्दी आदेश जारी कर दिया और अपनी फौजों को मित्र राष्ट्रों के साथ मिला दिया। पेताँ ने डार्लन के कार्य को अस्वीकार कर दिया क्योंकि उनको अब भी विश्वास था कि युद्ध में धुरी-राष्ट्रों की ही विजय होगी। कुछ समय तक तो डार्लन के इस 'समझौते' के परिणाम काफी खराब रहे, लेकिन कुछ ही हफ्तों बाद उसकी हत्या हो जाने के बाद मित्र-राष्ट्रों ने साहसी चार्ल्स डी गाल के दावों को स्वीकार किया, जिन्होंने पहिले संघर्ष के प्रतिमान को बढ़ाया और उनको फ्रांसीसी उत्तरी अफ्रीका की अस्थायी सरकार का प्रमुख तथा उनको प्रत्येक स्थान पर स्वतंत्र फ्रांसीसी फौजों का प्रवक्ता माना।

इसके बाद जर्मनों पर एक अचानक आक्रमण किया गया; लेकिन उन्होंने उसका सामना बड़ी शीघ्रता और सावधानी से किया। उन्होंने तत्काल समस्त विशी फ्रांस पर कब्जा कर लिया। लेकिन, टौलन में फ्रांसिसी जहाजी बेड़े पर जर्मन सेनाओं द्वारा आधिपत्य करने के पहिले ही उन्हें डुबा दिया गया। उन्होंने बीस हजार सिपाहियों को सिसली के जलडमरूमध्य को पार कर ट्यूनिसिया में भेजा और ट्यूनिस तथा बिजर्ट के बड़े बन्दरगाहों पर कब्जा कर लिया, हवाई अड्डे बनाये और अफ्रीका पर आक्रमण करने के लिए मित्र-राष्ट्रों से बदला लेने की तैयारी कर दी गयी।

इसके बाद ट्यूनिसिया का संघर्ष आरम्भ हुआ। मौंटगुमरी ने पहिले से ही आठवीं फौज को मिस्र से ट्यूनिसिया और उसके आगे ले जाने का विख्यात अभियान आरम्भ कर दिया था। अल अलामीन के एक निर्णायक युद्ध

मे (अक्टूबर २३ से नवम्बर ३, १९४२) उन्होंने रोमेल की जर्मनी तथा इटली की मिश्रित सेनाओ को परास्त कर दिया था और फिर उसकी बची-खुची सेनाओं को सिरीनायका और ट्रिपोलिटानिया तक पीछा किया। अब जनरल आयजनहावर ने एलजियर्स से ट्युनिस तक के पॉच सौ मील गीहड विस्तार में घुसना आरम्भ किया। नवम्बर के अन्त मे वे मेट्युर पहुँच गये। यह स्थान उनके गन्तव्य स्थान से केवल ५५ मील ही दूर रह गया था। लेकिन, वे यहॉ काफी आगे बढ आये थे। दूर होने के कारण सचार-व्यवस्था असुविधा-जनक हो गयी थीं, मौसम भी खराब होने लगा था और जर्मनो का सभी श्रेष्ठ हवाई अड्डो पर नियन्त्रण था। फरवरी १९४३ मे धुरी राष्ट्रो ने केसेरायन दर्रे पर फिर आक्रमण किया और हारी हुई अमरीकी फौजो को सकट मे डाल दिया। मित्र राष्ट्रो की फौजो को दो भागो मे बॅट जाने का भय भी उत्पन्न होने लगा। इसी बीच घटना-स्थल पर सहायक सेनाऍ जा पहुॅची। हवाई शक्ति विशेष रूप से काफी मात्रा मे उपस्थित हुई और मित्र-राष्ट्रो की निराशा उत्साह मे बदल गयी।

इसी बीच मोटगुमरी ने रोमेल को ट्युनीसिया के अन्दर मेरीथ-लाइन के निकट तक खदेड दिया था। यहॉ पर मित्र-राष्ट्रो का मोर्चा पहिले से ही बडा मजबूत था। युद्ध के आक्रमणो मे मोटगुमरी का यह एक बडा गौरवशाली सफल आक्रमण प्रमाणित हुआ और उन्होंने शत्रु को आगे-पीछे दोनो ओर से चपेट दिया और अन्त मे रोमेल की सुरक्षा पक्ति को ध्वंस कर दिया उसे गेब्स की खाडी के किनारे से सफेक्स की ओर भागना पडा। अब अमरीकी, ब्रिटिश और फ्रासीसी सेनाए शिकारगाह के निकट पहुँच चुकी थीं। ७ मई को ट्युनिस और बिजर्टे का पतन हो गया; ६ दिन बाद केप बोन मे लगभग ढाई लाख जर्मन और इटली की सेनाओ ने हथियार डाल दिये। उत्तरी अफ्रीका की विजय समाप्त हो चुकी थी और अब योरोप के आक्रमण का मार्ग प्रशस्त हो गया था।

इस सफल अभियान के परिणाम से मित्र-राष्ट्रो के नेताओ को आश्चर्य नही हुआ। उन्होंने विजय से लाभ उठाने की योजनाए पहिले ही बना ली थीं। जनवरी १९४३ मे रुजवेल्ट और चर्चिल और उनके अधिकारियो की एक महत्वपूर्ण युद्धकालीन बैठक केसाब्लेका मे हुई। १९३९ से अब पहिली बार परिस्थितियॉ अनुकूल थी। अमरीकियो ने ग्वाडल केनाल पर विजय प्राप्त कर ली थी और प्रशान्त मे जापानियो पर हावी हो गये थे। लडाकू रूसियो

ने जर्मनों पर स्टालिनग्राड में निर्णायक विजय प्राप्त कर ली थी। स्टालिनग्राड का युद्ध जर्मन फौजों और उनकी आशाओं का श्मशान बन चुका था। अब रूसी सेनाएं एक व्यापक आक्रमण की तैयारियाँ कर रही थीं। मॉंटगुमरी ने रोमेल को परास्त कर दिया था और धुरी राष्ट्रों को अफ्रीका से निकाल बाहर कर देने की तथा भूमध्य-सागर को खाली करा देने की सभी सम्भावनाएं विद्यमान हो चुकी थीं। चर्चिल के शब्दों में यह 'शुरुआत का अन्त था।' इस पृष्ठभूमि में मित्र-राष्ट्रों ने निम्न निर्णय लिये: यथाशीघ्र सिसली और इटली पर आक्रमण किया जाये, पनडुब्बी-विरोधी-युद्ध को व्यापक बनाया जाये, एक बड़े आक्रमण के लिए प्रशान्त-महासागर में शक्ति बढ़ायी जाये, और युद्ध केवल बिना शर्त हथियार डालने पर ही बन्द किया जाये।

इस सिद्धान्त को उस समय तो सभी लोगों ने स्वीकार किया· लेकिन बाद में इसकी काफी आलोचना की गयी। आलोचना का आधार यह था कि, समझौते की कोई गुंजाइश न रखने तथा आसान शर्तों की आशा न होने के कारण धुरी-राष्ट्रों के मध्य विद्रोही वर्गों को इस सिद्धान्त ने निरुत्साहित कर दिया, धुरी-राष्ट्रों का मोर्चा अधिक सख्त हो गया और युद्ध की अवधि में वृद्धि हो गयी। हालाँकि हमको यह कभी पता नहीं चल सकता है कि इतिहास में "क्या हुआ होता?"-लेकिन इस सिद्धान्त ने इटली को आत्मसमर्पण कराने में देर नहीं लगायी· इसका भी कोई प्रमाण विद्यमान नहीं था कि जर्मनी में हिटलर-विरोधी सेनाएँ या जापान में शहंशाह विरोधी फौजें कभी भी कुछ कर सकने के लिए समर्थ थीं और न तो हिटलर और जापानी युद्ध-सञ्चालक किसी प्रकार की सन्धि के लिए ही तैयार थे। इसलिए बिना शर्त हथियार डालने के सिद्धान्त ने न तो युद्ध की समाप्ति में और न उसकी अवधि में वृद्धि करने में ही शीघ्रता की।

केसाब्लेंका में तैयार की गयी योजनाओं को शीघ्रता से लागू किया गया। जून के आरम्भ में, जनरल आइजनहोवर ने सिसली पर एक व्यापक आक्रमण आरम्भ किया, अमरीकी फौजों को दक्षिण-पश्चिमी किनारे पर और ब्रिटिश फौजों को पूर्व में सिराकस में उतारा गया। इटली की सेनाओं का मोर्चा नगण्य था· लेकिन जर्मन सेनाओं ने डट कर सामना किया। चालीस दिनों में ही मित्र-राष्ट्रों की सेनाएं सारे द्वीप में फैल गयीं और इटली की एक लाख सेनाओं को बन्दी बना लिया गया तथा काफी युद्धसामग्री हाथ लग गयी। इटली के लगभग २५ हजार सिपाही भी मारे गये।

हालांकि जर्मन-डिवीजनो की छोटी-छोटी टुकडियाँ मेसीना के जलडमरू-मध्य के आसपास घूम रही थी, फिर भी मित्र-राष्ट्रो ने अब इटली पर आक्रमण करने का निर्णय किया। धुरी-राष्ट्रो का सबसे निर्बल साथी इटली आक्रमण से पहिले ही घबडा उठा था और जनता युद्ध तथा अत्याचारी मुसोलिनी के व्यवहार से, जिसने इतिहास मे लगातार अद्वितीय बाधाए खडी की थी, परेशान हो चुकी थी। २५ जुलाई को मुसोलिनी को अपदस्थ कर दिया गया और अगले महीने एक अस्थायी सरकार ने जनरल आयजनहावर से सधि-मन्त्रणा आरम्भ की। ३ सितम्बर को, जैसे ही विजयी मित्र-राष्ट्रो की सेनाओ ने मेसीना के जलडमरूमध्य से कालाब्रिया मे कूच किया, इटली ने बिना शर्त हथियार डालने की घोषणा कर दी। रूजवेल्ट के शब्दो मे "एक समाप्त हो चुका था और दो अभी बाकी थे।"

लेकिन, स्थिति अभी एक प्रकार से अपरिपक्व थी। हालाँकि इटली युद्ध से हट चुका था; लेकिन इटली मे अब भी जर्मन-सेनाए विद्यमान थी और वे एक-एक गज भूमि के लिए लडने को प्रस्तुत थीं। इटली का अभियान युद्ध मे सबसे कठिन प्रमाणित हुआ। इसका प्रारम्भ नेपल्स के तीस मील दक्षिण मे सर्वेनों के समुद्री किनारे पर मित्र-राष्ट्रो की फौजें उतरने से हुआ। इस किनारे पर कब्जा करने के पश्चात् अमरीका की ५-वी और ब्रिटेन की ८-वी फौज ने नेपल्स पर तथा फोगिया के हवाई-अड्डों पर कब्जा करने के लिए तत्काल कदम उठाये, ताकि वहाँ से उनके बमवर्षक हवाई जहाज बाल्कन, आस्ट्रिया और दक्षिण जर्मनी पर आक्रमण कर सके। लेकिन, नेपल्स के पतन के बाद अभियान की गतिशीलता समाप्त हो गयी। इटली की दक्षिणी और केन्द्रीय पहाडी श्रेणियो का लाभ उठा कर, जर्मनी ने अनेक सुदृढ सुरक्षा पक्तियाँ कायम कर दी जो वाल्टर्नो, विल्टर, गुस्ताफ और हिटलर की देखरेख मे थी, प्रकृति और मौसम के सहयोग से इन पक्तियो को मित्रराष्ट्रो के टैको, हवाई जहाजो और सेनाओ द्वारा भेदना बडा कठिन कार्य था। नेपल्स से रोम तक के ८० मीलो की इस भीषण लडाई मे ८ महीने लग गये। इन सघर्षो मे मोंट-केसिनो और एजियो के बीच की लडाई विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मई १९४४ तक मित्र-राष्ट्र केसिनो की सुरक्षा-पक्तियो और एजियों के समुद्री किनारो के जर्मन घेरो को अन्तिम रूप से नहीं तोड पाये थे। ४ जून को जब नोरमडी के समुद्री किनारो पर मित्र-राष्ट्रो की सेनाएँ व्यापक आक्रमण की तैयारी कर रही थी, विजयी मित्र राष्ट्रो ने रोम में प्रवेश किया।

/

महान आक्रमण : युद्ध के विशाल मोर्चे और योरोप पर आक्रमण करने सम्बन्धी आयोजन १९४३ में मित्र-राष्ट्रों के युद्ध-नेताओं के बीच आयोजित अनेक बैठकों में किया जा रहा था, केसाब्लांका के सम्मेलन के अनुसार लन्दन में एक संयुक्त नियोजन अधिकारियों की स्थापना की गयी और मई १९४३ में आयोजित वाशिंगटन के ट्रिडेण्ट-सम्मेलन के अनुसार आक्रमण की तारीख १ वर्ष पहले ही निश्चित कर ली गयी थी। अगस्त में क्विबेक के आंग्ल अमरीकी-सम्मेलन में "विश्वव्यापी आक्रमणों के सम्पूर्ण क्षेत्र" की समीक्षा की गयी और जैसा कि औपचारिक वक्तव्य में कहा गया था, "जहाजी बेड़े, स्थल सेनाओं और वायुसेनाओं के आक्रमण-सम्बन्धी आवश्यक निर्णय लिये गये।" सितम्बर में पहली बार रूस को मास्को में आयोजित विदेशी मंत्रियों की बैठक में सामान्य योजना पर विचार करने के लिए शामिल किया गया। इस सम्मेलन ने एक यूरोपीय सलाहकार-आयोग की स्थापना की, जो अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में संयुक्त कार्रवाई करने के लिए योजनाएं बनाये और सिफारिशें करे तथा इस प्रकार की घोषणा करे जो शान्ति के लिए युद्धोत्तर अन्तरराष्ट्रीय संघटन के लिए कार्य करने में सहायक हो। इस सम्मेलन का सदर मुकाम लन्दन निश्चित किया गया था। अत्यन्त महत्वपूर्ण सम्मेलनों की शुरूआत वर्ष के अन्त में तेहरान और काहिरा के सम्मेलनों से हुई। तेहरान (फारस) में चर्चिल और स्टालिन ने युद्ध के विशाल मोर्चे पर विचार-विमर्श किया और अगले वर्ष के लिए रूसी तथा आंग्ल अमरीकी फौजों के लगातार शक्तिशाली और संघटित आक्रमणों की निश्चित योजनाएँ बनायी; काहिरा के सम्मेलन में प्रमुख रूप से प्रशान्त-महासागर के युद्ध तथा सुदूर पूर्वी मामलों के अन्तिम निपटारे के बारे में विचार-विमर्श किया गया।

इस प्रकार महान आक्रमण का नियोजन, विस्तृत मोर्चा-सम्बन्धी सिद्धान्त-निरूपण तथा उसके विवरण युद्ध आरम्भ करने के पूरे १ वर्ष पहले तैयार कर लिये गये थे। महत्वपूर्ण बातों के साथ यह भी निश्चित किया गया था कि अमरीका जनशक्ति तथा सामान का सबसे अधिक अंश देगा और सर्वोच्च कमाण्डर कोई अमरीकी व्यक्ति रहेगा। अफ्रीका, सिसली और इटली में आयज़नहोवर की सफलता और सभी मित्र-राष्ट्रों के प्रशासनिक और फौजी नेताओं में उनकी लोकप्रियता के कारण इस कार्य का दायित्व उन्हीं को सौंपा गया। जनवरी में आयज़नहोवर ने अपने सदर मुकामों को लन्दन में स्थानांतरित किया और अपने नियोजन अधिकारियों के प्रमुख जनरल सर फ्रेड्रिक मौर्गन के साथ उन्होंने आक्रमण की विशेष तैयारियाँ करनी आरम्भ कर दीं।

किसी भी राष्ट्र या राष्ट्रों के सघ की फौजी सेनाओं को इस प्रकार की महान तैयारी से कभी भी वास्ता नहीं पडा था। स्वय हिटलर भी १९४० और १९४१ मे इंग्लिश-चैनल को पार करने में समर्थ नहीं हुआ, जबकि उसके पास सैनिको और हवाई जहाजों की भारी शक्ति विद्यमान थी और उस समय ब्रिटिश सुरक्षा-सेनाए काफी शक्तिशाली नहीं थीं। फ्रास के समुद्री किनारों पर सुरक्षा-पक्तियों की रचना करने के लिए, अब भी उसके पास चार साल थे; क्योंकि मित्र-राष्ट्रों की उन सुरक्षा पक्तियों को भेद कर विरोधी क्षेत्र मे फौजे उतारना और उनकी देखरेख करना और किसी भी स्थान पर कैसी अवस्था मे जर्मन सेनाओं का सामना करने के लिए शक्तिशाली सेनाओं का निर्माण करने के लिए एक विशाल भारी फौज, नौसैनिक शक्ति तथा रसद और युद्ध के सामानों को काफी मात्रा मे अलग से तैयार रखना आवश्यक था।

इसके अलावा एक बात की और भी आवश्यकता थी। वह थी, हवाई सेना का सचालन। एक सुदृढ हवाई सेना की आवश्यकता न केवल ब्रिटिश खाडी और फ्रास के समुद्री किनारे के लिए, बल्कि समस्त प्राय-द्वीप के लिए बर्लिन और वियना तक के लिए आवश्यक थी। मित्र-राष्ट्रों द्वारा सफलता के लिए कैसे भी आक्रमण करने के पहले, उनको जर्मनी के उद्योग का नष्टभ्रष्ट करना, जर्मनो की सचारव्यवस्था को अव्यवस्थित करना और जर्मन हवाई-बेडे को खत्म करना जरूरी था। यही उनकी प्रमुख चिता का विषय था और इसी पर उन्होंने १९४३ और १९४४ के आरम्भ मे यूरोपीय रगमच पर अपनी मुख्य फौजी आवश्यकता के रूप मे ध्यान केन्द्रित किया।

जर्मनी पर वास्तविक हवाई हमले का आरम्भ ३० मई १९४२ से हुआ, जबकि एक हजार बमवर्षको ने जर्मनी के औद्योगिक नगर कोलोन पर आक्रमण किया। इसके बाद राईन-क्षेत्रो के नगरो तथा रूर पर तथा जर्मनी के मध्य मे प्रतिकारात्मक आक्रमण किये गये। १९४३ तक अमरीकी हवाई फौजों ने युद्ध मे वास्तविक रूप से भाग नहीं लिया था, हालॉकि पहिले वर्ष उसने प्रति-कारात्मक आक्रमणों मे भाग लिया था। इस तरह १९४२ मे रायल एयरफोर्स ने जर्मनों के अधीन योरोप पर कुल ७५,००० टन बम गिराये, जबकि ब्रिटेन-स्थित अमरीकी हवाई सेना से २००० टन बम गिराये। फिर भी बाद मे अमरीकी सेनाओ का आक्रमण काफी तीव्र रहा। १९४३ मे अमरीकी बम-वर्षकों ने शत्रु पर १,२३,००० टन बम गिराये, जबकि अग्रेजों ने २,१३,००० टन अतिरिक्त बम गिराये। १९४४ मे मित्र-राष्ट्रों ने शत्रु पर अँधाधुन्ध बम-

बाजी की। उस समय तक अंग्रेजों ने रुक-रुक कर बम गिराने तथा अमेरिकनों ने निशानों पर बादलों से बम फेकने की पद्धति अपना ली थी। दिन को फ्लाइंग-फोर्ट्रेस और रात को हलीफेक्स, लेकास्टर और स्टेयरलिंग्ज जर्मनी, आस्ट्रिया और विजित फ्रास पर मडराते थे तथा बड़े-बडे शहरों को खण्डहरों मे परिवर्तित करते, फैक्टरियों, रेलमार्गों, नहरों, पनडुब्बी के केन्द्रों और अन्य अनेक स्थानों को नष्ट करते थे। जर्मनी का प्रत्येक बड़ा शहर आशिक रूप से नष्ट हो गया और युद्ध के खत्म होने के पहिले हेम्बर्ग, ब्रिमेन, कोलोन, फ्रॉकफर्ट, इसेन तथा अन्य शहर ध्वस्त हो चुके थे।

युद्ध के पहिले दो वर्षों मे ब्रिटेन पर किये गये आक्रमणो से हुई हानि जर्मनी पर किये गये हवाई आक्रमणों से हुई हानि की तुलना मे बहुत कम थी। १९४० मे महान कोवेन्ट्री के आक्रमण मे लफ्टवाफ ने २०० टन बम गिराये थे; उस प्रतिमान से बर्लिन में ३६३, कोलोन में २६९ और हेम्बर्ग मे २०० से अधिक की हानि हुई। युद्ध भर मे मित्र-राष्ट्रों की वायुसेनाओं ने लगभग १५ लाख बमवर्षकों तथा लगभग २७ लाख ५० हजार लडाकू हवाई जहाजों को उडाया और योरोपीय रंगमच पर शत्रुओ के अड्डो पर २७ लाख टन बम गिराये। बम गिराने के प्रमुख लक्ष्य केवल शहर ही नही थे, बल्कि तेल, हवाई जहाजो के उडने में व्यवहार मे लाया जानेवाला पेट्रोल, सिन्थेटिक रबर, बाल-बियरिंग-जैसे प्रमुख उद्योग-केन्द्रों और परिवहन-व्यवस्था-केन्द्र भी थे।

हालॉकि यह सफलता काफी थी; लेकिन यह समझना कि जर्मनी की हवाई शक्ति को सम्पूर्णतया नष्ट कर दिया गया है और केवल हवाई शक्ति के जरिये ही युद्ध को जीता जा सकता है, निस्सन्देह गलत था। वास्तव में जर्मनो ने बमबाजी का सामना करने मे काफी कुशलता दिखायी। हालॉकि उनके बहुत से लोग मारे गये थे और उनका सामान्य सामाजिक और आर्थिक जीवन अव्यवस्थित हो गया था, फिर भी १९४४ तक उनके युद्धसामग्री के उत्पादन को काफी क्षति नहीं पहुँची थी। १९४४ मे जर्मनी का युद्ध-उत्पादन पिछले वर्षों की अपेक्षा काफी अधिक था; और उस वर्ष हवाई जहाजो, पन-डुब्बियों और गोलाबारूद आदि का उत्पादन बढ गया था। फिर भी, दो बातो मे हवाई-युद्ध के निर्णायक नतीजे हुए; रूमानिया के तेलकूपो पर अधिकार करने के साथ साथ तेल और हवाई जहाजों के लिए पेट्रोल का नष्ट होना, अधिकाश जर्मन हवाई शक्ति का ध्वस्त होना, और उत्तरी फ्रास तथा

पश्चिमी जर्मनी मे यातायात ठप्प हो जाना। इससे आक्रमण के समय फौजों का स्थानान्तरण अवरुद्ध हो गया।

१९४४ की वसन्त मे मित्रराष्ट्रो के आक्रमण की योजनाए तैयार हो गयीं। मौसम की अनुकूलता के अनुसार आक्रमण का दिन ५ जून निर्धारित कर दिया गया। दूरी, लहरो, समुद्री किनारो और सुरक्षा पक्तियो के आधार पर आक्रमण विस्तार को कोटेटिन प्रायद्वीप से सम्बद्ध नोर्मण्डी का किनारा निर्धारित किया गया था; इसका पूर्वी क्षेत्र अंग्रेजो को और पश्चिमी किनारा अमरीकियो को सौपा गया। मित्र-राष्ट्रो के लगभग ३० लाख सैनिक, नौसैनिक और वायु सैनिक तैयार थे। चार हजार युद्ध-पोतो और सभी प्रकार का वेडा चेनल के पास आक्रमण करने तथा युद्धसामग्री की निरन्तर पूर्ति करने के लिए तैयार था; ग्यारह हजार हवाई जहाज आक्रमणकारियो से सुरक्षा करने तथा जर्मन-हवाई सेना को धराशायी करने के लिए तैयार हो गये। इसके अलावा मित्र-राष्ट्रो के पास उतरने की नावे, बनावटी बन्दरगाह और सैकडो अन्य नये प्रकार के हथियार थे, जिनके जरिये आसानी से उतरा जा सकता था। ब्रिटेन के पास रसद का इतना भाण्डार था कि लोग कहते थे उनके भार से ब्रिटिश द्वीप डूबा जा रहा था। जनरल आइजनहोवर ने लिखा था:

सभी दक्षिणी इग्लैण्ड एक विशाल फौजी शिविर बन गया था जहॉ पर सैनिकों के झुण्ड आक्रमण के अन्तिम आदेश की प्रतीक्षा कर रहे थे। रसद तथा सामानो की प्रचुर मात्रा चेनल के पार भेजी जाने के लिए प्रस्तुत थी। वह क्षेत्र समस्त इग्लैण्ड से कट चुका था। .हमारे मानचित्र मे प्रत्येक खेमे, वेरेक, गाडियो के स्थान तथा प्रत्येक घटक की स्थिति को सुनिश्चित किया जा चुका था। प्रत्येक घटक की गतिविधियो को इस प्रकार सुनियोजित किया गया था कि वह ठीक समय पर जहाज पर चढने के लिए उपस्थित हो सके। .. शक्तिशाली इग्लैण्ड एक स्प्रिंग की तरह बन्द था और वास्तव मे अपार सैन्य-समूह इस समय एक स्प्रिंग की तरह था और वह ब्रिटिश चेनल के पार एक महानतम सर्वांगीण आक्रमण के लिए प्रतीक्षा कर रहा था। (आइजनहोवर : क्रूसेड इन योरोप, पृष्ठ २४९, डबलडे)

खराब मौसम से सारी योजना के बिगडने की स्थिति पैदा हो गयी, लेकिन आकाश को साफ होते देख कर आइजनहोवर ने साहस के साथ ५ जून को धावा बोलने का आदेश दे दिया। रात्रि के हवाई जहाजो ने बेल्जियम से ब्रिटेन तक समस्त उत्तरी फास को ध्वस्त कर दिया, फिर जर्मनो को धोखा देने

के लिए एक बनावटी जहाजी बेडा 'पास डि कालायस' की ओर बढा और हवाई जहाजों से तीन डिवीजनों को जर्मनी सुरक्षा पंक्तियो के पीछे पेराशूट से उतार दिया गया। ६ जून के प्रातःकाल आक्रमणकारी बेडा समुद्री किनारों की ओर बढा और पानी के भीतरी अवरोधो को पार करता हुई मित्र-राष्ट्रों की फौजें किनारे पर जा उतरी।

इस तरह जर्मन-सेनाओ पर, जो मुख्य आक्रमण की अपेक्षा "पास डि कालायस" से कर रही थीं, अचानक आक्रमण कर दिया गया। कुछ समय तक तो उन्होंने नोर्मण्डी के आक्रमण को एक ध्यान बॅटाने के आक्रमण के रूप मे माना; फिर भी उन्होंने उसका कडे प्रतिरोध से सामना किया। लेकिन, मित्र-राष्ट्रो की हवाई सेना ने आक्रमणकारी जहाजी बेडे के मार्ग मे अवरोध उत्पन्न नही होने दिया और पेरिस तक रेलमार्गों, पुलो के नष्टभ्रष्ट हो जाने के कारण जर्मन कमाण्डर फान रण्डस्टेड के लिए मित्र राष्ट्रों का किनारे पर प्रतिकार करने के लिए समय पर सहायता भेजना असंभव हो गया। आक्रमण के दिन की समाप्ति होने पर, मित्र-राष्ट्रो ने एटलाटिक की दीवार को घेर लिया और एक लाख बीस हजार सैनिकों को उतार दिया तथा पेराशूट से उतारे गये बहादुर सैनिको से सम्पर्क स्थापित करने की कार्रवाई आरम्भ कर दी। एक हफ्ते के अन्दर उन्होने ३ लाख से भी अधिक सैनिकों तथा एक लाख टन रसद किनारे पर उतार दी और ७० मील लम्बे तथा पॉच से दस मील चौडे विस्तार पर कब्जा कर लिया। इसके बाद अमरीकियों ने पश्चिम की ओर आक्रमण किया और कोटिनटिन-प्रायद्वीप मे घुस गये तथा २६ जून तक चेरबर्ग के बडे बन्दरगाह पर कब्जा कर लिया।

अगले माह मित्र-राष्ट्रों ने नोर्मण्डी के युद्ध में विजय प्राप्त की। पूर्व में अंग्रेजों ने केयन के मुख्य शहर पर और पश्चिम में अमरीकियों ने दक्षिण के द्वार सेट-लो पर आधिपत्य कर लिया। महीने के अन्त मे, लगभग १० लाख सैनिक किनारो पर उतर चुके थे और अस्थायी बडे बन्दरगाहों के निर्माण तथा मोटर-डिवीजनों को तेल पहुँचाने के लिए पाइप-लाइनों की रचना व रसद पहुंचाने की समस्या को काफी हद तक हल किया जा चुका था। अब, शत्रु की तुलना मे मित्र-राष्ट्रो की सेनाएं भारी सख्या मे होने तथा हवाई सेना की निर्विवाद श्रेष्ठता के कारण, आग्ल-अमरीकी सेनाओं ने जर्मनों की सुरक्षा-पक्तियों को भेदने तथा समस्त उत्तरी फ्रास पर अधिकार करने की तैयारी की।

२५ जुलाई को नोर्मण्डी की लडाई समाप्त हो गयी और फ्रास का युद्ध आरम्भ हुआ। जनरल पेटन की तीसरी सेना सेट-लो के पश्चिम मे जर्मन सुरक्षा-पक्तियो को कुचल कर दक्षिण मे दस मील दूर काउटेसेस तक घुस गयी, एवरेचेस पर आधिपत्य कर लिया और फलायज के दर्रे मे जर्मन-प्रतिद्वन्द्वियो का नाश कर दिया। इसके बाद जर्मन फौज की बची-खुची टुकडियो को सीगफ्राइड-रेखा के निकट के युद्ध मे अमरीकी फौजो के एक घेरे ने कुछ बन्दरगाह के नगरो को छोड कर जर्मनो से समस्त ब्रिटनी को साफ कर दिया, दूसरे घेरे ने लोयर के मार्ग से पूर्व मे पेरिस की ओर कूच किया और ब्रिटिश और कनाडा की फौजो ने समुद्र के किनारे बेल्जियम और हालैण्ड की ओर धावा बोला। २३ अगस्त को पेरिस को स्वतत्र कर दिया गया; कुछ दिनो बाद अंग्रेजो ने ब्रुसेल्स तथा एटवर्प के बडे बन्दरगाह पर कब्जा लिया। ११ सितम्बर तक अमरीकी सेनाओ ने लक्जेम्बर्ग को स्वाधीन किया तथा ऐचिन से होकर जर्मनी मे प्रवेश किया। इसी बीच फ्रास के दक्षिणी किनारे पर और आक्रमणकारी सेना उतर चुकी थी। उसने जर्मनो के कमजोर मोर्चे को तोड डाला और स्वतंत्र फ्रास की सहायता से टोलन और मार्सेलीज के बडे बन्दरगाहो पर आधिपत्य कर लिया और राइन की घाटी से होते हुए स्विटजरलैण्ड की सीमा तक के प्रदेश को रौध डाला। सितम्बर के मध्य तक समस्त फ्रास शत्रुओ से खाली हो चुका था। युद्धो के इतिहास मे यह एक अत्यधिक अपूर्व एव भव्य विजय थी।

उसी ग्रीष्म एवं पतझड मे प्रत्येक स्थान पर धुरी-राष्ट्र पीछे हट रहे थे। स्तालिन ने अपने आक्रमणो को पश्चिमी मित्र राष्ट्रो के आक्रमणो के साथ सम्बद्ध करने का वचन दिया था और जैसे ही अमरीकी चीरबर्ग की ओर कूच कर रहे थे, स्तालिन ने एक हजार मील के मोर्चे से आक्रमण आरम्भ कर दिया। सुदूर उत्तर मे फिनलैण्ड पर आक्रमण किया गया और उसे युद्ध से बाहर कर दिया गया, मध्य मे रूस की फौजें युक्रेन तथा पोलैण्ड से कूच करती हुई वारसा के निकट जा पहुँची; दक्षिण मे उन्होने रूमानिया को रौध डाला और यूगोस्लाविया तथा हंगरी मे घुस गयीं। इटली मे भी जर्मनी की सेनाएँ भारी सकट मे थी। रोम के पतन के बाद मित्र-राष्ट्रो की सेनाओं ने उत्तर मे लम्बार्डी की ओर कूच किया तथा एक के बाद दूसरे बडे-बडे शहरो पर अधिकार करती गयीं, और सितम्बर तक वे पो नदी की घाटी तक जा पहुँचीं, प्रशान्त-महासागर मे मैकआर्थर ने फिलिपाइन पर सेनाओ को उतार दिया था और

नौसेना ने जापानियो को उनके इतिहास में की सबसे भयानक पराजय दी थी। यदि उत्तरी अफ्रीका की विजय शुरुआत का अन्त था, तो यहाँ की विजय 'अन्त' की शुरुआत थी।

योरोप में विजय : सितम्बर १९४४ मे मित्र-राष्ट्रो की सेनाएँ इतनी दूर और इतनी तेजी से आगे बढी थी कि उनकी रसद समाप्त होने लगी। इस-लिए उनको अपनी विजयो को सघटित करने, सेनाओ को व्यवस्थित करने, बन्दरगाहों को साफ करने, रसद एकत्र करने, हवाई अड्डे बनाने, सडको, पुलों की मरम्मत करने तथा राईन नदी के पार जर्मनी पर धावा करने की तैयारी करने के लिए रुक जाना पडा। उनका भीषगतम सघर्ष अब भी शेष था, क्योकि जर्मनो ने अपनी मातृभूमि की रक्षा बडे साहस के साथ की। शक्तिशाली सीगफ्राइड-रेखा हालैण्ड से स्विट्जरलैण्ड की सीमा तक फैली हुई थी और उसके पीछे था, बृहद् राईन का प्रदेश। सीगफ्राइड-रेखा को पार करने के लिए, हालैण्ड मे अर्नहेम और निजमिजिन पर की गयी भीषण बमवर्षा अपने लक्ष्यप्राप्ति मे असफल रही और जर्मन सेनाए डट कर सामना करने लगीं। १९४४ की पतझड का युद्ध बेल्जियम, लक्जेमबर्ग, एलसास और लोरेन की पहाडियो और जंगलो मे हुआ, जिनसे ८० वर्ष पहिले वर्जीनिया के जगलो के युद्धो का स्मरण हो आता था। घमासान युद्धो का तारतम्य जारी था; प्रत्येक पक्ष अपने पराक्रम की पराकाष्ठा पर था और प्रत्येक युद्ध अत्यधिक क्षतिपूर्ण था। शेल्डेट के मुहाने का युद्ध प्रमुख रूप से अंग्रेजो और कनाडा के सैनिको ने लडा था। इसने मित्र-राष्ट्रो के जहाजो के लिए एन्टवर्प का मार्ग खोल दिया था। ऐन्चेन और रोयर नदी के बाँधो के युद्ध को हुर्टजेन के जंगलो मे लडा गया था और जिसकी विजय आगामी फरवरी तक सम्पूर्ण रूप से प्राप्त नही की गयी थी। इसी प्रकार चारदीवारी वाले विशाल मेट्ज शहर और सार की तलहटी, स्ट्रासबर्ग और एलसास के युद्ध भी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। दिसम्बर के मध्य मे, आयजनहोवर की सेनाओ ने इन सभी युद्धो मे विजय प्राप्त कर ली थी और राइन पर आक्रमण करने के लिए तैयार खडी थी।

इसके बाद, स्थिति मे परिवर्तन हुआ, जिससे कुछ समय के लिए भयानक परिणाम दिखायी देने लगे। हिटलर ने मुख्य सेनापतियो की सलाह के विरुद्ध घबडा कर अपने शेष साधनो का उपयोग पश्चिम की ओर करना निश्चित

किया। हिटलर का उद्देश्य था कि, एक व्यापक आक्रमण के जरिये मित्र-राष्ट्रों की फौजों को विभाजित कर दिया जाये और वेह्मेस्ट के मोर्चा को चैनेल के पश्चिमी किनारों और पेरिस तक फिर सीमित कर दिया जाय। १५ दिसम्बर को हिमाच्छादित आर्डेनीज की पहाड़ियों पर जर्मनो की सेनाओं ने मोर्चाबन्दी की और बडी शीघ्रता से प्रारम्भिक सफलता प्राप्त कर ली। दस दिनों में ही, जर्मनी ने छुटपुट अमरीकी सुरक्षा-पंक्तियों को रौंध डाला, बास्टोगने-स्थित गेरीजन को घेर लिया और आर्डेनीज से होकर मियूस नदी में ५० मील तक घुस गये। कुछ समय तक, मित्र-राष्ट्रों का सम्पूर्ण मोर्चा ध्वस्त हो जाने का खतरा उत्पन्न हो गया। लेकिन, अमरीकी सेनाओं ने अपने को बडी शीघ्रता से सभाला। किनारे की सुरक्षा पंक्तियाँ बडी बहादुरी के साथ डटी रहीं, बास्टोगने की ध्वस्त गेरीजनों की सहायता के लिए शीघ्र ही १०१ हवाई डिवीजन आ पहुँची, जिसके प्रत्याक्रमण के फलस्वरूप जर्मनों का समस्त कार्यक्रम बिगड गया। पहिले जर्मनों के आक्रमण को रोका गया और बाद में उन पर प्रत्याक्रमण किया गया। जनवरी के मध्य तक जर्मनो की अब तक की सभी विजयो पर उनके विवेकहीन मोर्चे के कारण पानी फिर गया और उनके एक लाख बीस हजार सैनिक मारे गये तथा उन्हे सैकड़ों टैंकों और हवाई जहाजो से भी हाथ धोना पड़ा।

इसके बाद रूस ने वियना और बर्लिन तक व्यापक आक्रमण करने की अपनी शरद्कालीन योजना तैयार की और इधर मित्र राष्ट्रों ने राइन पार कर हिटलर को पश्चिम से घेरने की तैयारी की। जर्मन-सेनाएं नदी के पार पीछे हटीं और अपने लौटने के मार्गों के पुलों को नष्ट करती गयीं। लेकिन राइन पर उनकी देखरेख त्रुटिपूर्ण थी और ७ मार्च को एक अमरीकी अन्वेषक टुकडी ने बोन के निकट लुडेनडोर्फ पुल को अच्छी हालत में खोज निकला और उस पर अधिकार कर लिया। बस कुछ ही दिनों में अमरीकी सेनाओं की पाँच डिवीजन नदी पार कर उत्तर और दक्षिण में फैल गयीं। दो हफ्ते बाद युद्ध की भीषणतम बमवर्षा के साथ समस्त मित्र राष्ट्रों की सेना ने क्लीव से मेनहीन तक राइन पर मोर्चाबन्दी कर ली। पार आकर उन्होंने जर्मनो की पंक्तियों को शीघ्रता से नष्ट करना आरम्भ कर दिया और एक सशस्त्र डिवीजन तो एक दिन में ९० मील तक अन्दर घुस गयी। अमरीका की पहिली और नौवीं सेनाओं ने रूर के तीन लाख जर्मन सैनिकों को घेर लिया। पेटन की तीसरी पैदल सेना ने केसल तथा एल्ब नदी की ओर शीघ्रता से कूच किया। दक्षिण में पैच की

७-वीं पैदल-सेना ने बावेरिया से होकर चेकोस्लोवाकिया की सीमा की ओर कूच किया, और उत्तर में मोंटगुमरी की ब्रिटिश और कनाडा की फौजों ने किनारे से ब्रीमने और हेम्बर्ग से बाल्टिक की ओर धावा बोला। बस अब अन्त आ चुका था। रूसी सेनाएँ पूर्व और दक्षिण से और अमरीकी तथा ब्रिटिश सेनाएँ पश्चिम से घेरा डाले तैयार थीं। इटली में जर्मन सेनाएँ हथियार डाल रही थी। फलस्वरूप वेहरमेस्ट का भी क्रमशः विघटन होने लगा।

२५ अप्रैल को, रूसी और अमरीकी सेनाएँ एल्ब में मिलीं और इन दोनों फौजों ने जिन्होंने अपना-अपना अभियान दो हजार मील दूर नोर्मण्डी के किनारे तथा डिनीपर नदी के तट से आरम्भ किया था, जर्मनी को दो भागों में काट डाला। जर्मन-फौजों ने हथेली पर जान रख कर, बर्लिन की रक्षा की; लेकिन जब बर्लिन का पतन स्पष्ट हो गया, तब हिटलर ने आत्महत्या कर ली। पहिले ही कुपित इटली के लोगों ने मुसोलिनी की हत्या कर दी थी। ७ मई को बची-खुची जर्मन-सेनाओं ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार रीख, जिसे (हिटलर के अनुसार) एक हजार वर्ष तक विद्यमान रहना था, ध्वस्त पडा हुआ था।

लेकिन, इस विजय के एक प्रमुख सचालक अपनी योजना और उद्देश्य की सफलता को देखने के लिए जीवत न रहे। फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट की मृत्यु १२ अप्रैल को हो चुकी थी।

मित्र-राष्ट्रों की सेनाएँ जब नोर्मण्डी में युद्ध कर रही थी, अमरीका में दो बडे राजनीतिक दलों ने राष्ट्राध्यक्षीय चुनाव के लिए अपने प्रतिनिधियों का निर्वाचन किया। डेमोक्रेटों ने स्वाभाविक रूप से एक ऐसे व्यक्ति का चुनाव किया, जिसने उनको तीन बार विजय दिलवायी थी और जो अब सयुक्त राष्ट्रों को विजय के पथ पर नेतृत्व कर रहा था। इस दल ने ही पहिले चुनाव मे रूजवेल्ट को खड़ा किया। रिपब्लिकन-पार्टी ने वेंडेल विल्की को अपने घरेलू दृष्टिकोणों में न्यू डील के अत्यधिक निकट, विदेशी मामलों मे अत्यधिक अन्तरराष्ट्रीय, और अन्य मामलों मे अत्यधिक राजनीतिक बतलाने के कारण नापसन्द कर अपनी पसन्दगी न्यूयार्क के थामस ई. डेवी के प्रति की। थामस डेवी दल के एक सक्रिय एव नियमित कार्यकर्ता थे, घरेलू मामलो में इनकी विचारधारा सामान्य रूप से उदार और बाह्य रूप से घटनाचक्रों के दबाब के फलस्वरूप अन्तरराष्ट्रवाद से प्रभावित थी। हालाँकि चुनाव बड़ा डट कर हुआ;

लेकिन उसके निर्णय पर कभी भी किसी ने गम्भीरता से शका व्यक्त नहीं की थी। राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट के पक्ष मे ३६ राज्य और ४३२ चुनावमत थे· डेवी के पक्ष मे १२ राज्य और ९९ चुनावमत थे; आम मतदान ने रूजवेल्ट को ३५ लाख का बहुमत प्राप्त था।

रूजवेल्ट ने अपने चौथे उद्घाटन-भाषण मे न केवल विजय-प्राप्ति का वचन दिया, बल्कि विजय-प्राप्ति के बाद एक सुदृढ़ अन्तरराष्ट्रीय व्यवस्था का भी आश्वासन दिया। उन्होने कहा कि "हमको यह पता चल गया है कि, हम अकेले शान्ति से नही रह सकते हैं, हमारा कल्याण हमसे दूर अन्य राष्ट्रों के कल्याण पर निर्भर है। हमको इस बात का भी पता चल गया है कि हमको मनुष्यो की तरह रहना चाहिए, शुतुर्मुग की तरह नहीं और न कुत्तों की तरह। हम लोगो ने विश्व के नागरिक बन कर तथा मानव-समुदाय के नागरिक बन कर रहना सीख लिया है।"

जैसे जैसे विजय का आश्वासन मिलता गया, रूजवेल्ट का ध्यान शान्ति की इस विशाल समस्या और अन्तरराष्ट्रीय कानून की ओर आकर्षित होता गया और उन्होंने अपनी अधिकाधिक शक्तियों को इसके समाधान मे लगाया। फरवरी १९४५ मे उन्होने क्रीमिया मे याल्टा की यात्रा की और युद्ध तथा युद्धोत्तर समस्याओ के बारे मे स्टालिन, चर्चिल और उनके फौजी तथा प्रशासनिक सलाहकारों से विचार-विमर्श किया। पहिले से ही यह स्पष्ट हो गया था कि योरोप मे अब युद्ध की शीघ्र ही समाप्ति हो जायगी और हालॉकि जापान की पराजय के लिए एक या दो वर्ष और लग जायेंगे, फिर भी यह स्पष्ट हो गया था कि जापान की पराजय भी अब स्पष्ट है। इसलिए क्रीमिया या याल्टा का अधिकाश विचार-विमर्श केवल इस प्रकार के फौजी मामलों से सम्बन्धित था, जैसे कि प्रशान्त महासागर के युद्ध मे रूस का प्रवेश। फिर भी, इस सम्मेलन मे युद्धोत्तर विश्व के नियोजन पर भी काफी विचार-विमर्श किया गया और जब रूजवेल्ट और उसके फौजी सलाहकार याल्टा से लौटे, तो हैरी हापकिन्स के शब्दों मे उनका यह मत था:—

"यह उस दिन का सुप्रभात है, जिसके लिए हम इतने वर्षों से कल्पना और प्रार्थना कर रहे थे। हम लोगों को यह सम्पूर्ण रूप से विश्वास था कि, हम लोगों ने शान्ति के लिए प्रथम महान विजय प्राप्त कर ली है। और, हम सभी से मतलब है—समस्त सभ्य मानव जाति से।"

राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव-अभियान मे भी उनके विरोधी लोग रूजवेल्ट को एक

"थका हुआ बूढ़ा व्यक्ति" कहते थे। यह चित्रण एक प्रकार से सही भी था क्योंकि युद्ध ने उनकी शक्तियों पर काफी भार डाल दिया था और उनकी ओजस्वी भावना को भी कुण्ठित कर दिया था। वे याल्टा से बीमार होकर लौटे और पहिली बार कॉंग्रेस को उन्होने अपनी रिपोर्ट बीमार की पहियेदार कुर्सी पर बैठे-बैठे प्रस्तुत की। इसके बाद वे जोर्जिया स्थित वार्म स्प्रिंग्स के अपने घर मे आराम करने तथा सेन फ्रासिसको मे सयुक्त-राष्ट्र-सघ के प्रथम अधिवेशन के उद्घाटन की तैयारी के लिए गये। १२ अप्रैल को जैसे ही वे जेफरसन-दिवस पर एक भाषण लिख रहे थे, उनके मस्तिष्क मे रक्तस्राव का दौरा हुआ और उनका स्वर्गवास हो गया। उन्होंने जो अन्तिम शब्द लिखे थे वे स्वय उनके जीवन का प्रतिनिधित्व करते थे। "आनेवाले भविष्य की प्राप्ति मे यदि कहीं कोई रुकावट है, तो वह हमारा मौजूदा सदेह है। अतएव, हमे दृढ और सक्रिय विश्वास के साथ आगे बढ़ना चाहिए।"

प्रशान्त-महासागर में विजय : ग्वाडलकेनाल की पुनर्विजय वास्तव मे जापानियो की प्रगति रोकने, राबाउल पर भयानक बमवर्षा करने के लिए अड्डे प्राप्त करने और नवम्बर १९४३ मे आरम्भ किये जाने वाले व्यापक आक्रमण के लिए मार्ग प्रशस्त करना था। इस आक्रमण की रूपरेखा दो प्रकार से प्रस्तावित की गयी थी : न्यू-गायना के किनारे से हालमहेरा पर और केन्द्रीय फिलीपाइन पर मैकआर्थर द्वारा आक्रमण और एडमिरल निमिट्ज द्वारा द्वीप के निकट पहुँचना जहाँ से कि जापान मुख्य द्वीप पर बम फेंके जा सके। दोनों ही सर्वांगीण आक्रमण थे: लेकिन पहिले आक्रमण मे पैदल सेना का काफी कार्य था, जबकि दूसरे आक्रमण का दायित्व नौसेना और सुरग बिछानेवाले दल पर सौपा गया। जापान पर आक्रमण करने का तीसरा सभव मार्ग था, बर्मा से होकर बर्मा रोड से चीन तक आने का। लेकिन, यहाँ पर परिवहन और रसद भेजने की बडी भारी कठिनाई थी और राष्ट्रवादी चीनियो से कोई विशेष मदद प्राप्त नही हो रही थी। हालॉंकि बर्मा अन्त मे शत्रु से खाली हो गया, लेकिन इस अभियान से युद्ध के परिणाम पर कोई प्रभाव नहीं पडता था।

१ नवम्बर १९४३ को, उत्तरी सोलोमस में बौगेनवाइल-द्वीप पर पूर्व नियोजित सर्वांगीग आक्रमण कर दिया गया। राबाउल पर आक्रमण होने के भ्रम से जापानियों ने प्रत्याक्रमण किया: लेकिन उनको एम्प्रेस आगस्टा की खाडी

के युद्ध मे सम्पूर्ण रूप से पराजित कर दिया गया। बौगेनवाइल से अमरीकी सेनाएँ रावाउल के पूर्वी और पश्चिमी द्वीपो मे फैल गयी और लगातार बमबाजी के फलस्वरूप उस अड्डे को ध्वस्त कर दिया। इस पट्टी पर अधिकार करने के पश्चात्, मैकआर्थर उत्तरी गायना के किनारे पर आक्रमण कर सकते थे तथा एडमिरल निमिट्ज ओकीनावा की ओर समुद्र मे आगे बढ सकते थे।

जापान की ओर बढने का आधार अमरीकी नौसैनिक महान विकास तथा नौसैनिक और हवाई शक्ति की इस हद तक की वृद्धि थी, जिसके कारण वह न केवल जापान से बल्कि युद्ध मे शामिल होनेवाली सभी शक्तियो के सयुक्त नौसैनिक दल से भी अधिक थी। वास्तव मे, एडमिरल हेल्से के विख्यात टास्क फोर्स ५८ (जिसका दूसरा नाम ३८ था) ही जापानियो से अधिक शक्तिशाली थी। १९४४ मे ग्रीष्म के मध्य तक अमरीकी नौसेना मे चार हजार से भी अधिक जहाज थे, जिनमें ६१३ युद्धपोत थे। पर्ल हार्बर-काड के बाद सात नये बडे जहाज प्रशान्त के बेडे मे शामिल हो चुके थे और उनके अतिरिक्त लगभग एक हजार वायुयान-वाहक थे, जिनमे हजारो हवाई जहाज आ सकते थे जैसे ग्रूमेन वाईण्डकेट और हेलकेट कार्टिस हेल ड्रायवर, डगलस डाटलैस तथा अन्य शामिल थे।

अब यह शक्तिशाली सेना ध्वन्सात्मक आक्रमण करने के लिए प्रस्तुत थी। एडमिरल निमिट्ज का उद्देश्य समस्त दक्षिण और केन्द्रीय प्रशान्तसागर मे फैले हुए शत्रुओ के छोटे-छोटे अनेक अड्डो को कम करने का नही था। उनका मोहरा था कि, प्रत्येक बडे द्वीपो के वर्ग के द्वीपो पर आधिपत्य कर लिया जाये, उन पर हवाई-अड्डे बनाये जॉय और फिर जापान के सैकडो मील निकटवर्ती दूसरे द्वीपो पर आक्रमण किया जाये, जिससे कि जापानियो की सुरक्षित सेनाएँ बाहरी द्वीपो की सुरक्षा मे ही लगी रहे। इस प्रकार दक्षिण फिलिपाइन मे मिण्डेनाओ और चीन के किनारे से दूर फारमोसा-जैसे द्वीपो तक को छोड दिया गया। इस प्रकार जापानियो ने, अपना अत्यधिक विस्तार कर फौजो को इधर-उधर भेज कर अपनी सुरक्षा की समस्या को और भी जटिल बना लिया था।

पहिला आक्रमण गिलबर्ट-द्वीप मे तारावा पर करना निश्चित किया गया था। इस छोटे द्वीप मे लगभग ३००० जापानी नौसेना बचाव की अत्यन्त सुदृढ व्यवस्थाओ से सज्ज उपस्थित थी। अमरीकियो को पहिली बार इस प्रकार के मोर्चे का सामना करना पडा था, इस पर किये गये आक्रमणो के फलस्वरूप अमरीका के एक हजार सैनिक मारे गये और लगभग २ हजार

जख्मी हुए। दो महीने बाद नौसेना ने सैकड़ों मील उत्तर की ओर मार्शल्स की ओर प्रस्थान किया। क्वाजलीन के द्वीप को, जहाँ पर आठ हजार जापानी सेनाएं विद्यमान थीं, आक्रमण का प्रथम लक्ष्य बनाया गया। ३१ जनवरी १९४४ को समुद्रीसेना उतरी और उन्होने तीन दिनों में ही शत्रु को समाप्त कर द्वीप को जीत लिया। इसके बाद, उन्होंने ३५० मील पश्चिम की ओर एनीबेटोक पर आधिपत्य कर लिया।

राबाउल और ट्रूक को ध्वस्त करके तथा गिल्बर्ट्स और मार्शल्स द्वीपो पर अमरीका का अधिकार होने के बाद, पाँचवी फौज ने १२०० मील पश्चिम और टोकियो से केवल १५०० मील दूर मरियाना की ओर कूच किया। यहाँ का प्रमुख उद्देश्य सायमन था, जिसे जापानियों ने एक शक्तिशाली हवाई और नौसेनिक अड्डे में परिवर्तित कर दिया था और दूसरा स्थान था ग्वाम, जिसे दिसम्बर १९४१ के आक्रमण में अमरीका के कब्जे से छीन लिया गया था। एडमिरल स्प्रूयांस की फौजों के अपने पूर्व परिचित समुद्र में पहुँचते ही जापानियों का जहाजी बेड़ा लड़ने के लिए बाहर आ गया। इसके बाद फिलिपाइन-सागर की लड़ाई (जून १९-२०, १९४४) वायुयान-वाहक के हवाई जहाजों द्वारा हुई। उन्होने शत्रु के वायुयान वाहक बेड़े को ध्वस्त कर दिया तथा युद्धपोतों और विध्वसकों को भी बुरी तरह हानि पहुँचायी। इसके बाद प्रशान्त-महासागर की कड़ी लड़ाई के बाद मरियानास ने धीरे-धीरे शत्रु को बाहर निकाल दिया। सायपान को जीतने मे तीन हफ्ते लगे और उसमे अमरीका के १५,००० सैनिक मारे गये। ग्वाम पर आधिपत्य करना भी वास्तव मे एक टेढ़ी खीर बन गया था। फिर भी, अगस्त तक मरियानास पर अमरीकी सेनाओं का आधिपत्य हो गया था और फिर शीघ्र ही बी-२९ बमवर्षक अपने हवाई अड्डों से जापान की मुख्य भूमि पर बम बरसाने के लिए मँडराने लगे।

दक्षिण और केन्द्रीय प्रशान्त-महासागर की विजय ने फिलिपाइन-दीपो पर सीधा आक्रमण करने का मार्ग प्रशस्त कर दिया था। अमरीकी विमानों की उडान इतनी सुदक्ष थी कि जनरल मैकआर्थर ने मुख्य दीप पर आक्रमण करने के लिए मिनान्डो की अवहेलना करने का निश्चय किया। २० अक्टूबर १९४४ को ६०० जहाजों का एक विशाल बेडा, जिसमे एक हजार सैनिकों के परिवहन जहाज भी थे, लेट की खाड़ी की ओर बढ़ा और मैकआर्थर ने किनारे पर पहुँच कर कहा, "फिलिपाइन के लोगों, मै वापस आ गया हूँ

. हमारे साथ हो जाओ" और जनता ने वैसा ही किया। थोड़े ही समय मे फिलिपाईन मे उनके साथ हजारो व्यक्ति हो गये, और उनके साथ फिलिपाइन के वे वफादार लोग भी हो गये, जो विजेता जापानियो के साथ गुरिल्ला-युद्ध लड रहे थे।

इस चुनौती को जापानी सहन न कर सके और उत्तेजना के साथ उन्होने अपने सभी साधनों से अमरीकी फौजों पर आक्रमण बोल दिया। लेट की खाडी का नौसैनिक युद्ध, महायुद्ध का अन्तिम और महानतम युद्ध था। यह वास्तव में तीन मोर्चो का युद्ध था और प्रत्येक युद्ध मे अमरीकी सेनाओं की विजय हुई। इस युद्ध मे जापानियों के जहाजी बेडे को जो हानि पहुँचायी गयी, इससे वह कभी भी नहीं सँभल पाया और उसके बाद वह अमरीकी प्रगति मे कोई विशेष बाधा भी नहीं पहुँचा सका। मैकआर्थर ने शीघ्रता से लेट को रौंध डाला और फिर उनकी सेनाए लुजन की ओर बढीं, फरवरी १९४५ मे मनीला का पतन हो गया और अप्रेल तक सभी द्वीपो को स्वाधीन कर दिया गया।

यहाँ जब मैकआर्थर फिलिपाईन द्वीपो पर विजय प्राप्त कर रहे थे, नौसैनिक बेड़ा जापान की ओर बढ़ रहा था। आयवो जिम्पा का छोटा द्वीप टोकियो से केवल ८०० मील दूर था। लगभग एक महीने तक हवाई जहाजो ने रोजाना बमबाजी की; और फिर एक हफ्ते तक ६ युद्धपोतो, क्रूजरो और डिस्ट्रायरो ने जापानियों की सुरक्षा-पक्तियो को तोडा। १९ फरवरी को समुद्री टुकडियाँ किनारे पर आ उतरी। जापानी सुरक्षा-पक्तियो को समाप्त करने मे एक महीना लग गया और ५ हजार सैनिक मारे गये। लेकिन, मार्च के मध्य तक अमरीकी बममार हवाई जहाज टोकियो तक प्रहार करने लगे और विस्फोटक-बमो की मार ने जापानियों को भारी हानि पहुँचायी, जिसकी तुलना ब्रिटिश आक्रमणो से हैम्बर्ग मे क्षति से की जा सकती है। इसके बाद फौजो और नौसेना ने जापानियो के गृह द्वीपपुंज के प्रथम द्वीप रियूक्युस मे ओकीनावा मे प्रवेश किया। घबराहट मे जापानियो ने हाराकरी, और हवाई आक्रमण करना आरम किया जिससे अमरीकी बेडे की काफी हानि हुई; लेकिन वे आक्रमण को रोकने मे असमर्थ रहे। सभी जगह पर जापानियो ने तीन महीने तक लडाई जारी रखी, लेकिन जून के अन्त मे ओकीनावा पर भी विजय प्राप्त कर ली गयी।

इस समय तक योरोप में युद्ध समाप्त हो चुका था और जापान का पतन भी अब सन्निकट था। अमरीकी पनडुब्बियों ने जापान का समस्त व्यापारी जहाजी बेडा नष्ट कर दिया था; नौसैनिक हवाई-जहाज बन्दरगाहों मे शत्रु की

बची-खुची जहाजी शक्ति को डुबाने में लगे हुए थे; एडमिरल हेलसे की फौजें किनारों पर मनमानी तबाही कर रही थी· टोकियो मे भीषण बरबादी का दृश्य दिखायी देता था और अधिकाश औद्योगिक नगरों को विस्फोटात्मक बमबाजी से ध्वस्त कर दिया गया था। जापानी नेताओं को अपनी पराजय ज्ञात हो गयी थी, लेकिन वे अपनी जनता से सच बात कहने मे डरते थे और उनको आशा थी कि अन्त तक भयानक युद्ध जारी रखने से वे मित्र-राष्ट्रों से सन्धि की कुछ अच्छी शर्तें स्वीकार करवा लेंगे।

लेकिन, अब मित्र-राष्ट्र किसी प्रकार की सन्धि नही करना चाहते थे। अब वे अपनी समस्त सशस्त्र शक्ति को जापान के विरुद्ध लगा सकते थे। इसके अलावा उनको यह बात भी मालूम थी कि अब रूस भी प्रशान्त के युद्ध मे उतरनेवाला है। इसके अलावा जुलाई मे प्रथम अणुबम का न्यू-मेक्सिको के रेगिस्तान मे परीक्षण किया जा चुका था और अब यह अन्तिम शस्त्र जापान के विरुद्ध उपयोग मे लाने के लिए तैयार था। अणु-बम का उपयोग किया जाना चाहिए था या नहीं, यह एक प्रश्न काफी समय तक विवादास्पद रहेगा। लेकिन, ये सब विचार जर्मनी मे पोट्सडाम मे हुई बैठक मे मित्र राष्ट्रो के नेताओ द्वारा जापान को दी गयी इस चुनौती के पृष्ठ भूमि मे थे : "आत्मसमर्पण करो या जीवन से हाथ धोओ।" जापानी सरकार ने इस अन्तिम चेतावनी की अव-हेलना की। इसके बाद ९ अगस्त को अकेला बी-२९ हिरोशिमा के औद्योगिक नगर के ऊपर गया और उसने अणु-बम गिरा दिया; तीन दिन बाद दूसरा अणु-बम नागासाकी पर गिरा दिया गया। दोनों शहर नष्ट हो चुके थे और मृतकों की सख्या लगभग एक लाख हो चुकी थी। सपूर्ण नाश की चुनौती के भय से जापान ने १४ अगस्त को हथियार डाल दिया और सितम्बर को 'यू. एस. एस. मिसूरी' जहाज पर बिना शर्त आत्मसमर्पण करने के लिए हस्ताक्षर कर दिये। विश्व-इतिहास का भीषणतम युद्ध समाप्त हो गया।

यह युद्ध वास्तव मे एक ऐसे सर्वनाश के साथ समाप्त हुआ, जिसने यह बात स्पष्ट कर दी कि मानवता इस प्रकार के दूसरे युद्ध का सामना नहीं कर सकती है। प्रत्येक सभ्य व्यक्ति ने आशा की थी कि प्रथम महायुद्ध सभी युद्धों को समाप्त करने का युद्ध होगा। उस आशा मे उनकी घोर निराशा हुई। बीस वर्षों की सकटकालीन अवधि के पश्चात्, महत्वाकाक्षी व्यक्तियो ने हिंसा और आतक के जरिये अपने उद्देश्यो की प्राप्ति के लिए फिर साहस किया। वे लगभग सफल हो ही चुके थे। लेकिन, अन्त मे वे बुरी तरह से असफल हुए·

और उन्होंने इस बात को पुनः प्रमाणित कर दिया कि लोहा लोहे से ही कटता है। इस असफलता के फौजी कारण कुछ भी हो लेकिन उसके गहरे कारण काफी स्पष्ट हैं। धुरी-राष्ट्रो का पतन इसलिए हुआ कि, उन्होंने मानवीय मूल्यों और मानवीय विश्वासो की अवहेलना की, जिसके कारण उनके विरुद्ध वे सभी शक्तियॉ हो गयी जो अब भी मानवता को मूल्यवान समझती हैं। अन्त में, विजय उन्ही लोगों की हुई जिनका विश्वास सद्‌गुणों, विवेक और मानव-सम्मान मे निहित था।

विश्व की स्वतंत्र जनता के वे गुण युद्ध के सकट से समाप्त नहीं हुए, एवं मलिन नही पडे, जिनके कारण विजयश्री प्राप्त हुई थी। राष्ट्राध्यक्ष रूजवेल्ट ने अपने युद्ध के सन्देश मे कहा था, "हमारा सच्चा लक्ष्य सग्राम के वीभत्स दृश्य से कही श्रेष्ठ और आगे है। जब हम बल प्रयोग करते हैं तब हम इस बात का सकल्प करते हैं कि, इस बल का उपयोग हमारे अन्तिम लक्ष्य तथा 'तात्कालिक अभिशाप' की ओर समान रूप से किया जायेगा।"

निस्सन्देह द्वितीय महायुद्ध ने 'तात्कालिक अभिशाप' को कुण्ठित कर दिया। लेकिन, इस युद्ध ने 'अन्तिम लक्ष्य' की प्राप्ति की है, इसका निर्णय भविष्य ही करेगा। फिर भी, युद्ध ने इस प्रकार की अवस्थाओं को जन्म दिया है, जिसमे मनुष्य यदि चाहे, तो उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं। अमरीकी जनता पर युद्ध ने एक अपूर्व दायित्व सौपा। उन पर काफी हद तक युद्ध से ध्वस्त विश्व के पुनर्वास, पाश्चात्य ईसाईयत की सभ्यता का पुनर्निर्माण, विश्व के प्रत्येक स्थान के जनतंत्र और स्वतत्र जनता की गारण्टी देने मे समर्थ सुदृढ एक अन्तरराष्ट्रीय सगठन की स्थापना का दायित्व था। युद्ध के समाप्त होने के बाद, पॉच वर्षों मे उसने इनमे से अधिकाश दायित्वों को पूरा किया। पश्चिमी विश्व के पुनर्निर्माण की दिशा मे, अमरीका ने उदारतापूर्वक योग दिया, विश्व के सुदूर कोने-कोने मे जनतत्र तथा स्वाधीनता का समर्थन किया गया, और शान्ति की स्थापना के लिए सयुक्त-राष्ट्र-सघ की स्थापना और उसे सुदृढ बनाने मे नेतृत्व किया। फिर भी, दुनिया युद्ध तथा युद्ध की अफवाहों से त्रस्त थी और क्षितिज पर काले बादल मॅडरा रहे थे।

बाईसवाँ परिच्छेद

शीतयुद्ध

हैरी ट्रूमैन : ह्वाइट-हाउस में रूजवेल्ट के उत्तराधिकारी अमरीका के लिए अपने उत्तरदायित्वों के भार से विचलित हो उठे किन्तु केवल अमरीका के लिए ही। हैरी एस. ट्रूमैन में निश्चय पर पहुँचने, आत्मविश्वास और दृढ़ता के वे सभी गुण मौजूद थे, जिन्होंने उन्हें एक सरल व्यक्तित्व प्रदान किया था। मिसिसिपी के पश्चिमवासी ये दूसरे राष्ट्राध्यक्ष, पश्चिमी मिसूरी के ग्रामीण वातावरण में पले थे और उन्होंने हाई-स्कूल तक की शिक्षा प्राप्त की थी। उनके अनुभव विभिन्न थे। बैंक-क्लर्क, कृषक, प्रथम विश्वयुद्ध की अवधि में फ्रांस स्थित तोपखाने के अधिकारी, कंसास नगर के राजनीतिज्ञ, न्यायधीश (वास्तव में तहसील के प्रशासनिक अधिकारी), और अन्त में अमरीकी सिनेटर। सिनेट में उन्होंने न्यू-डील का समर्थन किया था, फार्म और श्रम-विधानों के निर्माण-कार्य में विशेष रुचि ली थी और अपनी दूसरी अवधि में सुरक्षा-व्यय के सम्बन्ध में जाँच-पड़ताल करनेवाली विशेष समिति के कुशल अध्यक्ष के रूप में वे राष्ट्रव्यापी ख्याति प्राप्त कर चुके थे। उपराष्ट्राध्यक्षपद की उम्मीदवारी के लिए उनके चुनाव ने कई डेमोक्रेटों को निराश कर दिया था, जो अपने को उसके लिए अधिक अच्छा अधिकारी समझते थे। इनमें हेनरी वालेस और जेम्स एफ. बार्नस थे। ट्रूमैन ने एक को वाणिज्य-सचिव दूसरे को विदेश-सचिव नियुक्त करके आंशिक रूप से धैर्य बँधाया।

घटनाओं ने शीघ्र ही प्रमाणित कर दिया कि ट्रूमैन में न केवल राष्ट्रीय बल्कि अन्तरराष्ट्रीय नेतृत्व के भी उल्लेखनीय गुण मौजूद थे। छोटी-मोटी समस्याओं को हल करने में, निश्चय ही उन्होंने त्रुटियाँ कीं तथा कुछ गलत नियुक्तियाँ करके, पुराने मित्रों द्वारा विश्वासघात किये जाने पर भी उनका समर्थन करते रहने में और कई विभिन्न अनधिकृत अनुत्तरदायी वक्तव्य जारी करके भी भूलें कीं। उनके भाषण प्रभावहीन और लेख भी हीन थे। राजनीतिक सभाओं में मंच के पीछे केवल सामान्य बातचीत और तत्काल उत्तर

देने की कला मे वे अद्वितीय थे। तत्कालीन परिस्थितियो को आवश्यकता से अधिक सरल दृष्टि से देखने की उनकी प्रकृति थी और बहुधा समस्याओं का एक पक्ष ही उनके निर्णय को प्रभावित करने मे सफल सिद्ध होता था। किन्तु, उनके विचार स्पष्ट और मस्तिष्क निश्चय पर पहुँचने मे दृढ था। अधिकाश अमरीकी राष्ट्राध्यक्षो की अपेक्षा वे अधिक शिक्षा-प्राप्त थे, क्योंकि उन्होंने विस्तृत अध्ययन किया था—विशेष रूप से अमरीकी इतिहास। प्रजातंत्र के लिए उनमे चाव था और विल्सन तथा फ्रेंकलिन रुजवेल्ट के समान इस बात मे उनका विश्वास था कि विश्व-मामलो मे अमरीका ही उत्साहप्रद अग्रगामी हो। कुछ ही राष्ट्राध्यक्ष इतने उद्यमी हुए हैं, वे दिन मे लगातार १६ घटे तक काम करते थे। कार्य तथा नेतृत्व मे वे उत्साहपूर्वक विश्वास करते थे और जब सकट-काल आया तो यह शातिप्रेमी व्यक्ति उसका सामना करने के लिए तात्कालिक निश्चय और भयकर युद्ध करने योग्य शक्ति के साथ उठ खडा हुआ।

१९४५ मे सत्तारूढ होने पर, योरोप मे युद्ध समाप्तप्राय था और एशिया में शाति आने मे केवल चार महीने की कमी थी। किन्तु, अधिक उलझी हुई युद्धोत्तर समस्याएँ मुँह बाये हुए सामने खडी थीं। वे अधिक कठिन इसलिए प्रमाणित हुई कि, उनको अस्थायी रूप से कम महत्व प्रदान किया गया था। प्रथम विश्व युद्ध के ही समान अमरीकी विश्व-मामलो मे एक नये युग की बात तत्परतापूर्वक करने लगे। सामूहिक सुरक्षा तत्र के बारे मे वे बहुत अधिक आस्था रखने लगे और सैनिको को स्वदेश लौटाने, आर्थिक नियत्रणो को ढीला करने मे असावधानीभरी शीघ्रता दिखलाने लगे। अधिकाश लोगो की राय थी कि अमरीका को केवल घरेलू समस्याओ की ओर ही ध्यान देना चाहिए। शीघ्र ही ही ऐसे लोगो का भ्रम बेढगे तौर पर दूर हो गया।

स्वय ट्रूमैन का भी इस उतावलीभरी आशावादिता मे थोडा बहुत विश्वास था। उन्होंने 'सामान्य स्थिति' के दबाव के आगे नतमस्तक होकर, एक ऐसे कागज पर हस्ताक्षर कर दिये, जिसके द्वारा उधार पट्टा के अन्तर्गत निर्यात की जा रही वस्तुओं पर अचानक ही इस प्रकार रोक लग गयी कि हमारे कुछ मित्र क्षतिग्रस्त और अपमानित अनुभव करने लगे। उन्होंने व्यावसायिक अनुदार-वादियों की माँग को स्वीकार करते हुए, अधिकाश मूल्य नियत्रणों को समाप्त कर दिया। दोनो ही कदमो पर लगभग तत्काल ही उन्हे खेद भी हुआ। उनके प्रशासन ने शीघ्रतापूर्वक उत्साह के साथ सेवाओं को भग करना प्रारम्भ किया और कुछ यूरोपीय क्षेत्रों से अपने सैनिक दस्ते खींच लिये, जिन्हें वास्तव मे वहाँ

रहना चाहिए था। उन्होंनें सहर्ष संयुक्त-राष्ट्र के निर्माण-कार्य को पूर्ण करने में, जो अन्तरराष्ट्रीय सहयोग का साधन था, सहयता प्रदान की। यदि अमरीका ने सयुक्त-राष्ट्रों मे अधिक आशा रखी थी, तो कम-से कम उसने इस सस्था को एक शक्ति तो प्रदान की जब कि उसने लीग आफ नेशस को वह शक्ति प्रदान करने से इनकार कर दिया था। देश ने विल्सन के दिनो से एक शिक्षा ग्रहण कर ली थी।

संयुक्त-राष्ट्र-संघ : सयुक्त-राष्ट्र-संघ को जर्मनी, इटली और जापान के विरुद्ध परस्पर मित्रो से प्रारम्भ किया गया था। यह सस्था अन्त मे ६० देशों की सदस्यता तक पहुँच गयी। सघर्ष के मध्य, अक्टूबर १९४६ मे अमरीका, ब्रिटेन और रूस—बाद मे राष्ट्रवादी चीन भी जिसमे शामिल हुआ—के विदेश-मंत्रियों ने इस सधि पर हस्ताक्षर कर दिये और उसे एक स्थायी सस्था का रूप प्रदान कर दिया। कॉग्रेस ने इस कार्य का प्रबल समर्थन किया; एक भूतपूर्व रिपब्लिकन पृथकवादी मिचीगन के आर्थर एच. वाडेनबर्ग ने इस मार्ग का नेतृत्व किया। तब १९४४ के ग्रीष्म के अन्त मे, उम्बरटन ओक्स वाशिंगटन मे विशेपज्ञों का एक सम्मेलन हुआ और उसने सयुक्त राष्ट्र सघ के प्रस्तावित घोषणापत्र की मुख्य रूपरेखा तैयार की। अधिकाश मामलो मे यह लीग का सरल और दृढ़ किया हुआ रूप था। विश्वशाति को बनाये रखने का उत्तर-दायित्व सुरक्षा-परिषद को वहन करना था; एक वृहत् सभा को शिकायत और वादविवाद का विस्तृत मंच बनना था; परिषद् मे पॉच स्थायी सदस्यों का विधान था—अमरीका, ब्रिटेन, रूस, फ्रास और चीन—और छः अन्य, जिन्हे वृहत् सभा दो वर्ष की अवधि के लिए चुन सके। परिषद् का कोई भी स्थायी सदस्य उसके द्वारा उठाये गये कदमों पर विशेषाधिकार का प्रयोग कर सकता था।

ट्रूमैन-प्रशासन की अवधि की प्रथम महान घटना थी, सयुक्त-राष्ट्र-सम्मेलन का सेनफ्रासिस्को मे अधिवेशन, जो अप्रैल २५, १९४५ को उम्बरटन ओक्स योजना पर वाद-विवाद के लिए प्रारम्भ हुआ। ४८ प्रतिनिधि राष्ट्र तीन मुख्य भागों मे विभाजित हो गये : यूरोपी शक्तियॉ, रूस, महान पश्चिमी शक्तियो और आस्ट्रेलिया के नेतृत्व मे कुछ छोटे विशिष्ट पश्चिमी राष्ट्र। रूस ने सामान्य रूप से बाधा डालने का कार्य किया। वह विशेषाधिकार का व्यापक प्रयोग करने का प्रयत्न करता रहा, ताकि सयुक्त-राष्ट्र-सघ आक्रमण मे

गम्भीरतापूर्वक हस्तक्षेप करने के लिए निर्बल ही रहे। उसे आशा थी कि, इसके प्रयोग द्वारा वह भ्रम उत्पन्न किये रहेगा और विश्व मे विभाजन कर सकेगा। रूसी विदेश मत्री मोलोटोव ने हठ के साथ अर्जेटाइना के सदस्य रूप मे प्रवेश करने का असफल विरोध किया। प्रमुख पश्चिमी नेता,—जिनमे एन्थोनी ईडन प्रमुख ब्रिटिश वक्ता और ई. आर. स्टेटीनियस, हैराल्ड स्टासन तथा वडेनवर्ग जैसे प्रमुख अमरीकी प्रतिनिधियो ने सयुक्त-राष्ट्र-सघ को शाति के लिए सुदृढ और निष्ठावान साधन बनाने के लिए ईमानदारी से परिश्रम किया। आस्ट्रेलिया के विदेश-मत्री हर्बर्ट इवाट छोटे राष्ट्रों के प्रबल समर्थक थे, और इस बात के इच्छुक थे कि, वह और भी दृढ बन जाये। सम्मेलन ने अन्तिम रूप से निर्णय लिया कि परिपद के स्थायी सदस्य राष्ट्रो के मध्य महत्वपूर्ण और विशिष्ट समस्याओ पर विशेषाधिकार का प्रयोग कर सकते हैं, वे उनके द्वारा उठाये जाने के लिए 'कार्यनीति'-सम्बन्धी विवाद पर उसका प्रयोग नही कर सकते। इस निर्णय ने एक ऐसे मच के रूप मे, जहॉ से विश्वमत को उठाया और बुलन्द किया जा सकता है, सयुक्त राष्ट्र सघ को सुदृढ बनाने मे सहायता प्रदान की।

सयुक्त राष्ट्र-सघ के विपय पर, सिनेट ने तत्काल निर्णयात्मक कार्यवाही की। घोपणापत्र ८९ : २ मतो से स्वीकार कर लिया गया। इससे इस प्रश्न पर जनभावना का ठीक-ठीक पता चलता है और जब सयुक्त-राष्ट्र-सघ ने न्यूयार्क नगर की ईस्टन नदी के पार्श्व मे, अपना स्थायी कार्यालय बनाया, तो अमरीकी रुचि और स्वीकृति पूर्वापेक्षा कहीं बढ़ गयी। वास्तव मे, बाद मे कई दर्शको ने शिकायत की कि, कई अमरीकी सयुक्त-राष्ट्र-सघ को विश्व-सस्था की अपेक्षा अमरीकी संस्था समझते हैं। पृथकवाद का किसी भी प्रकार अन्त नहीं हुआ था; किन्तु सर्वत्र वह बचाव की स्थिति मे था। राष्ट्र ने अन्त मे समझ लिया कि युद्ध कहीं भी हो, वह सर्वत्र सभी राष्ट्रो के लिए खतरा उत्पन्न कर देता है और यह कि शाति अविभाज्य है।

फेयर डील (उचित लाभ) : ट्रूमैन ने १९४५ की ग्रीष्म-ऋतु में अपना ध्यान घरेलू मोर्चे की ओर देने का प्रयत्न किया। वे राष्ट्र को प्रगतिशील मार्ग पर आगे बढ़ाने के लिए कटिबद्ध थे। देश युद्ध के पश्चात् भारी ऋण का सामना कर रहा था; किन्तु साथ ही उसकी उत्पादन शक्ति मे भी बेहद वृद्धि हो चुकी थी। वैज्ञानिक खोज और इजीनियरिंग प्रगति से सहायता पाकर

सामूहिक उत्पादन प्रणालियॉ प्रति वर्ष पहले से अधिक आश्चर्यकारक कार्य कर रही थी। युद्ध के उत्कर्ष पर १९४४-४५ में वस्तु-निर्माण, कृषि और यातायात के सभी रिकार्डों से भी अधिक बढ चुके थे। उत्पादन १९२९ के उत्पादन की अपेक्षा अढाई गुना बढ़ जाने का अनुमान था। भूखा और निर्धन बन गया संसार अमरीका से उपलब्ध सभी वस्तुओ की माग कर रहा था और यह आशंका कि सैन्य भंग होने को परिणाम से भयकर बेकारी उत्पन्न हो सकती है, व्यर्थ प्रमाणित हुआ। किन्तु, ज्यों-ज्यों उत्पादन में वृद्धि होती गयी—१९५० मे राष्ट्रीय आय २७५ अरब डालर थी जब कि भयंकर मदी के दिनों में वह केवल ४० अरब डालर ही थी: प्रश्न उठने लगा कि, क्या समृद्धि समान रूप से सबके हिस्से मे पडेगी? क्या सामाजिक न्याय की प्रतिष्ठा की जायेगी?

रूजवेल्ट के शिष्य होने के नाते स्वाभाविक ही था कि ट्रूमैन न्यू-डील —नये कार्यक्रम—को जारी रखना चाहते थे। सितम्बर १९४५ मे, उन्होंने उन लोगों को उपेक्षापूर्ण उत्तर दिया, जिन्होंने घोषणा की थी कि छटनी और एकीकरण का अवसर आ पहुँचा है। काग्रेस के समक्ष भाषण देते हुए उन्होंने एक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जिसे 'फेयर डील'—उचित लाभ—का नाम दिया। इसके अन्तर्गत आवश्यकता पड़ने पर पूर्ण रोजगार की व्यवस्था, न्यूनतम वेतन दरों में वृद्धि, सामाजिक-सुरक्षा प्रणाली को विस्तृत बनाने, गदी बस्तियों को हटाने और अच्छे मकानों के लिए संघीय खर्चे, अच्छी व ऊँची फसलों के लिए सहायता और मिसूरी, कोलम्बिया तथा अन्य नदियों पर बाँध बनाने, बिजलीघर खडा करने के लिए सरकारी कार्यवायी करायी जा सकती थी। स्पष्ट था कि, वे पुराने न्यू-डील के श्रमिक और कृषक के संतुलन को बनाये रखना चाहते थे, ताकि देश को एक परिवर्तनशील सामाजिक और आर्थिक प्रजातंत्र का रूप प्रदान किया जा सके। किन्तु, उन्हे कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। ज्योंही कृषि-मूल्यों मे गिरावट होने लगी और मजदूरी का बढना जारी रहा, कृषि और श्रम-दल, जिनका वास्तव में कभी भी एक दूसरे के प्रति मेल नही था, पृथक हो गये। अनुदार व्यावसायिक और पेशेवर तत्व कम सरकारी नियन्त्रण और कम करों के इच्छुक थे। कई दक्षिणवासी श्वेताग ट्रूमैन द्वारा प्रति पुरुष कर (पोलटैक्स) और बिना वैध निर्णय के भार डालने के विरुद्ध संघीय विधान के लिए आग्रह करने पर नीग्रो लोगों को काम मे उचित भाग देने के लिए युद्धकालीन 'फेयर एम्प्लायमेण्ट प्रेक्टिसेस कमेटी' को जारी रखने के लिए

उत्तेजित हो उठे। काग्रेस मे शीघ्र ही ट्रूमैन को रिपब्लिकन अनुदारो और दक्षिणी डेमोक्रेटिक वारवन्स की लौह-दीवार का सामना करना पडा।

शायद फेयर-डील कार्यक्रम का सर्वाधिक महत्वपूर्ण तात्कालिक परिणाम यह था कि, उसने न्यू-डील द्वारा प्राप्त लाभो का सरक्षण किया। उसने प्रगतिशीलों को एकत्र होने का अवसर दिया और यह सूचना दे दी कि प्रशासन प्रत्येक उल्टे कदम का सामना करेगा। दीर्घ अवधि मे ट्रूमैन के अधिकाश प्रस्ताव कानून वन गये। किन्तु, ऐसा होने के पूर्व एक दसवर्षीय सघर्ष, जिसमे कई वाधाओ और कई व्यक्तियो— रिपब्लिकन और डेमोक्रेटो—के विरोध का सामना भी करना पडा। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि, देश ने ऐसी युद्धोत्तर प्रतिक्रिया—जैसी कि गृहयुद्ध और प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् उत्पन्न हुई थी—का कभी अनुभव नहीं किया था।

शांति के लिए प्रयत्न : उच्च सरकारी अधिकारियो ने सामान्य जनता की अपेक्षा अधिक तीव्रता से यह आशका प्रकट की थी कि शातिपूर्ण विश्व की स्थापना कठिन और शायद असम्भव कार्य होगा। अपनी मृत्यु से पूर्व रूजवेल्ट ने स्टालिन-शासन के आक्रमणकारी लक्ष्यो को समझना प्रारम्भ कर दिया था। रूस-स्थित राजदूत एवेराल हैरीमन ने अविलम्ब ट्रूमैन को सचेत कर दिया। राष्ट्राध्यक्ष १७ जुलाई से २ अगस्त १९४५ तक पोट्सडाम-सम्मेलन मे सतर्कता के भाव से उपस्थित रहे। पूर्व और पश्चिम मे महत्वपूर्ण प्रश्नो पर तुरन्त गतिरोध उत्पन्न हो गया और शाति स्थापित करने का कार्य जारी रखने के लिए विदेश-मत्रियो की परिषद के सिपुर्द कर दिया गया· जिसमे अमरीका, ब्रिटेन, फ्रास, रूस और चीन का प्रतिनिधित्व था। अमरीकी सेनाओ ने दक्षिण-पश्चिमी जर्मनी के लगभग ४०,००० वर्गमील क्षेत्र पर, ब्रिटेन ने ४२,७०० वर्गमील पर और फ्रास ने १६,७०० वर्गमील पर रूस ने पूर्वी जर्मनी के ४६,६०० वर्गमील पर अधिकार कर लिया। वर्लिन नगर जो कि रूसियो के क्षेत्र मे था, चार शक्तियों के अधिकार मे आ गया। आस्ट्रिया भी चार क्षेत्रों मे विभाजित कर दिया गया। जापान को मित्र-राष्ट्रो के सर्वोच्च सेनापति के रूप मे जनरल डगलस मैकआर्थर की शक्तिशाली भुजा के अन्तर्गत रखा गया। कोरिया जिसे स्वतत्रता का वचन दिया गया था, विभाजित कर दिया गया। रूस ने उत्तरी अर्धभाग और अमरीका ने दक्षिणी अर्धभाग पर नियत्रण रखा।

यह शीघ्र ही स्पष्ट हो गया कि, डारेडेनेलिस और भूमध्यसागर तक पहुँचने पर, और उसकी विशाल निर्माग-सुविधाओं को हस्तगत कर लेने पर और फ्रास, इटली और अन्य दुर्बल राष्ट्रो की कम्यूनिस्ट पार्टियों का 'उपयोग करके उनकी सरकारो का नियत्रण नही तो उन्हें पगुहीन बनाकर, रूस अपने चारो ओर पिछलग्गू देशो का एक विस्तृत क्षेत्र स्थापित करने का इच्छुक है। सचिव वारेस ने ब्रिटेन मे विदेश मत्री अर्नेस्ट वेविन के समान ही, रूसी सरकार के साथ कार्यपद्धति के बारे में समझौता करने का बहुतेरा प्रयत्न किया। समझौता एक ऐसा शब्द था जो रूसी शब्दकोश के लिए विदेशी था; मास्को ने जो कुछ भी मिला हडप लिया; किन्तु दिया कुछ भी नही। विशेष रूप से अन्यायपूर्ण कार्य था—पोलैण्ड का रूस में विलय, जिसे पश्चिम की शक्तियॉ वास्तव मे प्रजातान्त्रिक और आत्मशासित राष्ट्र बनाना चाहती थी। पुराने पोलैण्ड के ७८,००० वर्गमील क्षेत्र पर अधिकार करके ही सतुष्ट न होकर रूस ने अपने सैनिक अधिकार का उपयोग लन्दन मे निष्कासित सरकार के सदस्यो पर प्रहार करने मे किया। उसने रूसी तरीके का सविधान बनवाया और बोलेस्लाव वीसट के अन्तर्गत उसने एक उपयोगी कम्यूनिस्ट शासन का निर्माण किया। जब कि पश्चिमी शक्तिओं ने शस्त्रीकरण में भारी कमी कर दी, रूस ने अपनी युद्ध-शक्ति मे वृद्धि कर दी और १९४६ के पूर्व में अपनी सेनाओं को जनरल निकोलाई बुलगानिन की देखरेख मे सुदृढ बनाया।

रूसी खतरे का सामना करने के लिए, अमरीका ने धीरे-धीरे अपने रुख को दृढ बना दिया। १९४५ के पतझड मे लन्दन मे, दिसम्बर मे मास्को मे तथा पेरिस मे हुए सम्मेलनों मे अमरीकी प्रतिनिधियों ने व्यापक-दृढता का परिचय दिया। हगेरी, बल्गेरिया और रूमानिया के बारे में इन देशों पर नियत्रण रखने के लिए सधियॉ की गयीं : अमरीकी और ब्रिटिश प्रतिवाद के बावजूद—जिनका स्टालिन ने तत्काल दुरुपयोग किया—फिनलैण्ड स्वतत्र कर दिया गया; किन्तु अविलम्ब ही इसके पश्चात् ही उसे रूस के साथ दस वर्षीय परस्पर सहायता-सधि पर हस्ताक्षर करना पडा। केवल इटली ही पश्चिमी दल के लिए, सुरक्षित रह सका; १९४६ मे वह एक गणतत्र बन गया, और बाद मे उसने एक ऐसी सधि स्वीकार कर ली, जिसने उसके उपनिवेशों को उससे पृथक कर दिया। ट्रीएस्ट के मुक्त क्षेत्र मे सयुक्त-राष्ट्र-संघ की सुरक्षा-परिषद् के अन्तर्गत अमरीकी और ब्रिटिश सेनाए तैनात की गयीं। एग्लो-अमरीकी कार्यवाही ने ब्रिटिश क्षेत्र मे रूस को रबर के प्रबध में किसी तरह के भी हस्तक्षेप

से वंचित कर दिया। रूस ने आस्ट्रिया की मुक्ति के लिए किसी भी संधि पर समझौता करने से इनकार कर दिया, जिसे मास्को अपने अधिकृत क्षेत्रों से धन खींचने के लिए और पूर्वी योरोप तथा बाल्कन-क्षेत्र में रसद पंक्तियों के किनारे-किनारे सेनाएं रखने के बहाने के रूप में उपयोग करने का इच्छुक था।

एक मामला जिस पर पश्चिमी राष्ट्र और रूस एकमत हुए, वह था ऊँचे से ऊँचे नाजी नेताओं को दण्डित करने के सम्बन्ध में। अभियोगपत्र तैयार किये गये और, २२ युद्ध-नेता नवम्बर १९४५ में मुकदमे के लिए न्यूरेमबर्ग लाये गये। मामला, दोनों ओर से पैरवी किया जाकर ३० सितम्बर १९४६ तक खिंचता रहा। १ अक्टूबर को ११ व्यक्तियों को फाँसी की सजा मिली। हरमन गोरिंग ने अपनी कोठरी में विष खाकर आत्महत्या कर ली, जब कि दूसरों को जिनमें विदेश-मंत्री जो जोचिम फान रिब्नट्राप था, फाँसी दे दी गयी। अमरीका में जनमत इस असाधारण अन्तरराष्ट्रीय कार्य के न्याय और औचित्य के बारे में विभाजित था। नाजियों के अपराध निःसन्देह जघन्य थे, किन्तु उनको जर्मन ट्रिब्युनल द्वारा दण्डित किया जा सकता था। इसके अतिरिक्त बहुत-से जर्मन-अपराध जितने ही जघन्यपूर्ण रूसी कार्यों के समान थे। जर्मनी और रूस ने १९३९ की रिब्नट्राप-मोलोटाव संधि के अन्तर्गत द्वितीय विश्व-युद्ध का संकेत करके दम्भपूर्ण हिस्सेदारी में पोलैंड पर आक्रमण करके उसे विध्वंस कर डाला था। ७ हजार पोलिश अधिकारियों की नृशंस हत्या—जिसका दोष रूसियों ने हिटलर के मत्थे मढ़ा था—लगभग निश्चित रूप से स्टालिन के आदेश पर की गयी थी।

अमरीका द्वारा सुदृढ़ रुख अपनाया गया : अमरीकी भावना रूस के प्रति पहले तो शनैः-शनैः-किन्तु बाद में तीव्र गति से बदल गयी। देश कुछ समय तक ट्रूमैन से पीछे छूटा रह गया, जो स्टालिनके षडयंत्र से उत्तेजित होकर १९४५ में ही बोल उठे थे : "समय आ गया है कि हम रूसियों को बच्चों की तरह समझना छोड़ दें।" मार्च १९४६ में विंस्टन चर्चिल ने फलटन-मिसूरी पहुँचकर एक भाषण दिया जिसमें उन्होंने रूसी आक्रमण की निन्दा की और पश्चिम को उसका विरोध करने को कहा। बहुत से अमरीकियों को आघात पहुँचा; किन्तु मंच पर बैठे हुए ट्रूमैन और अन्यत्र दूसरे लोगों ने हर्ष व्यक्त किया। स्टालिन ने चर्चिल को ३० अप्रैल के उत्तर में घोषित किया 'अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिक्रिया' एक नये युद्ध की योजना बना रही है। किन्तु, उसने

अपना हाथ तब दिखलाया, जब कि १२ अगस्त को उसने तुर्की को एक पत्र भेज कर डारेडेनेलिस के नियत्रण मे रूस के अधिकारी की मॉग की। पेरिस में बायरंस, ग्रीष्म भर चार बड़े विदेश मंत्रियों के सम्मेलन मे संघर्ष करते रहे और १५ अगस्त को स्पष्ट रूप से अमरीकी नीति के विषय मे रूस के द्वारा "बार-बार गालीगलौज और जानबूझकर गलतफहमी पैदा करने" की निन्दा की।

एक नाटकीय घटना ने बदलती हुई परिस्थिति में आग का काम किया। जब कि बायरस मालोटोव से विरोध प्रदर्शित कर रहे थे और अमरीकी सरकार तीन निःशस्त्र वायुयानों को मार गिराने के लिए कम्यूनिस्ट नेतृत्व स्वीकारने वाले यूगोस्लाविया से विवाद कर रही थी, सचिव वालेस ने एक ऐसा भाषण तैयार किया और १२ सितम्बर को मेडिसन-स्क्वेयर-गार्डन में पढ़ सुनाया, जिसमे रूस के प्रति अपनाई जा रही दृढ़ता की नीति पर तीव्रता से प्रहार किया गया था। ट्रूमैन ने लिखित भाषण को बिना ध्यानपूर्वक पढ़े ही अदूरदर्शिता से मान्य कर लिया था। सचिव बायरस इसे पीठ मे छुरा भोंकने-जैसा मानकर क्रुद्ध हो गये और उन्होंने चेतावनी दे दी कि यदि वालेस ने इस्तीफा नही दिया तो वे स्वय इस्तीफा दे देगे। ट्रूमैन ने अविलम्ब ही वालेस को विदेश-नीति के दृष्टिकोण में 'मूलभूत संघर्ष' होने के नाते हटा दिया। जनमत ने ट्रूमैन का साथ दिया। फिर भी राष्ट्राध्यक्ष और बायरस के मध्य भावनाएं बिगडी ही रही। उनका परस्पर वार्तालाप जितना स्पष्ट होना चाहिए था, उतना नहीं हुआ और १९४७ के प्रारम्भ मे स्वास्थ्य बिगड़ने के कारण बायरस ने इस्तीफा दे दिया और उनका स्थान उस युग के एक वास्तव में महान व्यक्ति जनरल जार्ज मार्शल ने ले लिया।

चूंकि पेरिस-सम्मेलन में जर्मन-आस्ट्रिया के बारे में कोई समझौता नही हुआ था, रूस पूर्वी योरोप में अपनी शक्तिशाली सेनाओं को बनाये रखने के के लिए स्वतत्र था और इस प्रकार पश्चिम के लिए उसने एक खतरा उत्पन्न कर दिया। उसी पतझड़ में फ्रास ने एक नया संविधान अपनाया, और जब नवम्बर मे कम्यूनिस्टों ने नयी एसेम्बली में सबसे बड़े दल के रूप में अधिकार कर लिया तो स्वतत्र राष्ट्रों के बीच भय की एक लहर दौड़ गयी। किन्तु, बेचैनी का केन्द्रबिंदु अब जर्मनी बन चुका था। रूसी नीति यह थी कि, जर्मनी से क्षतिपूर्ति के रूप मे तैयार माल भारी संख्या में ले जाते रहें, ताकि जर्मनी का पुनरुत्थान न हो सके या विलम्ब से हो और लोगों में विधिवत् निर्धनता,

अव्यवस्था और निराशा उत्पन्न करके, उन्हें कम्यूनिज्म की ओर मुडने को बाध्य कर दिया जाये। इसके विपरीत एग्लो-अमरीकी नीति यह थी कि जर्मनी के औद्योगिक स्तर को लौटा करके, उसे पुनः समृद्धिशाली बनाया जाये और लोगों को राजनीतिक प्रजातत्र मे प्रशिक्षित किया जाये। पश्चिमी जर्मनी की जनसख्या लगभग ४ करोड ५० लाख और पूर्वी जर्मनी की लगभग १ करोड ७० लाख थी। शरणार्थियो का भारी सख्या मे लगातार प्रवेश पश्चिमी जर्मनी की जनसंख्या को बढाता जा रहा था। सामान्य स्थिति मे पूर्वी जर्मनी ने देश के शेष भाग को खाद्य सामग्री भेजी होती; किन्तु रूसियों ने ऐसी रसद् को काट दिया। अतएव पश्चिमी शक्तियों को अपने विभिन्न क्षेत्रों के लिए भारी तादाद् मे खाद्यान्न का आयात करने को मजबूर होना पडा। अमरीका और ब्रिटेन के कन्धो पर ही भारी बोझ पडा। इसका अनिवार्य परिणाम यह निकला कि, एक ओर पश्चिम ने जहाँ अपने अधिकार के दो-तिहाई क्षेत्र मे धन और साधन पहुँचाना शुरू किया, वहाँ दूसरी ओर रूस ने एक तिहाई क्षेत्र से इतनी ही लागत का धन बाहर निकालना प्रारम्भ किया।

यह एक असह्य स्थिति थी। बर्लिन स्थित सयुक्त नियंत्रण समिति—मित्र राष्ट्रो की नियत्रण परिषद्—एग्लो--अमरीकी और रूसी प्रतिनिधियों के मध्य लगातार झगडों का दृश्य उपस्थित करने लगी। अमरीका की ओर से जनरल ल्युसियस डी. क्ले ने पूरी तरह से राजनीतिज्ञतापूर्ण प्रशासन प्रस्तुत किया, जिससे उन्होंने जर्मन जनता का सम्मान और ब्रिटिश सहयोगियों की प्रशंसा प्राप्त कर ली। २ दिसम्बर १९४६ को अमरीका और ब्रिटेन ने अपने क्षेत्रों के आर्थिक एकीकरण के हेतु एक समझौते पर हस्ताक्षर किये और ८० हजार वर्गमील का 'बाइजोनिया' पहले की अपेक्षा बहुत अधिक अच्छे रूप मे अपने पैरो पर खड़े होने योग्य बन गया। यह एक ऐसी घटना थी, जिसने रूसियों को उलझन मे डाल दिया। जर्मन-उद्योगों पर से क्रमशः नियंत्रण ढीला कर दिया जाना, कम्यूनिस्ट नियत्रित राष्ट्रों को जहाजों द्वारा वस्तुएँ भेजने पर प्रतिबंध लगा दिया जाना और जर्मन पुनरुत्थान की सामान्य प्रेरणा का भी यही परिणाम निकला। प्रथम स्वतत्र म्युनिसिपल निर्वाचन भी, हिटलर के अभ्युदय के पश्चात, अमरीकी और ब्रिटिश तत्वावधान मे १९४६ मे किये गये।

१९४७ के प्रारम्भ मे, जर्मनी के विषय में मतभेद पूर्ण और स्पष्ट बन गया। १० मार्च को, विदेश-मंत्रियों की परिषद् ने आस्ट्रो-जर्मन-सन्धि की शर्तों पर मास्को मे एक सम्मेलन प्रारम्भ किया। तीखे वाद-विवाद के बाद वह छः

सप्ताह पश्चात् एक भी महत्वपूर्ण प्रश्न पर बिना किसी समझौता किये स्थगित हो गयी। मार्शल, बेविन और विडाल्ट जरा भी हिले-डुले बिना अपने स्थान पर बने रहे; मालोटोव अपने स्थान पर दृढ़ रहे। जब मार्शल ने अमरीकी जनता को बतलाया कि स्टालिन ने कहा था कि सभी मतभेदों को सम्मेलन द्वारा दूर किया जा सकता है तो एक छोर से दूसरे छोर तक ठट्ठा गूँज उठा। जनता ने स्टालिन की चाल को समझ लिया था। जर्मन प्रश्न अस्थायी रूप से एक ओर हटा दिया गया। गतिरोध वही स्वीकार कर लिया गया और आकर्षण-केन्द्र तत्काल ही यूनान और तुर्की की ओर हट गया।

सुरक्षा की समस्याएँ : शीतयुद्ध ने यह दिखला दिया कि, अमरीकी शस्त्रीकरण मे वृद्धि करनी होगी। यह स्पष्ट होने के पूर्व ही, अमरीकियो को सुरक्षा-योजना और प्रशासन की कार्यकुशलता को सुधारने के बारे मे चिन्ता हो उठी थी। युद्ध ने सेनाओं और कर्मचारियों के एकीकरण की अनिवार्य आवश्यकता को स्पष्ट कर दिया था। ट्रूमैन-प्रशासन ने इस ध्येय के अभियान का समर्थन किया और काग्रेस ने भी अन्त मे स्वीकृति प्रदान कर दी।

२६ जुलाई १९४७ को, ट्रूमैन ने इस नियम पर हस्ताक्षर कर दिये, जिसके अन्तर्गत सेना, नौबेड़ा और वायुसेना एक नये सुरक्षा विभाग के अन्तर्गत आ जाती थी, जिसका प्रथम प्रमुख उन्होंने जेम्स फोरस्टाल को बनाया। एकीकरण की योजना सावधानीपूर्वक और विस्तृत रूप से बनायी गयी थी। प्रत्येक सेना का एक सहायक सचिव था; किन्तु उसे मन्त्रि-मण्डल की सदस्यता नही मिली थी। एक नेशनल सिक्युरिटी काउंसिल—राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद—की स्थापना हुई। राष्ट्राध्यक्ष, विदेश सुरक्षा, तीन सशस्त्र सेनाओं और नेशनल सिक्युरिटी रिसोर्सेस बोर्ड के अध्यक्ष को मिलाकर उक्त परिषद बनी, ताकि वैदेशिक परिस्थिति का अध्ययन करने के उपरान्त नीतियों की सिफारिश की जा सके। नेशनल-सिक्युरिटी-रिसोर्सेस बोर्ड को (राष्टीय सुरक्षा साधन बोर्ड) जिसे शातिकाल में कोई काम न था, किन्तु युद्ध की अवधि मे जो महत्वपूर्ण था—साधनो, उत्पादन और जनशक्ति का अध्ययन और सघटन करना था। एक एम्युनिशस बोर्ड (गोला-बारूद बोर्ड) को पहले सेना और नौबेड़े के द्वारा किये गये इसी नाम के बोर्ड के कार्य को अपने हाथों में ले लेना था। एक अनुसंधान और विकास-बोर्ड को वैज्ञानिक खोज को अपने हाथों मे लेना था। अन्तिम रूप से, एक केन्द्रीय गुप्त सूचना एजसी को सर्व प्रथम अन्य देशों के शस्त्रों और सैनिक कार्यवाइयों

के बारे मे सूचना देने का कार्य सौपा गया। यह सी आई ए एक महत्वपूर्ण सस्था बन गयी यद्यपि इसका कार्य बहुत कुछ अंशो मे गुप्त ही रखा गया था।

दुर्भाग्यवश, एकीकरण के लिए कागजी योजनाओं को बनाना, उनको कार्यान्वित करने की अपेक्षा अधिक सरल कार्य प्रमाणित हुआ। फोरस्टाल ने, जिन्होंने अधिकाश सघर्ष का निर्देशन किया था, एक छोटे सुरक्षा-विभाग की ही कल्पना की थी, जो सभी शाखाओं का सहयोग प्राप्त कर सके। इसके स्थान पर नया विभाग बहुत बडा हो गया और तीनों सेनाएं व्यय की रकम और सत्ता के लिए ईर्षालु हो उठी। विशेषज्ञो मे नया सघर्ष प्रारम्भ होने पर अणु, अस्त्रों, वायुयानो और युद्धपातों के कार्यों के बारे में तीव्र मतभेद था। जब १९४६ के पतझड मे एक बी-२९ होनोलूलू से काहिरा तक उत्तरी ध्रुव से होकर १४२५ मील की यात्रा को बिना रुके हुए पूरी कर सका, तो कई लोगो ने इस साहसिक कार्य को इस बात का प्रमाण माना कि विशाल नौबेडे के दस्ते व्यर्थ सिद्ध हो गये हैं। किन्तु, नौबेडे ने बलपूर्वक कहा कि भविष्य के युद्ध अधिकाश मे बडे आकार, गति और पेचीदगी के जेट वायुयानो द्वारा लड़े जायेंगे और यह कि उनको रखने और छोड़ने के लिए भीमकाय और खर्चीले सुपरकैरियर की आवश्यकता पडेगी। काग्रेस-सदस्य, जिनकी १९५२ तक यह सोचने की प्रवृत्ति थी कि अणु-बम ने युद्धविद्या के क्षेत्र मे एक नया युग आरम्भ कर दिया है, यह विश्वास करते थे कि १९५२ तक रूस अणुबम नही बना पायेगा। अन्य शस्त्रों के बार मे वे मितव्ययी बनने के इच्छुक थे।

सुरक्षा-विभाग की कठिनाइयो को दूर करने, तीनों के झगडो को मिटाने और काग्रेस से पर्याप्त रकम पाने और अन्यायपूर्ण राजनीतिक प्रहारो का उत्तर देने मे फोरस्टाल का स्वास्थ्य बिगड गया। विश्राम ग्रहण करने के तुरन्त पश्चात उनकी दुखदायी मृत्यु हो गयी। युद्धोत्तर युग मे कुछ ही व्यक्ति ऐसे वीर दिख-लायी पडेंगे, जितना यह निष्ठावान राजनीतिज्ञ, जो कि असाधारण रूप से सुसस्कृत और मेधावी व्यक्ति था। पश्चिम वर्जीनिया के लुई जानसन ने जो उनके उत्तराधिकारी नियुक्त हुए, अत्यधिक शक्ति और उत्साह दिखलाया; किन्तु उनमे कूटनीति और अनुभव का अभाव था। ट्रूमैन की स्वीकृति से उन्होंने मितव्ययिता की नीति अपनायी जो शीतयुद्ध के बढ़ने पर खतरनाक प्रमाणित हुई। उन्होंने काग्रेस के विदेश-विभाग और सेनाओं के साथ झगडा कर लिया। फोरस्टाल द्वारा स्वीकृत सुपर-कैरियर के निर्माण को उन्होंने रोक दिया। अतः विलम्ब होने के पूर्व ही राजनीतिक उत्तरदायित्व के नाते उन्हें पृथक कर देना पडा।

देश के लिए उचित सैनिक नीति का प्रश्न नहीं सुलझाया जा सका। जब खतरा बहुत बढ गया, तो सरकार ने उसका सामना करने के लिए सभी शाखाओं की शक्ति मे व्यापक खर्चीली वृद्धि कर दी—यह एक ऐसी नीति थी जिसकी बुद्धिमत्ता मे सन्देह था।

अणु-बम और अणु-शक्ति ऐसी आकर्षक आवश्यक समस्याएं थी, जिन पर राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय चिन्ता व्याप्त थी। सयुक्त-राष्ट्र-सघ और काग्रेस ने एक साथ ही उनका समाधान करने का प्रयत्न किया। स. रा. सुरक्षा-परिषद् ने दस सदस्यों का एक एटामिक-एनर्जी-कमीशन (परमाणु शक्ति आयोग) की नियुक्ति की, जिसमे वारेन आस्टिन ने अमरीका का, सर एलेक्जेन्डर कैडोवान ने ग्रेट-ब्रिटेन और एंड्राय ग्रोमिको ने रूस का प्रतिनिधित्व किया। इस सस्था मे बर्नार्ड वारुच ने अणुशक्ति के विश्व नियंत्रण के बारे मे एक योजना प्रस्तुत की। चूँकि तब तक अणुशक्ति केवल अमरीका के ही अधिकार मे थी, अतएव अमरीका का रुख अत्यधिक उदार रहा। इसके अन्तर्गत प्रस्तावित किया गया था कि एक अन्तरराष्ट्रीय अणु-सस्था का निर्माण किया जाय जो कि इस क्षेत्र पर पूर्ण नियंत्रण कर ले, सभी अणुशक्ति कारखानो का जो आक्रमणात्मक कार्यवाही के लिए एक स्पष्ट खतरा उत्पन्न करे, स्वामित्व ग्रहण करे अथवा प्रबध करे; सभी अन्य अणु-संबंधी कार्यवाहियों का निरीक्षण करे, लाइसेस दे और नियंत्रण करे; और अणु शक्ति के उपयोगी और रचनात्मक उपयोग को प्रोत्सा-हन दे। स. रा. आयोग ने इस योजना को स्वीकृति प्रदान की; केवल ग्रोमिको ही ने साथ नहीं दिया।

एक मास पश्चात, जुलाई १९४६ में काग्रेस ने मैकमाहोन परमाणु शक्ति-विधेयक को कानून के रूप मे स्वीकार किया, जिसके अन्तर्गत पॉच सदस्योंवाले परमाणु-शक्ति-आयोग की स्थापना की गयी—यह एक स्वतत्र एजेंसी थी, जिसके एक वर्ष के अन्दर ५ हजार कर्मचारी हो गये। इसके कार्य थे, अणु-अस्त्रों के निर्माण पर दृष्टि रखना, और अणुशक्ति का विभिन्न कामों मे उपयोग लाना—पनडुब्बी इजिन, शक्ति-कारखाने, औषधि और कृषि। इसी ग्रीष्म में अम-रीका ने अपने चौथे अणु बम का, प्रशान्तस्थित बिकिनी एटाल में विस्फोट किया और पाचवे का विस्फोट भी वहीं जल के नीचे किया। इन दोनों अस्त्रों ने अपूर्व विध्वंसक लीला उपस्थित की।

फिर भी रूस ने वारुच-योजना अथवा उसका कोई सम्भव संशोधन स्वीकार करने से अस्वीकार कर दिया। एक कारण यह था कि रूसी महाप्रभु

सरक्षित अनुभव कर रहे थे। वे जानते थे कि अमरीका अपने बमों का आक्रमक उपयोग कभी भी नही करेगा और वे अपने परमाणु-अस्त्र बना लेने के नजदीक पहुँच चुके थे। दूसरा कारण यह था कि रूस बारुच के दो प्रस्तावों को कभी नही बर्दाश्त कर सकता था। रूस भर के कारखानो के स्वतत्र निरीक्षग से चर्चिल द्वारा 'लौह आवरण' कहकर पुकारा जानेवाला आवरण हट जाता और ससार की दृष्टि रूस द्वारा गुप्त रखे गये रहस्यो और असमानता पर पड जाती। यह कदम रूस द्वारा स्वतन्त्रता पर अंकुश लगाने से मेल नहीं खाता। यह शर्त कि स. रा. सुरक्षा-परिषद् का कोई भी सदस्य परमाणु-शक्ति-विकास-सस्था के कार्य मे बाधा नहीं डाल सकता, समान रूप से उसे अस्वीकार्य था। उसका अर्थ होता आक्रमण का अन्त। जब रूस ने परमाणु-नियत्रण-सम्बन्धी अपनी स्वय की योजना आगे बढ़ायी तो उसमे यह व्यवस्था थी कि ऐसे सभी अस्त्र-शस्त्रो पर प्रतिबध लगा दिया जाये—केवल कभी-कभी पक्षपातपूर्ण निरीक्षण ही किया जा सके।

रूसी शक्ति के विरुद्ध संतुलन : स्टालिन द्वारा तुर्की से डारडेनेलिस के नियत्रण पर हिस्से की माँग करने के साथ-साथ ही यूनान की स्वतत्रता पर भी गुप्त रूप से प्रहार किया गया। जब १९४४ मे, उस देश से जर्मन बाहर कर दिये गये—तब सम्राट और मत्रिमण्डल ने सत्ता ग्रहण कर ली थी। किन्तु, विरोधी दलो मे जघन्य गृहयुद्ध प्रारम्भ हो गया और देश के एक बहुत बड़े भाग मे अशान्ति छा गयी। बल्गेरिया, अल्बानिया और यूगोस्लाविया मे कम्यूनिस्ट रह-रह कर लड़ाई मे भाग लेते रहे और अपने सीमा-प्रदेश मे हटते रहे, एथेंस सरकार के विद्रोहियों को सैनिक सामग्री देते रहे और हजारो बच्चो का अपहरण करते रहे। ब्रिटिश, जिन्होंने यूनान मे व्यवस्था कायम रखने का उत्तरदायित्व लिया था, ने यह पाया कि वित्तीय और सैनिक साधन का भार उनकी सामर्थ्य के बाहर है। १९४७ के प्रारम्भ मे उन्होंने अमरीका को सूचित किया कि उन्हें वहाँ से अपनी सेनाएं हटानी पडेगी और वित्तीय सहायता भी बन्द करनी पड़ेगी। यह महान आशका उत्पन्न हो गयी कि कम्यूनिस्ट गुरिल्ला युद्ध करके, भयभीत बना देनेवाले उपायो द्वारा देश पर अधिकार कर लेंगे। जब कि रूस तुर्की पर अपना दबाव डाल रहा था और ईरान के लिए भी खतरा उत्पन्न कर रहा था—जिसका उत्तरी प्रान्त अजरबाइजान-रूस की सीमा से मिला हुआ था—यूनान के कम्यूनिस्ट-

नियत्रण मे चले जाने से मध्यपूर्व में भी रूस सामान्यतया आगे बढ़ जाता।
ट्रूमैन ने स्थिति का साहस से सामना किया। काग्रेस की एक सयुक्त सभा में उन्होने समझाया कि कम्यूनिस्टों के नेतृत्व में विद्रोही दलों द्वारा मिस्र के अस्तित्व को खतरा उत्पन्न हो गया है, और यह कि उस देश का अस्तित्व इस समूचे क्षेत्र की व्यवस्था और स्वतत्रता के लिए अनिवार्य है, और यह भी कि अमरीकी सहायता का व्यय युद्ध की तुलना मे नगण्य होगा। उन्होने ट्रूमैन सिद्धात का निर्माण किया, ताकि ऐसे राष्ट्रों को अमरीकी सैनिक और वित्तीय सहायता दी जा सके जो अपनी स्वतंत्रता को बनाये रखने का प्रयत्न कर रहे थे और तानाशाही सशस्त्र अल्पसंख्यकों द्वारा देश का नियत्रण करने के प्रयत्न का सामना कर रहे थे। "ऐसे तानाशाही के बीज कष्ट और निर्धनता में पलते हैं", उन्होंने घोषित किया, "वे तभी फलफूल कर बड़े होते है, जब उनकी एक अच्छे जीवन की आशा मर चुकी होती है। हमें उस आशा को जीवित रखना होगा। तुर्की को ३० करोड़ डालर और यूनान को १० करोड़ डालर वित्तीय सहायता देने सम्बन्धी एक विधेयक, जिसने राष्ट्राध्यक्ष को अधिकार प्रदान किया कि वे इन दोनों देशों को सैनिक, नौबेडे और आर्थिक मामलों मे सम्बन्धित परामर्शदाता भेजें, मई मे स्वीकार कर लिया गया।
इस हस्तक्षेप ने निःसन्देह यूनान को बचा लिया और तुर्की की सहायता की। यूनान के शासन करनेवाले दलों को, जो प्रतिक्रियावादी और स्वार्थी थे, अमरीका के दबाव में आकर कुछ अत्यावश्यक सुधारों की स्वीकृति देनी पड़ी; तुर्की की सरकार ने अधिक तत्परता और निष्ठा के साथ सहयोग किया। तुर्की निकट पूर्व में स्वतत्रता के प्रकोष्टों में से एक बना रहा। इसी बीच अमरीका ने फीलस्तीन में एक अन्य दुर्ग के निर्माण में सहायता प्रदान की—जहाँ १४-१५ मई १९४८ को—जिस तारीख को ब्रिटेन ने अपनी सेनाएँ वापस बुलायी—इसरायल के गणतंत्र की घोषणा की गयी। ट्रूमैन-प्रशासन ने तुरन्त ही नये राष्ट्र को मान्यता प्रदान की और उसके अविलम्ब बाद ही इसरायल और अरब राष्ट्रों के बीच हुए तीव्र संघर्ष में उसका नैतिक समर्थन किया। स्वाभाविक तौर पर ही, अमरीकी यहूदियों ने इस सघर्ष में उसे धन की अस्त्र-शस्त्रो की और सैनिक सहायता दी। जब कि एक सधि द्वारा युद्ध बन्द हुआ, तब इसरायल ने ऐसी सीमाएं बना लीं जो राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए पर्याप्त थी। एक अन्य वस्तु जिसने बालकन-देशों और निकटपूर्व की स्थिति मे स्थायित्व उत्पन्न किया, वह था सोविएत नियत्रण के विरुद्ध यूगोस्लाविया का विद्रोह।

जब उसके तानाशाह मार्शल जोसेफ टिटो ने स्टालिन के साथ झगडा कर लिया तो अल्बानिया से होकर अफगानिस्तान तक के महान पट्टे पर कम्यूनिस्ट आक्रमण का भय समाप्त हो गया।

किन्तु ट्रूमैन सिद्धात और यूनान तुर्की-सहायता-विधेयक ही पर्याप्त नहीं थे; वे बहुत सकुचित थे। उस क्षेत्र से ब्रिटिश सेनाओं की वापसी इस बात का प्रमाण थी कि समूचा योरोप बुरी आपत्ति मे फँसा हुआ था। ग्रेट-ब्रिटेन, जो कि एक विशाल राष्ट्र-मण्डल और साम्राज्य का हृदय था, अब भी स्थिर था और अब भी महान औद्योगिक सम्भावनाओं से पूर्ण था। किन्तु, इटली और फ्रास का युद्ध से नाश हो गया था। गृह-विवाद से वे छिन्न-भिन्न हो चुके और अपनी अधिकाश प्रतिष्ठा और नैतिक शक्ति से हीन हो चुके थे। अन्य राष्ट्र, उदाहरणार्थ हालैण्ड, वेलजियम, डेनमार्क और नार्वे, व्यक्तियो, धन, मशीन, सास्कृतिक सस्थाओ और विश्वास को खो चुके थे। ध्वस्त नगरो और छिन्न-भिन्न हुए उद्योग का पुन.निर्माण उनके बूते से बाहर की बात थी। उन्हे धन की आवश्यकता थी—और अमरीका के पास वह पूर्णरूपेण उपलब्ध था; उन्हे आशा और साहस की भी आवश्यकता थी। जर्मनी और आस्ट्रिया को भी टूटे ईंट-पत्थरों के ढेर और निराशा से ऊपर उठाना था। केवल एक राष्ट्र ही पश्चिमी सभ्यता को तीव्रता और निश्चय के साथ बचा सकता था. किन्तु उसे दूरदर्शिता और उदारता का एक अनदेखा उदाहरण प्रस्तुत करना था।

मार्शल-योजना : ये गुण—विश्व-जागरण की आवश्यकताएँ—सौभाग्यवश उपलब्ध थे। अमरीका उधार-पट्टे की शिक्षा को नहीं भूला था जब कि मित्र-राष्ट्रो ने एक विशाल सर्वलाभकारी प्रयत्न मे अपने-अपने साधनो का सचय किया था। ऐसा संचय नये विश्वयुद्ध मे पुनर्निर्मित होना चाहिए—निर्धनता और पतन के विरुद्ध प्रतिद्वन्द्विता। आदर्श की दृष्टि से, सयुक्त राष्ट्र-सघ को पुनर्जन्म का साधनरूप होना चाहिए। किन्तु, रूस ने इस सघटन के शान्ति और समृद्धि की दिशा मे आगे बढ़ने से रोक लगा दी थी। यह उसने सामूहिक कार्यवाही को निषेधाधिकार के प्रयोग द्वारा अवरुद्ध करके और विचारो को उलझन मे डालनेवाले प्रचारात्मक भाषणो द्वारा किया।

इस बार सचिव मार्शल ने नीति की घोषणा की। ५ जून १९४७ को हारवर्ड युनिवर्सिटी मे भाषण देते हुए उन्होने वचन दिया कि, सहकारी रूप से यूरोपीय पुनर्जागरण की योजना मे यथेष्ट रूप से अमरीका योग दान करेगा।

यूरोपीय पुन.सुधार कार्यक्रम में (जैसा कि वह पुकारा गया) न केवल धन का ही योगदान बल्कि मशीन, योजनाओं, कच्चे मालों, और अमरीकी टेक्नालाजी मे कुशल लोगों का समावेश भी था। यूरोपीय राष्ट्रों को ऋण, विशेष सुविधाओं के आदान-प्रदान और अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य मे तीव्रता लाने के लिए एक दूसरे की सहायता करनी थी। तटकरों को स्वतत्र विश्वभर में या तो भंग कर देना था अथवा बहुत घटा देना था। यह आशा की जाती थी कि, इस कार्यक्रम के द्वारा नयी समृद्धि उत्पन्न होगी और वह संयुक्त-राज्य यूरोप के कभी न सिद्ध हो सके स्वप्न की साकारता की दिशा में अग्रसर होगी। किन्तु मार्शल ने यह स्पष्ट कर दिया कि यूरोप को अधिकाश प्रोत्साहन और शक्ति का योगदान स्वयं करना होगा।

क्या यूरोप ऐसा करेगा? और क्या काग्रेस जो अमरीकी खर्चे को ईर्ष्या की दृष्टि से देखती थी, मार्शल के वचन को पूरा करेगी?

पहले प्रश्न का उत्तर शीघ्रतापूर्वक दिया गया। ब्रिटिश और फ्रासिसी विदेश-मत्रियो ने सभी यूरोपीय राष्ट्रों को पेरिस मे होनेवाले एक सम्मेलन मे पुनर्निर्माण के एक सयुक्त कार्यक्रम पर विचार-विमर्श के लिए आमंत्रित किया। रूस ने आमत्रण न केवल अस्वीकार कर दिया; बल्कि अपने आठ पिछलग्गुओ को भी स्वीकार करने से रोक दिया। किन्तु, १६ राष्ट्रो ने, आइसलैण्ड से लेकर तुर्की तक ने, इसमे भाग लिया जिसमे २२ सितम्बर १९४७ को पुनर्निर्माण की एक सहकारी-योजना को स्वीकार किया गया, जिसके अन्तर्गत बाईस अरब डालर रकम को आगामी चार वर्षो मे उपयोग मे लाया जाना था। इसमें से कुछ राशि अन्तर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक से, कुछ विभिन्न देशों से और अधिकाश अमरीका से उपलब्ध होनी थी। योजना ने १६ शामिल होनेवाले राष्ट्रों को 'वास्तविक और पर्याप्त पारस्परिक सहायता' के हेतु विस्तृत क्षेत्र के सिद्धात के लिए वचनबद्ध किया। यह कार्य चार वर्षों से कम मे पूरा नहीं किया जा सकता था—किन्तु पूरा हो जाने पर यूरोप युद्ध के पूर्व के विकास की अवस्था से बहुत आगे बढ़ जाने वाला था। काग्रेस ने उतनी तत्परता नही दिखलायी। १९४८ के प्रारम्भ मे उसका अधिवेशन हुआ; किंतु दो महीनों तक वह टालती रही। कम्यूनिस्टों द्वारा चेकोस्लोवाकिया मे सत्ता हथियाए जाने के उपरान्त कहीं जाकर वह कार्यरत हुई। ३ अप्रैल १९४८ को ट्रूमैन ने आर्थिक-सहकार कानून पर हस्ताक्षर किये, जिसने प्रथम वर्ष के लिए ६०९ करोड ८० लाख डालर की राशि खर्च करने का अधिकार प्रदान किया,

यह कहते हुए कि "यह स्वतंत्र विश्व के समक्ष उपस्थित चुनौती का उत्तर है।" उन्होंने तुरन्त ही एक अरब डालर इस कार्यक्रम का प्रारम्भ करने के लिए देने का आदेश दिया और रिपब्लिकन पाल जी. हाफमैन-नामक ऑटोमोबाइल-निर्माता को आर्थिक सहयोग-प्रशासन का प्रधान नियुक्त किया।

आर्थिक सहयोग ने यूरोप मे सन्तोषप्रद प्रगति की और वहाँ शनैः-शनैः सुधार दृष्टिगोचर हुआ। जब योजना ने १९५१ मे अपना चार वर्ष का कार्यक्रम समाप्त किया, तब तक अमरीका उसके कार्य के लिए बारह अरब डालर ऋण दे चुका था और यूरोप अपने पैरो पर खडा हो चुका था। अमरीका-यूरोपीय सम्बन्धो की दिशा मे एक नये कदम का सूत्रपात हो चुका था और धन तथा सामग्री की नयी-नयी मॉगे स्वीकृत हो चुकी थीं। १९५० के मध्य तक मार्शल योजनावाले देश अपने औद्योगिक उत्पादन की सूची को १९३६-१९३८ के स्तर की तुलना मे १।४ गुना ऊपर उठा चुके थे। १९५१ के अन्त तक वह १।२ गुना ऊँचा उठ चुकी थी। वास्तव मे पश्चिमी यूरोप के कारखाने और फार्म अपने इतिहास के उत्पादन-दर के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच-चुके थे। इस विशाल जनसख्यावाले क्षेत्र मे, आशिक रूप मे अमरीका और दूसरी भूमियो मे अधिक उदार तटकर व्यवस्था के कारण, अच्छे और सुधरते हुए स्तर के कारण, पर्याप्त उपभोक्ता सामग्री की बिक्री की गुजाइश थी। अधिकाश देश अपने औद्योगिक उत्पादन मे प्रति वर्ष ७ से ९ प्रतिशत तक की वृद्धि कर रहे थे। दुर्भाग्यवश, एक महान सतुलनकारी वस्तु अस्तित्व मे आ गयी थी। सम्पूर्ण पश्चिम के लिए सुसज्ज होना आवश्यक हो गया था और शस्त्रो के उत्पादन के भारी खर्च के परिणामस्वरूप ऊँचे करो तथा युद्धस्थिति ने लगातार हो रही समृद्धि पर रोक लगाने का काम किया।

किसी भी सहकारी कार्यक्रम मे से, जिसमे एक पक्ष देने का अधिकाश कार्य करता है और दूसरा लेने का, कुछ तनाव पृथक नहीं किया जा सकता। कई अमरीकियो को लगा कि यूरोपवासियो ने उनके प्रति पर्याप्त आभार-प्रदर्शन नही किया कई यूरोपवासियो को लगा कि अमरीकावासी आवश्यकता से अधिक धन्यवाद की आशा रखते हैं। कुछ यूरोपवासियों ने सुधार, प्रयत्न और नये तरीके के लिए परामर्शदाताओं की नियुक्ति पर बल दिये जाने का प्रतिपादन किया—उन्हें पुराने तरीके ही अच्छे लगते थे, भले ही वे अकुशल ही क्यो न रहे हो। कुछ अमरीकियों को इस बात से निराशा हुई कि, यूरोप ने एकता की दिशा मे अधिक प्रगति नहीं की। विशेष रूप मे फ्रास द्वारा

जर्मनी को सन्देह की दृष्टि से देखना, एक असन्तुलित विचार लगा। कुछ यूरोपीय देशों में वर्गभेद ने सामाजिक न्याय और आर्थिक समृद्धि में बाधा पहुंचायी। सबेर में, लड़ाई-झगड़े और विरोध उभर कर सामने आ गये। फिर भी अधिकांश में, विभिन्न सरकारों ने धैर्य दर्शाया। इंग्लैंड और उनके मुख्य सहकारी कुशल-व्यवहार के नमूने थे और कम्यूनिस्ट दलों द्वारा उपद्रव खड़ा करने के अतिरिक्त अन्य वास्तविक कठिनाई लक्षित नहीं हुई। पश्चिमी यूरोप बाह्य रूप से अमरीकी रहन-सहन और तौर-तरीके अपनाता हुआ दिखलायी पड़ा, जैसे अमरीकी देहाती भाषा का प्रयोग, खाद्य पेय भोजन और वेशभूषा, मशीन, कल-पुर्जे और सामूहिक उत्पादन प्रणालियाँ आदि।

नया रूसी आक्रमण : स्तालिन ने अनुभव किया कि मार्शल-योजना यूरोप के आत्मसमर्पण और कलह की रूसी आशाओं का अन्त प्रमाणित होगी। मास्को ने अपने क्लेश और विरोध को विभिन्न रूपों में प्रकट किया। अक्तूबर १९४७ में, कम्यूनिस्ट-सूचना-ब्यूरो का संगठन किया गया, ताकि पिछलग्गू राष्ट्रों का मार्गदर्शन किया जा सके, संसार की कम्यूनिस्ट-पार्टियों पर नियंत्रण रखा जा सके और प्रचार में वृद्धि की जा सके। कुछ माह पश्चात् चेकोस्लोवाकिया का हथियाना एक ऐसी सम्पूर्ण घटना थी, जिसका पश्चिमी शक्तियों ने अविलम्ब प्रतिवाद किया। रूस के आदेशानुसार कम्यूनिस्ट-तत्वों ने फ्रांस को हड़तालों द्वारा और इटली को दंगों द्वारा पंगु बनाने का प्रयत्न किया। फिर, १ अप्रैल १९४८ को सोवियत-रूस ने एक ऐसी चाल चली, जिसके विजयी होने की उसे आशा थी—वह चाल थी पश्चिमी बर्लिन और पश्चिमी जर्मनी के अमरीकी, फ्रेंच और ब्रिटिश क्षेत्रों के मध्य रेल तथा सड़क यातायात पर प्रतिबंध लगाकर, उन्हें पृथक् कर देना। इस नाकेबन्दी से आशा की जाती थी कि बर्लिन रूस के सम्मुख आत्मसमर्पण कर देगा और तब उसे एक सुदृढ़ जर्मन-कम्यूनिस्ट-राष्ट्र की राजधानी बनाया जा सकेगा। रूस ने यह बहाना किया कि, पश्चिम ने कई समझौतों को भंग किया है किन्तु वास्तविक कारण यह था कि पश्चिम जर्मनी को फिर से आर्थिक तथा राजनीतिक रूप से पुनःस्थापित यूरोप का एक महत्वपूर्ण अंग बनाने की दिशा में प्रयत्न कर रहा था।

अमरीकियों तथा अंग्रेजों ने एक क्षण के लिए भी आत्मसमर्पण करने की बात नहीं सोची। जनरल ल्युसिस डी. क्ले और जनरल सर ब्रायन राबर्टसन ने

अविलम्ब सड़क मार्ग के इस प्रतिबन्ध के दाव को वायुमार्ग द्वारा वस्तुएं उठाकर पराजित कर दिया। यह घोषित करके कि, उनकी सेनाएं बर्लिन का कभी त्याग नहीं करेंगी, उन्होंने एक के पश्चात दूसरा नया वायुस्थल तैयार किया और बर्लिन की सहायता हेतु सामान वाहक वायुयानों को बड़ी संख्या को उपयोग में लाना प्रारम्भ कर दिया। पतझड़ तक बर्लिन के वायुस्थलों पर ३ मिनट के अन्तर से लगभग एक हजार सामान वाहक वायुयान आने लगे, जो प्रति दिन कम-से-कम ३ हजार टन सामान लाते। उन्होंने न केवल खाद्य-सामग्री का ही संचय कर लिया अपितु ईंधन का भी। यह कार्य अन्त में कम्बाइंड-एअरलिफ्ट-टास्क फोर्स के सिपुर्द किया गया, जिसका नेतृत्व एक अमरीकी को तथा एक ब्रिटिश को सौंपा गया। जब रूसियों ने उत्तेजनात्मक चालें चलनी शुरू कीं तो यह आशंका उत्पन्न हो गयी कि कहीं किसी अप्रिय घटना के कारण युद्ध का प्रारम्भ न हो जाये। अतएव ब्रिटेन ने घोषणा की कि, वह अपने सामान-वाहक-वायुयानों की रक्षा के लिए लड़ाकू वायुयानों का उपयोग करेंगे। बर्लिनवासियों ने मित्रराष्ट्रों के शौर्यपूर्ण प्रयत्न की प्रशंसा की—दिसम्बर में कम्यूनिस्ट धमकियों के बावजूद किये गये निर्वाचन में, उनमें से १३,३०,००० ने मतदान में भाग लिया और कम्यूनिस्ट-विरोधी सोशियल-डेमोक्रेटों को ६५ प्रतिशत मत प्रदान किये।

वास्तव में, सोवियत-विरोधी भावना समूचे पश्चिमी यूरोप में फैल गयी। रूसी सरकार ने अन्त में घेरेबन्दी हटा ली और रूर के नियंत्रण में पुनः हिस्सेदार होने का दावा किया। पर वह अस्वीकार कर दिया गया। अगस्त १९४९ में पश्चिम जर्मनी के निर्वाचन में कोनार्ड एडेन्योर के नेतृत्व में एक उदारवादी सरकार का चुनाव किया गया। इसी वर्ष पश्चिमी मित्रराष्ट्रों ने सैनिक नियंत्रण के स्थान पर एक नागरिक उच्च आयोग की नियुक्ति की और अमरीका ने जनरल क्ले के स्थान पर जे मेक्क्लाय की नियुक्ति की।

राष्ट्रवादी चीन की पराजय : सितम्बर १९४९ में ट्रूमैन ने एक महत्व की घोषणा की: "हमारे पास प्रमाण मौजूद हैं कि रूस में अणु का विस्फोट हुआ है।" यद्यपि रूस को ऐसे बमों का संग्रह करने में कुछ समय लगेगा, तथापि वे अमरीका की दिशा में आगे बढ़ रहे थे। इसी वर्ष सुदूर पूर्व में भी एक बड़े महत्व की घटना हुई। कम्यूनिस्ट सेनाओं ने आश्चर्यजनक तीव्रता से चीन पर अधिकार करके २० वर्ष से चल रहे गृहयुद्ध का अन्त कर दिया।

जब युद्ध का प्रारम्भ हुआ तो च्याग-काई-शेक के अन्तर्गत क्युमिनटाग राष्ट्रवादियो का चीन की लगभग आधी मुख्य भूमि और जनसख्या पर आधिपत्य था। किन्तु, उनके शासन मे भ्रष्टाचार का वोलवाला था; फलस्वरूप उनका प्रभाव भी कमजोर बन गया। २४ अप्रैल को, च्याग की राजधानी नानाकिंग पर अधिकार कर लेने के उपरान्त कम्यूनिस्ट सेनाओ ने केन्टन, चुगकिग और शंघाई के मुख्य नगरों पर अधिकार करने के लिए आगे बढना प्रारम्भ किया। ज्यों-ज्यों वे आगे बढ़े अमरीका द्वारा च्याग को दिये गये अस्त्र-शस्त्रो पर भी अधिकार करते गये। इस नेता के साथ अमरीका के सम्बधो की कहानी बडी जटिल है। युद्ध की अवधि मे अमरीकी सरकार ने कम्यूनिस्टो और राष्ट्रवादियो के उदार तत्वो का केन्द्र मे प्रभावशाली दल बनाने का प्रयत्न किया था। जापान की पराजय के पश्चात्, ट्रूमैन ने इसी नीति को जारी रखा। जार्ज मार्शल ने चीन जाकर दोनों दलों के वीच कई अस्थायी सधियॉ करने की व्यवस्था करके एक मिली-जुली सरकार के निर्माण का यथासम्भव प्रयत्न किया था। दुर्भाग्यवश न तो च्याग-काई-शेक और न माओत्सेतुग के आधीन विरोधी दल ही किसी प्रकार का समझौता करने के इच्छुक थे और ट्रूमैन-प्रशासन को दोनो नेताओं के बारे मे पूर्णरूपेण भ्रम हो गया। कम्यूनिस्टों का का विश्वास था कि गृहयुद्ध का अन्त चाहे पूर्ण विजय मे हो चाहे विध्वन्स में, लेकिन अन्तिम सफलता उन्हीं को मिलेगी। च्याग का अपना विश्वास था था कि उनकी सरकार चाहे कितनी ही निकम्मी क्यो न हो, उनकी राजनीति कितनी ही वेकार क्यों न हो, अमरीका को अन्त मे उनकी ओर से पूर्ण प्रयत्न करना ही पडेगा। उन्होंने इस बात का जरा भी अनुभव नही किया कि अमरीकी जनता अरबों डालरो और लाखो व्यक्तियों को चीनी दलदल मे फेकना कभी बर्दाश्त नहीं करेगी।

अतएव अमरीका असहाय होकर माओ की नियमपालक सेनाओ द्वारा देश पर सम्पूर्ण आधिपत्य किया जाना देखता रहा और च्याग की शेप सेना भाग कर ताइवान द्वीप (फारमोसा) जा पहुँची। वाशिगटन को युद्धोत्तर काल के लिए दी गयी २० लाख डालर (दो मिलियन) की अनुमानित सहायता की रकम को, जो सम्भवतः इतनी अधिक नही थी, पूर्णरूपेण नष्ट हो चुकी समझ लेने पर मजबूर हो जाना पड़ा। विजयी माओ ने पीपिंग मे एक 'परामर्शदायी सभा' अथवा वैधानिक अधिवेशन बुलाया, जिसने विना किसी वास्तविक वादविवाद के कम्यूनिस्ट नेताओं द्वारा पहले से ही तैयार किये गये

सरकार की रूपरेखा सम्बन्धी मसविदे को स्वीकृति प्रदान कर दी। इस प्रकार चीनी जनता का गणतत्र अस्तित्व मे आया, जो परम्परा से ही प्रजातत्र की निन्दा करनेवाला, धर्मविरोधी तथा पश्चिम और विशेषकर अमरीका से घृणा करनेवाला था। १९४८ की समाप्ति के पूर्व, माओ ने राजनीतिक और आर्थिक घनिष्ठतापूर्वक मित्रता के हेतु मास्को की यात्रा की और स्वीकार करना पडा कि ४५ करोड व्यक्तियो को कम्यूनिस्ट गुट मे सम्मिलित कर लिया गया है। राष्ट्रवादियो को सयुक्त-राष्ट्र सघ मे अब भी चीन का स्थान प्राप्त था; किन्तु कम्यूनिस्टो को तो चीन ही प्राप्त हो गया था।

इस गहरी पराजय से स्तब्ध होकर अमरीका ने अपने किसी भी वर्ग पर बिना दोषारोपण किये भूतकालीन स्थिति की समीक्षा की। स्टेट-डिपार्टमेट के द्वारा लगभग एक हजार पृष्ठ का एक श्वेतपत्र प्रकाशित किया गया, जिसमे च्याग-काई-शेक को ही एक बडा दोषी बताया गया। चीनी जनता मे जहाँ एक ओर बडे सुधार और पुनर्निर्माण के कार्यक्रम गतिशील थे, उस समय बेईमान और अयोग्य राष्ट्रवादियो ने उनका दुरुपयोग किया और कम्युनिस्टो ने बुद्धिमानी से उसका लाभ उठाया। ब्रिटिश सरकार ने वास्तविक सरकार को ही मान्यता प्रदान करने की अपनी ऐतिहासिक नीति के अनुसार पीपिग मे एक राजदूत भेजा, जिसकी उपेक्षा की गयी। ब्रिटेन का दृष्टिकोण था कि इस कौशलपूर्ण व्यवहार द्वारा चीन की नयी सरकार को मास्को से स्वतत्र रहने को प्रभावित किया जा सकेगा। किन्तु, अमरीका ने च्याग के शासन को ही चीनी जनता का सच्चा प्रतिनिधि और सयुक्त-राष्ट्र-सुरक्षा-परिषद मे भी चीन के स्थान का सच्चा हकदार मानना जारी रखा। स्टेट-डिपार्टमेट ने माओ को चेतावनी दी कि हम दक्षिण-पूर्व एशिया के किसी भी छोटे देश की स्वतत्रता पर किये गये प्रहार का विरोध करेगे। जहाँ तक माओ का सम्बन्ध था, उसने अमरीका की अवहेलना की।

ये सब घटनाए युद्धोत्तर-काल का एक दुःखद अध्याय रही। सदियों से अमरीका ही चीन का प्रमुख पूर्वी मित्र रहा था। जान हे के समय मे अमरीका-वासियो ने चीन के विभाजन का विरोध किया था, अमरीका ने वहाँ पर कालेजो और अस्पतालो का निर्माण किया, चीनी विद्यार्थियो को प्रशिक्षित किया और स्वास्थ्य-कार्यक्रम को आगे बढाया। अब इस सारे कार्य पर पानी फिरते देख कर दु:ख होना स्वाभाविक था। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात थी, ऐसे ही अवसर पर रूस द्वारा अणुबम को पहले की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली बना

डालना। स्पष्टतया प्रतिरक्षात्मक मोर्चों को विस्तृत करना आवश्यक बना गया। पश्चिमी और प्रशांत क्षेत्रों की जनता का नये कदम उठाना भी अनिवार्य हो गया।

उत्तरी एटलांटिक संधिराष्ट्र संघटन (नाटो) की स्थापना : भाग्यवश पश्चिम में सत्ता के एकीकरण की दिशा मे प्रारम्भिक कदम उठाये जा चुके थे। माओ की विजययात्रा और मई १९४९ मे पेरिस में चार बड़ों की कानफरेंस की असफलता के पूर्व ही अर्नेस्ट बेवन और बेनेलुक्स (बेलजियम, नीदरलैण्ड, लक्जेम्बर्ग) के नेताओं ने एक घनिष्ट सुरक्षा-सत्र की योजना के सम्बन्ध मे बातचीत की थी। अमरीका, कनाडा और अन्य देश भी इस सन्धि-वार्तालाप में सम्मिलित कर लिये गये थे। ४ अप्रैल १९४९ को अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस और ९ अन्य देशों के विदेश-मंत्रियों ने ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर करके उत्तर-एटलांटिक-सुरक्षा-संगठन (नाटो) का निर्माण किया। सन्धि मे घोषणा की गयी थी कि इस पर हस्ताक्षर करनेवाले मानते हैं कि इनमे से किसी एक पर शस्त्र द्वारा किया गया प्रहार इन सभी पर शस्त्र द्वारा किया गया प्रहार समझा जायेगा। ऐसा आक्रमण होने पर उत्तर एटलांटिक-क्षेत्र की सुरक्षा को बनाये रखने और पुनःस्थापित करने के लिए बारहों राष्ट्र एक हो कर कार्यवाही करेंगे।

नाटो द्वारा यूरोप और उत्तरी अमरीका के सर्वाधिक औद्योगिक क्षेत्र की लगभग ३५ करोड़ जनता एक ऐसी सन्धि के अन्तर्गत लायी जा सकी, जिसका ध्येय नयी सैन्य टुकड़ियों का निर्माण, सब के लिए शस्त्रों और सेनापतियों का चुनाव करना और शक्ति का शक्ति से सामना करना था। इससे पूर्व अमरीका ने कभी भी इस प्रकार व्यवहार रूप से अपने कुछ सार्वभौमिक अधिकारों का साकार समर्पण नहीं किया था। इससे पूर्व उसने कभी स्पष्ट रूप से यह स्वीकार नहीं किया था कि अब उसकी सीमाएं समुद्रपार उन पंक्तियों पर स्थित हैं, जो राष्ट्रों को रूसी अत्याचार से पृथक करती हैं। अमरीका की बहुसख्यक जनता की भावना किस कदर इस सन्धि के पक्ष मे थी, यह सिनेट द्वारा बिना किसी भी सन्देह के इसे ८२ के विरुद्ध १३ मतों से स्वीकार कर लिये जाने से प्रकट हो जाता है। इसके स्वीकृत होते ही ट्रूमैन प्रशासन ने सैन्य सहायक कार्यक्षमता की एक योजना बनायी जिसके अनुसार उसे आगामी वर्ष मे नाटो पर हस्ताक्षर करनेवाले राष्ट्रों को शस्त्र और परामर्श देने के हेतु १ अरब ४५ करोड डालर की रकम खर्च

करने का अधिकार मिल जाता था। कुछ अन्य देश जो इससे लाभान्वित होते थे, वे थे—यूनान तुर्की (जो शीघ्र ही 'नाटो' मे सम्मिलित होनेवाला था) ईरान (जहाँ कम्यूनिस्टो के अतिक्रमण का भय बना था) तथा कोरिया और फिलिपाइन्स। कुछ लोगों के विचार से यह रकम बहुत बडी थी—जब कि कुछ का जिसमें सिनेटर टाफ्ट भी सम्मिलित थे, यह विश्वास था कि यह सहायता तब तक न की जाय जब तक नाटो-परिषद अपनी योजनाओं को पूर्ण नही कर लेती। किन्तु प्रशासन का मसविदा कानून बन गया।

आइज़नहोवर नाटो के सेनापति के रूप में : ये कदम उचित अवसर पर ही उठाये गये। कोरिया की घटनाओं ने स्पष्ट कर दिया कि तृतीय विश्वयुद्ध का खतरा वास्तविक और भयानक था। पश्चिमी राष्ट्रों की कोई भी दुर्बलता स्टालिन के आक्रमण को करीब करीब सुनिश्चित बना देती। रूस के पास ५० लाख से अधिक सशस्त्र व्यक्ति, १५ हजार वायुयान और ३० हजार टैंक थे। वह तत्काल ही अपने १७५ अतिरिक्त डिवीजन और अपने अनुगामी देशों के अनेक डिवीजन खडे कर सकता था। उसके पनडुब्बी-बेडों मे गश्त लगाने की बडी शक्ति थी; पूर्वी जर्मनी और चेकोस्लावेकिया के अन्तिम अड्डों से फेंके गये उसके प्रक्षेपास्त्र पश्चिम के किसी भी नगर तक जा सकते थे। और, बाद मे रूसी नेताओं के रहस्योद्घाटन ने स्टालिन की सम्पूर्ण उत्तरदायित्वहीन, नृशंसता और मिथ्याचरण को एक तथ्य के रूप मे प्रमाणित कर दिया था। यदि उसे अमरीकी अणु शक्ति का भय न होता, तो उसके सैनिक पूरे यूरोप मे इग्लिश चैनल और जिब्राल्टर तक फैल गये होते।

१९५० मे 'नाटो' के सदस्यों ने शीघ्रता से अपना सहयोग दिया और शस्त्र-शक्ति-सगठन के रूप में उससे कार्य का आरम्भ हुआ। वर्ष के प्रारम्भ में ही उसकी परिषद ने एक समन्वित सुरक्षा की योजना की स्वीकृति प्रदान की। शस्त्रास्त्र के लिए अमरीकी जहाज अप्रैल मे यूरोप पहुंचे। ब्रिटेन ने भी अपनी हवाई और टैंक शक्ति मे सुधार करने का वचन दिया कि आगामी वसन्त तक वह लगभग ७ लाख व्यक्तियों को अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित कर देगा। फ्रांस की सरकार ने भी एक त्रि-वर्षीय पुनःशस्त्रीकरण कार्यक्रम आरम्भ किया, ताकि अविलम्ब कार्यवाही के लिए गणतंत्र को २० डिवीजन उपलब्ध हो सकें। नाटो की सेना मे अमरीका की शक्ति ९ डिवीजन निश्चित की गयी, जिनमे से दो पहले से ही यूरोप मे स्थित थे। अमरीका के सैनिक मिशन ने तुर्की के

६ लाख व्यक्तियों को प्रशिक्षित और सज्जित करने के हेतु कुशल परामर्श दिया। अन्त में दिसम्बर में जनरल आइजनहोवर ने नाटो की सभी स्थलसेना का सेनापति बनना स्वीकार कर लिया और उसके पश्चात् शीघ्र ही येरबर्ग पहुँचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। उन्होंने अपना हेडक्वार्टर पेरिस के समीप स्थापित किया और आपने विशेष उत्साह, बुद्धि और आशावाद के साथ कार्य प्रारम्भ किया।

इस समय तक विदेश विभाग डीन जी. एचेसन के हाथों में था, जो उसके अब तक सभी योग्यतम प्रमुखों में से एक थे। वे एक धर्मोपदेशक के पुत्र, अनुभवी एटार्नी और अनेक क्षेत्रों में रुचि रखनेवाले व्यक्ति थे। महायुद्ध की अवधि में उन्होंने इस विभाग के अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया था। उनकी प्रतिभा और नैतिक बुद्धिवाद ने उनके कई शत्रु पैदा कर दिये थे। किन्तु, अपने ही पक्ष के बढ़ते हुए अन्यायपूर्ण प्रहारों के तूफान के बावजूद वे स्थिति को दृढ़ता और बुद्धिमत्ता से सम्हाले रहे। ओटावा में १९५१ में हुई नाटो-परिषद की बैठक में एचेसन ही ने अमरीका का प्रतिनिधित्व किया था। इस बैठक में तुर्की और यूनान को भी सम्मिलित कर लिया गया। आइजनहोवर ने इस बैठक को एक सन्देश भेज कर रूसी खतरे के प्रति सचेष्ट रहने की आवश्यकता पर बल दिया था। इस सन्देश में कुछ नाटो राष्ट्रों से उनके नाम का उल्लेख किये बिना, यह आग्रह किया गया था कि वे अधिक सैन्यदल तैयार करें, अधिक शस्त्रास्त्रों के कारखानों का निर्माण करें और आगामी वर्ष शस्त्रास्त्र के उत्पादन में एक तिहाई वृद्धि कर दें। ऐसी मांगों पर, जिन पर अमरीकी सिनेट में राबर्ट टैफ्ट ने अधिक बल दिया था, अनेक यूरोपीय देशों ने प्रतिवाद किया। वित्त मंत्रियों और अर्थशास्त्रियों ने भी जोर देकर कहा कि वे आतंरिक विनाश के भय के बिना अधिक त्याग नहीं कर सकते। अतः उन्हें दिवालिया होने के खतरे के साथ रूसी आक्रमण के खतरे पर भी विचार करना पड़ा।

इस समय तक यह स्पष्ट हो गया था कि पश्चिमी यूरोप की सुरक्षा और समृद्धि के लिए पश्चिमी जर्मनी को महत्त्वपूर्ण भाग लेना होगा। जर्मन लोग पद्धतिशील थे। वे उद्योगों और नवीनतम प्रणालियों में दक्ष थे और वे एक महत्वपूर्ण आर्थिक पुनर्जागरण का अनुभव कर रहे थे। पश्चिम को उनके लोहा और इस्पात, उनकी सुदक्ष जनशक्ति और उनके सैन्य दल की आवश्यकता थी। पश्चिम को ज्ञात था कि इसके लिए उसे मूल्य चुकाना पड़ेगा—पश्चिमी जर्मन की राजनीतिक स्वतंत्रता के रूप में। किन्तु, साथ ही उसे फ्रांस के समान ही

पुनर्जागृत सैन्य उन्माद का भय भी बना हुआ था। किन्तु, १९५१ की विश्व स्थिति ने यह खतरा मोल लेना आवश्यक बना दिया। ग्रीष्मकाल मे अधिकार करनेवाली तीन शक्तियो ने जर्मनी की आन्तरिक प्रभुता को काफी हद तक पुनःस्थापित करने का निश्चय किया। वे एडेन्यार कोनार्ड के अन्तर्गत बोन गणतत्र के साथ उसे सामान्य स्वशासन देने सम्बन्धी समझौते की बातचीत करने लगे। फिर भी, वे पश्चिमी बर्लिन पर नियन्त्रण रखने, रीख मे सेनाए रखने, जर्मन एकीकरण के प्रश्न पर रूस के साथ बातचीत करने का अधिकार रखने, पश्चिम के लिए हानिकारक मूलनीतियो के परिवर्तन पर निषेधाधिकार का प्रयोग करने और कम्यूनिस्ट अथवा फासिस्ट राज्य परिवर्तन को रोकने के लिए हस्तक्षेप करने के अधिकार पर जोर देने वाले थे। इन प्रस्तावित शर्तों ने अनेक जर्मनो को विरोधी बना दिया।

उसी समय, तीन पश्चिमी सरकारो ने परस्पर सुरक्षा-सम्बन्धी एक सन्धि भी की। इसकी धाराओं के अन्तर्गत जर्मनी को एक सैन्य दल खडा करने की अनुज्ञा मिली; किन्तु उसे एक राष्ट्रीय सैन्यदल के स्थान पर एक अन्तरराष्ट्रीय सैन्यदल का भाग बनाया गया। इसका अर्थ था कि वह फ्रास, इटली, जर्मनी और बैनेलुक्स की बहुउद्देश्यीय सेना का ही एक अग होगा। यह यूरोपीय सेना नाटो-देशो के पृथक राष्ट्रीय सैन्य दल के साथ ही आइजनहोवर और उनके उत्तराधिकारी के अन्तर्गत कार्य करती। इस प्रकार पश्चिम को जर्मन-जनशक्ति का लाभ, अधिक आक्रमण के भय के बिना उपलब्ध हो सका। इस प्रतिभापूर्ण योजना का उदय प्राथमिक रूप से फ्रास से ही हुआ। १९५१ के अन्त तक, यह किसी भी प्रकार निश्चित नहीं हो पाया कि, फ्रास अथवा जर्मनी मे से कोई भी इस योजना को स्वीकार करेगा अथवा नहीं। किन्तु, पश्चिम जर्मनी शीघ्र ही अपनी स्वय की सरकार के अन्तर्गत लगभग स्वतंत्र पद पा लेगा और आइजनहोवर की इच्छानुसार जर्मन डिवीजनो को योजना के लिए बल दिया जायेगा, यह पूर्णरूपेण स्पष्ट हो गया। रूस ने विरोध करने के सभी अधिकार खो दिये थे।

एशिया का मोर्चा : महायुद्ध की अवधि मे कुछ अमरीकी दलों ने बलपूर्वक कहा था कि वास्तव मे प्रशान्त का मोर्चा एटलाटिक के मोर्चे की अपेक्षा महत्वपूर्ण है। युद्ध के उपरान्त भी कुछ लोगो का यही दृष्टिकोण था। जब च्याग ने चीन की मुख्य भूमि को गॅवा दिया और भारत तथा ब्रिटेन ने

माओ को मान्यता प्रदान कर दी, तो अमरीका मे एक तीव्र वाद-विवाद उठ खड़ा हुआ। कई अमरीकावासियो ने ब्रिटेन और भारत के साथ सहमति प्रकट करके कहा कि चीन को सयुक्त राष्ट्र सघ मे प्रवेश मिलना चाहिए। कुछ ने और आगे बढ कर यह सुझाव दिया कि अमरीका को पीपिंग मे एक राजदूत भेज कर चीन की भूतपूर्व मित्रता का कुछ अंश प्राप्त करके, दो ऐतिहासिक शत्रुओ चीनियों और रूसियों मे मतभेद उत्पन्न करने का प्रयत्न करना चाहिए। किन्तु, बहुमत से काग्रेस और अमरीकी जनता का एक बड़ा भाग माओ सरकार के प्रति विरोधी नीति ही बनाये रखने पर दृढ रहा।

कुछ समय के लिए ट्रूमैन-प्रशासन ने एक बीच का रास्ता अपनाया। उसने कम्यूनिस्ट चीन को मान्यता प्रदान करने की दिशा मे कोई कदम नही उठाया। इसके विपरीत उसने च्याग पर फारमोसा मे होनेवाले सम्भावित आक्रमण से रक्षा के लिए अमरीकी हवाई और समुद्री शक्ति का उपयोग करने का वचन देना अस्वीकार कर दिया (जनवरी १९५०)। तीनों सेनाओं के प्रमुखो ने यह रिपोर्ट दी थी कि यह टापू आवश्यक नही है। इस बीच, प्रशासन ने अन्य स्थानों पर अमरीका की स्थिति को दृढ बनाने का प्रयत्न किया।

फिलिपाइस को आश्वासनानुसार ४ जुलाई, १९४६ को स्वतत्रता प्रदान की गयी। अमरीका ने उसे उदारतापूर्वक ६० करोड़ डालर से भी अधिक रकम, सामग्री और कुशल व्यक्ति पुनर्निर्माण के लिए प्रदान किये। इसके परिवर्तन में फिलिपाइन्स ने ६ वर्ष तक अमरीका के साथ मुक्त व्यापार करना स्वीकार किया और ९९ वर्षों तक सैनिक अड्डों के लिए पट्टा दिया।

विजित जापान के साथ बुद्धिमत्तापूर्ण औदार्य के साथ व्यवहार किया गया। अमरीका की इच्छा नही थी कि वह उस देश को अपने दृढ किन्तु उदार नियन्त्रण से, जो कि मित्र राष्ट्रों के सर्वोच्च सेनापति जनरल डगलस मैकार्थर द्वारा हो रहा था, बाहर जाने दे। यद्यपि मेकार्थर को वाशिंगटन के साथ घनिष्ट सम्पर्क रखने की आवश्यकता थी और उन्हे उसके निर्देशों के अनुसार चलना था; किन्तु उनके अभिमानी स्वभाव, जापानियो के बीच अत्यधिक प्रतिष्ठा और वास्तविक कुशाग्रता ने उन्हें बहुत अंश तक स्वतत्रता दे रखी थी। उनकी आत्मप्रतिष्ठा, एकाकीपन और अपने कार्य पर ही ध्यान केन्द्रित किये रहने के कारण, कई अमरीकी दर्शकों को उनसे चिढ हो गयी, किन्तु द्वीप के निवासी जिनके वे प्रमुख थे, इन बातो से प्रभावित थे। वे अधिकार, मर्यादा, शात-स्वभाव और समर्पण की भावना की प्रतिष्ठा करते थे। इसके

अतिरिक्त मैकार्थर ने जो प्रस्ताव प्रस्तुत किये और उनका कार्यान्वय किया, जापानियो ने उन्हे अपनाने मे बहुत कम कठिनाई का अनुभव किया। इसका कारण यह था कि, उन्होंने अपने को और अपने आधीनस्थ सहायको को पृष्ठभूमि में ही रखा था। मिकाडो सम्राट बने रहे यद्यपि उनके अनुगामियों ने उनके लिए जिस अर्धदेवत्व पद की मॉग की थी, उन अधिकारो से उन्हें वंचित कर दिया गया था। जापानी सरकार अपने पुराने ढॉचे पर ही चलती रही यद्यपि उसे सर्वोच्च सेनापति द्वारा किये गये अथवा प्रसारित किये गये निश्चयों का पालन करना पडता था। मैकार्थर ने अपने प्रभुत्व का प्रदर्शन नहीं किया और अमरीकियो द्वारा अपने आपको विजेताओ के रूप मे भी प्रचारित नहीं करने दिया। कुछ जापानियो ने हिरोशिमा-काड का विरोध करते हुए भी इस बात के लिए अमरीकी सेनाओ के प्रति कृतज्ञता का अनुभव किया। उन्होंने नाजियों द्वारा रूस मे और उसके प्रत्युत्तर में रूसियो द्वारा जर्मनी मे किये गये अत्याचारो जैसी कोई भी हरकत नही की। उन्होंने अपनी सैन्य टुकडियों पर नानकिंग, मलाया और फिलिपाइस मे की गयी हरकतो के बावजद प्रशसनीय नियन्त्रण का परिचय दिया था।

जापान ने मुख्य अमरीकी नीतियो का विरोध भी नहीं किया। वाशिगटन और मैकार्थर का ध्येय था कि द्वीप की सस्थाओ को अधिक प्रजातान्त्रिक सॉचे मे ढाल कर परिवर्तित कर दिया जाय। निःशस्त्रीकरण पूर्ण रूप से किया गया। किले गिरा दिये गये, जहाज डुबा दिये गये, अस्त्रशस्त्र विनष्ट कर दिये गये और सैनिकों ने नागरिक जीवन अपना लिया। युद्धापराधियो पर चलाये गये मुकदमे के फलस्वरूप कुछ उच्च पदस्थ व्यक्तियो को, जिनमे प्रधान मत्री तोजो तथा सौ एक छोटे नेता थे, फासी हुई। सबसे बडे जापानी कारटेलो (कई कम्पनियो के समूह) अथवा ठेको को अस्थायी रूप से समाप्त कर दिया गया। शिक्षा प्रणाली मे सुधार कर दिया गया और प्रजातान्त्रिक सिद्धान्तों का अध्यापन उसका एक प्रमुख कार्य बना दिया गया। श्रम-सघटनो को यह अवसर दिया गया कि वे अत्यधिक शक्तिशाली उद्योगों पर प्रहार कर सके। महिलाओं को वही पद दिया गया, जो पाश्चात्य देशो मे उन्हें दिया जाता है। ऐसे समय मे मैकार्थर ने समाजवादी नीतियो से दूर रह कर, स्वतत्र उद्योग प्रणाली को पूर्ण प्रभुत्व देकर अपनी स्वाभाविक अनुदारता को व्यक्त कर दिया। अधिकाशतया उनमे पूर्वीय स्वभाव के प्रति गहरा आदर भाव था किन्तु बहुसख्यक अमरीकियों के समान उनका भी यह दृष्टिकोण था कि जापानियो ने अपने नियमों

का अनुशासनबद्ध पालन किया और उनमें व्यक्तिवाद के गुणों का विकास करने की आवश्यकता है।

युद्धकाल की क्षति के बावजूद जापान की जनसख्या मे वृद्धि होती गयी, यहाँ तक कि १९५० मे वह ९ करोड तक जा पहुँची। कोरिया, मचूरिया तथा अन्य प्रदेशों के हाथ से निकल जाने के पश्चात् राष्ट्र के सीमित साधनो को दृष्टि मे रखते हुए यह सख्या व्याकुल कर देनेवाली थी। अमरीकी सेना के लिए किये गये खर्च और उनके द्वारा किये गये खर्च ने द्वीप की डॉवाडोल आर्थिक स्थिति को और भी बुरा बना दिया। यदि जापान को कम्यूनिस्टों द्वारा हजम करने से बचाना था तो उसे पुनः समृद्धिशाली बनाना आवश्यक था। इसी कारण से अमरीकी अधिकारियों ने सुधारों की ओर कम ध्यान दिया। अधिक ध्यान पुनर्रचना की ओर ही दिया। १९४९ मे एक आर्थिक सन्तुलन सम्बन्धी कार्यक्रम, जो यूरोप की ई. सी. ए से मिलता-जुलता था, बनाया गया और वास्तव मे सहायक सिद्ध हुआ। बडे-बडे औद्योगिक घटकों को पुनः प्रगति करने की अनुज्ञा दी गयी ताकि अत्यधिक प्रतियोगिता पर नियन्त्रण लगाया जा सके। कामगार-नेताओं की माँगों को सीमित रखा गया; क्योंकि जापान अभी पश्चिमी जीवनमान की तरह नहीं रह सकता था। चूँकि जापान अपने वस्त्रों, खिलौनों और अन्य उपभोक्ता सामग्रियों का बाजार खो चुका था, अमरीकी परामर्शदाताओं ने उसे भारी उद्योगों की स्थापना मे सहायता दी और उन्होंने उत्सुक एशिया के बाजारों को अपनी मशीनें भेजना प्रारम्भ किया। १९५० के प्रारम्भ मे उनका उत्पादन १९५० के उत्पादन से १।५ ही कम था, और वह इस कमी की पूर्ति की ओर अग्रसर हो रहा था।

अमरीका को आशा थी कि, वह जापान को प्रशात मे स्वतत्रता का केन्द्र बना कर उसे कायम रख सकेगा। जर्मनी के समान ही उसे पूर्व अवस्था तक ले जाने और अन्त मे उसका पुनःशस्त्रीकरण करने मे खतरा निहित था। वे छोटे-छोटे देश जो भूतकाल मे जापानी आक्रमण का शिकार बन चुके थे, अमरीका की अपेक्षा इस तथ्य को अधिक अच्छी तरह समझते थे। यदि एक बार जापान पूर्ण रूपेण स्वतंत्र हो गया और उसने कम्यूनिस्ट चीन और रूस के साथ रहने मे अधिक लाभ समझा तब क्या होगा? यदि विवेकहीन दोनों शिविरों से तब तक लाभ उठाते गये, जब तक कि वे साम्राज्य का अभियान पुनः प्रारम्भ करने के लिए शक्तिशाली नहीं हो जायें; तो क्या होगा? यही कहा जा सकता था कि, अमरीका जापान को सच्चे मार्ग पर

लाने के हेतु यथासम्भव प्रयत्न कर रहा था और उसे प्रधान मंत्री योशीदा-जैसे नेताओ से उत्साहपूर्ण उत्तर मिला और उसके सामने खतरा उठाने के अतिरिक्त कोई अन्य चारा न था।

कोरिया : एशिया मे हो रहे क्रातिकारी परिवर्तनो और आम उत्तेजनापूर्ण वातावरण के कारण अधिकाश अमरीकावासियो ने १९५० तक उस छोटे क्षेत्र पर जिसे कोरिया कह कर पुकारा जाता है, बहुत कम ध्यान दिया था। वे इस मान-चित्र के विशेष मार्गो को ही देखने मे निमग्न थे। एटली की मजदूर-सरकार द्वारा स्वतत्र किये गये भारत ने तीव्र गति और सफलता के साथ स्वयं को एक राष्ट्र के रूप मे स्थापित कर लिया था। प्रधान मत्री नेहरू के अन्तर्गत इस नये गणतत्र ने अपनी अधिकाश राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयो को हल कर लिया था। पाकिस्तान और सिलोन भी स्वतत्र होकर भारत के समान ही (ब्रिटिश) राष्ट्रमण्डल के सदस्य बने रहे। बर्मा ने अपनी मुक्ति का सफलता के साथ उपयोग किया था। फ्रेन्च हिन्दचीन अब सभी घरेलू मामलो मे स्वतत्र था और गृहयुद्ध के कारण विनष्ट होकर, जिसकी आर्थिक प्रेरणा कम्यूनिस्टों से मिली थी, अब अनिश्चित भविष्य का सामना कर रहा था। यह सम्पूर्ण महान प्रायद्वीप ही एक अकस्मात उथलपुथल की स्थिति मे था। सीरिया से लेकर सेलीबीस तक एक अरब लोग उपनिवेशवाद, वर्णवाद और अपनी ही निर्धनता और कठिनाइयो के विरुद्ध विद्रोह की विभिन्न अवस्थाओ मे थे।

इस महाद्वीप का एक छोटा पर्वतीय अर्ध उपजाऊ प्रायःद्वीप, कोरिया विशेष चिन्ताजनक स्थिति मे था। उसे ३८ वें सामानान्तर पर जो सम्पूर्ण रूप से कृत्रिम था, रूसी और अमरीकी नियन्त्रण मे विभाजित कर दिया था। इस का एकीकरण करने मे सभी प्रयत्न निष्फल हो चुके थे; क्योंकि जर्मनी के समान ही रूस यहा भी स्वतत्र चुनाव नहीं होने देना चाहता था। अमरीका नियन्त्रित भाग मे अधिकाश जनता थी और कृषि क्षेत्र था जबकि रूस-नियन्त्रित क्षेत्र मे अधिकाश बडे उद्योग स्थित थे। सयुक्त-राष्ट्र सघ ने अमरीका द्वारा अनुरोध किये जाने पर अन्त म सभी कठिनाइयों को दूर करने का प्रयत्न किया। उसने एक सरकार सघटित करने के लिए एक आयोग भेजा था। रूसियों ने इसे अपने क्षेत्र मे आने पर प्रतिबध लगा दिया। तब आयुक्तो ने जो भी सम्भव हो सका किया; उन्होंने दक्षिण कोरिया मे चुनाव

करवाये, एक विधान तैयार करवाया और सिंगमन री-नामक योग्य, ज्येष्ठ और हठी अनुदार के अन्तर्गत एक सरकार की स्थापना में सहायता प्रदान की। १९४८-४९ में रूसी और अमरीकियों दोनों ने ही अपनी सेनाएँ खींच लीं, किन्तु दोनों ने ही अस्त्र शस्त्र और सैनिक परामर्शदाता पीछे छोड़े थे। यालू नदी के उस पार की अपनी सुविधापूर्ण सैनिक चौकी से रूसी सरकारी और सैनिक अधिकारी पूर्णतया गुप्त रूप से इच्छानुसार जो भी षड्यंत्र चाहते, रच सकते थे।

राष्ट्राध्यक्ष ट्रूमैन ने लिखा है कि १९५० के प्रारम्भ में वाशिंगटन के पर्यवेक्षक एक अकस्मात सशस्त्र संघर्ष से आशंकित थे। उन्हें ज्ञात था कि, रूस ने एक दर्जन स्थानों पर आक्रमण करने के लिए सेनाएं तैयार कर रखी हैं। ये स्थान नक्शे पर जर्मनी, आस्ट्रिया, बालकन देशों, ग्रीस, टर्की, ईरान तथा कामचाटका तक थे। किसी को भी मालूम नहीं था कि क्या होगा। यह स्पष्ट था कि कम्यूनिस्ट 'नाटो' के शक्तिशाली हो जाने तक राह नहीं देखना चाहते थे। सबसे अधिक अशान्ति के स्थान यूरोप और निकट पूर्व में थे। प्रधान सेनापतियों ने स्पष्ट रूप से यह कह दिया था कि, जापान और फिलिपाइंस की तुलना में हमारी सुरक्षा की दृष्टि से और कोई स्थान महत्वपूर्ण नहीं हैं। किन्तु, इस प्रकार की भविष्यवाणी करना असम्भव था। २६ जून को, एक आश्चर्य-चकित देश को यह समाचार सुनने को मिला कि उत्तर कोरिया की सेना, रूसी वायुयानों, रूसी टैंकों और रूस में प्रशिक्षित अधिकारियों के साथ ३८-वें समानान्तर को पार करके सिओल के दरवाजे पर पहुँच गयी है।

किन्तु, कोरिया युद्ध के विषय में बात करने के पूर्व हमें पुनः ट्रूमैन के के अन्तर्गत घरेलू समस्याओं पर विचार करना चाहिए।

तेईसवाँ परिच्छेद

युद्धोत्तर समस्याएं, १९४६–१९५२

समृद्धि और मुद्रास्फीति : युद्ध के पश्चात् अमरीका में एक महान और दीर्घकालीन समृद्धि का काल आरम्भ हुआ। उत्पादन, रोजगार, आय और लाभ की वृद्धि युद्ध के पश्चात् प्रथम तीन वर्षों में असाधारण स्तर तक जा पहुँची थी। घरेलू उपभोक्ताओं और विदेशी राष्ट्रों की वस्तुओं की माँग पूर्ति की अपेक्षा उत्तरोत्तर बढ़ती ही गयी। १९४९ के प्रारम्भ में यह समृद्धि कुछ कम होती दिखलायी पड़ी, किन्तु उसमें कोई अधिक कमी नहीं हुई। युद्ध की समाप्ति के तुरत पश्चात् ही हेनरी वालेस ने '६ करोड़ के लिए रोजगार' शीर्षक एक पुस्तक प्रकाशित की। कई लोगों ने इसे सरकार से पूर्ण रोजगार का आश्वासन पाने की दिशा में, प्रभावशाली कदम उठाने के लिए की गयी अविवेकपूर्ण माँग समझा। किन्तु, पूर्ण रोजगार की स्थिति बिना किसी विशेष प्रयत्न के ही पहुँच गयी और वेतन द्वारा अर्जित की जानेवाली कुल रकम ६०० लाख से भी ऊपर जा पहुँची।

दुर्भाग्यवश, इस समृद्धि के साथ-साथ मूल्यों में वृद्धि होती गयी और मुद्रास्फीति भी आ गयी। इससे अधिकांश जनता को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। १९४७ के प्रारम्भ में कांग्रेस के समक्ष राष्ट्राध्यक्ष ट्रूमैन ने जो आर्थिक विवरण प्रस्तुत किया था, उसमें कई उत्साहप्रद तथ्यों की चर्चा की गयी थी—विस्तृत और सुधरी हुई औद्योगिक मशीनें, अपेक्षकृत बड़ा और अधिक प्रशिक्षित श्रमदल, औद्योगिक विकास के हेतु पर्याप्त पूँजी और बड़े पैमाने पर पूरे किये जानेवाले 'आर्डर'। किन्तु, दूसरी ओर उच्च मूल्य स्तर के कारण क्रय-शक्ति में ह्रास, महत्वपूर्ण श्रमतत्वों में असतोष और उससे उत्पन्न हड़तालों की आशंका और उद्योगधन्धों में पूँजी में कमी की संभावना ने भी अपना रूप स्पष्ट कर दिया था। १९४७ की वसन्त में चिकागो में गेहूँ ३ डालर प्रति बुशेल से भी ऊँचे मूल्य पर बिका, जो शायद इस पीढ़ी का उच्चतम मूल्य था। उसी वर्ष नवम्बर में श्रम सम्बन्धी आकड़े तैयार करनेवाले ब्युरो

ने उपभोक्ता-मूल्य-तालिका को, १९३५–३६ के स्तर से १६५ प्रतिशत ऊँचा बतलाया। जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही थी और वार्षिक वृद्धि ३५ लाख तक जा पहुँची थी। इससे पूर्तियों और मूल्यों पर भी दबाव पड़ने लगा।

कांग्रेस बनाम राष्ट्राध्यक्ष : ट्रूमैन को रुजवेल्ट से विरासत में डेमोक्रेटिक कांग्रेस प्राप्त हुई थी: किन्तु इस तथ्य ने उनका कुछ अंशों में ही भला किया। रिपब्लिकनों और दक्षिणी लोगों के मेल ने उनके 'फेयर डील' प्रस्तावों के समक्ष एक अभेद्य दीवार खड़ी कर दी। १९४६ के पतझड़ में दृश्य का परिवर्तन हो गया।

रिपब्लिकनों ने सिनेट को ५१ के विरुद्ध ४५ मतों से और हाउस को २४६ के विरुद्ध १९९ मतों से अपने पक्ष में कर लिया। नयी ८० वीं कांग्रेस में अनुदार दलवाले ट्रूमैन के निषेधाधिकार के बावजूद विधान स्वीकार कर सके। उन्होंने तुरन्त ही एक श्रम प्रबंधक-कानून (१९४७) बनाया जिसे टाफ्ट-हार्टले कानून कहा गया। इस कानून में कल्याणकारी बातों के अतिरिक्त कुछ ऐसी धाराओं का समावेश था, जिसे श्रम-संगठनों ने असह्य घोषित किया, जैसे कि पर्दे के पीछे के समझौतों पर प्रतिबन्ध और हड़तालों तथा धरनों पर नियन्त्रण। विलियम ग्रीन, जान एल लेविस और अन्य प्रमुख श्रमिक-नेताओं ने अविलम्ब घोषणा की कि वे इस कानून को रद्द करवाने अथवा उसमें अत्यधिक संशोधन करवाने के लिए संघर्ष करेंगे। कांग्रेस ने भी राज्यों के संविधान में एक संशोधन किया, जिसमें किसी भी राष्ट्राध्यक्ष पर दो बार से अधिक अवधि के लिए कार्यभार सम्हालने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। अमरीकी जनता के निर्णय पर यह अविश्वास, कुछ अंशों में रुजवेल्ट की निन्दा के समान था। उसका प्रयत्न यह भी था कि, तीसरी बार राष्ट्राध्यक्ष के चुनाव न लड़ने के लिए ट्रूमैन पर नैतिक दबाव डाला जाय (यद्यपि तत्कालीन वृत्तिभोगी के रूप में वे इसके अपवाद थे)। इसे स्वीकार कर लिया गया और १९५१ में यह २२-वां संशोधन बना।

मुद्रास्फीति से परेशान होकर, ट्रूमैन ने ऐसा विधान बनाने के लिए आग्रह किया, जिससे सरकार को सामग्री का राशन करने, जहाँ परमावश्यकता हो अधिकाधिक मूल्य और वेतन को निश्चित करने, गल्ला सम्बन्धी सट्टा नियन्त्रित करने, यातायात सम्बन्धी सुविधाओं का ठीक ठीक वितरण करने, भाड़ों को नीचे स्तर पर कायम रखने और अन्य कदम उठाने के लिए

अनुमति मिल जाये। रिपब्लिकन नेताओं ने यह आरोप लगाया कि राष्ट्राध्यक्ष स्थिति से राजनीतिक लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहे हैं और वास्तव में वे ऐसे दूरगामी अधिकारों के इच्छुक नहीं हैं। वास्तव में, तथ्य यह था कि, दोनों पक्षों की ओर से राजनीति का पर्याप्त उपयोग दिखलायी पड रहा था। यह प्रस्ताव अन्त में स्वीकार हो जाने पर भी वह बहुत कम प्रभावशाली सिद्ध हुआ। उसने राष्ट्राध्यक्ष को मूल्य अथवा वेतन पर नियन्त्रण और सामग्रियों का राशन करने का अधिकार नहीं दिया। उसने केवल मुद्रास्फीति को सीमित रखने के लिए व्यवसाय, श्रम और कृषि में स्वेच्छा से समझौता करने की अनुमति प्रदान की। ट्रूमैन ने इसे 'दयालुता के प्रति अपर्याप्त' बतलाया। यद्यपि उन्होंने उस पर हस्ताक्षर कर दिये, लेकिन घटनाओं ने प्रमाणित कर दिया कि वह ठीक थे। मुद्रास्फीति जारी रही।

८०-वीं कांग्रेस ने वास्तव में उन बहुत-सी बातों को अस्वीकार कर दिया, जिसकी ट्रूमैन ने मॉग की थी। उसने स्थायी उचित रोजगार कार्यवाही-सम्बन्धी कानून (फेयर एम्प्लायमेण्ट प्रेक्टिसेस एक्ट), निम्नतम वेतन में ४० से ६५ सेंट प्रति घण्टे की वृद्धि, भवन निर्माण सम्बन्धी प्रभावशाली कार्यक्रम, सामाजिक सुरक्षा के विस्तार और यूरोप से आनेवाले विस्थापित व्यक्तियों के प्रवेश संबंधी मामलों में विघ्न उपस्थित किया। उसने प्रशासन की इच्छानुसार राष्ट्राध्यक्ष के उत्तराधिकार सम्बन्धी एक नया कानून पारित किया। इसमें यह व्यवस्था थी कि, राष्ट्राध्यक्ष या उप राष्ट्राध्यक्ष दोनों की ही मृत्यु हो जाये, तो मुख्य न्यायाधीश का पद बारी से हाउस के अध्यक्ष, सिनेट के अध्यक्ष, और मन्त्रि-मंडल के सदस्यों को उनके निर्मित्त विभागों के क्रम में मिले। कांग्रेस और ट्रूमैन में कर में कमी करने के विषय पर तीव्र विवाद हो गया। दोनों भवनों ने, मतदाताओं का समर्थन प्राप्त करने के हेतु चार अरब डालर के लगभग करभार कम करने के प्रस्ताव को पारित कर दिया, जिस पर राष्ट्राध्यक्ष ने दो बार अपरिपक्व और बुरी तरह से निर्मित होने के कारण निषेधाधिकार का प्रयोग किया।

राष्ट्रीय खर्च, वास्तव में, ऐसे ऊँचे स्तर तक पहुँच गया था— १९४८-१९४९ के वित्तीय वर्ष की ४३ अरब डालर की रकम ने शांतिकाल का एक नया स्तर कायम कर दिया था—कि कर में कमी करना बहुत ही अनुचित होता। इस अवधि की अव्यवस्था का एक नमूना यह था कि समृद्धि के बावजूद, राष्ट्रीय ऋण में कमी कर सकना असम्भव ही

प्रमाणित हुआ। वास्तव में वह बढ़ गया और दिसम्बर १९४९ में २५७ अरब डालर के उच्च स्तर तक पहुँच गया। प्रतिवर्ष नियमित रूप से घाटे का बजट होने लगा। ट्रूमैन ने १९४९ के अन्त में घोषणा की कि ऋण लेने की समाप्ति होनी चाहिए। उन्होंने पत्रकारों से कहा कि "सरकार को चलाने के लिए उस अवधि में ही धन की खोज होनी चाहिए"। किन्तु, अन्तरराष्ट्रीय स्थिति ने खर्च में वृद्धि को अनिवार्य बना दिया था।

ट्रूमैन और देशभक्ति : प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् देशभक्ति, एकता और शत-प्रतिशत अमेरिकावाद का महान प्रचार हुआ था, जिसमें कई देश-भक्त और उदार दृष्टिकोणवाले व्यक्तियों को क्षति उठानी पड़ी थी। वही बात अब पुनः और भी अधिक तीव्र रूप में सामने आयी। यद्यपि अमरीका में कम्यूनिस्ट पार्टी के सदस्यों की संख्या ७५ हजार से अधिक न थी, और क्रमशः कम होती जा रही थी, फिर भी उसे अवैध करार देने के लिए पुकार मच गयी। देशद्रोह के आरोपों पर—विशेषकर सरकार द्वारा समाचार-पत्रों और फिल्म उद्योगों में—बिना भेदभाव किये धृष्टतापूर्वक जाँच-पड़ताल की माँग की जाने लगी। इस आन्दोलन ने मूल नागरिक अधिकारों के लिए खतरा उत्पन्न कर दिया और राष्ट्र के अपेक्षाकृत बुद्धिमान नेताओं ने इसका सामना करने का प्रयत्न किया।

न्यूजर्सी के प्रतिनिधि जे. फारवेल के नेतृत्व में हाउस की ८०-वीं काँग्रेस की गैर-अमरीकी कार्यवाहियों की कमेटी (हाउस कमेटी आफ अन-अमेरिकन ऐक्टीविटीज़) और राष्ट्राध्यक्ष ट्रूमैन की विशेष नागरिक अधिकार सम्बन्धी कमेटी के विचार एक दूसरे के सर्वथा भिन्न थे। दोनों ने १९४७ में अपनी-अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। थामस कमेटी ने दावा किया कि उसने कई कम्यूनिस्ट 'मोर्चों' जैसे कि अमेरिकन यूथ फार डेमोक्रसी, का पर्दाफाश किया, हालीवुड के दस चित्रपट लेखकों और निर्देशकों को खुले में ला खड़ा किया, जिन पर काँग्रेस की निन्दा करने का अभियोग लगाया गया, कम्यूनिस्ट पार्टी के मंत्री यूगिन डेनिस को दोषी करार देकर दण्ड दिलाया और गेरहर्ट और हैंस ईलर-जैसे कुख्यात कम्यूनिस्ट एजेंटों का पर्दाफाश किया। इस कमेटी के तरीके संदिग्ध थे। १७५ पृष्ठों में प्रशंसनीय ढंग से लिखे गये वक्तव्य में राष्ट्राध्यक्ष की कमेटी ने, जिसका नेतृत्व जनरल इलेक्ट्रिक के प्रेसिडेण्ट चार्ल्स ई. विलसन ने किया था, यह दावा किया कि सुरक्षा के नाम पर एक के बाद दूसरे मूलभूत

नागरिक अधिकार पर आक्रमण किया जा रहा है। उसमे कहा गया कि यह तरीका सारे देश मे अपनाया जा रहा है। "विभिन्न समयों पर लगभग हर प्रदेश मे किसी न किसी व्यक्ति के अधिकारो के साथ शर्मनाक हस्तक्षेप हो रहा है।' कमेटी ने ऐसे प्रत्यक्ष आक्रमणों की एक तालिका बनायी और उनको ठीक करने के उद्देश्य से सुझाव दिये।

१९४६ की पतझड मे ट्रूमैन ने एक कार्यवाहक आज्ञा जारी करके कामगारो की देशभक्ति के विषय मे राष्ट्राध्यक्ष के अस्थायी आयोग (प्रेसिडेन्ट्स टेम्पोरेरी कमीशन और एम्प्लायी लायल्टी) की स्थापना की और उसे एक कार्यक्रम का मसविदा बनाने का आदेश दिया। अगले वर्ष इसमे एक विस्तृत साधन का उपयोग किया गया। नागरिक सेवा आयोग (सिविल सर्विस कमीशन) ने देश भर मे क्षेत्रीय निष्ठा बोर्डों की स्थापना की। निष्ठाहीन अथवा ध्वसात्मक कार्यवाहियो के अभियुक्तो की सुनवायी उनके परामर्शदाताओ के साथ एक निष्ठा बोर्ड के समक्ष की जाती थी, यदि वे उससे असन्तुष्ट होते, तो निष्ठा समीक्षा बोर्ड (लायल्टी रिव्यू बोर्ड) के समक्ष अपील करने का उन्हें अवसर प्रदान किया जाता। इस बोर्ड मे ट्रूमैन द्वारा २३ व्यक्तियो की नियुक्ति की गयी थी जिसके प्रमुख एक अनुदार रिपब्लिकन सेथ रिचर्डसन थे।

सरकारी एजेंसियो को सुरक्षित रखने का यह कार्यक्रम तात्कालिक रूप से गुणयुक्त था किन्तु इसमे गम्भीर त्रुटियॉ भी थीं। यह इस स्वीकृत सिद्धान्त पर आधारित था कि कोई भी सरकारी नियुक्ति एक अधिकार ही नहीं है बल्कि विशेषाधिकार है। उसने यह सिद्धान्त स्वीकार कर लिया था कि यदि किसी सम्बन्धित व्यक्ति के निष्ठा-हीन समझे जाने के लिए युक्तिसगत आधार का अस्तित्व है, तो उस व्यक्ति को रोजगार देने से इनकार किया जा सकता है या उसे हटाया जा सकता है। कितने ही सदिग्ध व्यक्तियों ने सरकारी पदो से इस्तीफा देने की तुरत कार्यवाही की, कुछ लोगों की छॅटनी कर दी गयी। किन्तु जैसा कि ट्रूमैन ने बाद मे लिखा, यदि कोई व्यक्ति अभियोग से मुक्त हो गया, तब भी उससे सम्बन्धित तथ्य 'फाइल' मे ही रखे रहते हैं। प्रत्येक बार एक पद से दूसरे पद पर नियुक्ति होने पर, सम्बन्धित व्यक्ति की 'फाइल' की समीक्षा की जाती और उसे अपने आपको पुनः आरोपमुक्त करवाना पडता है। ट्रूमैन ने लिखा यह अमरीकी परम्परा के अनुसार उचित व्यवहार और न्याय नहीं है, इससे परिस्थिति और भी खराब होती है।

ट्रूमैन का पुनर्निर्वाचन : ८०-वीं कांग्रेस के साथ राष्ट्राध्यक्ष के संघर्ष ने प्रगतिशील और कामगार क्षेत्रों मे उनके प्रति सहानुभूति उत्पन्न कर दी। १९४८ की वसन्त मे जब कांग्रेस की कार्यवाहियो की निन्दा करते हुए उन्होने देशव्यापी दौरा किया, तो उन्हे जनता का पर्याप्त समर्थन प्राप्त हुआ। तात्कालिक राष्ट्राध्यक्षीय चुनाव अभियान मे डेमोक्रटिक-दल की विजय की सम्भावना को सब ने बहुत कम समझा। इसका एक कारण यह था कि, हेनरी वॅलेस ने अपनी उम्मीदवारी तीसरी ही पार्टी के टिकट पर घोषित कर दी थी और हालॉकि उन्होने रिपब्लिकनो और डेमोक्रेटो दोनों पर ही प्रहार किया, फिर भी उनको यही आशा थी कि उन्हे मुख्यतया डेमोक्रेटो का ही समर्थन प्राप्त होगा। दूसरा कारण यह था कि, दक्षिण के डेमोक्रेट ट्रूमैन द्वारा नीग्रो लोगो को नागरिक अधिकार प्रदान करने सम्बन्धी कार्यक्रम के प्रति खुले आम विद्रोह कर रहे थे। ड्वाईट आइजनहोवर को पार्टी का उम्मीदवार बनाने के लिए, एक शक्तिशाली आन्दोलन पनप उठ था और आशा की जाती थी कि ट्रूमैन उनके पक्ष मे अपनी उम्मीदवारी वापस ले लेंगे। कोई यह नही जानता था कि जनरल का झुकाव किस पार्टी की ओर है। किन्तु, जब आइजनहोवर ने किसी भी पार्टी के टिकट पर चुनाव लडना स्वीकार न किया तब डेमोक्रेटों को राष्ट्राध्यक्ष की ओर ही झुकने के अलावा कोई चारा न रहा।

जुलाई मे, फिलाडेल्फिया के डेमोक्रेटिक-अधिवेशन मे ट्रूमैन को बिना किसी महत्वपूर्ण विरोध अथवा उत्साह के साथ नामजद कर दिया गया। केवल ट्रूमैन ने ही निरुत्साहित हुए बिना संघर्ष के लिए साहस प्रदर्शित किया। उन्होंने एक भाषण के मंच के लिए जोर दिया, ताकि वे 'फेयर डील' के ध्वज को पार्टी के मस्तूल में लगाने के लिए कील का काम दे सके। इसने उनके प्रतिद्वन्द्वियों को कोई अवसर प्रदान नहीं किया। उन्होने यह घोषित करके कि, वे ८०-वीं कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन बुलायेंगे ताकि रिपब्लिकन जो उदार वचन दे रहे हैं, उससे मुक्त होने का उन्हें अवसर मिल जाये, रिपब्लिकनो को निरुत्साही बना दिया। ट्रूमैन ने आगे कहा कि यदि आवश्यकता हुई तो वे अकेले ही संघर्ष जारी रखेंगे।

कुछ समय के लिए, वे बिलकुल अकेले लग रहे थे। पहिले से ही रिपब्लिकनों ने जिनकी बैठक फिलाडेल्फिया मे हुई थी, फिर से थामस ई. डेवी को नामजद किया और उनके पीछे पार्टी की पूरी शक्ति लगा दी। कुछ समय

तक तो यह लगा कि एक भूतपूर्व राष्ट्राध्यक्ष के पुत्र और "वाशिंगटन का सर्वोन्नत मस्तिष्क" कहे जानेवाले व्यक्ति राबर्ट ए टैफ्ट न्यूयार्कवासी को पराजित कर देंगे। यद्यपि टैफ्ट में उदारवादी आभास की कुछ लकीरें विद्यमान थीं, किन्तु उनका मस्तिष्क और स्वभाव समय के अनुरूप न होकर बडा सकुचित था। युद्ध के पूर्व की उनकी पृथकतावादिता और युद्धोत्तर काल में सयुक्त-राष्ट्र-सघ के प्रति अवहेलनापूर्ण रुख स्पष्ट रूप से दोहराया गया। उनकी पैनरेबाजी और दुराग्रह ने, पूर्ण ईमानदारी के बावजूद उन्हे अस्थिर और अनिश्चित बना दिया था। डेवी कम उम्र के, अधिक आकर्षक, अधिक उदारवादी—और श्रेष्ठतम साधनों से सज्जित थे। तीसरे मतदान मे नामजद किये जाने के पश्चात् उन्हे कैलीफोर्निया के लोकप्रिय गवर्नर अर्ल वारेन साथी के रूप मे प्राप्त हुए। उनसे आशा की जाती थी कि वे अपने राज्य को समर्थन के लिए तैयार कर सकेंगे। रिपब्लिकन मञ्च अन्तर्राष्ट्रीयता के पक्ष मे था; किन्तु महत्वपूर्ण घरेलू समस्याओं पर वह एकमत नही था।

ट्रूमैन के निर्वाचन की सम्भावना को कम करने के लिए कट्टरपथी दक्षिणी डेमोक्रेटो ने अन्तिम दिनो मे एक अधिवेशन किया और दक्षिणी करोलिना के गवर्नर के स्ट्राम थरमाण्ड और मिसिसिपी के गवर्नर फीलिंडग एलराइट को अपना उम्मीदवार बनाया। गल्फ-स्टेट के तेल-स्वामी कैलिफोर्निया के समान ही 'टाइड लैण्ड' क्षेत्र को राज्य नियत्रण मे लाने के उत्सुक थे। इस उद्देश्य के विधेयक पर ट्रूमैन द्वारा निषेधाधिकार का प्रयोग किये जाने पर वे बडे ही अप्रसन्न हो उठे और उन्होंने धन-सञ्चय करने मे सहायता प्रदान की। अधिकाश दक्षिण के अनुदारवादी अपनी पुरानी पार्टी के प्रति निष्ठावान बने रहे; किन्तु यदि थारमण्ड का साथ कुछ राज्यो ने भी दिया होता तो वह चुनाव-हाउस मे चला जाता। ऐसे समय मे ही, शीघ्रता से सघटित एक प्रोग्रेसिव पार्टी ने वैलेस को अपना उम्मीदवार घोषित किया और उन्होंने एक भाषणमाला प्रारम्भ की, जिसमे उन्होंने ट्रूमैन पर यह कह कर प्रहार किया कि वे देश को रूस के साथ युद्ध की विभीषिका मे झोंकने के करीब हैं। जितनी शीघ्रता से कम्यूनिस्ट उनके पक्ष मे पहुँचे, सच्चे उदारवादियो ने उतनी ही शीघ्रता से उनका साथ छोड दिया। सभी निर्वाचन क्षेत्रों मे भारी रिपब्लिकन विजय की सम्भावना दिखलायी पड रही थी। किन्तु, अधिकाश मतदाता उदासीन ही दिखलाई पडे।

फिर भी राष्ट्राध्यक्ष निरुत्साहित नहीं हुए और उन्होंने अपने यात्रा-भाषणों के दौरान मे ८० वी काग्रेस की निन्दा की और डेवी पर प्रहार करके अपने

स्वयं के कार्य का अभाव करने में जनता की ही भाषा का उपयोग किया। उनके एक व्यक्ति के अभियान के प्रति लोगों ने प्रशंसा का भाव उत्पन्न हो गया। इसी बीच डेवी को विजय का इतना विश्वास हो गया था कि उन्होंने वास्तविक समस्याओं के भीतर जाने का प्रयत्न नहीं किया और राष्ट्रीय एकता को छोड़ कर अन्य किसी भी विषय पर अधिक कुछ नहीं कहा। उनकी नीरस युक्ति से कोई उत्साहित नहीं हुआ; बल्कि अनेक लोगों ने उनका समर्थन करना जरूर छोड़ दिया।

चुनाव के अगले सुबह अमरीका ने इतिहास के सबसे अधिक आश्चर्यजनक और आशा के प्रतिकूल परिणाम देखा। ट्रूमैन २ करोड़ ४० लाख मत और ३०३ चुनाव मतों से विजयी हुए। डेवी को २ करोड़ २० लाख मत और १८६ चुनाव मतों से अधिक समर्थन नहीं मिला था। थरमाण्ड को लुइसिआना, मिस्सिसिपी, अलबामा और दक्षिण करोलिना का समर्थन प्राप्त हुआ था। वैलस को किसी भी राज्य का समर्थन न मिल सका। कुछ लोगों ने चुनाव के परिणामों का कारण, यह बतलाया कि केवल दो तिहाई मतदाताओं ने ही मतदान में भाग लिया, बहुत से रिपब्लिकन गाफ खेलने में ही मस्त रहे। कुछ ने डेवी के ढीले अभियान को कारण बताया, जिन्होंने अपनी विजय को स्वयं पराजय बनाया था।

'फेयर-डील' का क्षीण हो जाना : ट्रूमैन के स्थान पर यदि कोई अधिक युक्तिपूर्ण और विचारशील राष्ट्राध्यक्ष होता तो वह ८१-वीं कांग्रेस के साथ जो उनके चुने जाने के पश्चात् बैठी, अपेक्षाकृत कुछ अधिक कार्य कर सकता था। यद्यपि जनवरी १९४९ में उन्होंने कांग्रेस के समक्ष अपने फेयर-डील कार्यक्रम को न्यू-डील के ही क्रम में विस्तारपूर्वक प्रस्तुत किया लेकिन वे उसे अधिक आगे न बढ़ा सके। अधिकांश राष्ट्राध्यक्षों को प्रथम अवधि की अपेक्षा द्वितीय अवधि में ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। १९४९-५२ की अवधि में कांग्रेस में ट्रूमैन का प्रभाव १९११-१९१२ में टैफ्ट के समान ही क्षीण हो गया; यद्यपि १८९५-१८९६ और १९३१-१९३२ में क्रमश: क्लीवलैण्ड और हूवर के समान बहुत अधिक क्षीण नहीं हो पाया था।

नीग्रो-सम्बन्धी मामलों में दक्षिणी सदस्य उनके प्रस्तावों के विरुद्ध पहले जितना ही विरोध करते रहे। कमजोर 'फेयरडील', प्रैक्टिसेस बिल और पोल-टैक्स को रद्द करने सम्बन्धी विधेयक को हाउस ने तो स्वीकार कर लिया; किन्तु

सिनेट में वह स्वीकृत न हो सका। स्कूलो को संघीय सहायता प्रदान करने मे अवरोध यथावत् बना रहा। ट्रूमैन टैफ्ट-हार्टले कानून मे सशोधन करवाने में असमर्थ रहे, उसको रद्द करने की कौन कहे। काग्रेस ने भवन निर्माण-सम्बन्धी एक कानून स्वीकृत किया (अप्रैल १९५०) जिसके द्वारा डेढ अरब डालर की रकम गन्दी बस्तियो की सफाई तथा कम खर्च के मकानो के निर्माणार्थ उपयोग मे लाने का अधिकार प्रदान किया गया था। एक राष्ट्रीय विज्ञान-सस्था (नेशनल साइन्स फाउंडेशन) के स्थापनार्थ भी उसने एक महत्वपूर्ण कदम उठाया। इस सस्था का कार्य इजीनियरिंग और दूसरे विज्ञानो मे मूलभूत अनुसन्धान का कार्य करना था। उसने वेतन के पुराने स्तर को चालीस सेट प्रति घण्टे से उठा कर पचहत्तर सेट प्रति घण्टा कर दिया (१९४९)। सबसे महत्वपूर्ण कदम उसने यह उठाया कि सामाजिक सुरक्षा कानून का विस्तार कर दिया। अब उसके अन्तर्गत ३५० लाख व्यक्तियों की अपेक्षा (१९५०) ४५० लाख व्यक्ति लाभान्वित होने लगे। किन्तु, काग्रेस ने ट्रूमैन द्वारा टी वी ए प्रणाली की योजनाओं को अ य बड़ी घाटियो मे प्रारम्भ करने जैसी बातो को अस्वीकार कर दिया। इस बीच मुद्रा-स्फीति बिना अधिक नियन्त्रण के आगे बढती ही गयी। १९५० के सुरक्षा उत्पादन कानून के अन्तर्गत एक आर्थिक सकलन सस्था की स्थापना की गयी, जिसके प्रथम प्रमुख डा. एलेन टालेंटाइन और बाद मे मिचेल डाइसाले बने। टालेंटाइन ने निर्माताओ और दूकानदारों द्वारा विशिष्ट वस्तुओ के मूल्यों को एक निश्चित स्तर पर बनाये रखने का प्रयत्न किया। डाइसाले ने एक साथ मूल्य-नियन्त्रण का प्रयत्न किया। किन्तु, दोनों मे से किसी को भी अधिक सफलता नहीं मिली। विशेषकर कोरियायी युद्ध प्रारम्भ होने के पश्चात्, वेतनों द्वारा मूल्यों का अनुकरण करने और मूल्यों द्वारा वेतनों का अनुकरण करने का चक्र स्पष्ट हो उठा। वेतनभोगी लोग, शक्तिशाली युनियनों द्वारा असरक्षित मजदूर, कृषक और अन्य लोग जो अपनी आय मे वृद्धि नहीं कर पाये थे, इसके विशेष रूप से शिकार बने।

सभी प्रकार से मुद्रास्फीति की समस्या बहुत ही पेचीदा बन गयी। फिर भी इसका हल निकालना आवश्यक था। सुरक्षा-विभाग के चार्ल्स ई. विल्सन ने कहा, "यदि इस प्रकार ही अनियन्त्रित मुद्रास्फीति अमरीका पर प्रभुत्व जमा बैठी, तो राष्ट्र दिवालिया हो जायेगा और स्टालिन को बिना गोली चलाये ही अपने विजय के स्वप्न को पूरा करने मे सफलता प्राप्त हो जायेगी।" जनवरी १९५१ मे प्रशासन ने निर्धारित स्तरो पर मूल्यों और वेतनो के

नियन्त्रण की आज्ञा जारी की, किन्तु इस आज्ञा में कई छूटें दी गयी थीं और वह अस्थायी ही प्रमाणित हुई। मुद्रा-स्फीति से सब से बडा बचाव सामूहिक और व्यक्तिगत कराधान में वृद्धि करने से ही हो सकता था, जो उस वर्ष प्रारम्भ हो गया।

साम्यवाद और पुनः सुरक्षा : ट्रूमैन के चुनाव के पश्चात् कुछ असाधारण घटना-क्रमों ने जनता का ध्यान देश और विदेश की कम्यूनिस्ट कार्यवाहियों पर केन्द्रित किया। उससे जनता की भावनाएं इतनी उत्तेजित हो उठीं कि, कम्यूनिस्ट-विरोधी-आन्दोलन की अपेक्षा होने लगी।

ग्यारह कम्यूनिस्ट नेताओं, पार्टी के 'पालिट-ब्यूरो' के सदस्यों पर १९४९ में १९४० के स्मिथ कानून को भंग करने का आरोप लगाया गया। इस कानून के अन्तर्गत हिंसा द्वारा सरकार को उलटने का प्रचार तथा अन्य करने के षड्यन्त्र का आरोप लगाया गया। इस मुकद्दमे से कई प्रश्न उठ खड़े हुए—क्या कम्यूनिस्ट पार्टी एक षड्यन्त्रकारी संस्था है? क्या वह मास्को से आदेश प्राप्त करती है? क्या उसने हिंसा द्वारा सरकार को उलटने का प्रचार किया है? न्यायाधीश हेराल्ड मेडिना ने, जिन्होंने निष्पक्षता और शिष्टता से अध्यक्षता की, सबूतों को साधिकृत १६ हजार शब्दों में प्रस्तुत किया। उन्होंने जूरी को आदेश दिया कि वह स्मिथ-कानून की वैधानिकता को जिस पर उस समय प्रश्न उठाया गया था, विचार करे। किन्तु बाद में उसे वैध माना गया। जूरी ने ११ अभियोगियों को अपराधी पाया और अन्त में उन्हें जेल जाना पडा।

लगभग उसी समय ही एल्गर हिस पर, जो पहले विदेश विभाग में कुछ महत्व के व्यक्ति थे, और हाल में अन्तरराष्ट्रीय शांति के लिए कारनेगी एन्डाउमेन्ट के प्रमुख थे, मुकद्दमा चलाया गया। उस पर यह आरोप लगाया गया कि उसने फेडरल-ग्राण्ड-जूरी की यह बात अस्वीकार की कि उसने स्टेट-डिपार्टमेन्ट के कागज़ात विट्टेकर चेम्बर्स को कभी दिये और वह एक निश्चित तिथि के बाद उससे नहीं मिला है। इस मुकदमे में सनसनीखेज रहस्य के तत्व मौजूद थे। एक जूरी द्वारा उसे निर्दोष पाये जाने पर दूसरी ने हिस को दोषी पाया और उसे पांच वर्ष के कारावास की सजा दी। सरकार ने कई विदेशियों को कम्यूनिस्ट कार्यवाहियों में भाग लेने के आरोप में देश से निष्कासित कर दिया। राज्यों ने ऐसे मसविदों पर विचार किया और कुछ ने उन्हें स्वीकार कर लिया कि

कर्मचारियों को, जिसमे स्कूल और युनिवर्सिटी के अध्यापक भी शामिल थे, निष्ठा की शपथ लेने की आवश्यकता बतलायी गयी थी। न्यूयार्क मे फेनबर्ग-कानून के अन्तर्गत राज्य के बोर्ड आफ रीजेंट्स द्वारा ध्वसात्मक कार्यो मे सलग्न मानी जानेवाली सस्थाओं के सदस्यो को पदच्युत करना सम्भव बन गया। किन्तु, इस कानून का जनता ने विरोध किया, अतएव उसे रद्द करना पडा।

कई अमरीकियों को यह आशका हुई कि, कोरिया के युद्ध द्वारा उभाडे गये क्रोध का यह प्रभाव पडेगा कि आन्तरिक खतरों से सावधान रहने का आन्दोलन हाथ से निकल जायगा और वह सम्भवतः कम्यूनिस्ट गुप्तचरो और षड्-यन्त्रकारियो की अपेक्षा कही अधिक नुकसान पहुँचायेगा। उनका विश्वास था कि, देश मे अशान्ति, सदेह और दमन का वातावरण आता जा रहा है। सुरक्षा के नाम पर, हमारी भाषण, प्रकाशन, सभाओं और विरोध सम्बन्धी स्वाधीनता कम होती जा रही है। विवेकशील जननेताओं ने बतलाया कि 'साथ का अपराध' अन्यायपूर्ण और बचाव से परे है; विध्वसात्मक सस्थाओं की उचित सूची कोई नहीं बना सकता है, और स्कूलो, युनिवर्सिटियो, प्रचार के साधनो तथा सरकारी कार्यालयो से निष्ठाहीन लोगो के सामूहिक निष्कासन से कई निर्दोष व्यक्ति बरबाद हो जायेंगे और कपटी और धूर्त अपराधी बचे रहेंगे। ट्रूमैन-प्रशासन ने सामान्य रूप से जनता का पागलपन समाप्त करने का भरसक प्रयास किया। किन्तु, काग्रेस ने इतनी सावधानी नहीं बरती। सिनेटर पैट मैक्कारन की आन्तरिक सुरक्षा उपसमिति ने १९५१ मे दूरदर्शिता से अधिक उत्साह दर्शाया जबकि गैर-अमरीकी कार्यवाहियो की कमेटी ने अपना असावधानी-पूर्ण मार्ग जारी रखा। इस बीच विसकोसिया के सिनेटर जासेफ आर. मेकार्थी ने १९५० मे इस स्थान की पूर्ति के लिए कदम बढाया। वे उत्तेजक, विवेकशून्य और चालाक थे। उन्होंने सोचा कि उटपटॉग आरोप, धृष्ट और सौजन्यहीन प्रहारो द्वारा और अज्ञान तथा द्वेष के नाम पर उन्हे राष्ट्रीय महत्व ही नहीं, सत्ता भी प्राप्त हो सकती है। उनकी भयानक आकृति, कर्कश आवाज, और लम्बीचौडी झूठ बोलने की प्रणाली ने, शीघ्र ही उन्हे टेलीविजन-दर्शको से परिचित करा दिया। समाचारपत्रो मे अपना नाम मोटे अक्षरो में प्रकाशित कराने की उनमे शक्ति थी। उन्होंने पहली बार यह कह कर कीचड उछाला कि एचेसन के अन्तर्गत विदेश-विभाग २०५ जाने माने कम्यूनिस्टो को शरण दे रहा है और यह आरोप भी लगाया कि जान हापकिंस युनिवर्सिटी के प्रोफेसर और युद्ध-सूचना-कार्यालय प्रशान्त-मोर्चे के भूतपूर्व उप-निर्देशक ओवेल लैटीमोर

"अमरीका में रूस के एक प्रमुख गुप्तचर" हैं। लेकिन, विदेश विभाग में एक भी कम्यूनिस्ट नहीं पाया गया। सिनेट की एक विशेष उपसमिति ने लम्बी जाँच के पश्चात् लैटीमोर को आरोपों से मुक्त कर दिया। आइजनहोवर-प्रशासन में उन पर चालाकी से मढ़े गये सभी आरोपों को न्यायालयों ने रद्द कर दिया। किन्तु, हिस को सजा मिल जाने और एक ब्रिटिश वैज्ञानिक, क्लास फुश द्वारा रूस को आणविक भेद प्रदान करने के रहस्योद्घाटन के पश्चात्, सिनेट में मेकार्थी के गर्जन तर्जन ने अनेक व्यक्तियों को धोखे में डाल दिया। यदि रिपब्लिकनों का काँग्रेस में प्रभुत्व स्थापित हो जाता, तो वे और भी अधिक कार्य करने को तत्पर थे।

जब तक मेकार्थी ने कीचड़ उछालने की यह प्रणाली सिनेट की बैठकों में ही जारी रखी, उन पर दूसरों को अपमानित करने के विरुद्ध कार्रवाई नहीं की जा सकती थी। उनकी कुछ घोषणाएं तो इतनी निरंकुश थीं कि वेखुद ही फँस गये। उदाहरणार्थ, १९५१ में उन्होंने सुरक्षा सचिव जार्ज मार्शल पर अमरीका के भीतर रचे गये एक भीषण कम्यूनिस्ट षड्यन्त्र को बर्दाश्त कर लेने का आरोप लगाया। उन्होंने राजदूतों, सम्पादकों और उच्च निष्ठा के साथी सिनेटरों (विधायकों) पर भी प्रहार किया। जब उनके असत्य का पर्दाफाश हुआ, जैसे १९५० में सिनेट की एक उपसमिति ने उनके मुख्य आरोपों को "एक जालसाजी और मजाक" घोषित किया, तो उन्होंने यही दुहाई दी कि उनके विरोधी साम्यवाद की लीपापोती कर रहे हैं। प्रशासन के विरुद्ध उनके इस विवाद ने सामान्य रूप में सरकार की प्रतिष्ठा और प्रभुत्व को कमजोर बना दिया। सब से बुरी बात तो यह हुई कि उनकी चीखपुकार ने शेष संसार में अमरीका को बहुत अधिक हानि पहुंचायी। लोगों को यह विश्वास हो गया कि अमरीका में तानाशाही-आन्दोलन की जड़ें जम रही हैं।

दूर दूर तक फैली हुई अकस्मात भय की भावना के पश्चात् १९५० में राष्ट्राध्यक्ष के निषेधाधिकार के बावजूद स्वीकृत मैकारन-निक्सन मसविदा आया। उसमें कम्यूनिस्ट-समर्थित सभी संस्थाओं को पंजीकृत किये जाने की व्यवस्था थी। उसमें राष्ट्रीय सुरक्षा से सम्बन्धित कारखानों में कम्यूनिस्टों के काम करने पर प्रतिबन्ध लगाने और युद्धकाल में कम्यूनिस्टों तथा अन्य विध्वंसात्मक तत्वों के गिरफ्तार करने की व्यवस्था थी। उसके अन्तर्गत किसी भी तानाशाही संस्था से कभी भी सम्बद्ध किसी भी व्यक्ति को अमरीका से निष्कासित किया

जा सकता था। किन्तु, अंग्रेज कवि स्टीफेन स्पेण्डर को, जिन्होंने युवावस्था के आवेग मे आकर एक दिन के लिए साम्यवाद को अपना लिया था, किन्तु तत्काल ही उसके लिए पश्चात्ताप प्रकट किया था, अपवाद माना गया। टिमिनो और अन्य लोगों को भी जो कभी फासिस्ट दलो से सम्बद्ध थे, इससे मुक्त कर दिया गया। इसी प्रकार नाजी अधिकार के समय प्रतिरोध करनेवाले अनेक व्यक्ति भी इसके अपवाद थे। इस कानून के पश्चात १९५४ मे मेक्कारेन-कानून भी, ट्रूमैन के निषेधाधिकार के बावजूद स्वीकार कर लिया गया। इसमे देशान्तरवास-सम्बन्धी नियम मे सशोधन किया गया था। यद्यपि इसमे कुछ ठोस बाते मौजूद थी, फिर भी राष्ट्राध्यक्ष ने लिखा कि इसमे अनेक धाराएं जुडी हुई हैं जो पुराने अन्यायो को बनाये रखेगी, और स्वतत्रता के लिए ससार को सगठित करने के अमरीकी प्रयत्नो मे बाधा बन -जायेंगी। आइजनहोवर का भी यही दृष्टिकोण था। पीडित विदेशियों के लिए अमरीका एक महान आशा का केद्र रहा है। उन्होने कहा, "फिर ऐसे चेक, पोल और हंगरीवासियो के लिए जो जान को हथेली पर रख कर आज रात को सीमा पार करते हैं..... वह आदर्श जो उन्हे प्रकाश दिखलाता रहा है, मेक्कारन-कानून के कारण उनके लिए एक मृगमरीचिका प्रमाणित होगा।"

सक्षेप मे, जब ट्रूमैन-प्रशासन अपनी अवधि के अन्त मे पहुँच रहा था, इस बात का खतरा उत्पन्न हो गया कि युद्धकालीन भारो और 'न्यू डील'-प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप कहीं अधिकाधिक सकुचित मनोवृत्ति और प्रतिक्रियावाद का आरम्भ न हो जाये। उद्योगधधों के सम्बन्ध मे सरकार की यथावत् नीति ने और इस तथ्य के समुचित जोर ने कि सम्पूर्ण स्वतत्र विश्व के लिए अमरीका की औद्योगिक समृद्धि परमाश्यक है, इस प्रकार की प्रवृत्ति की सहायता की। ऐसा ही परिणाम समय-समय पर प्रशासन द्वारा की गयी गलतियो पर आधारित अतिशयोक्तिपूर्ण आलोचना का भी हुआ। १९५०–५१ मे सरकार ने वास्तव मे सन्तुलित बजट प्रस्तुत किया था। यदि आइजनहोवर के शब्दो मे इस 'भयानक युग' मे उदार मूल्यों की समुचित रक्षा की जा सके तो सब कुछ ठीक हो सकेगा।

घरेलू मामलों की अपेक्षा अब हमें विदेशी दृश्यो की ओर मुडना चाहिए।

चौबीसवाँ परिच्छेद

कोरिया का युद्ध : आइज़नहोवर राष्ट्राध्यक्ष

ट्रूमैन के नेतृत्व में स्वतंत्र-विश्व का मोर्चा : दक्षिण कोरिया पर आक्रमण करने के पश्चात, कम्यूनिस्टो को पूर्णरूपेण विश्वास हो गया कि एशिया मे अपने प्रभुत्व का प्रदर्शन करने का उचित अवसर अब आ गया है। चीन मे माओ का शासन था, वियत मिन्ह को उसकी सहायता से इण्डो-चीन हथियाने की आशा थी; कम्यूनिस्ट षड्यंत्रकारी ब्रिटिश मलाया मे तीव्र गुरिल्ला युद्ध का सचालन कर रहे थे; कम्युनिस्ट-प्रभावित हुक फिलिपाइंस मे अभी भी अपना प्रभाव बनाये हुए थे। बसत भर पीपिग-सरकार फूचा और अन्य बन्दरगाहो पर जहाजी बेडे एकत्र कर रही थी ताकि फारमोसा पर आक्रमण किया जा सके। यदि कोरिया मे उनकी विजय हो गयी, दक्षिण-पूर्व एशिया से पश्चिम का प्रभाव हटा दिया गया और च्याग-काई-शेक का विनाश कर दिया गया तो कम्यूनिस्ट समूची एशियाई जनता को आतकित कर सकते थे।

स्टालिन की सम्भवतः यह धारणा थी कि, अमरीका बीच मे पडने का भी प्रयत्न नहीं करेगा। अमरीकी भूखण्ड सात हजार मील की दूरी पर था, सेना के केवल कुछ डिवीजन ही युद्ध में भाग लेने के योग्य थे और एशिया में सैन्य टुकडी के युद्धरत होने से पश्चिम यूरोप का मोर्चा कमजोर हो जाता था। सेक्रेटरी एचेसन ने दक्षिण कोरिया को अमरीका के बचाव-क्षेत्र की परिधि से बाहर ही रखा था। मैकार्थर ने कहा था कि जो कोई हमारी सेना को एशिया मे उलझाने का प्रयत्न करे, वह पहले अपने मस्तिष्क का परीक्षण कराये।

भाग्यवश ट्रूमैन, एचेसन और उनके परामर्शदाताओ ने तुरन्त कार्यवाही करने का नैतिक मूल्याकन कर लिया था। यदि उन्होंने विलम्ब किया होता, तो यूरोप भर मे आतक फैल जाता। २७ जून १९५० को राष्ट्राध्यक्ष ने घोषणा कर दी कि दक्षिण कोरिया की सहायता के लिए, वे अमरीकी हवाई सेना और नौसेना की टुकडियाँ भेज रहे हैं। उन्होंने सातवें जहाजी बेडे को भी फारमोसा

की रक्षा करने का आदेश दे दिया था। बाद मे, उसी दिन स. रा. सुरक्षा परिषद ने सदस्य-राष्ट्रो से अनुरोध किया कि, वे कम्यूनिस्ट आक्रमण को विफल बनायें। तदनुसार ट्रूमैन ने अमरीकी सैन्यदल को युद्ध के मोर्चे पर जाने का आदेश दे दिया। उन्हे यह सारा मामला काग्रेस के सामने रखने का अवसर नहीं मिला; यह आवश्यक भी न था। अमरीकी जनता ने अनुभव कर लिया कि स्वतत्र विश्व पर हुए आक्रमण का प्रतिरोध करना होगा और साथ-साथ सयुक्त-राष्ट्र-सघ का अस्तित्व भी बनाये रखना होगा।

अन्य प्रजातत्रों ने भी अविलम्ब कार्यवाही की। जुलाई के प्रथम पखवाडे मे ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैड और नीदरलैण्ड ने सैन्य-दल भेजना शुरू किया। कनाडा ने भी तुरन्त ही इन सब का अनुसरण किया। बिना अधिक विलम्ब किये फ्रास, तुर्की, थाइलैण्ड, फिलिपाइस और ब्राजिल ने भी तद्रूप ही किया। ७ जुलाई को जब सुरक्षा-परिषद् ने अमरीका से सयुक्त-कमान की स्थापना करने को कहा तो वाशिंगटन ने अविलम्ब जनरल मैकार्थर की नियुक्ति कर दी। अमरीकी सैनिक अधिकारियों की पूर्ति के लिए, एक मसविदे की रचना भी की गयी। शीघ्र ही सं. रा सघ का ध्वज अनेक देशो के सहयोग से बनी विश्व-सेना के ऊपर फहराने लगा। सर्वप्रथम दक्षिण कोरियाई लोगो की ही सख्या लडनेवालों मे किसी भी अकेले देश के सैनिको की अपेक्षा अधिक थी। उसके बाद सख्या मे सबसे अधिक अमरीकी सैनिक थे। वे ही सबसे अधिक लैस और सबसे अधिक प्रभावशाली भी थे। ब्रिटेन, कनाडा, आस्ट्रेलिया और अन्य देशों ने एक राष्ट्रमण्डलीय डिवीजन बनाया; शेष देशों ने भी अच्छा कार्य किया। यहाँ तक कि भारत ने भी एक चिकित्सा टुकडी का योगदान दिया। सुरक्षा-परिषद मे रूस की अनुपस्थिति के कारण ही आक्रमण को समाप्त करने सम्बन्धी प्रस्ताव निषेधाधिकार (वीटो) के उपयोग किये जाने की आशंका के बगैर सम्भव बन सका। अविलम्ब सयुक्त-राष्ट्र-सघ की प्रतिष्ठा मे वृद्धि हो गयी, जैसी कि, लीग आफ नेशस ने कभी प्राप्त नही की थी।

प्रतिगति और प्रगति : ६ सप्ताह तक दक्षिण कोरियाई, अमरीकी और अन्य दूसरे प्रायःद्वीप के नीचे की ओर इस प्रकार लगातार खदेडे जाते रहे कि पर्यवेक्षकों को भय लगने लगा कि, मोर्चा सम्हालने के पहले कही वे समुद्र मे न ठेल दिये जाये। आक्रमणकारियों ने उन्मादपूर्ण वीरता का प्रदर्शन

किया। उनमे से अनेक द्वितीय महायुद्ध मे चीनी, जापानी और रूसी फौजो मे लड़ चुके थे; उनके पास उत्तम रूसी अस्त्र-शस्त्र थे, विशेष रूप से रूसी टैंक, जापानियों से उन्होने रात्रिकालीन आक्रमण और पक्तिभेद करने की कला भलीभॉति सीख ली थी, जिसका प्रतिरोध कठिन था। सब-से-बड़ी बात तो यह थी कि वे सख्या मे कही अधिक थे। आमने-सामने की हाथ की लडाई बहुधा अत्यधिक आतक कर देती थी। एक अमरीकी सैनिक अधिकारी को उत्तेजित होकर कहना पडा, "मै तो यह जान ही नही पाता हूँ कि किसने किसे घेरा है।" जापान मे अमरीकी युद्ध-विशारदों और सुदूर पूर्व के सागर मे खडे जहाजी बेडो की मौजूदगी से तुरन्त फौज पहुँचना सम्भव बन सका, हालॉकि वह बहुत कम थी। तीन चार हजार फुट से ऊँची ऊबड-खाबड पहाडियो, दुर्गन्ध-भरे धान के खेतो और दलदली खाइयों से प्रतिक्षा करनेवाले सैनिक कोरिया के कोने की ओर जापान के समीप हटते चले गये।

किन्तु, जनरल वाल्टन वाकर की युद्ध मे विलम्ब करने की चाल ने अपना काम कर दिखाया। सितम्बर के प्रारम्भ मे उन्होने अपने सैनिकों को साठ फुट चौडे और सौ मील लम्बे क्षेत्र मे बन्द पाया, जहॉ पुसान के बन्दरगाह द्वारा रसद पहुँचायी जा सकती थी। यहॉ उनकी आठवीं सेना ने जम कर मोर्चा लिया, जबकि फौजो के अधिक दस्ते और नौसेना की टुकडियॉ पहुँचती ही गयी। अमरीकी हताहतों के बारे मे किये गये एक अपूर्ण अनुमान के अनुरूप उनकी सख्या सात हजार तक पहुँच गयी जबकि उत्तर कोरियाई लोगों की सख्या इससे भी बहुत अधिक थी। जब पर्याप्त सेनाए और अस्त्र-शस्त्र आ चुके, तो १५ सितबर की सयुक्त-राष्ट्र-सघ की सेना ने यकायक प्रत्याक्रमण प्रारम्भ कर दिया। "हम अब कूच करने ही वाले है" राष्ट्राध्यक्ष सिगमन री ने घोषणा थी की और वे इस प्रकार चले कि सारा ससार आश्चर्यचकित रह गया।

मैकार्थर ने सुदूर उत्तर मे सिओल के पास इनकान-बन्दरगाह पर आघात करने की योजना बनायी थी। जापानी बन्दरगाहो मे २६० जहाजो का समुद्री बेडा खडा था। अमरीकी, ब्रिटिश और आस्ट्रेलिया के विमान-चालको ने शत्रु पर भयकर विस्फोट तथा आग लगानेवाले बम गिराने आरम्भ किये। अमरीकी और ब्रिटिश लडाकू जहाजों ने खुले समुद्रतटीय क्षेत्र पर गोले बरसाने शुरु किये। फर्स्ट-मरीन-डिवीजन ने प्रातः होते-होते वोल्मी टापू पर अधिकार कर लिया और ध्वस्त इनकान मे जा पहुँचा। इस डिवीजन ने सातवी इंफे-

न्टरी-डिवीजन मे शामिल होकर, सिओल की ओर तीव्र गति से कूच किया। इसके साथ-साथ पुसान के समकोण चतुर्भुज मे स्थित जनरल वाकर के दस्ते उत्तरी कोरियाई सेना का सामना करने के लिए, आगे की ओर बढे, जबकि दक्षिणी कोरिया के दस्ते भीतरी प्रदेश में आगे बढने के उद्देश्य से पूर्वी तट पर उतरे। युद्धपोत मिसूरी ने जो ११ हजार मील की दूरी से चल कर आया था, भारी तोपो से आग बरसानी शुरू की। शत्रु का यातायात कट जाने का खतरा तुरन्त उपस्थित हो गया। यह आश्चर्य की बात नही कि, उत्तर कोरिया का मोर्चा टूट गया और उसकी सेना भाग निकली।

२६ सितम्बर के मध्याह्न मे सिओल संयुक्त-राष्ट्र-संघ के हाथो मे आ गया, और राष्ट्राध्यक्ष सिगमन री के लिए अपनी पुरानी राजधानी मे अपनी सरकार की पुनःस्थापना सम्भव बन सकी। दक्षिण कोरिया व संयुक्त-राष्ट्रो की सेनाए आक्रमणकारियो का सीमा के उस पार पीछा करती रहीं। मैकार्थर ने शत्रु के नाम एक आदेश प्रसारित किया कि वे "ऐसे सैन्य-निरीक्षण के अन्तर्गत जिसे मै आदेश दू" हथियार डाल दे। उन्होंने उसकी अवहेलना की, किन्तु एक बार फिर ससार ने देख लिया कि, कम्यूनिस्ट-आक्रमण विफल बनाया जा चुका था।

अब एक बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर देना था। संयुक्त राष्ट्रों की सेनाएँ ३८ वी समानान्तर पर ही रुक जायं या तब तक अग्रसर होती जायं, तब तक कि उत्तर कोरिया को अपने आधीन करके देश का एकीकरण नही कर लेती? इस विषय पर पश्चिमी देशों मे भिन्न मत थे। मैकार्थर का विश्वास था कि यदि उन्होने शत्रु को यालू नदी के उस ओर जहा मंचूरिया और साइबेरिया की सीमाएँ मिलती हैं, नहीं खदेड दिया तो वे पर्वतों पर फिर से एकत्र होकर नये रगरूट भर्ती कर, रूस से अधिक टैक और विमान लेकर दुबारा आक्रमण कर देगे। विदेश विभाग ने समानान्तर के उस पार बढ़ने का निश्चय किया। सयुक्त राष्ट्रों की सेनाओं ने तीव्र गति से आगे कूच किया, उत्तरी कोरिया की राजधानी प्यागयाग पर अधिकार कर लिया और अक्टूबर की समाप्ति तक उत्तरी सीमा क्षेत्र के भीतर पहुँच गयी। यह वह पंक्ति थी जो एक स्थान पर यालू नदी को छूती थी। अमरीकी दस्तो के आगे बढ़ते ही सयुक्त-राष्ट्रो की वृहद्सभा ने एक प्रस्ताव स्वीकार करके, उसके इस कदम का समर्थन किया और ब्रिटिश विदेश-मंत्री अर्नेस्ट बेवन ने माँग की कि "समूचे कोरिया में स्वतत्र सरकार की स्थापना की जाये।"

किन्तु, यह स्पष्ट हो गया कि इस तीव्र गति से आगे कूच करने की क्रिया

मे मैकार्थर उस स्थान से भी आगे बढ गये, जहॉ रुक जाने की ट्रूमैन-प्रशासन और सयुक्त राष्ट्रों के देशों को आशा थी। व्यग्रता बढ़ाने वाला एक और तथ्य सामने आया। च्यांग-काई-शेक ने आशा लगा रखी थी कि चीन की मुख्य भूमि पर आक्रमण करने के लिए, अमरीका उनकी सहायता करेगी। मैकार्थर ने च्यांग-काई-शेक को प्रोत्साहन दिया अथवा नहीं और उन्हे चीन के साथ युद्ध की करने इच्छा थी अथवा नहीं, ये ऐसे प्रश्न हैं जिनका सम्पूर्ण रूप से स्पष्टीकरण अभी भी बाकी है। जो भी हो, मैकार्थर की नयी कार्यवाही के प्रारम्भ होते ही, चीनी कम्यूनिस्ट भडक उठे। विदेशमत्री चाऊ एन-लाई ने भारतीय राजदूत को बतलाया कि दक्षिण कोरिया की सेनाओं को छोड कर, यदि किसी अन्य सेना ने पुरानी सीमा को पार किया, तो उत्तरी कोरिया की सहायतार्थ चीन अपनी सेनाए भेजेगा। ऐसी ही रिपोर्ट, मास्को और स्टाकहोम से भी मिली।

यदि चीन युद्ध मे उतर पडता, तो मैकार्थर द्वारा आगे ली गयी सयुक्त-राष्ट्रों की सेनाओ के लिए खतरा उत्पन्न हो सकता था, क्योंकि उनका केन्द्र आक्रमण के लिए खुला था। राष्ट्राध्यक्ष ट्रूमैन इस स्थिति से इतने चिन्तित हो उठे कि, उन्होंने मैकार्थर को आदेश दिया कि वे १५ अक्टूबर को उन्हे वेक टापू पर मिले, जहॉ उन दोनो ने अकेले ही एक घण्टे से अधिक देर तक बातचीत की। मैकार्थर ने आश्वासन दिया कि कोरिया मे विजय हो चुकी है और चीनी कम्यूनिस्ट आक्रमण नहीं करेंगे तथा आगामी जनवरी में कोरिया से एक डिवीजन यूरोप को भेजा जा सकेगा। वास्तव में, क्रिसमिस तक वे आठवीं सेना को जापान वापस बुला लेने की आशा कर रहे थे। लेकिन, मैकार्थर ने कहा कि यदि चीन युद्ध मे कूदा, तो वे ६० हजार से अधिक सैनिक कोरिया मे नहीं ला सकेंगे और बिना हवाई शक्ति के उनका कत्लेआम हो जायगा।

कम्यूनिस्ट चीन का आक्रमण : चीन युद्ध मे कूदा और बड़े पैमाने पर। शीघ्र ही उन्मादपूर्ण चीनी दस्ते पालू तक पहुँच गये और यह स्पष्ट हो गया कि आवश्यता पडने पर चीन आम युद्ध के लिए तैयार है। ऐसा युद्ध न तो अमरीका चाहता था और सयुक्त-राष्ट्र ही। जैसा कि, जनरल ब्राडले ने कहा, "वह गलत युद्ध होता, गलय समत पर होता और गलत स्थान पर होता"; किन्तु क्या उसे टाला जा सकता था?

कम्यूनिस्ट बराबर यह झूठ बोलते रहे कि, चीनी सेनाए उत्तरी कोरिया की सहायतार्थ स्वयसेवक ही थे। एक रूसी प्रवक्ता ने तिरस्कारयुक्त शब्द मे राष्ट्रों

से कहा कि ये फौजें लफायट और रोचेम्ब्यु के समान हैं। अमरीका ने उस झूठ की भी कद्र की और चीन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा नहीं की, यद्यपि वह वास्तव में युद्ध ही था। यह स्पष्ट हो गया था कि चीनी आक्रमण एक कपट था, जिसका उद्देश्य अमरीका द्वारा यूरोप के पुनर्निर्माण के प्रयत्नों में बाधा उत्पन्न करना था। ट्रूमैन यूरोप को विश्वशांति की कुंजी समझते थे और उनकी इच्छा नही थी कि, अमरीका के प्रयत्नों को पश्चिमी क्षेत्र से हटा कर अन्यत्र लगाया जाये। संयुक्त-राष्ट्रों ने सतर्कतापूर्वक कार्य किया और पीपिंग के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने की स्वीकृति प्रदान नहीं की।

मैकार्थर चीनी प्रयत्नों को शक्ति, दिशा और ध्येय जानने के लिए अधीर हो उठे और उन्होंने आठवीं सेना को २८ नवम्बर को आदेश दिया कि वह उनके द्वारा पुकारा जानेवाला 'आम-प्रत्याक्रम' प्रारम्भ कर दे। किन्तु, यह प्रयास विफल रहा, चीनी सेनाएं अधिकाधिक सख्या मे पहुँचती गयी और उन्होंने दोनों अमरीकी पंक्तियों को अलग कर दिया। दक्षिण कोरिया का एक दस्ता इस प्रकार चकनाचूर कर दिया गया कि, वह अदृश्य ही हो गया। ३ दिसम्बर तक मैकार्थर ने आठवीं सेना की स्थिति को 'अधिकाधिक चिन्ताजनक बताया। वह शीघ्रतापूर्वक पूरी तरह से सिओल-क्षेत्र की ओर पीछे हटने लगी। उसके कुछ भाग इस बुरी तरह कुचले गये थे कि अमरीका, ब्रिटेन और तुर्की की 'सुरक्षित' सेना को उनकी सहायतार्थ जाना पडा और उन्होंने भी अपने को अधिकाधिक शत्रुओं से घिरा पाया। यद्यपि सुरक्षा-विभाग ने घोषणा की कि स्थिति 'बिलकुल बदतर' नहीं है; फिर भी वाशिंगटन में चिन्ता के कारण बैठकें होती रहीं।

१९५० के अन्त तक, सयुक्त-राष्ट्रो की सेनाओं की सिओल और ३८-वें समानान्तर के मध्य की पंक्ति सन्देहयुक्त ही थी। कोई भी युनिट अलग नहीं की जा सकती थी· यद्यपि कई पूर्णरूपेण विनष्ट कर दी गयी थीं और कई को काफी क्षति पहुँची थी। जनरल वाकर की मृत्यु के उपरान्त लेफ्टनेंट जनरल मैथ्यू वी. रिजवे, मैकार्थर के आधीन सेनापति नियुक्त हुए। उनके पास लगभग ३ लाख २५ हजार रणकुशल पैदल सैनिक थे जिनमें से २ लाख अमरीकी थे। हवाई और नौबेडे के सैनिकों को मिला कर यह संख्या ३ लाख ५० हजार तक पहुँच जाती थी। शत्रु की सख्या अनुमानतः यदि ५ लाख नहीं तो उसके आसपास अवश्य थी और यालू के उत्तर की ओर उसके पास बड़ी सख्या में सुरक्षित सेना भी तैयार खडी थी। सयुक्त-राष्ट्रों की अपेक्षाकृत

उत्तम आग्नेय शक्ति और हवाई शक्ति के कारण युद्ध में उसके सैनिकों की बहुत कुछ रक्षा हो सकी। उनके हताहत की दर का अनुपात १.५ रहा और शत्रु की यातायात सुविधाए भी पगु बना दी गयीं।

चीनी आक्रमण विफल बनाया गया : १९५१ की शरद और वसन्त ऋतुओं मे कम्यूनिस्ट आक्रमण बराबर जारी रहे और स. रा की ओर से भी उनकी प्रगति को धीमा करने, उन्हे रक्त से लथपथ करने और अन्त में रोक लेने के लिए गम्भीर सफल प्रयत्न होते रहे। रिजवे ने उनके तुरन्त बाद एक प्रत्याक्रमण का मोर्चा तैयार किया, जिससे स. रा. की सेना फिर से सिओल के उत्तर की ओर पहुँच गयी। अप्रैल के मध्य तक अमरीका और उसके मित्र ३८-वीं समानान्तर से १२ मील ऊपर की ओर बढ कर 'लौह-त्रिकोण' के एक भाग पर, जो कोरिया मे कम्यूनिस्ट-शक्ति का केन्द्र था, अधिकार कर चुके थे।

शरद ऋतु का युद्ध शायद अमरीका के इतिहास मे सबसे अधिक भयानक था। कडाके की सर्दी और चारों ओर अन्धेरा फैला देनेवाले तूफान, ऊँचे-नीचे पर्वतो के रुक्ष क्षेत्र, सन्देहास्पद दलदल, बिना पुल के नाले, खूंखार शत्रु, बिना आराम किये हुए इस तरह युद्ध करते रहना जब तक कि उनके दस्ते शवों की दीवार के पीछे न खडे हो जाये, रूसी टैंकों की शक्ति और रूस द्वारा निर्मित जेट-वायुयानों की मजबूती, जिन्होंने अनेक अमरीकी २९ बम गिरानेवाले वायुयानो को गिरा कर जला डाला था; कई लडाइयो की चिन्ता-जनक हालत, जिसमे से एक मे ब्रिटेन के ग्लासेस्टरशायर के रेजीमेंट का पूरी तरह से सफाया हो गया था, और यह सम्भावित भय कि स. रा. के कैदियो के साथ इसकी सेनाए जर्मनी और जापानी कैदियो को दी गयी यातनाओं से भी बुरा बर्ताव करेंगी—इन सब कारणो ने सघर्ष को परीक्षा का एक भयानक और कठिन रूप दे दिया था। किन्तु, अमरीकी और ब्रिटिश वायुयानों ने अपनी क्षमता को श्रेष्ठ रखा। दिन मे वे कई बार एक-एक हजार मील तक धावा बोलते थे और शत्रु को बमों, मशीनगनो की गोलियो से ढँक देते थे।

अप्रैल और मई मे कम्यूनिस्टों ने दो भयानक प्रत्याक्रमण किये, जो दो लाख व्यक्तियो के नुकसान के बाद ही रुके। तब जून मे सयुक्त-राष्ट्रों का विशाल प्रतिप्रत्याक्रमण प्रारम्भ हुआ। धीमी गति से आगे बढती हुई आठवीं सेना ने समानान्तर को पार किया, 'लौह त्रिकोण' के अधिकाश भाग पर

अधिकार कर लिया, और ऐसी मोर्चेबन्दी कर ली कि उस पर किये गये आक्रमण विफल गये। लडाई धीरे-धीरे खत्म हो गयी।

कोरिया के युद्ध की प्रथम वर्षगाठ पर, २५ जून को, कम्यूनिस्टो के पास युद्ध आरम्भ करने के समय की अपेक्षा २१ हजार वर्गमील क्षेत्र कम था। कुछ स्थानों पर तो सयुक्त-राष्ट्रो की नयी सीमा ३८-वें समानान्तर के ४० मील ऊपर तक जा पहुँची थी। उत्तरी कोरिया के नगर ध्वस्त हो चुके थे, और उसके उद्योग समाप्त हो गये थे। युद्ध के सम्बन्ध में, विश्वसनीय ऑकडे मिलने मे अब बहुत अधिक विलम्ब नहीं लगेगा; किन्तु जहॉ तक कम्यूनिस्ट पक्ष का प्रश्न है, शायद वे कभी भी न मिल पायं। लेकिन जहा सयुक्त राष्ट्रो की क्षति का अनुमान ४ लाख व्यक्तियों के मरने, घायल (दक्षिणी कोरिया के २ लाख ६० हजार, अमरीकी १ लाख ३५ हजार, अन्य राष्ट्र १२ हजार) अथवा गायब हो जाने तक का लगाया जाता है, वहॉ कम्युनिस्टों की क्षति लगभग चार गुनी अधिक अर्थात् कम से कम १५ लाख तक की थी। सक्षिप्त मे यह इतिहास का सबसे रक्तरजित युद्ध साबित हुआ। कम्युनिस्टो को संक्रामक रोगों से भी काफी क्षति पहुँची। स्वतत्र विश्व ने अजेय लडाकू शक्ति का प्रदर्शन किया और संयुक्त-राष्ट्र ने निरकुश आक्रमणकारियों के विरुद्ध अपने को छोटे देशो के रक्षक के रूप मे प्रमाणित किया।

मैकार्थर पदच्युत : जब यह आक्रमण और प्रत्याक्रमण का नाटक किया जा रहा था, तभी ट्रूमैन और मेकार्थर के बीच एक नाटकीय संघर्ष भी अपनी चरम सीमा पर जा पहुँचा। यह संघर्ष लिकन और भावुक मैक्लेन के बीच की कठिनाइयों का स्मरण दिलाता है। यह सघर्ष बहुत सी आम सम्भावनाओ-को सोचनेवाले एक राष्ट्राध्यक्ष और केवल एक सैनिक दृष्टिकोण से ही सोचने वाले जनरल, स्थिति पर नियन्त्रण करने के लिए दृढ राष्ट्रपति और शासन को बाध्य करने के लिए सैनिक दबाव डालनेवाले एक जनरल के बीच था।

जब मैकार्थर की सेनाएं पराजित होने लगी तो उन्हें बहुत बुरा लगा। उन्होंने प्रधान सेनापति को रिपोर्ट दी कि तीन ही सम्भावनाएं हैं—चीनियों के विरुद्ध केवल कोरिया मे ही कार्यवाही जारी रखना, ३८-वी समानान्तर को सन्धिरेखा समझना (यदि चीनियों ने स्वीकार किया तो), और चीन के विरुद्ध प्रत्येक संभावित क्षेत्र मे जोरदार आक्रमण। वे तीसरा कदम उठाने के इच्छुक थे। उनकी इच्छा थी कि चीनी समुद्रतट की नाकेबंदी कर दी जाये, मुख्य भूमि

पर बम बरसायें जायें, च्याग-काई-शेक की सेना का दक्षिण चीन पर आक्रमण करने के लिए उपयोग किया जाये और दक्षिण कोरिया मे अतिरिक्त फौजे उतारी जाये। यह स्पष्ट था कि, यदि अमरीका च्याग की सेना को चीन की मुख्य भूमि पर उतार देता और चीनी नगरो पर बमवर्षा करता, तो महायुद्ध प्रारम्भ हो जाता। सधि के अनुसार रूस चीन की सहायता को आता। ट्रूमैन तृतीय विश्वयुद्ध का खतरा मोल लेना नही चाहते थे। उन्होंने अमरीकी जनता के नाम एक सन्देश १५ दिसम्बर १९५७ को प्रसारित किया—"हमारा लक्ष्य युद्ध नहीं बल्कि शाति है। विश्वभर मे हमारा नाम अन्तर-राष्ट्रीय न्याय और विधान तथा शान्ति के सिद्धान्तो पर आधारित विश्व के लिए विख्यात है।" राष्ट्राध्यक्ष को सीमित-युद्ध की घोषणा करने और चीन के साथ अघोषित युद्ध करने की दिशा मे सयुक्त प्रधान सेनापतियो का पूरा समर्थन प्राप्त था।

किन्तु, मैकार्थर ने प्रशासन की नीति को स्वीकार नहीं किया। जब मार्च मे युद्ध की स्थिति मे परिवर्तन हो गया, तब नयी स्थिति का सामना करने के लिए ट्रूमैन यह घोषणा करने के लिए तैयार थे कि दक्षिण कोरिया को आक्रमणकारियो से लगभग मुक्त कर दिये जाने के पश्चात्, लडाई से समाप्त करने और सन्धिवार्ता करने का समय आ गया है। मैकार्थर को समुचित रूप से सूचित किया गया कि यह वक्तव्य लगभग तैयार है। विदेश विभाग, प्रधान सेनापति, प्रतिरक्षा सचिव तथा अन्य लोगो ने उनको अन्तिम रूप देने मे ट्रूमैन की सहायता की। राष्ट्राध्यक्ष उस वक्तव्य को देने ही वाले थे कि, उनके सारे कार्य पर पानी फिर गया। २४ मार्च को मैकार्थर ने ससार को अपना ही एक वक्तव्य दे डाला, जो ट्रूमैन के वक्तव्य से इतना भिन्न था कि यदि दोनो साथ-साथ दिये जाते तो लोग दुविधा मे पड जाते। जनरल ने अधिकारपूर्वक घोषित किया कि लाल चीन की पराजय हो चुकी है, युद्ध को अधिक जारी रखने के लिए उसके पास साधनो की कमी है, और यदि सयुक्त-राष्ट्रो ने "बडे पैमाने पर समुद्र तट और आन्तरिक अड्डों तक सैनिक कार्यवाही का नया प्रयास किया" तो चीन के तुरन्त घुटने टेक देने की नौबत आ जायगी। साराश यह कि, उन्होंने चीन को धमकी देते हुए यह मॉग की कि वह सन्धि के लिए तुरन्त तैयार हो जाये।

ट्रूमैन ने जनरल को पदच्युत करने का निर्णय कर ही लिया था कि, ५ अप्रैल को एक नयी घटना घटित हुई। हाउस के रिपब्लिकन-नेता जासेफ डब्ल्यू.

मार्टिन ने चेम्बर के समक्ष एक व्यक्तिगत पत्र पढ़ा, जिसमें मैकार्थर ने अपने उस विचार को दुहराया था कि कम्यूनिस्ट चीन के प्रति कड़ा रुख अपनाया जाये। उन्होंने लिखा था कि यूरोप के अत्यन्त महत्व के बारे में बातें करना व्यर्थ है। लोगों को याद रखना चाहिए कि "हम यहाँ यूरोप का युद्ध हथियारों से लड़ रहे हैं, जबकि वहाँ पर राजनीतिज्ञ अब भी युद्ध की बातें ही कर रहे हैं। यदि हम एशिया में साम्यवाद के विरुद्ध लड़े जाने वाले इस युद्ध में हार गये तो यूरोप की पराजय भी नहीं टाली जा सकती है। यदि हमने इसे जीत लिया तो यूरोप, युद्ध से दूर रह कर भी स्वतंत्रता की रक्षा कर सकेगा।" उन्होंने आगे कहा, "इसके अलावा विजय का स्थान कोई भी अन्य वस्तु नहीं ले सकती है।"

ट्रूमैन के सामने अब केवल एक ही मार्ग था। अपने सैनिक और नागरिक परामर्शदाताओं की पूर्ण सहमति के पश्चात्, उन्होंने ११ अप्रैल १९५१ को अड़ियल जनरल को पदच्युत करने की घोषणा की। जनरल की अत्यधिक प्रतिष्ठा, ट्रूमैन के विरोधी रिपब्लिकन-दल के लोगों से उनकी साँठगाँठ और उनके अनुमानित राजनीतिक इरादों ने इस घटना को दुगुने रूप से नाटकीय बना दिया। १४ वर्षों की अवधि में पहली बार, घर आने पर सान फ्रांसिसको में मैकआर्थर का बड़ा शानदार स्वागत किया गया। अप्रैल १९ को, उन्होंने कांग्रेस के संयुक्त-अधिवेशन में भाषण दिया, जबकि देश ने उन्हें रेडियो पर सुना। आगामी दिन फिफ्थ एवेन्यु से गुजरने पर कई लाख लोगों ने उनका स्वागत किया। कुछ समय के लिए उनका राजनीतिक नक्षत्र ऊँचा उठता दिखलायी पड़ा।

नव-पृथकवाद : मैकार्थर के सम्बन्ध में हुए महान वादविवाद से प्रशासन की नीति को कोई आघात नहीं पहुँचा वरन सम्भवतया वह सुदृढ़ ही बन गया। इसका एक कारण यह भी था कि लोग सोचने लगे कि हालाँकि वे कोई खतरनाक कदम नहीं उठाना चाहते, फिर भी वे कम्यूनिस्टों की किसी शरारत को बर्दाश्त नहीं करेंगे। अमरीका अपना धैर्य, जहाँ तक सम्भव था, खो ही चुका था। यदि युद्ध जारी रहा तो प्रशासन काफी कड़ा रुख अपना लेता और रूस को अपना आक्रमण विस्तृत करने देने के बजाय वह एक दूसरे विश्व-संघर्ष को स्वीकार कर लेता। जनभावना ने इस दृष्टिकोण पर स्वीकृति प्रदान की। किन्तु, कांग्रेस के अधिवेशन ने एक नये प्रकार के पृथकवाद को मैदान में ला खड़ा किया।

मैकार्थर ने प्रतिवाद किया और कहा कि "उनकी कोई भी राजनीतिक महत्वाकांक्षाए नही हैं।" उन्होंने स्पष्ट किया कि उनका अपना प्रबल राजनीतिक विचार आवश्यक है। वह ऐसी नीति के पक्ष मे हैं, जो केवल अमरीका के हित के लिए हो। उनकी राय मे पश्चिम मे हमे विशेष रूप से मित्रो की आवश्यकता नही है, हमे निडरता से अपनी ही शक्ति पर भरोसा रखना चाहिए। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि राष्ट्राध्यक्ष-पद के लिए होनेवाले चुनाव मे उनका झुकाव रिपब्लिकन-दल के उम्मीदवार के रूप मे जनरल आइजनहोवर की अपेक्षा सिनेटर टैफ्ट की ओर है· क्योंकि टैफ्ट पार्टी के अर्धपृथकवादियो के प्रमुख थे। आइजनहोवर के प्रति उनकी कुछ बाते बडी चुभती हुई थी। मैकार्थर ने हर्बर्ट हूवर के उस विचार के प्रति सन्तोष प्रकट किया, जिसमे उन्होंने उस वर्ष के प्रारम्भ मे यूरोपीय प्रायद्वीप से अमरीकी सेनाओ को वापस बुला लेने का समर्थन किया था और दोनों अमरीका मे, ब्रिटेन को अग्रिम चौकी मानकर, 'पूर्वी गोलार्द्ध के जिब्राल्टर' के निर्माण की बात कही थी। यह बात उस समय की है जब कि आइजनहोवर यूरोप के लिए चार अतिरिक्त डिवीजनों की माँग कर रहे थे।

किन्तु पृथकवाद के खतरनाक रूप लेने का समय बीत चुका था। आइजनहोवर ने कांग्रेस की दोनों सभाओ के समक्ष अपना भाषण हूवर के अनुरोध के ठीक बाद मे किया। उन्होंने 'नाटो' मे अपने कार्य का उल्लेख करते हुए उसे अमरीका का प्राथमिक उद्देश्य बतलाया। उन्होंने कहा कि हम पश्चिम यूरोप के कुशल श्रम-समूह को, जो ससार मे सबसे बड़ा है, यो ही नही छोड सकते। हमे उसकी विशाल 'औद्योगिक शक्ति' को अपने पास रखना चाहिए। आइजनहोवर ने बतलाया कि यूरोप की नैतिकता मे उत्साहप्रद वृद्धि हुई है। अप्रैल के प्रारम्भ मे सिनेट ने १९ के विरुद्ध २९ मतों से प्रस्तावो को स्वीकार कर उत्तर अटलाटिक-सधि को इतिहास का एक महत्वपूर्ण विषय बतलाते हुए, उसका स्वागत किया। उन्होंने घोषणा की कि अमरीका को यूरोप मे "हमारी सेना के ऐसे दस्ते रखने चाहिए, जो पश्चिम की सुरक्षा के लिए आवश्यक हो और जो पश्चिमी सुरक्षा की दिशा मे हमारी माँग के अनुसार आवश्यक और अनुकूल हों।"

प्रशासन ने अमरीका को अस्त्रशस्त्रो से सज्जित करने और यूरोप को लैस होने मे सहायता प्रदान करने के कार्यक्रम को शीघ्र आगे बढाया। स्वदेश के लिए यह योजना थी कि, तीन वर्षो (बाद में चार) के भीतर राष्ट्रीय उत्पादन को

१९५ से बढ़ा दिये गये। युद्ध की दृष्टि से, मूल्यवान मशीनों की स्थापना में पूँजी लगाने की दिशा में प्रोत्साहन दिया गया और उन्हें करमुक्त कर दिया गया और जहाँ आवश्यक हुआ सरकारी ऋण भी प्रदान किये गये। सामान्य नागरिक उपभोग की वस्तुओं को यथावत् रखा गया; किन्तु बन्दूकों, वायुयानों, टैंकों और दूर मारक अस्त्र-शस्त्रों का उत्पादन बड़ी मात्रा में बढ़ाने की व्यवस्था की गयी। शीतयुद्ध भले ही अनेक वर्षों या पीढ़ियों तक जारी रहे; लेकिन कठिन स्थिति का सामना करने के लिए रूस की अपेक्षा अमरीका अच्छी तरह तैयार रहेगा। किन्तु, दो दिशाओं में बोझ भारी पड़ा। फौजों और प्रशिक्षण में ३५ लाख सैनिकों को तैयार रखना था, प्रतिवर्ष इसके लिए ४० से ६० अरब डालरों की आवश्यकता थी। इन अधिक खर्चों और करों के फलस्वरूप मुद्रास्फीति की बेचैनीभरी स्थिति का भी सामना करना अपेक्षित था।

किन्तु, फिर भी यह तथ्य है कि पुनःशस्त्रीकरण, मुद्रास्फीति और करों, ये सभी एक दूसरे से सम्बद्ध थे। ये ही मैकार्थर, हूवर और कुछ अर्द्ध-पश्चिमी और पश्चिमी सिनेटरों के अर्द्धयुक्तता की विफलता के कारण बने। इससे भी अधिक महत्व की बात यह थी कि, परिस्थितियों ने रूजवेल्ट, ट्रूमन, मार्शल और आइजनहोवर के प्रशासन के अधीन अपनायी गयी नीतियों को यथावत् जारी रखने के लिए बाध्य किया। अमरीका और 'नाटो' के अन्य सदस्यों के बीच उत्पन्न हुआ किसी भी प्रकार का मतभेद दोनों के लिए घातक माना गया।

कोरिया की संधि : जून १९५१ तक कोरिया का मोर्चा एक नीरस स्थिति तक पहुँच गया। और, जब सं. रा. में रूसी प्रतिनिधि ने यह कहा कि, क्रेमलिन संधि की चर्चा करने को तैयार है, तब खूनी युद्ध को रोकने का रास्ता खुल गया। जुलाई के प्रारम्भ में सं. रा. के सैनिक नेताओं और कम्यूनिस्ट सेनाओं ने लगातार विचार-विमर्श करना प्रारम्भ किया, जो महीनों तक चलता रहा। विशेष समस्या जिस पर समझौता होना असम्भव लगता था, बन्दियों का प्रश्न था। कम्यूनिस्टों के हाथों से सं. रा. के अधिकांश बन्दी या तो मर चुके थे या उनकी हत्या की जा चुकी थी। सं. रा. के हाथों में बन्दी कम्यूनिस्ट उत्तरी कोरिया या चीन लौटने के अनिच्छुक थे। वास्तविक कठिनाई यह थी कि शान्ति को टालते जाना रूस की इच्छा के अनुकूल था। रह-रह कर युद्ध करते रहने के कारण, सं. रा. की सेनाएं कोरिया में ही उलझी रहीं और यूरोप का पुनःशस्त्रीकरण करने के लिए 'नाटो' शक्तियों के प्रयासों

मे विलम्ब होता रहा। उससे रूस पर चीन की निर्भरता बढ गयी और चीनी सैनिकों और विमान-चालको को प्रशिक्षण के अवसर मिलते रहे।

अमरीका और सयुक्त राष्ट्र सघ सुदूर पूर्व मे आशिक और नकली शाति स्थापित नही करना चाहते थे। कोरिया को हिन्दचीन और मलाया से पृथक नहीं किया जा सकता था, जबकि रूस और चीन कम्यूनिस्ट विद्रोहियो को धन, रसद और सलाहकारों से सहायता प्रदान कर रहे थे। यदि माओ ने उत्तरी कोरिया से अपनी फौजें खीच कर, उन्हे दक्षिण-पूर्व एशिया मे लगा दिया, तो स्वतत्र विश्व के हाथ कुछ भी न लगेगा। रूस का उद्देश्य था कि पूर्व मे कठपुतली राज्यो का उपयोग आतरिक सघर्ष के लिए किया जाये, जबकि दूसरी ओर मास्को यूरोप मे शीत-युद्ध चालू रखे। लेकिन स. रा. के मध्यस्थ वास्तव मे हृदय के परिवर्तन का प्रमाण चाहते थे, मोर्चों के परिवर्तन का नही। अमरीका, ब्रिटेन और दूसरे पश्चिमी देशो के लोग युद्ध से तग हो चुके थे, क्योंकि कोरिया का युद्ध बडे अशो मे व्यर्थ लग रहा था। लेकिन, इस बात के प्रमाण भी मिले थे कि चीन मे इस युद्ध से उत्पन्न थकान कहीं अधिक थी।

स्टालिन की मृत्यु के उपरात मालेन्कोव और बेरिया के बीच सत्ता के लिए सघर्ष बढ जाने से एक नयी परिस्थिति उत्पन्न हो गयी। १९५३ के प्राथमिक सप्ताहों तक, रूस और चीन समझौते की अधिक भावना प्रदर्शित करने लगे। पानमुनजाम की सन्धिवार्ताए जो टूट चुकी थी, फिर से आरम्भ हो गयी। हठी और पुराने देशभक्त राष्ट्राध्यक्ष सिंगमन री ने इस बात पर जोर देकर कठिनाइयॉं पैदा कर दी कि समस्त कोरिया का उनकी सरकार के अन्तर्गत एकीकरण होना चाहिए और दक्षिण कोरिया मे रहने के इच्छुक २० हजार उत्तरी कोरिया के सैनिकों को 'मुक्त' करने की व्यवस्था की जानी चाहिए। किन्तु, अन्त मे अनिवार्य के स्थान पर स्वेच्छा से वापस लौटाये जाने की योजना को स्वीकार करने के लिए कम्यूनिस्ट काफी हद तक राजी हो गये। २७ जून १९५३ को, अन्तिम रूप से सन्धि पर हस्ताक्षर हो गये। युद्ध समाप्त हो गया।

पश्चिम ने बहुत अधिक मूल्य पर इस बडी विजय को प्राप्त किया था। हजारो अमरीकी, ब्रिटिश, और दक्षिण कोरिया के सैनिक कब्रों में पडे थे, लाखो रुग्णावस्था अथवा कठिनाई के कारण अपग और निर्बल हो चुके थे; अधिकाश कोरिया मे ध्वंस के ढेर विद्यमान थे। किन्तु, जैसा कि विंस्टन चार्चिल ने कहा, "पश्चिम को अपने उद्देश्य मे सफलता प्राप्त हो गयी थी, उसने कम्यूनिस्ट आक्रमण को रोक कर उसे पराजित कर दिया था।" यदि

सोवियत रूस कोरिया में अपने प्रयोगात्मक आक्रमण में सफल हो जाता तो वह शीघ्र ही वैसे अन्य कितने ही प्रयोग करता। स्तालिन ने मलाया, हिंद्चीन, फारमोसा और यदि सब उसकी योजनानुसार होता जाता तो पश्चिमी यूरोप की विजय के लिए समयसारिणी बना ली थी। लेकिन, उसे तोड़ दिया गया, पश्चिम का पुनःशस्त्रीकरण तेजी के साथ प्रगति करने लगा। इस समय साम्यवाद के विरुद्ध विश्व का मोर्चा उत्तरी कोरिया द्वारा किये गये आक्रमण के समय से बहुत अधिक शक्तिशाली हो गया था।

उद्‌जन बम : युद्ध के अन्तिम चरणों मे अमरीका ने न केवल अपेक्षाकृत बडे उद्‌जन बमों का प्रयोग किया; बल्कि एनीबेटॉक एटाल पर इतिहास के प्रथम उद्‌जन बम का विस्फोट भी किया। उस दिन १ नवम्बर १९५२ की प्रातःबेला में जो चकाचौंध हुई, उसकी रोशनी दस सूर्यों की अपेक्षा भी तेज थी; उसकी लौ ने, जो दो मील लम्बी और १ हजार फुट ऊँची थी, उस टापू को, जिस पर उसका प्रयोग किया गया था, पूरी तरह विनष्ट कर डाला। "इस प्रकार का हथियार," न्यूयार्क टाइम्स के डब्ल्यू. एल. लारेन्स ने लिखा, "जिसका विस्फोट ११७ लाख टन टी. एन. टी. की शक्ति से हुआ, ३०० वर्गमील के क्षेत्र को नष्टभ्रष्ट करके १२०० वर्गमील मे अग्नि प्रज्ज्वलित कर सकता है। यदि इसे 'कोबाल्ट' के खोल मे रखा जाये तो यह एक रेडियो-एक्टिव बादल उत्पन्न कर सकेगा जिसकी क्षमता ५० लाख पौण्ड रेडियम के बराबर होगी और जिससे हजारो वर्गमील तक मृत्यु और विनाश की लीला फैलायी जा सकेगी।"

सक्षेप मे एक उद्‌जन-बम लन्दन, मास्को या न्यूयार्क को लगभग पूर्ण रूप से विनष्ट कर सकता है। इस नये शस्त्र के महत्व को धीरे-धीरे सारे ससार ने जान लिया। अणुबम तो सहारक था ही, इस प्रकार के प्रक्षेपास्त्रो द्वारा भी युद्ध सम्भव था। किन्तु, उद्‌जन-बम जिसके सहारक बादलो को, हवा की लहरे इधर से उधर ले जा सकती हैं, शत्रु के लिए खतरनाक होने के साथ-साथ उसका उपयोग करनेवाले के लिए भी उतना ही खतरनाक सिद्ध हो सकता था। इस प्रकार उद्‌जन बम का युद्ध समस्त पृथ्वी को जनहीन कर सकता था। मनुष्य ने आखिर एक ऐसे विनाशभरे शस्त्र की खोज कर ली थी कि, केवल पागल व्यक्ति ही एक असीमित सघर्ष की बात सोच सकता था। एक नये युग का श्रीगणेश हो चुका था।

आइज़नहोवर वनाम स्टीवेंसन : १९५२ में राष्ट्राध्यक्ष-पद के चुनाव-अभियान ने युद्ध और प्रतिरक्षा से ध्यान हटा कर, एक रोचक विषय उपस्थित किया। सार्वजनिक और व्यक्तिगत दोनों ही समस्याओं का महत्व था आलोचकों के एक दल ने डेमोक्रेटिक प्रशासन को भ्रष्टाचार, सरकारी स्तर को नीचे गिराने, बढ़े-चढ़े करों और विवेकहीन खर्च, मुद्रास्फीति और व्यवसाय में नौकरशाही का हस्तक्षेप, विद्रोहियों के प्रति नम्र बर्ताव और सबसे अधिक कोरिया के युद्ध को बगैर किसी आवश्यकता के चलाये रखने के लिए दोषी ठहराया। आलोचकों के दूसरे दल ने रिपब्लिकन पार्टी पर प्रतिक्रियावादी और पृथकवादी तत्वों को आश्रय देने के लिए दोषी ठहराया। उन्होंने रिपब्लिकनों द्वारा नियन्त्रित ८७-वें कांग्रेस के बुरे रिकार्ड का स्मरण दिलाया हार्डिंग, कूलिज और हूवर प्रशासनों की भी तीखी स्मृतियों को उभाड़ा।

दोनों दलों में आंतरिक मतभेदों के कारण, संकट उपस्थित हो गया था। डेमोक्रेटिक पक्ष में दक्षिणी कट्टरपंथी (कंजरवेटिव) ट्रूमैन के प्रति पहले से कहीं अधिक उत्तेजित हो उठे थे। फ्रैंकलिन डी. रुजवेल्ट के अन्तर्गत उत्पन्न हुआ, किसानों का विश्वास भी टूट रहा था। मार्च में ट्रूमैन की इस घोषणा का, कि वे राष्ट्राध्यक्ष पद के चुनाव के लिए फिर से खड़े नहीं होंगे, कई डेमोक्रेटों ने यह कह कर स्वागत किया कि, दल को पुराने व्यक्ति से छुटकारा मिल रहा है। रिपब्लिकन-पक्ष में पुराने लोग, जिनका नेतृत्व से रोबर्ट टैफ्ट कर रहे थे और जिन्हें हूवर और मैकार्थर द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा था प्रगतिशील तत्वों के विरोधी थे। उनका विश्वास था कि 'न्यू डील' (आर्थिक विकास की पुरानी योजना) को स्वीकार कर लेना चाहिए और उस अन्तरराष्ट्रीय-वाद का समर्थन करना चाहिए जिसका प्रतिनिधित्व संयुक्त राष्ट्रसंघ, नाटो और विदेशी सहायता के दूसरे कार्यक्रम कर रहे थे। नये लोगों के एक पक्ष का उदय भी हुआ, जिसका नेतृत्व आइजनहोवर कर रहे थे। उनको थामस ई. डिवी-जैसे राजनीतिज्ञों का समर्थन प्राप्त था।

प्रारम्भ से ही आइजनहोवर का रिपब्लिकन मंच पर पूर्ण प्रभाव छा गया। फरवरी में उन्होंने घोषणा की कि यदि उन्हें उम्मीदवार चुना गया, तो वे यह स्वीकार करेंगे और 'नाटो' के सेनापतित्व से राजनीतिक कार्यवाही के लिए त्यागपत्र दे देंगे। अमरीकी जनता ने इस घोषणा का भारी स्वागत किया। निस्सन्देह वे देश में सबसे अधिक लोकप्रिय व्यक्ति थे। उनके चुनाव-प्रचार का पूरा तरीका कुशल न था। इतिहास और राजनीति-सम्बन्धी उनका ज्ञान

भी कम ही था; अमरीकी आर्थिक मामलों, सरकार और सामाजिक समस्याओं के बारे में भी उनको काफी जानकारी प्राप्त करनी थी। किन्तु, लोगों को उनकी योग्यता, विवेक, चेतना और अन्तरराष्ट्रीय अनुभव के बारे में पूरा विश्वास था। हेराल्ड स्टेसेन, राबर्ट टैफ्ट और केलिफोर्निया के गवर्नर अर्ल वारेन-जैसे विरोधी उम्मीदवार जनता पर कोई प्रभाव न डाल पाये।

जुलाई के प्रारम्भ में जब रिपब्लिकन कन्वेंशन शिकागो में हुआ तो गवर्नर डिवी ने आइजनहोवर के समर्थकों को व्यवस्थित किया· ऐसे प्रतिनिधि जो कुछ निश्चय नहीं कर पाये थे, इस विश्वास के साथ उस पंक्ति में शामिल हो गये कि केवल 'आइक' को ही विजय का विश्वास है· और पहले मतदान में जनरल का जोरदार समर्थन किया गया। उप-राष्ट्राध्यक्ष पद के लिए केलिफोर्निया के सिनेटर रिचर्ड निक्सन की नामजदगी की गयी।

डेमोक्रेटिक-पार्टी के प्रमुख व्यक्ति थे इलिनोइस के गवर्नर एडलाई ई. स्टीवेंसन, जिनका नाम पार्टी में काफी प्रसिद्ध था (उनके पितामह क्लीवलैण्ड के दुबारा राष्ट्राध्यक्ष चुने जाने पर उपराष्ट्राध्यक्ष थे)· उन्हें वाशिंगटन के विभिन्न पदों का अनुभव प्राप्त था और वे संयुक्त-राष्ट्र-संघ में प्रतिनिधि भी रह चुके थे। उन्होंने अपने राज्य को कुशल और लोकप्रिय प्रशासन प्रदान किया था। वे बुद्धिमान, सुसभ्य, उदार और उत्साही थे और श्रेष्ठ व्यक्तित्व को बनानेवाले सभी गुण उनमें विद्यमान थे। प्रेसिडेंट ट्रूमैन ने उन्हें उम्मीदवारी स्वीकार करने के लिए जोर डाला और जब तीसरे मतदान में हैरीमैन ने न्यूयार्क के प्रतिनिधित्व को उनके पक्ष में कर दिया तो उनका चुनाव हो गया। स्टीवेंसन ने शीघ्र ही टेलीविजन पर अपनी उम्मीदवारी को स्वीकार करते हुए एक भाषण दिया। उनकी ओजस्विता, स्पष्टता और भावना के कारण लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

उसके बाद जो प्रचार-अभियान आरम्भ हुआ, उसका न तो तीव्रता से प्रतिकार किया गया और न वह विशेष नाटकीय ही रहा। जब बुद्धिजीवियों की बड़ी संख्या ने श्रमिक नेताओं के साथ मिल कर, स्टीवेंसन का अनुमोदन किया, तब रिपब्लिकनों ने इन्हें 'कूपमण्डूक' कहकर समाजवाद और श्रम-सम्बन्धी कानून की माँग का समर्थक ठहराकर उनका मजाक उड़ाया। कुछ समय तक उदासीन रहने के पश्चात्, टैफ्ट ने सितम्बर के मध्य में आइजनहोवर से राष्ट्राध्यक्ष-भवन कोलम्बिया में भेंट की और एक ऐसा वक्तव्य दिया, जिससे यह बोध होता था कि जनरल ने उनकी अधिकांश माँगों को

स्वीकार कर लिया है। राष्ट्राध्यक्ष-पद के दोनो उम्मीदवारो ने लगातार लम्बे पर्यटन के पश्चात् भाषण दिया जो कुछ अशो मे उनके सहायको के द्वारा लिखे गये थे। पतझड तक दोनो काफी थक गये थे।

इतिहास मे यह ऐसा प्रथम चुनाव-अभियान था, जिसमे टेलीविजन ने महत्वपूर्ण योग प्रदान किया था। बडे पैमाने पर प्रचार के लिए विज्ञापन करने और जन-सम्पर्क के लिए कम्पनियो को भाडे पर रखने की दृष्टि से भी यह प्रथम चुनाव था। रिपब्लिकनो को प्रचार की दृष्टि से भारी लाभ था, अनुमानतः चुनाव-प्रचार खर्च ३५० लाख डालर तक पहुँचा था। प्रेस का जहाँ तक सम्बन्ध था, ८० प्रतिशत समाचार-पत्रो और पत्रिकाओ ने आइजन-होवर का समर्थन किया। यद्यपि स्टीवेंसन के भाषणो मे असाधारण बौद्धिक प्रतिभा और साहित्यिक पुट मिलता था और आइजनहोवर ने भी बडी प्रतिष्ठा और निष्ठा का पालन किया, तथापि अभियान पूर्णरूपेण निराशाजनक सिद्ध हुआ। इस महान तौर पर खर्चीले अभियान के बावजूद जनता के ज्ञान मे कोई वृद्धि नही हुई। अभियान की दो उत्कृष्ट बाते थी:—स्टीवेंसन द्वारा निष्कपटता के साथ वास्तविकता का चित्रण। साथ ही वे इतिहास मे सबसे अधिक ईमानदार उम्मीदवारो मे से एक प्रमाणित हुए—और आइजनहोवर द्वारा रूजवेल्ट और ट्रूमैन-प्रशासन की मुख्य नीतियो को स्वीकार करने की यह साहसपूर्ण घोषणा की कि "हम कोई भी उलटा काम नहीं करेगे।"

फलस्वरूप जनमत आइजनहोवर के पक्ष मे हुआ, न कि रिपब्लिकनों के पक्ष मे। ३९ राज्यो ने उनके पक्ष मे ३ करोड ४० लाख आम मत और ४४३ चुनाव-सम्बन्धी मत दिये। स्टीवेंसन के पक्ष मे दक्षिणी या सीमान्त ९ राज्यो ने २ करोड ७३ लाख आम मत और चुनाव-सम्बन्धी ८९ मत प्राप्त हुए। आइजनहोवर टेक्सास, फ्लोरिडा, वर्जीनिया, टेनेसी और ओक्लाहोमा मे विजयी हुए। लगभग प्रत्येक स्थान पर उनको रिपब्लिकनो से काफी अधिक मत मिले थे। यह स्पष्ट था कि, उनकी प्रसिद्धि राष्ट्र के प्रति की गयी उनकी सेवाओ और उनके आकर्षक व्यक्तिगत गुणों के कारण थी। लोगों की भावना 'आई लाइक आइक' (मुझे आइक पसन्द हैं) के नारे मे व्यक्त हुई।

नया प्रशासन : वास्तव मे यह व्यक्तिगत विजय थी, पार्टी की नहीं, यह तथ्य कॉग्रेस मे रिपब्लिकनो के अल्पबहुमत से स्पष्ट होता था। नये सदन की स्थिति २२१ से २११ थी और सीनेट की ४८ से ४७ थी। यदि आइजनहोवर

की व्यक्तिगत विजय रिपब्लिकनों की, जो पराजित होने के करीब थे, सहायता नहीं करती, तो डेमोक्रेट दोनों सदनों पर आधिपत्य जमा लेते। आइज़नहोवर ने यह स्पष्ट कर दिया था कि वे अपनी पार्टी द्वारा देश और पश्चिमी राष्ट्रों के एकीकरण का प्रयत्न करेंगे। वास्तव में बहुत से लोगों ने तो उनका समर्थन राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय एकता के रूप में किया था। विशेषतया एक ऐसे अवसर पर जब कि संसार को संघटित और सुयोग्य नेतृत्व प्रदान करनेवाले 'नाटो' की पृष्ठभूमि में संघटित अमरीका की आवश्यकता थी।

उन्होंने उदार व्यक्तियों की नियुक्तियाँ कीं जो बहुत हद तक व्यापार, कानूनों और कार्पोरेशन कानूनों के अच्छे ज्ञाता थे। उन्होंने न्यूयार्क के जान फास्टर डलेस को अपना विदेश-सचिव नियुक्त किया। डलेस पक्षीय विदेशनीति के प्रबल समर्थक और संयुक्त-राष्ट्र की बृहत् सभा में अमरीका के प्रतिनिधि थे। सुरक्षा-सचिव पद जनरल मोटर्स कार्पोरेशन के अध्यक्ष चार्ल्स ई. विल्सन को दिया गया। एक दूसरे प्रमुख व्यापारी क्लीवलैण्ड के जार्ज एम. हम्फरी को वित्त-सचिव नियुक्त किया गया। आरगन के डगलस मैके को आन्तरिक विभाग का प्रमुख और उटाह के इजरा टी. बेंसन को कृषि सचिव बनाया गया।

अतः यह भी स्पष्ट था कि, नया प्रशासन अनुदार और व्यवस्थित होगा और प्रबल राजनीतिक मतभेदों से मुक्त रहेगा। यह भी दिखलाई पड़ रहा था कि प्रशासन का अन्तरराष्ट्रीय दृष्टिकोण ट्रूमैन के समान ही जागरूक होगा। परस्पर सुरक्षा निर्देशक (म्युचुअल सिक्योरिटी डाइरेक्टर) का पद हेराल्ड स्टेसान को मिला जो राष्ट्राध्यक्ष और डलेस के पश्चिमी मित्रता को दृढ़ रखने के दृष्टिकोण से सहमत थे। जब आइज़नहोवर ने राष्ट्राध्यक्ष-पद सम्भाला, तब राष्ट्र प्रगति और औद्योगिक विकास की लहरों के बीच था, उसको वैसी ही स्थिति में रखने की उनकी अभिलाषा थी। स्वतंत्र विश्व की स्थिरता प्राथमिक रूप से अमरीका की आर्थिक स्थिरता पर निर्भर करती थी।

पचीसवॉ परिच्छेद

आइज़नहोवर प्रशासन

नीति का आधार : बीस वर्षो मे पहली बार रिपब्लिकनो को सत्ता मिली थी। जबसे हूवर ने निराशा के साथ ह्वाइट हाउस का त्याग किया था, देशी और विदेशी मामलो मे एक क्राति हो चुकी थी। नया प्रशासन उसे स्वीकार करने को तैयार था।

बहुत थोडे अमरीकावासियो ने ही आइजनहोवर के समान विदेशी रगमच को इतनी गहराई के साथ देखा था या कम्यूनिस्ट आक्रमण के विरुद्ध स्वतत्र देशो को एकत्रत करने की आवश्यकता को समझा था। उन्होंने अपने उद्घाटन-भाषग मे घोषित किया कि अमरीका को विश्व-नेतृत्व के उद्देश्य को पूरा करना है जिसे वह व्यग्रता के बजाय उत्साहपूर्वक पूरा करेगा। उन्होंने लोगो को चेतावनी दी कि, वे करो के गिरने की आशा न करे वरन् अधिक त्याग करने को तैयार रहे। उन्होंने पश्चिम यूरोप को सहायता जारी रखने का वचन दिया और घोषणा की कि अमरीका व्यापार की वृद्धि के लिए तटकरो को घटाने को तैयार है। उन्होंने यूरोपवालो से अनुरोध किया कि वे अपने हिस्से के वित्तीय बोझ को सम्हाले और अधिक उत्साह से अपने को अस्त्र शस्त्रों से लैस करने की दिशा मे आगे बढे।

घरेलू मामलो मे, आइजनहोवर ने अपने मूलभूत विचारों की रूपरेखा काग्रेस के नाम अपने पहले लम्बे सदेश मे प्रस्तुत की। लोगों के जीवन मे नौकरशाही नीति को सीमित करने की इच्छा प्रकट की। उनके लिए सकटापन्न स्थिति को छोड कर व्यापार-धन्धे को सहज आर्थिक कानून के अनुसार कार्य करने, सरकार का वास्तिविक कार्य आर्थिक स्थिति को सुदृढ करने और व्यक्तिगत प्रयास के लिए अपने लोगो की बुद्धि को स्वतंत्र रूप से कार्य करने के लिए प्रोत्सहित करने तथा ऋण मे कमी करने, कर मे कमी करने की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण थे। सामान्य रूप से मुद्रास्फीति का सामना कर्ज देने पर प्रतिबध लगा कर किया गया—वेतन और मूल्य की अधिकाधिक सीमा निर्धारित

करके नही। श्रम के क्षेत्र मे वे सरकार को प्रबधको और संघों के बीच की सौदेबाजी से दूर रखने के पक्ष मे थे, जब तक कि किसी उद्योग के बन्द हो जाने से राष्ट्रीय कल्याण को खतरा पहुँचने का डर नही उत्पन्न हो जाता। कृषि के क्षेत्र मे, उन्होने यह सम्भावना बतलायी कि १९५४ मे मूल्यो का समर्थन करनेवाला कानून समाप्त हो जायगा। वे उस समय स्वीकार किये गये दुर्भाग्यपूर्ण मैक्केरेन-ऐक्ट मे संशोधन करने और सामाजिक सुरक्षा को विस्तृत करने के पक्ष मे थे। जहॉ तक देश के प्रति निष्ठा रखने की उद्विग्नपूर्ण समस्या का प्रश्न था, उन्होंने ट्रूमैन का अनुसरण किया। उन्होने पंचमाशियो को सरकार से बाहर रखने की जिम्मेदारी अधिकारियो की बतलायी, काग्रेस की नही।

संक्षेप मे आइजनहोवर के दृष्टिकोण सामान्य उदारवादी के थे, या जैसा कि उन्होंने सक्षेप मे बतलाया कि वे सामान्य प्रकार के 'परिवर्तनशील उदारवाद' मे विश्वास करनेवाले थे।

८३-वे काग्रेस के पहले अधिवेशन ने कुछ ऐसे कार्य किये, जिनके लिए आइजनहोवर ने अनुरोध किया था। उन्होंने स्वास्थ्य, कल्याण और शिक्षा के एक विभाग की स्थापना की जिसमें उन्होने मिसिज ओवेटा कल्प हाब्री की प्रमुख रूप मे नियुक्ति की। पुनर्निर्माण-कारपोरेशन समाप्त करके उसके स्थान पर 'लघु व्यवसाय प्रशासन' की स्थापना की गयी, जो प्रत्येक को १,५०,००० डालर से अधिक ऋण न दे। उसने चुंगी की प्रणाली को भी सरल बना दिया। उसने कृषि-समर्थक-मूल्यों के कार्यक्रम का भी विस्तार कर दिया और पारस्परिक लेन-देन सम्बन्धी वाणिज्य-सधि-कानून (रेसीप्रोकल ट्रेड एग्रीमेंट्स ऐक्ट) की अवधि मे भी एक वर्ष के लिए वृद्धि कर दी। इस कानून ने जब से वह कोर्डल-हल द्वारा निर्मित किया गया था, अन्तर्राष्ट्रीय वाणिज्य को प्रोत्साहन देने के लिए बहुत कुछ किया था। आइजनहोवर ने कठिनाई के साथ काग्रेस को समझाया कि वह विदेशी सहायता के लिए साढे चार अरब डालर की मजूरी दे। यह रकम पहले की शेष भारी रकमो को मिला कर, जिनको किसी सहायता के लिए मंजूर नहीं किया गया था, कुल ६ अरब ६० करोड़ डालर तक पहुँच गयी थी।

राष्ट्राध्यक्ष के अन्य प्रस्ताव, जैसा कि हवाई द्वीप को राज्य के रूप मे मान्य करना और टैफ्ट-हार्टले कानून मे सशोधन पारित नही हो सके। किन्तु, आइजनहोवर स्वेच्छा से आगे बढ़ने को तैयार थे। उनका विश्वास था कि, विवादास्पद क्षेत्रों मे जैसे कृषि-सम्बन्धी नीति, अन्तिम सिफारिशे करने से पूर्व

एक वर्ष का अध्ययन आवश्यक है। वे इसके लिए काग्रेस के पीछे बुरी तरह से पड जाने के इच्छुक नही थे, जैसा कि टी. आर. रूजवेल्ट और विल्सन ने किया था। लेकिन जब आइजनहोवर के प्रति राष्ट्र मे प्रशसा और श्रद्धा मे क्रमशः वृद्धि हो रही थी, शीघ्र ही आलोचको ने अव्यावसायिक और नेतृत्व मे ढुलमुल नीति अपनानेवाला कह कर उनकी आलोचना भी की।

कोरिया के युद्ध की समाप्ति : आइजनहोवर ने अभियान के दिनो मे आश्वासन दिया था कि, वे नृशंस कोरिया-युद्ध को समाप्त कर देगे। यह कार्य स्टालिन की मृत्यु के और चीन के युद्ध से ऊब जाने के उपरान्त सरल बन गया था; किन्तु प्रशासन द्वारा उठाये गये खास कदम के कारण सधि की घोषणा मे सहायता पहुँची। प्रशासन ने भारत के प्रधान मत्री नेहरू द्वारा कम्यूनिस्टो को बता दिया कि यदि सघर्ष की शीघ्र समाप्ति नही की गयी, तो स. रा. की सेनाए चीनियो की रसद-पक्ति पर बम-वर्षा प्रारम्भ कर देगी। २७ जुलाई १९५३ को की गयी सन्धि की घोषणा ने युद्ध-बन्दियो के सम्बन्ध मे अपनायी जानेवाली नीति के बारे मे सयुक्त-राष्ट्र-सघ के तर्क को स्वीकार कर लिया। उसके पश्चात् शीघ्र ही एक राजनीतिक सम्मेलन, एक सन्धि और स्थायी सधि होनी थी; किन्तु ये सब एक मृगमरीचिका प्रमाणित हुई। विश्व को युद्ध से छुटकारा तो मिल गया; किन्तु उसे समझौता नही मिल सका और न कोरिया की एकता ही कायम हो सकी। १९५४ मे जब जिनेवा मे १९ देशों की कान्फ्रेन्स कोरिया और इण्डोचीन की समस्याओ का हल करने के लिए हुई, तो स्वतंत्र विश्व को उससे लाभ होने की अपेक्षा हानि ही हुई। पश्चिमी राष्ट्रो द्वारा स्वतंत्र चुनाव के आग्रह के फलस्वरूप कोरिया की समस्या जहाँ की तहाँ रह गयी और समझौता असंभव हो गया; क्योंकि कम्यूनिस्ट स्वतत्र चुनाव नहीं चाहते थे। तटीय इण्डो-चीन वियतनाम, मध्य मे विभाजित कर दिया गया। उत्तरी भाग, जहाँ फ्रास की सेनाओ की कम्यूनिस्ट विद्रोहियो के हाथो पराजय पर पराजय हुई थी, विएतमिन्ह अर्थात् कम्यूनिस्टों के हाथो मे दे दिया गया। दक्षिणी भाग कुछ समय के लिए एक स्वतत्र राज्य बना दिया गया। किसी को ज्ञात नहीं था कि इस क्षेत्र अथवा समस्त दक्षिण पूर्वी एशिया का अन्तिम भविष्य क्या होगा। फिर भी यह निश्चय था कि उत्तरी विएतनाम के २ करोड़ व्यक्ति कम्यूनिस्ट क्षेत्र मे चले गये थे। बहुत-से अमरीकी अत्यन्त बेचैन हो उठे और सेक्रेटरी डलेस ने

तुरन्त ही इस क्षेत्र के स्वतत्र देशों की कानफ्रेस मनीला ने आमंत्रित करने के लिए कदम उठाये, जहाँ पर दक्षिण-पूर्वी एशिया-सधि-सघटन (सीटो) की स्थापना की गयी। यह 'नाटो' का ही एक दूसरा भाग था; फिर भी तुलनात्मक दृष्टि से इसमे इतनी शक्ति नही थी।

अपने नये प्रधानों के अन्तर्गत सोविएत रूस ने शाति-अभियान आरम्भ किया। यह अभियान वास्तविक न था; किन्तु कुछ ढुलमुल तटस्थ देश इससे प्रभावित हुए। जून १७, १९५३ को पूर्वी जर्मनी के श्रमिको के विद्रोह और कम्यूनिस्ट नेताओ की फूट ने ही, शायद उन्हें इसके लिए प्रेरित किया। पश्चिम उसका सामना करने को तैयार था। १९५३ के अन्त मे अमरीका, ब्रिटेन, और फ्रांस ने अविलम्ब विदेश-मन्त्रियो की एक बैठक का सुझाव रखा। जब यह सुझाव अस्वीकृत कर दिया गया, तब भी आइजनहोवर अपने दाव पर डटे रहे। दिसम्बर मे सयुक्त-राष्ट्र-सघ की बृहद् सभा मे आइजनहोवर ने अपने एक ओजस्वी भाषण के साथ बरूच-योजना अस्वीकृत किये जाने के पश्चात् अणु-समस्या सम्बन्धी प्रथम महत्वपूर्ण योजना प्रस्तुत की। उन्होने सुझाव दिया कि सभी सम्बन्धित सरकारें यूरेनियम और विखण्डात्मक धातुओं को एक साथ सग्रहित करे और उसका प्रशासन स. रा. द्वारा हो। उस पर नियन्त्रण रहनेवाली एजेंसी का यह काम हो कि, उसका उपयोग औषधि, कृषि और इंजिनियरिंग के प्रयोजनो मे तथा कोयला और विद्युत् शक्ति के अभाववाले क्षेत्रो मे शक्ति के रूप मे करे। रूस ने पहले इस पर नाक-भौ सिकोडी और हालॉकि बाद में वह उस विषय पर हुए विवाद में शामिल हो गया, किंतु वह कोई वास्तविक कदम नहीं उठाना चाहता था।

कांग्रेस की कार्यवाही : प्रशासन ने धैर्य से, लेकिन निस्सन्देह कठिन प्रयत्नो से धीरे-धीरे उस कार्यक्रम के कुछ अंश को स्वीकार करवा लिया, जिसको कार्यान्वित करने की आइजनहोवर की इच्छा थी। १९५४ के अन्त मे आइजनहोवर यह दावा कर सकते थे कि, राष्ट्र को उन्होने कुछ 'गतिशील' कदम प्रदान किये हैं। वर्ष का सबसे महत्वपूर्ण कानून रदरफोर्ड बी. हेस के दिनों के पश्चात् सघीय कर-प्रणाली मे पूर्णतया परिवर्तन करने के सम्बन्ध मे था। व्यावसायिक जगत ने उसका स्वागत किया; क्योकि उसके द्वारा मशीनों के घिसने-मिटने के लिए बडी और अधिक गहरी रकम की व्यवस्था की गयी थी। उद्योग को अनुसन्धान-कार्य के खर्च के लिए भी उसने

उदार छूट दी, और विभिन्न तरीकों से उसने कार-भार उत्पादनो के समर्थन मे लचीले मूल्यों के लिए भी राष्ट्राध्यक्ष को, जैसाकि उन्होंने कहा, 'महान और पूर्ण विजय' प्राप्त हुई। प्रशासन की यह नीति थी कि, मूल्यो को क्रमश. कम कर दिया जाये। वह सरकारी गोदामो मे पडी हुई विशाल किन्तु व्यर्थ फसलो के स्टाक को भी कम करने के उत्सुक थे। किन्तु, कृषि सम्बन्धी अशान्ति बढ़ गयी और मूलभूत रूप से समस्या का हल होना शेष ही रह गया। राष्ट्राध्यक्ष द्वारा सघ के स्थान पर राज्य के नियन्त्रण तथा आर्थिक क्षेत्र मे सार्वजनिक स्थान पर निजी कार्यवाही को प्राथमिकता देने की नीति के अनुसार स्पष्ट रूप से टेक्साज, लुईसियाना, और कैलीफोर्निया के तटो के समीप के तेल-स्रोतों पर सघीय अधिकार का परित्याग कर दिया गया। अन्य स्थानो पर भी टेनेसी वेली अथोरिटी की राशि को घटा कर, सार्वजनिक के स्थान पर निजी हाथो मे स्थानातरित करने की आज्ञा देकर, तथा प्राकृतिक गैस को सघीय नियमो से मुक्त करने के लिए दबाव डाल कर प्रशासन ने 'रेंगनेवाले समाजवाद' के प्रति अपना सन्देह और 'निजी उद्योग' के प्रति अपनी प्राथमिकता व्यक्त कर दी।

काग्रेस के दोनों दलो ने, राष्ट्राध्यक्ष के सामाजिक-सुरक्षा-कानून के अन्तर्गत विस्तार तथा अधिक लाभ के कार्यक्रम का समर्थन किया। दोनो ने ही वह विलम्बित सेट-लारेंस-ग्रेट झीलो के प्रवेश मार्ग का कनाडा की भागीदारी मे निर्माण करने के प्रयत्नो मे भी सहायता पहुँचायी। कुछ विरोधी तत्वो को भी, जैसे कि बफैलो नगर को, अन्तिम क्षणो मे मना लिया गया। यहाँ तक कि कनाडा इस समुद्री मार्ग का अकेले ही निर्माण करने के लिए तैयार था, जब कि अमरीका उसे अन्तरराष्ट्रीय नियन्त्रण मे चाहता था। उस द्विदलीय समर्थन ने जिसमे रिपब्लिकनो की अपेक्षा डेमोक्रेट अधिक सक्रिय थे, राष्ट्राध्यक्ष को सविधान के ब्रिकर-सशोधन को पराजित करने के प्रयत्नो मे सहायता प्रदान की। प्रस्तावित सशोधन राष्ट्राध्यक्ष द्वारा सन्धि करने पर खतरनाक तरीके से नियन्त्रण लगा देता।

प्रतिरोध और शक्तिशाली द्विपक्षीय कार्यवाही के परिणामस्वरूप ही मैकार्थी को १९५४ मे अन्तिम रूप से कुचल डाला गया था। स्थायी सिनेट की अनुसधान उपसमिति के प्रधान के रूप मे, उन्हे काफी बडी सत्ता मिल गयी थी। अधिकाधिक दभी बन जाने के फलस्वरूप उन्होंने सेना के सचिव का, जो जनरल होने के साथ साथ देशभक्त और अक्खड भी थे अपमान करने की

गलती की और वह भी एक साधारण-सी बात पर—सेना के एक दन्त चिकित्सक की देशभक्ति के सम्बन्ध मे। सेना ने भी कई प्रत्याभियोग लगा कर प्रत्याघात किया और सीनेट की एक अन्य कमेटी द्वारा जॉच-पडताल प्रारम्भ हुई। राष्ट्र ने उस सारी कार्यवाही को टेलीविजन-सेट पर अधीरता के साथ देखा और विस्कोंसियर सिनेटर के प्रति उसकी घृणा में वृद्धि होती चली गयी। इसका परिणाम यह निकला कि, उटाह के आर्थर टी. वाटकिंस की अध्यक्षता मे सीनेट की एक विशेष समिति की नियुक्ति की गयी, जिसने मैकार्थी की निन्दा करते हुए एक रिपोर्ट प्रस्तुत की। यह निन्दात्मक प्रस्ताव तीन के विरुद्ध एकमत से स्वीकृत हुआ था और इस प्रकार पूर्णरूपेण पराजित हो जाने पर अपराधी व्यक्ति को सार्वजनिक जीवन से बिलकुल दूर हो जाना पडा। उनका प्रभाव लगभग पूर्णरूप से समाप्तप्राय हो गया। किसी भी हालत मे समिति की अध्यक्षता से तो उनको हट ही जाना पडता; क्योंकि उसी पतझड़ से कॉग्रेस के चुनावो मे, डेमोक्रेटो का दोनो सभाओं पर नियन्त्रण हो गया।

दूसरे स्थानों पर भी आतक घटने लगा। अमरीकी नागरिक-स्वातन्त्र्य-सघ और रिपब्लीकी-निधि-जैसे सगठनों ने परम्परागत स्वतत्रता के प्रति प्रतिगामी आन्दोलनो से उत्पन्न होनेवाले खतरो को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत किया। न्यायालय ने निर्भीक निर्णयों के क्रम मे अधिकारो के प्रारूप (बिल आफ राइट्स) को निश्चयपूर्वक दुहराया। इस मसविदे में काग्रेस की समितियो को अधिकारों के उल्लंघन करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। पारपत्रों के लिए नागरिकों के अधिकार का रक्षण किया गया था, सुरक्षा सम्बन्धी जॉच-पड़तालों और कानूनो अथवा धमकी द्वारा प्रतिबंध लगाने मे उचित कार्यपद्धति अपनाने को कहा गया था।

आइज़नहोवर जिनेवा में : उनकी रुग्णावस्था : एक ओर जहॉ विश्व के तनाव मे कोई कमी नहीं दिखलायी पड रही थी, वहॉ दूसरी ओर अमरीका को एक के बाद दूसरी चिन्ताजनक परिस्थितियो का सामना करना पड़ा। १९५४ मे प्रशात महासागर मे दो बमो के विस्फोटन से भी देश को सुरक्षा का आश्वासन न मिल सका; क्योंकि रूस ने घोषणा की थी कि उनके पास भी उद्‌जन-बम हैं। आइजनहोवर प्रशासन ने पश्चिमी यूरोप की सुरक्षा को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए प्रयत्न किया। यूरोपीय सुरक्षा-सघठन-नामक एक सधि का निर्माण,

जिसमें ६ देशों (फ्रास, पश्चिम जर्मनी, इटली, हालैण्ड, लक्जेमबर्ग और बेलजियम) की सैन्य टुकडियों को शामिल कर एक नयी सेना खडी करने का प्रस्ताव था, इन देशों द्वारा सामान्य रूप से लगभग स्वीकृत ही होनेवाला था। १९५४ की ग्रीष्म में सेक्रेटरी डलेस को आशा थी कि, इसे शीघ्र ही स्वीकार कर लिया जायेगा। तभी फ्रास की असेम्बली ने इस सन्धि को, जिसे आइजनहोवर ने अमरीकी नीति को 'एक गहरा धक्का' बतलाया, अस्वीकार कर दिया। इसके अलावा इस सन्धि को रद्द करने के लिए सोवियत रूस भी अधीर था, जिससे अमरीका की मानसिक वेदना और भी बढ गयी। किन्तु, ब्रिटिश विदेश सचिव एन्थोनी ईडन द्वारा पहल किये जाने के कारण इसके स्थान पर 'यूरोपीय यूनियन' नामक एक सगठन की स्थापना की गयी। ग्रेट-ब्रिटेन ने वचन दिया कि वह यूरोप मे अपनी काफी बडी सेना रखेगा बशर्ते कि कोई बडा समुद्रपारीय खतरा उत्पन्न नहीं हो जाता।

इस यूनियन के नियत्रण मे पश्चिम जर्मनी का पुनःशस्त्रीकरण आगे बढा। इस राष्ट्र को यह अधिकार प्रदान किया गया कि 'नाटो' के प्रधान सेनापतित्व के आधीन वह ५ लाख का सैन्यबल खड़ा कर सके। इसकी आधी सख्या भी, यूरोप में अमरीकी और ब्रिटिश-डिवीजनों तथा इटली, फ्रास और बेनेलम्स के दस्तों को मिलाकर एक सुदृढ़ सेना बन जाती। अप्रैल १९५५ मे नयी व्यवस्था पूर्ण हो गयी।

उसके पश्चात् जुलाई मे जिनेवा मे प्रमुख पश्चिमी और रूसी नेताओं की एक स्मरणीय बैठक हुई, जिसमें आइजनहोवर, ईडन, डलेस, फोर्ड, प्रधान मंत्री बुल्गानिन, कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख निकिता खुश्चेव, और सुरक्षा मंत्री जार्जी जुकोव ने भाग लिया। उनका उद्देश्य ससम्मान समझौते के लिए आधार खोजना था। निशस्त्रीकरण और जर्मनी का एकीकरण मूल समस्याएं थीं। आइ-जनहोवर ने कहा, हम सहिष्णुता से काम लेंगे; क्योंकि यह राष्ट्र दूसरो पर अपने जीवन का तरीका लादना नही चाहता है। राष्ट्राध्यक्ष शीघ्र ही इस बैठक मे सबसे प्रभावशाली बन गये। वे इससे अधिक अधिक लाभप्रद कभी भी सिद्ध नहीं हुए थे। उनकी शाति के लिए हार्दिक इच्छा ने स्पष्ट रूप से रूसी नेताओं पर प्रभाव डाला। और, उन्होंने ही सबसे पहले एक आश्चर्य-जनक प्रस्ताव भी रखा कि, सभी शक्तियाँ जो अणु तथा परमाणविक शस्त्रों का परित्याग करने में सहमत हैं, वायुमण्डल तथा पृथ्वी के निरीक्षण को भी स्वीकार

करे। यह बैठक सामान्य बात से आगे न बढ सकी; किन्तु कुछ समय के लिए विश्व के वातावरण मे इससे सुधार अवश्य दिखलायी दिया। पूर्व और पश्चिम के लोगों ने 'जिनेवा के मुख्य सिद्धान्त' का स्वागत किया। दुर्भाग्यवश उसी पतझड मे बडे विदेश मंत्रियों की एक बैठक ने यह प्रमाणित कर दिया कि, वास्तव मे कुछ भी ठोस कार्य नहीं हुआ था। जब जर्मन समस्या, निशस्त्रीकरण और पूर्व-पश्चिम के सम्पर्कों पर बातचीत हुई तो रूसी नेता हमेशा की ही तरह अडिग रहे। इसी बीच राष्ट्राध्यक्ष की आकस्मिक बीमारी ने अमरीका मे भय उत्पन्न कर दिया। वे आराम करने और काम करने के लिए डेन्वर गये हुए थे। सितम्बर के अन्त मे उन्हे हृदयरोग का दौरा हुआ। कुछ समय के लिए, उन्हे आक्सीजन पर रखा गया, किन्तु धीरे-धीरे स्वस्थ हो गये और दो महीने के पश्चात् वे अधिकाश कार्य करने के योग्य हो गये थे।

सामाजिक विकास : जैसे-जैसे देश की आबादी और समृद्धि मे वृद्धि हुई, उसके सामाजिक और सास्कृतिक क्षेत्रों का भी विकास हुआ। १९५६ तक कालेजो और विश्वविद्यालयों मे दर्ज छात्रों की सख्या ३० लाख तक पहुँच चुकी थी और उसमें लगातार वृद्धि होने की सभावना थी। देश भर मे रेडियो की अपेक्षा टेलीविजन काफी लोकप्रिय हो गया था और उसने चलचित्रों के आकर्षण को भी कम कर दिया था। कामगार-संघ शक्तिशाली और साधन-सम्पन्न हो गये थे और उनके आधीन बडे-बडे सरक्षित कोष थे। १९५२ मे एक भूतपूर्व प्लम्बर जार्ज मीनी ने विलियम ग्रीन का स्थान ए. एफ. और एल. के अध्यक्ष के रूप मे ग्रहण किया। वाल्टर रूथर सी. आई. ओ. के प्रधान के रूप में, फिलिप मरे के उत्तराधिकारी बने। इन दोनों सस्थाओ के एकीकरण की योजनाए काफी आगे बढ़ गयीं, और १९५५ मे उनका एकीकरण हो गया। इस समय उनकी सदस्य सख्या लगभग १५० लाख थी। उसी वर्ष जून मे युनाइटेड आटो वर्क्स ने फोर्ड-मोटर-कम्पनी और जनरल मोटर्स से एक गारण्टीयुक्त वार्षिक वेतन जीत लिया जिसके अन्तर्गत शर्तों के अस्पष्ट होने के बावजूद कामगारो के लिए एक स्थायी आय प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त हो गया।

इन सभी नयी सामाजिक घटनाओ मे सबसे अधिक महत्वपूर्ण घटना वह थी, जिसका नीग्रो लोगो ने स्वतत्रता की घोषणा (इमैन्सीपेशन प्रोक्लेमेशन) के पश्चात् सबसे बडा कदम कह कर स्वागत किया। १७ मई १९५४ को

सर्वोच्च न्यायालय के प्रधान न्यायाधीश अर्ल वारेन तथा उनके साथियों ने एकमत से घोषित किया कि सार्वजनिक स्कूलों में रंगभेद समाप्त हो जाना चाहिए। निर्णय में कहा गया कि, चौदहवें संशोधन के अनुसार शालाओं की भिन्न, लेकिन सामान व्यवस्थाएं अब वैध नहीं हैं। इस निर्णय का प्रभाव स्कूलों तक ही सीमित नहीं रहेगा, बल्कि जीवन के वृहद् क्षेत्रों में भी फैलेगा। बाल्टीमोर से लेकर कासास शहर के सभी क्षेत्रों तक के अधिकारियों ने इस निर्णय के अनुसार कदम उठाने में शीघ्रता की। सुदूर दक्षिण में इसका पालन इतनी तत्परता अथवा सरलता से संभव नहीं था। इसलिए, न्यायालय ने दूरदर्शिता से काम लेकर, इस प्रक्रिया की देखरेख का कार्य जो कई स्थानों पर क्रमशः ही संभव बन सकता था, आधीन न्यायालयों को सौंपा। लेकिन, अब वह समय दूर नहीं है, जब काले और श्वेत वर्ग के लोगों के साथ अमरीका की इस भूमि पर नितान्त समानता के साथ व्यवहार किया जायेगा जहाँ की जनता स्वाधीनता और न्याय की दिशा में अनवरत जागरूक है।

पल पुस्तकामाला

PH–1 योगी और अधिकारी—आर्थर कोएस्लर। सुप्रसिद्ध साहित्यिक विचारक द्वारा लिखित आज के गम्भीर प्रश्नों पर गवेषणापूर्ण निबंध।
मूल्य : ५० नये पैसे।

PH–2 थामस पेन के राजनैतिक निबंध—मानव के अधिकारों और शासन के मूलभूत सिद्धातो से सम्बन्धित एक महान कृति। मूल्य : ५० नये पैसे।

PH–3 नववधू का ग्राम-प्रवेश—स्टिफन क्रेन। महान अमरीकी लेखक स्टिफन क्रेन की नौ सर्वश्रेष्ठ कहानियो का संग्रह। मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH–4 भारत-मेरा घर—सिंथिया बोल्स। भारत में भूतपूर्व अमरीकी राजदूत चेस्टर बोल्स की सुपुत्री के भारत सबंधी संस्मरण। मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH–5 स्वातंत्र्य-सेतु—जेम्स ए. मिचनर। हंगेरी के स्वातत्र्य-संग्राम का अति सजीव चित्रण इस पुस्तक मे किया गया है। मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH–6 शस्त्र-विदाई—अर्नेस्ट हेमिंग्वे। युद्ध और घृणा से अभिभूत विश्व की पृष्ठभूमि में लिखित एक विश्व-विख्यात उपन्यास। मूल्य : १ रुपया।

PH–7 डा० आइन्स्टीन और ब्रह्माण्ड—लिंकन बारनेट। आइन्स्टीन के सिद्धान्तो को इसमे सरल रूप से समझाया गया है। मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH–8 अमरीकी शासन-प्रणाली—अर्नेस्ट एस. ग्रिफिथ। अमरीकी शासन-प्रणाली को समझने मे यह पुस्तक विशेष लाभदायक है। मूल्य ५० नये पैसे।

PH–9 अध्यक्ष कौन हो ?—कैमेरोन हावले। एक सुप्रसिद्ध, सशक्त और कौशाल्यपूर्ण उपन्यास, जो कुल चौबीस घंटे की कहानी है।
मूल्य : १ रुपया।

PH–10 अनमोल मोती—जान स्टेनबेक। स्टेनबेक ने इसमे एक सरल-हृदय मछुए की बड़ी मार्मिक कथा प्रस्तुत की है। मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH–11 अमेरिका में प्रजातंत्र—अलेक्सिस डि. टोकवील। प्रायः एक सौ वर्ष पूर्व प्रख्यात फ्रासीस राजनीतिज्ञ द्वारा लिखित एक अमर कृति।
मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH–12 फिलिपाइन में कृषि-सुधार—एल्विन एच. स्काफ। फिलिपाइन मे हुए हुक-विद्रोह और वहाँ की सरकार द्वारा शाति के लिए किये गये प्रयासों का अति रोचक वर्णन। मूल्य : ५० नये पैसे।

PH-13 मनुष्य का भाग्य—लकॉम्ते द् नॉय। एक सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक द्वारा जीव और जगत के मूलभूत प्रश्नो का वैज्ञानिक विश्लेषण।

मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH-14 शांति के नूतन क्षितिज—चेस्टर बोल्स। आज की विश्व-समस्याओं पर एक सुस्पष्ट एव विचारपूर्ण विवेचन। मूल्य : १ रुपया।

PH-15 जीवट के शिखर—अर्नेस्ट के. गैन। यह उपन्यास सन् १९५४ का सबसे अधिक बिकनेवाला उपन्यास माना जाता है। मूल्य : १ रुपया।

PH-16 डनबार की घाटी—बोर्डन डील। अपनी पैतृक सम्पत्ति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए एक किसान के सघर्ष की कहानी। मूल्य : १ रुपया।

PH-17 रूस की पुनर्यात्रा—लुई फिशर। स्तालिन की मृत्यु के बाद प्रख्यात पत्रकार फिशर की रूस यात्रा का अति रोचक वर्णन। मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH-18 रोम से उत्तर में—हेलेन मेक् ईन्स। रहस्य, रोमाच और खतरों से परिपूर्ण यह उत्कृष्ट उपन्यास सभी को रोचक लगेगा। मूल्य : १ रुपया।

PH-19 मुक्त द्वार—हेलेन केलर। अंधी, गूगी और बहरी होते हुए भी हेलन केलर का नाम विश्व विख्यात है। प्रस्तुत पुस्तक मे वे एक गभीर विचारक के रूप मे प्रकट होती हैं। मूल्य : ५० नये पैसे।

PH-20 हमारा परमाणुकेन्द्रिक भविष्य—एडवर्ड टैलर और अल्बर्ट लैटर। परमाणुशक्ति के तथ्य, खतरो तथा सभावनाओं की चर्चा प्रस्तुत पुस्तक मे अमरीका के दो विशेषज्ञों द्वारा की गयी है। मूल्य १ रुपया।

PH-21 नवयुग का प्रभात—थामस ए. डूली, एम. डी.। एक नवजवान डाक्टर की दिलचस्प कहानी, जो भयकर रोगों से ग्रसित जनता की सेवा के लिए सुदूर लाओस मे जाता है। मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH-22 रूजवेल्ट का युग (१९३२-४५)—डेक्स्टर पर्किन्स। मूल रूप मे शिकागो युनिवर्सिटी द्वारा प्रकाशित यह पुस्तक रूजवेल्ट के समय का अच्छा अध्ययन है। मूल्य : ५० नये पैसे।

PH-23 अब्राहम लिकन—लार्ड चार्नवुड। यह मात्र लिकन की जीवनी न होकर अमरीकी राजनीतिक इतिहास का एक क्रातिकारी अध्याय है।

मूल्य : १ रुपया।

१९६० के नये प्रकाशन

PH–26 शिशु-परिचर्या और बच्चों की देखभाल—डा. बेंजामिन स्पोक, एम. डी.। मातापिताओ के लिए लिखा गया एक अत्यन्त उपयोगी, प्रामाणिक सचित्र ग्रंथ। अंग्रेजी मे मूल पुस्तक की ८० लाख से भी अधिक प्रतियॉ बिक चुकी हैं। हिन्दी मे प्रथम बार अनुवादित। मूल्य : १ रुपया।

PH–27 परिवार में परिमाणु—लारा फरमी। नोबल पुरस्कार व अन्य कई सम्मानों को प्राप्त करनेवाले विख्यात वैज्ञानिक एनरिको फरमी की यह जीवनी है, और उन्ही की पत्नी द्वारा लिखित। हिन्दी मे प्रथम बार अनुवादित। मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH–29 न पांच न तीन—हेलेन मेकिन्स। हेलेन मेकिन्स ने बडी ही दिलचस्प और रहस्य-रोमाच से परिपूर्ण कथाओं का सृजन किया है। यह उपन्यास उनका सबसे अधिक सनसनीखेज और सभवतः सार्वाधिक महत्वपूर्ण है। हिन्दी मे इसका अनुवाद पहली बार हुआ है। मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH–30 गोल सीढी—मेरी राबर्ट्स राइनहार्ट। एक रहस्य कथा। यह उपन्यास नाटक के रूप में भी दुबारा लिखा जा चुका है। हिन्दी मे प्रथम बार अनुवादित। मूल्य : ५० नये पैसे।

PH–31 ओ. हेनरी की कहानियाँ—मूल सपादक : हैरी हान्सन। ओ. हेनरी का ससार के कहानीकारों मे स्थान निश्चय ही चोटी का है। इस सग्रह मे उनकी तीस चुनी हुई कहानिया पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत हैं। मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH–32 चन्द्र-विजय—डब्ल्यू. वान ब्रान, डा. फ्रेड एल. व्हिपल और विली ले। चन्द्रमा तक जाने व वहॉ पहुँच कर भावी अनुसधान-कार्यो तक की चर्चा इस पुस्तक मे अमरीका के चोटी के विशेषज्ञो द्वारा की गयी है। रगीन चित्रों व नक्शों से सुसज्जित। हिन्दी मे पहली बार अनुवादित। मूल्य : ७५ नये पैसे।

PH–33 थामस जेफर्सन और अमरीकी प्रजातंत्र—मैक्स बेलोफ। अमरीकी प्रजातंत्र के विकास मे थामस जेफर्सन का योगदान उल्लेखनीय है। ऐतिहासिक तथ्यों व नक्शो से सुसज्जित यह ग्रंथ इतिहास के पाठको को अवश्य ही रोचक प्रतीत होगा। हिन्दी मे पहली बार अनुवादित। मूल्य : ७५ नये पैसे।